गजेन्द्र ठाकुर समग्रक
सम्पादकीय

खण्ड १४

# अनुवादक

सम्पूर्ण उपन्यासक साहित्यिक समीक्षा



मूल साहित्यकार
**गजेन्द्र ठाकुर**

सम्पादक आ समीक्षक
**आशीष अनचिन्हार**

विदेह — २०२६

# गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड १४

# अनुवादक

विदेह · २०२६

# गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय
# १४
# अनुवादक

*सम्पूर्ण उपन्यासक साहित्यिक समीक्षा*

मूल साहित्यकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

*विदेह*

## प्रकाशकीय विवरण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय · खण्ड १४

अनुवादक — सम्पूर्ण उपन्यासक साहित्यिक समीक्षा

मूल साहित्यकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

प्रथम संस्करण : २०२६ | भाषा : मैथिली

प्रकाशन-सम्बन्ध : विदेह | मुद्रण आकार : ६ × ९ इंच

© प्रीति ठाकुर आ गजेन्द्र ठाकुर। सर्वाधिकार सुरक्षित।

ई ग्रन्थ मूल उपन्यासक पुनर्मुद्रण नहि, ओकर स्वतंत्र मूल पाठाधारित साहित्यिक समीक्षा अछि। पात्रक कथन, समाचारिक आरोप आ न्यायालयीय प्रसङ्ग उपन्यासक साहित्यिक संसारक अंग छथि; एकरा बाह्य प्रमाणित घटना अथवा विधिक दोषसिद्धिक स्थान नहि देल गेल अछि।

## भूमिका

गजेन्द्र ठाकुरक ‘अनुवादक’क एक सय अध्याय मिथिलाक भाषिक ज्ञान-परम्परा सँ राजधानीक जीविका, विदेशी व्यापारी परिवेश आ न्यायालयीय प्रमाण-विचार धरि विस्तृत अछि। एहि पुस्तकमे उपन्यासक मूल कथाक स्वतंत्र आलोचना भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य आख्यानशास्त्र, नव्य न्याय आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आलोकमे कएल गेल अछि। अध्याय सभकेँ रचनाक अपना क्रममे पढ़ि चरित्र, भाषिक निर्णय, दस्तावेजक पाठान्तर, सामाजिक परिस्थिति आ शिल्पगत सफलताक संग सीमाक सेहो परीक्षण कएल गेल अछि।

विस्तृत अध्ययनक पहिल भाग उपन्यासक समग्र विषय, चरित्र आ शैलीक आलोचनात्मक आधार प्रस्तुत करैत अछि; तकर बाद अध्याय १ सँ १०० धरि स्वतंत्र समीक्षा, पाँच-पाँच अध्यायक अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन आ अन्तिम समेकित निर्णय अछि। ग्रन्थाधारमे केवल पोथीक नाम राखल गेल अछि।

# सम्पूर्ण अनुक्रमणिका

*समग्र अध्ययन, अध्यायवार समीक्षा आ अन्तराध्यायिक तुलना*

सारांश ..... ११

१. अध्ययनक क्षेत्र, पाठ-परिधि आ पद्धति ..... १२

२. उपन्यासक केन्द्रीय प्रतिपाद्य: अनुवाद शब्दक नहि, उत्तरदायित्वक ..... १३

३. आठ खण्डमे कथात्मक स्थापत्य ..... १४

1–13: प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार ..... १४

14–26: भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व ..... १४

27–39: कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार, दबाव, समाचार आ स्रोत ..... १४

40–52: कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन ..... १४

53–65: मकाऊक दर्पण: संस्करण, मुहरबन्द पाठ आ आत्म-अभिलेख ..... १४

66–78: भोज, देवता, अपमान: प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ सार्वजनिक कथा १५

79–91: समझौताक दरार: अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति ..... १५

92–100: निर्णय: दू नव्य न्याय आ समान कसौटी ..... १५

४. सभ १०० अध्यायक रचना-मानचित्र आ आलोचनात्मक लेखा ..... १५

५. भारतीय काव्यशास्त्रीय समीक्षा ..... ३१

५.१ रस: भय, लज्जा, करुणा, शान्ति आ नैतिक जुगुप्सा ..... ३१

५.२ ध्वनि: शब्दक नीचे चलैत दोसर कथा ..... ३१

५.३ वक्रोक्ति आ पुनरावृत्ति ..... ३२

५.४ औचित्य: नैतिक आ भाषिक मितव्ययिता ..... ३२

६. पाश्चात्य कथाशास्त्रीय समीक्षा ..... ३३

६.१ त्रासदीक दोष नहि, क्रमिक नैतिक विचलन ..... ३३

६.२ बहुस्वरता आ सामाजिक भाषा ..... ३३

६.३ दृष्टिबिन्दु, समय आ पुनरागमन ..... ३३

६.४ नैतिक आत्म-पहिचान ..... ३४

६.५ यथार्थवाद: दस्तावेजी वस्तु आ दैनिक विवरण ..... ३४
७. नव्य-न्यायीय समीक्षा ..... ३४
७.१ प्रमाणक चारि आधार आ उपन्यास ..... ३४
७.२ प्रत्यक्ष: देखल बातक मर्यादा ..... ३५
७.३ अनुमान आ व्याप्तिक संकट ..... ३५
७.४ शब्द-प्रमाण: वक्ता, प्रसंग आ विश्वसनीयता ..... ३५
७.५ उपमान: समानता संकेत, सिद्धि नहि ..... ३६
७.६ अनुपस्थित अपेक्षित चिह्न: नव्य-न्यायीय नकारात्मक परीक्षण ..... ३६
७.७ “दू नव्य न्याय” ..... ३६
८. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति सँ पठन ..... ३७
९. चरित्र-समीक्षा ..... ३८
९.१ शशांक झा: सूक्ष्मबुद्धि, भूख, गर्व आ आत्म-सीमा ..... ३८
९.२ मृणाल कर्ण: मित्र नहि, सममित कसौटी ..... ३८
९.३ जुलियाना: पकड़बासँ स्थान देबाक पाठ ..... ३८
९.४ राघव भसीन: विधिक सीमा आ पेशागत मौन ..... ३९
९.५ आदित्य मिश्र आ दोसरा गामक जांचकर्ता: संस्थागत विवेक ..... ३९
१०. भाषा, शैली आ कथन-तकनीक ..... ३९
११. उपन्यासक भाषिक गठन आ शैली ..... ४०
१२. रचनाक प्रमुख कलात्मक उपलब्धि ..... ४२
१३. रचनाक शिल्पगत सीमा ..... ४३
१४. समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन ..... ४३
१५. निष्कर्ष ..... ४४
अध्याय १ — मिथिलाक अनुवादक ..... ४६
अध्याय २ — तीन पोथीक पाठ ..... ५०
अध्याय ३ — मिथिलासँ दिल्ली ३ ..... ५३
अध्याय ४ — मिथिलासँ दिल्ली ४ ..... ५६
अध्याय ५ — मिथिलासँ दिल्ली ५ ..... ५९
अध्याय १–५ : अन्तराध्यायिक तुलना ..... ६३
अध्याय ६ — मिथिलासँ दिल्ली ६ ..... ६६

अध्याय ७ — मिथिलासँ दिल्ली ७ ..... ७०
अध्याय ८ — लाल किलाक चीनी पर्यटक ..... ७४
अध्याय ९ — मिथिलासँ दिल्ली ९ ..... ७७
अध्याय १० — मिथिलासँ दिल्ली १० ..... ८१
अध्याय ६–१० : अन्तराध्यायिक तुलना ..... ८५
अध्याय ११ — मिथिलासँ दिल्ली ११ ..... ८८
अध्याय १२ — मिथिलासँ दिल्ली १२ ..... ९२
अध्याय १३ — पितमपुराक ताओ मंदिर ..... ९६
अध्याय १४ — भाषाक साधना १ ..... १००
अध्याय १५ — भाषाक साधना २ ..... १०४
अध्याय ११–१५ : अन्तराध्यायिक तुलना ..... १०८
अध्याय १६ — भाषाक साधना ३ ..... ११२
अध्याय १७ — भाषाक साधना ४ ..... ११६
अध्याय १८ — भाषाक साधना ५ ..... ११९
अध्याय १९ — भाषाक साधना ६ ..... १२२
अध्याय २० — जुलियानाक पाठ ..... १२५
अध्याय १६–२० : अन्तराध्यायिक तुलना ..... १२८
अध्याय २१ — भाषाक साधना ८ ..... १३१
अध्याय २२ — भाषाक साधना ९ ..... १३६
अध्याय २३ — भाषाक साधना १० ..... १४१
अध्याय २४ — भाषाक साधना ११ ..... १४६
अध्याय २५ — भाषाक साधना १२ ..... १५१
अध्याय २१–२५ : अन्तराध्यायिक तुलना ..... १५६
अध्याय २६ — भाषाक साधना १३ ..... १६०
अध्याय २७ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया १ ..... १६४
अध्याय २८ — नोएडाक पहिल कॉन्ट्रैक्ट ..... १६७
अध्याय २९ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया ३ ..... १७०
अध्याय ३० — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया ४ ..... १७३
अध्याय २६–३० : अन्तराध्यायिक तुलना ..... १७८
अध्याय ३१ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया ५ ..... १८२
अध्याय ३२ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया ६ ..... १८६
अध्याय ३३ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया ७ ..... १९०

अध्याय ३४ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया ८.....१९४
अध्याय ३५ — गुंडाक फोन.....१९८
अध्याय ३१–३५ : अन्तराध्यायिक तुलना.....२०२
अध्याय ३६ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया १०.....२०६
अध्याय ३७ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया ११.....२०९
अध्याय ३८ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया १२.....२१२
अध्याय ३९ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया १३.....२१४
अध्याय ४० — कैंटनिजक केवाड़ी १.....२१७
अध्याय ३६–४० : अन्तराध्यायिक तुलना.....२२०
अध्याय ४१ — कैंटनिजक केवाड़ी २.....२२३
अध्याय ४२ — VIVOक गेट.....२२८
अध्याय ४३ — कैंटनिजक केवाड़ी ४.....२३३
अध्याय ४४ — कैंटनिजक केवाड़ी ५.....२३८
अध्याय ४५ — कैंटनिजक केवाड़ी ६.....२४३
अध्याय ४१–४५ : अन्तराध्यायिक तुलना.....२४९
अध्याय ४६ — कैंटनिजक केवाड़ी ७.....२५४
अध्याय ४७ — कैंटनिजक केवाड़ी ८.....२५८
अध्याय ४८ — मैंडरिन सँ कैंटनिज धरि.....२६२
अध्याय ४९ — कैंटनिजक केवाड़ी १०.....२६६
अध्याय ५० — जुआ ऐपक vendor.....२७०
अध्याय ४६–५० : अन्तराध्यायिक तुलना.....२७५
अध्याय ५१ — कैंटनिजक केवाड़ी १२.....२८०
अध्याय ५२ — कैंटनिजक केवाड़ी १३.....२८४
अध्याय ५३ — मकाऊक दर्पण १.....२८८
अध्याय ५४ — मकाऊक दर्पण २.....२९२
अध्याय ५५ — मकाऊक दर्पण ३.....२९६
अध्याय ५१–५५ : अन्तराध्यायिक तुलना.....३००
अध्याय ५६ — मकाऊक दर्पण ४.....३०४
अध्याय ५७ — मकाऊक दर्पण ५.....३०८
अध्याय ५८ — वकील जे चीनी नहि बुझैत.....३१२
अध्याय ५९ — मकाऊक दर्पण ७.....३१६

अध्याय ६० — मकाऊक दर्पण ८ ..... ३१९
अध्याय ५६–६० : अन्तराध्यायिक तुलना ..... ३२३
अध्याय ६१ — मकाऊक दर्पण ९ ..... ३२६
अध्याय ६२ — मकाऊक राति ..... ३२९
अध्याय ६३ — मकाऊक दर्पण ११ ..... ३३२
अध्याय ६४ — मकाऊक दर्पण १२ ..... ३३५
अध्याय ६५ — मकाऊक दर्पण १३ ..... ३३८
अध्याय ६१–६५ : अन्तराध्यायिक तुलना ..... ३४१
अध्याय ६६ — भोज, देवता, अपमान १ ..... ३४५
अध्याय ६७ — भोज, देवता, अपमान २ ..... ३४८
अध्याय ६८ — भोज, देवता, अपमान ३ ..... ३५१
अध्याय ६९ — भोज, देवता, अपमान ४ ..... ३५४
अध्याय ७० — हवाला आ बिटकॉइन ..... ३५७
अध्याय ६६–७० : अन्तराध्यायिक तुलना ..... ३६०
अध्याय ७१ — भोज, देवता, अपमान ६ ..... ३६४
अध्याय ७२ — भोज, देवता, अपमान ७ ..... ३६८
अध्याय ७३ — भोज, देवता, अपमान ८ ..... ३७२
अध्याय ७४ — भोज, देवता, अपमान ९ ..... ३७५
अध्याय ७५ — भोज, देवता, अपमान १० ..... ३७८
अध्याय ७१–७५ : अन्तराध्यायिक तुलना ..... ३८२
अध्याय ७६ — जन्मदिनक मंच ..... ३८६
अध्याय ७७ — भोज, देवता, अपमान १२ ..... ३८९
अध्याय ७८ — भोज, देवता, अपमान १३ ..... ३९२
अध्याय ७९ — समझौताक दरार १ ..... ३९५
अध्याय ८० — समझौताक दरार २ ..... ३९८
अध्याय ७६–८० : अन्तराध्यायिक तुलना ..... ४०१
अध्याय ८१ — समझौताक दरार ३ ..... ४०५
अध्याय ८२ — समझौता कएल एजेंसी ..... ४०९
अध्याय ८३ — समझौताक दरार ५ ..... ४१२
अध्याय ८४ — समझौताक दरार ६ ..... ४१६

अध्याय ८५ — समझौताक दरार ७ ..... ४१९
अध्याय ८१–८५ : अन्तराध्यायिक तुलना ..... ४२२
अध्याय ८६ — समझौताक दरार ८ ..... ४२६
अध्याय ८७ — समझौताक दरार ९ ..... ४२९
अध्याय ८८ — दोसरा गामक जाँचकर्ता ..... ४३२
अध्याय ८९ — समझौताक दरार ११ ..... ४३५
अध्याय ९० — समझौताक दरार १२ ..... ४३८
अध्याय ८६–९० : अन्तराध्यायिक तुलना ..... ४४१
अध्याय ९१ — समझौताक दरार १३ ..... ४४४
अध्याय ९२ — दोस्ती सँ दुश्मनी ..... ४४७
अध्याय ९३ — दू नव्य न्याय २ ..... ४५०
अध्याय ९४ — दू नव्य न्याय ३ ..... ४५३
अध्याय ९५ — दू नव्य न्याय ४ ..... ४५६
अध्याय ९१–९५ : अन्तराध्यायिक तुलना ..... ४५९
अध्याय ९६ — मिथ्या आरोप ..... ४६२
अध्याय ९७ — दू नव्य न्याय ६ ..... ४६५
अध्याय ९८ — दू नव्य न्याय ७ ..... ४६८
अध्याय ९९ — नव्य-न्यायक अंतिम परीक्षा ..... ४७१
अध्याय १०० — अनुवादकक निर्णय ..... ४७४
अध्याय ९६–१०० : अन्तराध्यायिक तुलना ..... ४७८
समग्र साहित्यिक मूल्याङ्कन : भाषा, सत्ता आ प्रमाण ..... ४८१
नव्य न्याय आ अन्तिम न्यायिक निष्कर्षक अर्थ ..... ४८२
आख्यानशिल्प, पुनरावृत्ति आ सामाजिक दृष्टि ..... ४८३
अन्तिम सम्पादकीय निर्णय ..... ४८४
बिबलियोग्राफी ..... ४८५

## सारांश

“अनुवादक” १०० अध्यायमे विस्तृत एहन उपन्यास अछि जाहिमे मिथिलाक नव्य-न्यायपरम्परा, दिल्लीक बहुभाषी जीविका-संसार, भारत-चीन व्यावसायिक सम्पर्क, मकाऊक चमकदार किन्तु संदिग्ध तकनीकी-वित्तीय परिवेश, विधिक गोपनीयता, सरकारी जाँच, समाचार-माध्यमक अतिशयोक्ति, मित्रता, लोभ, अपमान आ आत्म-उत्तरदायित्व एक-दोसरासँ गुँथल अछि। उपन्यासक मौलिकता केवल विषय-वस्तुमे नहि, बल्कि एहि बातमे अछि जे कथा स्वयं प्रमाणक श्रेणीकरण सीखैत जाइत अछि। आरम्भमे शशांक झा “भाषा” कँ जीविका, प्रवेश आ शक्ति बुझैत अछि; मध्यभागमे भाषा करार, भुगतान, अनुवाद, मुहरबन्द संचिका आ समाचारक बीच अर्थक आकार बदलैत अछि; अन्तभागमे वही भाषा न्यायिक अनुशासनक अधीन अपन सीमा स्वीकार करैत अछि। एहि शोध-समीक्षाक मुख्य प्रतिपाद्य ई अछि जे “अनुवादक” मूलतः ज्ञान, कथन आ उत्तरदायित्वक उपन्यास अछि—अर्थात् कियो की जानैत अछि, कोना जानैत अछि, कतेक कहि सकैत अछि, आ जे नहि जानैत तकरा कोना नहि जोड़बाक चाही।

भारतीय काव्यशास्त्रक रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य परम्परा, पाश्चात्य कथाशास्त्रक कथानक, बहुस्वरता, दृष्टिबिन्दु, समय-रचना आ नैतिक आत्म-पहिचान, गंगेशोत्तर नव्य-न्यायक प्रमाण-सूक्ष्मता, तथा विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक अन्तर्गत मिथिला-दिल्ली-नोएडा-मकाऊ-न्यायालय-संस्थागत अभिलेखक समानान्तर पठन द्वारा ई अध्ययन देखबैत अछि जे उपन्यास अपराध-कथा होएबासँ बेसी “आरोप बनाम सिद्धि”क कथा अछि। शुद्ध मैथिली निखार-अंकेक्षणमे भाषा सामान्यतः सघन, सुगम आ अवधारणात्मक रूपेँ सक्षम भेटैत अछि; मुदा रोमन/अंगरेजी तकनीकी पद, दू ठाम “हर”, तथा किछु शब्द-रूपक स्तर पर एकरूपता लेल संपादकीय सुधार आवश्यक अछि।

मुख्य शब्द: अनुवाद, नव्य-न्याय, प्रमाण, प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अनुपस्थित अपेक्षित चिह्न, मिथ्या आरोप, मित्रता, मकाऊ, भाषिक नैतिकता, अभिलेख, समानान्तर इतिहास।

## १. अध्ययनक क्षेत्र, पाठ-परिधि आ पद्धति

एहि अध्ययनमे पोथीक सभ १०० अध्याय स्वतंत्र पाठ-इकाई रूपेँ गृहीत कएल गेल अछि। अनुक्रमणिकाक अध्याय १ “मिथिलाक अनुवादक” सँ अध्याय १०० “अनुवादकक निर्णय” धरि कथानकक क्रम अखण्ड अछि। समीक्षा नमूना-पठन पर आधारित नहि; कथा-विकास, आवर्ती सूत्र, अध्याय-अन्तक संक्रमण, चरित्र-सम्बन्ध, भाषिक पदावली, संस्थागत अभिलेख, अंकीय सामग्री, न्यायालयीय दृश्य आ अन्तिम निर्णय धरि पूरा संरचना कैँ संगति मे पढ़ल गेल अछि।

पद्धति चारि परतमे चलैत अछि। पहिल, स्रोत-पाठीय परत—अध्यायक भीतर कथानक, प्रतीक, संवाद, आवर्ती सूत्र आ चरित्र-परिवर्तन। दोसर, भारतीय आलोचनात्मक परत—रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य आ कथ्य-भाव-संकेतक सम्बन्ध। तेसर, नव्य-न्यायीय परत—प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, संशय, हेत्वाभास, व्याप्ति, अवच्छेदक, सम्बन्ध आ प्रमाणक भार। चौठ, समानान्तर ऐतिहासिक परत—मिथिलाक बौद्धिक परम्परा, दिल्लीक प्रवासी श्रम-बाजार, चीन-सम्बद्ध व्यापारिक संसार, मकाऊक वित्त-प्रौद्योगिकी छाया, भारतीय संस्थागत जाँच आ न्यायालयीय उत्तरदायित्व कैँ एकहि समय-अक्ष पर पढ़ब।

“विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति” कैँ एहि समीक्षामे एहन कार्य-पद्धति रूपेँ प्रयुक्त कएल गेल अछि जाहिमे अलग-अलग भूगोल, संस्था, भाषा आ स्मृति-रेखाकैँ एक-दोसराक कारण मानि जल्दबाजी नहि कएल जाइत; पहिने समानान्तर राखि समय, स्रोत, संपर्क आ परिणामक बिन्दु पर वास्तविक छेदन

खोजल जाइत अछि। एहि अर्थमे ई पद्धति उपन्यासक अपन न्याय-दृष्टिसँ मेल खाइत अछि: साथ-साथ घटल घटना अनिवार्यतः परस्पर कारण नहि।

## २. उपन्यासक केन्द्रीय प्रतिपाद्य: अनुवाद शब्दक नहि, उत्तरदायित्वक

उपन्यासक आरम्भे शशांक कहैत अछि जे ओ “भाषा ताकय” जा रहल अछि। एहि वाक्यक भीतर पूरा रचना संक्षिप्त अछि। भाषा ओकरा जीविका दैत अछि, विदेश पहुँच दैत अछि, निगमक भीतर प्रवेश दैत अछि, विधिक दस्तावेज पढ़बाक अधिकार दैत अछि, सरकारी जाँचमे उपयोगी बनबैत अछि, आ अन्ततः ओकर विरुद्ध साक्ष्यक सामग्री सेहो बनि जाइत अछि। भाषा एतय तटस्थ माध्यम नहि; शक्ति अछि। मुदा लेखक लगातार देखबैत छथि जे शक्ति आ अधिकार समान नहि। ककरो संग बात बुझि सकब, ओकर खाताक स्वामी होएब नहि; पटल देखब, प्रणाली नियंत्रित करब नहि; करार अनुवाद करब, करारक आर्थिक लाभकारी स्वामी होएब नहि; वकीलक संग बैसार करब, अपराधी योजना मे सहभागी होएब नहि।

एहि कारण “अनुवादक”क कथानक बारम्बार अर्थक “सीमा” शब्द पर लौटैत अछि। नायकक आरम्भिक दोष मिथ्या बोलबाक साधारण प्रवृत्ति नहि; सीमा अपन सुविधा अनुसार बढ़ेनाइ-घटेनाइ अछि। जखन ओकरा प्रतिष्ठा चाही तखन अपन भूमिका बड़ा कहैत अछि; जखन जाँच अबैत अछि तखन छोट करैत अछि; जखन मित्रक नाम अबैत अछि तखन भावना पहिने पहुँचैत अछि; जखन समाचार ओकरा अपराधी बनबैत अछि तखन ओ अपन पीड़ा कँ पूर्ण निर्दोषताक प्रमाण बनाबय चाहैत अछि। अन्तिम परिपक्वता एहि असमान मापक कँ त्यागब अछि।

> “आरोप अलग, शंका अलग, प्रमाण अलग” — एहि सूत्रक अनेक रूप पूरा उपन्यासक आलोचनात्मक मेरुदण्ड अछि।

## ३. आठ खण्डमे कथात्मक स्थापत्य

### 1–13: प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार

मिथिलासँ दिल्ली आ पहिल मकाऊ धरि नायकक जीविका, प्रशिक्षण, मित्रता, महत्वाकांक्षा आ चयनित मौनक बीज पड़ैत अछि। भाषा एक अवसर होइत-होइत विशेष पहुँचक लालसा बनैत अछि।

### 14–26: भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व

जुलियाना, मृणाल, राघव, आदित्य आ अदालत नायकक भाषा-बोध कैं स्रोत, प्रसंग, गोपनीयता आ सार्वजनिक कथनक कसौटी पर कसैत छथि।

### 27–39: कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार, दबाव, समाचार आ स्रोत

नोएडा, करार, गुंडाक फोन, सरकारी टिप्पणी आ समाचारक मिश्रण बाहरी छाया रचैत अछि; उपमान उपयोगी संकेत, पर अपराध-सिद्धि नहि।

### 40–52: कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन

मैंडरिन-कैंटनिज, विक्रेता, अंकीय जब्ती, मित्रता आ यात्रा-अभिलेख द्वारा भाषा कौशलक दर्प न्यायिक सूक्ष्मता मे रूपान्तरित होइत अछि।

### 53–65: मकाऊक दर्पण: संस्करण, मुहरबन्द पाठ आ आत्म-अभिलेख

एके दस्तावेजक अनेक संस्करण, मुहरबन्द सामग्री, समाचार रूपान्तर आ नायकक पुरान उपकरण एक-दोसराक दर्पण बनैत अछि।

### 66–78: भोज, देवता, अपमान: प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ सार्वजनिक कथा

जन्मदिनक मंच, सामाजिक प्रतिष्ठा, हवाला-बिटकॉइनक शब्द, समाचार-अतिशयोक्ति आ अंकीय डींग मिलि छवि आ वास्तविक शक्ति बीच दूरी खोलैत अछि।

### 79–91: समझौताक दरार: अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति

कथित नियंत्रण, स्वामित्व, साँठगाँठ वा लीक सच होइत त' कोन चिह्न रहबाक चाही—एहि प्रश्नसँ अनुपस्थिति कैं अनुशासित ढंगसँ पढ़ल जाइत अछि।

### 92–100: निर्णय: दू नव्य न्याय आ समान कसौटी

अन्तिम अध्यायसभ अपन, मित्र, वकील, संस्था, समाचार आ वित्तीय अभिलेख—सभ पर एके कसौटी लागू करैत अछि; नैतिक निष्कर्ष विधिक सीमा सँ बाहर नहि जाएत।

## ४. सभ १०० अध्यायक रचना-मानचित्र आ आलोचनात्मक लेखा

नीचाँक सारणी केवल अनुक्रमणिका नहि; प्रत्येक अध्यायक कथात्मक कार्य आ आलोचनात्मक योगदान चिन्हित करैत अछि। एहि प्रकार कोनो रचना समीक्षा सँ बाहर नहि रहैत।

| अध्याय | शीर्षक | खण्डीय कार्य | आलोचनात्मक निष्कर्ष |
|---|---|---|---|
| 1 | मिथिलाक अनुवादक | प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार | मिथिलाक ज्ञान-परम्परा, आर्थिक विवशता आ भाषा-जीविकाक आकांक्षा एक संग नायकक प्रस्थान-बिन्दु बनैत अछि; नव्य-न्याय ओकर चरित्रक बौद्धिक |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | व्याकरण रूपेँ स्थापित होइत अछि। |
| 2 | तीन पोथीक पाठ | प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार | ध्वनि–वाक्य–व्यवहारक त्रिक अनुवादकक प्रशिक्षण कैँ केवल शब्द-ज्ञान नहि, प्रसंग-नीति बनबैत अछि; “उद्देश्य” नैतिक निर्णायक पद बनि उठैत अछि। |
| 3 | मिथिलासँ दिल्ली 3 | प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार | दिल्लीक आर्थिक दबाव नायक कैँ संदिग्ध भुगतान-भाषा लग पहुँचबैत अछि; मृणालक प्रवेश “आरोप–शंका–प्रमाण” भेदक लोकजीवन-संस्करण प्रस्तुत करैत अछि। |
| 4 | मिथिलासँ दिल्ली 4 | प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार | पहिल मकाऊ-यात्रा विशेष पहुँच, अधिक पारिश्रमिक आ चयनित मौनक त्रिकोण रचैत अछि; पतन पैघ अपराध नहि, सीमा फेर लिखबाक छोट चयनसँ शुरू होइत देखाओल गेल अछि। |
| 5 | मिथिलासँ दिल्ली 5 | प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार | विधिक अनुवादक रूपेँ शशांक अर्थक सीमा बचबैत अछि, मुदा ओहि सीमा कैँ भविष्य मे मोड़ि सकबाक शक्ति पहचानैत अछि; ज्ञान आ प्रलोभन एके ठाम उपस्थित होइत अछि। |
| 6 | मिथिलासँ दिल्ली 6 | प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार | गोपनीयता, सहभागिता आ लिखित सीमा बीचक भेद पेशागत नैतिकता कैँ दृढ़ करैत अछि, पर उच्च पारिश्रमिक आ सम्मान नायकक आत्म-नियंत्रण पर निरन्तर दबाव बनौने रहैत अछि। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 7 | मिथिलासँ दिल्ली 7 | प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार | आन्तरिक सरकारी प्रक्रिया, सार्वजनिक कथा आ व्यक्तिगत अपमानक पहिल स्पष्ट टकराव; पीड़ाक सत्य कैं प्रमाणक सत्यसँ अलग राखबाक आग्रह उपन्यासक न्याय-दृष्टि कैं तीक्ष्ण करैत अछि। |
| 8 | लाल किलाक चीनी पर्यटक | प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार | लाल किलाक प्रसंग भविष्यक अदालत मे लौटि स्मृति कैं साक्ष्यक कसौटी पर रखैत अछि; “जे नहि देखल गेल” ओकर अनुवाद न्याय-विकृति बनि सकैत अछि। |
| 9 | मिथिलासँ दिल्ली 9 | प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार | समन आ औपचारिक जाँच नायकक आत्म-कथा कैं अभिलेखीय भाषा मे बदलैत अछि; जानब आ मानबक अन्तर चरित्र-विकासक नवल स्तर खोलैत अछि। |
| 10 | मिथिलासँ दिल्ली 10 | प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार | अंकीय जब्ती पछाति भाषिक गर्व नायकक रक्षात्मक शक्ति बनैत अछि; उपन्यास प्रश्न उठबैत अछि जे सूक्ष्म अर्थ-बोध सत्यक सेवा करैत अछि कि आत्म-बचावक। |
| 11 | मिथिलासँ दिल्ली 11 | प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार | करार आ भुगतान-अभिलेखक बहुअर्थी भाषा शक्ति-संबंध कैं स्पष्ट करैत अछि; “अर्थक सम्भावना” आ “अपराधक सिद्धि” अलग राखल गेल अछि। |
| 12 | मिथिलासँ दिल्ली 12 | प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार | दोसर मकाऊ अवसर विशेष पहुँचक लोभ कैं वैध पेशागत अवसरक रूप मे छद्म-वेश दैत |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | अछि; सीमा पार करब शान्त आ तर्कसंगत देखाइ पड़ैत अछि। |
| 13 | पितमपुराक ताओ मंदिर | प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार | ताओ मंदिर बाहरी कथानक सँ भीतरक नैतिक श्रवण दिस मोड़ अछि; जुलियाना क्षमा नहि, आत्म-श्रवणक अनुशासन दैत छथि। |
| 14 | भाषाक साधना 1 | भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व | शब्द-प्रमाणक विश्वसनीयता स्रोतक विश्वसनीयता सँ जोड़ल गेल अछि; भाषिक साधना ज्ञानमीमांसात्मक साधना बनि उठैत अछि। |
| 15 | भाषाक साधना 2 | भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व | समाचार-आघातक बीच नायक तत्काल प्रतिक्रियाक बदला लिखित तथ्यक बाट चुनैत अछि; चरित्रक भीतर विवेकक दोसर स्वर स्पष्ट होइत अछि। |
| 16 | भाषाक साधना 3 | भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व | अदालत ध्वनि, वाक्य आ आशयक प्रशिक्षण कैं सार्वजनिक उत्तरदायित्वक कसौटी पर राखैत अछि; भाषा-कक्षा न्याय-कक्ष मे रूपान्तरित होइत अछि। |
| 17 | भाषाक साधना 4 | भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व | स्रोत, उद्धरण आ प्रसंगक सूक्ष्म भेद शशांकक पेशागत कौशलक संग ओकर नैतिक संकट कैं जोड़ैत अछि। |
| 18 | भाषाक साधना 5 | भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व | आंशिक सत्य आ चयनित मौनक सम्बन्ध खुलैत अछि; उपन्यास “मिथ्या” कैं केवल असत्य वाक्य नहि, अपूर्ण प्रस्तुति रूपेँ सेहो देखैत अछि। |
| 19 | भाषाक साधना 6 | भाषाक साधना: | मित्रता नायकक आत्म-कथा पर |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व | प्रतिरोधी साक्षी बनैत अछि; मृणालक उपस्थिति भावुक समर्थनक बदला कसौटी प्रदान करैत अछि। |
| 20 | जुलियानाक पाठ | भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व | जुलियानाक पाठ “दोस्ती” कँ अदालतक प्रमाण नहि, अंतरात्माक प्रश्न ठहरबैत अछि; लोभक नामकरण शुद्ध होइत अछि, लोभ समाप्त नहि। |
| 21 | भाषाक साधना 8 | भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व | विधिक गोपनीयता आ अनुवादकक प्रसंग-बोध बीच समय, स्थान आ सीमा चरित्र-परीक्षा बनैत अछि। |
| 22 | भाषाक साधना 9 | भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व | संस्थागत सारांश आ मूल टिप्पणी बीच अन्तर राजनीतिक/प्रशासनिक भाषा-कर्मक नैतिक जोखिम देखबैत अछि। |
| 23 | भाषाक साधना 10 | भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व | शब्दक यात्रा—मूल, सारांश, समाचार—स्वयं साक्ष्यक विषय बनैत अछि; कथनक वंशावली उपन्यासक प्रमुख औपचारिक उपकरण अछि। |
| 24 | भाषाक साधना 11 | भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व | अदालतक बाद नायक अपन कथनक सीमा कँ अपन जिम्मेदारी मानय लगैत अछि; भाषिक आत्मगौरव पर संयमक आरम्भ। |
| 25 | भाषाक साधना 12 | भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व | पूरक समन अंकीय सामग्री आ आत्म-प्रतिमा बीच संघर्ष खोलैत अछि; सीमित कथनक नैतिक मूल्य बढ़ैत अछि। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 26 | भाषाक साधना 13 | भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व | पुरान शिक्षकक श्यामपट्ट संग लौटाव भाषिक साधनाक पहिल चक्र पूरा करैत अछि; आगाँ सिद्धान्त सीधे धन, करार आ दबावक संसार मे उतरैत अछि। |
| 27 | कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 1 | कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार, दबाव, समाचार आ स्रोत | नोएडा औद्योगिक संसार भाषा कैं श्रम, करार आ कॉर्पोरेट शक्ति सँ जोड़ैत अछि; “छाया” श्रृंखलाक सामाजिक भूमि तैयार। |
| 28 | नोएडाक पहिल कॉन्ट्रैक्ट | कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार, दबाव, समाचार आ स्रोत | पहिल करारमे उपमान उपयोगी संकेत अछि, सिद्धि नहि; समानताक मोह सँ बचबाक शिक्षा केन्द्र मे अछि। |
| 29 | कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 3 | कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार, दबाव, समाचार आ स्रोत | गोपनीयता-पत्र, मकाऊ प्रस्ताव आ सरकारी टिप्पणी एके कथानक मे निजी करार आ सार्वजनिक जाँच कैं समानान्तर करैत अछि। |
| 30 | कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 4 | कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार, दबाव, समाचार आ स्रोत | मूल टिप्पणी आ प्राथमिकता घटेबाक निर्देश बीच वैषम्य “पूरा वाक्य”क मांग उत्पन्न करैत अछि; संपादन स्वयं शक्ति-कर्म ठहरैत अछि। |
| 31 | कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 5 | कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार, दबाव, समाचार आ स्रोत | समाचारक कथा नामक चारूकात आरोपक तैयार आकृति बनबैत अछि; उपमानक दुरुपयोग सामाजिक अपमानक स्रोत बनैत अछि। |
| 32 | कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 6 | कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार, दबाव, समाचार आ स्रोत | अदालत नायकक “केन्द्र” होएबाक लालसा कैं तोड़ैत अछि; घटनाक केन्द्र आ सत्यक स्वामी एक नहि। |
| 33 | कॉन्ट्रैक्ट आ | कॉन्ट्रैक्ट आ | समन, अंकीय फाइल आ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | छाया 7 | छाया: करार, दबाव, समाचार आ स्रोत | नामकरणक संकट मित्रता/स्वार्थक संभावित हस्तक्षेप देखबैत अछि; सत्यक स्थान भावनासँ अलग राखल गेल। |
| 34 | कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 8 | कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार, दबाव, समाचार आ स्रोत | द्विभाषिक करारमे “प्रतिनिधि”, “पाबनिहार”, “नियन्त्रण” आ “स्वामित्व”क अर्थ-भेद नव्य-न्यायीय अवच्छेदक-जेकाँ काम करैत अछि। |
| 35 | गुंडाक फोन | कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार, दबाव, समाचार आ स्रोत | गुंडाक फोन बाहरी दबाव कैं अंतरात्माक कसौटी मे बदलैत अछि; मृणाल भयक बीच सीमित सत्य पर टिकबाक सहारा। |
| 36 | कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 10 | कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार, दबाव, समाचार आ स्रोत | मकाऊ निमन्त्रण फेर लोभ जगबैत अछि, पर एहि बेर लिखित सीमा पहिल प्रतिरक्षा बनैत अछि; प्रलोभनक रूप बदलैत अछि। |
| 37 | कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 11 | कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार, दबाव, समाचार आ स्रोत | राघव भसीनक कार्यालयमे परामर्श, करार आ सहभागिताक भेद पेशागत नैतिकता कैं विधिक संरचना दैत अछि। |
| 38 | कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 12 | कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार, दबाव, समाचार आ स्रोत | मूल सन्देश सुरक्षित रखबाक आग्रह स्रोत-समालोचनाक अनुशासन अछि; अज्ञात प्रश्न छाया बनैत अछि, आरोप नहि। |
| 39 | कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 13 | कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार, दबाव, समाचार आ स्रोत | मुहरबन्द संचिका सम्बन्धी बाहरी प्रश्न लीक, अनुमान आ पत्रकारिता बीच सीमा खोलैत अछि; अदालत अगिला सत्य-परीक्षणक मंच बनैत अछि। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 40 | कैंटनिजक केवाड़ी 1 | कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन | कैंटनिज भाषिक क्षमता अदालतक अनुमान-अनुशासन मे प्रवेश करैत अछि; भाषा कौशलक मूल्य तबे जखन साक्ष्य-सीमा सुरक्षित रहय। |
| 41 | कैंटनिजक केवाड़ी 2 | कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन | समनक औपचारिकता आ स्वामित्व-अभिलेखक भेद नायकक “महत्त्व” भ्रम घटबैत अछि; भाषा केवाड़ी अछि, घर नहि। |
| 42 | वीवोक गेट [VIVO] | कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन | वीवो परिसरक भौतिक फाटक निजी कॉर्पोरेट संसार आ न्यायिक जाँचक प्रतीकात्मक सीमा बनैत अछि; मित्रताक प्रश्न भाषासँ आगाँ जाएत अछि। |
| 43 | कैंटनिजक केवाड़ी 4 | कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन | मृणाल पर संदेहक सम्भावना नायक कँ मित्रक पक्ष मे मिथ्या अनुमान न करबाक परीक्षा दैत अछि; पक्षधरता स्वयं विश्वासघात भ’ सकैत अछि। |
| 44 | कैंटनिजक केवाड़ी 5 | कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन | मकाऊक स्मृति लोभक संवेदी रूप—होटल, पटल, पहुँच—रचैत अछि; आकर्षण एखन प्रमाण-चिन्तनक विरुद्ध दबाव बनि ठाढ़। |
| 45 | कैंटनिजक केवाड़ी 6 | कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन | विधिक परामर्शक प्रसंगमे “केवल भाषा-काज” आ दिशा-निर्धारणक सहभागिता बीच नैतिक रेखा जाँचल जाइत अछि। |
| 46 | कैंटनिजक केवाड़ी 7 | कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन | निचला आपत्ति आ ऊपरी प्राथमिकता-ह्रास संस्थागत दोहरी भाषा देखबैत अछि; विश्वासघातक अनुभूति अभी |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | सिद्ध निष्कर्ष नहि। |
| 47 | कैंटनिजक केवाड़ी 8 | कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन | अज्ञात प्रश्न “दू नेटवर्कक कड़ी” कहि निष्कर्ष पूर्वनिर्धारित करैत अछि; उपन्यास प्रश्नक व्याकरणमे छुपल आरोप चिन्हैत अछि। |
| 48 | मैंडरिन सँ कैंटनिज धरि | कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन | मैंडरिन–कैंटनिज भेद भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्यक सूक्ष्मता धरि सेतु बनैत अछि; कतरल उद्धरणक अनुमानात्मक सीमा अदालतमे जाँचल जाइत अछि। |
| 49 | कैंटनिजक केवाड़ी 10 | कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन | जब्ती-सूची आ बयान मिलान “अभिलेख बनाम स्मरण”क टकराव तीव्र करैत अछि; व्यक्तित्वक दावा वस्तुगत सामग्रीक साम्हिन राखल जाइत अछि। |
| 50 | जुआ अनुप्रयोगक विक्रेता [vendor] | कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन | जुआ अनुप्रयोगक विक्रेता प्रसंग प्रत्यक्ष तकनीकी दृश्य, पेशागत सम्बन्ध आ वित्तीय अनुमान कैं अलग-अलग रखैत अछि; अपराध-कथा बनाबय सँ परहेज। |
| 51 | कैंटनिजक केवाड़ी 12 | कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन | शशांक–मृणाल समान मेज पर बैसि अलग बयान दैत छथि; मित्रता साक्ष्यक समानता कैं प्रतिस्थापित नहि करैत। |
| 52 | कैंटनिजक केवाड़ी 13 | कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन | यात्रा-अभिलेख स्मरणक चमक कैं पासपोर्ट, आरक्षण, होटल, बैठक-सन्देश सँ कसैत अछि; मकाऊ अब स्मृति नहि, दस्तावेजी स्थल। |
| 53 | मकाऊक दर्पण 1 | मकाऊक दर्पण: | “गोपनीय: विधिक समीक्षा” |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | संस्करण,<br>मुहरबन्द पाठ आ<br>आत्म-अभिलेख | संचिका एकेँ अभिलेखक अलग संस्करणक संकट खोलैत अछि; दर्पण-रूपक पाठांतरक रूपक बनैत अछि। |
| 54 | मकाऊक दर्पण 2 | मकाऊक दर्पण:<br>संस्करण,<br>मुहरबन्द पाठ आ<br>आत्म-अभिलेख | दू प्रशासनिक संस्करणक तुलना संस्थागत संपादन कैँ कथा-कर्म बनबैत अछि; क्रोध कैँ तथ्यक नाम न देबाक अनुशासन दृढ़। |
| 55 | मकाऊक दर्पण 3 | मकाऊक दर्पण:<br>संस्करण,<br>मुहरबन्द पाठ आ<br>आत्म-अभिलेख | मुहरबन्द सामग्री आ समाचारक प्रसार बीच सम्बन्ध जाँचल जाइत अछि; बाहरक कथा भीतरक दस्तावेजक प्रामाणिक प्रतिरूप मानल नहि जाइत। |
| 56 | मकाऊक दर्पण 4 | मकाऊक दर्पण:<br>संस्करण,<br>मुहरबन्द पाठ आ<br>आत्म-अभिलेख | अदालत सार्वजनिक अतिशयोक्ति आ मूल सामग्रीक मौन तुलना करैत अछि; नायकक पुरान उपकरण अगिला आत्म-साक्ष्य बनय वाला अछि। |
| 57 | मकाऊक दर्पण 5 | मकाऊक दर्पण:<br>संस्करण,<br>मुहरबन्द पाठ आ<br>आत्म-अभिलेख | अंकीय जब्ती महत्त्वाकांक्षाक निजी लिखावट कैँ वस्तुगत अभिलेख बनबैत अछि; “भूमिका बढ़ाब” चाहना अधिकार सिद्ध नहि करैत। |
| 58 | वकील जे चीनी नहि बुझैत | मकाऊक दर्पण:<br>संस्करण,<br>मुहरबन्द पाठ आ<br>आत्म-अभिलेख | चीनी नहि बुझनिहार वकील राघवक हस्ताक्षर भाषा, परामर्श आ वास्तविक सहभागिताक सीमाक परीक्षण बनैत अछि। |
| 59 | मकाऊक दर्पण 7 | मकाऊक दर्पण:<br>संस्करण,<br>मुहरबन्द पाठ आ<br>आत्म-अभिलेख | भुगतान अभिलेख आ मित्रता-सम्बन्धक मिलान धनक पथ कैँ नैतिक स्मृतिसँ जोड़ैत अछि, बिना तुरन्त दोष-सिद्धि कएने। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 60 | मकाऊक दर्पण 8 | मकाऊक दर्पण: संस्करण, मुहरबन्द पाठ आ आत्म-अभिलेख | दोसर मकाऊ यात्रा, प्रवेश-अभिलेख आ स्मरणक तुलना “विशेष पहुँच”क मिथक कैं मापैत अछि। |
| 61 | मकाऊक दर्पण 9 | मकाऊक दर्पण: संस्करण, मुहरबन्द पाठ आ आत्म-अभिलेख | विधिक विशेषाधिकारक सीमा विषय-वस्तु सँ बाहर समय-क्रम आ भूमिका-चिह्न द्वारा जाँचल जाइत अछि; गोपनीयता अपराधक पर्याय नहि। |
| 62 | मकाऊक राति | मकाऊक दर्पण: संस्करण, मुहरबन्द पाठ आ आत्म-अभिलेख | मकाऊक राति संस्थागत प्रसार-सूची, आरक्षण-पत्र आ स्मृति कैं जोड़ैत अछि; कागज बाहर जाइतहि अर्थ बदलि सकबाक संकट। |
| 63 | मकाऊक दर्पण 11 | मकाऊक दर्पण: संस्करण, मुहरबन्द पाठ आ आत्म-अभिलेख | समाचार-आघात फेर नाम कैं तथ्यसँ आगे दौड़बैत अछि; मूल वाक्य आ संसार द्वारा सुनेल रूपक बीच दूरी नापल जाइत अछि। |
| 64 | मकाऊक दर्पण 12 | मकाऊक दर्पण: संस्करण, मुहरबन्द पाठ आ आत्म-अभिलेख | अदालत मुहरबन्द मूल, सार्वजनिक रूपान्तर आ आर्थिक दाबी कैं अलग पांतिमे राखैत अछि; प्रायश्चित सेहो प्रमाणक सीमा पार नहि क’ सकैत। |
| 65 | मकाऊक दर्पण 13 | मकाऊक दर्पण: संस्करण, मुहरबन्द पाठ आ आत्म-अभिलेख | अंकीय पुनर्परीक्षण नायकक डींग, आधा-सत्य आ भूमिका-विस्तारक हस्ताक्षर देखबैत अछि; “अपराध”क बदला महत्त्वाकांक्षा स्पष्ट सिद्ध होइत अछि। |
| 66 | भोज, देवता, अपमान 1 | भोज, देवता, अपमान: प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ | जन्मदिन भोजक निमन्त्रण शक्ति, प्रतिष्ठा आ मंचीय दृश्यता कैं सामाजिक मुद्रा बनबैत अछि; |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | सार्वजनिक कथा | आवाजक क्षणिक स्वामित्व बनाम वास्तविक अधिकार। |
| 67 | भोज, देवता, अपमान 2 | भोज, देवता, अपमानः प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ सार्वजनिक कथा | मृणालक "सावधान रह" पछाति नैतिक प्रतिध्वनि बनैत अछि; मित्र चेतबैत अछि, लोभ सुनैत रहैत अछि। |
| 68 | भोज, देवता, अपमान 3 | भोज, देवता, अपमानः प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ सार्वजनिक कथा | "विशेष पहुँच" पुरस्कार-जेकाँ अनुभव होइत अछि; यात्रा-स्मृति वैध प्रवेश आ आत्म-कल्पित अधिकारक भेद खोलैत अछि। |
| 69 | भोज, देवता, अपमान 4 | भोज, देवता, अपमानः प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ सार्वजनिक कथा | विधिक परामर्श, व्यावसायिक सन्देश आ अनुवादित सारांश अलग वर्ग मे राखि सहभागिताक आरोपक सीमा जाँचल जाइत अछि। |
| 70 | हवाला आ बिटकॉइन | भोज, देवता, अपमानः प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ सार्वजनिक कथा | हवाला आ बिटकॉइन शब्द स्वयं अपराध-सिद्धि नहि; प्रश्नचिह्न कैं समाचारक पूर्णविराम बनाबयक प्रक्रिया पर तीक्ष्ण आलोचना। |
| 71 | भोज, देवता, अपमान 6 | भोज, देवता, अपमानः प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ सार्वजनिक कथा | समाचार शीर्षक, भोजक छवि आ वित्तीय शब्द मिलि सार्वजनिक नैतिक आतंक रचैत अछि; नायकक अपमानक उत्तर सेहो सीमाबद्ध रहबाक चाही। |
| 72 | भोज, देवता, अपमान 7 | भोज, देवता, अपमानः प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ सार्वजनिक कथा | अदालत मूल अंश, सार्वजनिक शीर्षक, मंचीय सन्देश आ भाषिक त्रुटि एकठाम रखैत अछि; आत्म-स्वीकृति आ वस्तुगत उत्तरदायित्व अलग। |
| 73 | भोज, देवता, अपमान 8 | भोज, देवता, अपमानः प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ | पुरान उपकरणक पुनर्परीक्षण महत्त्वाकांक्षाक अंकीय अवशेष खोलैत अछि; स्मृति सँ अधिक |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | सार्वजनिक कथा | कठोर “स्वयं द्वारा लिखल” साक्ष्य। |
| 74 | भोज, देवता, अपमान 9 | भोज, देवता, अपमान: प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ सार्वजनिक कथा | करार, आयोजन, विक्रेता-पथ आ स्वामित्वक अभिलेख मंचीय प्रभाव कैं वास्तविक नियंत्रणसँ अलग करैत अछि। |
| 75 | भोज, देवता, अपमान 10 | भोज, देवता, अपमान: प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ सार्वजनिक कथा | भुगतान-द्वार आ मध्यवर्ती खाताक बीच परिचित आद्याक्षर मित्रताक संकट जगबैत अछि; नाम कड़ी नहि। |
| 76 | जन्मदिनक मंच | भोज, देवता, अपमान: प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ सार्वजनिक कथा | जन्मदिनक मंचक सामाजिक शक्ति मकाऊक प्रणाली-प्रवेश संग मिलान होइत अछि; प्रतिष्ठा वास्तविक तकनीकी अधिकारक प्रमाण नहि। |
| 77 | भोज, देवता, अपमान 12 | भोज, देवता, अपमान: प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ सार्वजनिक कथा | राघवक संग विधिक परामर्शक बाह्य समय-क्रम “गोपनीयता बनाम सहभागिता” प्रश्न कैं फेर सूक्ष्म करैत अछि। |
| 78 | भोज, देवता, अपमान 13 | भोज, देवता, अपमान: प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ सार्वजनिक कथा | मूल टिप्पणी, बदलल सारांश आ प्रश्नचिह्नक विलयन विश्वासघातक अनुभूति कैं अभिलेख-समालोचना मे बदलैत अछि; अगिला खण्ड अनुपस्थिति पर केन्द्रित। |
| 79 | समझौताक दरार 1 | समझौताक दरार: अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति | “समझौताक दरार” उपलब्ध सामग्रीक बदला अपेक्षित किन्तु अनुपस्थित चिह्न पर नजर देत अछि; नकारात्मक साक्ष्यक विधि शुरू। |
| 80 | समझौताक दरार 2 | समझौताक दरार: अनुपस्थित | अदालत पूछैत अछि—जे नहि भेटल, से भेटबाक योग्य छल कि |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | अपेक्षित चिह्नक पद्धति | नहि; अनुपस्थिति कैं यांत्रिक निर्दोषता/दोषक प्रमाण नहि मानल गेल। |
| 81 | समझौताक दरार 3 | समझौताक दरार: अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति | अंकीय प्रतिलिपि मे लाभकारी स्वामीक नाम न भेटब निष्कर्ष नहि; "रिक्त स्थान"क प्रमाण-मूल्य ओकर अभिलेखीय अपेक्षा पर निर्भर। |
| 82 | समझौता कएल एजेंसी | समझौताक दरार: अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति | एजेंसी-समझौता स्वामित्व-नामक वैधानिक/व्यावसायिक अपेक्षा जाँचैत अछि; रिक्त कोष्ठक भरबाक पुरान प्रवृत्ति पर अंकुश। |
| 83 | समझौताक दरार 5 | समझौताक दरार: अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति | भुगतान-द्वार, मध्यवर्ती खाते, हवाला-सन्दर्भ आ मित्रताक सन्देशसभ मे अपेक्षित परिचालन चिह्न खोजल जाइत अछि; पथ न भेटल त' कथा नहि गढ़ल जाए। |
| 84 | समझौताक दरार 6 | समझौताक दरार: अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति | व्यापक सर्वर-नियन्त्रण दाबी कैं अपेक्षित अंकीय चिह्नसँ जाँचल जाइत अछि; "विशेष पहुँच"क वास्तविक सीमा उघड़ैत अछि। |
| 85 | समझौताक दरार 7 | समझौताक दरार: अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति | विधिक परामर्शक बाहर स्वतंत्र व्यावसायिक/परिचालन चिह्न खोजि कथित साँठगाँठ जाँचल जाइत अछि; गोपनीयता कैं स्वतः अपराध न मानल गेल। |
| 86 | समझौताक दरार 8 | समझौताक दरार: अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति | संस्थागत प्रतिरोध दबाओल गेल दाबी लेल आदेश, पुनःआवंटन, बैठक-नोंद, कारण-पत्र जेकाँ अपेक्षित चिह्नक खोज; अनुपस्थिति पर संयत निर्णय। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 87 | समझौताक दरार 9 | समझौताक दरार: अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति | मुहरबन्द सामग्रीसँ सार्वजनिक आरोप धरि पहुँचल कथित लीक कैं विशिष्ट स्रोत-चिह्नसँ जाँचल जाइत अछि; अनुमानक दायरा संकुचित। |
| 88 | दोसरा गामक जांचकर्ता | समझौताक दरार: अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति | “दोसरा गामक जांचकर्ता” नव्य-न्याय कैं नायकक बचाव नहि, ओकर कर्मक विरुद्धो लागू करैत अछि; पद्धति आत्म-पक्षपात सँ स्वतंत्र होएबाक परीक्षा। |
| 89 | समझौताक दरार 11 | समझौताक दरार: अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति | समन, बयान आ अंकीय सामग्री मे “निर्णायक भूमिका” दाबी कैं अपेक्षित शक्ति-चिह्नसँ तौला जाइत अछि; डींग स्वयं साक्ष्य, अधिकार नहि। |
| 90 | समझौताक दरार 12 | समझौताक दरार: अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति | करार, विक्रेता-पथ आ लाभकारी स्वामित्वक शब्द-विकास जाँचि देखाओल जाइत अछि जे एक अस्पष्ट वाक्य अनेक कागज मे दोहराइ “सत्य” जेकाँ दिखि सकैत अछि। |
| 91 | समझौताक दरार 13 | समझौताक दरार: अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति | धनक पथ पर स्वतन्त्र निर्देश, लाभ, नियन्त्रण आ सम्बन्धक चिह्न खोजल जाइत अछि; अनुपलब्धि भारी आरोप घटबैत अछि, मुदा आधा-सत्य नहि मेटबैत। |
| 92 | दोस्ती सँ दुश्मनी | निर्णय: दू नव्य न्याय आ समान कसौटी | “दोस्ती सँ दुश्मनी” निर्णय-खण्डक प्रवेश अछि; मित्रता न प्रमाण छोट करय, न नाम पैघ—एहि समान कसौटी पर संबंधक नैतिक सम्मान टिकल अछि। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 93 | दू नव्य न्याय 2 | निर्णय: दू नव्य न्याय आ समान कसौटी | विधिक विशेषाधिकार मौनक वैध सीमा बनैत अछि; बाहरी स्वतंत्र चिह्न बिना गोपनीयताक भीतर अपराध अनुमान करब अनुचित। |
| 94 | दू नव्य न्याय 3 | निर्णय: दू नव्य न्याय आ समान कसौटी | संस्थागत संस्करण-इतिहास पर ओही धार लगाओल जाइत अछि जे नायक पर; पद्धति अपन संस्थागत सहयोगीक पक्षो नहि लेत। |
| 95 | दू नव्य न्याय 4 | निर्णय: दू नव्य न्याय आ समान कसौटी | सार्वजनिक आरोप चारि श्रेणी—स्थापित तथ्य, अनुमान, असमर्थित विस्तार, स्रोत-अनिर्णीत—मे वर्गीकृत; उपन्यासक आलोचनात्मक व्याकरण चरम स्पष्टता पबैत अछि। |
| 96 | मिथ्या आरोप | निर्णय: दू नव्य न्याय आ समान कसौटी | प्रतिपरीक्षा “मिथ्या आरोप”क अधिकार कैं सीमित करैत अछि; नायक अपन दोष स्वीकारैत अछि, मुदा प्रमाणहीन अतिरिक्त अपराध नहि। |
| 97 | दू नव्य न्याय 6 | निर्णय: दू नव्य न्याय आ समान कसौटी | पूरक बयानमे अंकीय डींग आ वस्तुगत क्रियाक अन्तर जाँचल जाइत अछि; प्रायश्चितक नाम पर दोष बड़ा करब सेहो पद्धतिगत त्रुटि। |
| 98 | दू नव्य न्याय 7 | निर्णय: दू नव्य न्याय आ समान कसौटी | करार, विक्रेता-पंजीकरण आ ग्राहक-पहिचान प्रपत्रक अलग प्रयोजन “स्वामी” शब्दक अर्थक अवच्छेदक तय करैत अछि। |
| 99 | नव्य-न्यायक अंतिम परीक्षा | निर्णय: दू नव्य न्याय आ समान कसौटी | अन्तिम वित्तीय वर्गीकरण मे मित्र मृणालक नाम पर सेहो समान कसौटी लागू; नव्य-न्यायक |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | नैतिक परीक्षा पक्षपात-विरहित नियमपालन बनैत अछि। |
| 100 | अनुवादकक निर्णय | निर्णय: दू नव्य न्याय आ समान कसौटी | अदालतक निर्णय न पूर्ण निर्दोषता दैत अछि, न सर्वग्रासी दोष; न्याय सीमित सिद्धि, सीमित उत्तरदायित्व आ भाषा पर आत्म-अनुशासनक कठोर शान्ति रूपेँ समाप्त होइत अछि। |

## ५. भारतीय काव्यशास्त्रीय समीक्षा

### ५.१ रस: भय, लज्जा, करुणा, शान्ति आ नैतिक जुगुप्सा

उपन्यास एकरस भावधारा पर नहि टिकैत। आरम्भक अद्भुत—दिल्ली, चीनी भाषा, लाल किला, मकाऊ—धीरे-धीरे भय आ लज्जा मे बदलैत अछि। गुंडाक फोन, समन, अंकीय जब्ती, मुहरबन्द संचिका आ समाचारक शीर्षक भयानक रसक परिस्थितियाँ बनबैत अछि, मुदा लेखक सनसनीक लागि भय नहि रचैत छथि। भयक काम नायकक अन्त:करणक छिपल चयन उघारब अछि। करुणा सेहो “बेचारा नायक” बनाबय लेल नहि; गरीबी, पारिवारिक जिम्मेदारी, अपमान आ सार्वजनिक गलत आरोप पाठक केँ नायकक पक्ष मे भावनात्मक रूपेँ खींचैत अछि, फेर प्रमाणक कसौटी ओहि पक्षधरता केँ रोकैत अछि। अन्तिम “कठोर शान्ति” शान्त रसक आधुनिक नैतिक रूप अछि—विजय नहि, सीमित सत्य स्वीकारब।

### ५.२ ध्वनि: शब्दक नीचे चलैत दोसर कथा

“विशेष पहुँच”, “मुख्य भाषिक संयोजक”, “स्वामी”, “साझेदार”, “कड़ी”, “ऊपर”, “समीक्षा” जेकाँ पदक अभिधा आ व्यंजना बीचक अन्तर पूरा रचनामे कार्य करैत अछि। पाठक बारम्बार देखैत अछि जे शब्दक सामान्य

अर्थक नीचे शक्ति, प्रतिष्ठा, अपराध-संकेत, आत्म-प्रचार वा संस्थागत बचावक व्यंजना चलि रहल अछि। एहि कारण ध्वनि-सिद्धान्तक दृष्टिसँ उपन्यासक सौन्दर्य “कहलक की?” सँ बेसी “एहि प्रसंगमे ई शब्द की संकेत करैत अछि?” प्रश्नमे अछि।

## ५.३ वक्रोक्ति आ पुनरावृत्ति

लेखकक प्रमुख वक्रता रूपकात्मक श्रृंखलामे अछि—“केवाड़ी”, “दर्पण”, “छाया”, “दरार”, “मंच”, “परीक्षा”। ई मात्र सजावटी शीर्षक नहि। “केवाड़ी” भाषिक प्रवेशक रूपक; “दर्पण” एके तथ्यक अनेक संस्करण; “छाया” अपूर्ण संकेत; “दरार” कथित समग्र कथाक भीतर अनुपस्थित चिह्न; “मंच” सामाजिक प्रतिष्ठा; “परीक्षा” समान कसौटी। शीर्षक-शृंखला कथानकक विचारात्मक मानचित्र बनैत अछि।

## ५.४ औचित्य: नैतिक आ भाषिक मितव्ययिता

औचित्यक दृष्टिसँ उपन्यासक श्रेष्ठ अंश ओ अछि जतय कथाकार स्वयं अपराधक अंतिम निर्णय नहि सुनबैत, बल्कि उपलब्ध सामग्रीक सीमा पर रुकैत अछि। ई मितव्ययिता विषयक अनुकूल अछि। जँ रचना स्वयं सनसनीपूर्ण अपराध-उपन्यासक लय पकड़ि लैत, त’ ओकर “प्रमाण-सीमा”क प्रतिपाद्य टूटि जाइत। हँ, किछु मध्यवर्ती अध्यायमे आवर्ती सूत्र अत्यधिक स्पष्ट रूपेँ दोहरायल अछि; संपादकीय कसावटसँ ध्वनिक सूक्ष्मता आरो बढ़ि सकैत अछि।

# ६. पाश्चात्य कथाशास्त्रीय समीक्षा

## ६.१ त्रासदीक दोष नहि, क्रमिक नैतिक विचलन

अरस्तूीय [Poetics] दृष्टिसँ शशांकक पतन “एक महाभूल” पर आधारित नहि। ओकर त्रुटि क्रमिक अछि—अतिरिक्त पृष्ठ खोलब, मृणालसँ आंशिक बात कहब, भूमिका बढ़ा क’ कहब, विशेष पहुँचक लोभ, प्रसंगक आधा हिस्सा छोड़ब। एहि सूक्ष्म विचलनक संचय आधुनिक त्रासदीक ढाँचा बनबैत अछि। नायक न पूर्ण दुष्ट, न निष्कलंक; ओकर क्षमता—भाषिक सूक्ष्मता—ओकर दोषक साधन सेहो बनैत अछि।

## ६.२ बहुस्वरता आ सामाजिक भाषा

बाख्तिनीय [The Dialogic Imagination] दृष्टिसँ पोथी बहुभाषिक आ बहुस्वरात्मक अछि। मैथिली, हिन्दी, चीनी, कैंटनिज, विधिक भाषा, निगमीय करार, सरकारी टिप्पणी, समाचार शीर्षक, मित्रक चेतावनी, साधिकाक आध्यात्मिक वाक्य—सभ अलग सामाजिक भाषा अछि। उपन्यासक संघर्ष व्यक्ति बनाम व्यक्ति कम, भाषा-प्रणाली बनाम भाषा-प्रणाली बेसी अछि। एके घटना “व्यापार”, “सुविधा”, “संदिग्ध भुगतान”, “आरोप”, “सिद्ध तथ्य” वा “समाचार” बनि सकैत अछि।

## ६.३ दृष्टिबिन्दु, समय आ पुनरागमन

जेनेटियन [Narrative Discourse] कसौटी पर कथानक प्रायः शशांक-केन्द्रित निकट दृष्टिबिन्दु राखैत अछि, मुदा अदालत आ अभिलेख ओकर स्मृति पर बाहरी नियंत्रण लगबैत अछि। अध्याय ८ जेकाँ भविष्यक अदालत सँ लाल किला दिस लौटाव समयक रैखिकता तोड़ैत अछि; एहि पूर्वाभास सँ पाठक जानि जाइत अछि जे आरम्भिक “छोट” भाषिक घटना बादमे साक्ष्य बनत। बारम्बार पुरान वाक्य, सन्देश, कागज वा दृश्य लौटब कथा मे “पुनर्पठन”क संरचना बनबैत अछि।

### ६.४ नैतिक आत्म-पहिचान

रिकरियन [Time and Narrative] दृष्टिसँ शशांकक पहिचान स्थिर सार नहि; ओ अपन जीवनक कथा कहि-कहि बनबैत अछि। समस्या तखन होइत अछि जखन आत्म-कथा तथ्य पर शासन करय लगैत अछि—कखनो “हम केवल अनुवादक”, कखनो “हम निर्णायक कड़ी”। अन्तिम नैतिक परिपक्वता अपन कथा कँ अभिलेखक सीमा अधीन करब अछि। एहि कारण अन्तिम निर्णय विधिक निर्णयक संग आत्म-कथात्मक पुनर्संयोजन सेहो अछि।

### ६.५ यथार्थवाद: दस्तावेजी वस्तु आ दैनिक विवरण

औएरबाखीय [Mimesis] अर्थमे उपन्यासक यथार्थवाद महाकाव्यात्मक घटना सँ नहि, साधारण वस्तु सँ बनैत अछि—बसक टिकट, चाहक गिलास, सस्ती कोठली, नव कलम, करारक पृष्ठ, समन, मुहर, सन्देश, प्रवेश-अभिलेख, पंखाक घुरघुराहट। एहि साधारण वस्तुक भीतर सामाजिक वर्ग, आकांक्षा, संस्था आ नैतिक भार बसल अछि। अन्तिम अदालतक साधारणता जानि-बुझि भव्य नाटकीयता कँ अस्वीकार करैत अछि।

## ७. नव्य-न्यायीय समीक्षा

### ७.१ प्रमाणक चारि आधार आ उपन्यास

न्यायपरम्परा प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्द कँ ज्ञानक प्रमुख साधन मानैत अछि; गंगेशक [तत्त्वचिन्तामणि] एहि साधनसभक परिभाषा, सीमा आ दोष पर असाधारण सूक्ष्मता विकसित करैत अछि। “अनुवादक” एहि दार्शनिक विरासत कँ शाब्दिक पाठ नहि बनबैत, बल्कि कथात्मक अनुशासन रूपेँ उपयोग करैत अछि। प्रत्यक्ष—शशांक की देखलक; अनुमान—देखल सामग्री सँ की युक्तिसंगत निकलैत अछि; शब्द—ककर कथन विश्वसनीय

अछि; उपमान—पुरान संरचना सँ समानता कतेक दूर उपयोगी; एहि चारू प्रश्नक साथ कथा निरन्तर चलैत अछि।

## ७.२ प्रत्यक्ष: देखल बातक मर्यादा

पहिल मकाऊ पटलसँ अन्तिम अंकीय पुनर्परीक्षण धरि “देखल”क अर्थ सरल नहि। पटल खुलल, मुदा डेटा वास्तविक छल कि प्रदर्शन? प्रवेश मिलल, मुदा पढ़बाक अधिकार कतेक? छवि मे मंच पर उपस्थिति अछि, मुदा स्वामित्व? प्रत्यक्षक साहित्यिक उपयोग एहि तरहें अछि जे दृश्य आकर्षक संकेत दैत अछि, पर दृश्य स्वयं पूर्ण सम्बन्ध नहि बतबैत।

## ७.३ अनुमान आ व्याप्तिक संकट

“जटिल भुगतान = अपराध”, “विदेश यात्रा = नियंत्रण”, “एके आद्याक्षर = एके व्यक्ति”, “गोपनीय विधिक बैठक = साँठगाँठ”, “समाचारमे नाम = दोष” — ई सभ अधूरी व्याप्ति पर आधारित सम्भावित अनुमान अछि। उपन्यास बारम्बार समानता, सह-अवस्थिति आ कारण-सम्बन्ध कैं अलग करैत अछि। एतय नव्य-न्यायक महत्त्व ई जे अनुमानक वैधता केवल आकर्षक कथा पर नहि, हेतुक साध्यसँ नियत सम्बन्ध पर निर्भर।

## ७.४ शब्द-प्रमाण: वक्ता, प्रसंग आ विश्वसनीयता

अनुवादक स्वयं शब्द-प्रमाणक मध्यस्थ अछि। शिक्षकक सावधानी, मृणालक चेतावनी, राघवक विधिक सीमा, जुलियानाक आध्यात्मिक पाठ, आदित्यक जाँच-पद्धति—ई विश्वसनीयता अलग-अलग प्रकारक अछि। समाचारक शीर्षक, अज्ञात सन्देश, निगमीय आत्म-प्रचार, शशांकक डींग—ई कथन सेहो अछि, मुदा समान प्रमाण-मूल्य नहि। पोथी शब्दक “अर्थ” संग शब्ददाताक “अधिकार” आ “विश्वसनीयता” कैं जोड़ैत अछि।

## ७.५ उपमान: समानता संकेत, सिद्धि नहि

नोएडाक भुगतान-ढाँचा मकाऊक कागज जेकाँ लगैत अछि; एके शब्द अनेक करारमे अबैत अछि; समान ईमेल क्षेत्र वा परिचित नाम पुनः देखाइत अछि। उपन्यास बारम्बार चेतबैत अछि जे उपमान नवल प्रश्न खोलि सकैत अछि, मुदा स्वतंत्र प्रमाणक स्थान नहि लय। एहि पाठक कारण रचना “पैटर्न पहचान”क आधुनिक आकर्षण पर दार्शनिक रोक लगबैत अछि।

## ७.६ अनुपस्थित अपेक्षित चिह्न: नव्य-न्यायीय नकारात्मक परीक्षण

अन्तिम खण्डमे “जे नहि भेटल”क विशेष महत्त्व अछि। मुदा एकरा स्वतन्त्र प्रमाण-साधन कहि न्यायपरम्पराक सिद्धान्त कैं सरलीकृत करब उचित नहि। उपन्यासमे ई अधिक उपयुक्त रूपेँ नकारात्मक परीक्षण अछि: जँ कथित व्यापक सर्वर-नियन्त्रण सच होइत, त’ प्रवेश-अभिलेख, संशोधन-इतिहास, आदेश वा स्वतंत्र परिचालन चिह्नक किछु अपेक्षा होयत; जँ साँठगाँठ सच होइत, त’ विधिक गोपनीयताक बाहर किछु व्यावसायिक संकेत अपेक्षित; जँ संस्थागत प्रतिरोध कुचलल गेल, त’ आदेश, पुनःआवंटन वा कारण-पत्रक अपेक्षा। अनुपस्थिति तखने वजन पबैत अछि जखन उपस्थितिक उचित अपेक्षा पहिने सिद्ध हो। ई अत्यन्त परिपक्व ज्ञानमीमांसात्मक बिन्दु अछि।

## ७.७ “दू नव्य न्याय”

अन्तिम शीर्षक-शृंखला “दू नव्य न्याय” उपन्यासक आत्मालोचनात्मक आविष्कार अछि। पहिल नव्य-न्याय शशांकक चतुर विश्लेषण—जे शब्द बड़ा-छोट क’ लाभ लेब जानैत अछि। दोसर नव्य-न्याय नियमक समरूपता—जे अपन, मित्र, संस्था, वकील, समाचार-माध्यम आ अभियोग सभ पर एके कसौटी लगबैत अछि। ज्ञानक तकनीक नैतिक न्याय तबे बनैत अछि जखन पद्धति पक्ष बदलला पर नियम नहि बदलय।

## ८. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति सँ पठन

एहि पद्धतिमे पोथीक इतिहास “एक रेखा” नहि, पाँच समानान्तर रेखा अछि। (१) मिथिला—गंगेश, नव्य-न्याय, शिक्षित किन्तु सीमित आर्थिक अवसरवला युवक; (२) दिल्ली-नोएडा—प्रवासन, भाषा-बाजार, निगमीय श्रम, विधिक कार्यालय, सरकारी जाँच; (३) चीन-कैंटन-मकाऊ—भाषा, व्यापार, तकनीकी भुगतान आ प्रतिष्ठाक वैश्विक नेटवर्क; (४) संस्थागत भारत—आयुक्तालय, कर-गुप्तचर शाखा, अदालत, संस्करण, मुहरबन्द सामग्री; (५) व्यक्तिगत इतिहास—गरीबी, परिवार, मित्रता, लोभ, अपमान, प्रायश्चित। उपन्यासक शक्ति एहि रेखासभ कैं तुरन्त एक कारण-श्रृंखला नहि मानबामे अछि।

मिथिलाक दार्शनिक परम्परा एतय संग्रहालयीय गौरव नहि; दिल्लीक व्यवहारिक संसारमे परीक्षित जीवित विधि अछि। तथापि उपन्यास परम्परा कैं रोमानीकरण सेहो नहि करैत। शशांक नव्य-न्याय पढ़ने अछि, तइयो लोभ, चयनित मौन आ आत्म-प्रचार करैत अछि। ज्ञान नैतिकता कैं स्वचालित नहि बनबैत; पद्धति कैं जीवनमे समान रूपेँ लागू करब पड़ैत अछि। एहि बिन्दु पर “विदेह” दृष्टि इतिहासक गौरव आ वर्तमानक विडम्बना दुनू कैं एक संग देखैत अछि।

समानान्तर इतिहासक दोसर लाभ भारत-चीन सम्बन्ध कैं राष्ट्रवादी सरलता सँ बचेनाइ अछि। चीनी व्यक्ति सभ एकरूप शक्ति नहि; शिक्षक, पर्यटक, तकनीकी कर्मचारी, प्रतिनिधि, विक्रेता—अलग भूमिका अछि। भारतीय संस्था सेहो एकरूप नहि; निचला अधिकारी, ऊपरी सारांश, वकील, जाँचकर्ता, न्यायाधीश, समाचार-माध्यम—सभ अलग। एहि बहु-स्तरीयता सँ उपन्यास “विदेशी जाल बनाम भारतीय निर्दोषता” जेकाँ सरल कथा कैं अस्वीकार करैत अछि।

# ९. चरित्र-समीक्षा

## ९.१ शशांक झा: सूक्ष्मबुद्धि, भूख, गर्व आ आत्म-सीमा

शशांकक चरित्रक सबसँ महत्वपूर्ण विशेषता ई जे ओकर गुण आ दोष एकहि स्रोतसँ अबैत अछि। ओ सूक्ष्म भेद देखैत अछि; एहि कारण उत्कृष्ट अनुवादक बनैत अछि। ओ सूक्ष्म भेद कँ अपन पक्षमे मोड़ि सकैत अछि; एहि कारण नैतिक संकटमे पड़ैत अछि। ओ गरीबीसँ निकलय चाहैत अछि—ई मानवीय; ओ सम्मान चाहैत अछि—ई सेहो स्वाभाविक; मुदा “हम आवश्यक छी”क सुख धीरे-धीरे साक्ष्यसँ पैघ आत्म-छवि बनबैत अछि। अन्तमे ओकर मुक्ति निर्दोष घोषित होएब नहि, बल्कि अपन दोषक सही आकार स्वीकारब अछि।

## ९.२ मृणाल कर्ण: मित्र नहि, सममित कसौटी

मृणालक साहित्यिक महत्त्व सहायक मित्र होएबासँ अधिक अछि। ओ आरम्भे “आरोप अलग, शंका अलग, प्रमाण अलग” कहैत अछि; अन्तमे ओकर अपन नाम जाँचमे आएत तखन ओहि सूत्रक परीक्षा होइत अछि। यदि शशांक मित्रताक कारण नियम बदलैत, पूरा उपन्यास टूटि जाइत। मृणालक कठोरता मित्रताक उच्च रूप बनैत अछि—मित्र कँ प्रमाणक बाहर न बचाउ, न प्रमाण बिना दोषी मानू।

## ९.३ जुलियाना: पकड़बासँ स्थान देबाक पाठ

जुलियाना कथानकक आध्यात्मिक प्रतिपक्ष छथि। नव्य-न्याय विश्लेषण, विभाजन आ परिभाषा सिखबैत अछि; जुलियाना श्वास, विराम, सुनब आ स्थान देब सिखबैत छथि। ई विरोध नहि, पूरकता अछि। अनुवादकक दोष कखनो अत्यधिक पकड़ब—अर्थ पर स्वामित्व—होइत अछि; जुलियानाक पाठ अर्थ कँ स्थान देबाक नैतिकता सिखबैत अछि।

## ९.४ राघव भसीन: विधिक सीमा आ पेशागत मौन

राघवक चरित्र उपन्यासक गोपनीयता-विमर्श कैं संतुलन दैत अछि। विधिक विशेषाधिकार न अपराधक पर्दा मानल गेल, न पवित्र अछूत क्षेत्र। विषय-वस्तुक गोपनीयता बचैत अछि, मुदा बाहरी समय-क्रम, भूमिका आ स्वतंत्र व्यावसायिक चिह्न जाँचक योग्य रहैत अछि। ई सूक्ष्मता रचनाक विधिक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

## ९.५ आदित्य मिश्र आ दोसरा गामक जांचकर्ता: संस्थागत विवेक

आदित्य कथा मे केवल “अधिकारी” नहि; वर्गीकरणक अनुशासन अछि। “दोसरा गामक जांचकर्ता” एहि अनुशासन कैं आरो आत्मालोचनात्मक बनबैत अछि—ओ नायकक दार्शनिक भाषा कैं नायकक विरुद्ध लागू करबाक प्रस्ताव करैत अछि। एहि बिन्दु पर संस्था व्यक्ति-सुधारक बनैत अछि, मुदा उपन्यास संस्था कैं निर्दोष सेहो नहि मानैत; बदलल सारांश, प्राथमिकता-ह्रास आ संस्करण-भेद ओकर आलोचना करैत अछि।

## १०. भाषा, शैली आ कथन-तकनीक

गद्यक प्रधान गुण अवधारणात्मक स्पष्टता आ दृश्यात्मक साधारणता अछि। छोट वस्तु—कलम, चाह, कागज, मुहर, चलदूरभाष, प्रवेश-संकेत—दर्शनक भारी अवधारणा सँ जोड़ल गेल अछि। एहि सँ नव्य-न्याय कथानक पर आरोपित शास्त्रीय सजावट नहि लगैत; दैनिक क्रियामे प्रवेश करैत अछि। लेखक बारम्बार सूत्र-वाक्य प्रयोग करैत छथि। ई स्मरणीयता दैत अछि, पर किछु अध्यायमे प्रत्येक अन्त पर अगिला अध्यायक प्रश्न घोषित करबाक ढाँचा अधिक आवर्ती होइत अछि। शोधात्मक पाठक लेल ई संरचनात्मक स्पष्टता लाभकारी, किन्तु शुद्ध साहित्यिक कसावट लेल चयनित पुनरावृत्ति घटाओल जा सकैत अछि।

संवादसभ प्रायः कार्यात्मक अछि—प्रश्न, सीमा, प्रतिप्रश्न, वर्गीकरण। एहि कारण कथा भावुक विस्तारक बदला नैतिक-विवेचनक लय रखैत अछि। मृणाल, जुलियाना, राघव, आदित्यक स्वर अलग अछि: मृणाल लोक-व्यावहारिक; जुलियाना विरामप्रधान; राघव विधिक; आदित्य वर्गीकरणप्रधान। एहि स्वर-भेद सँ बहुस्वरता बनैत अछि।

## ११. उपन्यासक भाषिक गठन आ शैली

समग्र रूपेँ पोथीक मैथिली सक्षम, प्रवाहपूर्ण आ अवधारणात्मक अछि। “केवाड़ी”, “कोठली”, “चाह”, “पानि”, “बिलायल”, “अएना”, “पित्तरि” जेकाँ मैथिली रूप पर्याप्त रूपेँ प्रयुक्त अछि। तथापि प्रकाशन-पूर्व निखार लेल नीचाँक बिन्दु आवश्यक अछि।

| क्षेत्र | देखल प्रवृत्ति | संपादकीय निर्णय | कारण |
|---|---|---|---|
| रोमन/अंगरेजी पद | स्रोत-पाठमे तकनीकी पद जेना [vendor], [wallet], [payment gateway], [review], [owner], [beneficial ownership], [access], [server] आदि अनेक ठाम रोमन रूपमे अछि। | मुख्य मैथिली पद पहिने; आवश्यक मूल पद तुरन्त ब्रैकेटमे। उदाहरण: विक्रेता [vendor], अंकीय पर्स [wallet], भुगतान-द्वार [payment gateway]। | पाठकक प्रवाह, शब्दावलीक एकरूपता आ उपयोगकर्ताक निर्देश—रोमन/अंगरेजी केवल ब्रैकेटमे—पूरा होएत। |
| शीर्षक | “वीवो” आ “जुआ अनुप्रयोगक विक्रेता” जेकाँ शीर्षक | “वीवोक गेट [VIVO]”, “जुआ अनुप्रयोगक विक्रेता [vendor]” | अनुक्रमणिका आ मुख्य पाठक भाषिक नीति एकरूप। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | देवनागरीमे एकरूप कएल जा सकैत अछि; मूल ब्रान्ड/तकनीकी रूप ब्रैकेटमे। | जेकाँ रूप। | |
| “हर ” | स्वतंत्र “हर” दू प्रसंगमे भेटैत अछि। | “सभ बेर” अथवा प्रसंगानुसार “सभ प्रकारक/प्रत्येक” क मैथिली विकल्प। | स्थापित मैथिली शैली-नीतिक संगति। |
| चाह | “चाह” व्यापक रूपेँ अछि; निखारमे एहि रूप केँ एकरूप राखब। | यदि कोनो संपादकीय स्तर पर “चाय” वा भिन्न रूप आबय, “चाह” करू। | आन्तरिक शब्द-संगति। |
| व्याकरणिक मानव/अमानव भेद | “छथि” पात्र/व्यक्ति लेल उपयुक्त; निर्जीव वस्तु लेल “अछि/छै/छी” नीति निरन्तर जाँचल जाउ। | अन्तिम यांत्रिक खोजक बाद प्रसंग-पठन द्वारा मात्र सुधार। | अंध यांत्रिक प्रतिस्थापनसँ अर्थ बिगड़ि सकैत अछि। |
| भविष्य/प्रगतिशील रूप | “देत” आ “दैत” दुनू अछि; प्रयोग प्रसंगानुसार भविष्य बनाम नियमित/प्रगतिशील [habitual/progres | “देत” भविष्य, “दैत” नियमित/प्रगतिशील अर्थमे। | काल-अर्थक शुद्धता। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | sive] भेदसँ जाँचल जाउ। | | |
| विराम-चिह्न | मूल पाठमे कतहु पूर्णविरामक रूप, उद्धरण-चिह्न आ अपोस्ट्रोफ [apostrophe]- जेकाँ चिह्न मिश्रित अछि। | एक प्रकाशकीय नीति—देवनागरी वाक्य-समाप्ति, एकरूप उद्धरण-चिह्न, अनावश्यक रोमन अपोस्ट्रोफ [apostrophe] हटाउ। | दृश्य स्वच्छता आ शोध-संस्करणक स्तर। |
| शब्द-संयोजन | किछु यौगिक पदमे अन्तराल [space]/संयोजन बदलैत अछि—जेना भाषिक तकनीकी पद। | शब्दावली-सूची बनाक' एकरूप रूप अपनाउ। | दीर्घ उपन्यासमे संकल्पनात्मक शब्दक स्थायित्व आवश्यक। |

निखारक विशेष गुण ई अछि जे स्रोत-पाठमे उपयोगकर्ताक पसन्दक अनेक मैथिली रूप पहिनेसँ दृढ़ अछि: “केवाड़ी”, “कोठली”, “चाह”, “पानि”, “बिलायल”, “अएना”, “पित्तरि” आदि। तें अंतिम संपादनक लक्ष्य भाषा बदलनाइ नहि, विरल असंगतिसभ हटेनाइ हेबाक चाही।

## १२. रचनाक प्रमुख कलात्मक उपलब्धि

- नव्य-न्याय कैं मृत शास्त्रीय विरासत नहि, आधुनिक भाषा, कानून, अंकीय अभिलेख आ संस्थागत जाँचक जीवित पद्धति रूपेँ कथा मे उतारब।
- अनुवादकक पेशा कैं केवल द्विभाषिक कौशल नहि, नैतिक शक्ति-संबंध रूपेँ देखब—ककर अर्थ कतेक बड़ा/छोट कएल जाए, ई राजनीतिक प्रश्न बनैत अछि।
- अपराध-कथा जेकाँ सामग्री होइतहुँ सनसनीक बदला प्रमाणक श्रेणीकरण पर बल देब।
- मित्रता कैं भावुक निष्ठा नहि, समान कसौटीक परीक्षा बनाबयब।

- समाचार-माध्यम, सरकारी सारांश, मुहरबन्द सामग्री, विधिक परामर्श, निगमीय करार आ निजी सन्देश—सभकेँ अलग भाषिक विधा मानि हुनक प्रमाण-मूल्य अलग राखब।
- अन्तिम निर्णयमे पूर्ण निर्दोषता वा पूर्ण अपराधक सरल समाधान अस्वीकार करब; सीमित सिद्धि, सीमित दोष, सीमित मौन स्वीकारब।

## १३. रचनाक शिल्पगत सीमा

पहिल सुधार-क्षेत्र आवर्ती अध्याय-अन्त अछि। अनेक अध्याय अगिला अध्यायक प्रश्न स्पष्ट क' समाप्त होइत अछि—ई धारावाहिक पठनमे उपयोगी, पर १०० अध्यायक एकमुष्ट पोथीमे यांत्रिकता उत्पन्न करैत अछि। किछु संक्रमण केँ मौन, दृश्य वा चरित्र-क्रिया पर समाप्त कएल जाए त' ध्वनि बढ़त। दोसर, दार्शनिक सूत्र कतहु-कतहु पात्रक स्वाभाविक अनुभूति सँ अधिक "स्पष्ट निष्कर्ष" रूपेँ अबैत अछि। चुनिन्दा ठाम सूत्र घटा दृश्य केँ अर्थ वहन करय देब उपन्यासक साहित्यिक घनत्व बढ़ाओत। तेसर, तकनीकी अंगरेजी पदक मैथिलीकरण आ ब्रैकेट-नीति एकरूप कएल जाए। चारिम, संस्थागत पात्रसभमे किछु अतिरिक्त व्यक्तिगत विशेषता द' देल जाए त' अदालती/जाँच खण्डक मानवीय बहुलता आरो गहिर होएत।

## १४. समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन

"अनुवादक" केँ केवल अपराध, चीन-सम्बद्ध व्यापार वा विदेशस्थ [offshore] वित्तीय छायाक उपन्यास कहब ओकर साहित्यिक आकार छोट करब होयत। एकर केन्द्र "ज्ञानक नैतिकता" अछि। शशांकक यात्रा मिथिला सँ दिल्ली, दिल्ली सँ मकाऊ, मकाऊ सँ अदालत आ अदालत सँ आत्म-निर्णय धरि चलैत अछि; मुदा वास्तविक यात्रा "हम बुझैत छी" सँ "हम एतबे सिद्ध कहि सकैत छी" धरि अछि। एहि परिवर्तनमे नव्य-न्याय दर्शन कथानकक विषय मात्र नहि, कथानकक व्याकरण बनैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ रचनाक ध्वनि शब्दक नीचे चलैत शक्ति, लज्जा, लोभ आ औचित्यक कथा अछि। पाश्चात्य कथाशास्त्रक दृष्टिसँ ई बहुस्वर, दस्तावेजी यथार्थवाद आ नैतिक आत्म-पहिचानक उपन्यास अछि। नव्य-न्यायीय दृष्टिसँ ई प्रमाणक वर्गीकरण, अनुमानक मर्यादा, शब्ददाताक विश्वसनीयता, उपमानक सीमा आ अपेक्षित चिह्नक अनुपस्थिति पर आधारित आधुनिक ज्ञानमीमांसात्मक आख्यान अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिसँ देखला पर मिथिला, दिल्ली, नोएडा, मकाऊ, निगम, राज्य, अदालत आ व्यक्तिगत स्मृति एकहि समयमे चलैत इतिहासक अलग रेखा अछि—जतय छेदन प्रमाणित कएल जएबाक चाही, कल्पित नहि।

रचनाक अन्तिम महत्त्व एहि वाक्य मे समेटल जा सकैत अछि: न्याय तखन शुरू होइत अछि जखन शब्द अपन पक्षक सेवक होएब छोड़ि अपन प्रमाणित सीमाक सेवक बनैत अछि। “अनुवादक” एहि सीमा-अनुशासन केँ कथा, दर्शन आ नैतिक अनुभवक स्तर पर एक संग स्थापित करैत अछि।

## १५. निष्कर्ष

समग्र १०० अध्यायक पठनसँ स्पष्ट अछि जे “अनुवादक”क स्थापत्य आकस्मिक घटनाक ढेर नहि। प्रत्येक प्रमुख श्रृंखला—मिथिलासँ दिल्ली, भाषाक साधना, कॉन्ट्रैक्ट आ छाया, कैंटनिजक केवाड़ी, मकाऊक दर्पण, भोज-देवता-अपमान, समझौताक दरार, दू नव्य न्याय—एक नवल ज्ञानमीमांसात्मक समस्या जोड़ैत अछि। प्रारम्भमे प्रश्न “अर्थ की?”; मध्यभागमे “कथनक स्रोत की?”; तकर बाद “सम्बन्ध कतेक सिद्ध?”; अन्तमे “जे नहि भेटल, से कतेक महत्त्वपूर्ण?” आ “की हम अपन प्रिय/अपन विरोधी दुनू पर एके नियम लगा सकैत छी?” एहि क्रमिक विस्तारक कारण उपन्यासक बौद्धिक संरचना संगत अछि।

भाषिक स्तर पर पोथी मैथिली गद्यक आधुनिक विषय-विस्तारक उदाहरण अछि—निगम, अंकीय अभिलेख, विधिक विशेषाधिकार, भुगतान, सर्वर, स्वामित्व, समाचार-रूपान्तर, न्यायिक प्रतिपरीक्षा जेकाँ आधुनिक क्षेत्र कैं मैथिली वाक्य-संरचनामे वहन करब संभव बनबैत अछि। अंतिम निखारमे रोमन तकनीकी पदकैं ब्रैकेटमे सीमित करब, विरल “हर” कैं मैथिली विकल्पसँ बदलब, काल-रूप आ विराम-चिह्नक एकरूपता जाँचब, आ आवर्ती सूत्रक चयनित संक्षेप रचनाकैं शोधात्मक आ साहित्यिक दुनू स्तर पर आरो दृढ बनाओत।

## अध्याय १ — मिथिलाक अनुवादक : भाषिक स्वप्नक भीतर सामाजिक अभाव आ नैतिक पूर्वाभास

‘मिथिलाक अनुवादक’ उपन्यासक आरम्भमे परदेश-गमनक परिचित आख्यानक उपयोग करैत अछि, मुदा एकरा केवल अभावग्रस्त युवकक सफलताक कथा नहि बनबैत। शशांक झा विद्या अर्जित कएने अछि, तथापि ओकर परिवारक ऋण, चूबैत छप्पर आ छोट बहिनक पढ़ाइ ओकर ज्ञानक सामाजिक मूल्य पर प्रश्नचिह्न लगबैत अछि। गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्याय पढ़बाक कारण ओकर बुद्धि तीक्ष्ण अछि; तथापि जीविकाक बाजार ओहि तीक्ष्णताक लेल सीधा स्थान नहि देलक अछि। एहिठाम उपन्यासक पहिल वास्तविक टकराव ज्ञान आ अज्ञानक बीच नहि, बल्कि प्रतिष्ठित परम्परागत ज्ञान आ बदलैत श्रम-बाजारक बीच अछि। गामक पंडितजीक ‘बातक देह नहि, ओकर अस्थि गिनैत अछि’ वला टिप्पणी विनोदक सतह पर व्यक्तित्वक संक्षिप्त परिचय अछि; ‘अस्थि’क रूपक आगूक घटनामे सम्बन्ध, सीमा आ प्रमाण अलग करबाक ओकर अभ्यस्त पद्धतिक संकेत बनैत अछि। मुदा ई पद्धति पेट भरबाक साधन नहि बनि सकल, एही विरोधाभाससँ कथाक प्रवाह उत्पन्न होइत अछि।

आख्यानक दृष्टिबिन्दु मुख्यतः शशांकक अनुभूतिक निकट अछि, मुदा कथावाचक ओकर भविष्यसँ आंशिक परिचित रहि वर्तमान दृश्य पर एक प्रकारक पूर्वाभासक छाया छोड़ैत अछि। उदाहरणार्थ, मायक ‘ककर अनुवाद?’ प्रश्नक उत्तरमे शशांक तीन श्रेणीक लोकक अनुवादक कल्पना करैत अछि—जे नहि बुझैत, जे बुझैत अछि मुदा कहि नहि पबैत, आ जे कहैत अछि मुदा नुकबैत अछि। तेसर श्रेणी पूर्ववर्ती दुनू सँ भिन्न अछि, कारण ओतय भाषिक अभावक बदला जानि-बुझि कएल मौन अछि। शशांक स्वयं उत्तरक पूरा अर्थ नहि बुझैत; कथावाचक सेहो एहि आत्म-अज्ञानकेँ स्पष्ट करैत अछि। एकर फल ई होइत अछि जे पाठक नायकक प्रतिभा सँ प्रभावित

भऽ सकैत अछि, मुदा ओकर निर्णय-विवेक पर आरम्भसँ निरपेक्ष विश्वास नहि करैत। एहन सीमित आंशिक पूर्वज्ञान कथानककेँ सूक्ष्म व्यंग्य दैत अछि। तीन पोथी—'तत्त्वचिन्तामणि'क टिप्पण, चीनी वार्तालापक आरम्भिक पुस्तक आ खाली कापी—अध्यायक केन्द्रीय वस्तु-प्रतीक अछि। पहिल अर्जित बौद्धिक परम्परा, दोसर कमायब योग्य नव भाषाक सम्भावना, आ तेसर ओ अभिलेख अछि जाहिमे अनुभवकेँ प्रत्यक्ष-अनुमानक कसौटी पर फेर लिखल जाएत। एहि त्रयीमे तेसर वस्तु विशेष अर्थवान अछि: पोथी ज्ञान दैत अछि, मुदा कापी ज्ञानक उपयोगक हिसाब माँगैत अछि। 'प्रत्यक्ष बिना अनुमान नहि' कापीक आरम्भिक सूत्र अछि; तथापि सूत्रक एहि संक्षिप्त रूपकेँ शास्त्रीय नव्य-न्यायक पूर्ण सिद्धान्त नहि मानबाक चाही। उपन्यास स्वयं ओकरा नायकक व्यवहारिक स्व-अनुशासनक चिह्नक रूपमे रखैत अछि, दार्शनिक ग्रन्थक हूबहू विधानक रूपमे नहि। आलोचनाक लेल ई भेद आवश्यक अछि, अन्यथा आख्यानक पात्रक स्वलिखित सूत्रकेँ असावधानीसँ ऐतिहासिक शास्त्र-वचन बना देबाक जोखिम रहत।

दिल्लीक पहिल भाषा-अनुभव वर्णनमे बोलीक बहुलता केँ स्वर, देहभंगिमा आ मौनक लम्बाइसँ जोड़ल गेल अछि। भोजपुरी, पंजाबी, हरियाणवी, अँगरेजी, हिन्दी आ चीनी एकहि परिवेशमे अबैत अछि, मुदा वर्णन लोकक सामाजिक भेटघाटक भाषा-स्थितिक प्रामाणिक रचनात्मक चित्र अछि, न कि दिल्लीक जनसांख्यिकीय आँकड़ाक दावा। भाषा एतय केवल अनुवादयोग्य शब्द-समूह नहि; सम्बन्धक परिवर्तनशील व्यवस्था अछि। भारतीय विद्या भवनक 'ध्वनि, वाक्य, व्यवहार' त्रिक आ लाल किलाक पर्यटक-संवाद ओहि विस्तारकेँ जीवनक अभ्यासमे बदलैत अछि। ओ पहिल अनुभवमे अधूरा बुझैत अछि, पुनः सुनैत अछि, आ किछु टका कमबैत अछि; अर्थक सुनिश्चितताक पूर्वे आत्मविश्वास नहि लाबब कथा ओकरा एक मूल्य रूपेँ स्थापित करैत अछि।

जुलियानाक 'अहाँ शब्द सीखैत छी, श्वास नहि' वला टिप्पणी नायकक भीतर ज्ञान-सम्बन्धी दोसर अनुशासनक आरम्भ अछि। नव्य-न्यायक बौद्धिक विभाजनक बगलमे सुनबाक धैर्य आ दोसराक भाषाक लेल 'स्थान' बनाबबाक विचार ठाढ़ होइत अछि। ई दू पद्धति एक-दोसराक विरोधी नहि; एक विश्लेषणक आग्रह करैत अछि, दोसर ग्रहणशीलताक। उपन्यासक व्यञ्जना एहिमे अछि जे अनुवादकक भविष्यक नैतिक सीमा केवल पाठक व्याकरणसँ नहि बचत, ओकरा दोसर मनुष्यक असुरक्षाक प्रति उत्तरदायी सेहो रहय पड़त। लाल किलाक प्रसंगमे अनुवादकेँ 'विश्वासक आरंभ' कहबाक साथेँ असुरक्षाकेँ बचाओल अथवा बेचल जा सकबाक सम्भावना जोड़ल गेल अछि। एहि बिन्दु पर ध्वनि आ औचित्य एकसंग काम करैत अछि: वाक्य तत्काल अनुभवक निष्कर्ष अछि, आ भविष्यक संकटक सूचनासेहो।

पाठक अन्तभागमे अचानक नोएडा, मरम्मतक ठेका, सजीव द्यूत-क्रीड़ा यंत्र, पराया खाता, हवाला आ गुप्त मुद्रा-विनिमयक सम्भावित संसारक नाम सुनैत अछि। एकरा एखन घटित घटनाक तथ्य नहि मानब; ई कथावाचकक भविष्यसूचक कथन अछि। एकहि आरम्भिक अध्यायमे एतेक विषयक संकेत कथाक व्यापक सामाजिक विस्तारक अनुमान दैत अछि, मुदा एहि तकनीकक एक सीमा सेहो अछि: प्रत्यक्ष दृश्य सँ विकास पाबएवाला भयक बदला कथावाचक किछु भय पहिनहि नाम लेलक अछि। उपन्यासक आगूक अध्यायसभ जँ एहि नामसभकेँ स्वतंत्र कारण-क्रम आ अनुभवसँ प्रमाणित करैत अछि तखन ई संकेत सार्थक पूर्वरचना सिद्ध होयत; नहि तँ युक्तिपूर्ण रहस्यक स्थान पर सूचना-अधिक्यक आशंका बनत। एहि अध्यायमे पर्याप्त निश्चित एतबे अछि जे नायक सीमा पहिचानबाक क्षमता राखैत अछि, आ भाषा ओकरा नव अवसर दैत अछि; किछु भविष्यवाचक कथन मात्रसँ नायकक दोष अथवा बाह्य अपराध सिद्ध नहि।

अध्यायक सौन्दर्य सामाजिक अभाव, विद्यासम्बन्धी आत्मगौरव आ शारीरिक भाषिक अभ्यासक संयोगमे अछि। मातृसंवादक आत्मीयता, स्टेशनक ठट्ठा,

पहाड़गंजक कोठली, लाल किलाक असफल उच्चारण आ ताओ-मन्दिरक भिन्न अनुशासन मिलि प्रस्थानकेँ बहुपरत बनबैत अछि। सम्भावित शैलीगत सीमा ई जे अनेक दृश्य तुरन्त सूक्ति पर समाप्त होइत अछि; निरन्तर ई प्रवृत्ति रहला पर पात्रक अस्पष्टता स्वाभाविक रूपसँ खुलबाक बदला कथावाचक द्वारा जल्दी व्याख्यायित भऽ सकैत अछि। तथापि पहिल अध्याय अपन मुख्य काम सम्पन्न करैत अछि: प्रतिभाक भीतर उपस्थित साधारण मानवीय मान-अपमानक भूख देखबैत अछि, आ अनुवादककेँ शब्दक व्यापारसँ आगाँ नैतिक उत्तरदायित्वक पात्र बनबैत अछि।

## अध्याय २ — तीन पोथीक पाठ : ध्वनि, आशय आ साक्ष्यक प्रशिक्षण

दोसर अध्याय पहिल अध्यायक प्रस्थानकेँ प्रशिक्षणक ठोस समयमे बदलैत अछि। भारतीय विद्या भवनक कक्षामे शशांकक बौद्धिक कुशलता पहिल बेर ओहि वस्तुसँ टकराइत अछि जकरा ओ तुरन्त वर्गीकृत नहि कऽ सकैत—चीनी स्वर। संस्कृत दीर्घ-ह्रस्व आ मैथिली उच्चारणक ओकर पूर्वज्ञान सहायक होइतहुँ पर्याप्त नहि। भाषा-शिक्षाक एहि दृश्यक अर्थ केवल नव विषय कठिन होएबाक बात नहि; एकर भीतर उत्कृष्ट स्थानीय विद्या अपन मर्यादा चिन्हबाक अवसर पबैत अछि। स्वर उठब, खसब, मुड़ब, आ ताहिसँ अर्थ बदलि जेबाक विवरण ध्वनिविज्ञानक व्यापक तकनीकी प्रतिवेदन नहि, अपितु नायकक अभिमानक संवेदनात्मक परीक्षा अछि। उपन्यास एतय तार्किक सूक्ष्मता कैं भाषिक विनम्रताक विरोधी नहि बनबैत; ओकर पुनः उपयोग सिखबैत अछि।

अध्यायक तीन पोथी एक क्रम रचैत अछि—ध्वनि, वाक्य, व्यवहार—मुदा एहि क्रमक भीतर जटिलता आरो अछि। ध्वनिमे अर्थक भौतिक आधार सुनब पड़ैत अछि; वाक्यमे कथनक सामाजिक परिस्थिति चिन्हब; व्यवहारमे सम्मान, दूरी, आग्रह आ अस्वीकृतिक परम्परा बुझब। शशांक ‘ध्वनि प्रत्यक्ष, वाक्य शब्द, व्यवहार अनुमान’ लिखैत अछि। ई पात्रक निर्मित सीखबाक योजना अछि, पूर्ण प्रमाणमीमांसाक अपरिवर्तनीय वर्गीकरण नहि। व्यवहार स्वयं प्रत्यक्ष अवलोकनक विषय सेहो भऽ सकैत अछि; वाक्यक अर्थ अनुमानसँ सेहो खुलि सकैत अछि। एहि दार्शनिक सीमाकेँ पहिचानलाक बाद दृश्य अधिक रोचक होइत अछि, कारण ओ शशांकक तर्क-शिक्षाक उपयोगिता संग तकरा योजनाबद्ध सरलताक दोष सेहो प्रकट करैत अछि।

शिक्षकक उत्तर—प्रसंगक सेवक होएबाक संग मिथ्या नहि जोड़बाक मूल विचार—अध्यायक वास्तविक नैतिक केन्द्र अछि। शशांक जखन पूछैत अछि जे शब्द ठीक हो मुदा भाव भिन्न हो तखन अनुवाद की करय, शिक्षक प्रसंग

बुझबाक अधिकार दैत छथि, किन्तु प्रसंगक नाम पर मनगढ़न्त बात जोड़बाक निषेध करैत छथि। यतय सही अनुवाद शाब्दिक समानताक यान्त्रिक योग नहि, अपितु स्रोत-पाठ, वक्ता आ परिस्थिति बीच जिम्मेदार सम्बन्ध अछि। मुदा ई जिम्मेदारी अनुवादककेँ स्रोत लेखकक स्थान नहि दैत। समीक्षाक दृष्टिसँ ई प्रश्न भाषाशास्त्रीय सत्यक दार्शनिक प्रमाण नहि, बल्कि उपन्यासक कलात्मक मूल्य-बोधक निष्कर्ष अछि, जकर आगामी कड़ीमे परीक्षण अपेक्षित अछि।

लाल किलाक दृश्य अध्यायक सबसँ प्रभावी नाटकीय खण्ड अछि। तीन प्रयासमे पहिल दू असफलता आ तेसरमे एक वृद्ध पुरुषक दोहरायल प्रश्न शशांकक भाषिक प्रगतिक दृश्य प्रमाण दैत अछि। विशेष महत्त्व एहि बातक अछि जे ओ नहि बुझल बात फेर कहल जेबाक आग्रह करैत अछि। अनुमानसँ रिक्त स्थान भरब आसान छल; प्रश्न दोहरबैत शशांक एक क्षणक सार्वजनिक लाज स्वीकार करैत अछि। एही छोट निर्णयमे नव्य-न्यायक ‘संशय’ जीवित मनुष्यक व्यवहार बनैत अछि। ई नायकक प्रथम उपलब्धि धाराप्रवाह बाजि सकब नहि, बल्कि अज्ञान स्वीकार कऽ सकब अछि। पाठक एहि जगह ओकरा केवल प्रशंसनीय नहि, संभाव्य मनुष्य रूपेँ देखैत अछि, कारण कान गरम होएब, कंठ अटकब आ स्वतः लाज आबब ज्ञान-शिक्षाकेँ मानवीय बनबैत अछि।

दिल्लीक बसक भीतर विभिन्न आवाजक स्वर-मानचित्र बनबैत शशांक लोकक भाषाकेँ न्यायिक शब्दावलीसँ जोड़ैत अछि। पान बेचयवला, पुलिस, छात्र आ थाकल स्त्री एकहि उपमानक भीतर नहि समाहित होइत; प्रत्येकक सामाजिक स्थिति ओकर आवाजक लयमे उपस्थित अछि। एहि खण्डमे उपन्यास बहुभाषिताक सामाजिक अनुभूति पकड़ैत अछि। तथापि सभ आवाजक भीतर ‘स्वरक न्याय’क एकहि सामान्य सूत्र देखबाक प्रवृत्ति समीक्षक लेल आलोचनात्मक प्रश्न छोड़ैत अछि: की अलग-अलग शक्ति-सम्बन्ध आ वर्ग-स्थितिक विशिष्टता समान भाषिक रूपकमे दबि जाइत अछि? पाठ स्वयं स्थानीय दृश्यसभक सहायता सँ एहि जोखिमकेँ पूर्णतः स्वीकार नहि करैत, मुदा सामान्य सूक्ति बहुत तेजी सँ आबैत अछि।

जुलियानाक नाम दोसर अध्यायक अन्तमे अनुपस्थित पात्रक प्रभाव रूपेँ प्रकट होइत अछि। पहिल अध्यायमे हुनक भेटक कारण पाठक जानैत अछि जे आगामी प्रशिक्षण केवल संस्थागत कक्षामे सीमित नहि रहत; एतय पात्रक भविष्य-परिचय आ कथाक क्रममे हलुक पुनरावृत्ति अछि। एहि पुनरागमनसँ सामाजिक भाषा-विश्वक दू केन्द्र स्पष्ट होइत अछि—औपचारिक शिक्षण संस्था आ समुदाय आधारित संवाद-क्षेत्र। किन्तु अध्याय अभी जुलियानाकेँ सम्पूर्ण विचारशील व्यक्ति रूपमे विकसित नहि करैत; हुनक उपस्थितिक अपेक्षा बनबैत अछि। ई अपेक्षा स्वाभाविक रचनात्मक उपकरण अछि, मुदा नारी पात्रकेँ केवल पुरुष नायकक आत्मसुधारक साधन बनाबबाक जोखिम आगामी पाठमे जाँचबाक होयत।

अन्तिम सूत्र ‘अनुवादकक पाप शब्दमे नहि, उद्देश्य मे जन्म लैत अछि’ नायकक कापीमे लिखल अछि। एहि कथनक कलात्मक शक्ति ओहि विरोधाभासमे अछि जे शशांक एखन दोसराक उद्देश्यक खोजमे नहि, अपन प्रशिक्षणमे अछि; मुदा कथा पहिनहि पाठककेँ सावधान कऽ रहल अछि जे अनुवादकक आचरणपर उद्देश्य निर्णायक प्रश्न बनत। नव्य-न्यायीय समीक्षामे निहित उद्देश्यकेँ बाह्य कार्यसँ स्वतः सिद्ध नहि मानल जाएत; पाठक लेल ई सूक्ति नैतिक समस्या उठबैत अछि, पूर्ण निर्णय नहि सुनबैत। अध्याय प्रायः शिक्षण-आख्यान जेकाँ सुव्यवस्थित अछि; प्रत्येक प्रसंगक अन्तिम सूक्तिक पुनरावृत्ति ओकर सम्भावित बनावट-बोधक सीमा अछि। तइयो भाषिक असफलताकेँ सीखबाक नैतिक विजय बनाबबाक दृष्टिसँ ई अध्याय पहिल अध्यायक अपेक्षा अधिक नाटकीय ठोसपन प्राप्त करैत अछि।

## अध्याय ३ — मिथिलासँ दिल्ली ३ : संदिग्ध भुगतानक कागज, अस्वीकार आ मित्रताक आरम्भ

तेसर अध्यायमे उपन्यास पहिल बेर बौद्धिक साधनाक अपेक्षाकृत सुरक्षित परिवेशसँ आर्थिक संकट आ संदिग्ध व्यापारिक व्यवहारक ठोस दृश्य धरि पहुँचैत अछि। पहाड़गंजक कोठलीक बाकी किराया, अगिला शिक्षण-शुल्क आ कम कमाइ केवल पृष्ठभूमि नहि; ई आर्थिक दबाव कथा-विकासक कारण अछि। सूचना-पट्ट पर अधिक पारिश्रमिकवला विज्ञापन देखलापर शशांकक भीतर विद्यार्थी प्रश्न करैत अछि आ भूख उत्तर दैत अछि—पहिने जा कऽ देख। ई विभाजन महत्वपूर्ण अछि: कथा आर्थिक आवश्यकता कैं नैतिक दुर्बलताक पर्याय नहि मानैत, मुदा बतबैत अछि जे दुर्बल परिस्थिति निर्णयक समयकैं संकुचित करैत अछि। औचित्यक कसौटी पर शशांकक दफ्तर धरि जेबाक निर्णय आपत्ति-रहित अछि; ओहिठाम की देखैत अछि आ की स्वीकार करैत अछि, से पृथक परीक्षणक विषय अछि।

दफ्तरक मेज पर बनल तीरयुक्त भुगतान-चित्र अध्यायक निर्णायक वस्तु-साक्ष्य अछि। ग्राहक, भुगतान-द्वार, अनेक छोट खाता, नकद वा दोसर माध्यम आ अलग नामक पर्स देखिकए शशांक वास्तविक स्वामित्वक प्रश्न उठबैत अछि। कथा ई प्रश्नकैं अपराध-सिद्धि नहि बनबैत: कागजमे अलग नामक खाता होएब प्रत्यक्ष अछि, अपराधक आशय अनुमान; किछु उत्तरक अस्पष्टता संदेह बढ़बैत अछि, मुदा प्रमाणक सम्पूर्ण श्रृंखला नहि। यहीं नव्य-न्यायक पद्धति पाठक द्वारा जाँचल जा सकैत अछि। ‘पराया खाता’, ‘भुगतान-द्वार’, ‘हवाला’ आ धनक स्रोत अस्पष्ट करबाक ‘लेयरिंग’ सन शब्दक अनुवाद केवल तकनीकी प्रशिक्षण नहि; नामक परिवर्तनसँ सामाजिक अर्थ कोना नरम पड़ि सकैत अछि, तकर उदाहरण अछि। तथापि लेखक किछु तकनीकी व्याख्या पात्रक मुखसँ एकसाथ दैत छथि, जाहिसँ दृश्य क्षण भरि लेल संवादसँ अधिक पाठशाला बनि जाइत अछि।

भारतीय युवकक ‘अहाँ अनुवादक छी कि लेखा-परीक्षक?’ प्रश्न भूमिका-सीमाक संघर्षकेँ प्रत्यक्ष करैत अछि। ई प्रश्नक एक व्यावसायिक पक्ष उचित बुझाइत अछि—अनुवादक स्वयं लेखा-परीक्षण अधिकारी नहि; मुदा पात्र प्रश्नक उत्तर देबाक बदला ओकर अधिकार पर आक्रमण करैत अछि। एहि असमानताक कारण शशांकक सावधानी अर्थवान बनैत अछि। ताहिसँ सेहो ई निष्कर्ष नहि निकलैत जे दफ्तर अपराधक केन्द्र सिद्ध भऽ गेल। मूल पाठ सावधानीपूर्वक एहि निर्णयकेँ टारैत अछि। नायक लिखित कार्य-सीमा आ अपन खाताक गैर-उपयोगक आश्वासन चाहैत अछि; स्पष्ट आश्वासन नहि भेटलापर काज छोड़ि दैत अछि। ओकरा एहि अस्वीकृतिक तत्काल आर्थिक मूल्य चुकाबय पड़ैत अछि—आधा दिन बिनु पारिश्रमिक, कम बस-भाड़ा आ बाकी देन। एही मूल्यक कारण निर्णय केवल उपदेशक मंचीय विजय नहि रहि जीवनक कठिन विकल्प बनैत अछि।

मृणाल कर्णक प्रवेश संयोगसँ होइत अछि, मुदा घटनाक कारण-क्रममे तकर भूमिका महत्वपूर्ण अछि। ओ शशांकक मैथिली सुनि परिचय करैत अछि; अपन स्थायी रोजगार नहि होएबाक बात बतबैत अछि; बाह्य चित्र देखिकए सावधानी देबैत अछि। अपन नाम, हस्ताक्षर आ बैंक खाता कागजमे बिनु बुझने नहि देबाक सलाह नायकक स्वायत्तताकेँ बचबैत अछि। मृणाल स्वयं कागजक निर्णायक स्वामी अथवा पुलिस-जाँच अधिकारी नहि; ओकर सावधानी व्यावहारिक अनुभव पर आधारित अछि। मित्रताक आरम्भ एतय वर्गीय समता आ भाषिक पहचानक दुइ आधार पर होइत अछि। तथापि पृष्ठभूमि दूरसँ मैथिल चिन्हबाक उक्ति एक सामान्य सांस्कृतिक छवि अछि; प्रत्येक प्रवासी मैथिलक अनुभवक सार्वभौमिक वर्णन नहि।

दफ्तरसँ बाहिर चाहक दृश्य तेसर अध्यायक भावात्मक केन्द्र अछि। शशांक लज्जा, भूख आ असफल कमाइक बीच ठाढ़ अछि; मृणाल दू गिलास चाह किनैत अछि, मुदा एहि सहयोगकेँ दानक ऊँच-नीच नहि बनबैत। काल्हि चाह पियएबाक प्रस्ताव आर्थिक असमानताकेँ अस्थायी मानवीय बराबरीमे बदलैत अछि। भारतीय रस-विवेचनक दृष्टिसँ करुणाक हलुक स्पर्श आ सख्यभावक उदय एतय सम्भव अछि; मुदा दृश्यकेँ पूर्ण करुण-रस अथवा केवल हास्य-

व्यवहारमे सीमित करब ओकर जटिलता घटेब। मृणालक 'आरोप अलग, शंका अलग, प्रमाण अलग' कथन पहिल दू अध्यायमे शशांकक भीतर विकसित पद्धतिक सामाजिक प्रतिध्वनि बनैत अछि। महत्त्वपूर्ण ई जे मित्र नव्य-न्यायक विद्यार्थी नहि; तर्कक उपयोगिता पोथीसँ बाहर व्यवहारिक नागरिक सतर्कतामे सेहो सिद्ध होइत अछि।

रातिक कापीमे शशांक पाँच श्रेणी लिखैत अछि—प्रत्यक्ष, अनुमान, आरोप, मिथ्या आरोपक सम्भावना आ सिद्ध तथ्य। एहि सूचीसँ लेखक साक्ष्यक न्यूनतम अनुशासन आ आत्म-रक्षाक सम्भावना एक साथ देखबैत छथि। किन्तु एहि वर्गीकरणमे एक दार्शनिक सावधानी अपेक्षित अछि: 'आरोप' प्रमाणक पारम्परिक स्वतन्त्र श्रेणी नहि, बल्कि सामाजिक-विधिक कथनक अवस्था अछि; 'सिद्ध तथ्य' सेहो जाँचक निष्कर्ष अछि, प्रत्यक्षक समतुल्य मूल प्रमाण नहि। उपन्यासक आलोचना एहन भेद स्पष्ट कएलाक बाद अधिक विश्वसनीय बनैत अछि। पाठ स्वयं नायकक कापीकेँ दार्शनिक प्रामाणिक ग्रन्थ नहि, जीवन-लेखा बनाकए उपस्थित करैत अछि।

अध्यायक अन्तमे 'लेयरिंग' केवल धन-प्रवाहक शब्द नहि रहि भूख, महत्त्वाकांक्षा, तर्क, भाषा आ शिष्टाचारक मनोवैज्ञानिक तहक उपमान बनैत अछि। ई रूपक सफल अछि, कारण पात्र हालहि मे धनक जटिल तह देखलक अछि आ अपन मनक तह बुझबाक प्रयास करैत अछि। परन्तु अपराध-संबद्ध वित्तीय तकनीकसँ मनुष्यक साधारण आत्मरक्षा आ स्वप्नकेँ समान ठहराउल न जाय; उपन्यासक वाक्यक कलात्मक साम्यता विधिक समता नहि। तेसर अध्याय अपन पहिले दू अध्यायसँ आगाँ बढ़ि स्पष्ट क्रिया, प्रतिरोध, आर्थिक हानि आ मित्रताक जन्म देखबैत अछि। एकर सीमा तकनीकी शब्दावली आ नैतिक सूत्रक अधिक व्याख्या अछि, मुदा एकर उपलब्धि अपराधक सनसनी बनौने बिना संदेह, अप्रमाणित आरोप आ सावधान निर्णयकेँ एकहि दृश्य-केंद्रमे राखब अछि।

## अध्याय ४ — मिथिलासँ दिल्ली ४ : मकाऊक उजास आ चयनित मौनक प्रथम दरार

चारिम अध्याय तेसरक अस्वीकृतिक तुरन्त बाद एक नव प्रस्ताव आनैत अछि। दफ्तरक संदिग्ध भुगतान-काज छोड़ि देनिहार शशांक आब तीन दिनक मकाऊ-यात्राक बड़ पारिश्रमिकवला निमन्त्रण पबैत अछि। यदि उपन्यास केवल नैतिक दण्ड-पुरस्कारक यान्त्रिक आख्यान होइत, तखन सावधानीक फल तत्काल सुरक्षित सफलता होइत; मुदा एतय सफलता स्वयं नब परीक्षण बनैत अछि। मृणालक आग्रहपर लिखित कार्य-सीमा माँगल जाएत—भाषिक सहायता, प्रस्तुति, प्रश्नोत्तर, सीमित परीक्षण-प्रवेश; ग्राहक-धन अथवा खाता-सञ्चालन नहि। लिखित सीमा महत्त्वपूर्ण दस्तावेज अछि, कारण ई नायकक उत्तरदायित्वक बाह्य आकार दर्ज करैत अछि। तथापि कागज पर सीमा लिखल रहब आ मनमे तकर पालन करब अलग प्रक्रिया अछि; कथा एहि अन्तरालकेँ अपन केन्द्रीय तनाव बनबैत अछि।

मकाऊक होटल-कोठली, उज्जर चादर, फल, काँच आ प्रकाश नायकक पहाड़गंजक सस्त कोठलीसँ विरोधी दृश्य रचैत अछि। शशांक खिड़कीक काँचमे अपन प्रतिबिम्ब देखैत अछि; शरीर आ कपड़ा ओही रहितहुँ सामाजिक मूल्य बदलल बुझाइत अछि। ई प्रतिबिम्ब आत्म-प्रेमक सीधा आरोप नहि, बल्कि प्रतिष्ठा-लालसाक संवेदनात्मक जन्मक दृश्य अछि। ओकर परिवारक ऋण आ बहिनक शुल्क विचारमे रखला पर पैघ पारिश्रमिक केवल अनावश्यक ऐश्वर्य नहि; मुदा ‘बड़ लोकक संग रहू’ वला भारतीय मध्यस्थक टिप्पणी जीविका सँ अलग विशेष पहुँचक लोभ जगबैत अछि। भारतीय औचित्य-विचारक दृष्टिसँ पात्रक उभय प्रेरणा—परिवारक भरण आ मान-प्रतिष्ठा—अलग-अलग पढ़बाक चाही। एकरे एक शब्द ‘लोभ’मे विलीन कए देब कथाक सामाजिक समझ कम करब होयत।

बैसारक संगणकीय प्रस्तुति अध्यायक निर्णायक ज्ञान-परिस्थिति अछि। पर्दा पर ग्राहक, व्यापारी, भुगतान, निपटान, क्षेत्र, भाषा आ पर्सक वर्ग देखाइत अछि; समन्वयक सामग्रीकेँ 'प्रदर्शन लेल मिश्रित' कहैत अछि। शशांक एहि उत्तरक अस्पष्टता चिन्हैत अछि—मिश्रितक अर्थ वास्तविक आ नमूना दुनू भऽ सकैत अछि। एतय ओ उचित विश्लेषण करैत अछि, कारण शब्दक सम्भावित अर्थसभ पर विचार कएने बिना निष्कर्ष देबाक आधार नहि। मुदा एक प्रतिवेदन-पृष्ठ ओकर निर्धारित अनुवाद-काज लेल आवश्यक नहि रहितहुँ तकनीकी संकेतसँ खुलैत अछि, आ शशांक ओकरा खोलि देखैत अछि। एहि क्रियाक महत्व संख्या पैघ होएबमे नहि, बल्कि उपलब्ध प्रवेश आ अधिकृत उद्देश्यक भेदमे अछि। तकनीकी रूपसँ कोनो पृष्ठ खुलि सकब ओकरा नैतिक रूपसँ देखबाक अधिकार स्वतः प्रमाणित नहि करैत।

पाठ विशेष सावधानीसँ कहैत अछि जे शशांक पृष्ठ बदलैत, प्रति उतारैत अथवा विवरण लिखि लैत नहि अछि। ई नकारात्मक सूचना महत्वपूर्ण अछि, कारण कथाक आलोचना अस्पष्ट सर्वर-कब्जा वा वित्तीय नियन्त्रण सन दूरगामी आरोप नहि जोड़ि सकैत। एतय सिद्ध क्रिया पृष्ठ खोलि देखब; उद्देश्य आ अनुमति-सीमाक सम्पूर्ण स्थिति एखन खुलल नहि। तइयो नायकक आचरणमे नैतिक दरार अछि: ओ समझैत अछि जे पृष्ठ निर्धारित कार्यसँ बाहिर अछि, तथापि उत्सुकताकेँ रोकैत नहि। पाठक संग नायकक सम्बन्ध एही सूक्ष्म दोषसँ परिवर्तित होइत अछि। ओ न सर्वथा निःदोष आदर्श शिष्य रहल, न बाह्य वित्तीय प्रणालीक सिद्ध संचालक बनि गेल। उपन्यास एहि मध्यावस्थाकेँ स्वीकार करबाक साहस देखबैत अछि।

रात्रिक दूरभाषपर मृणाल जखन 'सीमा भीतर?' पूछैत अछि, शशांक 'किछु असामान्य नहि' कहैत अछि। एहि कथनक वक्रता ओकरा पूर्ण मिथ्या आ पूर्ण सत्य दुनूसँ अलग करैत अछि। वास्तवमे शशांक कोई अपराध प्रत्यक्ष नहि देखलक; मुदा निर्धारित अनुवादक काजसँ अलग प्रतिवेदन-पृष्ठ देखबाक बात ओ लुकबैत अछि। 'असामान्य नहि' वाक्य श्रोताकेँ ओकर आचरणक जरूरी अंशसँ वञ्चित करैत अछि। भाषिक नैतिकताक दृष्टिसँ ई अध्यायक

सबसँ अर्थवान बिन्दु अछि: अनुवादक पर दू भाषा बीच भरोसा रखल जाइत अछि, आ ओ अपन मित्रक साम्हिन अपन अनुभवक चयनित अनुवाद करैत अछि। अपराध-सिद्धिक दावा कएने बिना कथ्य मूक रहने आ तथ्य-सीमा घटा देबाक नैतिक अन्तर खोलैत अछि।

घर पैसा पठएबाक दृश्य कथाकेँ सरलीकृत लज्जासँ बचबैत अछि। छप्पर मरम्मत आ बहिनक शुल्कक बात सुनि शशांक अपन यात्रा पूर्ण उचित बुझए लगैत अछि। परिणाम सुखद होएबासँ सब प्रक्रिया सिद्धतः उचित नहि भऽ जाइत, मुदा सुखद परिणामक नैतिक मनोविज्ञान समझब आवश्यक अछि। एहि ठाम नायकक आत्म-न्यायोचितकरण विश्वसनीय लगैत अछि: कियो अपन परिवारकेँ सहज करबाक बाद जोखिमक स्रोत पर पुनः संशय करबाक अतिरिक्त मनोबल किएक जुटाएत? कापीमे ओ प्रत्यक्ष, अनुमान आ असिद्ध आरोप अलग करैत अछि; मुदा जखन अपना आचरणक बात अबैत अछि, तखन मृणालसँ एक अंशक उल्लेख नहि कयलक कहि अपन चयनित मौन अभिलेखित करैत अछि। बाह्य साक्ष्यक अनुशासन आत्म-साक्ष्यक अनुशासन बनबाक ई पहिल स्पष्ट दृश्य अछि।

नव कलम अध्यायक विशिष्ट प्रतीक अछि। घरक लेल धन पठएबाक बाद बचल रकमसँ कलम किनब सामान्य इच्छा, मुदा कलमक धातुक चमक नायकक सामाजिक अभिलाषा आ लेखनीक नैतिक उपयोगक बीच तनाव रचैत अछि। साधारण कलमसँ श्रेष्ठ कलम लेल आकर्षण अपराध नहि; एतय वस्तुक अर्थ ओकर खरीद नहि, शशांकक अपना प्रति बदलैत दृष्टि सँ जन्मैत अछि। अन्तिम अन्हारमे कलम क्षण भरि चमकि बिलायल—ई दृश्यक संक्षिप्तता, अन्यत्र लम्बा सूत्रवाचक विवेचनक तुलनामे, बेसी कलात्मक प्रभाव उत्पन्न करैत अछि। चारिम अध्यायक सीमा एहन अवसर पर स्पष्ट कथावाचकीय निर्णयक पुनरावृत्ति अछि जे दर्शित दृश्य स्वयं पाठककेँ बुझा सकैत छल। तथापि एहि अध्यायमे लेखकीय नैतिकता प्रभावी अछि, कारण सीमित प्रवेशक वास्तविकता आ स्वयं सुविधानुसार अर्थ फेर लिखबाक दोषकेँ एकसाथ, किन्तु अलग-अलग, उपस्थित कएल गेल अछि।

## अध्याय ५ — मिथिलासँ दिल्ली ५ : विधिक गोपनीयता, मूल पाठ आ अनुवादकक सहभागिताक सीमा

पाँचम अध्यायक आरम्भ शशांकक मकाऊसँ घर घुरबाक तीन दिन बाद होइत अछि। बाहरी दिनचर्या पहिने जेकाँ अछि—भारतीय विद्या भवन, लाल किला, पहाड़गंज आ मृणाल संग चाह—मुदा नव कलम मेज पर राखल अछि, आ विदेश-यात्राक स्मृति ओकर कमाइक अपेक्षाक मानक बदलि चुकल अछि। आवर्ती वस्तु एहि अध्यायमे स्मृति-प्रेरक बनैत अछि; कलमक चमक नायकक भीतर अपन पेशागत महत्त्वक सन प्रश्न जगबैत अछि। एहि नवनिर्मित चाहक बीच दिल्लीक एक अधिवक्ता कार्यालयमे चीनी ई-मेल आ सेवा-समझौता पढ़बाक प्रस्ताव अबैत अछि। उपन्यासक कथा-स्थान तकनीकी प्रदर्शनसँ विधिक भाषिक वर्गीकरण दिस घुमैत अछि। ई संक्रमण कारण-क्रमक दृष्टिसँ प्रभावकारी अछि, कारण मकाऊमे देखल शब्द फेर दिल्लीक कागजमे देखाइत अछि, किन्तु समान शब्दकेँ एकहि अपराध-श्रृंखलाक सिद्ध चिन्ह नहि मानल गेल अछि।

कनॉट प्लेसक पुरान भवन, पित्तरिक नाम-पट्ट, विधिक पोथीक आलमारी आ कागजक मेज वकील राघव भसीनक पेशागत संसारकेँ दृश्यात्मक ठोसपन दैत अछि। राघवक पहिल निर्देश—स्रोत अस्पष्ट हो तँ अस्पष्ट कहू, अनुमान जोड़ि अनुवाद नहि करू—नायकक शिक्षकक पुरान पाठकेँ नव संस्थागत स्वर दैत अछि। एतय जुलियानाक श्वास-अनुशासन आ कक्षाक प्रसंग-अनुशासन न्यायिक दस्तावेजक सीमा-अनुशासनमे रूपान्तरित होइत अछि। राघवकेँ ‘अधिवक्ता’ नाम देब भरिसँ ओकर दोष अथवा निर्दोषता सिद्ध नहि; ओ वर्तमान दृश्यमे जे भाषिक निर्देश दैत अछि, समीक्षा केवल ओहि के आधार पर ओकर पेशागत भूमिका मापि सकैत अछि। कथाक ई सावधानी भविष्यक अनुचित चरित्र-निर्णयसँ रक्षा करैत अछि।

सेवा-समझौताक चीनी पाठ आ अँगरेजी मसौदामे ‘संबद्ध भुगतान माध्यम’क सम्भावित बहुलता घटि ‘payment channel’ रहि जेबाक प्रसंग सूक्ष्म, मुदा गंभीर अछि। शशांक स्रोतक व्यापक अर्थ चिन्हैत अछि, राघव लाल पेंसिलसँ चिन्ह दैत अछि आ कम-बेसी नहि करबाक निर्देश दैत अछि। एहि दृश्यमें अनुवादकक निर्णय शब्दक सौन्दर्य पर नहि, विधिक दायित्वक परिधि पर निर्भर अछि। एक संग अनेक माध्यमक सम्भावना आ केवल एक माध्यमक ध्वनि आर्थिक भूमिकाक भावी व्याख्या बदलि सकैत अछि। स्रोतमे जे अर्थ अछि ताहिसँ कम लिखबओ जोड़बाक एक रूप अछि—कारण काटल अर्थ सेहो पाठक निर्णयमे अनुपस्थित प्रभाव डालैत अछि। ई विश्लेषण उपन्यासक साधारण शब्द महत्त्वपूर्ण अछि कथनसँ आगाँ बढ़ि दस्तावेजी अर्थक विशिष्ट क्रियाशीलता देखबैत अछि।

दोसरा प्रसंगमे एक प्रतिनिधि ‘रोकल जाए’क बदला ‘समायोजित कएल जाए’ लिखबाक आग्रह करैत अछि। प्रतिनिधिक तर्क व्यापारिक नरमीक अछि; शशांक कहैत अछि जे ‘लगभग आ ओही एक नहि’। राघव उत्तर दैत अछि—स्रोत बदलय तँ स्रोत बदलू, अनुवादक स्रोत नहि बदलेत। एहि तीन वाणीमे नाटकीय बहुस्वरता अछि: व्यावसायिक सहजता, अनुवादकक अर्थनिष्ठा आ वकीलक स्रोत-अनुशासन। कोनो वक्ताक विचारकेँ एकटाही सपाट नैतिक सूत्रमे घटाएब उचित नहि। नरम भाषा अपने आपराधिक नहि, मुदा स्रोत-वाक्यक अर्थ-विभेद नुकाबब पाठकीय निर्णयकेँ बदलि सकैत अछि। एही कारण अनुवादकक कार्यसीमा आ रचनाकारक अधिकार अलग राखल गेल अछि।

‘विधिक गोपनीय’ शीर्षकवला फाइलक वर्गीकरण अध्यायक सामाजिक-राजनीतिक महत्त्व बढ़बैत अछि। राघव स्पष्ट करैत अछि जे अधिवक्तासँ विधिक सलाहक संवाद आ साधारण व्यापारिक लेखा एके वस्तु नहि; कागज पर गोपनीय लिखब ओकर विधिक स्वभाव स्वतः नहि बदलैत। ई उपन्यासक भीतर व्यक्त पात्रक व्याख्या अछि—एकरा सर्वदेशीय अथवा वर्तमान विधिक प्राधिकारक पूर्ण विधानक रूपमे उद्धृत करब उचित नहि। साहित्यिक स्तर पर अर्थ एतबे अछि जे शीर्षक प्रमाण नहि; स्रोत, उद्देश्य, सम्बन्ध आ प्रसंगक

परीक्षण चाही। नव्य-न्यायक 'अवच्छेदक'क विचार एतय रूपक-सहायक अछि: 'गोपनीय' सन व्यापक विशेषण मात्रसँ प्रत्येक कागजक समान विधिक कोटि नहि बनि जाइत।

चीनी ई-मेलमे केवल आद्याक्षर, 'द्वितीय पर्स' शब्द आ अस्थायी पहुँच-सूची बन्द करबाक निर्देश नायकक पूर्व-स्मृतिसँ टकराइत अछि। शशांक पटकन संभावित सम्बन्ध सोचैत अछि, मुदा अपना कैं रोकि लिखैत अछि जे समान शब्दसँ समान स्रोत सिद्ध नहि। प्रत्यक्षत: संदेशमे निर्देश अछि; तकर कारण पाठमे नहि देल अछि। 'अलग पठाउ' कहला पर गुप्त योजना गढ़ि देब हेत्वाभास होयत, जँ स्वतंत्र आधार नहि भेटय। एहि ठाम संदेह कथा-रोमांचक सम्भावना बचबैत अछि, मुदा कथन-शैली निर्णायक आरोप टारैत अछि। सीमित ज्ञान पर निष्कर्षक ई अनुशासन उपन्यासक शक्ति अछि; एकर सम्भावित सीमा ई जे प्रत्येक संवादक बाद कथावाचक पुन: ओही सूत्र स्पष्ट करैत छथि, जाहिसँ रहस्यक स्वाभाविक तनाव कखनो धीमा पड़ैत अछि।

राघवक कार्यालयसँ बाहर एला पर शशांकक भयक कारण कोनो प्रत्यक्ष अपराध-प्रमाण नहि, बल्कि अपन कौशलक सम्भावित दुरुपयोगक समझ अछि। मृणाल संग चाहपर ओ भाषा, परामर्श, व्यापार आ सहभागिताक सीमा पूछैत अछि। मृणाल कहैत अछि जे जे देखल-सुनल-स्रोतमे अछि तकर आगाँ गेलापर अनुवादक सहभागी बनय लगैत अछि। ई कथन पूर्ण विधिक दायित्वक सूत्र नहि; परन्तु नायकक नैतिक आत्म-नियन्त्रणक धारणा अछि। उपन्यास एहि स्तर पर 'अनुवादक'कैं निष्क्रिय माध्यम नहि मानैत: शब्दक विकल्प भविष्यक निर्णय बदलि सकैत अछि, तें कौशलसँ स्वतंत्र उत्तरदायित्व जन्मैत अछि।

अध्यायक उत्तरार्धमे कापीक आत्म-संशोधन अत्यन्त अर्थवान अछि। शशांक पहिने 'हमरा भय भेल' कैं 'सिद्ध तथ्य'क अन्तर्गत लिखैत अछि, फेर ओकरा काटि बाह्य व्यवहारक प्रमाण—मृणालसँ प्रश्न कएल आ कापीमे भेद लिखल —रखैत अछि; भीतरी अनुभवकैं अलग 'अंतरात्माक कथन' नाम दैत अछि।

एहि संशोधनमे नव्य-न्यायीय अवधारणाक वास्तविक साहित्यिक उपयोग अछि। पात्रक मनोगत सत्यकेँ अविश्वसनीय कहि खारिज नहि कएल गेल; ओकर अभिगम-पद्धति बाह्य घटनासँ पृथक मानल गेल अछि। ई दार्शनिक रूपसँ उपन्यासक आरम्भिक पाँच अध्यायमे सबसँ सूक्ष्म आत्मपरीक्षण अछि। एतय पाठक नायकक बुद्धि केवल दोसराक व्यवहार पर नहि, अपन बयान पर सेहो लागू होइत देखैत अछि।

एहि अध्यायक उपलब्धि अछि जे राघवक व्यावसायिक सावधानी, प्रतिनिधिक नरम शब्दक आग्रह, शशांकक प्रलोभन आ मृणालक जिज्ञासाकेँ अलग आवाज दैत अछि। कलम, लाल पेंसिल, ई-मेल आ गोपनीय शीर्षक सब वस्तु प्रमाण-निर्माणक प्रक्रिया सँ जुड़ैत अछि। सीमा ई जे लगभग प्रत्येक मोड़ पर भय, प्रत्यक्ष आ अनुमानक व्याख्या स्पष्ट रूपसँ देल जाइत अछि; किछु ठाम संवादक अनिश्चितता खुल्ला छोड़लापर कलात्मक गहराइ आरो बढ़ि सकैत छल। तथापि पाँचम अध्याय अनुवादकक साधारण व्यावसायिक सफलता सँ एहन बिन्दु धरि यात्रा पूरा करैत अछि जतय ओ अपन ज्ञानक उपयोगक सीमा स्वयं प्रश्न कऽ सकैत अछि। एखन ओकर हाथमे अपराधक सिद्ध साक्ष्य नहि; मुदा अप्रामाणिक कथन बनबाक प्रक्रिया ओकर अनुभवक भीतर प्रवेश कऽ चुकल अछि।

## अध्याय १-५ : अन्तराध्यायिक आलोचनात्मक तुलना — शिष्यसँ सीमासचेत अनुवादक धरि

पहिल पाँच अध्यायकेँ एक साथ पढ़ला पर तीन परस्पर जुड़ल, किन्तु भिन्न रेखा स्पष्ट होइत अछि। पहिल मिथिलाक नव्य-न्यायक विद्यार्थी आ आर्थिक अभावक कथा; दोसर चीनी ध्वनि, वाक्य आ व्यवहारक प्रशिक्षण; तेसर-दोसरा काजक प्रसंगमे वित्तीय शब्द आ सामाजिक मित्रता; चारिमि मकाऊक विशेष पहुँच आ चयनित मौन; पाँचम विधिक दस्तावेजक मूल अर्थ, गोपनीयता आ आत्म-अभिलेख। घटनाक्रममात्र सँ ई क्रम सुरक्षा सँ अपराधक सरल अवनति नहि बनैत। तेसर अध्यायमे शशांक संदिग्ध काज स्पष्ट सीमा न भेटलापर छोड़ैत अछि; चारिममे लिखित सीमा प्राप्त होइतहुँ ओ अतिरिक्त पृष्ठ देखैत आ मित्रसँ अपन व्यवहारक अंश नुका दैत अछि; पाँचममे पुनः ओ स्रोतक अर्थ बचेबाक पक्षमे दृढ़ रहैत अछि। एहि आवागमनसँ नैतिक चरित्र द्विआधारी आदर्श अथवा खलनायक नहि, परिवर्तनशील निर्णयक श्रृंखला बनैत अछि।

तीन पोथीक रूपक आरम्भमे अध्ययनक ठोस सामग्री अछि, तकर बाद प्रत्यक्ष-अनुमान-आरोप लिखनिहार कापी नायकक समानान्तर जीवन-पाठ बनैत जाइत अछि। पहिल अध्यायमे कापी सम्भावनाक प्रतीक; तेसरमे कापी दफ्तरमे देखल बातक पृथक्करण; चारिममे कापी अपन लुकाओल व्यवहारक अभिलेख; पाँचममे कापी भीतरक भय आ बाह्य क्रियाक प्रमाण-विधि अलग करबाक उपकरण अछि। एहि अर्थमे समीक्षा करबाक क्षमता स्वयं कथानकक भीतर पात्रक मानसिक क्रिया बनि उठैत अछि। ई औपन्यासिक उपलब्धि स्वतंत्र अछि: न्याय-शब्दावली केवल पृष्ठभूमिक बौद्धिक अलंकरण नहि रहि दृश्य-दृश्य निर्णय बदलैत अछि।

भौगोलिक क्रम सेहो अर्थवान अछि। मिथिलाक घर आ विद्या-कक्ष ज्ञानक स्रोत अछि; पहाड़गंज आर्थिक दबावक; लाल किला सार्वजनिक भाषिक

अभ्यासक; दफ्तर असामान्य भुगतान-संरचनाक; मकाऊ प्रतिष्ठा आ प्रवेशक; कनॉट प्लेसक अधिवक्ता कार्यालय विधिक पाठ-अनुशासनक। समानान्तर ऐतिहासिक पाठ-पद्धति एतय ई स्थानसभकेँ एकहि संग देखैत अछि, मुदा मात्र सम्पर्कक आधार पर कारण अथवा व्यापक ऐतिहासिक निष्कर्ष नहि गढ़ैत। पहिल पाँच अध्यायमे चीन, मकाऊ अथवा व्यापारिक संस्थाक नाम कियो अपराधक स्वतः प्रमाण नहि अछि। स्थानक प्रतीकात्मक प्रयोग आ बाह्य इतिहासक प्रामाणिक दावा अलग राखबाक चाही।

मृणाल, शिक्षक, जुलियाना आ राघव शशांकक आत्म-समीक्षाक अलग-अलग कसौटी उपस्थित करैत छथि। शिक्षक प्रसंगक नाम पर मिथ्या जोड़बाक निषेध करैत छथि; जुलियाना भाषा सीखबमे सुनबाक विनम्रता सिखबैत छथि; मृणाल जीविकाक दबाव बीच लिखित सीमा आ सामाजिक समताक अभ्यास देबैत अछि; राघव मूल दस्तावेजक अर्थनिष्ठा पर जोर दैत छथि। चारू पात्रकेँ केवल नायकक नैतिक गुरु कहि छोड़ि देला पर ओकर सामाजिक स्थिति, आवाज आ कार्यक्षेत्र हरायब। विशेषतः जुलियानाक स्वतंत्र व्यक्तित्व एखन कम विकसित अछि; आगामी अध्यायमे ओ नायकसँ पृथक इच्छा आ विचारक पात्र बनैत छथि कि नहि, तकर परीक्षण जरूरी होयत।

रस आ ध्वनिक स्तर पर एहि पाँचक सर्वाधिक प्रबल भाव भयक एकसर धारा नहि, बल्कि लाज, आर्थिक कष्ट, आत्मगौरव, मैत्री आ पछातिक आशंकाक मिश्रण अछि। कलम आ कापीक वस्तु-रूपक नायकक भीतर सूक्ष्म अन्तर देखबैत अछि। ‘बड़ लोकक संग रहू’ सन प्रशंसा आ ‘आरोप अलग, शंका अलग, प्रमाण अलग’ सन सावधानी परस्पर विरोधी प्रभावक रूपमे सक्रिय अछि। लेखक कतिपय ठाम सूक्तिक व्याख्या आवश्यकता सँ बेसी करैत छथि; दृश्य आ वस्तु पाठककेँ निर्णय करबाक पर्याप्त अवसर दैत अछि। रचनाक शिल्प आरो प्रभावी होयत जँ पात्रक वाणी, पुनरावृत्त प्रतीक आ खुल्ला अनिश्चितता पर विश्वास थोड़े बेसी राखल जाए। एतबा सीमा स्वीकारलाक बादो प्रारम्भिक पाँच अध्यायक मूल उपलब्धि सुनिश्चित अछि

—‘अनुवाद’ शब्दक पर्याय बदलि उत्तरदायित्वक परीक्षा बनि जाइत अछि, आ नायक अपन प्रतिभासँ प्राप्त अवसरकेँ अपन प्रतिभासँ अर्जित प्रतिरक्षाक बराबर नहि मानि सकैत।

## अध्याय ६ — मिथिलासँ दिल्ली ६ : ‘ऊपर’ शब्दक द्विविधा आ समानान्तर प्रशासनिक प्रत्यक्ष

छठम अध्याय पाँचम अध्यायक विधिक-अनुवादक प्रसंगकेँ आगाँ बढ़बैत अछि, मुदा एहि बेर मूल समस्या व्यक्तिगत परामर्शक गोपनीयता नहि, प्रशासनिक कथनक सत्यता अछि। राघव भसीनक कार्यालयमे शशांक विदेशी ग्राहकक कर-जाँच सम्बन्धी चीनी संदेश पढ़ैत अछि। एकहि शब्दसमूह ‘मुख्य स्तर’क आशय कम्पनीक प्रधान कार्यालय सेहो भऽ सकैत अछि आ प्रशासनक उच्चतर स्तर सेहो। भारतीय प्रबन्धक एक निश्चित, अपेक्षाकृत निरापद अर्थ लिखेबाक आग्रह करैत अछि; शशांक अनिश्चितता चिन्हैत अछि आ राघव ओकरा दुनू सम्भावना सुरक्षित रखबाक निर्देश दैत अछि। एतय विवाद शब्दकोशक नहि, अनुवादकक अधिकारक सीमा पर अछि। मूल-पाठ जँ दू अर्थ खुल्ला रखैत अछि तँ अनुवादमे एकर पक्षमे प्रमाणहीन निश्चितता जोड़ब कथनक स्वभाव बदलि देत। पात्रक निर्णयक मूल कलात्मक मूल्य सेहो एहि सूक्ष्म बिन्दुमे अछि।

लेखक समान दृश्यकेँ दोसर बेर दोहरबैत छथि, जखन दूरस्थ चीनी अधिकारी ‘सम्बन्धित लोक’ आ ‘मुख्य शाखा’क अस्पष्ट उल्लेख करैत अछि। शशांक स्पष्टता लेबाक उद्देश्यसँ प्रश्न पुछैत अछि, मुदा वक्ता उत्तरक दिशा फेरि भारतीय पक्ष पर छोड़ि दैत अछि। एहि टकराहटमे कियो स्वतः अपराधी प्रमाणित नहि होइत। प्रबन्धक भाषाक व्यावहारिक सरलता चाहैत अछि; राघव स्रोतक सीमा; शशांक अपन पेशागत निष्ठा आ अधिक पारिश्रमिकक आकर्षण बीच ठाढ़ अछि। संवादसभक नाटकीय शक्ति ई जे दू पक्षक हित परस्पर भिन्न बुझाइत अछि, मुदा ओकर सभ सम्भावित हेतु प्रत्यक्ष रूपेँ उपलब्ध नहि। नव्य-न्यायक शब्द-प्रमाणक आधार पर वक्ताक अभिप्राय बुझबाक प्रयास उचित अछि; जँ अभिप्राय अस्पष्ट रहि जाए तँ अस्पष्टताकेँ स्वीकृत करब हार नहि, पाठमे रहल ज्ञान-सीमाक ईमानदार अभिलेखन अछि।

स्थानीय कर-जाँच सम्बन्धी ‘पत्र स्थगित’ होएबाक मौखिक घोषणा अध्यायक दोसर प्रमुख गाँठ अछि। भारतीय प्रबन्धक कहैत अछि जे ‘ऊपर बात भऽ

गेल अछि'; राघव लिखित आदेश माँगैत छथि। महत्त्वपूर्ण अन्तर ई जे शशांकक सामने लिखित स्थगन-पत्र नहि अछि। तेँ ओहि क्षण ओकरा प्राप्त सूचना केवल एक व्यक्तिक मौखिक कथन अछि। एतय 'ऊपर' शब्द चीनी भाषासँ भारतीय दफ्तरक बोलचालमे सरकि अबैत अछि, आ शब्दार्थक गड़बड़ी भाषान्तरक सीमा पार करैत संस्थागत शक्ति-सम्बन्धमे प्रवेश करैत अछि। उपन्यास भाषिक दक्षताकेँ केवल विदेशी भाषा बुझबाक गुण नहि मानि, अपन परिचित भाषाक राजनीतिक संकेतसँ सावधान रहबाक दायित्व बनबैत अछि। 'ऊपर'क अनिर्दिष्टता अज्ञात अधिकारक छाया गढ़ैत अछि; पाठक ओकर अर्थ कल्पि सकैत अछि, मुदा कथा ओकरा सिद्ध तथ्य बनाबय सँ रोकैत अछि।

अध्यायक शिल्पगत सबसँ महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आदित्य मिश्रक समानान्तर प्रवेश अछि। दूर आयुक्तालयमे ओ लिखित, विधिवत स्थगन-आदेश पबैत अछि; शशांक ओ आदेश देखने नहि अछि। दूनू स्थितिक भेद समीक्षामे अक्षुण्ण रखबाक चाही। शशांकक पक्षसँ स्थगनक सूचना मौखिक छल; आदित्यक पक्षसँ आदेश वास्तविक अभिलेख छल। तथापि आदेशमे ओकर कारण लिखल नहि छल। आदित्य आदेश मानैत अछि, पुरान जाँच-पत्र नष्ट नहि करैत, आ फाइलमे कारणक अनुपस्थिति दर्ज करैत अछि। एहि साधारण प्रशासनिक क्रियाक साहित्यिक अर्थ विरोधक नाटकीय गर्जना नहि, बल्कि अभिलेखक अपूर्णताकेँ प्रामाणिक रूपमे बचायब अछि। दूनू मिथिलाक पात्र अलग ठाम एके मर्यादा अपनबैत अछि—जे कारण ज्ञात नहि, से नहि गढ़ब। उपन्यासक समानान्तर स्थापत्य एतय केवल भूगोलक परिवर्तन नहि, दू स्वतन्त्र ज्ञान-स्थितिक तुलना अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक उपयोग एहिठाम विशेष सटीक भऽ सकैत अछि। कनॉट प्लेसक अनुवाद-मेज आ आयुक्तालयक जाँच-मेजक घटना एकहि कालखण्डमे होइतहुँ तकर सम्बन्ध एखन पाठसँ प्रमाणित नहि। लेखकक कथावाचक आदित्य आ शशांक दुनूक अन्तःस्थिति बतबैत अछि;

मुदा पात्रसभ एक-दोसराकेँ नहि जनैत अछि। समीक्षक जँ कथावाचकक प्राप्त सर्वज्ञ जानकारीकेँ शशांकक प्रत्यक्ष मानि लए, तँ साक्ष्यक स्तर बिगड़त। ठीक ओहिना, स्थानीय जाँच स्थगित हेबाक घटना आ सम्भावित केन्द्रीय समीक्षा एकसाथ उल्लेखित भेलासँ भ्रष्टाचार, प्रशासनिक विवेक अथवा राजकीय षडयन्त्रमे कोनो एकटा स्वतः सिद्ध नहि होइत। कथावाचक स्वयं दोहरी जाँच सँ बचबाक वैकल्पिक सम्भावना उपस्थित करैत अछि। ई सम्भावना कारण-सिद्धि नहि, अनुमानक सीमा चिन्हबाक उपकरण अछि।

मृणालक संवाद एहि अध्यायकेँ केवल पेशागत आदर्शवादक कथा नहि रहय दैत। ओ शशांककेँ दू विपरीत भूलसँ बचेबाक आग्रह करैत अछि—सभ लोक खरीदल गेल मानि लेब, अथवा लिखित आदेश भेटिते प्रश्न समाप्त मानि लेब। एहि द्विनिषेधमे नैतिक औचित्य अछि। शंका जेकरा प्रमाण नहि ओकरा अपराधक रूप नहि देबाक चाही; तथापि अभिलेखक प्रामाणिकता आ ओकर पीछे कारणक पूर्णता एक बात नहि। मृणाल नायकक जीवनमे तर्कक लोकव्यावहारिक अनुशासन जेकाँ कार्य करैत अछि, जखन राघवक अनुशासन संस्थागत अछि आ आदित्यक अभिलेखीय। तीनू आवाजक अन्तर कथाक बहुस्वरता बनबैत अछि।

शशांकक कॉपी एहि अध्यायमे व्यवस्थित प्रमाण-पञ्जीक रूप लैत अछि। ओ प्रत्यक्ष, अनुमान, आरोप, मिथ्या आरोपक सम्भावना आ सिद्ध तथ्य अलग लिखैत अछि। अन्तमे ‘विश्वासघात’ शीर्षक काटि देब मानसिक घटनाक संकेत अछि; ओ भय अथवा असहजता महसूस करैत अछि, मुदा ककरा द्वारा केकर विश्वासघात भेल तकर साक्ष्य नहि। एहि काटल शब्दमे ध्वनि-प्रधान कलात्मकता अछि: लेखा-रखबाक अभ्यास पात्रक भावनात्मक वेगक विरुद्ध ठाढ़ होइत अछि। तइयो समीक्षा एक शिल्पगत सीमा देखैत अछि। कथावाचक पुनः-पुनः प्रत्यक्ष-अनुमानक सिद्धान्त व्याख्यायित करैत अछि, जखन कागज, आदेश, लिफ्टक संवाद आ काटल शीर्षक स्वयं पर्याप्त अर्थवान दृश्य अछि। किछु स्थान पर पाठककेँ स्वयं अर्थ निकालबाक अवकाश बेसी देल जाइत तँ समानान्तर दृश्य आओर प्रभावी होइत। तथापि

छठम अध्याय नायकक एकल आत्मशिक्षाकेँ सार्वजनिक अभिलेख-संस्कृतिक द्वन्द्वमे बदलैत, उपन्यासक सामाजिक परिधि सार्थक रूपसँ विस्तार करैत अछि।

## अध्याय ७ — मिथिलासँ दिल्ली ७ : प्रश्नचिह्नक प्रचार, नामक उपस्थितिक भ्रम आ आत्मबचावक सत्य

सातम अध्यायमे कहानीक विवाद सार्वजनिक माध्यममे प्रवेश करैत अछि। भोरक डिजिटल समाचारक प्रश्नात्मक शीर्षक शशांकक नाम कँ स्थानीय कर-जाँच रोकबाक सम्भावित भूमिकासँ जोड़ैत अछि। ई शीर्षकक अन्तमे प्रश्नचिह्न रखैत अछि, मुदा सूचना-संयोजनक शेष रचना पाठकमे दोषक आभास उत्पन्न करैत अछि। लेखक एतय पत्रकारिताक समूचा इतिहास नहि लिखैत; एकटा प्रसंगक माध्यमसँ प्रश्नवाचक व्याकरण आ आरोपात्मक प्रभावक अन्तर देखबैत छथि। मूल लेखमे किछु सत्यापनयोग्य तथ्यक टुकड़ा अछि—विदेशी ग्राहक लेल अनुवाद, सम्बन्धित संदेश आ स्थगित जाँचक चर्चा—मुदा तकर बीच शशांक द्वारा प्रशासनिक प्रभाव डलाओल गेल, से प्रमाण सार्वजनिक रूपमे नहि देखाओल गेल अछि। समीक्षाक आधार ठीक ओहिठाम राखब जरूरी अछि: उपलब्ध उपन्यास-पाठक भीतरक मीडिया-वर्णनकँ वास्तविक विश्वक कोनो प्रकाशनक ऐतिहासिक प्रमाण नहि मानल जाएत।

लेखकक नाटकीय कौशल शशांकक पहिल आत्मरक्षात्मक प्रतिक्रिया देखेबामे अछि। अपमानित नायक सार्वजनिक बयानमे विदेशी कम्पनीक कर-जाँचसँ अपन समस्त सम्बन्ध अस्वीकार करए चाहैत अछि। मृणाल ओकरा रोकैत अछि, कारण विदेशी ग्राहकक पेशागत भाषिक सेवा आ कर-सन्दर्भवला कागजक अनुवाद वास्तवमे कएल गेल अछि। ओहि अर्थमे प्रस्तावित वाक्य मिथ्या होइत, यद्यपि प्रशासनिक दबाव अथवा घूसक आरोप प्रमाणित नहि। उपन्यासक नैतिक जटिलता ई नहि जे शशांक पर बाहरी अन्याय भेल, बस ओकरा सत्यवादी सिद्ध कऽ देल जाए; उलटे बाहरी अन्याय अपन बचावमे भ्रामक कथन लिखबाक अवसर बनि सकैत अछि। मृणालक भूमिका सान्त्वनाक संग आत्मनिरीक्षणक कठोरता जोड़ैत अछि। नायकक घायल अभिमान ओहि हस्तक्षेपक विरोध करैत अछि, कारण मित्रक नाम सार्वजनिक अपमानमे नहि अछि। एहि संवादमे मैत्रीक वास्तविक असमतुल्यता देखाइत

अछि: उचित सलाह देनिहार व्यक्ति आ अपमान भोगनिहार व्यक्तिक अनुभव एक नहि, तइयो सत्यक दायित्व दुनूक लेल रहैत अछि।

राघव भसीनक फोनपर कएल गेल सूत्रात्मक भेद—लेखक कहैत अछि जे स्रोत कहैत अछि—शब्द-प्रमाणक विश्वसनीयताक आलोचनामे उपयोगी अछि। प्रकाशित कथन, कथित स्रोत आ वास्तविक मूल सामग्री तीनटा अलग प्रमाण-पथ अछि। स्रोतक नाम प्रकाशित नहि, मूल सामग्री देखाओल नहि, आ शशांककेँ स्वयं ओ सामग्री उपलब्ध नहि। एहि कारण राघव नायककेँ पूरा लेख, समय आ मूल पृष्ठ सुरक्षित रखबाक सलाह दैत छथि। साहित्यिक स्तर पर ई सावधानी निष्क्रिय रहब नहि, स्रोतक परिवर्तित रूपसभकेँ तुलना योग्य बनाकऽ बचायब अछि। जखन अनेक नकल-पृष्ठमे प्रश्नचिह्न लुप्त होइत अछि आ 'भूमिका?' केवल 'भूमिका' बनैत अछि, तखन वाक्यक सूक्ष्म चिह्नक कटौती सामाजिक अर्थक वृद्धि करैत अछि। शाब्दिक अल्प परिवर्तन अपराधसदृश छविक व्यापक विस्तार उत्पन्न करैत अछि; भाषा-कौशल एहिठाम असाधारण सार्वजनिक महत्त्व ग्रहण करैत अछि।

आदित्य मिश्रक समानान्तर दृश्य मीडिया-संसारक विपरीत प्रमाण-संसार उपस्थित करैत अछि। ओकरा केन्द्रीय शाखासँ सीमित अभिगमवला खाकी लिफाफा भेटैत अछि, जाहिमे सेवा-बीजक, बैठक-सूची, ई-मेल आ आन्तरिक सारांश अछि। शशांकक नाम 'अनुवादक' अथवा 'भाषा-अनुवाद सेवा'क रूपमे दर्ज अछि; ई उपस्थिति सिद्ध करैत अछि, किन्तु सरकारी अधिकारीकेँ धन देबाक अथवा जाँच रुकौयबाक कृत्य नहि। लेखक दृश्यात्मक वस्तु—खाकी लिफाफा, क्रमाङ्क, प्राप्ति-पञ्जी, सुरक्षित आलमारी—क सहायता सँ अभिलेखक भौतिक जीवन दिखबैत छथि। ओ अभिलेख पर 'मुहरबन्द'क छाया रहला मात्रसँ ओकरा अभेद्य सत्य नहि बनबैत छथि। जँ कियो गुप्त कागजक अस्तित्वकेँ आन्तरिक आरोपक सिद्धि बुझय, तँ ई प्रमाणक प्रकारक स्पष्ट भ्रान्ति होयत।

अध्यायक विशेष ज्ञानमीमांसात्मक उपलब्धि समय-मिलानक दृश्य अछि। डिजिटल लेख भोर ८:१७ पर प्रकाशित होइत अछि; आदित्यक कार्यालयमे

विशेष लिफाफा ११:४० पूर्वाह्न प्राप्त होइत अछि। ई भेद आदित्यकेँ केवल एतेक कहबाक अधिकार दैत अछि जे ओकरा हाथमे एहि समय प्राप्त एक प्रति लेख लिखनिहारक तत्काल आधार नहि छल। तकरा आधार पर ई निष्कर्ष नहि निकालल जा सकैत जे सामग्रीक आन प्रति कतहु पहिने नहि छल अथवा कोनो प्रकारक प्रसार भेलहि नहि। लेखक नकारात्मक प्रमाणक ओहि प्रलोभनसँ सेहो बचेबाक प्रयत्न करैत छथि। आरोपक अनिश्चितता आ निष्कलंकताक सर्वव्यापी प्रमाण—दुनूकेँ एकहि समय अनुपलब्ध मानब शोध-संगत दृष्टि अछि। कथाक न्याय-अनुशासन एहि बिन्दु पर केवल नायकक बचाव नहि, जाँच-पद्धतिक आन्तरिक आलोचना बनि उठैत अछि।

समाचारक क्रमशः नकल बनब शिल्पगत दृष्टिसँ श्रुतिक विरूपणक आधुनिक रूप जेकाँ काम करैत अछि। पहिले प्रश्न, फेर संकेत, अन्ततः बिना मूल आधारक 'मुख्य बिचौलिया'क दर्जा—ई वाक्यक प्रसार नहि, आरोपक स्वतन्त्र विस्तार अछि। पाश्चात्य आख्यानशास्त्रक दृष्टिसँ एक घटना अनेक कथन-स्तर प्राप्त करैत अछि; पाठक मूल दफ्तरक दृश्य, शशांकक स्मरण, डिजिटल लेख आ आदित्यक उपलब्ध प्रति अलग-अलग जानैत अछि। एही कारण पाठकक ज्ञान पात्रसभक एकल दृष्टिसँ व्यापक अछि, मुदा सर्वथा निष्कर्षात्मक नहि। कथावाचकक प्राथमिक सहानुभूति शशांक दिस झुकैत अछि; तथापि ओकर प्रथम मिथ्या बयानक मसौदा एहि सहानुभूतिक न्यायिक छूट रोकैत अछि। एहि द्वैधतासँ अध्यायक नैतिक विश्वसनीयता बढ़ैत अछि।

अन्तमे शशांक अपन कॉपीमे पाँच खण्ड बनाबैत अछि। माध्यममे छपल नाम, पेशागत भागीदारी, अनुमानक स्रोत, आरोपक रूप आ अपन बचावक संभावित असत्य—सभ अलग करैत अछि। परिणामक रस एकसर वीरता नहि; अपमान, लाज आ आत्मसन्देहक मिश्रण अछि। एहि अध्यायक सीमा ई जे राघव, आदित्य, मृणाल आ कथावाचक अनेक ठाम लगभग एके प्रमाण-सूत्र अलग वाणीमे प्रस्तुत करैत छथि। बहुस्वरताक सम्भावना तखन पूर्ण होयत जखन अलग व्यक्तिक अलग कमजोरी, पेशागत स्वार्थ आ अनुभव-संस्कार सेहो विकसित हो। तथापि एतय निजी ईमानदारी सार्वजनिक

प्रतिष्ठाक रक्षा सँ अलग दिस बढ़ैत अछि; नायककेँ बुझाइत अछि जे गलत आरोपक शिकार होएब ओकरा गलत खण्डन करबाक अधिकार नहि दैत।

## अध्याय ८ — लाल किलाक चीनी पर्यटक : निषेधक विलोपन, प्रत्यानयन आ न्यायालयक सीमित निष्कर्ष

आठम अध्याय पहिल सात अध्यायक क्रमिक समयरेखाकेँ जानि-बुझि तोड़ैत अछि। आरम्भ भविष्यमे एक अदालतक जिरहसँ होइत अछि, जतय शशांकक पुरान छायाचित्र प्रस्तुत कएल जाइत अछि। तकर बाद कथा लाल किलाक आरम्भिक प्रशिक्षण-दिनमे प्रत्यावर्तित होइत अछि आ अन्तमे फेर अदालतमे लौटैत अछि। ई काल-विन्यास केवल रहस्य बढ़ेबाक साधन नहि; अतीतक छोट व्यवहारिक त्रुटि वर्तमान न्यायिक प्रश्नक प्रकाशमे नव अर्थ प्राप्त करैत अछि। पाठक आगूक आरोपक पूरा न्यायिक परिणाम नहि जनैत अछि; लेखक केवल एतेक देखबैत छथि जे पुरान भाषिक आचरणक सीमित प्रासंगिकता पर प्रश्न उठि सकैत अछि। एहिठाम कथाकाल आ कथनकालक अन्तर आलोचनाक विषय अछि। अध्याय ९ जखन ‘अदालतक ओ दिन एखन भविष्य छल’ कहि वर्तमानमे फेर घुरैत अछि, तखन आठम अध्यायक कालभंगक प्रयोग स्पष्ट संरचनात्मक इकाई बनि जाइत अछि।

अतीतक दृश्य तीन चीनी पर्यटक, युवा लिन युए, शशांक आ लाल किलाक सुरक्षा-कर्मचारीकेँ एकत्र करैत अछि। कैमरा-बैग नीच आसन पर रखल जाइत अछि, पाछाँ नहि भेटैत अछि, आ एक स्मृति-वस्तु बेचयवला पुरुष ओहि आसपास छल। लिन युए स्पष्ट करैत छथि जे ओ पुरुषकेँ बैग लैत नहि देखने छथि। एहि कथनमे तीन तथ्यक अन्तर अछि: वस्तुक पहिल स्थिति, पुरुषक निकटता आ लेबाक क्रियाक अप्रत्यक्षता। ‘नहि देखने’ वाक्यक लोप मात्र व्याकरणक गलती नहि; ओ प्रत्यक्षक सीमा हटा कऽ शंका केँ कथित अवलोकनक निकट पहुँचा सकैत अछि। शशांक पहिने मौखिक अनुवादमे नकार के किछु सीमा तक बचबैत अछि, मुदा सुरक्षा-कर्मचारी लिखित टिप्पणी बनबैत समय ओ आवश्यक निषेध फेर स्पष्ट नहि करैत अछि। एहि क्रमान्तरक समीक्षा सूक्ष्म होबाक चाही: शशांक आधिकारिक टिप्पणीक लेखक नहि; तथापि मूल वक्ताक सावधानी लिखित अभिलेखमे नहि पहुँचबाक बात जानितहुँ ओकर मौनमे नैतिक उत्तरदायित्व अछि।

लिन युएक प्रश्न—‘ई सेहो लिखल अछि जे हम ओकरा लैत नहि देखने छी?’—क उत्तरमे शशांक ‘मुख्य बात दर्ज अछि’ कहैत अछि। ई संवाद अध्यायक कलात्मक मेरुदण्ड अछि, कारण एतय अनुवादक स्पष्ट आश्वस्ति देबाक बदला मुख्यताक निर्णय अपन हाथमे लैत अछि। जकर वाक्य अछि, ओकरा की निर्णायक मानब, से अनुवादकक सुविधानुसार बदलि जाइत अछि। लेखक एहि स्थल पर भाषान्तरक अनिवार्य चयन आ मनमाना संक्षेप दू अलग काजक बीच रेखा खींचैत छथि। प्रत्येक अनुवादमे शब्दशः समानता सम्भव नहि; मुदा जे निषेध शंकाक आधारकेँ सीमित करैत अछि, ओकरा गौण मानि हटेबाक नैतिक स्वीकृति नहि। दोषक उत्पत्ति शशांकक पेशागत अपरिपक्वता, भीड़क अधीरता आ उपयोगी देखेबाक लालसामे अछि; कियो व्यापक षडयन्त्र रचैत अछि, एहन कोनो पाठ-साक्ष्य नहि।

दृश्य आगाँ बढ़िते कैमरा-बैग बसक पछिला आसनक नीच भेटैत अछि आ विक्रेता छोड़ि देल जाइत अछि। एहि परिणतिक एक विशेष गुण अछि। शशांकक अपूर्ण अनुवाद कारण निर्दोष पुरुष पर शंका भेल; मुदा बैग भेटि जेबाक तथ्य नकारात्मक वाक्यक महत्त्वकेँ पछाति पुनः उघाड़ैत अछि। लोकक तात्कालिक क्रोध, भीड़ आ सुरक्षाकर्मी लिखित टिप्पणीक संरचनाक भीतर एक व्यक्ति पर दबाव उत्पन्न कऽ सकैत अछि। मुदा मूल पाठ ई नहि कहैत जे शशांक ओकरा दोषी ठहरा कऽ लिखित आरोपपत्र बनौलक। समीक्षाक जिम्मेदारी अछि जे संभावित परिणामक भयकेँ वास्तविक परिणतिक मापसँ अलग राखय। विक्रेताक नाम शशांककेँ नहि ज्ञात; पछाति क्षमा माँगबाक प्रयास असफल रहैत अछि। एहि अनुपस्थित नाममे नैतिक करुणा अछि। साहित्यक उपलब्धि ई जे भाषा सम्बन्धी त्रुटिक क्षति केवल कानूनी शब्दावली नहि, एहन सामान्य लोकक अनुभवमे राखल गेल अछि जकरा कथा पूर्ण जीवनचरित देबाक अवसर नहि दैत।

फेर अदालतक जिरहमे सरकारी अधिवक्ता पुरान घटनाकेँ अनुवादकक पद्धतिक परीक्षण बना चाहैत छथि। रक्षा-पक्ष प्रतिवाद करैत अछि जे सरकारी टिप्पणी शशांक लिखने नहि छल; न्यायाधीश प्रश्नक मर्यादा निश्चित करैत छथि। निर्णायक उत्तरमे शशांक स्वीकार करैत अछि जे ‘नहि देखने’क

स्पष्टता पर्याप्त रूपेँ सुरक्षित नहि रहल, आ ओहि त्रुटिमे सुविधा, अधीरता आ उपयोगी देखेबाक अहंकार काम करैत छल। मुदा न्यायाधीश ई सेहो कहैत छथि जे एही पुरान घटनासँ वर्तमान आरोप स्वतः सिद्ध नहि होइत अछि। ई सीमित निष्कर्ष उपन्यासक न्याय-मूल्यक वास्तवमे कठोर परीक्षा अछि। नैतिक आत्मस्वीकारकेँ वर्तमान आपराधिक दोषक स्थानापन्न बना देब कथाक अपन प्रमाण-विवेकक प्रतिकूल होयत। अतीतक पेशागत त्रुटि व्यक्ति-स्वभावक अध्ययनमे प्रासंगिक होयत, मुदा स्वतंत्र घटनाक विधिक प्रमाण नहि।

रस-आलोचनामे अध्यायक प्रधान अनुभूति लज्जा आ करुणाक मिश्रण अछि। धूप, लाल देवाल, भीड़, कैमरा-बैग, अपरिचित विक्रेता आ बादक न्यायालय —एहि वस्तु-स्थानसभक पुनरागमन पुरान स्मृतिक भार बनबैत अछि। 'नहि' अत्यन्त छोट शब्द होइतहुँ अध्यायक केन्द्रीय प्रतीक बनि उठैत अछि; ध्वनिक सौन्दर्य एतय शब्दक आकार आ ओकर नैतिक परिणामक असंगत अनुपातसँ जन्मैत अछि। कथाक पुरान लाल किला आरम्भिक अध्ययनक स्थल छल; आब ओ साक्ष्य-त्रुटिक आत्म-साक्षात्कारक स्थल होइत अछि। एहि पुनरावृत्त स्थलमे अर्थक परिवर्तन सामान्य पूर्वसूचनासँ बेसी कलात्मक अछि।

नव्य-न्यायक दृष्टिसँ प्रत्यक्षक अभाव, सामीप्यक कारण अनुमान, आ प्रमाणक वैध सम्बन्धक बीच भेद अत्यन्त स्पष्ट अछि। किन्तु एक शिल्पगत आलोचना सेहो जरूरी अछि: अदालतक पात्रसभ शशांकक पुरान आत्मपरिवर्तनकेँ बहुत व्यवस्थित रूपेँ प्रश्नोत्तरमे उघाड़ैत छथि, जाहिसँ न्यायालयक बहुअर्थी जीवन किछु स्थान पर दार्शनिक शिक्षण-कक्ष जेकाँ सुव्यवस्थित प्रतीत होइत अछि। कथावाचकक पश्चात्तापक स्पष्ट व्याख्या सेहो विक्रेताक अनाम उपस्थिति आ लिन युएक लम्बा मौनसँ उत्पन्न असहजताकेँ कम करि सकैत अछि। तथापि अध्याय समग्र रूपेँ पहिल खण्डक सबसँ ठोस नैतिक-नाटकीय प्रयोगसभमे सँ एक अछि: ई शशांककेँ केवल गलत आरोपक सम्भावित भुक्तभोगी नहि, अपन अतीतक सूक्ष्म भाषिक अन्यायक उत्तरदायी व्यक्ति बनबैत अछि।

## अध्याय ९ — मिथिलासँ दिल्ली ९ : समन, जब्ती-पञ्जी आ जाँचक कक्षमे ज्ञानक विनम्रता

नवम अध्याय आठम अध्यायक भविष्योन्मुख अदालतसँ कथाक वर्तमानमे स्पष्ट घुरैत अछि। आरम्भमे समनक कागज शशांकक किरायाक ठामपर अबैत अछि। पाठ तत्काल स्पष्ट करैत अछि जे समन गिरफ्तारीक आदेश नहि, निर्धारित तिथिक उपस्थिति आ कथनक सूचना अछि। ई भेद छोट कानूनी सूचना मात्र नहि: सार्वजनिक समाचारक दबावमे मनुष्य जाँचक प्रत्येक पत्रकेँ दोषक पूर्वनिर्णय बुझि सकैत अछि। मृणाल ओकरा एही अतिरञ्जनासँ रोकैत अछि। प्रस्थानपूर्व शशांक अपन फोन, ई-मेल, अनुवादक फाइल आ भुगतान-पर्ची क्रमसँ राखैत अछि; कागज मेटब अथवा संदेश नष्ट करब अस्वीकार करैत अछि। एहि वस्तु-क्रियामे कथाक नैतिक नाटकीयता अछि। सत्यनिष्ठा एतय घोषणा नहि, उपकरणमे उपलब्ध मूल सामग्रीकेँ सुरक्षित रखबाक निजी निर्णय अछि।

जाँचक स्थान लेखक जानि-बुझि अनाटकीय बनबैत छथि: पुरान पंखा, लोहाक कुर्सी, फाइल लऽ जाइत कर्मचारी आ साधारण प्रतीक्षालय। भयावह अपराध-कथाक भव्य छापामारीक बदला दैनन्दिन कार्यालयक सामान्य गति अबैत अछि। एहि विपरीततासँ नायकक भीतरक अस्थिरता अधिक बोधगम्य होइत अछि। शशांक कल्पना करैत अछि जे अधिकारीसभ ओकर चीनी भाषा पर निर्भर होयत; एहि अपेक्षामे भयक संग महत्वाकांक्षाक नूतन रूप सक्रिय अछि। ओ जाँचकेँ अपन उपयोगिता देखेबाक मंच मानय लगैत अछि। लेखक एतय दर्शबैत छथि जे प्रतिकूल सार्वजनिक घटना सेहो आत्ममहत्त्वक नशा बनि सकैत अछि। ई शशांकक एक विलक्षण चारित्रिक गुण अछि, जकर आलोचना केवल भयग्रस्त निर्दोष व्यक्ति कहि निबटायल नहि जा सकैत।

आदित्य मिश्रक साक्षात्कार प्रश्नक अनुशासनमे सम्पन्न होइत अछि। ओ स्मरण आ प्रत्यक्ष, मूल पाठ आ सम्भावित अर्थ, रकम प्राप्त होएब आ लाभकारी स्वामित्व जानब—एहि सभ स्तर अलग करैत अछि। एक सेवा-शब्दक अनुवाद ‘अस्थायी भुगतान व्यवस्था’ कएल गेल छल, जखन मूलमे

तकनीकी भुगतान-पथक सम्भावना सेहो छल। शशांक स्वीकृत करैत अछि जे ओकर चयन सम्भावित छल, निश्चित नहि। तकर बाद शशांकक भाषा-सेवा शुल्कक भुगतान ओकर खाते आयल, ई ओ मानैत अछि; मुदा जे खातासँ धन आयल तकर वास्तविक स्वामी ओ जाँचने नहि छल। एहि सूक्ष्म उत्तरसभमे उपन्यासक मौलिक सामाजिक विषय अभिव्यक्त होइत अछि: आर्थिक लेन-देनक दृश्य अभिलेख आ तकर अन्तिम नियन्त्रण एक वस्तु नहि। भुगतान पाबनिहारक परिचय सँ अपराध-सहभागिता अथवा व्यापक स्वामित्वक अनुमान स्वतंत्र आधार बिना अनुचित होयत।

जब्तीक दृश्य अध्यायक भौतिक केन्द्र अछि। अधिकृत अधिकारी शशांकक फोन आ लैपटॉप परीक्षण लेल लैत अछि, बनावट, क्रमाङ्क, अवस्था आ सूची दर्ज करैत अछि। शशांक एक मॉडल-संख्याक अंक-त्रुटि चिन्हि सुधार करबैत अछि। ई बारीकी रचनात्मक रूपेँ निर्णायक अछि, कारण ई केवल विधिक प्रक्रिया देखेबाक लेल नहि; लाल किलाक 'नहि' छोड़ि देबाक पुरान भूलक उलट व्यवहार अछि। जखन ओ एखनहि विवरण सुधारबैत अछि, तखन प्रत्यक्षक सूक्ष्मता सुरक्षित रखबाक अभ्यास अपन काजमे उतारैत अछि। मुदा उपकरणक जब्ती ओकर सम्पूर्ण अपराध-सिद्धि नहि; ओकर निजी जीवनक बहुआयामी सामग्री राज्यक जाँच-विधिमे प्रवेश करैत अछि। लेखक एहि प्रवेशक भयकेँ मान्यता दैत छथि, तथापि भयकेँ अपराधक प्रमाण अथवा राज्यक दुरभिसन्धिक प्रमाण बना दैत नहि छथि।

एक अन्य चीनी संदेशमे 'पुरान बाट' आ 'नव व्यक्ति मार्फत हिसाब' सन शब्द अबैत अछि। अधिकारी भुगतान-पथक सम्भावना उठबैत अछि, शशांक संपर्क-पद्धतिक वैकल्पिक अर्थ छोड़ैत अछि। आदित्य निष्कर्ष सीमित रखैत अछि जे अकेला पंक्तिसँ अवैध भुगतान सिद्ध नहि। एहि ठाम 'बाट' वस्तुतः शब्दक बहुआर्थी मार्ग अछि; पाश्चात्य कथाशास्त्रक दृष्टिसँ संवादक नाटकीय विडम्बना ई जे भाषा विशेषज्ञक काम निश्चितता बेचब नहि, निश्चितताक सीमा प्रकट करब बनि रहल अछि। आदित्यक प्रश्न 'की निश्चित?' बारम्बार शशांकक भीतरक आत्मविश्वासकेँ परीक्षणक कक्षमे लबैत

अछि। शशांक एक क्षण सोचैत अछि जे एहन कठिन अधिकारीकेँ बौद्धिक रूपेँ मात देब चाही; कथावाचक एहि प्रतिस्पर्धी प्रवृत्तिक आलोचना करैत अछि। ई चरित्रक सतत कमजोरीक चिह्न अछि—विवेक उचित दिशा बुझितहुँ अभिमान ओकरा प्रतियोगितामे बदलय चाहैत अछि।

अध्यायक अन्त भागमे 'CN-client-map' नामक ग्राहक-भाषा सूचीवला फोल्डर, उपलब्ध स्मरण, डिजिटल परीक्षणक शेष अवस्था आ बयानक दू सुधार प्रस्तुत अछि। आदित्य अभिलेखमे 'डिजिटल परीक्षण लंबित' लिखैत अछि, जाहिसँ अज्ञानकेँ आधिकारिक दर्जा भेटैत अछि। कथाक दार्शनिक उपलब्धि ई जे शून्य स्थान केँ तुरन्त सिद्धान्तसँ भरबाक बदला खाली छोड़बाक क्षमता सत्य-अनुशासनक हिस्सा बनैत अछि। जब शशांक अपन बयानमे 'भुगतान-पथक अर्थ बुझैत छलहुँ'क बदला 'सम्भावित अर्थ बुझैत रही' लिखबबैत अछि, आ 'सभ ग्राहक'क बदला केवल तीन अभिलेखक सीमा स्थापित करैत अछि, तखन नव्य-न्यायक अवच्छेदक-विवेक एक जीवित लिखित क्रिया होइत अछि। एहि दृश्यकेँ निरपेक्ष कानूनी विधि-परामर्शक रूपमे नहि, उपन्यासक काल्पनिक जाँच-प्रक्रियाक रूपमे पढ़बाक चाही।

दुनू पात्रक मिथिलाक बौद्धिक संस्कारक सम्बन्ध एहि अध्यायमे प्रत्यक्षत: समान विद्यालयीय प्रशिक्षणसँ प्रमाणित नहि, बल्कि प्रक्रिया अपनबाक समान वृत्तिसँ बनैत अछि। आदित्यक मेज पर प्रश्नक सीमा अछि; शशांकक भीतर पहिलेक नव्य-न्यायक अभ्यास अछि। एकरा सांस्कृतिक नियतिवाद बनाबब उचित नहि—मिथिलाक सभ लोक ई प्रकारक अभिलेखीय विवेक स्वभावसँ राखैत छथि, एहन किछु पाठ नहि कहैत। रस आ औचित्यक दृष्टिसँ फोनविहीन जेबक खालीपन, गर्म दिल्लीक साँझ आ मृणालक बाहरी प्रतीक्षा अध्यायक भावात्मक आधार अछि; एहि रूपकसभक कारण सूक्तिपूर्ण कथन व्यक्तिगत अनुभूति प्राप्त करैत अछि। सीमा ई जे अधिकारी आदित्य बहुत बेर सिद्धान्तक आदर्श वक्ता जेकाँ देखाइत छथि; हुनकर पेशागत दुविधा आ निजी अनिश्चितता विस्तृत भेला पर नाटकीय संघर्ष अधिक

बहुपरत भऽ सकैत छल। तथापि नवम अध्याय न्याय-अनुशासनकेँ वास्तविक वस्तु-पञ्जीक सूक्ष्मता धरि उतारैत अछि आ नायकक गर्वक नव परीक्षाक भूमि बनबैत अछि।

## अध्याय १० — मिथिलासँ दिल्ली १० : भाषिक विशेषज्ञता, लाभकारी स्वामित्व आ अर्थ रोकबाक क्षमता

दसम अध्याय नवम अध्यायक जब्ती आ बयानक बादक अवस्था सँ आरम्भ होइत अछि। शशांकक फोन आ लैपटॉप सरकारी परीक्षणमे अछि, दैनिक व्यावसायिक जीवन बाधित अछि; तथापि ओकर मन जाँचक मेज पर वापसीकेँ भाषिक विशेषज्ञताक अवसर रूपेँ देखबैत अछि। दोसर बुलाहटक सूचना पाबिते ओ पूछैत अछि जे अनुवादक चाही कि नहि। मृणाल एहि प्रतिक्रिया केँ पहिचानैत अछि: नायक स्वयं जाँचक महत्त्वकेँ अपनी आवश्यकताक मापक बनाबय चाहैत अछि। एतय सामाजिक मान्यता लेल तृष्णा अपराध-बोध अथवा निर्दोषताक प्रश्नसँ अलग मनोवैज्ञानिक धारा रचैत अछि। लेखक शशांककेँ केवल दोषारोपणक वस्तु नहि, अपने प्राप्त योग्यता सँ मोहित मनुष्य रूपेँ देखबैत छथि।

आदित्य तीन संचिका साम्हिन रखैत अछि: दिल्लीक छोट आपूर्तिकर्ताक सेवा-करार, ओहि आपूर्तिकर्ताक मध्यस्थ संस्थासँग करार, आ विदेशमे पञ्जीकृत विक्रेताक तकनीकी सेवा अभिलेख। अंग्रेजी प्रतिक संग किछु चीनी संलग्नक अछि। आदित्यक निर्देश अछि—अनुवाद चाही, निष्कर्ष नहि। फेर ओ तीन पाँतिक पद्धति निर्धारित करैत अछि: मूल अर्थ, प्रसंगानुसार सम्भावित अर्थ, आ जे निश्चित नहि। ई रचनात्मक आवर्ती युक्ति पाठककेँ प्रमाणक व्यवस्थित भेद सिखबैत अछि, मुदा एहि अध्यायमे पुनरावृत्ति नूतन ठोस शब्द-विवादक कारण सार्थक अछि। उपन्यासक भाषिक विषय तकनीकी संगतिसँ जुड़ैत अछि: अनुवादककेँ केवल शब्द जानेब नहि, अनिश्चितताक सम्बन्ध सहित अभिलेख प्रस्तुत करब आवश्यक अछि।

पहिल करारमे चीनी पदक अंग्रेजी रूप ‘partner’ देल गेल अछि। शशांक देखबैत अछि जे मूल पद अनिवार्यतः साझेदार नहि, नियुक्त सेवा-पक्षक सम्बन्ध प्रकट कऽ सकैत अछि। ‘साझेदार’ शब्दक व्यापक आभास पाठककेँ स्वामित्व वा संयुक्त नियन्त्रण अनुमान कराबय सकैत अछि, मुदा करारक

स्रोत ओ दावा आवश्यक रूपेँ नहि करैत। ई दफ्तरक शब्दानुवाद नहि, सम्बन्धपरक अर्थक विवाद अछि। साहित्यिक रूपमे भाषा एतय शक्ति उत्पन्न करैत अछि, कारण एक नामकरण संस्थासभक आर्थिक सम्बन्धक सामान्य पाठकीय मानचित्र बदलि दैत अछि। नव्य-न्यायक दृष्टिसँ विशेषणक क्षेत्र सीमित करब आवश्यक अछि; किन्तु एहि दार्शनिक उपमानकेँ आधुनिक कम्पनी-कानूनक प्रत्यक्ष प्रमाण नहि मानल जाएत। नायकक बोध महत्वपूर्ण अछि, मुदा जाँचक वास्तविक निष्कर्षक लेल स्वतंत्र अभिलेख, नियन्त्रण आ लाभक स्रोत जरूरी अछि।

दोसर संचिकाक 'निर्दिष्ट लाभ-पाबनिहार'क उल्लेख आरो सटीक विवेचन माँगैत अछि। भुगतानक राशि ककरा भेटत आ अन्तिम लाभकारी स्वामी के छथि—ई दूटा अलग प्रश्न अछि। शशांक ई अन्तर जाँचक मेज पर लिखित रूपमे दर्ज करैत अछि। एतय उपन्यासक नाम 'अनुवादक'क व्यापक अर्थ अधिक स्पष्ट होइत अछि: व्यापारिक व्यवस्थाक एक भाषिक विशेषणक कारण आर्थिक उत्तरदायित्वक दायरा घटि वा बढ़ि सकैत अछि। मुदा आरोपी पक्षक हितमे अर्थ सीमित करब आ सत्यक हितमे अर्थ सीमित करब एक बात नहि; नायकक विश्वसनीयता एहि पर निर्भर अछि जे ओ विपरीत परिणाम होएतो एके नियम लागू करय। आदित्यक ठोस प्रश्नसभ ओकरा एहि समरूप कसौटी पर लबैत अछि।

तेसर संचिकामे चारि संस्थाक नाम, अलग मुहर आ पञ्जीकरण संख्या उपलब्ध अछि, मुदा दू चीनी संलग्नकक पदक्रममे साम्य अछि। शशांक उत्साहित भऽ कहि दैत अछि जे चारू वास्तवमे एके नियन्त्रणमे अछि। आदित्य तुरन्त 'वास्तवमे' शब्द पर रोक लगबैत अछि। ओ केवल भाषिक संरचनाक साम्य आ हस्ताक्षर-वर्तनीक मिलताजुलतापन देखल गेल, ई दर्ज करबैत अछि; साझे नियन्त्रण एखन अनुमान अछि। एहि बिन्दु पर कथा पहिल दृश्यक उलट दिशा अपनबैत अछि। पहिने भाषिक दक्षता सम्भावित आरोप घटबैत छल; आब ओही दक्षतासँ नायक सम्भावित आरोप बढ़ाबय चाहैत अछि। ई प्रतिबिम्बी रचना नैतिक रूपेँ अधिक परिपक्व अछि, कारण

प्रमाण-विवेक के केवल आत्मबचावक युक्ति नहि, जे ककरो विरुद्ध जायत तखन सेहो निष्ठापूर्वक लागू होएबाक अनुशासन बनबैत अछि।

बिलक ढेरमे 'consultancy' सन व्यापक अंग्रेजी शीर्षकक चीनी विवरण 'स्थल-समन्वय आ उपकरण-जाँच'क नजदीक भेटैत अछि। अर्थक विशिष्टता जाँचक प्रश्नक दिशा सीमित करैत अछि, मुदा शशांक 'ककर पक्षमे?'क उत्तर देबासँ बचैत अछि, कारण ओ अनुवादकक काम नहि। एतय आनन्दक एक क्षण सेहो अछि: आदित्यक हलुक स्वीकृति शशांक लेल पुरस्कार बनैत अछि। पाठक बुझैत अछि जे अनुशासित उत्तर देनिहार मनुष्यक भीतर सेहो प्रशंसाक भूख रहि सकैत अछि। लेखक ई भूखकेँ सीधा अपराध बनबैत नहि छथि; केवल देखबैत छथि जे दक्षताक मान्यता सत्यक खोजकेँ आत्मप्रतिष्ठाक खोजमे फेर बदलि सकैत अछि। मृणालक साँझक संवाद एहि तनावक सामाजिक प्रतिवाद अछि। ओ नायकक परिश्रमक मूल्य नहि नकारैत, मुदा अधिकारक सार्वभौम दावा टारैत अछि: शब्द देखब एकटा काज, स्वामित्व बैंक आ नियन्त्रणक सभ स्रोत सँ जाँचब अलग काज।

अध्यायक उत्तरार्धमे नव नामित संस्थाक माध्यमसँ भुगतानक अभिलेख भेटैत अछि। विक्रेता बदलल, ई तथ्य; परिवर्तनक कारण अथवा अवैध उद्देश्य, ई एखन अनिश्चित। अनेक वैध कारण सम्भव कहि देब सेहो ओहि कारणसभ घटना-कथामे वास्तवमे भेल, से सिद्ध नहि करैत। पाठ एहि स्तर पर अनुशासित अछि, कारण आरोपक वैकल्पिक व्याख्या प्रस्तुत करैत अछि, मुदा ककरो अन्तिम स्वामित्व निरूपित नहि करैत। एकरा शंकाक नकार नहि, परीक्षणक अगिला प्रश्न निर्धारित करब बुझबाक चाही। उपन्यासक सामाजिक आलोचनामे कम्पनीक अभिलेखीय पारदर्शिताक माँग एही भेदसँ निकलैत अछि।

रैनि शशांक पुरान अभ्यास-पृष्ठ पर 'स्वर बदलल त' अर्थ बदलल'क नीचे नव विचार लिखैत अछि: अर्थ बदलला पर सम्बन्धक अर्थ बदलि सकैत अछि, मुदा सम्बन्ध सिद्ध करबाक लेल केवल शब्द पर्याप्त नहि। फेर ओकर भीतर तेसर आत्मप्रशंसात्मक पाँति लिखबाक इच्छा होइत अछि जे सही अर्थक चाबी ओकरे लग अछि। कलम रुकि जाइत अछि, विचार नहि। ई अधूरा

लिखल पाँति अध्यायक सर्वाधिक प्रभावकारी अन्त अछि। एतय कथावाचकक विस्तृत तात्त्विक घोषणा सँ बेसी पाठक कापीक मौनकेँ अनुभव करैत अछि। नायकक प्रतिभा आ प्रतिभा पर नियन्त्रणक भेद खुलेल अछि; संयम क्षणिक क्रिया होइतहुँ भितरी मोहक अन्त नहि। अध्यायक शिल्पगत सीमा पुनः विस्तारसँ प्रत्यक्ष-अनुमान भेदक विवेचन अछि; तथापि जतेक ठोस अलग-अलग करार पद, बिल, हस्ताक्षर आ मृणालक प्रश्न देल गेल अछि, ओ पुनरावृत्त सूत्रकेँ पर्याप्त नाटकीय आधार दैत अछि। दसम अध्याय शशांकक भाषिक गरिमाकेँ अक्षुण्ण रखैत, ओकर स्वतःसिद्ध नैतिक अधिकारक भ्रम तोड़ैत अछि।

## अध्याय ६-१० : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — दुहरी मेज, कालभंग आ भाषाक अधिकारक सीमा

एहि पाँच अध्यायक संरचनाक आलोचनात्मक विश्लेषण तीन पृथक किन्तु सम्बद्ध क्रम चिन्हबैत अछि। छठम अध्यायमे अस्पष्ट ‘ऊपर’ शब्दक कारण कम्पनीक आन्तरिक भाषिक व्याख्या आ स्थानीय प्रशासनक लिखित आदेश दुनू अलग दृश्य बनैत अछि। सातममे एहि अस्पष्टता पर माध्यम एक आरोपात्मक कथा बनबैत अछि, मुदा जाँचकर्ता नामक उपस्थितिक सीमित अर्थ दर्ज करैत अछि। आठममे भविष्यमुखी न्यायालयक फ्रेम पुरान लाल किलाक भाषिक चूक पर लौटैत अछि। नवममे कथा वर्तमानक समन-जाँच आ जब्ती प्रक्रिया पर फेर सँ टिकैत अछि, आ दसममे करारक भाषिक सम्बन्ध आ वास्तविक लाभकारी नियन्त्रणक अन्तर परीक्षणक केन्द्र बनैत अछि। ई क्रम सीधा अपराध-खोजक उत्तेजनासँ बनल नहि; ज्ञान प्राप्त करबाक माध्यम —मौखिक कथन, सूचना-पत्र, समाचार, स्मृति, न्यायालय, जब्ती-सूची आ सेवा-करार—क्रमशः बदलैत अछि।

छठम आ सातम अध्याय एकसाथ पढ़िते ‘ऊपर’ शब्द आ माध्यमक प्रश्नचिह्न दू भिन्न भाषिक जोखिम देखबैत अछि। पहिल अस्पष्टताकेँ तर्कसंगत रूपेँ बचायब चाहैत अछि; दोसर ओही अनिश्चितताकेँ आरोपक आभासमे रूपान्तरित करैत अछि। दूनू ठाम स्रोतपाठ आ परवर्ती कथनक दूरी निर्णायक अछि। एहि दूरीकेँ केवल भाषिक दोष कहि छोड़ब पर्याप्त नहि। प्रबन्धक, अधिवक्ता, समाचारक रचयिता, पाठक आ जाँचकर्ता एके वाक्य अपन-अपन संस्थागत उद्देश्यसँ पढ़ैत छथि। पाश्चात्य बहुस्वर आख्यानक अवधारणा एतय उपयोगी अछि, मुदा वास्तविक पात्रसभक स्वरक स्वायत्तता जाँचब बाकी रहैत अछि—किछु पात्र अत्यधिक सुचारू रूपेँ एके प्रमाण-नीति बाजैत देखाइत छथि।

छठम, सातम आ नवम अध्यायमे आदित्य मिश्रक चरित्र-विकास तुलना योग्य अछि। पहिले ओ आदेशक कारण अनुपस्थित अछि से फाइलमे लिखैत अछि; फेर मुहरबन्द सामग्रीक प्राप्ति-समय आ नामक अभिलेखीय अर्थ

अलग करैत अछि; नवममे शशांकक कथन आ डिजिटल उपकरणक जब्ती-विवरण प्रामाणिक रूपेँ सीमित करैत अछि। एहि तीन दृश्यसँ 'जाँचकर्ता' केवल बाहरी सरकारी प्रतीक नहि रहैत, ज्ञान-वर्गीकरण करैत पात्र बनैत अछि। मुदा ओ बारम्बार अनुकरणीय विवेकक मुखर स्वर बनि उठैत छथि। समीक्षाक लेल एहि सीमा पर स्पष्ट नजर जरूरी अछि: संस्थागत अधिकारीक अचूकता एखन तक प्रतिपादित कथा-स्वर होएत, स्वतः बाह्य संस्थागत सत्य नहि। आगूक पाठ एहि नैतिक स्थिरताक परीक्षा लैत अछि कि नहि, से स्वतन्त्र रूपेँ देखबाक होयत।

आठम अध्याय एहि लगातार वर्तमान घटनाक क्रम तोड़ि पहिल खण्डक सम्पूर्ण नैतिक संरचनाकेँ नव प्रकाश दैत अछि। लाल किलाक अतीतमे शशांक जखन 'नहि देखने' लिखित टिप्पणीमे बचेबाक आग्रह नहि करैत, ओ एक अपेक्षाकृत कमजोर अपरिचित विक्रेता पर शंकाक दबाव बढ़बाक सम्भावना जन्मबैत अछि। भविष्यमे न्यायालय ओकरा उत्तरदायी ठहरबैत अछि, मुदा वर्तमान आरोपक स्वतन्त्र सिद्धि अस्वीकार करैत अछि। एहि कालभंगक कारण पाठक नायकक सम्पूर्ण निष्कलंकताक हड़बड़ीसँ बाहर अबैत अछि, तथापि ओकर विरुद्ध नूतन अपराध सिद्ध मानयकेँ मजबूर नहि होइत। लज्जा, नैतिक अनुशासन आ विधिक प्रमाण एके बातक तीन नाम नहि। एहि अन्तरमे उपन्यासक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक सम्भावना अछि।

नवम आ दसम अध्याय परस्पर उलट-दिशाक पाठ अछि। नवममे शशांकक वस्तु—फोन आ लैपटॉप—जाँचक नियन्त्रणमे चलि जाइत अछि, ओकर बयान सिमटैत अछि आ व्याख्याक स्वयंभू प्रभुत्व टूटैत अछि। दसममे ओही व्यक्ति तीन करारक अनुवाद करैत अछि आ अपन कौशलक विशेष स्थान पुनः अनुभव करैत अछि। एकठाम 'निश्चित नहि'क स्वीकार आत्मसंयम; दोसरठाम चारि संस्थाक साझा नियन्त्रणक जल्दबाजी फेर आत्मगौरवक छलाँग। एतेक आवागमनसँ चरित्र सपाट नैतिक परिपक्वताक रेखा नहि बनैत। सीखबाक बादो पुरान कमजोरी लौटि सकैत अछि, आ एहि पुनरागमनसँ पात्र अधिक मानवीय भऽ उठैत अछि।

पाँच अध्यायक वस्तु-प्रतीक सेहो क्रमिक बदलाव देखबैत अछि—छठममे अनुवादक कॉपी आ स्थगन-आदेश, सातममे डिजिटल शीर्षक आ मुहरबन्द लिफाफा, आठममे कैमरा-बैग आ पुरान टिप्पणी, नवममे मॉडल-क्रमाङ्क आ मुहरबन्द उपकरण, दसममे तीन करार आ अधलिखल नव सूत्र। एहि वस्तुसभकेँ एकसाथ राखला पर उपन्यासक वास्तविक स्थापत्य स्पष्ट अछि: कथन भौतिक अथवा लिखित रूप धरिते ओकर सत्यता स्वतः बढ़ि नहि जाइत; स्रोत, तिथि, अर्थ, लेखक, प्रसंग आ अभिगमक सीमा फेरो जाँचबाक पड़ैत अछि। एहि क्रममे नव्य-न्यायक प्रत्यक्ष, अनुमान आ शब्द-प्रमाणक रूपक सार्थक अछि, मुदा प्रत्येक पुरान दार्शनिक पदक यान्त्रिक समरूपता आधुनिक डिजिटल वा आर्थिक प्रक्रियासँ जोड़ब उचित नहि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति अनुसार मिथिला, दिल्लीक विधिक-सामाजिक जीवन आ विदेशस्थित संस्थाक उल्लेख समानान्तर पाठ-पथ अछि; तकरा ऐतिहासिक अपराध-जालक बाह्य प्रमाण मानब नहि।

एहि बैचक कलात्मक उपलब्धि अछि जे सार्वजनिक आरोप, नायकक अतीतक वास्तविक त्रुटि, संस्थागत अनुसन्धान आ शब्दार्थक वैध कार्यकेँ एके कठिन प्रमाण-कसौटी पर जाँचबाक साहस देखाओल गेल अछि। संगहि सीमा सेहो स्पष्ट अछि। प्रत्यक्ष–अनुमान–आरोपक सूची बहुत अध्यायमे पुनः-पुनः अबैत अछि; अनेक पात्र एके व्याख्यात्मक मुहावरा ग्रहण करैत छथि; नाटकीय दृश्य कतहु सूक्तिपूर्वक शीघ्र बन्द कएल जाइत अछि। एहि दोहरावकेँ लेखकक सुसंगति आ शिल्पक सम्भावित भार—दुनू रूपमे पढ़बाक चाही। ओहि आलोचनात्मक सावधानी संग एहि पाँच अध्यायक निष्कर्ष ई नहि जे शशांक निर्दोष वा दोषी सिद्ध भऽ गेल; ई अछि जे भाषा ओकरा असाधारण ज्ञानक अवसर देबैत अछि, मुदा जे अधिकार स्रोतक पाठमे नहि अछि, से अधिकार भाषिक प्रतिभा ककरो हाथमे स्वतः नहि दैत।

## अध्याय ११ — मिथिलासँ दिल्ली ११ : धनक गति, प्रमाणक सीमा आ प्रशंसाक गुप्त प्रलोभन

एगारहम अध्यायमे कथानक करारक भाषासँ बैंकक अभिलेख आ भुगतान-द्वारक निपटान-सार धरि पहुँचैत अछि। ई परिवर्तन केवल विषयक विस्तार नहि, प्रमाणक स्वरूप बदलबाक घटना अछि। करारमे पक्ष, अधिकार आ शर्त लिखल रहैत अछि; बैंक-सारमे राशि, समय आ खाताक बीचक क्रम देखाइत अछि। लेखक पहिल अनुच्छेदेमे स्पष्ट करैत छथि जे तीन करार, भुगतान-पाबनिहारक नाम आ विक्रेता-परिवर्तनक सूचना एक-दोसरासँ जुड़ल देखाइ सकैत अछि, मुदा एहन दृश्य-साम्यसँ अपराध सिद्ध नहि होइत। एहि सावधानीकेँ कथाक प्रारम्भमे राखब पाठकक उत्सुकताकेँ घटेब नहि, ओकरा जाँचक अनुशासनमे प्रवेश कराएब अछि। रहस्य बनैत अछि, मुदा रहस्यक समाधान पूर्वनिर्धारित नहि कएल जाइत।

आदित्य मिश्रक मेज पर बैंक विवरणक प्रतिलिपि, भुगतान-द्वारक सार आ खाताक सूची अलग-अलग स्रोत-श्रेणी प्रस्तुत करैत अछि। छोट-छोट ग्राहक-राशि एक निपटान-राशि बनि एक खातामे जाएब आ फेर दोसर दिस बढ़ब धनक मार्ग देखबैत अछि; उद्देश्य, निर्णयकर्ता आ अन्तिम लाभार्थी नहि। छोट खुदरा प्रतिष्ठानक घोषित व्यापार आ डिजिटल मनोरंजन, परामर्श तथा विपणन-सहायताक सेवा-विवरणक असंगति एक वास्तविक परीक्षणयोग्य प्रश्न अछि। आदित्य शशांकसँ क्रमशः ‘सिद्ध तथ्य’, ‘अनुमान’ आ ‘आरोप’ अलग करबबैत अछि। ई संवादक रचनात्मकता एहि बातमे अछि जे कोनो लम्बा दार्शनिक उपदेशक बदला कागज पढ़बाक श्रममे ज्ञानमीमांसा घटित होइत अछि। नव्य न्यायक विशेष्य, विशेषण आ सम्बन्धक अनुशासन व्यावहारिक अभिलेख-परीक्षणक व्याकरण बनि उठैत अछि।

व्यक्तिगत खातासभमे छोट रकमक तीव्र आवक-जावक, नगद निकासी आ मिलैत-जुलैत रोमन नाम कथाक अगिला आकर्षण अछि। शशांक पहिने नाम-साम्यकेँ व्यक्तिक पहचान धरि लऽ जाए चाहैत अछि; आदित्य ओकर निष्कर्ष 'नाम-साम्य; पहचान स्वतंत्र रूपेँ सत्यापित होयत' धरि सीमित करैत अछि। एहि दृश्य मे 'आधा' शब्दक नैतिक महत्त्व अछि: अपूर्ण ज्ञानकेँ अपूर्ण रहय देब, ओकरा पूर्ण मानि लेबाक बनिस्पत कठिन अछि। सहायक अधिकारीक 'म्यूल अकाउंट' सन नामकरण पर सेहो आदित्य रोक लगबैत अछि; ओ जे प्रत्यक्ष अछि, से व्यक्तिगत खाता, त्वरित आवक-जावक आ नगद निकासी रूपमे लिखबबैत अछि। अएह प्रकारेँ उपन्यास अपराध-सूचक तकनीकी पदक धाकसँ प्रमाणक स्थान हड़पबाक प्रवृत्तिक आलोचना करैत अछि।

चीनी संदेशमे 'पुरान बाट' आ 'नव मार्ग'क रूपक अनुवादक लेल निर्णायक परीक्षा बनैत अछि। शशांक प्रसंगक आधारपर 'माध्यम' जोड़य चाहैत अछि, मुदा स्वीकार करैत अछि जे मूलमे ओ शब्द नहि अछि। आदित्य शाब्दिक आ प्रसंगगत अनुवाद दुनू लिखबाक निर्देश दैत अछि। लेखक एतय भाषा आ व्यवहारक अन्तरकेँ तर्कशास्त्रीय रूपमे बचबैत छथि: भुगतानक संदर्भमे बाटक रूपक महत्त्वपूर्ण भऽ सकैत अछि, मुदा स्वयं बैंक-हस्तान्तरण अथवा हवाला सिद्ध नहि करैत। लाल किलाक पूर्व घटनाक स्मृति एहिठाम आन्तरिक नियन्त्रणक काम करैत अछि। एक बेर अर्थ बदलबाक अनुभव शशांककेँ एहि बेर अपन जोड़ल शब्द पहचानबाक अवसर दैत अछि। ई आत्मसुधारक सीमित उपलब्धि अछि; एकरासँ ओकर समस्त नैतिक समस्या समाप्त नहि होइत।

मृणालक भूमिका एहि आर्थिक कथामे घरेलू, लगभग सामान्य दृश्यसँ पैघ नैतिक प्रतिवाद तैयार करब अछि। कार्यालयक सीढ़ीपर भोजनक डिब्बा खोलि ओ पूछैत अछि जे शशांककेँ भाषा चाही कि रहस्य; फेर ध्यान दियबैत अछि जे पहिने शशांक काज खोजैत छल, आब कागज ओकरा खोजैत अछि। ई वाक्यक भीतर जीविकाक सामान्य उन्नतिसँ 'आवश्यक व्यक्ति' बनल रहबाक नशा धरि रूपान्तरण अछि। शशांक अपन उपयोगिताक चमकमे गर्व अनुभव

करैत अछि; मित्र ओकर प्रतिभा नकारैत नहि, मुदा प्रतिभाक स्वामित्वसँ उत्पन्न अहंकार चिन्हबैत अछि। मृणालक जिरह आदित्यक संस्थागत जिरहक घरेलू समरूप अछि। एक सत्यकेँ प्रमाणक सीमा चाही, दोसरासँ आत्मस्वीकृति; दूनू आग्रह एक-दोसराक स्थान नहि लैत।

अध्यायमे हवाला आ गुप्त-मुद्राक प्रसंग विशेष सावधानी माँगैत अछि। किछु मौखिक सूचनामे हवाला शब्द आयल अछि आ किछु अभिलेखमे नगद निपटानक उल्लेख भेटैत अछि, मुदा कथित विशेष धन-श्रृंखलासँ ओकर प्रत्यक्ष जोड़ सिद्ध नहि। आदित्य ‘अभिलेखमे’ आ ‘सूचनामे’ दू स्तम्भ बनबैत अछि। समेकित सूचीमे हवाला सम्बन्धक सूचना, गुप्त-मुद्राक उल्लेख, खातासभक गति आ लाभकारी स्वामित्वक अनिर्णीत स्थिति अलग-अलग रखल जाइत अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ ई नीरसताक सौन्दर्य अछि: लेखक सनसनीक भाषा पर भरोसा नहि करैत छथि; छोट निष्कर्षक नैतिक भार पैघ कागजक ढेरसँ अधिक करैत छथि। ‘नीक जाँचमे निष्कर्ष बहुत बेर कागजसँ छोट होइत अछि’—एहि सूत्रमे कथाक औचित्य आ ज्ञानक विनय एकत्र अछि।

अनजान अंग्रेजी सन्देश, ‘You understand the flow better than they do’, कथानकक स्वर अचानक बदलैत अछि। एतय धमकी, प्रस्ताव अथवा प्रेषकक नाम नहि अछि; केवल प्रशंसाक रूपमे शशांकक कमजोरी पर आघात सम्भव अछि। मृणालक व्याख्या जे प्रत्येक जाल धमकीक रूपमे नहि अबैत, एक सम्भावना अछि, सिद्ध तथ्य नहि। शशांक फोन नहि मेटबैत, उत्तर नहि दैत, आदित्य लग ओकर छायाप्रति सुरक्षित करबबैत अछि। नव्य न्यायीय विवेचनमे प्रत्यक्ष एतबे जे अपरिचित संख्यासँ संदेश आयल; नेटवर्क-संबन्ध केवल जाँचयोग्य अनुमान। कथाक सफलता ई जे बाह्य रहस्यक दाब बढ़ितहुँ स्वयं समीक्षा ओकरा निश्चित षडयंत्र नहि कहैत अछि।

रचनात्मक रूपसँ अध्याय मेज–सीढ़ी–मेज–सड़क–नोटबुकक आवर्तन पर बनल अछि। संख्याक ठंढा संसारक बीच भोजन, बाइकक लाल बत्ती आ मित्रताक संवाद मानवीय ताप बनौने रखैत अछि। रातिक नोटबुकमे ‘प्रत्यक्ष:

धनक गति', 'अनुमान: गति पछाति उद्देश्य' आ मित्रताक परिभाषा तीन भिन्न रजिस्टर जोड़ैत अछि। धनक गति बुझबाक बाद ओकरा मोड़बाक आकर्षणक संकेत नायकक मनमे उठैत अछि; लेखक एहि आकर्षणकेँ कोनो घटित अपराधक बराबर नहि मानैत। अध्यायक कलात्मक सीमा ई जे अन्तिम प्रत्यक्ष-सूची पहिनुक विवरणक पुनरावृत्ति करैत अछि; तथापि एहि पुनरावृत्ति सँ पाठकक आरोप-प्रेरित उतावलीकेँ अनुशासित करबाक परियोजना स्पष्ट होइत अछि। एकरा वित्तीय अपराधक निर्णय नहि, निर्णयक योग्यता पर लिखा गेल नैतिक अध्याय बुझबाक चाही।

## अध्याय १२ — मिथिलासँ दिल्ली १२ : मकाऊक दोसर यात्रा, देखल सीमा पार करब आ चयनित मौन

बारहम अध्याय एगारहम अध्यायक अनजान प्रशंसा आ धनक प्रवाहक उत्सुकता सँ आरम्भ होइत अछि, मुदा ओकर मुख्य संघर्ष बाहरी नेटवर्क नहि, शशांकक अपन निर्णय अछि। भारतीय विद्या भवनक पूर्व शिक्षकक माध्यमसँ मकाऊमे दू दिनक भाषा-बैसारक निमन्त्रण अबैत अछि। पारिश्रमिक पहिल यात्राक अपेक्षा लगभग दूना अछि। शशांक ई-मेल पहिने पूरा, दोसर बेर रकम, तेसर बेर कामक सीमा पढ़ैत अछि; एहि छोट क्रममे लेखक आर्थिक इच्छाक मनोविज्ञान पकड़ैत छथि। पहिल बेर लज्जा जगबयवला कार्य दोहराइत-दोहराइत सामान्य बुझाय लागैत अछि। कथा ओकर लालसाकेँ नाटकीय खलनायकीमे नहि बदलैत; लोभक नैतिक धार कतेक शान्त ढंगसँ कुंठित होइत अछि, से दर्शबैत अछि।

मृणाल निमन्त्रणक ‘पढ़बाक, परिवर्तन नहि करबाक’ लिखित सीमापर ध्यान दियबैत अछि। आदित्य सेहो स्पष्ट करैत अछि जे दिल्लीक जाँच-अभिलेखक उपयोग मकाऊक निजी काजमे नहि हो, आ ओतयक दृश्य एतयक सिद्ध तथ्य बनि अनुवादित नहि हो। दू क्षेत्रक ई पृथक्करण पद्धतिगत अछि: रोजगारक अनुमति जाँचक ज्ञानक निजी उपयोगक अनुमति नहि; डिजिटल पृष्ठ देखब अन्तिम स्वामित्व जानब नहि। नामक साम्य पहचान नहि सिद्ध करैत अछि —एहि तर्ककेँ लेखक यात्रा प्रारम्भ होयबाक पहिने स्थापित कऽ दैत छथि, जाहिसँ अगिला सीमा-भंगक नैतिकता स्पष्ट रहय। शशांक जे नियम जानैत अछि, ओकरा लाँघब अज्ञानजन्य त्रुटिसँ भिन्न ठहरैत अछि।

मकाऊक दोसर आगमनक दृश्य पहिल यात्राक वैभवसँ तुलनायोग्य अछि। काँचक भवन, उज्जर बिछौना, स्वागत आ रोशनी आब चमत्कार नहि लगैत; परिचय विस्मय घटबैत अछि आ लोभ अधिक स्पष्ट करैत अछि। पाश्चात्य आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ ई ‘दोसर आगमन’ आवर्ती परिवेशक पुनर्संयोजन

अछि। पहिल यात्रा बाह्य दृश्यक चमत्कार छल, दोसर आन्तरिक कारणक परीक्षा। समन्वयक शशांकक उच्चारणक प्रशंसा करैत ग्राहक-भाषा, भरोसा आ सूचना-स्पष्टताक सहायता माँगैत अछि। ई वैध कार्य होयब सम्भव अछि; उपन्यास ओकरा स्वतः छलक योजना घोषित नहि करैत। लेखक प्रशंसाक सम्बन्ध नायकक आत्मगर्वसँ जोड़ैत छथि, कोनो कम्पनीक अपराध-सिद्धिसँ नहि।

अस्थायी खाताक पटल पर पढ़बाक अनुमति आ परिवर्तन-निषेध लिखल अछि। भाषा-समीक्षा मे धन निकासी, विचाराधीन अवस्था, पर्स तथा त्रुटि-सन्देशक भारतीय भाषिक प्रभाव पर शशांकक प्रतिभा उभरैत अछि। कोन वाक्य ग्राहककेँ आश्वासन, आदेश वा बहाना बुझाओत—एहि संवेदनशीलता सँ भाषाक आर्थिक शक्ति चिन्हाइत अछि। मुदा सीमित भाषिक काजमे कुशल रहब प्रशासनिक सम्पूर्ण प्रणाली देखबाक अथवा निर्णय करबाक अधिकार नहि। शशांक जखन एक व्यापारी-चिह्नकेँ दिल्लीक स्मरणमे देखल नामसँ मिलबैत अछि, तकनीकी कर्मचारी बतबैत अछि जे ओ आन्तरिक प्रदर्शन-नाम अछि, पूर्ण कानूनी नाम नहि। एहि तथ्यसँ नाम-साम्यक प्रमाण-मूल्य आरो सीमित भऽ जाइत अछि।

अध्यायक निर्णायक घटना जाँचक स्मृतिसँ प्रेरित ‘खोज-खाना’क प्रयोग अछि। खोज-सुविधा भाषा-समीक्षा लेल उपलब्ध अछि, मुदा शशांक जे नाम टाइप करैत अछि, ओकर उद्देश्य ओकर लिखित काजसँ बाहर अछि। ओ हाथ रोकैत अछि, मृणाल आ आदित्यक सावधानी स्मरण करैत अछि, फेर स्वयं नाम टाइप करैत अछि। एहि क्रममे ज्ञानक अभाव नहि, जानल मर्यादाक इच्छापूर्वक उल्लंघन अछि। परिणाममे दू संक्षिप्त प्रविष्टि भेटैत अछि—व्यापारी-चिह्न आ पुरान सेवा-उल्लेख; बैंक-खाता, वास्तविक स्वामी अथवा अपराधक प्रमाण नहि। ओ प्रति नहि बनबैत, किछु बदलैत नहि। एहन सीमित परिणाम तकर आचरणकेँ निरापद स्वतः नहि बनबैत, मुदा ओकरा वास्तविक धन-अपराधक सहभागिता सेहो सिद्ध नहि करैत। नैतिक दोष आ कानूनी निष्कर्षक भिन्नता एकर प्रधान उपलब्धि अछि।

साँझक भोजमे नियमित सलाह आ मासिक पारिश्रमिकक सम्भावना उठैत अछि। 'प्रवाह' शब्द ग्राहक, व्यापारी आ सहायता-सन्दर्भमे प्रयुक्त होइत अछि; ओकरा अवैध धनक गुप्त संकेत मानि लेब पाठकक उतावली होयत। शशांक लिखित शर्त माँगैत अछि—ई सावधानी सेहो अछि, लोभसँ प्रेरित बातचीत आगाँ बढ़ेबाक संकेत सेहो। रचनाक सूक्ष्म विडम्बना ई जे बाह्य विधिक संरचना स्पष्ट करबाक आग्रह करैत नायक अपन आन्तरिक अतिक्रमण मृणालसँ नुकबैत अछि। मित्रक फोनपर 'भाषाक काज' कहब शाब्दिक रूपेँ पूर्ण असत्य नहि, मुदा जानि-बुझि कऽ छोड़ा गेल निर्णायक अंश ओकरा भ्रामक बना दैत अछि। ई वक्रोक्ति भाषिक कौशल आ नैतिक असत्यक बीचक असुविधाजनक सम्बन्ध खोलैत अछि।

दिल्ली घुरलापर शशांक आदित्य कैँ यात्रा-समीक्षा कहैत अछि मुदा सीमा-बाह्य खोजक बात नहि कहैत। अधिकारीक प्रश्न—'किछु एहन देखलहुँ जे एतयक अभिलेखक अर्थ बदलय?'—पर ओकर 'प्रत्यक्ष रूपेँ नहि' तकनीकी रूपेँ बचब जोग अछि, किन्तु प्रश्नक व्यापक उद्देश्यक साम्हिन अधूर अछि। एहि संवादमे अपराध स्वीकारोक्ति नहि, चयनित सत्यक संकट अछि। मृणाल सेहो नायकक भाषाक परिवर्तन चिन्हबैत अछि: जे पहिने कठिन बात साफ करबाक लेल शब्द खोजैत छल, ओ आब साफ बातकेँ कठिन बनाकऽ कहैत अछि। शशांकक आत्मप्रवंचनाक आलोचना करैत मित्र ओकरा दोषी घोषित नहि करैत; कथनक संरचना जाँचैत अछि। मित्रताक ई विन्यास कथानकक सबसँ प्रभावशाली मानवीय उपलब्धिमे गनल जा सकैत अछि।

विमानमे बनाओल नोटबुकक पाँचम पाँति—जाँचक स्मृतिसँ प्रेरित सीमा-बाह्य खोज—पूर्व चारि पाँतिक प्रत्यक्ष-अनुमान-अभियोग-विभाजनसँ भिन्न अछि, कारण एहि बेर परीक्षणक विषय स्वयं परीक्षक अछि। नव्य न्यायमे प्रमाणक नियम बाहरी शत्रुपर लागू करब सरल; अपन इच्छापर लागू करब कठिन। एहि आत्म-निरूपणमे लेखक शशांकक बौद्धिक प्रशिक्षणक असल परीक्षा लैत छथि। पितमपुराक ताओ मंदिरक स्मृति अगिला अध्यायक संक्रमण अछि;

कंठक स्वर आ मनक उतावलापनक सम्बन्ध, जे पहिने उच्चारण-अभ्यास छल, एखन नैतिक आत्मश्रवण बनबाक सम्भावना धारण करैत अछि।

एहि अध्यायक कलात्मक सीमा ई जे कथाकार किछु ठाम लोभक वृद्धि आ मौनक परिभाषा स्पष्ट व्याख्यामे कहि दैत छथि; नायकक विराम, खोजक क्षण, फोनपर ‘बस’ आ अधिकारीक समक्ष अधूर उत्तर अपने आपमे पर्याप्त नाटकीय बल रखैत अछि। तथापि सम्पूर्ण रचनामे घटना आ नीतिशास्त्रक बराबर कसौटी राखबाक आग्रह एतय सार्थक अछि। मकाऊक दू यात्रा समान भौगोलिक पुनरावृत्ति नहि, नैतिक अन्तरक नाप अछि: पहिलमे सीमाक अस्पष्टता सम्भव छल, दोसरमे शशांक सीमा जानैत अछि आ तकर बाद ओहि पार जाइत अछि। दोषक एहि प्रमाणित सीमाकेँ बचायब अध्यायक उत्तरदायी पाठनक शर्त अछि।

## अध्याय १३ — पितमपुराक ताओ मंदिर : स्वरक अभ्याससँ गोपनीयता आ आत्मस्वीकृतिक द्वार

तेरहम अध्यायक आरम्भ घटना नहि, टारल गेल भेटक काल-मापसँ होइत अछि। शशांक पितमपुरा जाएबाक निर्णय लऽ चुकल अछि, मुदा तीन दिन धरि नहि जाइत; कथाकार कारण समयक अभाव नहि, साहसक अभाव ठहरबैत छथि। ई छोट विलम्ब बारहम अध्यायक सीमा-बाह्य खोज आ चयनित मौनकेँ अन्तर्मनक भारी वस्तु बना दैत अछि। चौठ दिनक भोर, मेट्रो, अक्टूबरक हलुक ठंढ, आँगनमे झाड़ूक ध्वनि आ धूपक गन्ध दृश्यकेँ ठोस स्थान-काल प्रदान करैत अछि। मुदा बाह्य शान्तिक अपेक्षा शशांक अपन हृदयक धड़कन सुनैत अछि। एतय अनुभूतिमूलक दृश्य-विधानक विशेषता ई जे मंदिरक आध्यात्मिक प्रतिष्ठा नायकक अपराध-बोधक स्वतः उपचार नहि बनैत।

जुलियानाक कोठलीमे दू कप चाह, नोटबुक आ पुरान ध्वनि-पन्नासभ कथाक वस्तु-स्मृति अछि। ओ पहिने जे Mandarin आ Cantoneseक स्वर-साधना सिखबैत छलीह, से एकहि शब्दक चारि उच्चारणसँ फेर आरम्भ करबैत छथि। शशांकक दोष स्वरक शुद्धता सँ बेसी गति अछि: ओ पहिल वाक्य पूरा होयबासँ पहिने अगिला वाक्यक चिन्ता करैत अछि। जुलियानाक ‘आस्ते सुनू, तत्पश्चात् बाजू’ ज्ञानक अनुशासनमे बदलैत अछि। ध्वनि एतय केवल उच्चारणक सौन्दर्य नहि, श्रवण, विराम आ कथनक उत्तरदायित्व अछि। भारतीय ध्वनि-सिद्धान्तक संकेतात्मक अर्थ आ भाषिक स्वरक प्रत्यक्ष अभ्यास एक-दोसराक संग संवाद करैत अछि, मुदा दुनूकेँ शब्दार्थक स्तरपर एक सिद्धान्त मानि मिलायब उचित नहि।

‘गोपनीयता’ आ ‘नुका कऽ रखनाइ’क भेद एहि अध्यायक नैतिक केन्द्र अछि। जुलियाना कोनो कानूनी निर्णय नहि दैत छलीह; ओ स्पष्ट कहैत छथि जे ओ भाषा सुनैत छथि। ई सीमा निर्णायक अछि। शशांकक समक्ष

वास्तविक कठिनाई ई नहि जे ग्राहकक वैध गोपनीय सूचना बाहिर देबाक चाही कि नहि, बल्कि जे निज कएल सीमा-बाह्य खोजक बात अपन सुविधा लेल एखन धरि रोकने अछि, ओकर उचित नाम की। सही नैतिक पद अनुचित उद्देश्यक आड़ बनि सकैत अछि—एहि वक्र अर्थसँ कथाक बौद्धिक गहराइ बढ़ैत अछि। जुलियानाक शिक्षक-पात्र सिद्धान्तक मुखपत्र मात्र नहि; छोट प्रश्न आ मौनक माध्यमसँ नायककेँ अपन वाक्य स्वतः सुनबाक परिस्थिति बनबैत छथि।

राघव भसीनक फोनसँ कथा आध्यात्मिक कोठलीसँ अधिवक्ताक सम्मेलन-कोठलीमे पहुँचैत अछि। तीन फोल्डर—कानूनी परामर्श, व्यापारिक अभिलेख आ शीर्षकहीन सामग्री—वस्तुगत रूपमे वर्गीकरणक संकट स्थापित करैत अछि। चीनी प्रतिनिधिक इच्छा जे वकीलक फाइलमे राखल वस्तु बाहिर साधारण व्यापारिक कागज नहि बुझाय, राघवक प्रतिवाद जगबैत अछि। फाइलक लेबल बदलब पुरान अभिलेखक उत्पत्तिक इतिहास नहि बदलैत। लेखक कागजक समय, प्रयोजन, निर्माताक पहचान आ प्राप्तकर्ताक क्रमकेँ औचित्यक कसौटी बनबैत छथि। मुदा एहि काल्पनिक विधिक संवादकेँ वास्तविक न्यायालयक सर्वदेशीय नियम रूपमे पेश करब उचित नहि; साहित्यिक अर्थ अभिलेखीय इतिहास मेटबाक प्रलोभनक प्रतिरोध अछि।

मिश्रित तेसर फोल्डरमे तीन अक्षर आ अंकक संक्षिप्त व्यापारी-चिह्न शशांककेँ मकाऊक पटल स्मरण करबैत अछि। साम्य अस्पष्ट अछि, समान पहचान नहि। एक चैटमे ‘समीक्षा’सँ पहिने ग्राहक-साम्हिन प्रदर्शित नाम बदलबाक प्रश्न अछि, मुदा समीक्षा कर-जाँच अछि, आन्तरिक प्रक्रिया अछि वा ग्राहक-विवेचन, ई निश्चित नहि। ‘प्रदर्शित नाम’सँ ‘स्वामित्व’ वा ‘धन-प्रवाह’ धरि छलाँग लगब प्रमाणदोष होयत। शशांक एहि बेर स्वयं सीमित अनुवाद करैत अछि; राघव सहायककेँ एतबे दर्ज करबाक कहल करैत अछि। ई दृश्य महत्त्वपूर्ण विरोधाभास रचैत अछि: अनुवादक दोसराक दस्तावेजकेँ उचित सीमा देब सीखि गेल अछि, मुदा अपन कएल खोजक सूचना समयपर नहि देने अछि। बौद्धिक दक्षता नैतिक परिपक्वताक पर्याप्त प्रमाण नहि।

युवा प्रतिनिधिक निजी प्रश्न—शशांक बाहिर ककरो एहि विषयमे बात करैत अछि कि नहि—गोपनीयताक दोसर परीक्षण अछि। राघव शशांककेँ व्यक्तिगत आश्वासन देबाक दबावसँ बाहर निकालैत अछि आ कार्यालयक औपचारिक निर्देशक बात कहैत अछि। एहि दृश्यसँ संस्था, ग्राहक, अनुवादक आ निजी वचनक सीमासभ अलग होइत अछि। शशांक बादमे पूछैत अछि जे कार्यालयक गोपनीयता ओकर स्वयं कएल आन काजकेँ सेहो ढाकि सकैत अछि कि नहि। राघव कोनो काल्पनिक प्रश्नक अन्तिम विधिक निर्णय नहि सुनबैत; ओ केवल दोसर व्यक्तिक विधिक संवाद आ स्वयं कएल व्यवहारक पृथक अस्तित्व स्पष्ट करैत अछि। बौद्धिक आधारपर ई विषय-भेद नव्य न्यायीय अवच्छेदकक स्मरण करबैत अछि: एके सम्बन्ध मानलासँ भिन्न वस्तु एक नहि भऽ जाइत।

स्वीकारोक्तिक क्षण नाटकीय उद्घोष नहि अछि। शशांक पहिने स्वीकार करैत अछि जे किछु वास्तविक बात अछि, फेर क्रमशः कहैत अछि जे मकाऊक भाषा-समीक्षाक दौरान ओ कार्यसीमासँ बाहर खोज-खानामे एक नाम टाइप केने छल आ आदित्यकेँ नहि कहने अछि। राघव चारि सीमा स्पष्ट करबैत अछि: प्रणाली नहि बदलल, प्रति नहि लेलक, अपराध सिद्ध नहि भेल, मुदा खोज कएल आ बात रोकल। ओ ग्राहकक गोपनीयताक लेबलसँ एहि व्यवहारकेँ नुकेबाक उपाय नहि दैत। एहि दृश्यक सौन्दर्य कथनक मापमे अछि —नायक पूरा न्यायोचित नहि बनैत, आत्मस्वीकृतिक पहिल विश्वसनीय पाँति लिखैत अछि। भय बचल रहैत अछि; यथार्थ परिवर्तन केवल भयक नाम ठिकाने लागब अछि।

साँझक पितमपुरा वापसी, जुलियानाक ओसारामे पौधामे पानि देब आ खुलल केवाड़ी दृश्यकेँ पहिल कोठलीसँ जोड़ैत अछि। जुलियाना सत्यकेँ तुरन्त भय हरबयवला औषधि मानबाक विरोध करैत छलीह। नोटबुकक पाँच पाँतिमे अन्तिम—'एखन धरि आदित्य केँ नहि कहलहुँ'—काटल नहि जाइत। ई नहि काटब नायकक वर्तमान निर्णय अछि; सूचना एखन आदित्य धरि पहुँचबाक शेष अछि। अध्यायक सीमा ई जे कुछ नैतिक सूत्र पात्रक संवादमे अत्यधिक स्पष्ट सुनाइत अछि; मुदा मंदिरक ध्वनि-साधना, सम्मेलन-कोठलीक सन्दर्भ-भेद आ अधूर स्वीकारोक्तिक संयोजन ओकरा शिल्पगत वजन दैत अछि।

जुलियाना क्षमादात्री देवता नहि; ओ प्रश्नक माध्यम बनैत छथि, जाहि सँ शशांक अपन आवाजक अपूर्णता पहचानैत अछि।

## अध्याय १४ — भाषाक साधना १ : शब्द-प्रमाण, अनाम आदेश आ विलम्बित स्वीकारोक्ति

चौदहम अध्याय पितमपुराक पाँचम नोट-पाँतिक काँटसँ आरम्भ होइत अछि। आरम्भमे गंगेश उपाध्यायक परम्परामे 'शब्द'क प्रमाण-सम्बन्धी स्वरूप प्रस्तुत होइत अछि: विश्वासयोग्य स्रोतक कथन आ मात्र ध्वनिसँ प्राप्त धारणाक बीच अन्तर। ई दार्शनिक प्रस्तुति उपन्यासक सम्पूर्ण अनुवाद-विषयकेँ अधिक सघन करैत अछि। शशांक एखन जुलियाना आ राघव लग अपन आचरणक किछु हिस्सा कहि चुकल अछि, किन्तु आदित्य लग नहि। कथाक वास्तविक समस्या केवल शब्दक सत्यता नहि, समय आ प्रसंगमे सत्यक अपूर्ण प्रस्तुतिक परिणाम अछि। लेखक 'मौन'केँ सर्वत्र 'मिथ्या' नहि मानैत; मुदा जखन मौन चयनित आत्मरक्षा बनैत अछि, तकर विशेष नैतिक जाँच चाहैत छथि।

भारतीय विद्या भवनक अभ्यास-सत्रमे शिक्षक एके चीनी वाक्यकेँ तीन सुननिहारक भिन्न अर्थ-संभावना सँ जोड़ैत छथि। पहिल प्रश्न अछि—कहल के, कोन प्रसंगमे, आ वास्तवमे सुनल की गेल। 'माल रोकू' आ 'भुगतान रोकू'क उदाहरण कतेक छोट शब्दभेदसँ काल्पनिक तथ्यक प्रकार बदलि सकैत अछि, से देखबैत अछि। शिक्षकक आग्रह अछि जे अनुवादकक अधिकार अर्थ स्पष्ट करब अछि, नव घटना बनायब नहि। ई कथन अध्याय ८क लाल किलावला पुरान अनुवाद-त्रुटि आ अध्याय ११क 'बाट' रूपकक दू अनुवादसँ संवाद करैत अछि। कथा एहि आवर्तक स्मृतिक सहायतासँ देखबैत अछि जे भाषा-शिक्षणक छोट प्रयोगशाला बृहत्तर समाजमे साक्ष्य-सुरक्षाक अभ्यास बनि सकैत अछि।

अपरिचित फोनमे एक पुरुष 'पुरान कर-वाला विषय' कहैत ककरो सरकारी कागजक कठोर भाषा नरम करबाक बात कहैत अछि। 'ऊपर सँ' निर्देश आयल कहबाक अतिरिक्त स्रोतक नाम नहि देल जाइत। शशांक अधिकृत लिखित प्रति माँगैत अछि, बिना अभिलेख देखनहि अर्थ नरम करबाक प्रस्ताव नहि

मानैत। ई प्रतिरोध ओकर नैतिक विकासक वास्तविक, किन्तु सीमित, उपलब्धि अछि। स्रोतहीन आवाजक 'वरिष्ठ' होयबाक दाबी आ आधिकारिक आदेशक अस्तित्व भिन्न बात अछि। फोन ककरो प्रभावक संकेत भऽ सकैत अछि, मुदा स्वयं षड्यंत्रक सिद्धि नहि। शशांक समय आ संख्याक दृश्य सहेजैत अछि; ई स्रोत-संरक्षण अछि, प्रमाणक सम्पूर्णता नहि।

लाल किलाक छोट दृश्य कथाक प्रमुख अन्तर्पाठीय पुनरागमन अछि। पर्यटक दम्पती कैं सहायता करैत शशांक कहैत अछि जे लोकक बीच रहब आ लोककैं बुझब एक नहि। पुरान स्थान, जे भाषिक दक्षता आ अपन प्रतिभाक प्रदर्शनक स्थल छल, आब आत्मपरीक्षणक स्थल बनैत अछि। राघव भसीनक अनौपचारिक शब्दपर भरोसा नहि करबाक सन्देश एहि समय अबैत अछि, मुदा राघव कैं अपरिचित फोनक बात कोना ज्ञात भेल—ई कथामे स्थापित नहि। शशांक स्वयं संयोग आ सूचनाप्रसारक दू सम्भावना बीच ठहरैत अछि। एहि ठहरावमे लेखकक प्रमाण-संगति सुरक्षित अछि: कथाक सम्पादकीय विवेचनक अधिकार अनुमानकैं घटना घोषित करब नहि, अनिश्चिततताकैं दृश्य बनायब अछि।

आदित्यक समानान्तर दृश्य अध्यायक संरचनात्मक विशेषता अछि। स्थानीय आयुक्तालयमे निरीक्षण जारी रखबाक एक टिप्पणी आ तीन दिन पछाति उच्च स्तरक मार्गदर्शन धरि अगिला कार्रवाई स्थगित रखबाक टिप्पणी अछि; पछिला टिप्पणी संग लिखित आदेश संलग्न नहि। कनिष्ठ अधिकारी मौखिक निर्देशक बात कहैत अछि, किन्तु प्रत्यक्ष सुननिहार नहि; ओकर सूचना मध्यवर्ती जनक माध्यमसँ आयल अछि। आदित्य 'प्रत्यक्ष', 'श्रुत' आ 'अनुमान' अलग करैत अछि। प्रत्यक्ष फाइलमे टिप्पणीक उपस्थिति; श्रुत उच्च कार्यालयक कथित निर्देश; अनुमान सम्भावित प्रभाव। तीसरा कैं ओ स्पष्ट रूपेँ अप्रमाणित रखैत अछि। ई पृथक्करण सार्वजनिक संस्थाक भीतर शब्द-प्रमाणक कसौटी अछि, जे नायकक निजी आत्मपरीक्षणक समानान्तर चलैत अछि।

अरुण आ वरिष्ठ कार्यालयसँ भेल फोन आदित्यक पात्रकैं एकरेखीय निर्भीक अधिकारी बनाय देबाक बदला व्यावहारिक दबावक बीच रखैत अछि।

‘प्रक्रिया अनुसार चलू’, ‘अनावश्यक विस्तार नहि करू’ सन कथन बाहरसँ सामान्य प्रशासनिक सावधानी सेहो भऽ सकैत अछि; विशेष जाँच रोकबाक अप्रकट आदेश सेहो होयब सम्भव। आदित्य लिखित निर्देश माँगैत अछि आ फोनक समय, संख्या, मुख्य शब्द दर्ज करैत अछि। ओकर क्रोध उपस्थित अछि, मुदा फाइलमे क्रोध तथ्य नहि बनैत। एहिठाम विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति सूझैत अछि: शशांक लग अनाम फोन आ आदित्य लग वरिष्ठ फोन एके समयखंडमे घटनासभ अछि, तथापि दुनूक बीच वास्तविक कारणात्मक सम्पर्क एखन प्रमाणित नहि। केवल कथा-कौशल लेल दुनू प्रसंगकेँ अपराध-सङ्गति घोषित करब समीक्षाक पद्धतिदोष होयत।

पितमपुराक दोसर भेटमे जुलियाना नायकसँ प्रश्न करैत छलीह—ओ ककरा बचा रहल अछि। शिक्षकक विधानक सार ई नहि जे सभ जानकारी सार्वजनिक करब सदैव ठीक, बल्कि जे ज्ञानक सीमा सीखि ओकरा आत्मरक्षाक झूठा ढाल नहि बनाबी। एहि मनोवैज्ञानिक दबावमे शशांक आदित्य केँ स्वयं फोन कऽ मकाऊमे एक बेर अधिकृत सीमासँ बाहर सर्वर-अन्तरफलक खोलबाक बात बतबैत अछि। ओ नाम, समय, उपकरण आ देखल-अदेखल तथ्यक क्रम देबाक प्रयत्न करैत अछि; धन-प्रवाह अथवा अपराधक प्रत्यक्ष सिद्धि नहि कहैत। आदित्य लिखित कथन माँगैत अछि आ विलम्बक अभिलेख बचल रहबाक स्पष्ट करैत अछि। स्वीकारोक्तिसँ पहिनुक मौन नष्ट नहि होइत—एहि वाक्यक नैतिक कठोरता उपन्यासकेँ सरल प्रायश्चित-कथासँ अलग करैत अछि।

नोटबुकक छठ पाँति—पहिने सूचना रोकल गेल छल—काटल नहि जाइत। अध्यायक आरम्भमे पाँचम पाँति काँट छल; अन्तमे छठ पाँति एहन दर्जकृत इतिहास अछि जकरा नायक मेटैत नहि। कथाकालक दृष्टिसँ ई परिवर्तन निर्णायक अछि: भविष्यक सत्य पहिनुक विलम्बक संशोधन नहि, ओकरा संग रहबाक नब उत्तरदायित्व। लेखक शशांक आ आदित्यकेँ अनायास सर्वज्ञता नहि दैत छथि; स्रोतहीन वरिष्ठ निर्देश, अनाम फोन आ जाँच-स्थगनक बीच

सम्बन्धक अनुमान जीवित रखैत छथि। पाठक जानैत अछि जे पारदर्शिता बढ़ल अछि, मुदा जाँचक कारणात्मक शृंखला अद्याप अधूरी।

शिल्पगत दृष्टिसँ अध्यायमे विद्यालय–फोन–लाल किला–आयुक्तालय–मंदिरक चलायमान संरचना अछि। ई भूगोलक प्रसार ज्ञानक भिन्न स्थितिसभ बनबैत अछि: शिक्षकमुखी प्रश्न, अनाम वक्ता, सार्वजनिक स्मृति, प्रशासनिक श्रुति आ निजी आत्मश्रवण। शीर्षक 'भाषाक साधना'क औचित्य यहीं अछि —साधना केवल सही स्वर नहि, कथनक स्रोत आ अपूर्णताक भार पहिचानब अछि। सीमित आलोचनात्मक आपत्ति ई जे किछु वाक्यमे पात्र-संवाद दार्शनिक प्रतिज्ञा जेकाँ तैयार रूपमे प्रस्तुत अछि। तथापि फोनक समय सुरक्षित रखबाक सूक्ष्म कर्म, अस्पष्ट स्रोतक अस्वीकार आ अन्तिम फोनक स्वीकारोक्ति उपन्यासक नैतिक परिवर्तनकेँ दृश्यरूप दैत अछि; सिद्धान्त एतय घटना सँ पृथक नहि रहैत।

## अध्याय १५ — भाषाक साधना २ : समाचारक आधा-सत्य, मुहरबन्द अभिलेख आ अपमानक उत्तर

पन्द्रहम अध्याय भोरक फोन-सन्देशसँ आरम्भ होइत अछि। शशांक आदित्यकेँ अगिला दिन लिखित कथन देबाक निश्चय कएने अछि, मुदा एतहि बीच समाचार-पटल पर ओकर नाम प्रकाशित भऽ जाइत अछि। मृणाल आगू बढ़ि शीर्षक पढ़बाक पहिने घटनाक सीमा बुझबाक सलाह दैत अछि। कथाक मूल तनाव ई नहि जे अखबारमे लिखल प्रत्येक बात मिथ्या अछि, बल्कि जे एक सिद्ध घटना—अधिकृत कामसँ बाहर सर्वर-अन्तरफलक देखब—संग अनेकरूपेँ अप्रमाणित कथन जोड़ि एक निर्णायक अपराध-कथा बनाओल गेल अछि। लेखक एहि यौगिक भ्रमकेँ वाक्य-रचनाक समस्या बनबैत छथि: नाम, मकाऊ, कर-जाँच, अधिवक्ता आ वरिष्ठ स्तरक शब्द एकहि अनुच्छेदमे राखब हुनक बीच प्रमाणित सम्बन्ध स्थापित करब नहि।

समाचारमे शशांक जाँच रोकबाक गुप्त समझौताक प्रत्यक्ष ज्ञान स्वीकार कएलक, एहन दाबी अछि; मूल कथाक उपलब्ध विवरणमे ओ एहन बात नहि स्वीकारने अछि। ‘मुहरबन्द सामग्रीमे भूमिका निर्णायक बताओल गेल’—एहि वाक्यमे ‘के बतौलक’, ‘कोन सामग्री’ आ ‘निर्णायक ककर शब्द’ सन प्रश्न अनुत्तरित अछि। मृणाल शशांककेँ चेतबैत अछि जे समूचा समाचार मिथ्या कहब अपन स्वीकारल सीमा-बाह्य खोजकेँ सेहो मिथ्या कहि देबाक प्रयास होयत। मित्रक ई अनुकूल नहि लागयवला सत्यक भेद पूर्व अध्यायसभक निरन्तरता अछि। ‘प्रत्यक्ष’, ‘श्रुत’, ‘अनुमान’, ‘आरोप’ आ ‘सिद्ध तथ्य’ एहि बेर बृहत्तर सार्वजनिक शब्द-संसारमे टकराइत अछि। लेखकक सामाजिक आलोचना सनसनीक अर्थ-उत्पादन पर केन्द्रित अछि, कोनो वास्तविक समाचार-संस्थाक विरुद्ध स्रोतहीन आरोप पर नहि।

आदित्यक कार्यालयमे वरिष्ठ अधिकारीक प्रश्न समाचारक सामग्रीक उत्पत्ति पर केन्द्रित अछि। आदित्य कहैत अछि जे ओकर देखल अभिलेखमे शशांकक सीमा-बाह्य दृश्य स्वीकारल अछि, मुदा कथित गुप्त समझौता आ ‘निर्णायक’

भूमिका एहि रूपमे नहि लिखल अछि। ई उत्तर सावधानीक भाषिक कला अछि: ओ समाचारक लेखकक सम्पूर्ण स्रोत जानैत नहि, तेँ स्रोतक विषयमे निर्णायक कथन नहि करैत। मुहरबन्द फाइलक पहुँच-सूची माँगि ओ तीन स्तम्भ बनबैत अछि—पहुँच, प्रतिलिपि, प्रसार। पहुँचक अधिकार रहब सामग्री प्रसारित केने होयबाक प्रमाण नहि। साहित्यिक रूपमे ई त्रयी भुगतानक पूर्व प्रवाह-तालिका जेकाँ कार्य करैत अछि: वस्तु कतय जा सकैत छल, से देखब वस्तु वास्तवमे के पठौलक, एक बात नहि।

प्रवेश-द्वार पर पत्रकारक दू प्रश्न नायकक आत्मनियन्त्रणक सार्वजनिक परीक्षा अछि। ‘विदेशी जुआ-जालक तकनीकी सहयोगी’ वा वरिष्ठ कर-अधिकारीक नाम मुहरबन्द बयानमे लेबाक प्रश्न पूर्वनिर्धारित आरोप सहित बनाओल गेल अछि। शशांक पहिने आक्रोश अनुभव करैत अछि, मुदा अपन वास्तविक देखल आ कएल काम अधिकृत अधिकारीकेँ लिखित देबाक बात कहैत अछि। समाचारमे किछु तथ्य आ किछु अप्रमाणित कथन अछि—एहि सीमित उत्तरमे आत्मसुरक्षा आ सार्वजनिक जिम्मेवारीक दोसर रूप भेटैत अछि। ओ अपन स्थिति पूर्ण निर्दोषताक सर्वव्यापी घोषणामे नहि बदलैत। रचनाक उपलब्धि ई जे बौद्धिक मर्यादा केवल सान्त वातावरणमे सम्भव नहि, अपमानक क्षणमे सेहो निभय सकैत अछि।

औपचारिक बयानक दृश्य मेज, सूचना-पत्र, कथनक पृष्ठ आ हस्ताक्षरक ठोस वस्तुसभसँ बनल अछि। शशांक चौठ पृष्ठपर ‘संदेह’ आ ‘अपराधी पहुँच’क भेद जोड़बबैत अछि। सीमा-बाह्य खोज स्वीकार करब एक तथ्य; अवैध सहभागिता मानि लेब अलग, अधिक भारयुक्त निष्कर्ष। पाँचम पृष्ठपर राघव केँ पूर्व सूचना देनेक क्रम सुरक्षित अछि। शशांक गलत कहल शब्द बदलबाक अधिकार पबैत अछि, किन्तु जे सही अछि ओकरा बदलैत नहि। एतय हस्ताक्षरक अर्थ विधिक निर्णय नहि, कथनक जिम्मेवारी स्वीकार करब अछि। अध्याय १३मे अधूर स्वीकारोक्ति, अध्याय १४मे मौखिक सूचना आ अध्याय १५मे लिखित कथन—ई त्रिक चरित्र-विकासक पाठ-प्रमाणित क्रम अछि।

समाचारक प्रति पढ़लाक बाद शशांक एक पृष्ठक स्पष्टीकरण लिखैत अछि। ओ अपन सीमा-बाह्य खोज स्वीकार करैत अछि, वरिष्ठ अधिकारीसँ जाँच रोकबाक गुप्त समझौता देखने-सुनने अथवा स्वीकार केने होयबाक नकार करैत अछि, मुहरबन्द सामग्रीक सम्पूर्णता ज्ञात नहि होयबाक बात लिखैत अछि, आ अपन नामसँ प्रकाशित अतिरिक्त कथनक स्वतंत्र सत्यापन माँगैत अछि। एहि चारि अंशक स्थापत्य नव्य न्यायीय पक्ष-सीमा निर्धारण अछि। सम्पूर्ण समाचार मिथ्या कहब नहि, विशिष्ट कथनक औचित्य जाँचब; सम्पूर्ण फाइलक ज्ञानक दावा नहि, अपन पहुँचक सीमा स्वीकार करब। जखन अनुभव आ आत्मबचाव भिड़ैत अछि, तखन ई अनुशासित लेखन उपन्यासक नायककेँ अतीतक बौद्धिक प्रशिक्षणक योग्य बनबाक अवसर दैत अछि।

सड़कक डिजिटल पटल पर लाल किलाक पुरान फोटो पुनः सार्वजनिक आरोपक चिह्न बनि अबैत अछि। पूर्वकालमे जे चित्र भाषिक प्रतिभा आ सांस्कृतिक संवादक गौरव देखबैत छल, आब ओहि एके चित्रक सामाजिक अर्थ उलटि गेल अछि। चित्रक वस्तु बदलल नहि, प्रकाशनक प्रसंग बदलल। ई अन्तर्पाठीय प्रतीक-कौशल उपन्यासक श्रेष्ठ क्षणसभमे सँ एक अछि। मृणालक दू कप चाह सार्वजनिक अपमानक अमानवीय ढाँचाक बीच घरेलू गरिमा सुरक्षित करैत अछि। ओ सहानुभूतिक नामपर नायकक प्रत्यक्ष दोष नहि मिटबैत; ओकरा उलटे शब्दक उचित प्रयोग पर टिकबैत अछि। सहृदयता आ प्रमाण-विवेक परस्पर विरोधी नहि, ई सम्बन्ध कथामे ठोस रूपेँ स्थापित अछि।

पितमपुरामे जुलियाना ‘निर्णायक’ शब्द किएक चोट पहुँचेलक, से पूछैत छलीह। ई शब्द शशांककेँ घटनाक केन्द्र बना दैत अछि। ओकर उत्तर—ओ केन्द्र नहि छल, मुदा पूर्णतः बाहिर सेहो नहि—नैतिक आत्मज्ञानक सूक्ष्म सीमांकन अछि। पूर्ण मिथ्याक प्रतिवाद आसान, आधा-सत्यक प्रतिवाद कठिन; जुलियानाक एहि आग्रहसँ उपन्यास प्रचार आ प्रतिप्रचार दुनूक असत्य-विस्तार पर अंकुश लगबैत अछि। शशांक अपन पुरान मौनक कारण

पूर्ण निर्दोष अनुभव नहि करैत, मुदा निजी अपराध-बोधकेँ सार्वजनिक मिथ्या आरोपक स्वतः प्रमाण बनय नहि दैत। व्यक्तिगत नैतिक ग्लानि आ विशिष्ट विधिक दोषक भेद एहिठाम अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि।

अन्त भागमे आदित्यकेँ समाचार प्रकाशित होयबासँ पहिने मुहरबन्द फाइलक एक अंशक डिजिटल प्रति तैयार भेल होयबाक अभिलेख भेटैत अछि, मुदा डाउनलोडकर्ता अथवा बाहरी प्रसारकर्ता स्पष्ट नहि। समय-संगतिक ई सुराग पाठकक रहस्यबोध बढ़बैत अछि, किन्तु आरोपी तय नहि करैत। कालक्रमक दृष्टिसँ प्रतिलिपि निर्माण, सम्भावित प्राप्ति आ बाहरी प्रचार तीन अलग चरण अछि। ई विभाजन अध्याय ११क धनक आवक-जावक आ अध्याय १४क वरिष्ठ कथित आदेशक शृंखलाक समरूप अछि। कोनो एक चरणक प्रत्यक्ष दूसर चरणक कर्ता वा उद्देश्य स्वतः प्रमाणित नहि करैत।

शिल्पगत सीमा ई जे अध्याय अन्तमे अनेक नोटबुक-पाँति, आधा-सत्यक विवेचन आ आदित्यक अभिलेखीय सार द्वारा पहिनुक निष्कर्ष दोहरबैत अछि। मुदा एहि दोहरावक समानान्तर चित्रक प्रसंग-परिवर्तन, मित्रक दू कप चाह, पत्रकारक प्रश्न आ बयानक हस्ताक्षर कथा केँ जीवित रखैत अछि। रसानुभवमे अपमानक वेदना, आशंकाक संवेदना आ प्रमाण-संयमक शान्त प्रयास एक संग उपस्थित अछि; कोनो एक रससम्बन्धी वर्ग समस्त कथा-विन्यासकेँ समेटि नहि सकैत। अध्यायक निर्णायक उपलब्धि नायककेँ निर्दोष घोषित करब नहि, ओकरा अपमानित अवस्थामे सेहो ककर शब्दक कतेक भार अछि से लिखबाक साहस देब अछि।

## अध्याय ११-१५ : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — धनक प्रवाहसँ सार्वजनिक कथन धरि

अध्याय ११-१५ एके नैतिक विकासक पाँच पृथक दृश्य प्रस्तुत करैत अछि। एगारहम अध्यायमे शशांक दोसराक धन-अभिलेख पढ़ैत अछि; बारहममे अपन अधिकृत कामक सीमा जानितहुँ पार करैत अछि; तेरहममे वैध गोपनीयता आ चयनित मौनक भेद करबाक प्रयास करैत अछि; चौदहममे आदित्य लग विलम्बित सूचना दैत अछि; पन्द्रहममे सार्वजनिक अपमानक बीच लिखित कथनक सीमा सुरक्षित करैत अछि। एहि क्रमकेँ सरल ‘दोष सँ मुक्ति’ नहि कहल जा सकैत। उपन्यास दोषक वास्तविक इतिहास—प्रवेश, उद्देश्य, मौन, देरी—बचौने राखैत अछि, तखन सुधारक सम्भावना पर विचार करैत अछि। व्यक्तिगत आ संस्थागत सत्यक दू स्तर एक-दोसरासँ जुड़ैत अछि, मुदा समान नहि।

स्थानगत दृष्टिसँ पाँच अध्यायमे दिल्लीक जाँच-कार्यालय, मकाऊक भाषा-प्रणाली, पितमपुराक ताओ मंदिर, भारतीय विद्या भवन, लाल किला आ स्थानीय आयुक्तालय परस्पर आवागमन करैत अछि। ई स्थानसभ सजावटक पृष्ठभूमि नहि। कार्यालय अभिलेख आ अधिकारक सीमा, मकाऊ वैभव आ आकर्षणक सीमा, मंदिर श्रवण आ आत्मस्वीकृतिक सीमा, विद्यालय कथनक स्रोत-प्रसंग, लाल किला सार्वजनिक स्मृतिक अर्थ-परिवर्तन, आयुक्तालय प्रशासनिक श्रुतिसूत्रक परीक्षा बनैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक उपयोग एतय भूगोलमे एक संग चलैत ज्ञान-स्थितिसभक तुलनात्मक परीक्षण अछि; ई नहि जे अलग-अलग ठाम घटल सभ घटना निश्चिते एक षडयंत्रक भाग सिद्ध भऽ जाइत अछि।

वस्तु-प्रतीकक क्रम सेहो उल्लेखनीय अछि। बैंक-सार, व्यापारी-चिह्न, खोज-खाना, तीन फोल्डर, नोटबुकक पाँचम पाँति, कॉलक छायाप्रति, डिजिटल समाचारक पटल आ हस्ताक्षर—ई सभ वस्तु मानवीय निर्णयक वहनकर्ता

बनैत अछि। डिजिटल संगणकमे नाम खोजल गेल, मुदा तकर उद्देश्य अधिकृत भाषिक कार्यसँ बाहर छल; नाम-परिचय आ अपराधक प्रमाण एखनहुँ अनुपस्थित। मृणालक चाह-डिब्बा आ जुलियानाक दू कप चाह एहि सूचनात्मक संसारकेँ मानवीय संतुलन दैत अछि। लेखक वस्तु-प्रतीककेँ गूढ़ चमत्कार नहि बनबैत; सामान्य वस्तुक उपयोग-सन्दर्भ बदलि ओकर नैतिक अर्थ परिवर्तित करैत छथि।

नव्य न्यायीय कसौटी एहि पञ्चाध्यायमे स्थिर रहितहुँ विषय बदलैत अछि। अध्याय ११ मे धनक मार्ग प्रत्यक्ष, लाभार्थीक आशय अनुमान; अध्याय १२ मे सीमा-बाह्य खोज प्रत्यक्ष, अपराधी सहभागिता असिद्ध; अध्याय १३ मे कानूनी संवाद आ पुरान व्यापारिक दस्तावेज पृथक; अध्याय १४ मे स्थगन-टिप्पणी प्रत्यक्ष, उच्च अधिकारीक कारण-निर्देश असत्यापित; अध्याय १५ मे डिजिटल प्रतिलिपि निर्माण प्रत्यक्ष, बाहरी प्रसारक कर्ता अज्ञात। एहि भेदसँ कथाक प्रत्येक अगिला निष्कर्षक व्याप्ति नियंत्रित होइत अछि। नव्य न्यायक पदक उपस्थिति मात्रेँ आलोचना सिद्ध नहि; मूल क्रियामे अनुमानक हेतुक अपेक्षा आ स्रोतक अधिकार देखब एहि पद्धतिक वास्तविक प्रयोग अछि।

भाषाक तीन रूप विशेष रूपेँ उभरैत अछि: अनुवादक स्रोतमे जे नहि अछि से नहि जोड़य; सूचनादाता जे कहने अछि तकर विश्वसनीयता जाँचल जाए; अपमानित व्यक्ति अपन बचावमे सेहो ‘सभ मिथ्या’ नहि कहय। शशांक एक रूपमे सफल आ दोसरामे विफल भऽ सकैत अछि। एहि मानवीय असमानताक कारण ओ एकरेखीय आदर्श पात्र नहि बनैत। मृणाल अनुभवक नैतिक सीमांकन, आदित्य अभिलेखक कसौटी, जुलियाना स्वरक आत्मश्रवण, राघव विधिक संवादक पृथक्करण आ शिक्षक स्रोत-प्रसंगक प्रशिक्षण प्रस्तुत करैत छथि। तथापि एकरो पात्रकेँ सर्वज्ञ प्रमाण-प्रदाता बनायब मूल पाठक विरुद्ध होयत; प्रत्येक अपन भूमिका, पहुँच आ असमर्थताक सीमामे अछि।

कथाकालक रचना सूक्ष्म अछि। एक अनजान प्रशंसा पछाति तीन दिनक अन्तर, दोसर यात्राक द्विदिवसीय अवधि, जुलियानाक भेट टारल गेल तीन

दिन, आदित्य लग बयानक पूर्वरात्रि आ भोरक समाचार—ई समयचिह्न पाठककेँ बतबैत अछि जे निर्णय तत्क्षण आ स्वीकारोक्ति विलम्बित होइत अछि। समाचार प्रकाशित होयबाक समयसँ पहिने डिजिटल प्रतिलिपिक निर्माण पात्रक ज्ञानक अपूर्णताकेँ घटबैत नहि; केवल एक जाँचयोग्य काल-संकेत दैत अछि। यथार्थ समय आ कथनक समय बीच फरक उपन्यासक रहस्यक स्रोत अछि; समीक्षा एहि फरककेँ मनमाना कारणात्मक सम्बन्ध बनाकऽ बन्द नहि करैत।

भारतीय रस-विवेचनमे आशंका, लज्जा, भय आ करुण संवेदना प्रमुख बनैत अछि, मुदा दार्शनिक अनुशासन एहि अनुभूतिसभकेँ अचानक नष्ट नहि करैत। जुलियानाक कोठलीमे भयक नाम भेटैत अछि; मृणालक चाहसँ एकाकी अपमान कुछ नरम होइत अछि; आदित्यक मेज पर कथनक उत्तरदायित्व कठोर बनैत अछि। औचित्यक प्रश्न बारम्बार उठैत अछि—कखन मौन उचित गोपनीयता, कखन भ्रामक चयन; कखन शब्दक प्रसंग खोलब वैध अनुवाद, कखन मूल पाठसँ बाहर तथ्य जोड़ब। एहि बिन्दुमे भारतीय आलोचना आ पाश्चात्य दृष्टिबिन्दु-विश्लेषण सम्यक् संवाद करैत अछि।

कलात्मक सीमा सभक उल्लेख आवश्यक अछि। पाँचू अध्यायमे प्रत्यक्ष-अनुमान-अभियोगक आवर्ती वर्गीकरण आ अन्तक तथ्य-सूची कखनो-कखनो आख्यानक स्वाभाविक गति रोकैत अछि। जुलियाना, मृणाल आ आदित्यक कतिपय कथन अत्यधिक सूत्रबद्ध बुझा सकैत अछि; कुछ पाठक विचारक उद्घोषणासँ बेसी संवादक अधूरापन चाहत। तथापि आर्थिक कागजक ठंढा दृश्य, मकाऊक दबाओल खोज-क्षण, मंदिरक स्वर-अभ्यास, लाल किलाक पुरान फोटो आ औपचारिक हस्ताक्षर रचनाकेँ ठोस भौतिक आधार दैत अछि। एहि भौतिकताक कारण नैतिक चिन्तन शून्यमे नहि उड़ैत, कथित घटनासभक संग परीक्षणयोग्य रहैत अछि।

एहि पाँच अध्यायक समेकित निष्कर्ष सीमित मुदा महत्त्वपूर्ण अछि। शशांकक सीमा-बाह्य खोज आ विलम्बित सूचना मूल पाठमे ओकर आचरणक दोषरूप उपस्थित अछि। हवाला, गुप्त-मुद्रा, लाभकारी स्वामित्व, उच्च

प्रशासनिक षडचंत्र अथवा समाचार-रिसावक विशिष्ट अपराधी कर्ता एहि अध्यायसमूहमे पूर्ण सिद्ध नहि। कथानक सत्यक एहि अपूर्ण अवस्थाकेँ स्वीकृत रखैत अछि। नैतिक विकासक निर्णायक संकेत ई अछि जे नायक अपन दोष स्वीकार करितहुँ अप्रमाणित आरोप नहि स्वीकारैत, आ दोसराक दोषक विरुद्ध उठितहुँ अपन कमजोरी नहि मेटैत। अनुवादकक वास्तविक दीक्षा एहि दुई सीमाक बीच अछि—देखल आ अनुमानित, स्वीकारल आ आरोपित, अपन शब्द आ दोसराक शब्द।

## अध्याय १६ — भाषाक साधना ३ : न्यायालयमे शब्दक परीक्षा आ त्रुटिक सीमित स्वीकार

सोलहम अध्यायमे ‘अनुवादक’क कथाविश्व प्रत्यक्ष न्यायालयीय प्रतिपरीक्षाक मंचपर पहुँचैत अछि। पहिने अध्यायसभमे शशांकक कथन कार्यालय, नोटबुक, मित्रता आ समाचारक बीच घूमैत छल; आब ओ न्यायालयक अभिलेख बनबाक स्थिति मे अछि। ऊँच छतक नीचाँ अपन स्वर स्पष्ट सुनबाक अनुभव भारतीय विद्या भवनक प्रारम्भिक उच्चारण-अभ्यासक स्मृति जगबैत अछि। ई आवर्तन महत्त्वपूर्ण अछि: जाहि ध्वनिक शुद्धताकेँ शिष्य पहिने निजी दक्षता मानैत छल, ओही शब्दक भार सार्वजनिक दायित्व बनि गेल अछि। प्रतिपरीक्षा बाहरी दबावक दृश्य मात्र नहि, आत्मपरीक्षणक अधिक कठोर रूप अछि, कारण उत्तरक सामाजिक परिणाम आ साक्ष्यात्मक सीमा दूनू एक संग उपस्थित अछि।

वरिष्ठ अधिवक्ताक प्रश्न मकाऊमे अधिकृत सीमा सँ बाहर सर्वर-अन्तरफलक खोलबाक लिखित स्वीकारोक्तिसँ आरम्भ होइत अछि। शशांक तथ्य नकारैत नहि। मुदा मैंडरिन आ कैंटनिजमे दक्षताक स्तर समान नहि होयबाक बात सेहो कहैत अछि। एहि भेदक साहित्यिक महत्त्व विशेष अछि: व्यक्ति दू भाषाक प्रशिक्षण लेने हो, तइयो ओकर प्रत्येक भाषिक क्षेत्रमे एक समान अधिकार अथवा प्रत्येक वक्ताक मनोभावक प्रत्यक्ष ज्ञान नहि। अधिवक्ता एहि भाषिक सामर्थ्यसँ ‘विदेशी पक्षक अर्थ सभसँ अधिक बुझैत छल’ सन व्यापक निष्कर्ष निकलाबय चाहैत छथि। शशांक प्रत्युत्तरमे भाषिक समझ, वक्ताक उद्देश्य, दस्तावेजक सत्यता आ घटनाक वास्तविकता चारि स्वतंत्र जाँच-विषय घोषित करैत अछि। ई नव्य न्यायीय अवच्छेदक-विचारक ठोस उपयोग अछि, केवल दार्शनिक पदक प्रदर्शन नहि।

विश्वासक प्रश्न पर शशांकक आग्रह व्यक्तिगत प्रतिभासँ प्रक्रिया दिस स्थानान्तर अछि: मूल पाठ, लिखित अनुवाद, स्वतंत्र विशेषज्ञक जाँच आ प्रसंग उपलब्ध रहबाक चाही। अनुवादकक एकमात्र कथन पर्याप्त नहि—ई बात स्वयं अनुवादक न्यायालयमे कहैत अछि। आत्माभिमानक विकासक

तुलना बारहम अध्यायक मकाऊक विशेष पहुँचक आकर्षणसँ करबाक चाही। तखन शशांक अर्थ बुझबाक शक्ति कैं स्वतन्त्र अधिकार जेकाँ अनुभव करैत छल; एखन ओ अपन भाषा-कर्मकैं जाँचयोग्य सामग्री बना दैत अछि। तथापि एहि आत्मसीमाक घोषणा ओकर पुरान त्रुटिसभ कैं स्वतः मेटैत नहि। लेखक एहि कारण अधिवक्ताक माध्यमसँ पुरान आदत पर प्रतिपरीक्षा करबैत छथि। लाल किला आ सांस्कृतिक बैसारक स्मृतिमे अस्पष्ट कथनकैं सहज अथवा छोट करि मूल वक्ताक शर्त, असहमति वा संकोच कटा देबाक प्रसंग सामने अबैत अछि। कथाकार स्पष्ट करैत छथि जे एहन सम्पादन स्वतः ककरो अपराधक प्रमाण नहि, मुदा अनुवादकक सुविधानुसार मूल अर्थ घटेबाक आदतक साक्ष्य अछि। शशांक सेहो स्वीकार करैत अछि जे अर्थ स्पष्ट करबाक नामपर मूल सँ बेसी कहने अछि। महत्त्वपूर्ण ई जे एक पुरान भूल सभ अनुवादकैं मिथ्या नहि बनबैत, आ किछु सही अनुवाद पुरान भूलकैं उचित नहि बनबैत। ई दोधारी निष्कर्ष नायकक आत्मरक्षा आ विपक्षक आक्षेप दुनूकैं एकहि प्रमाण-सीमामे रखैत अछि।

‘ऊपरक व्यवस्था ठीक अछि’ सन चीनी संदेशक अनुवादपर बहस अध्यायक ज्ञानमीमांसात्मक केन्द्र अछि। उच्च स्तरक व्यवस्था होयबाक कथनसँ विशिष्ट वरिष्ठ कर-अधिकारीक प्रभाव वा जाँच रोकबाक योजना स्वतः सिद्ध नहि होइत। ‘संभावना’ आ ‘सिद्ध तथ्य’ बीच अन्तर स्पष्ट करैत शशांक कहैत अछि जे नव्य न्याय प्रश्नक अनुशासन देत अछि, मुदा उत्तर प्रमाण देत अछि। ई सूक्ष्म सूत्र दार्शनिक पद्धतिक अतिरंजित प्रयोगपर नियन्त्रण लगबैत अछि। न्यायाधीशक समक्ष भाषा-अर्थक दायरा स्पष्ट करब, विवादक किसी एक पक्षकैं मुक्त करबाक प्रतिज्ञा नहि। फलतः न्यायालयक दृश्य बहसक नाटकीयता राखितहुँ निर्णयक अपूर्ण अवस्थाकैं बचबैत अछि।

शशांकक पुरान सन्देश—भारतीय पक्ष अनावश्यक प्रश्न नहि करय, एहि अनुरूप भाषा चुनबाक आग्रह—प्रतिपरीक्षाक असुविधाजनक मोड़ अछि। शशांक मानैत अछि जे प्रश्न उठबाक सम्भावना घटेबाक लेल शब्द चुनल गेल छल। ओकरा पूर्ण ‘प्रश्न दबेबाक’ घोषित कऽ देब आ एहि स्वीकारोक्तिक अर्थ सम्पूर्ण अपराध-योजनामे फैलाय देब दुनू अतिरिक्त निष्कर्ष होयत। मुदा स्वयं नायक ईहो मानैत अछि जे उद्देश्यक भेद रहितहुँ परिणाम एक जेकाँ भऽ सकैत अछि, तैं एहन भाषा उचित नहि छल। एहि

उत्तरमे दोषक सीमित स्वीकार अछि, दोषसँ पलायन नहि। कथाक औचित्य ई जे अनुचित भाषिक उद्देश्यकेँ वास्तविक मानि लेल जाइत अछि, किन्तु अनुपस्थित वित्तीय अपराधक प्रत्येक अंश ताहिसँ सिद्ध नहि कएल जाइत। विराममे मृणालक पानि आ छोट संवाद अदालती कठोरताक मानवीय विकल्प अछि। मित्र शशांककेँ न देवता बनबैत अछि, न अपराधी घोषित करैत अछि; जे भेल ओकर नाम ठीक रखबाक आग्रह करैत अछि। बादमे आदित्यक साक्ष्य-प्रस्तुतिमे अनुवाद आ अन्तिम सत्यापनक अन्तर उभरैत अछि। मूल पाठ सुरक्षित राखब, निर्णायक अंशक स्वतंत्र मिलान आ भिन्न अनुवादक भेद दर्ज करब संस्थागत प्रक्रिया अछि। आदित्य शशांककेँ अपन पद्धतिक गुरु घोषित नहि करैत; ओकर त्रुटिसभसँ स्वतंत्र जाँचक आवश्यकता आरो स्पष्ट भेल, एतबे कहैत अछि। एहि सावधान सम्बन्धमे व्यक्तिगत गर्वसँ ऊपर उठल कार्य-पद्धतिक संस्थागत महत्त्व अछि।

न्यायालयमे द्विपक्षीय तर्कक दृश्य विशेष उल्लेखनीय अछि: शब्दक बहुअर्थकता जेठ शंका उत्पन्न करैत अछि, मुदा बैंक-अभिलेखक तिथि-राशि सन स्वतन्त्र तथ्य मात्र शब्दक धुँधलका सँ मेटल नहि जा सकैत। डिजिटल प्रवेश-दर्ज प्रवेश दिखबैत अछि; भीतरक वास्तविक काज अलग जाँच चाहैत अछि। एहि भेदसँ कथाकार नव्य न्यायकेँ सर्वसमाधानक चमत्कार नहि बनबैत छथि; एक पद्धति उचित अथवा भ्रामक दुनू उपयोग लेल उपलब्ध रहि सकैत अछि। शशांकक परीक्षा तर्कक धार केतेक तीक्ष्ण अछि, ई नहि; ओ धार ककर कथनपर कोन औचित्यसँ प्रयोग करैत अछि, ई अछि। पाश्चात्य न्यायालयीय आख्यानक प्रतिपरीक्षा-शिल्प एहि दार्शनिक संघर्षकेँ दृश्य बनबैत अछि।

रैनि जुलियानाक समक्ष शशांक स्वयं स्वीकार करैत अछि जे ओ कखनो अपन दोषकेँ सुन्दर कथा बना दैत अछि। गुरु ओकरा दोषक आकार न घटेबाक, न बढ़ेबाक पाठ दैत छलीह। अध्यायक अन्तमे ‘प्रायश्चित’ पश्चातापक सरल कथा नहि, सटीक कथनक नैतिक साधना बनैत अछि। शिल्पगत सीमा ई जे किछु न्यायालयीय संवाद अत्यधिक सिद्धान्तपरक सुनाइत अछि; तथापि

पुरान सन्देश, भाषाक विविध अर्थ, मूल-अनुवादक तुलनायोग्य प्रति आ प्रतिपरीक्षाक ठोस क्रम एहि संवादक विश्वसनीयता रखैत अछि। ई उपन्यासक ओ बिन्दु अछि जतय न्यायालय पात्रक समूचा चरित्र तय नहि करैत, प्रत्येक कथनक प्रमाण-मूल्य जाँचैत अछि।

## अध्याय १७ — भाषाक साधना ४ : श्रुत साक्ष्य, यन्त्र-प्रतिलिपि आ अपरिहार्य बनबाक लोभ

सतरहम अध्याय अदालतक पछिला दिनक प्रायश्चितसँ आरम्भ होइत अछि। शशांक अपन नोटबुकमे ‘हम भाषा कैं कखनो-कखनो ढाल बनौने छी’ पढ़ैत अछि, मुदा नब सरकारी पूरक समन भेटिते ओकर पहिल प्रतिक्रिया भय नहि, महत्त्वक अनुभूति अछि। एहि क्रमक सूक्ष्मता उल्लेखनीय अछि: आत्मस्वीकृति भेला पछाति मनुष्य स्वतः लोभसँ मुक्त नहि होइत। पूर्वक मासिक पारिश्रमिक वा विशेष पहुँचक इच्छा एतय ‘हमरे बिना ई अर्थ नहि खुलत’ सन अपरिहार्यताक अभिमानमे बदलैत अछि। मृणालक संक्षिप्त चेतावनी नायकक एहि नदेखल विचारपर आघात करैत अछि। मित्र कथानकमे सम्पूर्ण विवरण जाननिहार सर्वज्ञ पात्र नहि, मुदा शशांकक भाव-आवृत्तिक चिन्हनिहार विश्वसनीय साक्षी अछि।

भारतीय विद्या भवनक कक्षामे स्वर-चिह्न विहीन चीनी वाक्यपर तीन सम्भावित अनुवाद प्रस्तुत होइत अछि। ध्वनि-सन्देशक यान्त्रिक प्रतिलिपि आ मूल आवाज एक शब्दक अलग रूप देखबैत अछि; शिक्षक पूरा वाक्य, पूर्वक कथन आ बादक उत्तर सुनि प्रसंग संकुचित करैत छथि। एतय पाठककैं बुझबैत अछि जे डिजिटल रूपमे लिखल अक्षर तकर ध्वनि, विराम आ वक्ताक परिस्थिति सभ सुरक्षित राखैत नहि। कथाकार यन्त्रक प्रयोगकैं स्वतः अविश्वसनीय नहि कहैत, बल्कि प्रक्रिया अनिवार्य मानैत छथि। ‘श्रुत शब्द’क प्रमाण-विवेक अनुवादकक आत्मविश्वास पर निर्भर नहि; मूल ध्वनि आ प्रसंगक स्वतंत्र परीक्षणक आवश्यकता अछि।

आदित्यक जाँच-कोठलीमे तीन लिफाफा, जब्ती-सूची आ मुद्रित प्रतिलिपिसभ अभिलेखीय स्रोतक अलग-अलग स्तर बनबैत अछि। मूल उपकरण मुहरबन्द अछि; कार्य-प्रति सँ सामग्री निकालल गेल अछि। शशांकक काम केवल भाषा-स्पष्टीकरण होयबाक निर्देश स्रोत, प्रतिलिपि आ व्यक्ति-विशेषक स्मरण बीच स्पष्ट सीमा तय करैत अछि। पहिल ध्वनि-सन्देशमे खाता ‘बन्द’ करब

आ हिसाब ‘निपटाब’ दुनू अर्थ सम्भव अछि। यन्त्र-प्रतिलिपि एक अर्थ लिखने छल, मुदा शशांक दुनूक सम्भावना सुरक्षित रखबबैत अछि। ई अनिर्णय दुर्बलता नहि; अपर्याप्त प्रसंगक सटीक निरूपण अछि।

दोसर सन्देश-शृंखलामे ‘मार्ग’ अथवा ‘माध्यम’ जेकाँ पद पूर्व अनुवादमे सीधे विशेष भुगतान-द्वार बनि गेल छल। शशांक देखबैत अछि जे धन-प्रेषणक प्रसंगमे भुगतान-माध्यम सम्भावित अछि, मुदा कोनो निश्चित तकनीकी संस्था सिद्ध करबाक लेल एहि शब्दक एकल उपस्थिति पर्याप्त नहि। दोसर अभिलेखसँ विशिष्ट नामक पुष्टि भऽ सकैत अछि; तखन प्रमाण ताहि दोसर अभिलेखसँ आयत। ई विभाजन अध्याय ११क ‘पुरान बाट’ आ ‘नव मार्ग’क शाब्दिक-सन्दर्भगत अनुवादकेँ नब स्तर पर खोलैत अछि। अनुवादकक अधिकार व्याख्याक विकल्प चिन्हब अछि; अभिलेखीय सम्बन्धक अभावकेँ भाषिक अनुमानसँ भरब नहि।

तेसर सामग्रीमे ‘गुरु’ अथवा ‘शिक्षक’ अर्थ देनिहार चीनी सम्पर्क-नाम अछि। नाम बारम्बार भेटब आ समाचारमे ओकर सम्भावित संकेत-नाम होयबाक दाबी, ककरो विशिष्ट व्यक्ति अथवा गुप्त भूमिका सिद्ध नहि करैत। शशांक पितमपुराक जुलियाना, विद्यालयक शिक्षक आ लाल किलाक परिचित संबोधनसभ स्मरण करैत अछि। ई स्मृति एहि बेर प्रमाणक सकारात्मक दाबी नहि, एक पदक बहुविध सामाजिक प्रयोगक उदाहरण अछि। ‘कोड-नाम नहि’ आ ‘कोड-नाम सिद्ध नहि’क अन्तर पाठकक साम्हिन आयत। पहिल वाक्य नकारात्मक निष्कर्ष अछि; दोसर उपलब्ध प्रमाणक अपूर्णता। एहि भेदमे न्यायविवेकक अत्यन्त सूक्ष्म उपलब्धि निहित अछि।

बयान दर्ज करबाक क्रममे लिपिक ‘प्रसंगक आधारपर सम्भावित’क स्थानपर ‘पूर्ण विश्वास’ लिखि दैत अछि। शशांक तत्क्षण रोकि शब्द सुधारबबैत अछि। लिखित पाँति बनबाक प्रक्रिया एहि दृश्यद्वारा सार्वजनिक तथ्यक निर्माणस्थल बनैत अछि। कथन केवल बोलल वाक्य नहि; लिपिक, पाठक, हस्ताक्षरकर्ता आ सुरक्षित मूल सामग्रीक शृंखला अछि। शशांक अपन पुरान भूल चिन्हैत अछि—‘सम्भव’ केँ ‘सिद्ध’ बनबय देब। आदित्यक कथन जे

भरोसाक बदला प्रक्रिया अधिक महत्त्वपूर्ण, व्यक्तिक चरित्रनिष्ठा आ संस्थागत नियंत्रणक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि। सावधानी अपन प्रदर्शन बनि सकैत अछि, तेँ ओकर प्रमाण पद्धति-सम्मत संशोधनक अवसरमे अछि।

शशांकक पुरान फोनक सुरक्षित प्रतिमे भेटल चीनी सन्देश, जे भारतीय पक्ष कम प्रश्न करय एहि उद्देश्यसँ शब्द बदलबाक बात करैत अछि, नायकक आत्मरक्षापर पुनः प्रहार अछि। ओ स्वीकार करैत अछि जे ओकर प्रस्ताव मात्र व्याकरण-शुद्धि नहि, प्रश्न घटेबाक उद्देश्यसँ छल। मुदा एहि उद्देश्यसँ विशिष्ट लेन-देन, नुकाओल तथ्य वा अपराधक पूर्ण अस्तित्व स्वतः सिद्ध नहि। आदित्य एहि सीमित स्वीकृतिकेँ ओतबे लिखबबैत अछि। अदालतक पूर्व संदेशक संग एहि मूल चीनी वाक्यक सम्बन्ध अनुवादकक आत्मकथनकेँ अधिक सूक्ष्म करैत अछि: नायक एहि बेर अपन विरुद्ध जाए सकय एहन तथ्यकेँ सेहो पूरा नाम दैत अछि।

अन्तिम हस्ताक्षरसँ पहिने दोसर सुधार—‘गुरु कोड-नाम नहि’क बदला ‘कोड-नाम सिद्ध नहि’—अनुमानक व्याकरणकेँ चरित्र-विकासक दृश्यमे बदलैत अछि। एक पुरान परिचित जाँचक सामग्रीमे अपन नामक जानकारी माँगैत अछि, शशांक गोपनीय विषयपर निजी आश्वासन नहि दैत। लाल किलाक बच्चा पुछैत अछि जे ओ शिक्षक अछि; नायक ‘विद्यार्थी’ कहैत अछि। सार्वजनिक परिचयक एहि छोट उत्तरमे ‘अपरिहार्य’ होयबाक लोभक आलोचना अछि। जुलियाना स्पष्ट करैत छलीह जे अर्थ ओकर माध्यमसँ गुजैरिते सत्य बनैत अछि, ई तेसर आ सर्वाधिक जोखिमपूर्ण अहंकार अछि। अध्यायक कलात्मक सीमा अन्तिम नोटबुकक शिक्षाप्रधान सूची अछि; तइयो श्रुत-साक्ष्यक दृश्यमय परीक्षण, पुरान सन्देशक स्वीकार आ ‘विद्यार्थी’ शब्दक चयन एकरा ठोस काव्यात्मक आधार दैत अछि।

## अध्याय १८ — भाषाक साधना ५ : नामक पद, लाभकारी स्वामित्व आ ज्ञानक अनधिकृत विस्तार

अठारहम अध्याय ‘नाम ककर अछि, अधिकार ककर, लाभ ककर?’ प्रश्नसँ नब अध्ययन आरम्भ करैत अछि। भारतीय विद्या भवनमे प्रतिनिधि, अधिकृत हस्ताक्षरकर्ता, भुगतान-पाबनिहार आ वास्तविक लाभकारी स्वामी चारि पदक भेद पढ़ाओल जाइत अछि। एके व्यक्ति चारि भूमिकामे हो सकैत अछि, मुदा एहि कारण चारि पद एके अर्थ नहि। कथाक महत्त्व ई जे भाषा-व्यवहारक शुद्धता केवल शब्दकोशक विषय नहि; संस्थागत जिम्मेवारी, आर्थिक दावेदारी आ व्यक्ति-परिचयक प्रश्न अछि। नव्य न्यायीय विशेष्य-सम्बन्धक दृष्टिसँ ‘अधिकृत सम्पर्क’क धर्म ‘स्वामित्व’क धर्म नहि। लेखक नायकक भाषिक दक्षताकेँ उपयुक्त सीमा-नियमनमे प्रयुक्त करबैत छथि।

आदित्य पुरान करार-श्रृंखलाक विस्तृत प्रतिलिपि रखैत अछि—अंग्रेजी आ चीनी पाठ, मुहर, हस्ताक्षर-सूची। पहिल करारमे अंग्रेजी अनुवादक ‘owner representative’ पद चीनी मूलक ‘अधिकृत सम्पर्क-प्रतिनिधि’क अपेक्षा स्वामित्वक पैघ अर्थ जोडैत अछि। शशांक मूल पदक कमी चिन्हबैत अछि आ साथे कहैत अछि जे एहि पाँतिसँ स्वामित्व सिद्ध नहि, तैँ ईहो सिद्ध नहि जे व्यक्ति स्वामी नहि। ई द्विपक्षीय सीमा अध्याय १७क ‘कोड-नाम सिद्ध नहि’क पाठक विस्तार अछि। ‘अर्थ उपस्थित नहि’ आ ‘वस्तु अस्तित्वमे नहि’ परस्पर असमान निष्कर्ष अछि। विद्वत् आलोचना मे एहि भेदकेँ सुरक्षित राखब आवश्यक अछि।

दोसर दस्तावेजमे लाभ पाबनिहारक पद अंग्रेजी सारांशमे सीधे ‘वास्तविक लाभकारी स्वामी’ बनि गेल अछि। शशांक आरम्भमे सारांश त्रुटिपूर्ण कहय चाहैत अछि, मुदा सोचि कहैत अछि जे सारांश मूल पदक सीमा सँ आगाँ गेल अछि; सम्भव अछि लिखनिहार लग आन सामग्री हो। लेखक ओहि क्षण नायकक विकासकेँ सूक्ष्म ढंगसँ दर्शबैत छथि। पहिने शशांक अपन व्याख्याकेँ अन्तिम बनाय चाहैत छल; एखन ओ अलग स्रोतक अस्तित्वक सम्भावना

स्वीकार करैत अछि। कथाक कार्यालयीय दृश्य एहन पद्धति गढ़ैत अछि जाहिमे अनुवाद मूल पाँतिक अर्थ बतबैत अछि आ जाँचक निष्कर्ष स्वतंत्र अभिलेखीय संयोजनसँ बनैत अछि।

पाँच संस्थाक विक्रेता-श्रृंखलामे दू ठाम समान ईमेल क्षेत्र, मिलैत हस्ताक्षर-रूप आ चीनी पत्राचारमे समान परिवार-नाम उपलब्ध अछि। एहि समरूपताक आधारपर 'एके समूह' कहबाक नायकक उतावली रोकल जाइत अछि। साझा सेवा-प्रदाता, सामान्य परिवार-नाम अथवा प्रशासनिक पद्धतिक समानता वैकल्पिक व्याख्या भऽ सकैत अछि; कोनो वैकल्पिक व्याख्या वास्तविक तथ्य घोषित नहि होइत। एक कनिष्ठ अधिकारी एके नामक पुनरावृत्तिक आधारपर लाभकारी स्वामित्वक अनुमान कहैत अछि; शशांक देखबैत अछि जे नामक संग पद अलग-अलग अछि। ई प्रसंग आपराधिक शंका नकारबाक प्रयास नहि, निर्णायक स्वामित्व-सम्बन्ध लेल नियंत्रण, लाभक प्रवाह अथवा निर्देश-अधिकारक अतिरिक्त दस्तावेजक आवश्यकता दर्शबैत अछि।

चीनी पत्रमे 'अन्तिम लाभक व्यवस्था पूर्व सहमति अनुसार रहत' सन कथन अंग्रेजी प्रतिमे 'ultimate beneficial ownership remains unchanged' बनि गेल अछि। ई शाब्दिक विस्तार आर्थिक व्यवस्था सँ कानूनी स्वामित्व धरि छलाँग अछि। शशांक एतय न निर्णायक निर्दोषता बतबैत, न स्वामित्वक अन्तिम निष्कर्ष। ओ सीमित पदकेँ महत्त्वपूर्ण संकेत मानि स्वतंत्र पुष्टि माँगैत अछि। भाषा जाँच कैँ रोकैत नहि; ओकर दिशा अधिक सटीक करैत अछि। एहि गद्यक उपलब्धि ई जे संस्थागत शब्दप्रयोगक अति-विशेषज्ञ प्रसंगकेँ लेखक नैतिक आत्मजाँचक कथाभूमिमे रूपान्तरित करैत छथि।

मृणाल संग लाल किला दिस पैदल यात्रा एहि करार-सम्पादनक नीरसताकेँ मानवीय सन्दर्भ दैत अछि। चीनी नामक क्रम भारतीय टिकट वा पासपोर्टमे उलटल होय तँ व्यक्ति बदलि गेल, ई निष्कर्ष नहि। नामक क्रम आ व्यक्तिक पहचानक भेद कार्यालयक व्यापारिक नाम-समस्यासँ जीवित सम्बन्ध बनबैत अछि। पुरान परिचित ककरो कम्पनीक वास्तविक स्वामीक विषयमे शशांकसँ निजी जानकारी माँगैत अछि; ओ जाँचक सामग्री पर बाहर चर्चा सँ मना

करैत अछि। मित्रता अथवा भाषिक कौशल ओकरा गोपनीय अभिलेखक सार्वजनिक स्वामित्व नहि दैत। ई सीमा मानब ओकर निजी गर्वकेँ चोट दैत अछि, मुदा नैतिक रूपेँ उपयुक्त बनैत अछि।

जुलियानाक समक्ष भाषाक गर्व आ निष्कर्षपर अधिकारक अन्तर खुलैत अछि। सही स्वर सीखबाक गर्व परिश्रमक साधन भऽ सकैत अछि; ‘हम जे बोलब से स्वतः सही’क दावा ओहि गर्वक विकृति अछि। शशांकक आत्मानुभव एही रूपान्तरणक उदाहरण अछि। पाश्चात्य दृष्टिबिन्दुक अध्ययनमे एतय कथाकार शशांकक तत्काल आकर्षण, मौन आ पश्चात्क विचार एके दृश्यमे रखैत छथि। भारतीय औचित्यक दृष्टिसँ ज्ञानक उपयोग उचित तखन अछि जखन शब्दक सम्बन्ध मूल स्रोतसँ सुरक्षित रहय। ई अध्याय नायककेँ सम्पूर्ण निर्मोही नहि बनबैत; गर्वक सही उपयोगक सम्भावना देखबैत अछि।

अन्तमे नोटबुकक ‘नामक पुनरावृत्ति’ आ ‘गोपनीय ज्ञान प्रतिष्ठाक साधन नहि’ सन पाँति इहो दर्शबैत अछि जे सीखल सीमा फेर-फेर लिखि राखबाक आवश्यकता अछि। आलोचनात्मक सीमा—चारि पदक परिभाषा अनेक संवादमे दोहराइत अछि, जकरा सँ दृश्य कखनो प्रशिक्षण-पाठ सन बनैत अछि। तथापि मूल-अनुवादक छोट भेद, पाँच संस्थाक अभिलेख, लाल किलाक उलटल नाम आ निजी प्रश्नक संयोजन कथाक अन्तर्धारा राखैत अछि। एहि अध्यायक अर्थ अपराधक सम्पूर्ण संरचना खोलब नहि, जाँचमे व्यक्ति-नामसँ पद आ पदसँ वास्तविक स्वामित्व धरि पहुँचबाक प्रमाणिक मार्ग चिह्नब अछि।

## अध्याय १९ — भाषाक साधना ६ : वित्तीय नामकरण आ मित्रताक स्वतन्त्र प्रतिपरीक्षा

उन्नीसम अध्याय अठारहम अध्यायक ‘अन्हारक नाम जानि लेब प्रकाश नहि’क विचारकेँ प्रत्यक्ष वित्तीय अभिलेखक परीक्षणमे लऽ जाइत अछि। आदित्य चारि पतला संचिका रखैत अछि—भुगतान-द्वारक मासिक विवरण, बैंक खाताक सूची, जब्त चीनी-अंग्रेजी संदेशसभक अनुवाद आ डिजिटल सम्पत्तिसँ सम्बन्धित कागज। एहि चारि स्वतंत्र सामग्रीकेँ आगूसँ एके कथा मानि पढ़बाक मनाही साहित्यिक आ शोध-पद्धतिगत दुनू अर्थमे महत्त्वपूर्ण अछि। आर्थिक अपराधक सन्देह पाठकक मनमे होय सकैत अछि, मुदा प्रत्यक्ष पृष्ठ पर ई सभ स्रोत एखन अलग-अलग जाँचक विषय अछि। निष्कर्षक ‘जन्मस्थान’ लिखि राखबाक आदित्यक आग्रह अनुमापक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

पहिल संचिकामे राशि कहाँसँ कतय गेल से देखाइत अछि; उद्देश्य नहि। दोसरमे किछु खाताधारक करारक मुख्य पक्षमे नहि, मुदा ताहिसँ ‘पराया खाता’ सन दोष-सूचक नाम स्वतः उचित नहि। एके खाता वैध सेवाप्रदाताक हो सकैत अछि अथवा धन घुमेबाक माध्यम सेहो भऽ सकैत अछि; एतय कोनो सम्भावनाक तथ्यात्मक पुष्टि अन्तिम रूपेँ भेल नहि। शशांक अपने पहिने ‘पराया खाता’ कहैत अछि, फेर आदित्यक प्रश्नपर अपन शब्द अधिक सटीक करैत अछि। ई दृश्य भाषा अपनहि विषयक पूर्वाग्रह बना सकैत अछि, से देखबैत अछि। जाँचक योग्य निष्कर्ष केवल स्रोत अभिलेखक सीमा धरि रहबाक चाही।

तेसर संचिकामे ‘settle’, ‘clear’, ‘outside’, ‘token’ जेकाँ बहुअर्थी पद सन्देश-प्रसंगमे अछि। चीनी वाक्यक एक शाब्दिक अर्थ हवाला-सदृश निपटानक स्मरण करा सकैत अछि, मुदा व्यापारिक समायोजनक सम्भावना सेहो अछि। चतुर्थ संचिकामे डिजिटल सम्पत्तिक तिथि, अनुमानित मूल्य आ बाहरी पतासभ अछि; रूपान्तरण आ धारणक शब्द अपने अपराध सिद्ध नहि

करैत। स्रोत, प्रयोजन, लाभार्थी, नियन्त्रण आ आन अभिलेख जोड़नाइ आवश्यक अछि। एहि भेदक कारण कथा न तऽ रहस्यक उत्सुकता नकारैत अछि, न उत्सुकताकेँ अपराध-सिद्धिक विकल्प बनबैत अछि। भाषा-विश्लेषण जाँचक सहायक रहैत अछि, पूरा निर्णयकर्ता नहि।

वित्तीय अभिलेखक मेजसँ बाहिर चाहक दोकानपर कथा नैतिक रूपसँ अधिक कठिन भऽ जाइत अछि। मृणालकेँ कियो फोन कऽ शशांकसँ पुरान परिचय, चीनक लोकसँ सम्बन्ध आ विदेशी भुगतानक विषयमे पुछने अछि। प्रेषकक परिचय आ उद्देश्य एहिमे निश्चित नहि; एहि प्रश्नसँ कोनो व्यापक दबाव-योजनाक निष्कर्ष नहि निकालल जा सकैत। मृणाल केवल प्रत्यक्ष जानल बात कहबाक उत्तर दैत अछि। शशांककेँ ओकर पुरान परीक्षा फेर भेटैत अछि—दोसरक मौनमे कथित दोषक अर्थ स्वयं जोड़ि देब। मित्र स्पष्ट कहैत अछि जे ओ शशांककेँ अपराधी नहि कहने अछि; ओ केवल नायकक बात न कहबाक नैतिक कारण जानय चाहैत अछि।

मृणालक प्रश्नक उत्तरमे शशांक तीन स्तर बतबैत अछि: किछु सूचना सचमुच गोपनीय, किछु ओ स्वयं नहि बुझैत छल, आ किछु नहि कहने कारण ताहिसँ ओकर प्रतिष्ठा घटि सकैत छल। तेसर स्वीकारोक्ति एहि अध्यायक वास्तविक मनोवैज्ञानिक घटना अछि। अपन ज्ञानक मूल्य बढ़ायबाक इच्छा आ मित्रसँ चयनित मौनक सम्बन्ध निजी स्तरपर ठोस भऽ उठैत अछि। मृणाल एहि नैतिक दोषसँ विशिष्ट वित्तीय अपराधक अन्तिम निष्कर्ष नहि बनबैत। नव्य न्यायीय पृथक्करण एतय अदालतसँ बाहर मित्रताक भाषा बनि गेल अछि। उपन्यासक प्रेमपूर्ण कठोरता एहि प्रश्नमे अछि जे मित्र सही सीमाबोध सिखा सकैत अछि, मुदा शशांकक असुविधाजनक सत्यक स्थानपर सुविधा दऽ नहि सकैत।

लाल किलापर अनुवादकक छोट सहायता आ पितमपुरा मन्दिरमे मृणाल-जुलियानाक पहिल भेट एक बृहत्तर सम्बन्धवृत्त बनबैत अछि। जुलियाना स्वयं मृणालसँ पूछैत छलीह जे ओ सभ सत्य चाहैत अछि कि नहि; मृणाल स्पष्ट करैत अछि जे जाँचक गोपनीय सामग्री नहि, चयनित सुविधा आ वैध गोपनीयताक भेद चाही। शिक्षकक स्वर-सुधारक प्रसंग आ मित्रक अनुभूत

आचरण एतय पूरक अछि। भाषा-गुरु त्रुटिक ध्वनि सुनैत छथि; मित्र चरित्रक सुविधा सुनैत अछि। दुनूक संयोग शशांकक आत्म-प्रमाणबोधकेँ अधिक सूक्ष्म करैत अछि।

अध्यायक अन्तमे मित्रता केवल सहमतिपर आधारित नहि होयबाक विचार प्रमुख अछि। जँ मृणाल भविष्यमे शशांकक आचरणक विरोध करत, ताहिसँ ओ शत्रु स्वतः नहि बनत। शशांक 'सीमा जानैत छी' कहबाक पहिने रुकैत अछि—कारण सीमा जानब आ मानब दू अलग बात अछि। ई छोट विराम पूर्वक सिद्धान्तक व्यवहाररूप अछि। रसानुभवमे निराश मित्रक दृष्टि, साझा चाह आ शिक्षकक ओसारामे चलल संवाद करुण-संवेदनाक आन्तरिक धारा बनबैत अछि। अध्यायक सीमा अन्तिम आठ सूत्रक पुनरावृत्ति अछि; मुदा एहि बेर सूत्रसभक आधार मृणालक स्वतन्त्र प्रश्न आ वास्तविक मौनक स्वीकारोक्ति अछि।

ई अध्याय कथाक आपराधिक सन्देह आ नैतिक आत्मचिन्तनक अन्तर स्पष्ट रखैत अछि। वित्तीय कागजक अपूर्ण संगति पर नायक दोष तय नहि करैत; मित्रक सम्मुख अपन महत्त्वाकांक्षाक परिणाम स्वीकार करैत अछि। 'दोस्ती सेहो शब्द-प्रमाण अछि, मुदा अदालतक प्रमाण नहि'—एहि अन्तिम विचारक अर्थ ई नहि जे मित्रक अनुभव विश्वसनीय नहि, बल्कि जे सम्बन्धक नैतिक सत्य आ विधिक दोषनिर्णयक स्रोत-मानदण्ड अलग-अलग अछि। अनुवादकक विकसित होइत आत्मज्ञान एहि वैध भिन्नताक रक्षा करबाक प्रयत्न अछि।

## अध्याय २० — जुलियानाक पाठ : प्रवेशक सीमित अधिकार आ इच्छाक सही नाम

बीसम अध्यायमे मकाऊसँ नियमित भाषिक परामर्शक लिखित प्रस्ताव आयलापर पहिनुक समस्त शिक्षा फेर व्यवहारिक निर्णयक रूपमे उभरैत अछि। पदनाम, मासिक पारिश्रमिक, यात्रा-भत्ता आ चयनित सर्वर-पृष्ठक पढ़बाक सीमित प्रवेश शशांकक मनमे एक संग चमकैत अछि। कथाकार एहि आकर्षणकेँ स्वत: अवैध व्यापार वा आर्थिक अपराध घोषित नहि करैत छथि। प्रस्ताव पेशागत रूपेँ वैध होयब सम्भव अछि; मुख्य प्रश्न ई अछि जे नायक कार्य-सीमा आ निजी ‘विशेष प्रवेश’क कल्पना कें कोना अलग राखत। उपन्यासक आलोचनात्मक लक्ष्य काज करबाक इच्छा नकारब नहि, प्रवेशक भाषिक अर्थ अनधिकृत अधिकार धरि फैलाएबाक प्रलोभन खोलब अछि।

भारतीय विद्या भवनक सम्मानसूचक आ सीधा वाक्यक अभ्यास फेर संकेत करैत अछि जे शब्द सूचना मात्र नहि, सम्बन्ध बनबैत अछि। लाल किलामे राजकीय शक्तिक प्रदर्शन पर पर्यटकक प्रश्न शशांककेँ अपन नब पदनामक चमक स्मरण करबैत अछि। बाह्य स्थापत्य आ निजी प्रतिष्ठाक एहि समानान्तर रखनाइ शिल्पगत उपलब्धि अछि: शक्तिक दृष्यमान प्रदर्शन आ तकनीकी अधिकारक पदनाम दुनू मानवीय मनमे प्रभाव डालैत अछि। तइयो वास्तविक सामर्थ्यक सीमा लिखित प्रस्तावमे अछि—चयनित पृष्ठ, भाषा-समीक्षा, पढ़बाक अनुमति, परिवर्तन-निषेध, परियोजना-प्रमुख द्वारा सीमा-निर्धारण। शब्दक एहने ठोस विवरणक आधारपर नायकक कल्पना पर प्रश्न उठैत अछि।

मृणाल तीन उपयुक्त इच्छा—काज, पारिश्रमिक, भाषा-कर्म—सुनि प्रश्न करैत अछि जे शशांक स्वयं की चाहैत अछि। प्रस्तावमे पढ़बाक सीमावला पाँति पर ओकर दृष्टि अधिक ठहरैत अछि। मृणालक आलोचना धन अथवा सम्मानक विरोध नहि, प्रवेशकेँ आत्म-महत्त्वक प्रमाण मानबाक विरुद्ध अछि। शशांक राति तीन खाँचा बनबैत अछि: प्रत्यक्ष, अनुमान, इच्छा। प्रत्यक्ष प्रस्तावक वास्तविक शर्त; अनुमान भविष्यक व्यापारिक सम्बन्ध; इच्छा धन,

पद, अधिक पहुँच आ दुर्लभ ज्ञानक स्वामित्व। ई संरचना पूर्वक आर्थिक अभिलेख-सारणीसँ भिन्न अछि, कारण एहि बेर शशांक अपन चेतनाक अज्ञात प्रेरणाकेँ स्वयं विषय बनबैत अछि।

पितमपुरामे जुलियाना प्रस्तावक प्रत्येक धारा शशांकसँ मैथिलीमे पढ़बबैत छलीह। ओ शब्द 'विशेष', 'गोपनीय ज्ञानक स्वामी' अथवा स्वतन्त्र जाँच-अधिकार लिखित पाठमे कतहु नहि अछि; ई सभ नायकक मन जोड़ैत अछि। एहि प्रश्न-प्रक्रियासँ मूल अनुवाद आ व्याख्यात्मक प्रक्षेपक दार्शनिक भेद आत्मअनुभवमे बदलैत अछि। 'प्रवेश' सेवा लेल देल सीमित साधन अछि; 'अधिकार' कार्य-नियोजनक विशिष्ट नियमसँ तय होइत अछि। एहि दू पदकेँ मिलाएबक लोभ मकाऊक सीमा-बाह्य खोजक पुरान प्रसंग पुनः सामने अनैत अछि। लेखक जुलियानाक गुरुता निर्णय थोपबाक सामर्थ्यमे नहि, नायकसँ ठीक पाठ पढ़बाबयमे स्थापित करैत छथि।

शशांक जुलियानाकेँ पुरान सीमा-बाह्य नाम-खोजक तथ्य कहैत अछि। दू संक्षिप्त प्रविष्टि भेटल छल, मुदा स्वामित्व, भुगतान अथवा अपराध सिद्ध नहि। एहि स्वीकृतिमे दोषक सीमित नाम महत्त्वपूर्ण अछि: लिखित कार्य-आवश्यकतासँ बाहर उद्देश्यपूर्वक खोज कएल गेल; आपराधिक निष्कर्ष लेल पृथक प्रमाण चाही। जुलियाना एहि भिन्नताकेँ अक्षुण्ण रखैत छलीह। नव्य न्यायक पद्धति एहि प्रसंगमे केवल परिभाषात्मक विचार नहि; आत्मदोष स्वीकार करबाक उपयुक्त भाषा अछि। ताहि सँ नायक अपन गलती कम नहि करैत आ बिना प्रमाण अपनापर अधिक आरोप सेहो नहि लादैत।

जुलियाना प्रस्ताव स्वीकारब वा अस्वीकारबक अन्तिम फैसला स्वयं नहि करैत छलीह। ओ कहैत छथि जे वैध काज आ स्पष्ट सीमा मानि सकबाक स्थिति हो तँ कार्य सम्भव अछि; गुरु निर्णय कऽ देत तँ विद्यार्थी उत्तरदायी नहि बनत। ई संवाद शिक्षक-पात्रकेँ नैतिक आदेशक साधारण मुखपत्र होयबासँ बचबैत अछि। नायकक भीतर लोभ समाप्त भेल नहि अछि, मुदा ओकर नाम साफ भेल। कथाक वास्तविक रूपान्तरण इएह अछि: इच्छा होयब आ इच्छा केँ अधिकारक समकक्ष मानब दू अलग बात। उपन्यास

संयमकेँ पूर्ण इच्छाहीनता नहि, आत्मज्ञान आ लिखित मर्यादाक संयोग मानैत अछि।

आदित्य लग शशांक प्रस्तावक प्रति रखैत अछि आ सीमा-बाह्य खोजक स्वैच्छिक पूरक कथन दर्ज करबबैत अछि। अधिकारी तिथि, प्रवेशक स्वरूप, खोजल संकेत आ परिणामक प्रकृति पूछैत अछि; अपराध-सिद्धिक दावा नहि करैत। विलम्बित सूचना तथ्य अछि, बादमे स्वेच्छासँ जानकारी देब सेहो तथ्य। एहि दोहर संख्याक कारण नायकक दोष नष्ट नहि, मुदा ओकर कथनक इतिहास अधिक पूरा बनैत अछि। मृणाल सेहो मित्रताकेँ अभिभावकत्व नहि बनबैत; ओ प्रस्तावक विरुद्ध आदेश नहि देत, केवल काजक सीमा अपन लेल लिखबाक सल्लाह दैत अछि। एतय संस्था, शिक्षक आ मित्र तीनू नायकक उत्तरदायित्वक अलग-अलग आधार बनैत अछि।

अन्तमे शशांक नियमित परामर्श लेल सहमति देबाक संग लिखित रूपमे भाषा-समीक्षा सँ बाहर जाँच-अधिकार नहि होयबाक, आ प्रवेश पूर्वनिर्धारित चयनित पृष्ठ धरि सीमित रखबाक आग्रह करैत अछि। ई कर्म ओकरा महान नैतिक नायक नहि बनबैत; ई अपन इच्छाक चारू कात स्पष्ट रेखा खींचबाक प्रयास अछि। पाठक एखन नहि जानैत अछि जे आगाँ ओ एहि सीमा पर स्थिर रहत कि नहि। एहि कारण अन्तिम टप्पा सत्यनिष्ठ आश्वासन अछि, चरित्रक अन्तिम प्रमाणपत्र नहि। ‘जुलियानाक पाठ’ शीर्षकक औचित्य पूर्ण अछि—गुरु दोष मेटैत नहि, दोषक मिथ्या नाम मेटबैत छथि।

कलात्मक विवेचनमे प्रस्तावक लिखित अनुच्छेद, चाहक गिलास, दीपकक बाती आ नोटबुकक आठम पाँति मिलि आन्तरिक इच्छाकेँ बाह्य वस्तुसभमे प्रकट करैत अछि। कुछ संवाद पूर्वक अध्यायसभक सीमासूत्र दोहरबैत अछि, तथापि निर्णायक नब बात वास्तविक लिखित प्रस्तावक उत्तर अछि। अध्यायक अन्तिम नैतिक उपलब्धि ई नहि जे शशांक धन वा प्रतिष्ठासँ विमुख भेल; ई जे ओ अधिकृत सेवा आ निजी महत्त्वाकांक्षाकेँ अलग राखबाक लिखित शर्त स्वयं प्रस्तुत करैत अछि। कथाक अगिला परिणामक निर्णय एखन खुलल अछि; समीक्षा एहि खुलापनकेँ सम्मान देत अछि।

## अध्याय १६–२० : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — प्रतिपरीक्षा, स्वामित्व आ नैतिक अधिकार

अध्याय १६–२० ‘भाषाक साधना’क पाँच दृश्य प्रस्तुत करैत अछि, मुदा प्रत्येकक संस्थागत परिवेश अलग अछि। अध्याय १६मे न्यायालयक प्रतिपरीक्षा, १७मे मुहरबन्द डिजिटल सामग्रीक कार्य-प्रति, १८मे करार आ लाभकारी स्वामित्वक पद, १९मे वित्तीय अभिलेखक चारि संचिका आ मित्रताक प्रतिपरीक्षा, २०मे नब मकाऊ प्रस्तावक लिखित सीमा। कथानक निर्णयक अवस्था सँ पुनः निर्णय-पूर्व अवस्थामे चलैत अछि; शशांकक आन्तरिक शिक्षा भविष्यक प्रयोगमे परखबाक शर्त बनैत अछि। एकर अर्थ नायकक सम्पूर्ण रूपान्तरण सिद्ध भेल नहि। हर नब अभिलेख नायकक पुरान आत्मगर्व आ बौद्धिक प्रशिक्षणक बीच नव संघर्ष पैदा करैत अछि।

शिल्पगत दृष्टिसँ न्यायालय, भारतीय विद्या भवन, आयुक्तालय, लाल किला, चाहक दोकान आ पितमपुराक ताओ मंदिर आवर्ती स्थल अछि। न्यायालय शब्दक सार्वजनिक जिम्मेवारी देखबैत अछि; विद्यालय ध्वनिक प्रसंग-सापेक्षता; आयुक्तालय स्रोत-परीक्षण; लाल किला साधारण व्यवहारमे पहचानक त्रुटि; चाहक दोकान मित्रक निजी जिरह; मंदिर इच्छाक नामकरण। एतेक पुनरावृत्तिसँ कथानकक भौगोलिक विस्तार सीमित लगि सकैत अछि, किन्तु एके स्थलपर अलग नैतिक अवस्थाक पुनरागमन तुलनात्मक आधार बनबैत अछि। लेखकक आवर्ती विन्यास शशांकक शिक्षा एक बेरक दीक्षा नहि, दैनिक पुनःपरीक्षा अछि, से स्थापित करैत अछि।

प्रमाणक शृंखलामे क्रमशः पाँच चुनौती उभरैत अछि। पहिल, एक पूर्व अनुवाद-त्रुटिक आधारपर समस्त अनुवाद अविश्वसनीय कहब अनुचित, मुदा पुरान त्रुटिक इतिहास वास्तविक अछि। दोसर, श्रुत ध्वनि आ यन्त्र-प्रतिलिपिक सीमासभ अलग; ‘कोड-नाम सिद्ध नहि’ आ ‘कोड-नाम नहि’ समान नहि। तेसर, नाम, प्रतिनिधित्व, भुगतान-प्राप्ति आ वास्तविक

लाभकारी स्वामित्व अलग सम्बन्ध। चौठ, राशि आ डिजिटल संकेतक उपस्थिति वित्तीय अपराधक विशिष्ट उद्देश्य सिद्ध नहि। पाँचम, प्रवेशक अनुमति स्वतन्त्र जाँच-अधिकार वा जानकारीक स्वामित्व नहि। ई पाँचू भेद नव्य न्यायक सामान्य अवधारणासँ अधिक, कथानकक विशिष्ट दस्तावेज आ संवादक भीतर प्रमाणित रूपमे कार्य करैत अछि।

शशांकक चरित्रक विकास आ अस्थिरता संग-संग देखबाक चाही। अदालतमे पुरान भाषा-सन्देशक उद्देश्य स्वीकार करब एक उपलब्धि अछि; पूरक समन भेटिते अपरिहार्य बनबाक गर्व जागब अधूरापन। अभिलेखीय पद सही करब उपयोगी अछि; कनिष्ठ अधिकारीक साम्हिन अपन महत्त्व स्थापित करबाक इच्छा एखनहुँ उठैत अछि। मृणालक जिरहमे 'किछु नहि कहलहुँ कारण प्रतिष्ठा घटि सकैत छल'क स्वीकार नैतिक प्रगति अछि; मकाऊक नब पद-पारिश्रमिक-प्रवेशक आकर्षण फेर उपस्थित अछि। एहि विरोधाभासकेँ असंगति नहि, मनुष्यक धीमा परिवर्तन रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि—यदि ओकर प्रत्येक दृश्य मूल पाठक समय-क्रमक भीतर रखल जाए।

चारि सम्बन्ध-पात्र एहि भागमे भिन्न भूमिका निभबैत अछि। आदित्य प्रक्रियाक स्रोत-सुरक्षा आ निष्कर्षक सीमाक पहरेदार अछि। मृणाल नायकक मौनक व्यक्तिशः लाभक प्रश्न उठबैत अछि। जुलियाना इच्छाक भीतर शब्दक अनधिकृत विस्तार चिन्हबैत छलीह। राघवक पूर्व न्यायालयीय प्रसंगमे उठल अभिलेखक प्रकृति आ साक्ष्यक विवेचन अध्याय १६क प्रतिपरीक्षामे नब रूप पबैत अछि। ककरो दोष अथवा सद्गुणक सम्पूर्ण प्रमाणपत्र देब आवश्यक नहि; एहि पात्रसभक संवाद उपन्यासक मुख्य विषय—भाषाक अधिकारक सीमा—केँ अलग जीवनस्थितिमे स्पष्ट करैत अछि।

भारतीय रस-विवेचनमे भय, लज्जा, आशंका आ सख्यभावक सूक्ष्म आवर्तन अछि। पाश्चात्य दृष्टिबिन्दु-विवेचनमे नायकक क्षणिक स्वाभिमान आ तुरन्त आत्मसमीक्षा प्रमुख शिल्प अछि। नव्य न्यायमे सम्बन्ध-भेद, शब्द-प्रमाण आ अनुमापक योग्यताक परीक्षण अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिमे न्यायालयक घटनाक्रम, दिल्लीक संस्था, मकाऊक प्रस्ताव आ व्यक्तिक

अन्तर्मन अलग काल-स्थानमे घटित होइतहुँ एक-दोसराक पार्श्व बनैत अछि। तथापि केवल निकटता ककरो वित्तीय अपराध-संगति अथवा प्रशासनिक हस्तक्षेप सिद्ध करबाक पर्याप्त आधार नहि। एहि संयमकेँ समीक्षा-पद्धतिक मूल शर्त मानल जाए।

कलात्मक सीमा ई जे अध्यायसभक अन्तमे नोटबुक-पाँति आ शिक्षाप्रद सूत्र अनेक बेर लगभग एकहि विधान दोहरबैत अछि। यदि कथानकक दृष्टिसँ देखी तँ प्रतिपरीक्षा, यन्त्र-प्रतिलिपिक त्रुटि, व्यापारी-चिह्नक भेद, मित्रक चोट आ लिखित प्रस्तावक उत्तर स्वयं पर्याप्त प्रभावकारी दृश्य अछि। तथापि लेखकक प्रमाण-संगतिक परियोजना पाठकसँ पुनरावृत्त श्रम माँगैत अछि; ई श्रम कथाक लयकेँ मन्द करैत अछि, मुदा कथित आरोपक अतिशयोक्ति पर अंकुश सेहो लगबैत अछि। काव्यात्मक प्रभाव आ प्रक्रियागत पाठ—दुनू बीचक तनाव एहि पञ्चाध्यायक वास्तविक गुण आ सीमा अछि।

समेकित निष्कर्ष ई जे पन्द्रहम अध्यायक बाद शशांकक न्यायालयीय बयान आ नवीन प्रयोग ओकरा पूर्ण अपराधमुक्त वा सर्वज्ञ स्थापित नहि करैत। ओकर कएल सीमा-बाह्य खोज, पुरान भाषिक हस्तक्षेप आ विलम्बित सूचना स्रोत-पाठमे वास्तविक नैतिक प्रश्न अछि। करारक पदसँ वास्तविक लाभकारी स्वामित्व, वित्तीय संकेतसँ हवाला, आ डिजिटल प्रवेशसँ अपराधगत कर्तृत्वक अन्तिम निर्णय एहि पाँच अध्यायमे स्वतंत्र रूपेँ सिद्ध नहि। नायकक विकासक सटीक सूचक ई अछि जे ओ अपन दोषक सीमा स्पष्ट करैत आ आन लोकक दोषक सीमा बिना प्रमाण नहि बढ़बैत, जबकि निज महत्वक आकर्षण एखनहुँ बचल अछि। ‘अनुवादक’क नैतिक केन्द्र एहि अपूर्ण, निरन्तर परखल जाएवला अनुशासनमे अछि।

## अध्याय २१ — भाषाक साधना ८ : गोपनीय परामर्शमे सुनल शब्द, व्याख्याक सीमा आ साक्षीक नैतिक स्थिति

एकैसम अध्यायक आरम्भ राघव भसीनक कार्यालयसँ आयल गोपनीय बैसारक सन्देशसँ होइत अछि। ओहि सन्देशक बाहरी प्रसार नहि करबाक स्पष्ट शर्त शशांकक पूर्वरात्रिक नोट—‘जे काज लेल प्रवेश, ओहि काज धरि’—कँ नव क्षेत्रमे लागू करैत अछि। बीसम अध्यायमे सीमित सर्वर-पृष्ठ पढ़बाक अनुमति आ ओकरा सँ अधिक अधिकारक इच्छा बीच टकराव छल; एतय प्रश्न अछि जे अनुवादकक कान धरि पहुँचि गेल शब्द ओकर कार्यक्षेत्रमे कतय धरि अबैत अछि। वस्तुपर अधिकार आ कथनक उत्तरदायित्व बीच ई परिवर्तन मात्र प्रसंग-विस्तार नहि, उपन्यासक नैतिक मूल प्रश्नक सूक्ष्मीकरण अछि। गोपनीयता सूचना बाहर नहि दियबाक नियम भऽ सकैत अछि, मुदा गोपनीयता केहन मौनक अपेक्षा करैत अछि, से प्रत्यक्ष परिस्थिति देखल बिना निश्चित नहि। लेखक पहिल अनुच्छेदे पात्रकँ एहन दुविधामे राखैत छथि जतय दूटा उचित बुझाइत नियम एक-दोसरासँ टकराइत अछि।

भारतीय विद्या भवनक भोरक अभ्यास एहि द्वन्द्वक विचारात्मक पूर्वपीठिका अछि। शिक्षक ‘हम सुनलहुँ’ आ ‘हम देखलहुँ’ अलग रखैत छथि; शशांक ‘हम सुनलहुँ’कँ ‘हम जानैत छी’ बना देबाक परिणाम ‘प्रमाणक भार’ बदलनाइ बतबैत अछि। ई छोट भाषिक रूपान्तर भारतीय प्रमाणमीमांसामे प्रत्यक्ष आ शब्द-प्रमाणक अन्तर बनि उठैत अछि। किछु सुनब प्रत्यक्ष श्रवणक घटना होइत अछि, मुदा कथनक तथ्यगत सत्यता ताहिसँ स्वतः सिद्ध नहि; वक्ताक आशय, कथनक विश्वसनीयता आ प्रसंग फेरो जाँचबाक रहैत अछि। एतय नव्य न्यायक शब्द-संबन्धित सूक्ष्मता कथानकक अनुषंग नहि, ओकर नैतिक प्रयोगक व्याकरण अछि। कलात्मक उपलब्धि ई जे शशांक उत्तर जानैत अछि, मुदा अपन स्वर भारी अनुभव करैत अछि; ज्ञानक कथित सरलता अनुभूत जिम्मेदारीक भारसँ बदलि जाइत अछि।

राघवक बैसारमे चीनी प्रतिनिधि, ओकर सहायक आ शशांकक भूमिका प्रारम्भे अलग-अलग चिन्हित अछि। राघव शशांककेँ भाषिक सहायक कहैत अछि, प्रश्नक उत्तर देबाक वा नहि देबाक निर्णय अपन विधिक कार्यक्षेत्रमे रखैत अछि। प्रतिनिधिक 'समायोजन' शब्द वास्तविक शुल्कक प्रयोजन स्पष्ट नहि करैत; शशांक एहि अनिश्चिततासँ अनुवादक भीतर सुरक्षित रखैत अछि। ओ 'समायोजन'क नामपर केवल लेखा-समायोजनक निर्दोष निष्कर्ष नहि दैत, आ शब्दक अस्पष्टतासँ ककरो वित्तीय दोषक प्रमाण सेहो नहि बनबैत। 'बन्द' सम्बन्धी क्रिया व्यवस्था उपयोगमे नहि होयब आ ओकर प्रभाव समाप्त होयब—दूनू अर्थ खोलैत अछि। राघवक उत्तर 'जतेक अछि, ओतबे' अध्यायक निर्णायक भाषिक सूत्र अछि। मूल अर्थक सीमा जानब मात्र विद्वत्ता नहि; सीमा नहि बढ़ाएब पेशागत संयम अछि।

कथाक वास्तविक टकराव तखन होइत अछि जखन प्रतिनिधि अपन सहायकसँ आस्ते 'पुरान भुगतान-नाम सभ कानूनी पत्रमे नहि आबय' सन कथन करैत अछि। ई वाक्य औपचारिक प्रश्नक उत्तर नहि, बैसारक भीतर दोसर व्यक्ति लग कहल निजी टिप्पणी अछि। शशांकक श्रवण प्रत्यक्ष घटना अछि; वाक्यक उद्देश्य, ओहि भुगतान-नामक वास्तविक परिचय, अथवा ककरो अभिलेख दबेबाक निश्चित योजना प्रत्यक्ष नहि। तेँ ओ अनुवाद करब कि नहि—ई निर्णय कथानकक मुख्य क्रिया अछि। ओ राघव समक्ष वाक्यक अस्तित्व बतबैत अछि आ उद्देश्य नहि जानबाक सीमा संग रखैत अछि। एहि निर्णयकेँ सर्वत्र लागू होमयवला पेशागत नियम मानब त्रुटिपूर्ण होयत; रचना स्वयं आगाँ कहैत अछि जे परिस्थिति आ विधिक नियमक पृथक विचार चाही। मुदा विशेष बैसारक भीतर मूल वक्ताक कथनक अस्पष्टता ज्योंकात्यों पहुँचाएब शशांकक बदलैत विवेकक प्रमाण बनैत अछि।

प्रतिनिधिक आपत्ति जे कथन निजी छल, वाक्यक सार्वजनिक उपयोगक वैधता नहि, ओकर बैसार-अन्तर्गत स्थान पर प्रश्न अछि। राघवक उत्तर—अभिलेखमे तथ्य नुका देबाक निर्देश नहि देल जाएत—ककरो अपराधी ठहरबैत नहि; केवल विधिक परामर्शक घोषित सीमा चिन्हैत अछि। लेखक एतय 'गोपनीय' आ 'अनुचित तथ्य-दमन'केँ एकार्थक नहि मानैत छथि। किछु परामर्शक गोपनीय विशेषाधिकार विधिक प्रक्रियाक विषय होय सकैत

अछि; मुदा उपन्यासक एही दृश्यसँ ओकर पूर्ण कानूनी विस्तार, न्यायिक अपवाद वा ककरो दोषसिद्धि प्रमाणित नहि होइत। समीक्षाकेँ सेहो एहि भेदक रक्षा करबाक अछि। शशांकक भय—कहलासँ गोपनीयता तोड़बाक आरोप, नहि कहलासँ सहभागिताक आरोप—दूटा सम्भावित आरोपक बीच उपस्थित अपन अनिश्चित नैतिक अवस्थाक भय अछि, न कि दूटा अपराधक सिद्ध अस्तित्व।

बैसार समाप्त भेलापर राघवक परामर्शमे निर्णायक बात लिखित निर्देश माँगब अथवा काज रोकबाक विकल्प अछि। एहि विकल्पक महत्त्व ई जे भाषिक अनिश्चितताक समाधान अनुवादक अपन व्यक्तिगत आत्मविश्वाससँ एकरूप आदेश गढ़ि नहि करय। जुलियानाक पाठमे शशांक नाम आ व्यापारिक विवरण न दोहराऽ घटनाक नैतिक संरचना मात्र साझा करैत अछि। गुरु ‘अहाँ ककर शब्दक स्वामी छलहुँ?’ पूछैत छलीह। शशांकक ‘ककरो नहि’ उत्तर साधारण विनम्रता नहि; अनुवादमे लेखकीय हस्तक्षेपक सीमा स्वीकृति अछि। ककरो कथन बुझब ओकरा अर्थानुसार विस्तार करबाक स्वामित्व नहि। गुरु भय दूर करबाक आश्वासन नहि दैत छथि, बल्कि कहबाक आ नहि कहबाक कर्मक स्मृति स्पष्ट रखबाक आग्रह करैत छथि। एहि दृश्यसँ आध्यात्मिक शिक्षा अपन स्वतन्त्र दार्शनिक अर्थ राखैत अछि, मुदा न्यायिक अभिलेखक स्थान नहि लेत।

अगिला भोर आदित्य मिश्रक कार्यालयमे शशांक स्वयं उपस्थित होइत अछि। ओ गोपनीय कानूनी परामर्शक विषयवस्तु खुलासा करबाक बदला अपन भाषिक कार्यक सामान्य संरचना दर्ज करबय चाहैत अछि। आदित्य मिथ्या अनुवाद, अभिलेख नष्ट करब, जाँचमे मिथ्या उत्तर देब, अथवा भुगतानक स्रोत नुकएबाक तकनीक सिखाएब सन सम्भावनासभ अलग-अलग पूछैत अछि; शशांक सभ प्रश्नक उत्तर निषेधमे दैत अछि। एहि निषेधसभक साहित्यिक महत्त्व नाटकीय निर्दोषता नहि, आरोपक सम्भावित प्रकारसभक पृथक्करण अछि। ‘पुरान भुगतान-नाम’ महत्त्वपूर्ण संकेत भऽ सकैत अछि, मुदा कोन भुगतान, नाम, समय, कागज—ई प्रश्नसभ अनुत्तरित अछि। आदित्यक खाली कागज पर शशांक अपन भूमिका आ स्मृति लिखैत अछि।

निजी अभिलेखक प्रयोजन एतय अदालतक निर्णय बनब नहि, भयक दबावमे पात्र अपन भूमिकाक आकार बदलि नहि दियय से सुनिश्चित करब अछि।

दिल्लीक धूप, लाल किलाक पर्यटक, पितमपुराक दीया आ मृणालक चाह—चारि दृश्य एहि अध्यायक गद्यकेँ शुष्क विधिक बहस बनबासँ रोकैत अछि। लाल किलामे गाइडक आधा सुनल शब्द पर हलुक हँसीक दृश्य आ विधिक कागजमे बढ़ायल एक शब्दक सम्भावित गंभीर परिणाम परस्पर विरुद्ध प्रभावक द्वारा अर्थ-सूत्र रचैत अछि। एकहि पेशागत क्षमता सँ मनोरञ्जक भूल सेहो भऽ सकैत अछि आ अनुचित अभिलेखीय अर्थ-विस्तार सेहो। पितमपुरामे बातीक संयत प्रकाश आ दिल्लीक कठोर धूप अनुवादकक आत्मस्थितिक दू अलग संवेदनात्मक स्तर अछि। मृणाल 'सही मौन'क भेद खोलैत अछि—निजी दुःखक रक्षा, सिद्ध नहि भेल अपराधक सार्वजनिक घोषणा सँ परहेज, आ अपन बचाव लेल तथ्य नुकाएब एक श्रेणीक मौन नहि। ई वर्गीकरण उपन्यासक निकट सम्बन्धसभमे प्रमाण-विवेकक प्रवेश देखबैत अछि।

भारतीय औचित्य-दृष्टिसँ एहि अध्यायमे पात्र, परिस्थिति आ भाषिक कर्मक सामञ्जस्य अछि: राघव विधिक, आदित्य अन्वेषणात्मक, जुलियाना शिक्षात्मक आ मृणाल सम्बन्धात्मक प्रश्न उठबैत छथि। पाश्चात्य आख्यानशास्त्रक दृष्टिसँ दिन-क्रम (भोर–दुपहर–साँझ–अगिला भोर–राति) अनेक संस्थाक बीच कथाकाल जोड़ैत अछि। कथा शशांकक भीतरी भयक निकट दृष्टिबिन्दु राखैत अछि, मुदा ओकर सम्भावित आत्मसमर्थनकेँ अन्य पात्रक प्रश्नसँ जाँचैत अछि। ध्वन्यात्मक स्तरपर 'जतेक अछि, ओतबे' आ 'ककरो नहि' छोट वाक्य विस्तृत आत्म-नियमनक प्रतीक बनैत अछि। नव्य न्यायमे एतय असिद्ध हेतुक सम्भावना स्पष्ट अछि: गोपनीय बैसारमे उपस्थिति मात्रसँ अपराधमे सहभागिताक अनुमान हेतु-अपर्याप्त अछि; अस्पष्ट भुगतान-सन्देश मात्रसँ निश्चित वित्तीय अपराधक निष्कर्ष सेहो अपर्याप्त।

अध्यायक उपलब्धिक संग कलात्मक सीमा सेहो चिन्हित करबाक अछि। जुलियाना, राघव, आदित्य आ मृणाल प्रायः एके प्रमाण-अनुशासन अलग पेशागत भाषामे कहैत छथि; पाठककेँ कखनो पात्रसभ स्वतन्त्र मनोवृत्ति सँ अधिक एक दार्शनिक सूत्रक वाहक बुझा सकैत छथि। अन्तिम भागमे प्रत्यक्ष, अनुमान, मिथ्या आरोप आ भयक सार-विभाजन पहिनुक दृश्यसभकेँ फेर कथित करैत अछि; एहि दोहरावसँ कथा-पाठक लेल प्रवाह मन्द भऽ सकैत अछि। तथापि एहि बेर नैतिक समस्या एकदम विशिष्ट अछि—औपचारिक प्रश्नक बाहर सुनायल गोपनीय वाक्यक अनुवाद। एहन अनिर्णीत क्षण पाठकेँ सरल सिद्धान्त-पाठमे पूर्णतः घटय नहि दैत। उपन्यासक एहि अध्यायक उपलब्धि गोपनीयताकेँ सदिखन नुकेबाक अथवा सदिखन खोलबाक आज्ञामे नहि, बल्कि अनुवादकक सीमित सुनब, सीमित कहब आ अनजान आशय नहि जोड़बाक कठोर साक्षी-स्थितिमे निहित अछि।

## अध्याय २२ — भाषाक साधना ९ : संस्थागत वाक्यक स्रोत, अज्ञात आदेश आ विश्वासघातक अनुभूति

बाइसम अध्याय व्यक्तिक गोपनीयता-संकटसँ संस्था द्वारा शब्दक स्वामित्वक संकट दिस मुड़ैत अछि। आदित्यक मेजपर दू पन्ना—एकमे ‘प्रकरणक प्राथमिकता घटाओल जाए’, दोसरमे भुगतान-श्रृंखला आ विक्रेता-विवरणक अतिरिक्त सत्यापन आवश्यक—एके फाइलक भीतर अलग कार्यदिशा देखबैत अछि। दुनूक हस्ताक्षर, तिथि अथवा औपचारिकता देखबासँ कोन आदेशक कारण उचित छल, से निश्चित नहि होइत। मूल टिप्पणी जाँचक बचेबाक प्रश्न चिन्हैत अछि; नव आदेश ओहि प्रश्नक संस्थागत प्राथमिकता बदलैत अछि। ई भेद उपन्यासक महत्त्वपूर्ण स्थापत्य-परिवर्तन अछि, कारण जाँचमे शब्द केवल घटना वर्णन नहि करैत, जाँचक आगूक सम्भावना सेहो तय करैत अछि। ओहि अर्थमे ‘प्राथमिकता’ कथानकक समयक नियन्ता अछि।

सहकर्मीक ‘ऊपर सँ कहल गेल’ उत्तर कार्यालयी अधिकारक भाषा अछि, मुदा वक्ता आ लिखित स्रोत अस्पष्ट अछि। आदित्य नोटबुकमे तीन अलग स्थिति लिखैत अछि—मौखिक सूचना अस्पष्ट, लिखित आदेश उपलब्ध, आदेशक कारण अनुपलब्ध। ई वर्गीकरण महत्त्वपूर्ण ताहि लेल नहि जे ई एके वारमे संस्थागत हस्तक्षेप सिद्ध करैत अछि, बल्कि ताहि लेल जे ई सिद्धि-क्रमक रिक्त स्थान सुरक्षित रखैत अछि। भारतीय शब्द-प्रमाणक दृष्टिसँ आप्तता अथवा प्रामाणिकता वक्ता आ स्रोतक प्रश्नसँ बचि नहि सकैत; ‘ऊपर’ सन अनिर्दिष्ट पद स्वयं प्रमाणित प्राधिकरण नहि। पाश्चात्य संस्थागत आख्यानक दृष्टिसँ ई सत्ता आ अभिलेखक अन्तर-द्वन्द्व अछि: आदेशक रूप उपस्थित, मुदा ओकर कारणसंबन्धी कथन अनुपस्थित। लेखक प्रशासनक दैनन्दिन लघु-वाक्यकेँ दार्शनिक प्रश्नक रूप दैत छथि।

चीनी मूल ईमेल आ अंग्रेजी सारांश बीचक शर्तभेद एहि अध्यायक अत्यन्त ठोस पाठ-साक्ष्य अछि। मूलमे ‘कानूनी पुष्टि भेटला धरि भुगतान-नामक

उपयोग रोकि राखू' अछि; सारांशमे मात्र 'भुगतान-नामक उपयोग रोकू'क आशय रहि गेल। 'धरि' सन समय-शर्त हटिते निर्णयक काल-सीमा बदलि जाइत अछि: अस्थायी स्थगन स्थायी निषेध बुझा सकैत अछि। ई केवल दू भाषाक शब्दकोशीय अन्तर नहि; काल, विधिक पुष्टि आ आदेशक लागू रहबाक अवधि सम्बन्धी अर्थ-परिवर्तन अछि। एतय अनुवादमे लोप सेहो जोड़ल व्याख्या जेकाँ परिणामकारी बनैत अछि। शशांक ईहो स्पष्ट करैत अछि जे मूल शर्तबद्ध रोक स्वयं तथ्य नुकएबाक निर्देश सिद्ध नहि करैत। अनुवादकक श्रेष्ठता एतय निश्चित अपराध-पहिचानक दाबीमे नहि, शर्तक पुनर्स्थापन आ कारणक अनिश्चितता स्वीकृत करबामे अछि।

सारांश बनौनिहारक नाम नहि भेटब कथा-संरचनामे दोसर रिक्त स्थान अछि। आदित्यक प्रश्नक उत्तरमे केवल 'अनुवाद-सारांश' सन लेबल अछि। एतय सामग्रीक प्रकारक नामक संग निर्माता, रूपान्तरण-प्रक्रिया आ सत्यापन-दर्जा मेल नहि खाइत। शशांक एहन सारांशकेँ मूल शब्द जेकाँ पढ़बाक जोखिम चिन्हैत अछि। मूल-सारांशक एहि सम्बन्धकेँ न्यायक अनुमानमे हेत्वाभासक सम्भावनाक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि: 'फाइलमे अछि' अर्थात् 'मूल कथनक अक्षरशः रूप अछि'—ई व्याप्ति स्थापित नहि। स्रोतक अभावसँ सारांश अनिवार्यतः असत्य नहि, मुदा ओकर स्वतन्त्र विश्वसनीयता एखन जाँचल नहि गेल। एहि सूक्ष्म भेदक कारण समीक्षा स्वयं दस्तावेजमे अधिकार-चिह्न देखिते सत्य घोषित नहि करैत।

कथानकमे फेर हस्ताक्षरहीन पर्ची अबैत अछि—'वरिष्ठ कक्षसँ मौखिक सूचना: फाइल पर आगाँक कार्रवाई स्थगित राखू।' परिचारक संदेश पहुँचा रहल अछि, मुदा स्रोतक नाम स्पष्ट नहि। आदित्य एकरा प्राप्त सूचना मानैत अछि, विधिवत आदेश नहि। ई दृश्यमे कथात्मक उत्तेजना अत्यन्त कम बाहरी क्रियासँ पैदा होइत अछि: एक पर्ची, किछु प्रश्न, आ लिखित आदेशक प्रतीक्षा। एहि संयमक महत्त्व अछि, कारण उपन्यास सहजहि 'ऊपरसँ दबाव'क नाटकीय अनुमान लगा सकैत छल। लेखक ओकरा रोकी संस्थागत अस्पष्टताक वास्तविक बनावट देखबैत छथि। फेरो ई सावधानीक सीमासभ

अछि: पाठमे लिखित प्राथमिकता-परिवर्तन वस्तुत: उपस्थित अछि; ताहि सँ संस्था भीतर प्रक्रियागत परिवर्तनक तथ्य नकारल नहि जा सकैत। मुदा पर्चीक वास्तविक प्रेषक अथवा परिवर्तनक गुप्त उद्देश्य एखन स्थापित नहि। पुरान ईमेल-श्रृंखलामे एक अधिकारी अतिरिक्त सत्यापन जारी रखबाक समर्थन कएने छल। आदित्य ओहि ईमेलकेँ अभिलेखमे रखैत अछि, मुदा तत्क्षण अधिकारीकेँ चरित्रत: ईमानदार कहि नहि दैत। ई छोट विवेक लेखकक व्यक्ति-सम्बन्धी नैतिक निष्कर्षक प्रति सावधानी खोलैत अछि। एक समर्थक टिप्पणी ककरो सम्पूर्ण सत्यनिष्ठाक प्रमाण नहि, जेकाँ एक अस्पष्ट आदेश ककरो अपराधक प्रमाण नहि। शशांकक प्रश्न 'विश्वास केकरा पर?' पर आदित्य 'जाँचल जा सकय एहन अभिलेख' उत्तर दैत अछि। संवादक मूल्य एही विरोधमे अछि जे शशांकक भाषा-शिक्षा विश्वासक सम्बन्ध बिना सम्भव नहि छल, मुदा सरकारी जाँच सम्बन्ध-विश्वासक आधार पर अकेले नहि चलि सकैत। अध्याय भावात्मक विश्वास आ अभिलेखीय सत्यापनकेँ एक-दोसराक शत्रु नहि, अलग प्रयोजनक अभ्यास बनबैत अछि।

मृणाल संग साँझक बातचीतमे 'विश्वासघातक अनुभूति' आ 'दोषक निष्कर्ष' बीच भेद उभरैत अछि। शशांक सोचैत अछि जे कियो पहिने एक आदेश देलक आ फेर मुकरि गेल, तखन की कहल जाए। मृणाल पहिने पहिल कथनक प्रमाण पूछैत अछि—स्मृति, साक्षी, लिखित नोट, सभक स्वरूप अलग। एहि पद्धतिसँ भावना अमान्य नहि होइत; केवल भावनाकेँ दण्डनीय तथ्यक बदला नहि राखल जाइत। मृणालक आलोचनामे नायकक पुरान मानसिक गति पहिचानल जाइत अछि: विश्वासघात अनुभव करिते ओ दोषी पहिचानबाक उतावलीमे पड़ि जाइत अछि। पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक दृष्टिसँ एतय आन्तरिक दृष्टिबिन्दुक सम्भावित अविश्वसनीयता पर बाहरी संवाद-समीक्षा अछि; शशांक अपना अनुभूतिक व्याख्या करैत अछि, मित्र ओकर प्रमाण-पद्धति पर प्रश्न उठबैत अछि।

वरिष्ठ अधिकारीक बैठक एहि जोखिमकेँ आरो जटिल बनबैत अछि। अधिकारी प्रशासनिक कारणसँ प्राथमिकता बदलि सकबाक सामान्य तथ्य

कहैत छथि, व्यक्तिगत मौखिक निर्देश देब अस्वीकार करैत छथि, आ अस्पष्ट पर्चीक स्रोत सत्यापित करबाक बात मानैत छथि। ई कथन अधिकारीक निर्दोषता प्रमाणित नहि करैत; उलटा, उहाँक अस्वीकार अपनहि अपराध-सिद्धि सेहो नहि। आदित्य शशांककेँ दुनू निष्कर्षसँ रोकैत अछि। कर्मचारी फोनपर कहल बात पहुँचेबाक स्वीकार करैत अछि, मुदा विस्तार-संख्या याद नहि आ कोनो अभिलेख नहि। अन्तिम पाँति 'पर्चीक स्रोत एखन असत्यापित' अनुसन्धानक वास्तविक वर्तमान सीमा अछि। संभावित षडयंत्रक रोचकता पर असत्यापित कहबाक संयम लेखकक समीक्षात्मक ईमानदारीक साहित्यिक रूप अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक दृष्टिसँ एहि अध्यायमे दिल्लीक प्रशासनिक कक्ष, भाषिक अनुवादकक कार्य-पटल, मित्रक चाह-दोकान आ पितमपुराक मन्दिर समान दिनक्रममे उपस्थित अछि। ई स्थानसभ एक कारण-श्रृंखला नहि बनबैत; किन्तु प्रत्येक ठाम शब्दक उत्तरदायी स्रोतक प्रश्न अलग रूपमे उठैत अछि। कार्यालयक 'ऊपर' सत्ता-चिह्न अछि; मित्रक 'कियो सुनने हो' साक्षी-सम्बन्धी प्रश्न; जुलियानाक 'शब्दक पाछू पदचिह्न खोजू' भाषा-स्मृतिक शिक्षात्मक निर्देश। एहि समानान्तरतासँ शशांकक पुरान चयनित मौन आ संस्थागत अस्पष्टताक बीच रूपकात्मक सम्बन्ध बनैत अछि, मुदा मनोवैज्ञानिक साम्यकेँ ऐतिहासिक अथवा आपराधिक संलिप्तताक प्रमाण मानल नहि गेल। इएह एहि पद्धतिक अनिवार्य मर्यादा अछि।

नव्य न्यायक सम्बन्ध-परिभाषा एहि अध्यायमे मुख्यतः शर्त, वक्ता आ स्रोतक चिन्हांकनमे लागू होइत अछि। मूल ईमेलक शर्त हटिते नियमक लागू-काल बदलैत अछि; पर्चीक 'वरिष्ठ कक्ष' स्रोतक पहचानक स्थानापन्न नहि; अधिकारीक अस्वीकार एक कथन अछि, सर्वसम्बद्ध तथ्यक अन्तिम परिणाम नहि। रस-दृष्टिसँ आदित्यक दबायल बेचैनी, शशांकक असुविधा आ मृणालक कठोर आत्मीयता मिश्रित मनोदशा रचैत अछि। कथामे व्यंग्यक हलुक स्रोत सेहो अछि—जे अनुवादक भाषा पर आत्मविश्वासक कारण प्रतिष्ठा चाहैत छल, ओ आब 'स्रोत असत्यापित'क अनाकर्षक वाक्यकेँ नैतिक रूपेँ सर्वाधिक

आवश्यक बुझैत अछि। भाषा चमकदार निष्कर्ष सँ धीमे-धीमे जाँचनीय विवरण दिस सरकैत अछि।

एहि अध्यायक सीमा ओहि कड़ाइमे छिपल अछि जे ओकर शक्ति सेहो अछि। आदित्य, मृणाल आ जुलियाना फेर-फेर एके सिद्धान्तक अर्थान्तर प्रस्तुत करैत छथि। कथानकमे मौखिक पर्ची आ अज्ञात सारांशक रहस्य ठोस अछि, मुदा तकर नैतिक विवेचन कतिपय ठाम स्वतन्त्र पात्र-क्रियाकेँ ओझर करैत अछि। अन्तिम सूचीमे 'मौखिक निर्देशक अस्तित्व आ वैधता एक नहि', 'अज्ञात लेखकक सारांश मूल पाठ नहि' आदि वाक्य पाठककेँ स्मरण-शिक्षा दैत अछि, मुदा दृश्यक अनिश्चित ऊर्जाकेँ थोड़े संयत करैत अछि। तथापि शर्तबद्ध चीनी मूल आ शर्तहीन अंग्रेजी सारांशक सटीक अन्तर अध्यायकेँ सामान्य नैतिक प्रवचनसँ बचा लैत अछि। एकर मूल उपलब्धि कथामे 'कहल गेल'क स्रोत खोजबाक कर्तव्यकेँ राजनीतिक-अभिलेखीय जिम्मेदारीक प्रश्न बनायब अछि।

## अध्याय २३ — भाषाक साधना १० : समाचारक निर्मित सम्बन्ध, अपमानक ताप आ आत्मरक्षाक प्रमाण-सीमा

तेइसम अध्यायमे भाषाक प्रश्न न्यायालय वा कार्यालयक सीमित कक्षसँ निकलि सार्वजनिक छविक जगतमे प्रवेश करैत अछि। भोरमे शशांकक फोनपर आयल तीन सन्देश—मृणालक सावधानी, सहपाठीक सत्यापनक प्रश्न आ चीनी परिचितक नाम-संबन्धी चिन्ता—समाचारक प्रभावकेँ पहिने सम्बन्धसभमे दर्ज करैत अछि। तकर बाद डिजिटल समाचारक शीर्षक ‘मुहरबन्द अभिलेखमे चीनी नेटवर्कक अनुवादक मुख्य कड़ी?’ आ लाल किलाक पुरान छवि पाठककेँ एक गढ़ल सम्बन्ध देखबैत अछि: जे फोटो पहिने भाषा-जीविकाक सहज स्मृति छल, ओ आब आरोपक दृश्य-परिचय बनल अछि। एहि रूपान्तरणक कारण उपन्यास भाषिक उत्तरदायित्वक संग दृश्य-प्रसारण आ माध्यमक सम्पादकीय शक्तिक प्रश्न सेहो उठबैत अछि। शीर्षकक प्रश्नवाचक चिह्न निष्कर्षक प्रमाण नहि, मुदा पढ़निहारक मनमे सन्देहक ठोस रूप बना सकैत अछि।

समाचार तीन वास्तविक-सदृश इकाईक सहअवस्थान पर आधारित अछि—मकाऊ यात्रा, सीमित सर्वर-प्रवेश आ ‘पुरान भुगतान-नाम’। मूल कथामे शशांकक मकाऊ यात्रा आ सीमित प्रदर्शन-प्रवेश प्रमाणित घटनाक रूपमे प्रस्तुत अछि; भुगतान-नामक वाक्यक अनुवाद गोपनीय बैसारक सन्दर्भमे भेल छल। किन्तु एही तीन तथ्यसँ ‘धन-श्रृंखलाक संचालन’ अथवा ‘जाँचक दिशा बदलय लेल भाषाक उपयोग’ सिद्ध नहि। समाचारमाध्यमक मुख्य विकृति तथ्यसभक सभकऽ गढ़ब नहि, तथ्यसभक बीच असिद्ध कारण-संबन्ध जोड़ब अछि। नव्य न्यायमे हेतुक पर्याप्तता जाँचब एतय अनिवार्य अछि: यात्राक घटना आ वित्तीय नियन्त्रणक बीच आवश्यक व्याप्ति प्रस्तुत नहि; सीमित पटल देखब आ धन-श्रृंखला चलाएब एक वस्तु नहि। एहि अवस्थामे स्रोतक ‘मुहरबन्द सामग्री सँ परिचित सूत्र’ सन अनिर्दिष्ट कथन आरोपक

प्रामाणिकता बढ़ेबाक भाषिक तरकीब भऽ सकैत अछि, मुदा तकर वास्तविक स्रोत एखन जाँचक विषय अछि।

शशांकक पहिल प्रतिक्रिया अपमानक तापमे 'सभ आरोप मिथ्या' लिखबाक अछि। मृणाल प्रश्न करैत अछि—'सभ?'—आ मकाऊ यात्रा, सर्वर-प्रदर्शन, भुगतान-नामक अनुवाद एक-एक कऽ पूछैत अछि। एहि संवादमे मित्र नायकक सार्वजनिक बचावकेँ अधिक कमजोर नहि, अधिक सटीक बनबैत अछि। शशांकक पहिल मसौदा समाचारक अतिशयोक्तिक प्रतिरोध करबाक संग अपन सत्य इतिहास सेहो मेटा देने रहितै। तखन बचाव आ समाचार, दुनू एकरूप रंग-लेपनक अभ्यास भऽ जाइत। दोसर मसौदामे नायक स्वीकार करैत अछि जे यात्रा आ सीमित प्रवेश तथ्य अछि; मुदा ताहिसँ संचालन वा जाँच-प्रभाव सिद्ध नहि। मुहरबन्द सामग्रीक विषय पर सार्वजनिक टिप्पणी नहि करबाक निर्णय ओकरा तथ्य नुकेबाक छूट नहि, उपलब्ध अधिकारक सीमा मानबाक अभ्यास अछि। एहि दृश्यसँ अपमानित व्यक्तिक नैतिक स्वतंत्रता सामने अबैत अछि: कियो अपन ऊपर लागल असिद्ध आरोपक प्रतिवाद करैत अपने असुविधाजनक तथ्यकेँ अस्वीकार नहि करय।

आदित्यक कार्यालयक समानान्तर दृश्य समाचारक सम्पादकीय सम्बन्ध-निर्माणकेँ अभिलेखीय परीक्षणमे बदलैत अछि। सहकर्मी 'साफ रिसाव'क निष्कर्ष दैत अछि, कारण लेखमे मुहरबन्द सामग्रीक उल्लेख अछि। आदित्य तुरन्त पूछैत अछि—उल्लेख मात्रसँ लेखकक प्रत्यक्ष अभिगम केना सिद्ध होयत? ओ मुहरबन्द लिफाफाक अभिगम-पञ्जी मँगबैत अछि; बाहरी मुहर अक्षुण्ण अछि, मुदा मुहर लगबाक पूर्व सामग्री देखनिहार व्यक्ति रहि सकैत छथि। लेखक एहि बिन्दुपर आसान विपरीत निष्कर्ष सेहो नहि चुनैत छथि: मुहर अक्षुण्ण रहलासँ कोनो सूचना बाहर नहि गेल, ई कथन अधिक होयत। उपलब्ध सूचना मुहरबन्द लिफाफाक भौतिक अवस्था बतबैत अछि; ककर स्मृति, सारांश वा पूर्व सम्पर्कसँ शब्द बाहर आयल, से अलग प्रश्न अछि। ई अभिलेखीय सीमाबोध कथाक रहस्यकेँ चालू रखैत अछि।

आदित्य समाचारक पाँच दावाक पृथक लेखा तैयार करैत अछि। पहिल दू दावाक अभिलेखीय आधार अछि; धन-श्रृंखला सञ्चालन आ जाँचक दिशा बदलबाक दावाक पर्याप्त समर्थन नहि; मुहरबन्द सामग्रीसँ खबरक स्रोत होयब एखन असत्यापित। मूलक एहि वर्गीकरणमे साहित्यिक मूल्य अछि, कारण समाचारक प्रभाव प्रायः कुल प्रभावक रूपमे पड़ैत अछि—एक सत्य देखाकऽ अनेक अनुमान विश्वसनीय बना देब। आदित्य कुल प्रभावकेँ भाँगि प्रत्येक वाक्यक स्रोत आ निष्कर्ष जाँचैत अछि। पाश्चात्य आख्यान-विमर्शमे ई कथाकारक कथित अधिकारक विरुद्ध प्रतिवृत्तान्त (काउण्टर-नैरेटिव) बनैत अछि; तथापि समीक्षाकेँ ईहो देखबाक अछि जे आदित्य स्वयं कथानकक पात्र छथि, स्वतन्त्र बाह्य न्यायिक प्रमाण नहि। उपन्यासक विश्वमे हुनकर सावधानी विवेचनाक साधन अछि; वास्तविक संसारक कोनो अज्ञात संस्थाक निष्कर्ष एकर आधार पर निकालब अनुचित होयत।

लाल किला एहि अध्यायक सर्वोत्तम आवर्ती प्रतीक अछि। शशांकक आरम्भिक पेशागत आत्मविश्वास ओहि स्थलपर चीनी पर्यटकसँ संवादक कारण बनल छल। आब ओहि छविक समाचार-प्रयोग ओकर पुरान जीविकास्थलपर सेहो प्रश्न उठबैत अछि। पुरान परिचित ओकरा किछु दिन ओतय नहि जाएबाक सल्लाह दैत अछि। भारतीय विद्या भवनक वृद्ध शिक्षक ‘समाचार नहि, मूल वाक्य पढ़ू’ लिखैत छथि—ई छोट सन्देश भाषा-शिक्षाक स्मृतिकेँ संकटमे अनैत अछि। एहि प्रकार उपन्यास अतीतक सफलताक स्मृतिकेँ एकदम उलटा जनसंपर्कीय चिह्नमे बदलैत अछि। वस्तुक पुनर्प्रयोग लेखकक कथासूत्र मजबूत करैत अछि: एके फोटो संदर्भ बदलिते अर्थक बृहत् आरोपण झेलैत अछि, ठीक ओही प्रकार जे मूल कथन अनुवाद आ सारांशमे संदर्भ हटिते रूप बदलैत अछि।

पितमपुराक जुलियाना पूरा लेख नहि पढ़ैत छलीह; शीर्षक आ आरम्भिक अनुच्छेद पढ़ि शशांकसँ पूछैत छथि जे ओ की चाहैत अछि। नायक चाहैत अछि जे ‘सभ लोक’ एकहि बेर बुझि जाए जे आरोप सिद्ध नहि। गुरु एहन एकसमान जनमतक असम्भव अपेक्षाकेँ देखबैत छथि। ओ अपमानक समय दू विपरीत त्रुटि बतबैत छथि—सभ किछु नुका देब आ सभ किछु कहि देब। ई द्वन्द्व ध्वनि-दृष्टिसँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि: पात्रक भीतर सार्वजनिक नाम

निर्मल करबाक लालसा एखनहुँ उपस्थित अछि, मुदा ओ अपने भाषा-व्यवहार पर संयम लागू करबाक प्रयत्न करैत अछि। नाम साफ करब आ वाक्य सही रखब अलग लक्ष्य अछि। जुलियानाक बातक भाव ई नहि जे प्रतिष्ठा महत्वहीन, बल्कि जे प्रतिष्ठाक तात्कालिक पुनरुद्धारक लोभ ज्ञानक सीमा मेटा नहि दियय।

मृणालक रात्रिक भेटमे चाहक दू कप आ छोट प्रश्न 'पूरा?' अध्यायक आत्मीयताक केन्द्र बनैत अछि। शशांक कहैत अछि जे जतेक ज्ञात अछि, से कहत, जे नहि ज्ञात, ओ नहि। एतय मित्रता चरित्रकेँ अनैतिक आरोपसँ बचाएबाक अन्ध समर्थन नहि; अपन कथनक मापक एके राखबाक सहायता अछि। जनमाध्यममे शशांककेँ एकसंग परस्पर विरुद्ध नाम देल जाइत अछि —देशद्रोही, निर्दोष विद्वान, सरकारी बलि-पशु आदि। एहि अत्यन्त तीव्र विपरीत लेबलसभसँ शशांकक सार्वजनिक प्रतिरूप अनिश्चित होइत अछि। कथाकार पात्रक भीतर अपमानक तीव्रता कम नहि करैत छथि; फोन उलटि राखबाक क्रिया भावनात्मक नियन्त्रणक अल्प किन्तु प्रभावशाली दृश्य अछि। नायकक शान्ति पूर्ण नहि; ओ लोकमतक न्यायपर निर्भर रहबाक अभ्यस्त मानवीय इच्छा सँ लड़ैत अछि।

अन्तिम स्रोत-परीक्षणमे समाचारक एक वाक्यांश पूर्व अनुवाद-सारांशसँ मिलैत अछि, किन्तु मुहरबन्द नोटमे ओहिना नहि। ई अन्तर साधारण 'रिसाव भेल'क कथा कमजोर करैत अछि। सम्भव स्रोतसभ—सारांश, बैसारक सहभागी, पूर्व-अभिलेख, मिश्रित सूचना—खुलल रहैत अछि; कोनो एक विकल्पक सिद्धि नहि। आदित्य स्रोतक शब्द-साम्यकेँ स्रोत-परिचायक आवश्यक-संबन्ध नहि मानैत अछि। इतिहासक समानान्तर पद्धतिक दृष्टिसँ एतय समयानुसार अनेक अभिलेखीय मार्ग संभव अछि; केवल शब्द-साम्यता वा सहकालिकता सँ निश्चित कारण-श्रृंखला बनब अनुचित। न्यायिक कसौटी आ ऐतिहासिक अध्ययनक एहि अभिन्न सावधानीकेँ लेखक मीडिया-रहस्यक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि।

रस-विचारमे अपमानसँ जनित करुण संवेदना आ अन्याय-बोधक क्षोभ साथ चलैत अछि, मुदा शान्त आ विवेकी संवाद ओहि क्षोभक निरपेक्ष विधिक निष्कर्ष बनबा नहि दैत। व्यंग्यक स्तर ई जे समाचारक 'प्रश्न' पाठकक मनमे निर्णायक दोषचित्र गढ़ैत अछि, जखन अभिलेखक स्पष्ट 'समर्थित नहि' वाक्य समाचार-जगतमे कम आकर्षक अछि। शिल्पक सीमा एतय सेहो अछि: स्रोत-अन्वेषणक लम्बा वर्गीकरण कथागत तात्कालिकता धीमी करैत अछि; अन्तिम प्रत्यक्ष-अनुमान-मिथ्या आरोप विभाजन फेर स्वतंत्र सूची बनेबाक कारण गद्यक स्वर समीक्षात्मक अधिक, नाटकीय कम बनैत अछि। तथापि छवि, शिक्षकक सन्देश, मृणालक 'सभ?' प्रश्न आ सार्वजनिक बचावक दोसर मसौदा दृश्यक मौलिकता बनाए रखैत अछि। एहि अध्यायक उपलब्धि मिथ्या समाचारक कारण नायककेँ स्वतः निर्दोष प्रतीक नहि बनायब अछि; ओकर वास्तविक सीमाभंग आ ओकर ऊपर थोपाल अप्रमाणित महादोष दुनूक समान कसौटीसँ परीक्षा करब अछि।

## अध्याय २४ — भाषाक साधना ११ : शपथक साम्हिन कर्ताक जोड़, अतिशयोक्ति आ प्रायश्चितक आलोचनात्मक अर्थ

चौबीसम अध्याय न्यायालयक ओहि सुनवाईकेँ केन्द्रमे अनैत अछि जकर विषय अन्तिम दोषनिर्णय नहि, मुहरबन्द सामग्री, अनुवाद-सारांश आ इलेक्ट्रॉनिक अभिलेखक उपयोगक सीमा अछि। ई सीमांकन महत्त्वपूर्ण अछि: न्यायालयक मंच देखिते कथानकक सभ आरोप सिद्ध-असिद्ध भेल मानि लेब रचनाक अपन निर्देशविरुद्ध होयत। शशांककेँ पहिल बेर अपन व्यावहारिक भाषाक वाक्यसभ शपथक अधीन प्रश्नक विषय बनेबाक अछि। मृणालक भोरक चाह आ ‘कोन वाक्य कखन कहलहुँ’क चेतावनी एके जीवनक निजी स्नेह आ सार्वजनिक उत्तरदायित्व जोड़ैत अछि। गलियाराक ठंढ आ बाहरक समाचार-मण्डलीक बेचैनी बीच न्यायिक कक्ष शब्दक अनिश्चित विस्तार रोकबाक सम्भावित स्थल बनैत अछि।

न्यायालयमे मूल चीनी ध्वनि, ओकर लिखित रूप, शशांकक अस्थायी अनुवाद आ बादमे बनल आधिकारिक सारांश—चारि अलग पाठ-स्तर चिन्हित होइत अछि। ई चारूकेँ ‘एके घटना’क भिन्न अभिव्यक्ति कहब पर्याप्त नहि, कारण मानवीय व्याख्या कखन प्रवेश कएलक से जाँचबाक अछि। ई भेद भाषाविज्ञानक पाठान्तर-विचारमे मूल, लिप्यन्तरण, भाषान्तरण आ सम्पादकीय सारक भिन्न उत्तरदायित्व स्वीकार करैत अछि। जँ चारि रूपकेँ बिना चिह्न एके प्रमाण मानि लेल जाए, तखन अन्तिम अनुवादमे जोड़ल शब्द मूल वक्ताक मुखमे राखल जा सकैत अछि। एतय न्यायिक मंच कथाक भाषिक नीतिक चरम परीक्षा अछि। लेखक कल्पित न्यायिक प्रक्रियाकेँ कथारूपमे प्रस्तुत करैत छथि; समीक्षाक निष्कर्ष उपन्यासक आन्तरिक संरचना धरि सीमित अछि, कोनो बाह्य न्यायालयक विधिवत निर्णयक स्थानपर नहि।

शशांक अपन प्रशिक्षणक परिचय दैत अछि—भारतीय विद्या भवन, लाल किलाक पर्यटक, जुलियानाक उच्चारण आ सांस्कृतिक शिक्षा। न्यायालयक प्रमाणित अनुवादक नहि होयबाक तथ्य स्वीकार करैत अछि आ ईहो कहैत

अछि जे सभ अस्थायी अनुवाद बादमे आधिकारिक सत्यापनसँ नहि गुजरल। एहि छोट 'नहि'मे चरित्रक सघन रूपान्तरण अछि: विशेष कौशलक गौरव नकारल नहि, मुदा ओकर संस्थागत प्रमाणिकता सीमित रखल गेल। प्रश्नक प्रत्यक्ष उत्तर देबाक स्थानपर आरम्भे निकसल 'जी'कँ 'हँ' सँ सुधारबाक सूक्ष्म क्षण भाषा-अभ्यासक देहगत स्मृति देखबैत अछि। ई क्षण उपन्यासक शुद्ध मैथिली आग्रहक भीतर पात्रक स्वाभाविक संक्रमण सेहो कहि सकैत छी। तथापि पात्रक मूल 'जी' ओकर संवादक प्रमाणित अंश अछि; सम्पादकीय भाषानिखारक नामपर ओकरा नुका देब कथा-चरित्रक आन्तरिक कम्पन मेटा देत।

सबसे महत्त्वपूर्ण प्रतिपरीक्षामे 'पुरान भुगतान-नाम फेर नहि उपयोग करू'क अनुवाद प्रस्तुत होइत अछि। शशांक स्वीकार करैत अछि जे मूल चीनी वाक्यमे कर्ता स्पष्ट नहि छल आ 'करू' सन निर्देशात्मक जोड़ ओ अपन प्रसंग-बोधसँ कएने छल। मूल अर्थक निकट रूपमे कर्ताक अनुपस्थिति महत्त्वपूर्ण अछि। एहि जोड़सँ वाक्यक क्रियान्वयनकारी व्यक्ति उपस्थित भऽ सकैत अछि जकर नाम मूल पाठमे नहि। शशांक ईहो स्वीकार करैत अछि जे प्रारम्भिक लिखित अनुवादमे एहि अस्पष्टताकँ चिह्नित नहि कएने छल। आरोप-प्रतिवादक बीच ई स्वीकारोक्ति आत्म-दोषारोपणक अनियन्त्रित प्रवाह नहि; एक विशिष्ट भाषिक हस्तक्षेपक स्पष्ट पहिचान अछि। नव्य न्यायक भाषामे विशेष्यक अनुपस्थित अवस्थामे अनिश्चित सम्बन्धकँ निश्चित कर्तासम्बन्ध बनायब प्रमाणातिरिक्त अछि। कथानक एहि सूक्ष्म व्याकरणिक अंतरकँ नायकक नैतिक जीवनक मोड़ बनबैत अछि।

एहि प्रसंगमे 'हमरा लगल'क प्रयोग महत्वपूर्ण अछि। अनुभूत प्रसंग अर्थ चुनबाक अनुमान देत, मुदा अनुमानकँ मूल वाक्यक अनिवार्य अर्थ बनाकऽ अभिलेखमे छोड़ब पर आलोचनात्मक प्रश्न उठैत अछि। शशांकक उत्तर—अपन प्रसंग-बोध पर आवश्यकता सँ अधिक विश्वास—ओहि मानसिक व्याधि पर चोट अछि जकर बीज पहिल मकाऊ प्रवेश आ दिल्लीक पेशागत गर्वमे उपस्थित छल। ओकरा उचित कारणक भाँति समयाभाव अथवा शीघ्रताक आड़ लेबाक अवसर छल, मुदा ओ शब्दक अनिर्दिष्ट जोड़कँ त्रुटि कहैत अछि। एतय प्रायश्चित धार्मिक अनुष्ठान नहि; गलत कार्यक उपयुक्त

संज्ञा अपन अभिलेखमे स्वीकार करबाक बौद्धिक कर्म अछि। ओ दावा नहि करैत जे एहि त्रुटिसँ स्वतः व्यापक अपराध घटल; त्रुटिक स्वरूप सीमित, मुदा निर्विवाद अछि।

प्रतिपरीक्षामे मकाऊक सीमित सर्वर-प्रवेश आ अतिरिक्त मेन्यू खोलबाक प्रयास फेर सामने अबैत अछि। शशांक काजक आधिकारिक सीमा आ बिना अनुमति अधिक मेन्यू देखबाक तथ्य स्वीकार करैत अछि। किछु तकनीकी नाम आ सूची देखब पूर्ण स्वामित्व अथवा अपराध-संरचना बुझबाक प्रमाण नहि। मृणाल समक्ष कखनो 'भीतरक संरचना बुझि गेलहुँ' कहल गर्वोक्ति कैं ओ प्रमाणसँ अधिक व्यापक कथन कहैत अछि। प्रतिपरीक्षक 'मिथ्या?' पूछैत अछि; शशांक पूर्ण मिथ्यात्व आ अतिशयोक्तिक भेद स्पष्ट करैत अछि। ई भेद आत्मरक्षाक चालो भऽ सकैत छल; मुदा ओकर सान्दर्भिकता ठोस तथ्यसँ जाँचल जा सकैत अछि—किछु संरचना देखल गेल, सम्पूर्ण संरचना नहि। पात्र तैं अपन पूर्व वाक्यक प्रभाव कम करैत कालहिँ ओकरा उत्पन्न करबाक उत्तरदायित्व स्वीकार करैत अछि।

न्यायाधीशक प्रश्न कथनकैं तीन श्रेणीमे राखैत अछि—मिथ्या, अतिशयोक्ति आ सिद्ध तथ्य। एहि श्रेणीकरणक पाछू मनुष्यक भाषिक दोष मात्र झूठ बाजब नहि होइत; सही सूचना पर गलत पैमाना रखब सेहो नुकसानकारक होय सकैत अछि। एतय भारतीय वक्रोक्ति-सिद्धान्तक एक नैतिक रूप देखल जा सकैत अछि: अलंकारिक अथवा संदर्भात्मक विस्तार कलात्मक भाषामे अर्थ-सौन्दर्यक साधन होय सकैत अछि, मुदा औपचारिक अभिलेखमे ओहे विस्तार स्पष्टीकरण बिना छोड़ल जाए तऽ प्रमाण-अर्थ बदलि सकैत अछि। एहि तुलना सँ काव्यभाषा आ न्यायिक भाषाक प्रयोजनभेद बुझाइत अछि; लेखक काव्यमूल्यक निन्दा नहि करैत, प्रसंगानुसार औचित्यक कसौटी बदलैत छथि। कोर्टक वाक्य आ पर्यटकक सहज बातचीत एकहिना अनुवादनीय पदार्थ नहि। आदित्यक साक्ष्यमे मुहरबन्द सामग्रीमे शशांकक नाम अनुवादकक भूमिकासँ जुड़ल भेटैत अछि, मुदा 'मुख्य संचालक'क सिद्ध निष्कर्ष उपलब्ध नहि। ओ समाचारक सब आधारभूत तथ्यक सम्पूर्ण निषेध सेहो नहि करैत: यात्रा,

सीमित प्रवेश, अनुवाद आ चयनित मौन अलग-अलग अभिलेखमे अछि। शशांककेँ एहि उत्तरसँ चोट लगैत अछि, कारण आदित्य न ओकरा बचा रहल अछि, न दोषी बना रहल अछि। ई कथात्मक दृष्टिसँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दृश्यक मौन अछि। पहिने नायक मित्रता, प्रतिष्ठा अथवा प्रतिभाक माध्यमसँ कथनक वजन बढ़ाएब चाहैत छल; एतय ओ उत्तरक वजन बाहरी जाँचनीय स्रोत पर छोड़बाक अभ्यास सीखैत अछि। आदित्य 'व्यक्ति प्रतिभाशाली भऽ सकैत अछि, मुदा प्रतिभा प्रमाण नहि'क भेद उपस्थित करैत अछि। एहि विधानक कारण उपन्यासमे विद्वत्ताक परिभाषा आलोचनात्मक पुनर्निर्धारित होइत अछि।

राघवक पुनःप्रश्नमे सहज बचावक सम्भावना रहैत अछि: प्रसंग-आधारित अनुवाद सामान्य पद्धति अछि, तैं त्रुटि नहि भेल कहि सकल जाएत। मुदा शशांक स्वीकार करैत अछि जे जाँचक आधार बनि सकय एहन लिखित वाक्यमे कर्ताक जोड़ स्पष्ट चिन्हित करब चाही छल। एहि प्रसंगमे राघवक भूमिका साधारण नायक-रक्षक नहि; अदालतमे प्रश्नक माध्यमसँ सही श्रेणी स्पष्ट करबाक अवसर अछि। शशांक अपन पूर्व अनुवादक आलोचना करैत अछि, किन्तु दबावक कारण नहि—पछिला अभिलेख पढ़लाक बाद। ई समय-संबन्धी भेद सार्थक अछि: ज्ञानमे परिवर्तन तखन विश्वसनीय बनैत अछि जखन व्यक्ति परिवर्तनक स्रोत आ कारण बताबय सकैत अछि। अध्यायमे आत्म-संशोधन एके बेरक भावोच्छ्वास नहि, दस्तावेज देखबाक बाद पुनर्निर्णयक प्रक्रिया अछि।

मध्यावकाशक बाद न्यायालय मुहरबन्द सामग्रीक उपयोगक प्रश्नपर आदेश सुरक्षित रखैत अछि; कोनो अन्तिम अपराध-सिद्धि नहि। बाहिर समाचारक प्रश्न नायककेँ उकसाबैत अछि, मुदा ओ गलियारामे अपन पक्षक सम्पूर्ण कथा फेर लिखय नहि ठहरैत। शपथबद्ध अभिलेखक उत्तर आ गलियाराक तत्क्षण घोषणा अलग वाचिक क्षेत्र अछि। पितमपुराक जुलियानाक 'आ प्रायश्चित?' प्रश्नक उत्तरमे शशांक अपन जोड़ पर अपन नाम लिखबाक बात कहैत अछि। ई नायकक व्यक्तित्वक सान्द्र सूत्र अछि: उत्तरदायित्व अपन हस्तक्षेपक

लेखकीय स्वामित्व स्वीकार करब अछि, मूल वक्ताक शब्दक स्वामित्व हथिएब नहि। नोटबुकक तीन रेखा—मूल, अनुवाद, व्याख्या—आरम्भक तीन पोथीक संग चौठ 'जिम्मेदारीक पोथी'क रूपक जोड़ैत अछि। पहिनुक अध्यायसभक शैक्षिक रूपक एतय निर्णयात्मक रूप लैत अछि।

एहि अध्यायक प्रमुख कलात्मक उपलब्धि विशिष्ट क्रियाकरणक शब्द 'करू' पर सम्पूर्ण प्रतिपरीक्षा केन्द्रित करब अछि। नाम-स्वामित्व, अस्थायी अनुवाद आ अतिशयोक्ति सम्बन्धी विवाद एके ठोस व्याकरणिक उदाहरणसँ स्पष्ट होइत अछि। रस-विचारमे लज्जा, भय आ शान्त विवेकक बीच तना-तनी अछि; पात्रक छाती ढीला पड़बाक सूक्ष्म देहगत संकेत प्रायश्चितक भाव बिना अतिनाटचक प्रकट करैत अछि। सीमा सेहो अछि: न्यायाधीश, अधिवक्ता आ अन्वेषकक प्रश्न-संरचना अत्यन्त सुव्यवस्थित शिक्षण-परिसंवाद सन बनि जाइत अछि; वास्तविक जिरहक अव्यवस्था आ स्वार्थक संघर्ष कथासंसारमे अपेक्षाकृत कम अछि। मुदा सीमित सुनवाईकेँ अन्तिम निर्णय नहि बनायब, त्रुटि आ अपराधक आशय अलग राखब, तथा शशांकक प्रतिष्ठा-बचावक अवसरपर सेहो आत्मस्वीकृति देखायब एहि अध्यायकेँ रचनात्मक गहनता प्रदान करैत अछि।

## अध्याय २५ — भाषाक साधना १२ : जब्त डिजिटल पाठ, हित-संघर्ष आ आवश्यक बनबाक इच्छाक आत्मपरीक्षण

पचीसम अध्याय अदालतक प्रतिपरीक्षाक अगले भोर आयल पूरक समनसँ आरम्भ होइत अछि। पछिला अध्यायमे त्रुटि स्वीकार कएलाक बाद नायकक भीतर शान्ति आ भय रहल, मुदा एतय समनक समाचार ओकरा असमंजसपूर्ण प्रसन्नताक झलक दैत अछि: जाँचक लोक फेर ओकर भाषिक सहायता चाहैत अछि। ई परिवर्तन सघन मनोवैज्ञानिक यथार्थ अछि। शशांककेँ पहिने आरोपसँ अधिक प्रतिष्ठाक क्षतिक भय छल; आब संस्थागत उपयोगिताक सम्भावना ओकर मान्यता-लालसा फेर जगबैत अछि। मृणालक प्रश्न —‘अहाँक आवश्यकता अछि, वा अहाँ आवश्यक बनल रहबाक इच्छा करैत छी?’—एहि अध्यायक वास्तविक भीतरी संघर्ष खोइज दैत अछि। काजक वस्तुगत आवश्यकता आ स्वयंकेँ अपरिहार्य मानल जाएबाक व्यक्तिनिष्ठ आकांक्षा एक नहि। लेखक नायककेँ नैतिक शिक्षाक बाद इच्छाहीन सन्त बनाकऽ नहि प्रस्तुत करैत छथि; पुरान अभिमान बदलल रूपमे पुनः उपस्थित अछि।

आदित्य मिश्रक कार्यालयक तीन लिफाफा कथाक दस्तावेजीय स्थापत्य रचैत अछि: जब्ती-पंचनामाक प्रति, डिजिटल प्रतिलिपिक सत्यापन-सूची, आ अनुवाद लेल चयनित अंश। आरम्भे आदित्य स्पष्ट करैत अछि जे शशांक अनुवादक आ घटनासम्बन्धी कथनकर्ता—दुनू भूमिका एकहि अभिलेखमे नहि निभाओत। ई विभाजन व्यक्तिक अपमान नहि, स्रोतक स्वरूप अलग राखबाक आवश्यकता अछि। जखन शशांक जब्त यन्त्रक सूची अथवा यात्रा-विषयक प्रश्न पर अपन पूर्व अनुभव कहत, ओ साक्षी-कथनक विषय होयत; जखन चीनी वाक्यक अर्थ कहत, ओ भाषिक सहायताक विषय होयत। दुनू आवाज एके कंठसँ आयल होइतहुँ प्रमाणिक स्थान अलग अछि। नव्य न्यायक सम्बन्ध-विचारमे एतय वक्ताक पद-सीमा निर्दिष्ट होइत अछि: एक व्यक्तिक ज्ञानक प्रसंग बदलिते ओहि ज्ञानक वैध उपयोगक शर्त बदलैत अछि।

जब्ती-पंचनामामे फोन, लैपटॉप, बाहरी भण्डारण-माध्यम आ कागजी अभिलेखक पृथक क्रमाङ्क, मुहर आ समय लिखल अछि। आदित्य नायककेँ सभ मूल सामग्री नहि, सत्यापन-क्रमाङ्कयुक्त चयनित प्रतिलिपि मात्र देखबैत अछि। शशांककेँ मकाऊक सीमित सर्वर-प्रवेश स्मरण अबैत अछि, जतय ओ अधिक मेन्यू खोलबाक प्रयास कएने छल। पूर्व दृश्य आ वर्तमान सीमा एक-दोसराक आलोचनात्मक प्रतिरूप अछि। पहिने अपारदर्शी पटल ओकरा भीतरक रहस्य जानबाक लोभ दैत छल; आब चयनित प्रतिलिपिक खुलल सीमा ओकरा कहैत अछि जे सम्पूर्णता पर अधिकारक दावा नहि। अभिलेखीय विश्वसनीयता लेल जब्तीक कागज, प्रतिलिपिक पहचान आ भाषिक टिप्पणीक स्रोत अलग रहब आवश्यक अछि; मुदा एहि दृश्यसँ सम्पूर्ण डिजिटल सामग्रीक स्वामित्व अथवा वैधानिक प्रमाण-स्थिति पर अन्तिम न्यायिक निष्कर्ष निकालब उचित नहि।

प्रथम भाषा-अभ्यासमे शशांक ‘मूल पंक्ति पहिने, अनुवाद बादमे, व्याख्या अलग’ स्वीकार करैत अछि। अगिला नियम—मूलमे कर्ता नहि तँ कर्ता नहि जोड़ब—चौबीसम अध्यायक प्रतिपरीक्षाक प्रत्यक्ष परिणाम अछि। तेसर नियम एकाधिक सम्भावित अर्थकेँ चिह्नित करब अछि। ई तीनू एक कार्यविधि बनैत अछि, जे नायकक निजी विवेकसँ आगाँ पुनःपरीक्षण योग्य रूप धारण करैत अछि। ओ कर्ताक अभाव अनदेखा नहि करत, प्रसंगजन्य अनुमानकेँ पाठ्य-सत्य नहि बनाओत, आ अर्थक विकल्पकेँ अस्पष्ट कहि छोड़बाक बदला व्यवस्थित रूपेँ दर्ज करत। साहित्यक भीतर अनुवादकक आन्तरिक परिपक्वता एहि अभिलेखनीय नियममे मूर्त होइत अछि।

दोसर चीनी पंक्तिक एक पद ‘सूची’, ‘नामावली’ अथवा प्रसंग-विशेषमे ‘खाता-विवरण’ होय सकैत अछि। शशांकक कलम एक बेर ‘खाता’ दिस बढ़ैत अछि, कारण पहिनुक आर्थिक कथानक ओहि अर्थकेँ अधिक आकर्षक बना रहल अछि। किन्तु ओ तीनू सम्भावना लिखैत अछि। ई दृश्य अनुमानक मनोविज्ञान पर अत्यन्त सूक्ष्म टिप्पणी अछि: कथाक पूर्व प्रसंग पाठकक मनकेँ जे अर्थ सर्वाधिक रोचक बुझबैत अछि, ओही अर्थ स्वतः वास्तविक

अथवा अनिवार्य नहि भऽ जाइत। 'खाता' चुनला सँ आर्थिक सन्देहक कथा अधिक स्पष्ट होय सकैत छल; किन्तु स्पष्टता सत्यक विकल्प नहि। एहि अर्थमे नायक अपन कथा रचबाक पुरान इच्छापर नियन्त्रण करैत अछि। ई दृश्य अनुवादक द्वारा कथानकक आकर्षणक विरुद्ध भाषा-साक्ष्यक सीमा बचएबाक रूपक बनैत अछि।

'पुरान नाम छोड़ू, नव व्यवस्था लिअ'क ध्वनि-सन्देशमे 'व्यवस्था' पदक अर्थ भुगतान, सम्पर्क, नामक समूह अथवा कार्य-विन्यास भऽ सकैत अछि। अन्य पंक्तिमे 'ऊपरक लोक' वरिष्ठ प्रबन्धक, अधिकारी अथवा सहकर्मीमे ककरा सूचित करैत अछि, से निश्चित नहि। शशांकक अनुभव सम्भावित अर्थ चिन्हबाक साधन अछि, व्यक्तिक वास्तविक पद-पहिचानक प्रमाण नहि। एतय पाश्चात्य अर्थविज्ञानक बहुअर्थकता, प्रयोगसन्दर्भ आ कथनक अनुवादनीय सीमा एकत्र भेल अछि। कथा देखबैत अछि जे अनुभवहीन अनुवादक कखनो अर्थ नहि बुझब, मुदा अत्यधिक आत्मविश्वासी अनुवादक सम्भावनाक एकहि शाखाकेँ प्रमाणित अर्थ बना सकैत अछि। परिपक्वता एहि दुनूक बीच अछि—विकल्पसभ दिखाएब, उपलब्ध प्रसंग बतायब, निष्कर्ष पर जाँचनीय रोक राखब।

दुपहर पछाति कथन लेल अलग प्रश्नोत्तर आरम्भ होइत अछि। शशांक जब्त यन्त्रसभक क्रमाङ्क देखिते स्वीकार करैत अछि जे समान यन्त्रक प्रकार देखलासँ ओ विशिष्ट यन्त्रक पहचान नहि करि सकैत। ई भेद उपमानक उचित आ अनुचित प्रयोग बुझबैत अछि: साम्य वस्तुक वर्गबोध देत, किन्तु खास वस्तुक परिचयक स्वतंत्र आधार चाही। पूर्व ग्राहकसभक समान बोलचालक अनुभव सेहो समान आशयक पर्याप्त प्रमाण नहि। संयोगसँ मिलल शब्द या तकनीकी वस्तुक बाह्य समानता पर सिद्धि करब हेत्वाभासक जोखिम अछि। कथन लिखनिहार अधिकारी पूछैत अछि जे शशांक हर उत्तरमे सीमा किएक जोड़ैत अछि; नायकक उत्तर जे सीमा बिना उत्तर ओकरासँ पैघ भऽ जाएत, एहि अध्यायक गद्यात्मक केन्द्र बनैत अछि। शब्दक आकार व्यक्तिक वास्तविक ज्ञानक आकारसँ बेसी न भऽ जाए—ई भाषा-साधनाक अन्तिम सामाजिक रूप अछि।

विभाग द्वारा नियमित भाषा-सहायताक सम्भावना पुछल गेलापर शशांकक मान्यता-इच्छा फेर तीव्र होइत अछि। ओ कार्य करबाक इच्छा व्यक्त करैत अछि, मुदा जाहि सामग्रीमे ओ स्वयं कथनकर्ता वा सम्बन्धित व्यक्ति अछि, ओतय अपन अर्थ-निर्णय पृथक सत्यापन बिना अन्तिम नहि मानबाक शर्त जोड़बैत अछि। आ आश्चर्य ई जे एहि हित-संघर्षक कारण ओ स्वयं लिखबबैत अछि: 'हमरा आवश्यक बनबाक इच्छा अछि।' ई आत्मकथन नायककेँ सम्पूर्ण निर्लोभ घोषित नहि करैत; लोभक सार्वजनिक स्वीकारक कारण अर्थगत हस्तक्षेप पर नियन्त्रण सम्भव बनबैत अछि। आधुनिक व्यावसायिक आ शोध-नैतिकताक दृष्टिसँ एहि दृश्यमे भूमिका-विभाजन, हित-संघर्षक उद्घोषणा आ स्वतंत्र पुनःपरीक्षणक आवश्यकता केन्द्रमे अछि। भाषा पर एक व्यक्तिक एकाधिकार टूटला सँ ओकर कौशल नष्ट नहि; ओकर उपयोगक विश्वसनीयता बढ़ि सकैत अछि।

मृणाल संग बाहरक पदयात्रा आ जुलियाना संग पितमपुराक शिक्षात्मक संवाद एहि निर्णयक निजी अर्थ खोलैत अछि। मृणाल महत्त्वाकांक्षा अनुचित नहि मानैत, ओकर मर्यादा आवश्यक मानैत अछि। जुलियाना एक गहींर उलटा सूत्र दैत छथि: श्रेष्ठ अनुवादक एहन काज करय जकर परीक्षण ओकर अनुपस्थितिमे सेहो सम्भव हो। जँ अनुवाद सही होयबाक एकमात्र आधार 'हमर बात मानू' अछि, तखन भाषा ज्ञानक बदला प्रभुत्व बनैत अछि। शिक्षक-छात्रक पुरान सम्बन्ध एतय स्वाधीनता दिशि मुड़ैत अछि। शशांकक आरम्भिक बौद्धिक आकांक्षा स्वयंकेँ अनुपम विशेषज्ञ बनायबाक छल; आब ओकर प्रशिक्षण अपन विकल्प, सीमा आ मूल स्रोत एना सुरक्षित रखबाक अछि जे दोसर व्यक्ति ओकर काम जाँचि सकय। एही ठाम ज्ञानक लोकहितकारी रूप आ वैयक्तिक प्रतिष्ठाक अपेक्षा बीच सच्चा तनाव अछि।

भारतीय रस आ औचित्य-दृष्टिसँ समनक भयक स्थानपर आकर्षण उत्पन्न होयब मनोवैज्ञानिक रूपेँ सटीक अछि; नायकक चरित्र एकरेखीय नहि बनैत। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति संस्थागत जब्ती, दिल्लीक भाषा-शिक्षा,

लाल किलाक पर्यटक-व्यवहार आ पितमपुराक गुरु-परम्पराकेँ एके ज्ञान-इतिहासक भिन्न स्थल रूपेँ पढ़बाक अवसर दैत अछि। तथापि अलग-अलग स्थलमे समान नैतिक सूत्र भेटब एहन अनुमान नहि जे संस्थासभक वास्तविक ऐतिहासिक कारण एके अछि। मूल कथा एहि भौगोलिक क्षेत्रसभक परस्पर स्मरण द्वारा नायकक वैयक्तिक शिक्षाक समय-रेखा बनबैत अछि। कथाकालमे एक दिनक औपचारिक प्रश्नोत्तर आ अनेक वर्षक भाषा-स्मृति बराबर उपस्थित अछि।

अध्यायक आलोचनात्मक सीमा तीन नियम आ चारि अन्तिम नोटक स्पष्ट उपदेशात्मकता अछि। पाठककेँ बहुअर्थी शब्दक वास्तविक अनुवाद-दृश्य अधिक जीवन्त लगैत अछि, जबकि अधिकारीक लगातार सही प्रश्न आ जुलियानाक सदिखन निर्णायक दार्शनिक उत्तर कखनो पूर्व-निर्धारित पाठचक्रमक अनुभूति दैत अछि। तथापि नायकक ‘खाता’ लिखबाक लोभपर थमल कलम, साक्षी आ अनुवादकक दू अलग अभिलेख, तथा हित-संघर्ष स्वयं दर्ज कराएबाक असहज निर्णय शिल्पक विशेष उपलब्धि अछि। पचीसम अध्यायक अन्तमे करार, विक्रेता-पथ आ लाभकारी स्वामित्वक भावी प्रश्नक संकेत अछि; ई संकेत अगिला कथानकक दिशा अछि, एखन ओकर आपराधिक उत्तर नहि। एहि अध्यायक वास्तविक उपलब्धि महत्त्वाकांक्षाक दमन नहि, ओकरा प्रमाण-विवेकक अधीन स्वयं उद्घाटित करब अछि।

## अध्याय २१-२५ : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — मौनक गोपनीयता सँ आत्मस्वीकृतिक जाँचनीय भाषा धरि

एकैसमसँ पचीसम अध्याय पाँच अलग प्रसंगक शृंखला अछि—अधिवक्ताक गोपनीय बैसार, प्रशासनिक आदेशक स्रोत, डिजिटल समाचारक आरोप, न्यायालयक प्रतिपरीक्षा आ जब्त इलेक्ट्रॉनिक सामग्रीक भाषिक सत्यापन। एहि घटनासभक समेकित दृष्टि बनेनाइ सम्भव अछि, मुदा सभकेँ एके अपराध-प्रमाणक पाँच चरण मानब मूल पाठक विरुद्ध होयत। पहिल प्रसंगमे अनुवादक केहन वाक्य सुनलक आ केहन रूपेँ ओहि वाक्यक सीमित अर्थ बतौलक, दोसरमे पर्चीक प्रेषक असत्यापित अछि, तेसरमे समाचारक स्रोत अज्ञात अछि, चारिममे अनुवादमे जोड़ल कर्ताक त्रुटि स्वीकार होइत अछि, आ पचीसममे बहुअर्थी डिजिटल शब्दक विकल्प सुरक्षित रखल जाइत अछि। ई सभ अलग प्रमाण-स्थिति एक बृहत्तर प्रश्नक आसपास घूमैत अछि: भाषा ककरा कहबाक अधिकार दैत अछि, कतेक कहबाक भार दैत अछि, आ जे नहि सिद्ध भेल ओकरा कथामे कतय रोकबाक चाही।

गोपनीयता, प्रेषक आ सार्वजनिकता। अध्याय २१क गोपनीय बैसारमे वाक्य सुनल गेल, मुदा ओकर उद्देश्य अप्रमाणित रहल। अध्याय २२क हस्ताक्षरहीन पर्चीमे आदेशक अनौपचारिक दावा आयल, मुदा स्रोत अनुपस्थित रहल। अध्याय २३क समाचारमे ‘मुहरबन्द सूत्र’ कहि प्रसारित कठोर निष्कर्ष रहल, मुदा लेखकक वास्तविक स्रोत प्रमाणित नहि। तीनू ठाम वाक्यक उपलब्धता आ ओकर स्रोत-विश्वसनीयता अलग प्रश्न बनैत अछि। पहिलमे वाक्यक कार्यक्षेत्र गोपनीय कक्ष अछि, दोसरमे कार्यालयक आदेश-श्रृंखला, तेसरमे सार्वजनिक मीडिया। एके ‘कहल गेल’ सन सूत्र अलग संस्था मे अलग मान्यता माँगैत अछि। एहि कारण गोपनीय सूचना कखनो सार्वजनिक अपराध-सिद्धिक स्वतन्त्र प्रमाण नहि बनैत, आ सार्वजनिक शीर्षकक पुनरावृत्ति तथ्यक वजन नहि बढ़बैत।

जोड़ आ लोपक तुलनात्मक व्याकरण। अध्याय २२क मूल ईमेलमे समय-शर्त ‘कानूनी पुष्टि भेटला धरि’ सारांशमे हटि गेल छल; अर्थ अस्थायी रोक सँ स्थायी रोक दिस सरकल। अध्याय २४मे शशांकक अनुवादमे मूलमे अनुपस्थित कर्ता जोड़ल गेल, जकरा ओ स्वयं त्रुटि मानलक। एकमे अर्थ घटा कऽ बदलल; दोसरमे अर्थ बढ़ा कऽ। अध्याय २३मे समाचार तथ्यसभ बीच असिद्ध सम्बन्ध जोड़लक; पचीसममे शशांक ‘खाता’ सन आकर्षक किन्तु निश्चित नहि अर्थ जोड़बासँ रुकल। एहि चारि घटनाक संग तुलना कएलापर स्पष्ट होइत अछि जे अनुवादकक नैतिकता केवल शब्द गलत चुनब वा सही चुनबक प्रश्न नहि; मूल पाठमे कोन शर्त नहि छोड़ल जाए, कोन कर्ता नहि जोड़ल जाए आ कखन विकल्पसभ एक संग देल जाए, से केंद्रीय प्रश्न अछि।

अध्याय २४क स्वीकृति आ अध्याय २५क रूपान्तरण। चौबीसम अध्यायमे शशांक पिछला अस्पष्ट अनुवादक त्रुटि शपथक साम्हिन स्वीकार करैत अछि। पचीसममे ओहि स्वीकारोक्ति अपन अनुवाद-विधिक नियम बनैत अछि—मूल पहिने, अनुवाद बादमे, व्याख्या पृथक; कर्ता अनुपस्थित तँ जोड़ नहि; बहुअर्थक सम्भावना अलग-अलग अंकित। केवल अपराध-बोध वा लज्जा यदि आगामी कर्म नहि बदलय, तखन चरित्र-विकास अधूरा रहितै। एहि कारण लगातार दू अध्यायक क्रम विशेष प्रभावकारी अछि: पछातापपहिले वाक्यक मालिकाना स्वीकार करैत अछि, फेर नये काममे सीमांकन लागू करैत अछि। एतय प्रायश्चितक कलात्मक अर्थ निराधार आत्मनिन्दा नहि, आचार-संशोधनक प्रमाणित प्रक्रिया अछि।

चारि सह-पात्रक भिन्न भूमिका। राघव कानूनी परामर्शक सीमामे आवश्यक तथ्यक प्रश्न उठबैत अछि; आदित्य स्रोत-श्रृंखला आ अभिलेखीय निष्ठाक प्रश्न; मृणाल आत्मरक्षाक भाषा आ मित्रताक नैतिक परीक्षण; जुलियाना अनुभव आ मूल शब्दक सम्बन्धक शिक्षा। चारू अपन अलग पेशागत अथवा आत्मीय क्षेत्रसँ शशांकक गर्व पर अंकुश लगबैत छथि। कथाक उपलब्धि ई जे ओहि अंकुशमे केवल विरोध नहि, प्रशिक्षण सेहो अछि। सीमा ई जे कखनो चारू पात्र एके अवधारणाक पुनरुक्त शिक्षक बनि जाइत छथि। विशेषतः

अन्तिम सूचीनुमा अनुच्छेद सभ अध्यायमे दोहराओल गेलासँ विवेचनाक स्पष्टता बढ़ैत अछि, मुदा संवादक अप्रत्याशितता घटैत अछि। ई सीमा स्वीकार करब रचनाक प्रमाण-नैतिकतासँ संगत आलोचनात्मक व्यवहार अछि।

नव्य न्याय आ साहित्यिक विडम्बना। प्रत्यक्ष श्रवणक घटना कथनक सत्यताक समान नहि; फाइलमे लिखल शब्द ओकर प्रेषकक प्रामाणिकता स्वतः नहि; यात्रा आ वित्तीय नियन्त्रणक बीच व्याप्ति स्थापित नहि; एकहि नामावली जेकाँ शब्दक साम्य वास्तविक लाभकारी स्वामित्वक पहचान नहि —ई सभ नव्य न्यायीय प्रमाण-विवेकक अलग उपयोग अछि। मुदा समीक्षाक लेल प्रत्येक दार्शनिक पदकेँ पात्रक ठोस क्रियासँ जोड़ल आवश्यक अछि। शशांकक 'खाता' लिखबाक हेतु उतावल कलम ओकर अनुमानगत आकर्षण देखबैत अछि; अदालतमे 'करू' जोड़बाक स्वीकृति मूल आ व्याख्याक अन्तरक प्रत्यक्ष साक्ष्य अछि; मीडिया-लेखकक तीन तथ्य सँ चतुर्थ दाबी बनायब हेत्वाभासक जोखिम अछि। दार्शनिक शब्दकोश एतय पाठ पर थोपल नहि जाए; वास्तविक पाठ-विरामसँ सिद्धान्तक अर्थ उत्पन्न हो।

रस, ध्वनि आ कथात्मक समय। एकैसम अध्यायक गोपनीय बैसारक भय, बाइसमक असत्यापित आदेशक बेचैनी, तेइसमक सार्वजनिक लज्जा, चौबीसमक शपथक साम्हिन स्वीकारोक्ति आ पचीसमक पुनःजागल महत्त्वाकांक्षा पाँच भिन्न भाव-स्थितिक क्रम अछि। शशांक स्थिर नैतिक प्रतिमा नहि, परिवर्तित होइत इच्छा आ भयक व्यक्ति अछि। मृणालक चाह, लाल किलाक पुरान छवि, पितमपुराक ओसारा आ शशांकक नोटबुक आवर्ती भाव-प्रतीक बनैत अछि। भारतीय ध्वनिविचारसँ नोटबुकक सीमित वाक्यसभ विशेष अर्थ वहन करैत अछि—'जतेक अछि, ओतबे'क आरम्भिक मर्यादा 'सीमा नहि जोड़ब तँ उत्तर हमरा सँ पैघ भऽ जाएत'क अन्तिम आत्मस्वीकृतिमे विकसित होइत अछि। पाँच अध्यायक समय-क्रम दैनिक कार्यालयक घटनासँ चलि अतीतक भाषा-शिक्षाकेँ याद करबैत अछि, जाहिसँ

बाह्य समय आ आन्तरिक आत्म-संशोधन एक दोसराकेँ आलोकित करैत अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पठनक सीमा। मिथिलाक नव्य न्यायपरम्परा, दिल्लीक भाषा-जीविका, न्यायालय, अन्वेषण कार्यालय आ मकाऊ-सम्बद्ध व्यापारिक प्रसंग अनेक समय-स्रोतक रूपमे उपन्यासक भीतर रहैत अछि। एहि भूगोलसभक समानान्तर उपस्थितिक कारण एक दूसरासँ आपराधिक सम्बन्ध सिद्ध नहि; तुलना केवल साहित्यिक संरचना आ पाठगत प्रमाण पर टिकत। अध्याय २१–२५मे शशांकक भाषिक केन्द्रीयता पर विचार अछि, मुदा ओकर केन्द्रीयता वित्तीय स्वामित्व वा नियंत्रणक पर्याय नहि। एहि सीमाक पुनरावृत्तिक भीतर लेखकक रचनात्मक आग्रह स्पष्ट अछि: कथानक पाठककेँ सम्बन्धक लालसा दैत अछि, फेर प्रमाणक प्रश्नसँ ओकरा रोकी दैत अछि। इतिहासलेखनक योग्य प्रश्न सेहो ई अछि जे कोन सम्बन्ध अभिलेखसँ पुष्ट, कोन मात्र सह-उपस्थित, आ कोन मनःकल्पित।

अन्ततः अध्याय २१–२५ एहि उपन्यासक मध्यभागमे ज्ञान-नैतिकताक सघन संक्रमण अछि। अनुवादक पहिने दूसरक वाक्य सही रखबाक प्रयास करैत अछि; फेर संस्थाक वाक्यक स्रोतक जाँच, समाचारक असिद्ध सम्बन्धक प्रतिवाद, अपन जोड़क खुलेआम स्वीकार, आ हित-संघर्षक अभिलेखीय घोषणा धरि पहुँचैत अछि। एहि क्रमकेँ पूर्ण नैतिक विजय कहब असंगत होयत—पचीसम अध्याय नायकक आवश्यक बनल रहबाक इच्छा पुनः उपस्थित करैत अछि। ओकर सकारात्मक विकास ई नहि जे इच्छा समाप्त भऽ गेल; ई जे इच्छा अप्रमाणित निष्कर्ष बनबाक पहिने चिन्हित भेल। शिल्पक शिक्षात्मक पुनरावृत्ति आ पात्रसभक समान दार्शनिक स्वर रचनाक वास्तविक सीमा अछि, मुदा ‘धरि’क लोप, ‘करू’क जोड़, समाचारमे बनाओल स्रोत-संबन्ध आ ‘खाता’ लिखबाक थमल कलम—एहन ठोस दृश्यसभ एहि पाँच-अध्यायी क्रमकेँ अनुवाद, प्रमाण आ उत्तरदायित्वक विशिष्ट साहित्यिक प्रयोग बनबैत अछि।

## अध्याय २६ — भाषाक साधना १३ : प्रतिनिधित्वक पद, लाभकारी स्वामित्वक सीमा आ भाषिक गर्वक नव रूप

छब्बीसम अध्याय भारतीय विद्या भवनक पुरान श्यामपट्टसँ आरम्भ होइत अछि। शिक्षक ‘कम्पनीक प्रतिनिधि’ आ ‘कम्पनीक वास्तविक नियन्त्रण राखनिहार’क अन्तर पूछैत छथि। शशांक आब बिना हिचक दुनूकेँ अलग पद मानैत अछि। एहि दृश्यकेँ पचीसम अध्यायक डिजिटल अनुवादमे बहुअर्थी शब्द लिखबाक शिक्षाक स्वाभाविक निरन्तरता कहि सकैत छी, मुदा एतय प्रश्न व्यक्तिक भाषा-प्रशिक्षण सँ आगाँ कम्पनीक सम्बन्ध-संरचना धरि पहुँचैत अछि। प्रतिनिधित्व एक अधिकृत भूमिका भऽ सकैत अछि; औपचारिक हिस्सेदारी, वास्तविक नियन्त्रण, भुगतान पाबब आ लाभ पाबब अलग-अलग सम्बन्ध अछि। एहि अन्तरक संरचना अध्यायक मूल कथावस्तु अछि। मूल शिक्षकक प्रश्न मात्र परिभाषा नहि; आगूक चारि दस्तावेज पढ़बाक नैतिक भूमिका तैयार करैत अछि।

आयुक्तालयमे आदित्य चारि फाइल शशांकक आगाँ रखैत अछि—स्थानीय सेवा-करार, विदेशी विक्रेता-संशोधन, भुगतान-निर्देश आ स्वामित्व-घोषणा। सभ एक व्यापारी श्रृंखलासँ सम्बन्धित कहल गेल, मुदा नाम, हस्ताक्षर, भुगतान आ हिस्सेदारीक भूमिकासभ अलग अछि। आदित्य आरम्भे कहैत अछि जे आइ लक्ष्य अपराध ठहरायब नहि, सम्बन्धक प्रकार चिह्नब अछि। एहि अग्रिम सीमांकनक महत्त्व बहुत अछि। व्यापारी संरचनाक दस्तावेज जटिल होयब स्वतः गैरकानूनी नहि, जेकाँ विवरणक जटिलताकेँ कारण बनाकऽ आवश्यक परीक्षण छोड़ब सेहो उचित नहि। कथाकार एहि दुनू अतिवादक बीच जाँचक स्थल निर्धारित करैत छथि।

पहिल करारमे चीनी मूलक प्रतिनिधिसूचक पद अंग्रेजी सारांशमे ‘स्वामी’ बनि गेल अछि। शशांक अनुच्छेदक सम्पूर्ण प्रसंग पढ़ि एकरा ‘अधिकृत प्रतिनिधि’ अथवा ‘व्यवहारक जिम्मेदार व्यक्ति’क निकट मानैत अछि। एके व्यक्ति करारपर हस्ताक्षर करि सकैत अछि, दोसर भुगतान पाबि सकैत अछि, तेसर दैनिक नियन्त्रण राखि सकैत अछि, आ आर्थिक लाभ चौठ संस्था धरि पहुँचि

सकैत अछि—ई उदाहरण शशांक सम्भावनाक रूपमे दैत अछि, घटना-सिद्धिक रूपमे नहि। नव्य न्यायीय अवच्छेदकक विचार एतय अनुप्रयुक्त अछि: व्यक्ति-संबन्धक विशेष प्रकार निर्दिष्ट कएने बिना 'सम्बद्ध' शब्दसँ स्वामित्वक निष्कर्ष नहि निकलैत। सन्देहक भाषा विश्लेषणक मार्ग खोलैत अछि; निष्कर्षक स्थान नहि लेत।

दोसर फाइलमे विक्रेता-संशोधनक चीनी पद 'कार्य निष्पादन लेल दोसर पक्षक नियुक्ति'क निकट अछि, जबकि सारांश पुरान विक्रेताक पूर्ण प्रतिस्थापन कहैत अछि। तेसर फाइलक 'निर्दिष्ट प्राप्तकर्ता' शशांकक अनुवादमे भुगतान-पाबनिहार अछि; ओ अनिवार्यतः लाभकारी स्वामी नहि। चौठ स्वामित्व-घोषणामे हिस्सा-नाम, प्रतिनिधिक नाम आ भुगतान-संस्थाक अप्रत्यक्ष सम्बन्धक बीच अपूर्ण कागजी कड़ी अछि। एहि चारि उदाहरणसँ अध्यायक शिल्प एक गहन क्रम रचैत अछि: पहिले भाषाक अतिसरल निष्कर्ष चिन्हाएल, फेर आन दस्तावेजसँ भूमिकाक विविधता प्रदर्शित भेल, आ अन्तमे निष्कर्षक अभाव स्वयं उचित आलोचनात्मक परिणाम बनल। वास्तविक लाभकारी स्वामी कोन व्यक्ति वा संस्था छथि, एहि पाठमे निश्चित नहि होइत।

आदित्य शशांकक उत्तरकेँ प्रत्यक्ष, अनुमान आ मिथ्या आरोपक अलग श्रेणीमे लिखबबैत अछि। प्रत्यक्षमे अभिलेखीय भूमिकासभ अछि; अनुमानमे बहुस्तरीय सम्बन्धक सम्भावना; मिथ्या आरोपमे ककरो नाम एक करार अथवा भुगतान-निर्देशमे भेटिते गुप्त लाभार्थी वा अपराधक संचालक ठहरायब। एकर नव्यता खाली वर्गीकरणमे नहि; शशांक अपन हस्ताक्षरक नीचाँ स्वयं स्वतंत्र स्वामित्व-अभिलेखक आवश्यकता लिखैत अछि। 'भाषिक अर्थ सम्बन्धक प्रकार स्पष्ट करैत अछि'—ई वाक्य हुनकर प्रतिभाकेँ नकारैत नहि, मुदा कानूनी-वित्तीय निष्कर्ष पर एकर सामर्थ्य सीमित करैत अछि। न्याय-सम्बन्धी प्रश्नमे शब्द-विश्लेषकक उपयोगिता जतेक, ओतबे ओकर मर्यादा सेहो लिखल अछि।

चरित्रगत दृष्टिसँ कठिनाई ई जे सही भेद देखबासँ नायकक पुरान गर्व फेर जागैत अछि। ओकरा क्षणभरि लगैत अछि जे कक्षमे आन सभ ओकर बिना अन्हारमे रहित। ई विचार आत्म-महत्त्वक पुनरागमन अछि, ओकर सम्पूर्ण पतनक प्रमाण नहि। शशांक स्वयं कहैत अछि जे मूल भाषाक अर्थक स्वतंत्र जाँच सेहो होअय चाही। आदित्य प्रश्न करैत अछि जे गर्व घटि रहल अछि कि नहि; नायक कहैत अछि जे सम्भवतः ओकर गर्व ठीक स्थानपर आबि रहल अछि। एहि उत्तरमे नैतिक शिक्षा विशेष सूक्ष्म अछि: प्रतिभा पर आनन्द अनुचित नहि; अपन प्रतिभाकेँ सत्यक एकाधिकार बना देब अनुचित। अध्याय पचीसमक हित-संघर्षक आत्मघोषणा सँ एतय पुनःपरीक्षणक लिखित आग्रह धरि विकसित होइत अछि।

लाल किलामे चीनी पर्यटक द्वारा यात्रा-दलक जिम्मेदार व्यक्तिक परिचयमे प्रयुक्त शब्द कार्यालयक प्रतिनिधिसूचक पदसँ मिलैत अछि। शशांक एकरा अपन अनुवादक अन्तिम पुष्टि नहि मानैत—ई केवल शब्दक सम्भावित अर्थक्षेत्र स्पष्ट करैत अछि। एहि निर्णयसँ उपमानक उचित मर्यादा सामने अबैत अछि। सांस्कृतिक बैसारमे रोमन लिपिक समान उपनाम राखनिहार दू व्यक्ति भेटैत छथि, मुदा मूल चीनी अक्षर आ ध्वनि अलग अछि। एके रोमन वर्तनी एके परिवार वा व्यक्ति सिद्ध नहि करैत। व्यापारिक दस्तावेजक नाम-सम्बन्ध आ सांस्कृतिक बैसारक निर्दोष सूचीक बीच ई समानान्तर दृश्य उपयोगी अछि; लेखक देखबैत छथि जे मामूली पहचान-त्रुटि जाँच-अभिलेखमे घातक निष्कर्षक बीज बनि सकैत अछि।

जुलियाना शशांकक चारि सम्बन्ध-श्रेणी बुझि ओकर प्रसन्नताक मूल पर प्रश्न करैत छथि। सही भेद चिह्नबाक सुख फेर ‘ई भेद केवल हम जानैत छी’क गर्व बनि सकैत अछि। शिक्षकक ‘भाषा अहाँक सम्पत्ति नहि’ सन दृष्टि ज्ञानक स्वामित्वकेँ नैतिक सेवामे रूपान्तरित करैत अछि। रस-दृष्टिसँ एतय पूर्व संकटसँ राहतक भाव अछि, मुदा एहि राहतक भीतर आत्ममुग्धताक हलुक छाया चलैत अछि। स्थान-संरचनामे भारतीय विद्या भवन, आयुक्तालय, लाल किला, चीनी सांस्कृतिक बैसार आ ताओ मंदिर एकहि दिनक ज्ञानयात्राक भिन्न पड़ाव बनैत अछि। विदेह समानान्तर पद्धतिमे एहि

स्थलसभक समानान्तर पठन सम्भव अछि, किन्तु समान भाषा-सूत्र देखिते संस्थासभक ऐतिहासिक सम्बन्ध वा अपराधक कड़ी सिद्ध नहि।

अन्तिम फोन नोएडाक एक चीनी कम्पनीक छोट मरम्मत-काज लेल भाषिक आ स्थानीय समन्वयक बनबाक प्रस्ताव दैत अछि। ई घटना संरचनात्मक रूपसँ महत्त्वपूर्ण अछि, कारण 'भाषाक साधना' शृंखला समाप्त होइतहि कौशल प्रत्यक्ष श्रम, सामग्री आ भुगतानक जगतमे प्रवेश करैत अछि। मृणालक 'करार पहिने पढ़ू' उत्तर नव खण्डक परीक्षा पूर्वसूचित करैत अछि। एहि अध्यायक कलात्मक सीमा श्रेणी-निर्धारणक अनेक पुनरावृत्ति अछि; शिक्षक, आदित्य आ जुलियाना प्रायः समान मर्यादा अलग उदाहरणसँ कहलनि। मुदा चारि अलग फाइल, रोमन नामक द्विविधा आ नोएडाक व्यावहारिक प्रस्ताव इस पुनरावृत्तिक भीतर पर्याप्त दृश्यात्मक विशिष्टता दैत अछि। अध्याय एकहिटा निष्कर्षमे नहि सिमटैत: प्रतिनिधित्व स्वामित्व नहि; भाषा काजक माध्यम अछि; आ आगाँ व्यापारिक जीवन ओहि भेदसभकेँ व्यवहारमे जाँचत।

## अध्याय २७ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया १ : मरम्मतक कार्यसूची, तेसर भुगतान-खाता आ उपमानक प्रत्यक्ष परीक्षा

सत्ताइसम अध्यायमे नोएडाक चौड़ा सड़क, काँचक भवन, अधबनल ढाँचा, धूलि आ यन्त्रक आवाज भाषा-शिक्षाक पहिल सुरक्षित स्थलक विपरीत जीवन्त भौतिक संसार खोलैत अछि। चीनी कम्पनीक कार्यालयमे मरम्मतक चारि काम अछि—दीवारक नमी, ढीला विद्युत-बिन्दु, भण्डारक काठक पटरा आ स्वागत-कक्षक विभाजन। कार्यसूचीक एहि साधारण वस्तुसभक महत्त्व ई जे शशांकक भाषा अब केवल अभिलेख-समीक्षा नहि, कारीगरक श्रम, सामग्रीक लागत आ काम पूरा भेल कि नहि से तय करबाक माध्यम अछि। लेखक अन्तरराष्ट्रीय जाँचक पैघ शब्दसभक पाछाँ एक छोट स्थानीय काज राखि कथाक परिमाण बदलैत छथि। ई परिमाण-परिवर्तन उपन्यासक यथार्थवादी उपलब्धि अछि।

करारक चीनी मूलमे ‘मरम्मत पूरा भेलाक बाद निरीक्षण’ अछि, अंग्रेजी सारांशमे ‘सन्तोषजनक समापन’; मूलक ‘सामग्रीक वास्तविक बिल’ सारांशमे ‘स्वीकृत लागत’ बनि गेल। शशांक निरीक्षण आ सन्तोष, वास्तविक व्यय आ स्वीकृत लागतक अन्तर चिन्हैत अछि। एहि भेदक कारण करारक पूरा होयबाक शर्त आ भुगतानक आधार बदलि सकैत अछि। सहायक काज छोट कहि सूक्ष्मता पर हँसैत अछि; नायकक उत्तर जे छोट काजक भाषिक चूक पैघ विवाद बना सकैत अछि, पेशागत अनुभवसँ निकलल उचित चेतावनी अछि। मुदा समीक्षाकेँ ईहो देखबाक अछि जे ओ ठाम नायकक सावधानी ओकरा अपन प्रतिभापर गर्वक अवसर सेहो दैत अछि; सही निर्णय आ आत्म-महत्त्वक भीतरक दूरी अद्यापि जीवित अछि।

भण्डारक फुलल पटरा पर स्थानीय ठेकेदार पछिला काजक ‘उपमान’ दैत अछि। देखयमे एकरूप नमी अनेक कारणसँ भऽ सकैत अछि—वर्षाक पानि, पाइपक रिसाव अथवा वातानुकूलन-निकासक अवरोध। शशांक कारण जाँचने बिना सादृश्यकेँ निदान नहि मानैत अछि। पछाति वास्तवमे अवरुद्ध निकास दोषक कारण भेटैत अछि। ई दृश्य महत्त्वपूर्ण ताहि लेल अछि जे नव्य

न्यायक 'उपमान'क व्यावहारिक मर्यादा कोनो न्यायालयक शपथबद्ध कक्षमे नहि, बढ़इक मरम्मतमे देखायल गेल। उपमान अनजान वस्तुक पहिचानक दिशा दैत अछि, मुदा व्याधिक/तकनीकी कारणक सिद्धि अलग निरीक्षण माँगैत अछि। कारीगरक सादृश्य गलत निकलल, मुदा उदाहरण देबाक क्रिया निरर्थक नहि छल; ओ कारण-परीक्षण आरम्भ करौलक।

भुगतानक तीन चरण—अग्रिम, मध्य-निरीक्षण, अन्तिम समापन—दर्ज अछि; सामग्री लेल देल खाता स्थानीय ठेकेदारक नहि, आपूर्तिकर्ताक अछि। शशांकक स्मृतिमे आयुक्तालयक भुगतान-पथ आ पराया खाता सम्बन्धी प्रश्न उठैत अछि। इएह कथाक 'छाया' अछि: पुरान जाँचक सम्भावित रूप नव वैध लगैत व्यापारिक घटनामे आरोपक असमय आकार बना सकैत अछि। शशांक आपूर्तिकर्ताक भूमिका लिखित रूपमे स्पष्ट करबय चाहैत अछि। आपूर्तिकर्ताक बिलक प्रति प्राप्त भेलापर खाता-नाम मिलैत अछि। एहि मिलानसँ विशिष्ट भुगतान-पथक वैध व्यापारिक व्याख्या उपलब्ध होइत अछि; सम्पूर्ण कम्पनीक लाभकारी स्वामित्व सिद्ध नहि होइत। 'तेसर खाता' आ 'गुप्त भुगतान' बीच परहेज कथा-नैतिकताक मूल बिन्दु अछि।

एक अपरिचित फोन नोएडाक 'क्षेत्रक व्यवस्था' बुझबाक अस्पष्ट बात कहैत अछि। नायकक भय तत्काल अनेक कथानक रचय लागैत अछि—स्थानीय दबाव, प्रतिद्वन्द्वी ठेकेदार, व्यंग्य अथवा पहिनुक जाँच-संबन्धी खतरा। मूल पाठ ई सब अनुमानक रूपमे रखैत अछि; ककरो नाम वा स्पष्ट धनमाँग नहि। मृणाल समय, संख्या आ ठीक शब्द लिखबाक आग्रह करैत अछि। एहि पाठमे अनाम आवाजसँ उत्पन्न भय वास्तविक मानवीय अनुभूति अछि, मुदा एखन कानूनी अर्थक अन्तिम निर्णय नहि। घटनाक लेखा बनला पर भय समाप्त नहि, ओकर कल्पनात्मक प्रसार सीमित होइत अछि। एहि प्रकार शब्द मनुष्यक चिन्ता मिटेबाक जादू नहि, चिन्ताक परीक्षणक उपकरण अछि।

मृणालक सहभागिता एहि अध्यायमे विशेष अर्थ रखैत अछि। ओ शशांकक पुरान चयनित मौनक इतिहास देखिकऽ फोन स्वयं ओकर नुकेल अपराधक

फल मानि नहि लैत। दोस्ती पुरान चरित्रक उपमानमे वर्तमान व्यक्तिक अन्तिम पहचान करबाक प्रवृत्ति रोकेबाक नैतिक सम्बन्ध बनैत अछि। शशांक फोन मित्रकेँ देखेलक, ठीक शब्द दर्ज कएलक आ काम सँ भागल नहि; मृणाल एहि प्रत्यक्ष कर्मकेँ देखैत अछि। कथाकार एहि छोट व्यवहारमे चरित्रक पुनर्मूल्यांकनक सम्भावना खोलैत छथि। मित्रता केवल अन्ध रक्षात्मक मौन नहि; उचित सन्देहक संग नव तथ्यक सम्मान सेहो अछि। एहि भेदक कारण उपन्यासक निजी सम्बन्धसूत्र सार्वजनिक प्रमाण-पद्धतिसँ संवाद करैत अछि।

अध्यायमे व्यापारी भाषा आ जाँचक भाषा बीच आवर्ती अन्तर अछि। काजक खाता देखिते 'पराया खाता', तेसर भुगतान देखिते 'हवाला' अथवा डिजिटल धन सम्बन्धी निष्कर्ष लिखब अनुचित होयत। एतय एक वास्तविक शैलीगत जोखिम सेहो अछि: लेखक प्रत्येक अस्पष्ट प्रसंगक बाद पाठककेँ सिद्धि-असिद्धिक सूची दैत छथि, जाहिसँ उपन्यासक अनिश्चित वातावरण अपेक्षाकृत शिक्षोपदेशी बनैत अछि। तथापि निकास-जाँच, सामग्रीक बिल, भुगतानक चरण, अनाम फोन आ मृणालक उपस्थितिक दृश्यसभ साक्षात् जीवनक स्पर्श राखैत अछि। उपन्यासक प्रतिपाद्य अब अमूर्त करार नहि; नमी, काठ, चाह, मेट्रोक प्रतिबिम्ब आ कागजी विवरणमे उतरि रहल अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिसँ मिथिलाक गामक ओसारामे सड़ल काठ आ नोएडाक आधुनिक भण्डारक फुलल पटरा बीच रूपकात्मक साम्य देखल जा सकैत अछि; मुदा कारणसम्बन्ध अलग ठहरब अनिवार्य अछि। भारतीय उपमान-विचार, पाश्चात्य श्रम-आख्यानक वस्तुगत विवरण आ ध्वनि-दृष्टिसँ 'छाया'क आवर्ती भाव एहि अध्यायमे भेटैत अछि। शीर्षकक 'छाया' केवल बाहरी अनाम फोनक नहि, नायकक भीतर संचित पुरान अनुभवक सेहो अछि। व्याख्याक सीमा एतय स्पष्ट रहबाक चाही—अनाम फोनक स्रोत अज्ञात; वैध भुगतानक विवरण उपस्थित; ककरो अपराध-सिद्धि नहि। अध्यायक उपलब्धि उपमानकेँ दू किनार जोड़निहार सेतु मानब आ दुनू किनारक भिन्नता मेटा नहि देब अछि।

## अध्याय २८ — नोएडाक पहिल कॉन्ट्रैक्ट : पूर्ण भेल श्रम, अस्थायी प्रवेश आ पुरान लोभक नब संरचना

अठाइसम अध्याय नोएडाक मरम्मत-काजक दोसर दिनसँ आरम्भ होइत अछि। पहिनुक अस्पष्ट फोनक प्रत्यक्ष विवरण कम्पनीक सुरक्षा विभाग लग पहुँचाओल जा चुकल अछि, मुदा नायक अपन कार्य-दिनकेँ ओहि भयक सम्पूर्ण नियन्त्रणमे नहि छोड़ैत। मृणालक ‘पहिल दिन डर छल, आइ हिसाब’ कथन भय सँ अभिलेख धरि संक्रमण चिन्हैत अछि। दीवारक नमी, काठक पटरा, तारक आवरण आ आपूर्तिकर्ताक बिलक मिलान कथा दोसर दिनक श्रम-कायक्रमकेँ वस्तुगत आधार दैत अछि। एहि छोट काजक क्रमिक समापन बिना अगिला मकाऊ प्रस्तावक आकर्षणक भार ठीकसँ नहि बुझाइत, कारण लेखक पहिने वास्तविक परिश्रमक उपलब्धि देखबैत छथि, फेर अधिक पारिश्रमिक आ ‘विशेष प्रवेश’क मोह सामने अनैत छथि।

द्विभाषिक कार्यसूचीमे चीनी मूलक ‘आवश्यक अंशक प्रतिस्थापन’ अंग्रेजी सारांशमे ‘पूर्ण प्रतिस्थापन’ बनि गेल; निरीक्षण पछाति होयवाली स्वीकृति पूर्वनिर्धारित मंजूरी जेकाँ लिखल गेल। शशांक एहि अंतरकेँ ठीक करैत अछि। छोट काजमे त्रुटिक आर्थिक परिणाम कदाचित् सीमित रहय, मुदा त्रुटिक प्रकार सीमित नहि—एहि विचारक आधार ठोस दृश्य अछि। भाषिक सूक्ष्मता प्रायः कागजी सजावट लगि सकैत अछि, किन्तु एतय मरम्मतक वस्तु, बिलक राशि आ जिम्मेदारीक शर्त शब्दसँ अलग नहि। पाश्चात्य यथार्थवादी वस्तु-वर्णनक दृष्टिसँ कार्यसूचीक सटीक सामग्री सामाजिक सम्बन्धक बनावट उजागर करैत अछि।

पहिल दिनक तेसर खाता आपूर्तिकर्ताक बिल, खाता-नाम आ वितरण-पर्चीसँ मिलैत अछि। एहि स्थानीय सत्यापनसँ एखन विशिष्ट भुगतानक सम्भावित वैध कारण अधिक स्पष्ट भेल; करारक सम्पूर्ण लाभकारी स्वामित्व अद्यापि एहि तथ्यसँ सिद्ध नहि। ई द्वैध सावधानी उपन्यासक आवश्यक तर्क अछि। पहिल दिन सादृश्य मात्र प्रश्न उठौने छल; दोसर दिन स्वतंत्र बिल आ पर्ची उत्तरक एक सीमित अंश दैत अछि। कथा एतय केवल उपमानक जोखिम

नहि, उपमानक उचित उपयोग सेहो देखबैत अछि: सन्देह उचित प्रश्न बनय, प्रश्न अभिलेख मँगाओ, अभिलेख कारणक एक हिस्सा स्पष्ट करय।

एही समापनक बीच चीनी समन्वयक मकाऊक क्षेत्रीय विक्रेता-बैसार लेल दू दिनक सम्भावित यात्रा आ नोएडाक तुलनामे अधिक पारिश्रमिकक प्रस्ताव दैत अछि। प्रस्तावमे मैंडरिन-कैंटनिज भाषा-सहायता, विक्रेता-व्यवहार आ अभिलेख पढ़बाक कार्य अछि; यात्रा आ अन्तिम कानूनी स्वीकृति एखन बाकी अछि। शशांक राशि पर पहिने दृष्टि स्थिर करैत अछि। मृणालक प्रश्न पर ओ आरम्भे 'स्थान' कहैत अछि, फेर 'राशि' स्वीकार करैत अछि। ई छोट आत्मसुधार दृश्यक आन्तरिक सत्य अछि: नायक सही उत्तरक नैतिक नियम जानैत अछि, तथापि लोभक क्षणमे अपन पहिल इच्छाकेँ सुसंस्कृत शब्दसँ ढाँपबाक आदत तुरन्त नहि छूटल। मृणाल एहि असुविधाजनक स्वीकारक मित्र रूपमे उपस्थित अछि।

प्रस्तावक अस्थायी अभिलेख-प्रवेश आ पुरान मकाऊक सीमित सर्वर-अनुभव बीच संरचनात्मक समानता अछि। यात्रा, अधिक शुल्क, तकनीकी सूची आ सीमित पटल दुनू ठाम भेटैत अछि। मुदा नायक दू स्तम्भ बनबैत अछि—समानता आ भिन्नता/अज्ञात। पुरान अनुभवक आधार पर नव प्रस्तावकेँ स्वतः अपराध-संलग्न कहब अनुचित; समान ढाँचा देखिकऽ ओकर सुरक्षा पूर्णतः निश्चित कहब सेहो अनुचित। एतय उपमान निर्णयक पर्याय नहि, तुलनात्मक परीक्षणक आरम्भबिन्दु अछि। ई प्रक्रिया विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक मर्यादा सेहो देखबैत अछि: समान भूगोल अथवा व्यापारिक शिल्प एकहि इतिहास वा एकहि अपराधक प्रमाण नहि।

कम्पनी सात दिनक सीमित, पढ़बाक मात्र प्रवेश-पत्र दैत अछि। पटलपर तीन अधिकृत खण्ड खुलैत अछि—बैसारक कार्यक्रम, विक्रेता-सूची, द्विभाषिक अभिलेख। चौठ खण्डक नाम देखाइत अछि, मुदा खोलबाक अनुमति नहि। शशांक ओहि प्रतिबन्धित खण्ड पर क्लिक नहि करैत, न ओकर छवि बचबैत अछि। पुरान सीमा-बाह्य खोजक बाद ई एक ठोस व्यवहारगत परिवर्तन

अछि। कथाकार पात्रक भीतर बाँचल जिज्ञासा आ विशेष पहुँचक गर्व सेहो स्पष्ट करैत छथि। केवल निषेधक पालन चरित्र-विकासक एक पक्ष अछि; प्रतिबन्ध मानितहुँ अनन्य पहुँचक मानसिक नशा अनुभव करब दोसर। 'अस्थायी प्रवेश'कें 'विशेष प्रवेश' बनएबाक लोभ पात्रक आत्मकथात्मक शब्द-चयनमे उपस्थित रहैत अछि।

नोएडाक करार औपचारिक रूपेँ सम्पन्न होइत अछि—निरीक्षणपत्रपर हस्ताक्षर, शेष भुगतानक लिखित निर्देश, सामग्रीक बिलक अनुसार आपूर्तिकर्ताकेँ देबाक व्यवस्था। पहिनुक अनाम फोनक दोसर कॉल नहि अबैत; कम्पनीक सुरक्षा विभाग स्रोतक कोनो निश्चित निष्कर्ष नहि दैत। एहि अपूर्णता कें लेखक जानि-बुझि राखैत छथि: भयक कारण अजस्र संभावना खुलल रहि सकैत अछि, मुदा नव सूचना नहि भेटिते अतीतक अस्पष्ट कथनक गूढ़ कथा गढ़ब अनुचित। शशांकक हाथमे आब दू कागज अछि—पूरा भेल छोट करार आ अनिश्चित पैघ प्रस्ताव। पहिल कागज श्रमक अभिलेख अछि; दोसर सम्भावित भविष्यमे प्रवेशक दस्तावेज। वस्तुगत काजक प्रमाण आ मानसिक लोभक दर्पणक एहि द्वैतमे शिल्पगत बल अछि।

भारतीय रस-सन्दर्भमे अधिक पारिश्रमिकक चमक आ पुरान त्रुटिक लज्जा मिलि संकोचपूर्ण उत्कण्ठा बनबैत अछि। ध्वनिदृष्टिसँ पटलपर चौठ खण्डक बंद रहब अधिक जानबाक चाहक रूपक अछि; मृणालक 'तीन खण्ड' सुनि चौठक अनुमान करब मित्रक शशांकक मौन पढ़बाक क्षमता देखबैत अछि, सर्वर-पटलक बाह्य रहस्य नहि। कलात्मक सीमा ई जे नायकक नोटबुकमे समानता-भिन्नताक बारम्बार पञ्जी कथाक सहजगति रोकैत अछि; तथापि राशि पर अटकल दृष्टि, तीन खुलल आ एक बन्द खण्ड, मरम्मतक अन्तिम निरीक्षण आ राघवक समीक्षाक उल्लेख आगूक कथासंरचना प्रभावकारी रूपेँ रचैत अछि। अध्याय एतबे सिद्ध करैत अछि जे एक करार सम्पन्न भेल आ दोसर प्रस्ताव आयल; प्रस्तावक वास्तविक उद्देश्य आ अन्तिम यात्रा एखन निश्चित नहि।

## अध्याय २९ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया ३ : समन्वय-सहायताक अस्पष्टता, गोपनीयताक सीमा आ भयक भाषा

उनतीसम अध्यायमे मकाऊक प्रस्ताव-संबन्धी गोपनीयता-पत्र राघव भसीनक समीक्षा-संग प्राप्त होइत अछि। आरम्भिक धारा भाषा-सहायताकेँ अनुवाद आ अधिकृत अभिलेख-व्याख्या धरि सीमित करैत अछि, मुदा ‘आवश्यकता पड़लापर पक्षकारसभक बीच समन्वय-सहायता’क अतिरिक्त पाँति शशांककेँ रोकैत अछि। नोएडाक साधारण समन्वय समय, कारीगर आ सामग्रीक काज छल; मकाऊक व्यापारी बैसारमे समान पद वित्तीय अथवा अधिकार-सम्बन्धी भूमिका धरि फैलि सकैत अछि। एहि सम्भावना सँ निश्चित अनुचित काज सिद्ध नहि, मुदा लिखित सीमा माँगबाक पर्याप्त कारण उत्पन्न होइत अछि। लेखक वृहत्तर अपराधक कल्पना थोपबाक बदला करारक दू शब्दमे कथाक जोखिम केन्द्रित करैत छथि।

शशांक राघवक कार्यालयमे प्रश्न भेजैत अछि—समन्वय समय-सारिणी, स्थान, अभिलेख-सञ्चार आ भाषा धरि सीमित अछि कि वित्तीय निर्णय आ कानूनी प्रतिनिधित्व सेहो शामिल? ओ उत्तर आबैत धरि हस्ताक्षर रोकैत अछि। मृणाल एहि विलम्बमे नायकक आर्थिक आकर्षणक उपस्थिति पहिचानैत अछि। बृहत्तर पारिश्रमिकक लोभ समाप्त भेल नहि, मुदा एही लोभक कारण शशांक स्वयंकेँ विशेष रोक लगबैत अछि। कथाक नैतिक सत्य एतय आत्मसंयमक ठोस क्रियामे अछि: केवल ‘हम सावधान छी’ कहि पर्याप्त नहि; अस्पष्ट धारा संशोधित भेल बिना सहमति नहि देब। ई चरित्रक विश्वासनीय क्रियात्मक प्रगति अछि।

राघव प्रारम्भिक ‘समन्वय-सहायता’ अत्यधिक चौड़ी मानैत छथि। संशोधित धारा बैठक-समय, अभिलेख-सञ्चार, अधिकृत भाषा-सहायता आ पूर्वनिर्धारित प्रशासनिक व्यवस्था लिखैत अछि; वित्तीय निर्णय, भुगतान-निर्देश, स्वामित्व-प्रतिनिधित्व आ कानूनी मत देबाक कार्य बाहर रहैत अछि।

एकर साहित्यिक महत्त्व ई जे पहिनुक प्रतिनिधि/लाभकारी स्वामीक पदभेद आब नायकक निजी कार्य-सीमामे प्रयुक्त होइत अछि। ज्ञान जे पहिने अभिलेख पढ़बाक साधन छल, ओ अपन अधिकार निर्दिष्ट करबाक माध्यम बनि रहल अछि। राघव स्पष्ट करैत छथि जे ककरो भुगतान-विन्यास वैध अछि कि नहि, ई प्रश्नक उत्तर शशांक भाषिक सहायक रूपमे नहि देत।

राघवक गोपनीयता सम्बन्धी विचारमे दोसर भेद अछि। वास्तविक कानूनी परामर्शक सुरक्षा आ अधिवक्ताक नामक आड़मे अनुचित काज सम्पन्न करबाक सम्भावना एक नहि। ओ प्रत्येक परिस्थिति, नियुक्तिसम्बन्ध आ विधिक नियमकेँ महत्त्व दैत छथि। शशांक राघवकेँ पहिनेसँ जानैत अछि, मुदा एके व्यक्तिसँ दू अवसरपर बात कएलाक कारण कानूनी ग्राहक-संबन्ध स्वतः एके प्रकारक नहि बनैत। एतय उपमानक अतिप्रयोग स्वयं शशांकक सोचमे पकड़ल जाइत अछि। अधिवक्ताक उपस्थितिक औपचारिक चिह्नक आधार पर गोपनीयताक सर्वग्रासी आवरण मानि लेब न्यायिक प्रश्नक स्थानपर मानसिक सुविधा राखब होयत। कथा ई सम्भावना पर प्रश्न उठबैत अछि; कोनो सार्वभौम कानूनी निर्णय घोषित नहि करैत।

एहि विचारक बीच दोसर अज्ञात फोन अबैत अछि—‘मकाऊ जा रहल छी?’ आ ‘आगाँ सेहो सहयोग रहत तँ सभ सरल रहत’। पहिनुक ‘क्षेत्रक व्यवस्था’क फोनसँ शब्द-रचना आ लयक कुछ साम्य देखाइत अछि, मुदा संख्या अलग अछि, वक्ताक पहचान निश्चित नहि। शशांक समय, कथन आ प्रभाव दर्ज करबैत अछि; आदित्य फोनकर्ता समान मानबाक स्थानपर ‘लय समान लगल’ लिखबाक आग्रह करैत अछि। ई छोट वाक्य नायकक भयक सम्मान करैत अछि, मुदा भयकेँ स्रोत-पहिचानक प्रमाण नहि बनबैत। ‘सभ सरल रहत’क अस्पष्टता सम्भावित दबावक परीक्षणयोग्य संकेत होय सकैत अछि, किन्तु स्पष्ट धन-माँग वा अपराध-स्वीकार मूल पाठमे अनुपस्थित अछि।

संशोधित पत्रमे ‘सन्देश पहुँचा सकैत छथि’क धारा फेर प्रश्न उत्पन्न करैत अछि। राघव अधिकृत, अभिलेखित संदेश पहुँचेनाइ आ संदेश बदलि/नुका

कऽ/अपन नामसँ कहबाक बीच सीमा खींचैत छथि। शशांक लिखित अथवा सभक साम्हिन कहल अधिकृत संदेश धरि अपन कार्य सीमित करबाक आग्रह करैत अछि। एहि क्रममे 'पहुँचेनाइ'क भाषिक निष्पक्षता पुनः विवादक विषय बनैत अछि: संदेशवाहकक भूमिका मे विषयवस्तु पर स्वतन्त्र अर्थनिर्णयक अधिकार निहित नहि। ई विचार अध्याय २१क निजी फुसफुसाहटक दुविधाक अगिला व्यावसायिक रूप अछि। पात्र जे सुनैत अछि, ओहि कथनक सही स्वरूप सुरक्षित रखबाक संकल्प करैत अछि।

पितमपुराक जुलियाना शशांककेँ भयक अपमान नहि करबाक सलाह दैत छथि। भय शरीरक सूचना भऽ सकैत अछि, मुदा ओ बाहरी वस्तुक वास्तविक गुण बतबैत अछि कि पुरान घाव खोलैत अछि—ई दू प्रश्न अलग अछि। पहिल नोएडा फोन, मकाऊक पुरान सीमा-उल्लंघन आ नव यात्राक आकर्षण नायकक वर्तमान बेचैनीमे एक संग सक्रिय अछि। पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक आख्यानक दृष्टिसँ एतय स्मृतिक पुनरागमन वर्तमान घटनाक अर्थ पर छाया डालैत अछि; नव्य न्यायीय विवेक ओहि भावकेँ अस्वीकार नहि, तथ्यगत निष्कर्ष सँ पृथक करैत अछि। जुलियानाक कथन बाह्य आरोपक अदालत नहि; भीतरी भयक वर्गीकरणक शिक्षा अछि।

अन्तमे शशांक लिखित चारि सीमा अपन कथनक ढाँचा बनबैत अछि आ हस्ताक्षर करैत अछि। महत्त्वपूर्ण ई जे भय समाप्त भेल नहि; संशोधित भूमिकाक सीमासभ स्पष्ट भेल अछि। राघवक सल्लाह, आदित्यक अभिलेख-परीक्षण, मृणालक आत्मीय प्रश्न आ जुलियानाक मनोवैज्ञानिक संकेत अलग-अलग काम करैत अछि। एही चारूकेँ एक सर्वज्ञ नैतिक आवाज रूपमे पढ़लासँ पात्रसभक वास्तविक भिन्नता कम पड़त; मुदा ओकर सभक सावधानी समान प्रकारक होने कथानक किछु ठाम शिक्षण संवाद सन बनैत अछि—ई कलात्मक सीमा अछि। तथापि करारक वास्तविक संशोधित पाँति आ दोसर फोनक स्रोत-अनिश्चितता प्रसंगक ठोस आधार रखैत अछि। अन्तिम वाक्यमे अगिला सरकारी टिप्पणीक संकेत कथाक निजी भयकेँ संस्थागत सत्यापनक नव चक्रसँ जोड़ैत अछि।

## अध्याय ३० — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया ४ : ‘सिद्ध नहि’क कटौती, आधा उद्धरण आ संस्थागत विश्वासघातक प्रश्न

तीसम अध्यायमे आदित्यक मेजपर सरकारी आन्तरिक टिप्पणीक दू वाक्य पाठककेँ एक असहज भाषिक अन्तरक साम्हिन रखैत अछि। मूल जाँच-दलक टिप्पणी कहैत अछि जे विक्रेता-भुगतान आ वास्तविक लाभकारी स्वामित्वक सम्बन्धक सत्यापन अपूर्ण अछि; ऊपरक सारांश कहैत अछि जे वर्तमान सामग्रीमे प्रत्यक्ष राजस्व-सम्बन्ध स्थापित नहि। पहिल कथन अधूरा परीक्षणक वर्तमान स्थिति बतबैत अछि, दोसराकेँ पाठक सम्बन्ध उपलब्ध नहि होयबाक निष्कर्षक रूपमे पढ़ि सकैत अछि। एहि दू अर्थक अन्तर प्रशासनिक प्राथमिकता घटेबाक सुझावसँ जुड़ैत अछि। उपन्यास प्रश्न उठबैत अछि जे संक्षेपण कब अर्थक अनुचित परिवर्तन बनैत अछि, आ कब मात्र संक्षिप्त सूचना रहैत अछि। ई निर्णय मूल-सारांशक तुलनात्मक पठन मांगैत अछि; केवल कटौती देखिकऽ लेखकक जानि-बुझि दूषित उद्देश्य सिद्ध नहि।

आदित्यक पहिल प्रतिक्रिया आरोप, क्रोध अथवा तत्काल फोन नहि; दू प्रति सुरक्षित करब, प्राप्तिक समय लिखब आ सम्पादन-क्रम सत्यापित करबाक निर्देश अछि। ई कथात्मक संयम अदालतिक प्रतिपरीक्षाक बाद प्रशासनिक जीवनमे प्रमाण-नैतिकताक निरन्तरता अछि। ‘पहिचान एखन सिद्ध नहि’ आ ‘पहिचान नहि’क अन्तर पूछैत आदित्य शशांककेँ भाव-संवेग सँ पहिने अर्थगत प्रस्थान-बिन्दु चिह्नबबैत अछि। शशांक पहिल वाक्यकेँ प्रमाणक अवस्था, दोसरकेँ वस्तुक अनुपस्थितिक दावा मानि पढ़बाक सम्भावना बतबैत अछि। नव्य न्यायीय दृष्टिसँ एतय निषेध आ असिद्धिक भेद अछि: कोनो सम्बन्धक प्रमाण एखन नहि भेटल, एहि कारण सम्बन्धक अस्तित्व असम्भव वा शून्य होयब सिद्ध नहि। एहन भेदकेँ मेटा देब प्रमाणाभावकेँ अभाव-प्रमाण बना देबाक जोखिम अछि।

शशांकक अपन पुरान टिप्पणीक सारांश सेहो कटि गेल अछि। मूलमे चीनी पद वास्तविक नियन्त्रण दिस संकेत दैत अछि, मुदा लाभकारी स्वामी सिद्ध करबाक लेल स्वामित्व, नियन्त्रण आ लाभक पृथक अभिलेख आवश्यक कहल गेल छल। ऊपरक संक्षेपमे केवल अनुवादक लाभकारी स्वामित्वक 'संकेत पाओल' बचल अछि। एहिसँ नायकक सावधानीक मुख्य शर्त हटि गेल; ओकरा स्वतः निश्चित निष्कर्षक समर्थक बुझबाक खतरा बढ़ल। शशांकक क्रोध एतय केवल प्रतिष्ठाक चोट नहि, अपन शब्द पर दोसर द्वारा कएल अर्थ-विस्तारक अनुभव अछि। आदित्य अर्थगत विकृतिक सम्भावना स्वीकार करैत, किन्तु सम्पादकक आपराधिक अथवा जानि-बुझि उद्देश्य पर निर्णय रोकी रखैत अछि। ई रोक संक्षेपणक परिणाम आ रचयिताक मनोदशाक स्वतंत्र परीक्षण पर आधारित अछि।

शशांक 'विश्वासघात' अनुभव करैत अछि। आदित्य भावक नाम बतबबैत अछि—क्रोध, अपमान, विश्वासघात—फेर अलग प्रश्न रखैत अछि: पूरा वाक्य ककरा उपलब्ध छल, छोट सारांश ककरा बनाओल, सीमा कहिया हटाओल गेल, आ ककर स्वीकृति छल। एहि प्रश्नसभक क्रम मनोवैज्ञानिक आ ऐतिहासिक दुनू अछि। अनुभव वास्तविक भऽ सकैत अछि, मुदा दोषी व्यक्तिक पहचान स्वतंत्र स्रोतसँ करबाक रहैत अछि। बीसम अध्यायसँ चलि रहल आत्ममुग्धताक प्रश्न एतय उलटि गेल अछि: जे अनुवादक पहिने अपन प्रसंग-बोध पर आवश्यकता सँ अधिक भरोसा करैत छल, ओ आब अपन सावधान प्रसंगकेँ कटि गेल देखैत अछि। एहि दुखमे ओकर पुरान त्रुटिक नैतिक स्मृति सेहो समाहित अछि।

निचला आयुक्तालयक दू अधिकारी मौखिक प्राथमिकता-निर्देशक अनुभव सुनबैत छथि। एक अधिकारी फोनक कथन अधिक पूर्ण सुनने छथि, दोसर अन्तिम अंश मात्र; लिखित हस्तान्तरण, विशिष्ट क्रमाङ्क आ पुष्ट स्रोत उपलब्ध नहि। निरीक्षक 'फाइल दबाओल जा रहल अछि' अनुमान करैत अछि। आदित्य एहन सम्भावना जाँच योग्य मानैत, मुदा एखन सिद्ध स्थिति नहि। ओ अधिकारीसभकेँ वैध अधिकारक भीतर पूर्व अभिलेख-माँग जारी

रखबाक कहैत अछि, मूल टिप्पणी मनमाने बदलबाक नहि। ‘प्रतिरोध नहि, अभिलेख-अनुशासन’क संवाद एहि प्रसंगक मुख्य संस्थागत मूल्य उजागर करैत अछि। एहि वाक्यक अर्थ ई नहि जे सभ मौखिक निर्देशक अस्तित्व असम्भव; ई जे कोनो अस्पष्ट कथनक आधार पर सरकारी फाइलमे सत्यापनक प्रश्न स्वतः मेटि नहि सकैत।

आदित्य शशांकसँ मूल अनुवादक पूर्ण प्रति, दिनाङ्क, प्रेषक, प्राप्तकर्ता आ सम्भावित संशोधनसभ माँगैत अछि। एतय नायकक आत्मरक्षाक नब परीक्षा अछि, कारण पूरा संग्रहमे ओकर पूर्व त्रुटिसभ सेहो अभिलेखित अछि। शशांक पूरा सामग्री देबाक निर्णय करैत अछि। सत्यापनक मूल सन्दर्भ बचायब लेल केवल अपन हितसाधक पाँति चुनब पर्याप्त नहि—ई मूल प्रसंगक नैतिक केन्द्र अछि। मृणाल ओकरा याद करबैत अछि जे प्रश्न घटेबाक लेल शशांक पहिने भाषा मुलायम करैत छल। ओ अपन पुरान कार्यक सम्पूर्ण प्रतिफल नहि नकारैत, मुदा नये संक्षेपणक विकृतिक अनुभवमे अपन अतीतक साम्य पहचानैत अछि। मित्रक कथन मनोवैज्ञानिक अएना अछि, ककरो दोषक कानूनी घोषणा नहि।

शशांक पुरान संग्रहमे कम्पनीक सहायक द्वारा बनाओल ‘भारतीय पक्ष लेल छोट रूप’ भेटैत अछि, जाहिमे मूल टिप्पणीक सीमा पहिले सँ अनुपस्थित अछि। एहि साक्ष्यक कारण स्रोत-संक्रमणक सम्भावित कड़ी देखाइत अछि, मुदा सरकारी सारांश एहि छोट रूपसँ बनल कि स्वतंत्र रूपेँ एके कटौती भेल, से निश्चित नहि। शशांक आदित्यकेँ भाषिक समानता बतबैत अछि, स्रोत-समानता नहि। एहि विशिष्ट विभाजनमे उपन्यासक शिल्पक अनुशासन अत्यन्त सटीक अछि: दू पाठमे एके अनुपस्थित पद भेटलासँ पाठ-वंशावलीक सम्बन्ध सिद्ध नहि। स्वतंत्र समान संक्षेपण, पाठ-प्रवाह अथवा आन माध्यमक सम्भावना जाँचब शेष अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे एहि दोहर कटौतीकेँ अलग-अलग काल आ संस्थामे राखि तखन अभिलेखीय छेदन खोजब चाही; सहकालिक अथवा साम्य मात्र कारण नहि।

भारतीय विद्या भवनक पुरान शिक्षकक ‘पूरा वाक्य फेर साम्हिन राखू’ निर्देश उपन्यासक आवर्ती ज्ञानपरम्पराकेँ छोट किन्तु प्रभावकारी रूपमे जोड़ैत अछि।

शिक्षक शशांककेँ क्रोधमे नव अर्थ नहि जोड़बाक कहैत छथि। एहि दृश्यसँ मूल पाठक संरक्षणक नैतिकता स्पष्ट होइत अछि। निचला कार्यालय अपन अभिलेख-माँग प्रभावी रहबाक लिखित पाँति जोड़ैत अछि—सक्षम प्राधिकारीसँ विपरीत निर्देश प्राप्त नहि भेला धरि। एहि क्षणमे जाँचक निरन्तरता ककरो विरुद्ध सार्वजनिक घोषणासँ नहि, स्पष्ट कार्यालयी वाक्यसँ सुरक्षित होइत अछि। मुदा उपन्यास तुरन्त एही भरोसाकेँ नव समाचारक संकटसँ जाँचैत अछि।

संवाददाता शशांकक ‘मुख्य भाषिक संयोजक’ नामक कथित मुहरबन्द सामग्री पर प्रतिक्रिया माँगैत अछि, मुदा पूरा वाक्य अथवा स्रोत नहि बतबैत। शशांक अधूरा उद्धरण पर उत्तर नहि दैत, फेर आदित्यकेँ ठीक शब्द पठबैत अछि। एतय अध्याय २३क समाचार-विस्तारक पुनरागमन अछि, मुदा नायकक प्रतिवाद बदलल अछि। पहिने ओ ‘सभ मिथ्या’ लिखय चाहैत छल; आब पूरा मूल वाक्य मँगैत अछि। एहि बदलल प्रतिक्रियाक कारण चरित्र-विकास सिद्धान्तक पुनरावृत्ति नहि, व्यवहारगत परिवर्तन अछि। तथापि संवाददाताक गोपनीय स्रोतक उल्लेखसँ मुहरबन्द मूल दस्तावेजक अनधिकृत अभिगम सिद्ध नहि होइत; ई अलग जाँचक प्रश्न अछि।

रस आ कथन-दृष्टिसँ एहि अध्यायमे विश्वासघातक अनुभूति, अपमानक चोट आ अभिलेखीय धैर्य साथ चलैत अछि। ‘पूरा वाक्य’ आवर्ती प्रतीक अछि: कखनहि मूल अनुवाद, कखन सरकारी सारांश, कखन पत्रकारक उद्धरण—सभकेँ काटि देल सीमासँ कथा आकार बदलैत अछि। आलोचनात्मक सीमा ई जे मूल-सारांशक अर्थभेदक सूत्र कई स्थानपर एके तरह दोहरायल अछि, अधिकारी आ गुरु पुनः स्पष्ट रूपसँ पाठ सिखबैत छथि। मुदा चारि चरण—सरकारी सारांश, शशांकक कटायल शर्त, पुरान कम्पनी-संक्षेप आ पत्रकारक अपूर्ण उद्धरण—एकर पाठीय सघनता बढ़बैत अछि। अन्तिम पाँति अगिला बिहान समाचार-पृष्ठपर नाम प्रकाशित होयबाक सूचना दैत अछि; एखन ओकर पूर्ण सामग्री एहि अध्यायमे प्रस्तुत नहि। समीक्षा ई नहि गढ़ि सकैत जे ओ समाचारमे की अन्तिम आरोप आयल। एहि अध्यायक उपलब्धि

विश्वासघातक पीड़ाकेँ कथामे सजीव रखैतहिँ अपराधक निश्चित व्यक्ति-नाम लिखबासँ बचेबाक प्रमाण-विवेक अछि।

## अध्याय २६-३० : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — नामक सम्बन्धसँ व्यापारक छाया आ आधा उद्धरण धरि

छब्बीसमसँ तीसम अध्याय उपन्यासक दू शृंखला बीच रचनात्मक सेतु अछि। अध्याय २६ 'भाषाक साधना'क अन्तिम भागमे प्रतिनिधित्व, भुगतान, नियंत्रण आ लाभकारी स्वामित्वक पदभेद स्पष्ट करैत अछि। अध्याय २७ नोएडाक छोट मरम्मत-काजक आरम्भक संग ओही पदकेँ व्यावहारिक भुगतान-पथमे जाँचैत अछि। अध्याय २८ ओहि मरम्मतक समापन आ सम्भावित मकाऊ यात्राक आकर्षण प्रस्तुत करैत अछि। अध्याय २९क गोपनीयता-पत्रमे कामक सीमा लिखल जाइत अछि, आ अध्याय ३०मे संस्थागत सारांशक कटौती अनुवादकक अपन शब्दकेँ विवादित करैत अछि। एही क्रममे भाषा–श्रम–धन–अधिकार–अभिलेख पाँच परत एके नायकक अनुभवमे क्रमशः उपस्थित होइत अछि।

समानता आ पहचानक भेद। छब्बीसम अध्यायमे प्रतिनिधि वा समान रोमन नाम देखिते स्वामित्व अथवा व्यक्तिक एकता सिद्ध नहि। सत्ताइसममे फुलल पटरा देखिते पुरान रिसावक कारण लागू नहि; तेसर भुगतान-खाता देखिते अवैध पथ सिद्ध नहि। अठाइसममे मकाऊ यात्रा आ सीमित सर्वर-प्रवेशक पुरान अनुभव नव प्रस्तावक आपराधिक उद्देश्य सिद्ध नहि करैत। उनतीसममे दू अस्पष्ट फोनक लयक साम्य एके फोनकर्ता साबित नहि, आ राघवक व्यक्ति-पहिचान दू कानूनी सम्बन्धक एकरूपता नहि। तीसममे दू सारांशक समान कटौती एके स्रोत-शृंखलाक प्रमाण नहि। ई पाँच प्रसंग 'उपमान'क उपयोगी आ खतरनाक रूपकेँ क्रमशः खोलैत अछि। समानताकेँ जाँचक संकेत राखब उचित, पहचानक निर्णायक प्रमाण बनब अनुचित।

करारक शब्द आ आर्थिक जीवन। मरम्मतक निरीक्षण बनाम सन्तोषजनक समापन, वास्तविक बिल बनाम स्वीकृत लागत, आवश्यक अंश बदलनाइ बनाम पूर्ण प्रतिस्थापन—ई तीन द्वन्द्व दिखबैत अछि जे मामूली व्यापारिक भाषा वास्तविक श्रमक पारिश्रमिक आ जिम्मेदारी निर्धारित करैत अछि। एहि प्रसंगमे स्थानीय कारीगरक कार्य, कम्पनीक चीनी समन्वयकक अपेक्षा आ शशांकक भाषिक मध्यस्थता सामाजिक सम्बन्ध बनबैत अछि। पाश्चात्य

यथार्थवादी दृष्टिसँ काठक पटरा, वातानुकूलनक निकास, बिल आ निरीक्षण-पत्रक ठोस वस्तुसभ अमूर्त बहुराष्ट्रीय कारोबारक भौतिक आधार देखबैत अछि। लेखकक कलात्मक सफलतामे ई सामग्री महत्त्वपूर्ण अछि; जँ केवल उपदेशात्मक नियम छोड़ि देल जाए तँ नोएडाक श्रमलोकक दृश्य गुमि जाएत।

महत्त्वाकांक्षाक भिन्न अवस्था। अध्याय २६मे सही चीनी शब्दक भेद पकड़बाक आनन्द नायककेँ 'हमरे बिना ई नहि खुलत' सन गर्वक समीप अनैत अछि; ओ स्वतंत्र पुनःजाँच माँगि अपन गर्व सीमित करैत अछि। अध्याय २७मे योग्य समन्वयकक कामक सुख अछि। अध्याय २८मे अधिक पारिश्रमिक, मकाऊ यात्रा आ सीमित प्रवेश ओकरा फेर आकर्षित करैत अछि; ओ पहिल दृष्टि राशि पर पड़बाक स्वीकार करैत अछि। अध्याय २९मे एहि लोभक अस्तित्वे लिखित सीमा मँगाएबाक अधिक आवश्यकता पैदा करैत अछि। तीसममे अपन सावधानी कटि गेल देखिकऽ आत्मसम्मान आ अपमानक टकराव सामने अबैत अछि। शशांकक इच्छा एतय लुप्त नहि; ओकर आत्मप्रमाण-विवेक बारम्बार ओकरा प्रश्न करैत अछि। एहि पुनरावृत्तिमे मनुष्यक चरित्रक गतिशीलता अछि, मुदा प्रत्येक दृश्यकेँ 'पाठ सीखल'क परिणाम बना देबाक जोखिम सेहो अछि।

गोपनीयता, स्रोत आ अधूरा वाक्य। अध्याय २९क 'समन्वय-सहायता' लिखित रूपमे संकुचित होइत अछि; व्यक्ति अपन वैध सीमा पूर्वे स्पष्ट करबय चाहैत अछि। अध्याय ३०मे 'सत्यापन अपूर्ण'क स्थाने 'सम्बन्ध स्थापित नहि'क सारांश आ शशांकक मूल शर्त हटाओल संक्षेपण अर्थगत विवादक कारण बनैत अछि। लिखित अनुबन्धमे भविष्यक कार्यसीमा पहिले ठीक करब आ जाँच-अभिलेखमे पहिले कएल कथनक सीमा बादमे बचायब—दुनू एके भाषिक जिम्मेदारीक आगू-पाछू अवस्था अछि। नायक आत्मरक्षामे संवाददाता लग पूरा उद्धरण माँगैत अछि, मुदा अपन पूर्व सामग्री सेहो पूरा देबाक निर्णय करैत अछि। एहि द्विपक्षीयता बिना ओकर सत्यनिष्ठा सुविधानुसार बदलि जाइत।

मृणाल, आदित्य, राघव आ जुलियानाक परस्पर सम्बन्ध। मृणाल अपन मित्रक वर्तमान आचरणकेँ पुरान दोषक उपमानसँ तय करबाक आग्रह नहि

करैत; लोभ पर प्रश्न करैत अछि आ लिखित सीमा मँगबाक साहस बढ़बैत अछि। आदित्य आदेशक स्रोत, प्रमाण-स्थिति, फोनक ठीक शब्द आ अनुवादक पूरा प्रति खोजैत अछि। राघव अधिवक्ताक भूमिका, गोपनीयता आ वित्तीय निर्णयक सीमा लिखबैत अछि। जुलियाना सही ज्ञानक गर्वकेँ सत्यक स्वामित्व बनबासँ रोकैत छथि, भयक भीतरी आ बाहरी कारण अलग चिह्नबैत छथि। एहि सह-पात्रसभक आचार-शिक्षामे परस्पर साम्य अछि; मुदा आलोचनाकेँ ई स्वीकार करबाक अछि जे कखनो एके अनुशासनक अत्यधिक स्पष्ट पुनरुक्तिसँ पात्रसभक स्वतन्त्रता संकुचित होइत अछि।

भारतीय, पाश्चात्य आ विदेह पद्धतिक सम्यक् उपयोग। उपमानक विषय भारतीय प्रमाणविचारक नाम मात्र नहि; पटरा, खाता, समान नाम, समान लय आ समान कटौतीक ठोस दृश्यसभमे ओकर सीमा प्रयोगात्मक रूपेँ उपस्थित अछि। रस-दृष्टिसँ भय, लोभ, शर्म, गर्व आ मित्रताक स्नेह एक-दोसराक विरोधमे नहि, एके पात्रक अन्तर्गतिक सहअस्तित्वमे अछि। ध्वनि-विचारमे नोएडाक ‘छाया’ केवल अनाम फोन नहि, शशांकक पूर्व अनुभवक दीर्घ स्मृति सेहो अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पठनमे मिथिला–दिल्ली–नोएडा–मकाऊ अलग सांस्कृतिक एवं संस्थागत स्थल रूपेँ उपस्थित अछि; तकर बीच पाठ-सम्बद्ध समानता अवश्य पढ़ल जाए, मुदा स्रोत-हीन ऐतिहासिक कारण अथवा आपराधिक सम्बन्ध नहि गढ़ल जाए।

एहि पाँच अध्यायक विशिष्ट उपलब्धि ई अछि जे भाषा-परीक्षाक कठोरता केवल राज्य-अभिलेखक गलियारामे नहि, वास्तविक जीविका, स्थानिक श्रम आ पेशागत अनुबन्धक बीच उतरैत अछि। अधिकारक अस्पष्ट पद संशोधित कएल जाइत अछि, सादृश्य केवल जाँचक कारण बनैत अछि, आ काटल गेल वाक्यक पूर्ण मूल फेर मँगाओल जाइत अछि। आख्यानक वास्तविक सीमा—प्रत्येक दृश्य पछाति अत्यधिक पद्धतिगत सूची आ समान शिक्षकवत् स्वर—देखाइत रहैत अछि, मुदा ई सीमा ओहि सत्यकेँ नहि मेटबैत जे लेखक तथ्यक सीमा, अनुभूतिक पीड़ा आ निष्कर्षक जिम्मेदारीकेँ अलग राखबाक आग्रह कएने छथि। तीसम अध्यायक अन्तिम समाचारसूचना अगिला कथा-

पड़ावक संकेत अछि; एहि बैचमे ओकर अनदेखल सामग्री अथवा दोषी व्यक्तिक नाम जोड़ब शोध-समीक्षाक अनुचित विस्तार होयत।

## अध्याय ३१ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया ५ : प्रश्नचिह्नक आरोप, पदबंधक बहुस्रोत आ अपमानक सीमित प्रतिवाद

एकतीसम अध्यायक आरम्भ सार्वजनिक समाचारक ओहि वक्र रचनासँ होइत अछि जाहिमे प्रश्नचिह्न उत्तरक भेष धारण करैत अछि। शशांक झाक नामक चारू कात नोएडाक मरम्मत-करार, प्रस्तावित मकाऊ-यात्रा, सीमित सर्वर-प्रवेश आ सरकारी जाँच एके अनुच्छेदमे रखल गेल अछि। एहिमे तथ्यक सहअवस्थान आ कारण-सम्बन्धक सिद्धि भिन्न अछि। शीर्षक ‘विदेशी भुगतान-जालक भाषिक कड़ी?’ पाठककेँ प्रश्न पूछबाक अवसर देबाक स्थानपर पहिने सँ सम्भावित दोषक दिशा देखबैत अछि। अध्याय शब्दक अर्थमात्र नहि, समाचार-पृष्ठक विन्यासकेँ ज्ञान-निर्माणक साधन रूपेँ पढ़बबैत अछि। पाठकक सम्मुख शशांकक दू संघर्ष अछि—अपमानक वास्तविक अनुभूति आ अपमानक प्रतिवाद करैत काल अपनहि भाषाकेँ असत्यसँ बचेनाइ।

समाचारमे ‘मुख्य भाषिक संयोजक’ पदबंध मुहरबन्द सरकारी सामग्रीसँ आयल होयबाक दावा अछि। शशांकक प्रथम प्रतिक्रिया समाचार ‘पूर्णतः मिथ्या’ कहि सार्वजनिक करबाक छल; मुदा प्रेषणक क्षणमे ओ रुकैत अछि। एहि रोकबाक क्षणमे कथा नायकक मानसिक विकासकेँ महत्त्वपूर्ण दृश्यात्मक रूप दैत अछि। नोएडामे ओकर वास्तविक भूमिका छल, मकाऊक प्रस्ताव प्राप्त भेल छल आ सीमित प्रवेश सेहो घटित भेल छल। ई सब नकारब तात्कालिक आत्मरक्षा भऽ सकैत छल, मुदा उपलब्ध सत्यक नकार होइत। तेँ ओ तीन सूची बनबैत अछि—जे लिखल अछि, जे स्वयं जानैत अछि, आ जे सिद्ध नहि। एहि छोट घरेलू क्रियामे सम्पूर्ण उपन्यासक न्यायबोध सूक्ष्म रूपेँ उपस्थित अछि।

मृणालक प्रवेश समाचारक भावात्मक पाठकेँ उपदेशसँ बेसी मित्रताक प्रतिपरीक्षामे बदलैत अछि। शशांककेँ मृणालक ‘पहिने किछु नहि लिखिह’ निर्देश शुरुआतमे कठोर लगैत अछि, कारण सार्वजनिक अपमान आत्म-सम्मानकेँ तत्काल प्रत्युत्तर देबाक लेल उकसाबैत अछि। मुदा मित्र स्पष्ट करैत अछि जे अपमानक समय मनुष्य अपन प्रतिवादक आकार आरोपक आकार जतेक बना लेबाक जोखिममे रहैत अछि। एहि वाक्यक शिल्पगत

अर्थ ई अछि जे कथाकार मृणालकेँ केवल सान्त्वनादाता नहि बनबैत छथि। ओ नायकक हितैषी अछि, किन्तु ओकर भावनाकेँ प्रमाणक अधिकार नहि दैत अछि। एहि ठाम सख्यभाव आ नैतिक कठोरताक सहस्थिति रचनाक उल्लेखनीय उपलब्धि अछि।

आदित्यक मेजपर लाल कलमसँ पाँच वाक्य रेखांकित करब न्यायीय ज्ञानक दृश्यात्मक अभिव्यक्ति अछि। नाम आ नोएडाक भाषा-सहायता तथ्य अछि; मकाऊ प्रस्तावक कागज भेटलासँ यात्रा सम्पन्न नहि मानल जा सकैत अछि; ‘मुख्य भाषिक संयोजक’क स्रोत जाँचबाक अछि; भुगतान-जाल सञ्चालनक दावा समर्थित नहि देखाइत। एहि पाँच स्तरसँ कथाकार समाचारक एकान्तिक वाक्य-विधान तोड़ि अभिलेखीय बहुलता उपस्थित करैत छथि। एक मुहरबन्द अनुवाद-सारांश आ जाँच आरम्भसँ पहिनेक कम्पनी ई-पत्र दुनूमे निकट पदबंध भेटब सर्वाधिक निर्णायक दृश्य अछि। समान शब्द ककरो हाथसँ गोपनीय सूचना बाहर गेल, से नहि बतबैत; स्रोत-सम्भावनाकेँ एकसँ बेसी बनबैत अछि।

नव्य न्यायीय विवेचनमे एकर केन्द्र उपमानक विषय आ अनुमानक हेतु बीचक दूरी अछि। समान पदबंध, समान व्यक्ति आ समान व्यावसायिक परिवेशकेँ एक संग रखितो मूल अभिलेखक उत्पत्ति, पहुँच-पञ्जी, कालक्रम आ प्रसार-पथक अतिरिक्त परीक्षण चाही। शशांक आ पाठक दुनू एक क्षण लेल संवाददाताकेँ झूठा सिद्ध करबाक उत्साहमे आबि सकैत छथि, मुदा आदित्य ओतयो निश्चित निष्कर्ष रोकैत अछि। गोपनीय स्रोत वास्तवमे रहि सकैत अछि; पुरान ई-पत्र वा मौखिक सार सेहो स्रोत भऽ सकैत अछि। कथाकार एहि प्रतिद्वन्द्वी सम्भावनासभकेँ सहअस्तित्व देलनि। ई असमाप्ति लेखकक अनिर्णय नहि, पात्र-ज्ञानक वर्तमान सीमा अछि।

राघव भसीन सार्वजनिक वक्तव्यकेँ केवल गैरगोपनीय आ समर्थित तथ्य धरि सीमित रखबाक सलाह दैत छथि। शशांक अन्ततः नोएडाक मरम्मत-काजक सीमित भाषिक-समन्वय, मकाऊक अभीतक प्रस्तावमात्र यात्रा, आ वित्तीय निर्णयमे लिखित अधिकारक अभाव स्पष्ट करैत अछि। मुदा मुहरबन्द सामग्रीक कथित अन्तर्वस्तु पर अनुमान नहि दैत अछि। एहि प्रसंगमे शब्द-

प्रमाणक विश्वसनीयता वक्ताक इच्छा मात्रसँ नहि, प्रत्यक्ष अनुभवक सीमा आ अभिलेखक प्रकारसँ निश्चित होइत अछि। अपन निर्दोषताक व्यापक घोषणा नहि, विशिष्ट दावाक अनुपातिक उत्तर एहि अध्यायक नैतिक निर्णायकता अछि।

भारतीय विद्या भवनमे शिक्षक द्वारा श्यामपट्टपर घटनास्थल लग उपस्थित रहब आ घटना स्वयं करबक बीच भेद देखाएब कथाक पूर्व शिक्षाकेँ नव रूपमे लौटबैत अछि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ ई दृश्य उपयोगी अछि, कारण पत्रकारिताक वाक्यविन्यासमे सहसम्बन्धकेँ अपराधगत कर्तृत्व बना देबाक जोखिम एतय प्रत्यक्ष रूप लेइत अछि। पितमपुराक ताओ मन्दिरमे जुलियाना नामपर लगाओल बाहरी अर्थ आ अपन कर्मपर नियन्त्रणक अन्तर स्पष्ट करैत छथि। समान बौद्धिक सूत्र तीन स्थल—सरकारी कार्यालय, कक्षा आ मन्दिर—मे भिन्न भावात्मक तापमान प्राप्त करैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पठनमे ई स्थल मिथिला-संस्कृत बौद्धिक संस्कार, महानगरीय रोजगार आ बाहरी व्यापारिक प्रभावक स्वतंत्र सामाजिक रेखा बनैत अछि; एकरे आधारपर वास्तविक अपराध-जालक इतिहास सिद्ध नहि कएल जा सकैत।

अध्यायक सर्वाधिक करुण क्षण समाचारक आर्थिक परिणाम अछि। नोएडाक अगिला छोट काज कम्पनीक आन्तरिक समीक्षा धरि रोकल जाइत अछि। शशांकक व्यथाकेँ मृणाल आसानीसँ नकारैत नहि; ओ पीड़ाकेँ स्वीकारैत अछि, किन्तु पीड़ासँ निकलल कारण-निष्कर्षकेँ प्रमाण नहि कहैत अछि। एहि संवादमे अपमान अमूर्त न्याय-विषय नहि रहि जीविकाक अनिश्चितता भऽ जाइत अछि। करुण रसक संग लज्जा आ क्षोभक संचार अछि, मुदा पात्रक सिसकीकेँ लेखक कोनो पक्षक दोषसिद्धिमे रूपान्तरित नहि करैत छथि। एहि संयमक कारण निजी अनुभवक प्रामाणिकता आ सरकारी जाँचक सीमा दुनू बचैत अछि।

कथात्मक शिल्पमे समाचार, पाँच रेखांकित वाक्य, सार्वजनिक वक्तव्य, शिक्षकक श्यामपट्ट आ रातिक नोटबुक एक-दोसराक भाषिक प्रतिरूप अछि। वस्तु-प्रतीकक क्रम नायकक आवेगसँ परीक्षण धरि गतिशीलता देखबैत अछि। तथापि कलात्मक सीमा सेहो स्पष्ट अछि—मृणाल, आदित्य, शिक्षक आ

जुलियाना क्रमशः समान ज्ञान-सिद्धान्तक अलग-अलग प्रतिनिधि बनि जाइत छथि; पात्र-वाणीमे स्वायत्त असहमति अपेक्षाकृत कम भेटैत अछि। नोटबुकक अन्तिम प्रमाण-श्रेणीकरण पाठकक लेल उपयोगी, मुदा बहुत स्पष्ट निष्कर्ष कहि देब कथारसक अनुगूँजकेँ सीमित करैत अछि। तैओ ई अध्याय उपन्यासक महत्त्वपूर्ण मोड़ अछि: नायक अपन अपमान नकारैत नहि, ओकरा तथ्य बनबाक अनधिकार सँ रोकैत अछि।

## अध्याय ३२ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया ६ : न्यायालयमे अनुवादक एकरूपताक स्वीकारोक्ति आ स्रोत-पहिचानक मर्यादा

बत्तीसम अध्याय पूर्वक समाचार-विवादकेँ न्यायालयक संस्थागत अनुशासनमे लऽ जाइत अछि। आरम्भे न्यायाधीश सुनवाईक परिधि सीमित करैत छथि —मुहरबन्द सामग्रीक सुरक्षा, प्रकाशित पदबंधक सम्भावित स्रोत आ प्रस्तुत सामग्रीक विश्वसनीयता; समाचारक पूर्ण सत्यता अथवा आपराधिक दोषक अन्तिम निर्णय नहि। एहि सीमाक घोषणा साहित्यिक रूपसँ महत्त्वपूर्ण अछि, कारण पाठक अदालतक नाटकीय अन्तिम विजयक अपेक्षा करि सकैत अछि। कथाकार ओहि अपेक्षाकेँ स्थगित करैत छथि आ प्रक्रिया स्वयं केँ कथानकक केन्द्र बनबैत छथि। सार्वजनिक अपमानक बाद शशांककेँ अपन भाषिक विशेषज्ञता बतयबाक अवसर भेटैत अछि, मुदा राघव भसीन ओकरा पुछल प्रश्न धरि उत्तर सीमित रखबाक सलाह दैत छथि।

मुख्य प्रतिपरीक्षामे पुरान कम्पनी ई-पत्र आ मुहरबन्द अभिलेखक अनुमत अंश दुनूमे एकहि भारतीय पदबंध ‘मुख्य भाषिक संयोजक’ भेटैत अछि। विपक्षी अधिवक्ता समान अनुवाद, समान व्यक्ति आ समान कम्पनी-सन्दर्भकेँ एके मूल स्रोतक सम्भावनाक पक्षमे रखैत छथि। शशांक स्पष्ट करैत अछि जे चीनी मूल पदबंध दुनू ठाम समान नहि छल; पहिल अभिव्यक्तिमे भाषा-समन्वयक अग्र सम्पर्क, दोसरमे मुख्य भाषा-सम्पर्कक जिम्मेदारीक भाव छल। निकट कार्यगत अर्थकेँ ओ पूर्वमे एकहि भारतीय पदबंधमे समेटने छल। एहि स्वीकारोक्तिमे केवल पदक सूक्ष्म व्याख्या नहि, अनुवादकक पुरान पद्धतिक सार्वजनिक परीक्षण अछि।

अध्यायक गहन मनोवैज्ञानिक उपलब्धि ओ क्षण अछि जखन अधिवक्ता प्रश्न करैत छथि जे अनुवादकक त्रुटिसँ उत्पन्न भ्रम लेल पाठक मात्र जिम्मेदार अछि कि नहि। शशांक सहज आत्मबचावक स्थानपर स्वीकार करैत अछि जे अलग मूल पदबंधक अनावश्यक एकरूपता ओकर अपन जिम्मेदारी छल। संगहि ओ ईहो कहैत अछि जे एहि त्रुटिसँ दुनू मूल स्रोत एक होएबाक निष्कर्ष नहि निकलैत। एहि दूहरा उत्तरक भीतर प्रायश्चित आ न्यायिक

आत्मरक्षाक दुर्लभ सन्तुलन अछि। जँ ओ सम्पूर्ण अनुवाद त्रुटिहीन कहित, आत्मालोचन टुटित; जँ सम्पूर्ण अपराधक भार अपन माथ लैत, प्रमाणक सीमा टुटित। ओ दुनू प्रलोभन रोकैत अछि।

प्रतिपरीक्षाक विस्तारमे नोएडा आ मकाऊक ‘समन्वय’ शब्द, सीमित सर्वर-प्रवेश, भुगतान-सन्देशमे नामक उपस्थिति आ लाभकारी स्वामित्व विषयक भाषा-सहायताक भिन्नता जाँचल जाइत अछि। एके शब्दक पुनरागमन एके अधिकार साबित नहि करैत, किन्तु अनुवादकक बारम्बार उपस्थिति जाँचक उचित प्रश्न बनि सकैत अछि। शशांक सेहो अपन भूमिकाकेँ कखनो भय वा प्रतिष्ठाक कारण छोट प्रस्तुत करबाक सम्भावना स्वीकार करैत अछि। एतय लेखक नायककेँ सर्वथा निर्दोष अथवा सर्वथा छलपूर्ण बनबासँ बचबैत छथि। एक व्यक्ति अपना बदलेल शब्दक जिम्मेदार भऽ सकैत अछि, जखनकि वित्तीय निर्णयाधिकार वा आपराधिक संलग्नता अलग प्रश्न रहैत अछि।

नव्य न्यायीय दृष्टिसँ ई अध्याय उपमानक प्रमेयकेँ विशिष्ट रूप दैत अछि: सादृश्य ज्ञानक प्रारम्भिक साधन होइत अछि, अभिन्नताक अन्तिम प्रमाण नहि। दू अभिलेखक ‘मुख्य भाषिक संयोजक’ पदबंध एक रूप अछि, मुदा ओकर मूल चीनी रचना, लेखक, तिथि, प्रेषण-पथ आ पहुँच-सूची अलग-अलग प्रमाण-विषय अछि। युक्तिक सम्भावित दोष समान लक्षण सँ स्रोतक अभिन्नता अनिवार्य मानि लेब अछि। आदित्यक सीमित कथन एहि न्याय-विवेककेँ प्रशासनिक व्यवहारमे बदलैत अछि: सन्देह जाँच खोलि सकैत अछि, निष्कर्ष नहि। अज्ञेयता स्वीकार करब शशांकक विकासक संकेत बनैत अछि; ‘एखन नहि’क उत्तर ओकर पूर्व सर्वज्ञताक इच्छासँ भिन्न अछि।

एहि अध्यायमे न्यायालयक साक्ष्य-वितर्कक संग भाषा-शिल्पक आत्मसमीक्षा सेहो चलैत अछि। शशांक पूर्वमे प्रश्न घटेबाक लेल शब्द नरम करबाक आ अस्पष्ट मूल वाक्यमे कर्ता जोड़बाक अनुभव स्वीकारैत अछि। ई त्रुटिसभक सम्भावित प्रभाव गंभीर अछि, मुदा लेखक बिना विशिष्ट कारण-श्रृंखला स्थापित कएने ओकरा अपराधक स्वयं सिद्ध प्रमाण नहि बनबैत छथि।

राघवक पुनः-परीक्षामे केवल ई स्थापित होइत अछि जे मूल चीनी प्रतिलिपि उपलब्ध अछि आ स्वतंत्र भाषा-विशेषज्ञ तुलना कऽ सकैत छथि। एहि लघु पुनः-परीक्षाक सौन्दर्य संयममे अछि: पक्षक अधिवक्ता नायककेँ भावुक भाषणसँ नहि, सत्यापनक खुलल मार्गसँ बचबैत छथि।

न्यायालयक अन्तरिम निर्देशमे मुहरबन्द सामग्रीक संरक्षण, मूल डिजिटल स्रोत, पहुँच-अभिलेख आ अनुवादक अलग-अलग संस्करण बचा कऽ रखबाक बात अबैत अछि। अदालत एहि चरणमे पदबंधक प्रकाशित स्रोत निश्चित नहि करैत; अनुवादकक जिम्मेदारीक प्रश्न सेहो खुलल रहैत अछि। एतय न्यायालयकेँ कथाकार अन्तिम नैतिक निर्णयक प्रतीक बनौने नहि छथि, बल्कि सीमित अधिकारवाली संस्था रूपमे देखौने छथि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक एक सजग उपयोग ई अछि जे चीनी व्यावसायिक मूल वाक्य, भारतीय अनुवाद-प्रक्रिया, कार्यालयक अभिलेख आ दिल्लीक समाचारक कालक्रमकेँ समानान्तर रखि वास्तविक सम्पर्क-बिन्दु खोजल जाए; भौगोलिक संगति स्वयं कारण नहि।

सुनवाईक बाद पत्रकारक द्विध्रुवीय प्रश्न—समाचार मिथ्या मानल गेल कि आरोप सत्य—उपन्यासक मीडिया-आलोचनाक प्रतिरूप अछि। शशांक दुनू निष्कर्ष अस्वीकार करैत अछि, कारण न्यायालय दुनूमे सँ कोनो निर्णय नहि देलक। पाश्चात्य आख्यानशास्त्रक दृष्टिसँ एहि दृश्यकेँ अनिर्णायक परिणति कहि सकैत छी, मुदा ई अनिर्णय प्रक्रियाक अपूर्ण अवस्थाक सटीक कलात्मक अनुकृति अछि। शशांकक भीतर राहत आ लज्जा एक संग उपस्थित अछि। सार्वजनिक आत्मस्वीकृतिक बाद रातिमे ओ पुरान अनुवाद-संग्रहक पाँच पदबंधक मूल अर्थ, प्रसंग, विकल्प आ अनिश्चितता अलग अंकित करैत अछि—प्रायश्चित भावुक घोषणा सँ संशोधनयोग्य काज बनैत अछि।

रचनाक सीमामे ई देखबाक अछि जे न्यायाधीश, राघव, आदित्य आ अन्ततः मृणाल प्रायः अति स्पष्ट प्रमाण-विवेकक भाषा बोलैत छथि। प्रतिपरीक्षा आ दैनन्दिन संवादक वास्तविक बेतरतीबी अपेक्षाकृत कम अछि; पाठककेँ

सिद्धान्त बारम्बार प्रत्यक्ष शब्दमे भेटैत अछि। तथापि समान अनुवादक भीतर अलग मूल, बौद्धिक गर्वक भीतर नैतिक लज्जा, आ अस्थायी राहतक भीतर शेष प्रश्न—एहि त्रयीसँ अध्यायक रचनात्मक तनाव बनल रहैत अछि। अन्तिम समनक सङ्ग शशांकक अज्ञेयता स्वीकार करबाक नव क्षमता फेर ओकर अपरिहार्य बनबाक पुरान इच्छासँ टकराबय लगैत अछि; एही विरोधाभास अगिला अध्यायक मनोवैज्ञानिक आधार अछि।

## अध्याय ३३ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया ७ : जब्ती-पञ्जीक सूक्ष्म भाषा, डिजिटल अभिलेख आ अपरिहार्य बनबाक व्यसन

तेतीसम अध्यायक आरम्भ औपचारिक समनक उपस्थितिसँ होइत अछि। शशांक लैपटॉप बन्द करैत अछि, दू बाहरी संग्रहण-उपकरण आ दूरभाष सहित सूचीबद्ध वस्तु अलग रखैत अछि आ फाइल न बदलबाक, न हटेबाक, न फेर नाम देबाक निर्देश मानैत अछि। एतय भयक दृश्य बाहरी सनसनीसँ नहि, घरक मेजपर रखल वस्तुक नीरवता सँ रचल गेल अछि। पूर्व अध्यायमे अदालत मूल प्रतिलिपिक संरक्षणक बात कहने छल; आब उपन्यास ओही आदेशक पदार्थगत रूप देखबैत अछि। पाठक वस्तुक निष्क्रियता आ ओकर सम्भावित प्रमाणगत शक्ति दुनू देखैत अछि।

आदित्यक पहिल स्पष्टता—जब्ती दण्ड नहि, संरक्षणक प्रक्रिया अछि—कथाक आन्तरिक विधि-विवेक स्थापित करैत अछि। लैपटॉप, बाहरी संग्रहण-उपकरण, दूरभाष आ अनुवाद-संग्रहक मुद्रित प्रति क्रमांक, दशा, प्राप्तिक समय आ ग्रहणकर्ता सहित सूचीबद्ध होइत अछि। शशांकक स्मृतिमे वस्तु ‘ओही’ उपकरण होयबाक विश्वास छल, मुदा अभिलेखक कसौटी पहचान, मुहर, हस्तान्तरण आ अवस्थाक निरन्तरता माँगैत अछि। एतय उपमानक दार्शनिक चर्चा भौतिक वस्तुक संरक्षण-शृंखलामे बदलैत अछि। लेखकक विशिष्टता एहि बातमे अछि जे पृष्ठभूमिक अधिकारी-संवाद सेहो मुख्य पात्रक ज्ञानमीमांसात्मक पाठक हिस्सा बनैत अछि।

नोएडाक करार-विषयक बयानमे ‘भाषा-सहायता’ आ ‘समन्वय’क सीमा खुलैत अछि। कारीगरक प्रश्न कम्पनी धरि पहुँचेनाइ आ समय-सारिणी बुझेनाइ काज छल; भुगतान तय करब, भुगतान प्राप्त करब अथवा तेसर प्राप्तकर्ता खाताक स्वामित्व सत्यापित करब ओकर लिखित भूमिका नहि छल। लेखनाधिकारी ‘मुख्य पक्षसँ भिन्न नाम’ कैं ‘सन्देहास्पद’ लिखि देबाक चेष्टा करैत छथि; शशांक तत्क्षण सुधार करबबैत अछि। ई दृश्यक महत्त्व

एहि मे नहि जे तेसर खाता सदैव निर्दोष मानल गेल, बल्कि एहि मे जे भिन्नता जाँचक प्रारम्भिक तथ्य अछि, संदिग्धताक अन्तिम निष्कर्ष नहि। एक विशेषण बदललासँ अभिलेखक भाव आ सम्भावित विधिक प्रभाव दुनू बदलि सकैत अछि।

पुरान दबावपूर्ण फोनक शैली विषयमे प्रश्न पर शशांक व्यावसायिक संदेशसँ शब्दावलीक साम्य कहैत अछि, मुदा व्यक्ति वा कम्पनी चिन्हित नहि करैत। ई उत्तर कथा-नायकक पुरान उत्साहसँ भिन्न अछि। ओकरा भाषा-पहिचानक विशेषज्ञता पर विश्वास अछि, किन्तु एखन ओ समान शैलीक स्वतन्त्र अनेक स्रोत होयबाक सम्भावना सुरक्षित रखैत अछि। शब्द-प्रमाणक सीमा एतय स्पष्ट अछि—अनाम स्वरकेँ सुनब प्रत्यक्ष अछि, वक्ताक पहिचान अनुमानक विषय; सामाजिक सादृश्य मात्र पर्याप्त हेतु नहि। एहि दर्शनकेँ रचना करुणापूर्ण बनबैत अछि, कारण शशांकक डर बनावटी नहि, अनुमानसँ आगे बढ़बाक प्रलोभन ओकर निज अनुभवसँ निकलैत अछि।

एक पुरान संदेशमे ‘अभिलेख पहिने शशांक देखत’ लिखल देखायब पर नायक स्वीकार करैत अछि जे कतिपय प्रसंगमे प्रश्न कम होइ, एहि उद्देश्यसँ वाक्य नरम कएने छल। बलाघात बदलनाइ तथ्यक शाब्दिक परिवर्तनसँ अलग भऽ सकैत अछि, मुदा व्यावहारिक अर्थपर प्रभाव पड़ि सकैत अछि। शशांक उदाहरण रूपमे ‘स्वामित्व सत्यापन उपलब्ध नहि’ आ ‘स्वामित्व विषयमे कोनो समस्या नहि देखल गेल’क अन्तर स्पष्ट करैत अछि, किन्तु एहि विशिष्ट वाक्यकेँ अपन कएल वास्तविक परिवर्तन नहि बतबैत। समीक्षा लेल ई भेद अनिवार्य अछि: पात्रक उदाहरणकेँ मूल घटना अथवा स्वीकारल अपराधक दस्तावेज बना देब पाठक विकृति होयत। कथाकार यहाँ पात्रक उद्देश्य-विषयक दावा आ ओकर अभिलेखीय परीक्षणकेँ अलग रखैत छथि।

पुरान फोल्डरसभक नाम—‘अन्तिम’, ‘स्वीकृत’, ‘नव’, ‘पुरान’—एहि अध्यायक सर्वश्रेष्ठ वस्तु-प्रतीक अछि। कनिष्ठ अधिकारी ‘स्वीकृत’ नामसँ औपचारिक स्वीकृति अनुमानित करैत छथि; शशांक बुझबैत अछि जे फोल्डर

नाम देनिहारक आन्तरिक कथन मात्र होइत अछि, सक्षम प्राधिकारीक वास्तविक स्वीकृति ओकर अतिरिक्त प्रमाण चाहैत अछि। डिजिटल पाठक बहु संस्करण, समय-लेखाजोखा आ लिप्यन्तरणक इतिहासक तुलनामे एक नाम कैं निर्णायक बना देब सहज, किन्तु असंगत अछि। आधुनिक दस्तावेजी आख्यानमे यन्त्रगत वस्तु कैं नैतिक संकेत बनायब एतय सफल अछि; फाइल नाम स्वयं पात्रक भाषा-पदक प्रतिरूप बनैत अछि।

मनोवैज्ञानिक स्तरपर जब्ती-सत्र उलट रूपैं नायकक गर्व फेर जगबैत अछि। कनिष्ठ अधिकारीक टिप्पणी जे भाषा-विषयक काज ओकर बिना कठिन होयत, शशांककैं लाल किला, प्रशिक्षण, मकाऊ, करार आ अदालतक स्मृतिसभमे लऽ जाइत अछि। ओ एक अदृश्य केन्द्रक कल्पना करैत अछि, जाहिसँ सभ अर्थ निकलैत अछि। जुलियानाक पहिनुक पुल आ नदीक रूपक ओकरा रोकैत अछि। मृणाल चाहक कागजी प्याला लग कहैत अछि जे जाँचमे उपयोगी होयब न निर्दोषताक सिद्धि, न दोषक; आ उपयोगी होयब अपरिहार्य होयब नहि। एहि मित्रतामे व्यंग्य, हँसी आ कठोर प्रेम मिश्रित अछि, जे सरकारी दृश्यसभक नीरसता तोड़ैत अछि।

दोसरा सत्रमे दू सम्भावित चीनी अर्थसँ केवल ‘प्रतिनिधि’ चुनबाक पुरान निर्णयक उत्तर दैत शशांक स्वीकार करैत अछि जे संक्षिप्त करबाक उद्देश्य छल, स्वामित्व नुकायबाक उद्देश्य नहि; संगहि उद्देश्यक अपन कथन स्वतन्त्र प्रमाण नहि अछि। एतय लेखक व्याख्याक दू पाँति रखैत छथि—लेखित वस्तु आ लेखनकर्ता अपन उद्देश्य विषयमे की कहैत अछि। सूचीकरणक अन्तमे ‘सम्पूर्ण सामग्री जब्त’ लिखल वक्तव्यकैं ‘सूचीबद्ध उपकरणमे उपलब्ध सामग्री’ धरि सीमित करब सटीक अर्थ-अनुशासन अछि। एहि छोट सुधारमे मूल तर्कक चरम रूप अछि: पूर्णता शब्दक दावा अछि, वस्तुक वास्तविक सीमा नहि।

अध्यायक आलोचनात्मक सीमा ई जे आदित्य प्रायः सर्वोत्तम नैतिक उत्तर तुरन्त प्रस्तुत करैत छथि, आ शशांकक अन्तिम नोटबुक फेर-फेर विचारक व्याख्या करैत अछि। उपकरणक अस्थिर स्मृति, तकनीकी सत्यापनक

कठिनाई अथवा बयानक अपूर्णता कथा मे अपेक्षाकृत कम अनिश्चितता छोड़ैत अछि। तैओ अन्तिम अनुच्छेदमे आगामी द्विभाषिक करारक प्रतिनिधि, भुगतान-पाबनिहार आ नियन्त्रण-सम्बन्धी शब्दक प्रतीक्षा अगिला अध्यायक संरचनात्मक बन्धन बनैत अछि। शशांककेँ 'सभ हमरा पुछय'क आकर्षणसँ 'हमरा बिना सत्य बुझल नहि जा सकय'क व्यसनक भेद धरि पहुँचेनाइ ई अध्यायक केन्द्रीय कलात्मक फल अछि।

## अध्याय ३४ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया ८ : प्रतिनिधि, भुगतान-पाबनिहार, निर्णय-अधिकार आ स्वामित्वक अलग संसार

चौतीसम अध्यायमे मेजपर राखल पाँच फाइल—तीन द्विभाषिक करार, भुगतान-सारणी आ कम्पनी-संरचनाक एक अभिलेख—पूरे अध्यायक रूपरेखा बनबैत अछि। ई दृश्य बाहरी रोमाञ्च रहित अछि, मुदा हर फाइल खोललासंग एक शब्दक वैधानिक-व्यावसायिक आ नैतिक भार बदलैत अछि। आदित्य प्रारम्भे कहैत छथि जे पहिने अभिलेख की कहैत अछि आ की नहि कहैत, से बुझबाक चाही। एहि उद्घोषणासँ कथा मौखिक अनुमानक गति धीमी करैत अछि। शशांकक अपन आत्मविश्वास एक बेर फेर परीक्षित होइत अछि, कारण ओकर वर्षोंक भाषिक शिक्षा एक अक्षरक अन्तर बचा सकैत अछि, मुदा ओहि शिक्षा पर गर्व प्रमाणक स्थान नहि लऽ सकैत।

पहिल करारमे पुरान ‘स्थानीय प्रतिनिधि’क अनुवादक सीमिततासँ शशांक ‘प्रचालन-प्रतिनिधि’ कहि स्पष्ट करैत अछि। मूल पद कार्य-सञ्चालनक जिम्मेदारीक आभास दैत अछि, किन्तु स्वामित्व वा वास्तविक नियन्त्रण अनिवार्य रूपेँ नहि। दोसर करारक निकट चीनी पदमे ग्राहकक सूचना प्राप्त करब आ प्रचालन-निर्देश आगाँ पठेबाक अधिकार अछि; शब्द रूपमे समीप होइतो सम्बन्धक प्रकार भिन्न अछि। एहि दू दृश्यक रचनात्मक प्रयोग केवल भाषिक कौशल देखायब नहि, बल्कि सादृश्य आ भिन्नताक एक संग अन्तःसाक्षात्कार करेनाइ अछि। उपमानक सिद्धान्त एतय अमूर्त चर्चा नहि रहैत: भूमिका-सम्बन्ध न जाँचि प्रतिनिधिकेँ नियन्त्रणकर्ता कहब अतिरेक अछि।

भुगतान-सारणीमे करार-पक्ष, सेवा-पाबनिहार आ भुगतान-पाबनिहार तीन नामक भेद रचनाक केन्द्र अछि। तेसर व्यक्ति भुगतान पाबैत हो, तँ ओ एजेन्ट, उप-आपूर्तिकर्ता, ठेकेदार अथवा कोनो आन व्यवस्था अन्तर्गत हो सकैत अछि; वैधता-अवैधताक निष्कर्षक लेल अलग अभिलेख आवश्यक

अछि। आदित्य तीन भिन्न अनुपस्थित शब्द—लाभकारी, नियन्त्रण, अन्तिम स्वामी—अलग-अलग लिखबबैत छथि। ई अनुपस्थिति कथानकमे नकारात्मक परीक्षणक आरम्भ अछि: जँ स्रोतक वाक्यमे अधिकारक ठोस शब्द नहि, तँ अनुवादक अपन अर्थ जोड़ि नहि सकैत। मुदा अनुपस्थित शब्दसँ संसारमे अधिकारक पूर्ण अनुपस्थिति सेहो सिद्ध नहि होइत; अन्य करार, कम्पनी-व्यवस्था वा व्यवहारक प्रमाण अलग खोजबाक अछि।

कम्पनी-संरचनाक कागजमे शेयर प्रतिशत नहि, सम्पर्क-व्यक्तिक नाम आ जिम्मेदारी अछि। एक पदनाम तेसर करारक नामसँ मिलैत-जुलैत अछि, मुदा अक्षर आ उच्चारण एक नहि। शशांक जन्मतिथि, पहचान-संख्या, अधिकृत सम्पर्क, हस्ताक्षर आ पदक मिलान बिना व्यक्तिक एकता घोषित नहि करैत। एहि दृश्यसँ भाषिक भिन्नता आ सामाजिक पहचानक गम्भीर प्रश्न जन्मैत अछि। चीनक नाम-रूप आ लिप्यन्तरणक विभिन्नता उल्लेखित भेलो एहि आधार पर कोनो विशिष्ट व्यक्तिक पहचान, राष्ट्रीयता वा अपराध-संबन्ध तय कएल जाए, से रचना अनुमति नहि दैत। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिमे व्यापारिक संस्था, भारतीय कार्यस्थल आ अनुवादकक मध्यस्थ भूमिका स्वतन्त्र प्रमाण-रेखा रूपेँ ठाढ़ अछि।

पुरान ईमेल-सारांशमे शशांक अपन हाथक ‘मुख्य लाभ-पक्ष’ अनुवादकेँ पुनः पढ़ि देखैत अछि जे मूल अर्थ ‘मुख्य हित-पक्ष’क बेसी समीप छल। ‘हित’क व्यापक सम्बन्धकेँ ‘लाभ’क वित्तीय अपेक्षामे संकुचित करब अर्थगत अतिरेक अछि। शशांक बहाना देबाक स्थानपर प्रसंगक अपन अनुमान शब्दमे जोड़ि देबाक त्रुटि स्वीकारैत अछि। एतय एक महत्त्वपूर्ण सीमा सेहो रहैत अछि: ओ स्वीकारैत अछि जे अनुवाद त्रुटिपूर्ण भेल, मुदा ताहिसँ जानि-बुझि स्वामित्व नुकेबाक उद्देश्य स्वतः सिद्ध नहि, न ओकर अनुपस्थिति स्वतः सत्यापित। कथाकार त्रुटि, उद्देश्यक दावा आ प्रभावक वास्तविक परिणाम तीनू स्तर अलग रखैत छथि।

एहि तरहें परिशिष्टमे 'स्थानीय पक्ष आवश्यक स्वीकृति प्राप्त कराएत' आ अनुवादित 'स्थानीय पक्ष स्वीकृति देत' बीचक भेद विशिष्ट अछि। पहिलमे पात्र प्रक्रिया आगाँ बढ़बैत अछि; दोसरमे ओ स्वयं अनुमोदनकर्ता बनि जाइत अछि। एक क्रियाक वाच्य आ कर्तृत्व बदलिते संस्थागत अधिकारक चित्र बदलैत अछि। एहि लघु उदाहरणमे आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ भाषा पात्रक सामाजिक चरित्र बनबैत अछि: शब्द-परिवर्तनसँ वस्तुगत काम नहि बदलैत, मुदा दस्तावेज पढ़निहारक दृष्टिमे पात्रक अधिकार नव रूप लेइत अछि। पाठक देखैत अछि जे अनुवादकक नैतिकता तात्कालिक शुद्ध भाषा चुनब मात्र नहि, भावी पठनीय गलतफहमी रोकब सेहो अछि।

एक आन कागजमे अन्तिम निर्णय-पुष्टिक अधिकारक उल्लेख अबैत अछि, मुदा ओ कोन निर्णय—खरीद, भुगतान, नियुक्ति अथवा करार—पर लागू होइत, से निश्चित नहि। आदित्य प्रतिनिधित्व, भुगतान, निर्णय-अधिकार आ स्वामित्व चारि अलग शीर्षक बनबबैत छथि। एहि चारि अक्षकेँ एक व्यक्ति वा संस्था सँ जोड़बाक सम्भावना रहैत अछि, मुदा ओ अनिवार्य नहि। नव्य न्यायक सम्बन्ध-अवच्छेदकक विचारक अनुरूप एहि स्थानपर विशेष्य मात्र नहि, विशिष्ट सम्बन्धक प्रकार अनिवार्य अछि। 'नाम अलग राखू, काम ओही लोकक अछि' कथन सम्बन्धक जाँच खोलैत अछि, मुदा 'ओही लोक'क पहचान नहि बतबैत। लेखक एहि अर्ध-पहिचानक असुविधाकेँ सरल षडयन्त्रक कथा बनबासँ रोकैत छथि।

एहि कठोर दस्तावेजी सत्रक बीच मृणालक संदेश आ शशांकक 'नक्शा भूभाग नहि'क भावात्मक आदान-प्रदान गद्यकेँ एकरूप होयबासँ बचबैत अछि। भाषिक गर्वक विषय सेहो सूक्ष्म रूपसँ बदलैत अछि: गर्व स्वयं अशुद्ध नहि; गर्व जखन अपन व्याख्याकेँ प्रमाणसँ ऊँच रखैत अछि, तखन नैतिक संकट उत्पन्न होइत अछि। आखिरी क्षणमे अज्ञात नम्बर सँ एक विनम्र किन्तु दबावपूर्ण फोन आयल। कथाकार ओकर शब्द स्पष्ट करैत छथि, पर आवाजक आधार पर पहिनुक फोनसँ वक्ताक एकता सिद्ध नहि करैत। सरकारी कार्यालयक गलियारासँ भयक निजी अनुभव धरि ई संक्रमण अध्यायक संरचनात्मक कुशलता अछि।

रचनाक सीमा देखबाक अछि जे जाँच-पद्धतिक चारि शीर्षक, तीन ‘नहि’, विभिन्न दर्जाक सम्भावना आ नायकक अन्तिम लेखा लगभग पाठशालाक क्रममे खुलैत अछि। अनेक पाठक एकर शैक्षिक पारदर्शिताकेँ ताकत मानताह; विशुद्ध उपन्यास-रसक दृष्टिसँ ई कखनो स्वतन्त्र दृश्य-जीवनक स्थानपर सिद्धान्तक सेवा करैत जानि पड़ैत अछि। तथापि ई आलोचना सीमित अछि, कारण स्वतः शुद्ध होइत नायकक चरित्रमे इच्छा आ गर्वक अवशेष कथा-संघर्ष सुरक्षित रखैत अछि। फोनक दबाव अगिला अध्यायमे भाषिक उपमानक मनोवैज्ञानिक सीमा आ मित्रताक भूमिका जाँचबाक जमीन तैयार करैत अछि।

## अध्याय ३५ — गुंडाक फोन : दबावक प्रत्यक्ष शब्द, भयक मानसिक कथा आ मित्रताक साक्षी

पैंतीसम अध्यायक शीर्षक ‘गुंडाक फोन’ स्वतः एक शिल्पगत तनाव रचैत अछि। अध्यायक भीतर अनाम स्वरक दबावपूर्ण शब्दसँ भय उत्पन्न होइत अछि, मुदा बोलनिहारक पहिचान, सम्बन्ध वा आपराधिक श्रेणी तत्काल सिद्ध नहि कएल जाइत। शीर्षक पाठककेँ एक निश्चित सामाजिक अर्थक दिशामे लऽ जाइत अछि, जखनकि कथानक ओही निश्चितताकेँ बारम्बार जाँचबाक आग्रह करैत अछि। एहि दूरीकेँ रचनाक सजग वक्रोक्ति रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि; संगहि ई प्रश्न सेहो बनैत अछि जे शीर्षकमे जे स्पष्ट निर्णय अछि, ओ भितरक प्रमाण-अनुशासनसँ कतेक मेल खाइत अछि। एही द्वन्द्वसँ अध्यायक आलोचना शुरू होइत अछि।

शशांक पहिल अज्ञात फोनक शब्द आदित्यक कार्यालयमे यथासम्भव ठीक-ठीक दर्ज करबैत अछि। ‘बहुत कागज देखल जा रहल अछि’ आ ‘नाम सभमे बेसी गहिर नहि जाइ’ सन कथन निश्चित रूपेँ सुनल गेल, मुदा ‘धमकी’ शब्दकेँ आदित्य एखन विवरणक पहिल शीर्षक नहि बनाबय चाहैत छथि। ओ पृष्ठभूमिक आवाज, समय, क्रमांक आ अन्य स्वतन्त्र चिह्न पुछैत छथि। शशांक सही अर्थमे स्वीकार करैत अछि जे फोन करनिहार कागजक जाँच विषयमे जानैत हो सकैत अछि, अथवा केवल अनुमान करैत हो। एहि वाक्य-भेदमे उपन्यासक मुख्य दार्शनिक आग्रह अछि: प्रत्यक्ष शब्द अलग, वक्ताक जानकारी आ उद्देश्यक अनुमान अलग।

आदित्यक व्यावहारिक सुझाव—नोएडामे अकेले नहि जाएब, कम्पनीक सुरक्षा विभागकेँ लिखित सूचना देब, फोनक समय आ शब्द सुरक्षित रखब—महत्त्वपूर्ण अछि। कथाकार प्रमाणक सावधानीकेँ सुरक्षाक उदासीनता नहि बनबैत छथि। जबरदस्ती कएल निष्कर्ष रोकबाक संग सम्भावित जोखिमक प्रति सजग व्यवहार संभव अछि। एहि बिन्दुपर उपन्यासक नैतिक औचित्य विशेष रूपसँ स्पष्ट अछि। ‘कथा नहि बनाउ’क निर्देश अनुभवक पीड़ाकेँ अस्वीकार नहि, बल्कि सुरक्षा-कर्म आ अपराध-घोषणाक पृथक कार्य मानैत

अछि। एहि विच्छेदसँ पाठक अनाम आवाजक गंभीरताकेँ कम नहि आँकैत, मुदा अज्ञात व्यक्तिक नाम कल्पित करबाक अधिकार सेहो नहि पबैत।

प्रतीक्षालयमे मृणालक आगमन आ शशांकक भय-स्वीकृति अध्यायक भावात्मक केन्द्र अछि। शहरक चहल-पहलकेँ नायक सम्भावित निगरानीक आँखि जेकाँ देखैत अछि; ई दृश्य बाह्य जासूसीक प्रमाण नहि, भयक दृष्टिबिन्दुक प्रत्यक्ष प्रस्तुति अछि। 'डर लगैत छह?'क उत्तरमे सरल 'हँ' नायकक पूर्व अहंकारक अपेक्षाकृत गम्भीर परिवर्तन अछि। मृणाल ओहि स्वीकारोक्तिक सम्मान करैत अछि, ओकरा तुरन्त उपदेशमे नहि बदलैत। करुण रस एतय भयक अतिरेकसँ नहि, मित्रक स्थिर उपस्थिति आ नायकक असुरक्षा स्वीकार करबाक साहससँ उत्पन्न होइत अछि।

नोएडाक कार्यालयमे सुरक्षा सूचना दर्ज होइत अछि; ठेकेदार क्षेत्रमे लोक नाम पूछैत रहबाक अस्पष्ट बात कहैत अछि, मुदा ककर नाम वा ककरा लेल, से नहि। शशांक स्वयं जानैत अछि जे एहि कथनकेँ 'गुंडा सभ नाम पूछैत अछि' बना देब अनुमानक अनैतिक विस्तार होयत। लेखा-विभागक भुगतान-विवरणमे अग्रिम आपूर्तिकर्ता, मध्य राशि करार-पक्ष आ एक छोट सेवा-शुल्क अलग भुगतान-द्वारसँ गेलाक विवरण अछि। पुरान जाँच-सन्दर्भसँ हवाला वा गुप्त-मुद्राक सादृश्य मनमे जागि सकैत अछि, किन्तु वास्तविक भुगतानक व्यवहार अलग साक्ष्य माँगैत अछि। एक लेखा-कर्मीक 'ई सामान्य अछि' कथन सेहो शशांक परीक्षा करैत अछि। असामान्यता वा सामान्यता —दुनू निष्कर्ष केवल पूर्व-सादृश्यसँ नहि।

जाँच कार्यालयक डिजिटल शब्द-सूचीमे 'स्थानीय सहयोग', 'सेवा निपटान', 'तेसर भुगतान' आ 'डिजिटल सम्पत्ति'क प्रयोग देखाओल गेल अछि। आदित्य स्पष्ट करैत छथि जे ई सम्पूर्ण धन-पथ नहि, शब्दक सूची मात्र अछि। शशांक 'स्थानीय व्यवस्था' कैँ स्वतः 'वसूली', 'पुरान रास्ता' कैँ स्वतः 'हवाला' आ डिजिटल सम्पत्तिक उल्लेखकैँ स्वतः धन-तहबद्धीक प्रमाण नहि

मानैत। एहि त्रयमे अध्यायक बौद्धिक शक्ति अछि। नव्य न्यायमे हेतुक व्याप्ति बिना परिणाम सिद्ध नहि होइत; एहिठाम साधारण शब्दक उपस्थितिक संग विशिष्ट आपराधिक प्रयोजनक अनिवार्य सम्बन्ध स्थापित नहि भेल। उपमान अर्थक सम्भावना खोलैत अछि, अनुसन्धानक दिशा देइत अछि, मुदा अपराधक अंतिम कारण-क्रम नहि।

साँझ मृणालक उपस्थिति मे दोसर अज्ञात फोन आयल। शशांक पहिनेसँ स्पष्ट कहैत अछि जे मित्र सेहो सुनि सकैत छथि। फोनक भाषा पुरान स्वरक समान प्रतीत होइत अछि, किन्तु ओ व्यक्ति-समानता पर निश्चित नहि। बोलनिहार नोएडाक छोट काज करैत रहबाक, पुरान भुगतानक कागज सँ दूरी रखबाक आ मित्रतासँ रहबाक बात कहैत अछि; ‘जे कागज तोहर नहि, ओकरा सँ दूरी नीक’क कथनमे दबावक तीक्ष्णता बढ़ैत अछि। शशांक हाथ काँपैत होइतो प्रश्न स्पष्ट राखबाक प्रयास करैत अछि। मृणाल सुनल वाक्यक साक्षी बनैत अछि, किन्तु नैतिक आशय वा कानूनी श्रेणीक निर्णायक नहि। ई कथात्मक संयम शारीरिक भयक वास्तविकता कम नहि करैत; उलट डरक बीच मानसिक अनुशासन अधिक विश्वसनीय बनबैत अछि।

दोसर फोनक बाद शशांक आ मृणाल दुनू अपन-अपन कथन लिखि आदित्यकेँ पठबैत छथि; समान सुनल शब्द चिन्हित होइत अछि, स्वरक अनुभूति अलग टिप्पणीमे रहैत अछि। एहि पद्धतिमे मित्रता मात्र सांत्वनाक साधन नहि, साझा प्रत्यक्षक भीतरी अनुशासन बनैत अछि। मृणाल नायककेँ कहैत अछि जे अपन महत्त्वाकांक्षासँ जे द्वार खोलल गेल, ओकर जिम्मेदारी स्वीकार कर; मुदा अनाम फोन करनिहारक कर्म अपन माथ पर नहि ले। एहि विचारमे पूर्व अध्यायक प्रायश्चित-सिद्धान्तक एक महत्त्वपूर्ण संशोधन अछि—आत्मालोचना जखन आत्म-दोषक अनावश्यक विस्तार बनैत अछि, तखन ओ सेहो असत्य होइत अछि।

अन्तमे मकाऊक परामर्श-बैसारक अद्यतन निमन्त्रण आबि जाइत अछि, जाहिमे सीमित प्रणाली-प्रदर्शनक प्रस्ताव अछि। रचनाक विरोधाभास तीव्र भऽ उठैत अछि: एक दिनक अज्ञात दबावक बाद विदेशी अवसरक उजास

अधिक आकर्षक देखाइत अछि। मृणाल याद करबैत अछि जे भय सँ भागि चमक दिस दौड़ब सेहो नब मिथ्या उपमान होयत। एतय लोभ आ भय परस्पर विरोधी नहि, एकहि व्यक्तिक निर्णयकेँ विकृत करबाक दू अलग शक्ति अछि। कथानकक कालक्रम सँ ई निमन्त्रण नायकक अगिला नैतिक जोखिम ठाढ़ करैत अछि; ओकर वैध अथवा अवैध अन्तर्वस्तु एखन तय नहि होइत।

शिल्पगत रूपसँ अज्ञात स्वर, सुरक्षा विभागक लिखित सूचना, भुगतानक तीन धार, डिजिटल शब्द-सूची, मृणालक श्रुत-साक्ष्य आ मकाऊक निमन्त्रण क्रमशः गद्यक तनाव बदलैत अछि। तथापि आदित्य आ मृणालक संवाद बारम्बार प्रमाण-सीमाक सिद्धान्त साफ-साफ बतबैत अछि; पात्रक अनिश्चित निजी भाषा कखनो सिद्धान्तक अत्यधिक सुव्यवस्थित वाहक भऽ जाइत अछि। शीर्षकक कठोर ‘गुंडा’ आ कथानकक अज्ञात वक्ता बीच दूरी पर पाठककेँ सजग रहबाक चाही। एहि आलोचनात्मक आरक्षणक बावजूद अध्याय सफल अछि, कारण मित्रता नायककेँ भयमुक्त नहि, भयक बीच अधिक जिम्मेदार बनबैत अछि। ई भेद करुणा, सत्य आ जीवनक जोखिमक संगति बनबैत अछि।

## अध्याय ३१–३५ : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — प्रकाशित शब्दसँ अज्ञात स्वर धरि उपमानक परीक्षा

एकतीसमसँ पैंतीसम अध्याय ‘कॉन्ट्रैक्ट आ छाया’क मध्यम खण्डमे पाँच भिन्न संस्थागत परिवेशकेँ क्रमशः खोलैत अछि। पहिलमे समाचार-पृष्ठ, दोसरमे न्यायालय, तेसरमे डिजिटल उपकरणक जब्ती, चौठमे द्विभाषिक करारक मेज आ पाँचममे अज्ञात फोनक भय अछि। बाहरी रूप अलग अछि, मुदा सभ ठाम भाषा अपन सीमासँ अधिक दाबी करबाक जोखिम उपस्थित करैत अछि। प्रकाशित प्रश्नचिह्न दोषक संकेत बनय चाहैत अछि; समान अनुवाद दू अभिलेखकेँ एक स्रोत बनय चाहैत अछि; फोल्डरक ‘स्वीकृत’ नाम सक्षम प्राधिकारीक स्वीकृति बनय चाहैत अछि; प्रतिनिधि भुगतान-स्वामी बनय चाहैत अछि; दबावपूर्ण स्वर एक चिन्हित अपराधी बनय चाहैत अछि। एहि पाँच सम्बन्धक असिद्ध छलाँग रोकब खण्डक रूपात्मक एकता अछि।

पहिल दू अध्यायमे सार्वजनिक अपमान आ न्यायिक प्रतिपरीक्षाक भावात्मक प्रभाव अलग अछि। समाचारमे शशांकक नाम ओकरा अज्ञात पाठकक दृष्टिमे सार्वजनिक वस्तु बना दैत अछि; अदालतमे ओकर अपन पुरान अनुवादक वास्तविक त्रुटि सामने अबैत अछि। पहिलमे ओकर रक्षा सत्य तथ्यक सीमित वक्तव्य अछि, दोसरमे अपन त्रुटिक सीमित स्वीकार। दुनू प्रतिविरोधी नहि: शशांक एकहि समय समाचारक असिद्ध दोष-निष्कर्षक विरोध करैत अछि आ अलग चीनी अभिव्यक्ति एक अनुवादमे समेटबाक जिम्मेदारी ग्रहण करैत अछि। नैतिक परिपक्वताक अर्थ केवल अपन बचाव छोड़ब वा अपन बचाव करब नहि, बल्कि दुनूकेँ उचित अनुपातमे रखब अछि।

तीसर आ चौठ अध्याय अभिलेखक भौतिकता आ भाषिक संरचनाक तुलनात्मक रूप अछि। लैपटॉप, बाहरी संग्रहण-उपकरण, समय, सूची आ मुहर बिना शब्दक मूल संस्करणक भरोसा अधूरा अछि; करार, भुगतान-सारणी, पदनाम आ स्वीकृति-सम्बन्धी क्रियापद बिना व्यक्तिगत अधिकारक निष्कर्ष अधूरा अछि। जब्ती-पञ्जीमे ‘सम्पूर्ण सामग्री’क अतिशयोक्ति रोकल

जाइत अछि; करारमे ‘स्वीकृति प्राप्त कराएत’कें ‘स्वीकृति देत’ बना देबाक अतिरेक स्पष्ट होइत अछि। भाषिक शुद्धि एतय अलङ्कार मात्र नहि, संस्थागत शक्ति-वितरणक आलोचना अछि। एकरे विस्तृत रूपमे शब्दान्तरक साथ स्रोत-शृंखला आ सम्बन्ध-विवेक जुड़ैत अछि।

पाँचम अध्याय एहि विधिक-दस्तावेजी अनुशासनकें मनुष्यक शरीर आ भयमे वापस लऽ जाइत अछि। पहिनुक अध्यायसभमे शशांक शब्दक अनिश्चितता देखि आत्मगौरवक तीव्र अनुभव करैत अछि; फोनक क्षणमे ओही अनिश्चितता ओकर सुरक्षा-सन्देहकें कठिन बनबैत अछि। दबावपूर्ण शब्द सुनब प्रत्यक्ष, कियो के छल से अनुमान। मृणालक उपस्थितिक कारण नायकक भय साझा प्रत्यक्षक साक्ष्यमे सीमित रूपसँ बदलि सकैत अछि, मुदा मित्र सुनि लेबाक अर्थ न्यायालयक अन्तिम निष्कर्ष नहि। एहि रूपान्तरमे सख्य-रस, करुणा आ भयक सूक्ष्म सहअस्तित्व भेटैत अछि।

पात्र-सम्बन्धक दृष्टिसँ आदित्य, राघव, मृणाल आ जुलियाना निरन्तर उपस्थित भऽ एक आलोचनात्मक चतुष्क बनैत छथि। आदित्य स्रोत-श्रेणीकरणक संस्था अछि; राघव विधिक रक्षा आ सार्वजनिक वक्तव्यक परिधि देखबैत छथि; मृणाल भावनाक वास्तविकताकें मानि अप्रमाणित निष्कर्ष अस्वीकार करैत अछि; जुलियाना नाम, प्रतिभा आ आत्म-अधिकारक इच्छाकें ज्ञानक व्यापक विनम्रतासँ जोड़ैत छथि। ई भूमिका-संतुलन कथाक उपलब्धि अछि। संगहि सभ पात्रक वाणीमे अत्यधिक एकमत प्रमाणशास्त्रीय भाषा रहब कथात्मक बहुस्वरताकें सीमित करैत अछि। एतय अधिक परस्पर असहमति कथानकक स्वायत्तता बढ़ा सकैत छल।

नव्य न्यायीय पद्धतिक अन्तर्गत पाँच अध्यायक मूल आन्दोलन उपमानसँ उत्पन्न सन्देहकें उचित अनुमान बनाबय लेल अतिरिक्त हेतु आ विश्वसनीय स्रोत माँगब अछि। समान पदबंध, समान नाम, समान फोल्डर-चिह्न, समान फोन-शैली आ समान भुगतान-रचना—सभ सादृश्य उपयोगी परीक्षण-दिशा दैत अछि। किन्तु प्रत्येक वस्तुक स्वतन्त्र भेद—मूल पाठ, पहचान-संख्या,

स्वीकृतिक अधिकारी, ध्वनिक स्रोत आ भुगतानक वास्तविक प्रयोजन—जाँचब अनिवार्य अछि। एही आलोचनामे प्रत्यक्ष, शब्द आ अनुमानक अवलम्बन एक-दोसराक स्थान नहि लैत। विशेष सावधानी ई जे उपमानक दार्शनिक प्रयोगकेँ ऐतिहासिक घटना वा स्वतः अपराध-विधिक नियमक दावा रूपमे नहि पढ़ल जाए।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक अनुरूप मिथिलाक भाषिक विद्या, भारतीय विद्या भवनक प्रशिक्षण, दिल्लीक न्यायालय आ जाँच कार्यालय, नोएडाक श्रमिक-व्यावसायिक स्थल तथा मकाऊक प्रस्तावित अन्तरराष्ट्रीय बैसार एकहि कथानकमे समानान्तर चलैत अछि। एहि भूगोलक मिलनक कारण शशांकक जीविका आ ज्ञानक द्वन्द्व खोलैत अछि; मुदा साहित्यिक पाठक भीतर प्रस्तुत चीन-सम्बद्ध नाम वा वित्तीय शब्दक आधारपर वास्तविक बाह्य संस्था अथवा व्यक्तिक अपराध तय नहि कएल जा सकैत। मूल पाठमे देखाओल अभिलेखीय दाबी आ सत्यापित बाह्य इतिहासक सीमा अलग राखब समीक्षा-पद्धतिक मूल शर्त अछि।

शिल्पक एक आवर्ती रचना समाचारक आधा शीर्षकसँ रातिक नोटबुक धरि चलैत अछि। आदित्यक लाल चिह्न, न्यायालयक सीमित आदेश, डिजिटल फोल्डरक नाम, करारक चारि शीर्षक आ फोनक शब्दशः लिखित विवरण—सभ व्याख्याक विकृत विस्तारक विरुद्ध वस्तुगत प्रतीक अछि। संगहि हर अध्यायक अन्तमे लगभग पूर्ण शिक्षाप्रद निष्कर्ष मिलब कथाक अस्पष्ट, अनुनादी प्रभावकेँ कखनो घटबैत अछि। ई सीमा स्वीकार कएने बिना प्रशंसा आलोचना नहि भऽ सकैत। मुदा एहि आवृत्तिक एक कलात्मक लाभ सेहो अछि: पाठक भिन्न-भिन्न सामाजिक अवस्थामे एके ज्ञान-नियमक परिवर्तनशील प्रयोग देखैत अछि।

अन्तिम सामूहिक निर्णय ई जे अध्याय ३१–३५ शशांकक चरित्रकेँ पूर्णताक मिथ्या चित्रमे नहि बदलैत। ओकर भीतर अपमानक आवेग, विद्वत्ताक गर्व, सामाजिक सम्मानक भूख, मित्रपर निर्भरता आ विदेशी अवसरक लोभ एखनहुँ अछि। नव विकास केवल एतबे जे ओ एहि प्रवृत्तिसभकेँ चिन्हि सकैत अछि

आ किछु क्षण लेल रोकि सकैत अछि। पाँचम अध्यायक मकाऊ निमन्त्रण एक अधूरा प्रश्न छोड़ैत अछि: भयक बीच सत्यक सीमा रखनिहार मनुष्य लोभक उजासमे सेहो ओही सीमा रखत कि नहि? कथा एहि प्रश्नक उत्तर अगिला भागपर छोड़ैत अछि, आ एहि असमाप्तिमे ओकर रचनात्मक निरन्तरता अछि।

## अध्याय ३६ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया १० : मकाऊक परीक्षण-पटल आ अधिक देखबाक अनधिकृत इच्छा

छत्तीसम अध्यायमे मकाऊक निमन्त्रण तीन दिन धरि अनुत्तरित रहब नायकक निर्णय-संकटकेँ प्रारम्भहि सँ मूर्त बनबैत अछि। नोएडाक मरम्मत-करार समाप्तिक दिशामे अछि; दबावपूर्ण फोनक याद ताजा अछि; विदेशक अधिक पारिश्रमिक आ विशेष पहुँच फेर अपन चमक देखबैत अछि। कथाकार एतय डर आ लोभकेँ एकहि घटनाक दू अनुमान मानि नहि चलैत छथि। फोन बन्द भऽ जाएब निमन्त्रणकेँ निर्दोष सिद्ध नहि करैत, आ फोन आयलासँ निमन्त्रण आपराधिक सिद्ध नहि। मृणालक सलाह एहि अनिश्चिततासँ निर्णयक कार्ययोजनामे बदलैत अछि—कुन सामग्री देखल जाएत, की अनुवाद कएल जाएत, ककर प्रति नहि राखल जाएत, आ कोन सीमा पहिने लिखल रहत। भावनात्मक आत्मसंयम एतय अनुबन्धक लिखित शर्त बनि उठैत अछि।

राघव भसीनक कार्यालयमे तकनीकी प्रदर्शन आ स्वतन्त्र सर्वर-खोजक अन्तर स्पष्ट होइत अछि। कथाकारक सर्वाधिक तीक्ष्ण वाक्यार्थ ई अछि जे पटल स्वतः खुलि गेलासँ देखनेवाक अधिकार बढ़ि नहि जाइत। एहि आधारपर शशांक प्रदर्शनक विषय, प्रतिलिपि-निषेध, अनुवादित सामग्री आ स्वतंत्र निरीक्षणक परिधि लिखबबैत अछि। आदित्यक सूचना-प्राप्ति सेहो यात्रा अपराधक संकेत नहि मानैत; जे प्रत्यक्ष देखल गेल आ जे अनुमान भऽ सकैत अछि, ओकर अलग उल्लेख चाहैत अछि। ई समन्वय नायककेँ एकाएक निर्दोष बनायबाक युक्ति नहि, पूर्व सीमा-लाँघनक सम्भावना फेर न दोहराबयबाक सशर्त अभ्यास अछि।

मकाऊ पहुँचला पर रातिक नगरीय आलोक नायकक अन्तर्यात्राक दर्पण बनैत अछि। होटलक खिड़की सँ झलकैत शहर पहिने उपलब्धि आ प्रतिष्ठाक प्रतीक छल, आब ओही चमककेँ शशांक अपन पुरान इच्छाक साक्षी जेकाँ देखैत अछि। बैसारमे अलग-अलग सेवा-सहयोगी उपस्थित छथि आ काल्पनिक अनुबन्ध-पत्रमे कम्पनीक नाम ‘समुद्रसेतु डिजिटल सेवा’ अछि। एहि नाम आ

दृश्यकेँ उपन्यासक आन्तरिक रचना रूपेँ पढ़बाक चाही; बाह्य वास्तविक कम्पनीक प्रमाण रूपमे नहि। शशांकक कार्य द्विभाषिक पदबंध आ प्रश्नोत्तरक अनुवाद धरि सीमित अछि। भाषिक आत्मविश्वास दोसरक प्रशंसासँ तुरन्त बढ़ैत अछि, जकर भीतर नायकक पुरान अपरिहार्य बनबाक व्यसन एखनहुँ जीवित अछि।

बैसारक पहिल मुख्य पाठ एक चीनी पदक अलग अंग्रेजी रूपमे व्यक्त अर्थ-संकट अछि: 'लेखा-समायोजन' आ 'निपटान' एके वस्तु नहि। प्रणालीक नमूना-पटलमे 'मार्ग' शब्द भुगतान-पथक वास्तविक लेनदेन होयबाक बदला केवल वर्गीकरण हो सकैत अछि। शशांक प्रस्तुतीकरणक दृश्य आ वास्तविक धन-प्रवाहक प्रमाणक अन्तर स्पष्ट करैत अछि। नव्य न्यायक भाषामे प्रशिक्षण-पटलपर देखाओल नमूना व्यवहार आ वास्तविक काजक साक्ष्यक विषय अलग-अलग अछि। एकर साहित्यिक मूल्य ई अछि जे वित्तीय प्रौद्योगिकी-कथाक तेज, आकर्षक शब्दक भीतर एक वाक्यक सीमित अर्थ पाठककेँ विचारक अवकाश दैत अछि।

प्रदर्शनक बीच क्षणिक अतिरिक्त सूची देखाइ पड़ैत अछि, जाहिक नाम-पद्धति नोएडाक पुरान कागजसँ मिलैत-जुलैत अछि। एतय उपन्यासक मनोवैज्ञानिक चरम दृश्य अछि। शशांक चाहैत अछि जे ओहिना पटल फेर खुलय, ओ स्वयं मिलान करय आ सभसँ पहिने रहस्य पकड़ि लय। ई इच्छा ज्ञानेच्छाक आड़मे विशेष अधिकारक लालसा अछि। ओ पटल फेर खोलबाक आग्रह नहि करैत; केवल प्रसंग-अज्ञात सादृश्यक सीमित नोट लिखैत अछि। बादमे विशेष निरीक्षणक लिखित अनुमति भेटलापर ओ स्वीकृत परीक्षण-अंश मात्र देखैत अछि। कथाकारक अपन रचना-संरचनामे ई महत्त्वपूर्ण उलट अछि —'अधिक देखबाक अवसर' अनिवार्यतः 'अधिक जानबाक अधिकार' नहि।

अगिला सत्रमे समान नाम-पद्धतिक किछु हिस्सा साधारण प्रशिक्षण-चिह्न निकलैत अछि। शशांकक सम्भावित विजयक मोह तात्कालिक रूपसँ निरस्त होइत अछि। मुदा एहि असफल अनुमानसँ ओकर भाषा-साधनाक उपयोगिता समाप्त नहि: 'सेवा-सहायक' आ 'समन्वय-सहायक' बीच अन्तर नव भूमिका-

सम्बन्धक स्पष्टता दैत अछि। एतय रचनाक संतुलन अछि—एक भ्रम दूर भेलासँ सभ संदिग्धता शून्य नहि, आ एक सही अनुवाद भेटलासँ व्यापक स्वामित्व-संबन्ध सिद्ध नहि। कथाकार संशोधन-स्वीकारक प्रसन्नता आ नायकक निजी निराशाकेँ संग रखैत छथि। सत्यक खोज विजयक खोजसँ कतेक भिन्न, ई प्रश्न मृणालक संग बादक संवादमे खुलैत अछि।

छह मासक नब परामर्श-प्रस्ताव उपन्यासक अगिला प्रलोभन बनैत अछि। शशांक तत्काल हस्ताक्षर नहि करैत; भारत लौटि विधिक समीक्षा चाहैत अछि। उड़ानमे तैयार प्रत्यक्ष, उपमान, अनुमान आ असिद्ध आरोपक पृथक लेखा यात्रा, बैसार आ स्वीकृत निरीक्षणक वास्तविकता सुरक्षित करैत अछि। आदित्यक कार्यालयमे यात्रा-सम्बन्धी सत्यापनक उत्तरमे शशांक भाषिक संकेत मात्र बतबैत अछि, स्वामित्व वा अपराधक फैसला नहि। ई पेशागत आत्मनिर्माणक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि: नायक अपन जानल शब्दकेँ सम्पूर्ण प्रणालीक ज्ञान नहि कहैत।

कलात्मक सीमा एहि मे अछि जे सूची, नोटबुक आ शिक्षाप्रद सूत्र कथाक शेष भाग जेकाँ अति व्यवस्थित अछि। मगर मकाऊक दृश्य, विशेष पहुँचक लोभ, क्षणिक स्क्रीन आ प्रशिक्षण-चिह्नक साधारणता मिलि खण्डकेँ वास्तविक नाटकीय गतिशीलता दैत अछि। अन्तिम राघव-सन्देश—नव प्रस्तावक गोपनीयता आ सहायता-सम्बन्धी अस्पष्ट धारा—आगामी अध्यायक निर्णायक संकट स्थगित रखैत अछि। पहिने सीमा पटल पर छल, आब सीमा लिखित करारक एक वाक्यमे अछि; मनोवैज्ञानिक समस्या एके रहैत अछि, वस्तुगत रूप बदलि जाइत अछि।

## अध्याय ३७ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया ११ : गोपनीयता-धाराक फैलाव, विधिक परामर्श आ लिखित अधिकारक पुनर्सीमा

सैंतीसम अध्यायमे शशांक राघवक कार्यालयमे मकाऊक छह-मासीय परामर्श-प्रस्तावक चीनी आ अंग्रेजी प्रति एक संग खोलैत अछि। प्रारम्भिक गोपनीयता-धारासभ संगहि चीनी ‘बाहरी समन्वयक काजमे सहयोग’ आ अंग्रेजी ‘नियामकीय आ सेवा-सुगमता सहायता’ बीचक विस्तार कथाक मुख्य टकराव बनैत अछि। पहिल अर्थ भाषिक सहयोग धरि सीमित रहि सकैत, दोसर रूप सरकारी, वित्तीय वा तेसर पक्षक व्यवहारमे सक्रिय सहभागिताक अर्थ पैदा करि सकैत अछि। राघव भुगतान-समायोजन, तेसर खाता आ सरकारी प्रतिनिधित्वक प्रश्न अलग-अलग उठबैत छथि। शशांक सभमे अपन भूमिका नहि होयबाक उत्तर दैत अछि। एहि आधारपर अनुवादकक इच्छित कार्य आ अनुबन्धक सम्भावित व्याख्या बीच अन्तर लेख्य रूपमे स्पष्ट होयबाक चाही।

विधिक गोपनीयताक प्रश्नमे अध्याय विशिष्ट सावधानी देखबैत अछि। अधिवक्ता निर्देशनक अन्तर्गत भाषिक सहायता आ सामान्य ‘गोपनीय सहायता’ एके अर्थ नहि। कानूनी परामर्शक गोपनीयता ककरो वास्तविक कर्मकेँ अपराधमुक्त सिद्ध करबाक यन्त्र नहि, आ अधिवक्ताक उपस्थितिसँ सभ दस्तावेज अनिवार्य रूपेँ एकहि संरक्षणमे नहि अबैत। राघव एहि सिद्धान्तकेँ शशांककेँ लिखित सीमा माँगबाक व्यावहारिक सलाहमे बदलैत छथि। समीक्षामे एहि स्थलकेँ उपन्यासक पात्रक विचार रूपेँ पढ़ल जाए; सर्व परिस्थितिमे लागू होयबला स्वतन्त्र विधिक निर्णय रूपेँ नहि। आलोचनात्मक शक्ति ई अछि जे गोपनीयताक आड़मे कार्य-विस्तारक सम्भावना चिन्हित होइत अछि, मुदा गोपनीयताकेँ स्वयं दोषक संकेत नहि मानल जाइत।

एहि समय अज्ञात नम्बरक फोन शशांककेँ प्रस्ताव शीघ्र स्वीकार करबाक प्रेरणा दैत अछि। पुरान नोएडा फोनसभसँ शैलीगत समानता देखितो नायक व्यक्ति वा समूहक एकता घोषित नहि करैत। भयक दू विपरीत आज्ञा ओकर भीतर चलैत अछि—हस्ताक्षर कऽ विवाद टारि दिअ अथवा हस्ताक्षर न कऽ सम्भावित संकट टारू। राघवक उत्तर दूनू भयक स्थानपर लिखित तथ्य

राखबाक अछि। एहिमे शशांकक जीविकागत निर्भरता निर्णायक अछि: पैघ अवसर गुमेबाक डर अस्पष्ट शर्त अधिक स्वीकार्य बना सकैत अछि। लेखक एहि आर्थिक दबावक ईमानदार चित्र प्रस्तुत करैत छथि; नायकक निर्णयकेँ केवल सदाचारक आसान परीक्षा नहि बनबैत छथि।

राघवक चारि प्रस्तावित संशोधन व्यवस्थित अछि—भूमिका भाषिक सहयोग धरि सीमित; भुगतान अथवा वित्तीय समायोजन अधिकार बाहर; सरकारी अथवा तेसर पक्षक प्रतिनिधित्व अलग लिखित स्वीकृति बिना नहि; प्रणाली-प्रवेश स्पष्ट पूर्वनिर्धारित शर्तमे। ई चारि बिन्दु अध्यायकेँ अनुबन्धक सम्बन्ध-विवेकक पाठ बनबैत अछि। कम्पनी पहिने तीन सुधार मानैत अछि, मुदा 'आवश्यक समन्वय सहायता'क चतुर्थ अस्पष्टता बचा लैत अछि। शशांक एहि आखिरी पदपर लिखित पुनःस्पष्टीकरण माँगैत अछि। एहि छोटँ लिखल शब्दक कारण पूरा अवसर हेरायबाक सम्भावना अछि; तें ई दृश्य मनोवैज्ञानिक संघर्षसँ खाली नहि।

मृणालक चाह-प्याला लग संवाद डरकेँ नुकेबाक प्रवृत्ति पर केन्द्रित अछि। मित्र अवसर नकारबाक निर्णय अपना हाथमे नहि लैत, केवल स्पष्ट शर्त बिना स्वीकृति नहि देबाक आग्रह करैत अछि। जुलियाना गोपनीयताकेँ मौनक नियम, सत्यक स्वरूप नहि मानैत छथि। एहि दुनू पात्रक भूमिका भिन्न अछि: एक नायकक स्वतन्त्र निर्णयक मान रखैत अछि, दोसर भाषाक कर्तव्यक दार्शनिक सीमा स्पष्ट करैत छथि। तखन कम्पनी संशोधित धारा पठबैत अछि—भाषिक आ प्रशासनिक सहायता स्पष्ट, अन्य प्रतिनिधित्व अलग स्वीकृतिक अधीन। शशांक राघवक समीक्षाक बाद एक घण्टा सोचि सीमित करारपर हस्ताक्षर करैत अछि। एहि ठाम परिपक्वता अस्वीकारमे नहि, सुविचारित सशर्त स्वीकृतिमे अछि।

अध्यायक अन्तमे निचला आयुक्तालयक विक्रेता-अभिलेख विषयक प्रश्न आ कम्पनीक 'एखन उत्तर रोकू; ऊपर बात चलि रहल अछि' सन्देश लगभग एके समय आबैत अछि। एहि कालिक समीपता सँ ककर आदेश, कोन अधिकार आ कोन उद्देश्य रहल, से सिद्ध नहि। शशांक पहिने संदेशक समय आ स्रोत

सुरक्षित करैत अछि। ई क्रम कथानकक नब तनाव तैयार करैत अछि: निजी करारक अधिकार स्पष्ट भेलाक बाद सरकारी फाइलक अधिकार अस्पष्ट भऽ रहल अछि। नोएडाक अज्ञात फोन आ 'ऊपर' शब्द बीच सादृश्य अनुभव होइत अछि, मुदा नायक ओहि आधारपर कोनो नाम नहि जोड़ैत।

पाश्चात्य कथाशास्त्रीय दृष्टिसँ करारक लाल कलम, संशोधित प्रति आ एक घण्टाक विलम्ब नायकक भीतरक समयकेँ वस्तुगत बनबैत अछि। नव्य-न्यायीय दृष्टिसँ 'सहयोग'क सम्बन्ध-सीमा बिना निर्णयाधिकारीक अधिकार मानि लेब अवैध विस्तार होयत। अध्यायक सीमा ई जे चारि सुधारक क्रम अत्यन्त सुव्यवस्थित अछि आ पात्रसभ फेर-फेर प्रमाण-अनुशासनकेँ स्पष्ट वाक्य बनबैत छथि। तैओ शशांकक भय, आर्थिक आकांक्षा आ हस्ताक्षरक स्थगन रचनाकेँ जीवन्त रखैत अछि; नायक अपन गर्वक संग पेशागत अनुबन्धक वास्तविक मूल्य सेहो तोलैत अछि।

## अध्याय ३८ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया १२ : निचला प्रश्नावली, उपरका सारांश आ ‘विश्वासघात’ शब्दक भार

अड़तीसम अध्यायक आरम्भ ‘एखन उत्तर रोकू; ऊपर बात चलि रहल अछि’क अस्पष्ट वाक्यसँ होइत अछि। ‘ऊपर’क प्रेषक, अधिकार आ उद्देश्य निर्दिष्ट नहि; तें पाठक आ शशांक दुनू ओकर रिक्त स्थानमे अपन आशंका भरि सकैत छथि। आदित्य मूल संदेशक अखण्ड प्रति सुरक्षित करबबैत छथि आ निचला आयुक्तालयक पाँच प्रश्नक फाइल देखबैत छथि। तीन उत्तर प्राप्त आ दू सत्यापन लंबित अछि। मूल टिप्पणीमे स्वामित्व आ भुगतान-संबन्धक पुष्टिकरण शेष कहि मूल अभिलेख माँगल गेल अछि; एक दोसर टिप्पणी ‘वर्तमान सामग्रीसँ प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थापित नहि’ कहैत अछि। ई दुनू कथनक बीच असाधारण तार्किक अन्तर अछि—जाँच शेष रहब आ वर्तमान प्रमाणमे सम्बन्ध नहि भेटब अलग अवस्था अछि।

एक आन्तरिक सारांशमे ‘सत्यापन अपूर्ण’क पंक्ति नहि, आ उपरका अग्रेषण-पत्रमे केवल समेकित समीक्षा अपेक्षित अछि, जाँच बन्द करबाक लिखित आदेश नहि। एहि त्रिकोणमे कथाकार शब्द हटेबाक प्रभाव देखबैत छथि। शशांक अपन पुरान भाषा नरम करबाक अनुभवसँ एहि प्रवृत्तिक सादृश्य देखैत अछि, मुदा स्वयं एहि फाइलक लेखक होयबाक दावा नहि करैत। कार्यालयी संक्षेपक सहज प्रवृत्ति आ जानि-बुझि सीमा बदलबाक सम्भावना दुनू खुलल अछि। एतय पाठककेँ संशोधित वाक्यक वास्तविक परिणाम देखल जाइत अछि, किन्तु लेखकक मनोभाव प्रत्यक्ष नहि। एहि भेदकेँ बचौने बिना संस्थागत भ्रष्टाचारक कथन गढ़ल जाएत।

आगत-पञ्जीक कालक्रम महत्वपूर्ण अछि—मूल कागजक माँग पहिने, सारांश बादमे; लिखित रद्दीकरण नहि। निचला अधिकारी मौखिक रूपेँ प्रश्नक प्राथमिकता घटेबाक बात सुनाओत छथि, संगहि कहैत छथि जे संबंधित व्यक्तिक स्वतंत्र निर्णय अथवा उच्च निर्देशक स्रोत ओ नहि जानैत। आदित्य प्रक्रियागत हस्तक्षेपक सम्भावना केँ जाँचबाक वस्तु मानैत छथि, सिद्ध षड्यन्त्र नहि। नायकक ‘आन्तरिक समझौता’ कहबाक आतुरता एहि ठाम

रोकल जाइत अछि। नव्य न्यायमे हेतु आ साध्य बीच अनिवार्य सम्बन्ध स्थापित नहि भेल तँ घटना-क्रम मात्रसँ उद्देश्य-निष्कर्ष नहि निकालल जा सकैत।

मृणालक संग संवादमे शशांकक विश्वासभंगक अनुभूति व्यक्तिगत रूप लैत अछि। ओकरा लगैत अछि जे ओ सीमित शब्द लिखि अपन भूमिका अनुशासित करि रहल अछि, मुदा कियो दोसर फाइलमे शब्दक सीमा धुँधला बना सकैत अछि। मृणाल बतबैत अछि जे प्रक्रिया स्वयं मनुष्य चलबैत अछि, तेँ प्रश्न सहि सकय एहन अभिलेखक महत्त्व अधिक। ई वाक्य रचनामे संस्थाक विरुद्ध सर्वथा अविश्वास नहि, स्रोतक उत्तरदायित्वक माँग अछि। जुलियानाक धुन आ गायकक उपमा सेहो यथार्थ भेद देइत अछि: समान धुन सुनब लिखबाक योग्य अछि, मुदा एके गायकक नाम बिना पहचानक नहि।

राति अज्ञात व्यक्तिसँ निचला कार्यालयक मुहरबन्द फाइल विषयक समाचार-जेकाँ प्रश्न आयलापर सन्देहक नब स्रोत उत्पन्न होइत अछि। शब्दमे पूर्वनिर्धारित निष्कर्षक छाया अछि, मुदा ककरा भीतरक जानकारी अछि अथवा ओ अनुमानसँ प्रश्न गढ़ने अछि, से अस्पष्ट। शशांक आदित्यक निर्देशपर उत्तर नहि दैत आ मूल सामग्री सुरक्षित रखैत अछि। एतय संचारक अस्वीकार सेहो साहित्यिक क्रिया अछि: नायक अपन डरक क्षणमे अनजाने अधिक सूचना नहि देबाक आत्मसंयम देखबैत अछि।

अध्यायक कलात्मक उपलब्धि ई जे ‘प्रश्न लंबित’ सँ ‘सम्बन्ध नहि’ बनबाक सरकाव सरकारी फाइलक पंक्तिमे दृश्य होइत अछि; विचारक राजनीतिक अर्थ एतय सीधे नारा नहि बनैत। कलात्मक आरक्षण ओहि स्थिर दोहरावमे अछि जे प्रत्येक दृश्य अन्ततः एके सूत्र—अनुभूति प्रमाण नहि—धरि पहुँचैत अछि। तथापि अन्तमे मूल अभिलेख, अधिकारीक कथन आ सारांशक लेखकक स्पष्टीकरण अलग-अलग सुरक्षित करबाक प्रक्रिया उपन्यासक वास्तविक तनाव बढ़बैत अछि। विश्वासघातक अनुभूति प्रखर होइत अछि, मुदा विश्वसनीय इतिहासक लेखनक लेल ओ अकेला पर्याप्त नहि।

## अध्याय ३९ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया १३ : मुहरबन्द अनुक्रमणिका, समाचारक अर्ध-स्रोत आ अपमानक प्रतिपरीक्षा

उनचालीसम अध्याय अज्ञात सन्देशक एक प्रश्नसँ शुरू होइत अछि—मुहरबन्द जीएसटी फाइलमे निचला कार्यालयक आपत्ति दबाओल गेल छल कि नहि। ‘मुहरबन्द’ अभिलेखक स्थिति जनबैत अछि, मुदा ‘दबाओल गेल’ मानो पहिनेसँ सिद्ध हस्तक्षेपक कथा बनबैत अछि। नायक तीन सम्भावना देखैत अछि: भीतरक वास्तविक सूचना, बाहरसँ अनुमान, अथवा भय पैदा कऽ अधिक जानकारी निकलवाबाक युक्ति। कोनो विकल्प सिद्ध नहि। ई त्रिविध अनिश्चितता अध्यायकेँ पत्रकारिता, गोपनीयता आ शशांकक आत्मरक्षाक संग जटिल सम्बन्धमे राखैत अछि।

आदित्यक मेजपर ‘प्रतिबन्धित निरीक्षण—प्रतिलिपि नहि’ लिखल भूरा लिफाफा अछि। शशांककेँ पूर्ण सामग्री नहि, अनुमत अनुक्रमणिका पढ़बा लेल देल जाइत अछि। ओहि सूचीमे निचला आयुक्तालयक मूल सत्यापन-टिप्पणी, समेकित आन्तरिक समीक्षा-सारांश आ पूर्व अनुवाद-सहायता सम्बन्धी पत्राचारक उल्लेख अछि; समाचारक ‘गोपनीय अनुवाद-नोट’ नाम ठीक ओहिना नहि। मुदा नामक असमानता सँ समाचार सम्पूर्ण मिथ्या सिद्ध नहि; अभिलेखक वैकल्पिक नाम वा आन स्रोत सम्भव अछि। गोपनीय सामग्रीक अस्तित्वक विषयमे भ्रम नब तथ्यक स्थल नहि होइ, एहि लेल कथा अनुक्रमणिकाक सीमित दृश्य रचैत अछि।

समाचार-पृष्ठ नायककेँ निचला आपत्ति नरम बनाबयवाला भाषा-मध्यस्थक रूपमे प्रस्तुत करबाक संकेत करैत अछि। शशांक अपन पुरान अनुवादमे प्रश्न घटेबाक उद्देश्यसँ वाक्य नरम करबाक सत्य स्वीकार करैत अछि, मुदा एहि विशिष्ट मुहरबन्द फाइलमे आपत्ति दबेबाक दाबी असिद्ध रखैत अछि। आत्मस्वीकृति आ दोषारोपणक सीमा एहि अध्यायक कठोरतम नैतिक बिन्दु अछि। ‘हम पहिले त्रुटि कएने छी’ सँ ‘एहि नव दाबीमे हम दोषी छी’ अथवा

'पहिने त्रुटि छल, तेँ नव आरोप मिथ्या'—दुनू निष्कर्ष अनुचित। एहि त्रिकोणकेँ मृणाल आ जुलियाना अलग प्रश्नक सहायतासँ स्पष्ट करैत छथि। एक दोसर समाचारमे अज्ञात वरिष्ठ सूत्रक हवाला देल अछि जे भुगतान-पथ, विक्रेता-संबन्ध आ भाषा-मध्यस्थक भूमिका एके सूत्रमे देखल जाइत अछि। शशांक बतबैत अछि जे एकहि अभिलेख-पुञ्जमे अनेक विषयक एकत्र होना एके लेनदेन अथवा संयुक्त स्वामित्वक प्रमाण नहि। समान तिथि, समान नाम आ समान चीनी पदबंध सभ जाँचक प्रश्न खोलैत अछि; वास्तविक सम्बन्धक हेतु अलग चाही। एतय पाश्चात्य आख्यानक 'दस्तावेजी सम्मोहन'क सूक्ष्म रूप अछि—अनेक कागज एक मेजपर रखल देखिते पाठक मनमे एक कारणक आकृति बनय लागैत अछि। कथाकार ओहि सहज आकृतिक प्रतिवाद करैत छथि।

पुरान शिक्षक शशांककेँ प्रशिक्षण-संस्थाक नाम अपन निर्दोषताक चरित्र-प्रमाणपत्र रूपेँ नहि प्रयोग करबाक स्पष्ट शिक्षा दैत छथि। ई शिक्षा व्यक्तिगत ज्ञानक संस्थागत प्रतिष्ठामे परिवर्तित होयबाक जोखिम खोलैत अछि। आदित्य समाचारक सम्भावित स्रोतक प्रारम्भिक कालक्रम जाँचैत छथि, मुदा मुहरबन्द अनुक्रमणिकाक पूर्ण प्रति बाहर गेल, एहन प्रमाण नहि पबैत; किछु पदबंध कार्यालयी चर्चासँ मिलैत अछि, मुदा स्रोतक पहचान नहि। अज्ञात नम्बरक स्वामी सेहो अपुष्ट अछि आ प्रकाशित भुगतान-सन्दर्भक किछु अंश सार्वजनिक कागजसँ सेहो आयल हो सकैत अछि। एतय आशंका कायम रहैत अछि, किन्तु विश्वसनीय आरोपक श्रेणीमे प्रवेश नहि करैत।

रातिक अन्तमे न्यायालयक आगामी सीमित सुनवाईक पूर्वसूचना कथानककेँ नब मोड़ दैत अछि। शशांकक नाम गवाह-सूचीमे नहि, मुदा भाषिक सहायताक स्रोत रूपेँ उल्लेखित अछि; ओकरा बजाओल जा सकैत अछि। मनमे अपमानक ताप रहितो ओ लिखैत अछि जे दोष, अनुवादक पूर्व त्रुटि, समाचारक दावा आ मुहरबन्द सामग्रीक वास्तविक स्रोत अलग अछि। रचनाक सीमा ई जे ज्ञानमीमांसा बोधक कथन फेर स्पष्ट नैतिक वाक्यमे समाप्त होइत अछि। कलात्मक उपलब्धि ई जे नायक अपन अपमान हटेबाक

लेल सत्यकेँ तानैत नहि; स्रोत-अनिश्चितता कथाक रोमाञ्च रहैत अछि, निर्दोषता अथवा अपराधक कृत्रिम घोषणा नहि।

## अध्याय ४० — कैंटनिजक केवाड़ी १ : दू व्यापारिक प्रसंगक भेद, नरम अनुवादक स्वीकारोक्ति आ नव खण्डक प्रवेश

चालीसम अध्याय ‘कॉन्ट्रैक्ट आ छाया’ सँ ‘कैंटनिजक केवाड़ी’ धरि स्पष्ट रचनात्मक संक्रमण अछि। न्यायालयमे शशांकक सम्मुख दू फाइल राखल अछि: एक चलदूरभाष-कम्पनी वीवो सम्बन्धी भारतीय सेवा-करार, दोसर किछु मास पछाति दाँव-आधारित अनुप्रयोग-विक्रेताक प्रतिनिधिसँ भेल संक्षिप्त अनुवाद-बैसारक टिप्पणी। आरोप-पक्षक अधिवक्ता समान अनुवादक, चीनी भाषिक वृत्त, तकनीकी सेवाक सामान्य पद आ नगर-सम्बन्धक सादृश्यक आधारपर दू प्रसंगक सम्बन्धक प्रश्न उठबैत छथि। न्यायाधीश आरम्भे सुनवाईक सीमा भाषिक स्रोत, पेशागत सम्पर्क आ अनुमानक विश्वसनीयता धरि रखैत छथि। एहिसँ कथाकार पाठककेँ व्यापक अपराध-निर्णयक प्रत्याशासँ अलग करैत छथि।

वीवो सम्बन्धी करार मुख्यत: मानक चीनी आ अंग्रेजीमे छल, किछु व्यक्तिसँ कैंटनिजमे बात भेल। दोसर बैसारमे सेहो एक व्यक्ति कैंटनिज बोलने छल। ई भाषिक साम्य वास्तविक अछि, मुदा व्यावसायिक स्वामित्व, वित्तीय भागीदारी वा साझा नियन्त्रणक स्वतन्त्र प्रमाण नहि। एके ‘तकनीकी सेवा’ पद अनेक भिन्न कारोबारमे प्रयोग भऽ सकैत अछि। इमेल-श्रृंखलामे एक नाम समान देखितो पता भिन्न अछि; शशांक स्वतंत्र परिचय-साक्ष्य बिना व्यक्तिक एकता नहि मानैत। एतय उपमान बौद्धिक प्रश्नक उचित साधन अछि, मुदा अनुमानक साध्य सिद्ध करबाक लेल आवश्यक सम्बन्धक शृंखला अद्यापि अनुपस्थित अछि।

एहि न्यायालयीय दृश्यक आन्तरिक नाटकीय मोड़ दाँव-आधारित अनुप्रयोगक बैसारमे शशांक द्वारा लिखल ‘मनोरंजन मंच’ अनुवाद अछि। मूल कैंटनिज कथन दाँव लगाओल जाएवला अन्तर्जालीय खेलक अधिक विशिष्ट उल्लेख करैत छल। शशांक स्वीकार करैत अछि जे ओ प्रश्न कम करबाक प्रवृत्तिसँ मूलक कठोर अर्थ नरम बना देने छल। ई भाषिक छोट परिवर्तन नहि, पेशागत निर्णयक त्रुटि अछि। कथाकार एहि स्वीकारोक्तिक

टकरावक संग नायकक मनोवैज्ञानिक ताप प्रस्तुत करैत छथि—पहिने जे भाषा ओकरा विशेष बनौने छल, ओही भाषा आब शपथक अधीन ओकरा अपन कमी देखबैत अछि।

स्वीकारोक्तिक ठीक सीमा एतय महत्वपूर्ण अछि। शशांक मूल व्यापारक प्रकृति सामान्य शब्दमे समेटबाक जिम्मेदारी मानैत अछि; मुदा वीवो-करार आ बादक अनुप्रयोग-विक्रेताक बीच स्वामित्व वा भुगतान सम्बन्ध अपन जानकारीमे छल, ई नहि मानैत। दू अलग पेशागत पारिश्रमिक ओकर अनुवादक रूपमे भागीदारी देखबैत अछि, दुनू ग्राहकक परस्पर सम्बन्ध नहि। न्यायालयक प्रतिपरीक्षामे वकील करारक स्पष्ट उल्लेख, साझा भुगतानक प्रमाण, साझा प्रतिनिधिक उपस्थिति आ स्वतन्त्र नियन्त्रण-अभिलेखक प्रश्न उठबैत छथि। ई सब अनुपलब्ध रहला पर उपलब्ध सादृश्यक निष्कर्ष स्थगित रहैत अछि।

आदित्यक गवाही उपन्यासक पद्धतिक कथात्मक प्रतिरूप अछि। ओ स्वीकारैत छथि जे समानता जाँच शुरू करबाक कारण छल, मुदा एखन धरि दू कम्पनीक संयुक्त स्वामित्व वा भुगतान सम्बन्धक स्वतंत्र प्रमाण नहि भेटल। शशांकक नरम अनुवाद ओकर विश्वसनीयता, उद्देश्य आ पेशागत आचरणक अलग जाँच-विषय अछि। एहि दोषकेँ आन दू संस्थाक सम्बन्धक स्थानापन्न प्रमाण नहि बनाओल जा सकैत। ई दृष्टि पात्रकेँ निर्दोष घोषित नहि करैत, ओकर आचरणक विशिष्ट प्रश्न सही स्थानपर रखैत अछि। न्यायाधीशक अन्तरिम टिप्पणी सेहो व्यापक दोषनिर्णय नहि दैत, स्वीकारल भाषा-सरलीकरण आ शेष सम्बन्ध-विवेककेँ पृथक रखैत अछि।

भारतीय रस-विवेचनमे न्यायालयक भय, लज्जा आ अन्ततः सीमित राहत मिलैत अछि। जुलियानाक संग पितमपुरामे संवाद नायकक इच्छा आ अनुमान बीचक सम्बन्धपर लौटैत अछि: पहिले कम प्रश्न पूछल जाए, एहि इच्छासँ शब्द नरम भेल; आब निर्दोष मानल जाए, एहि इच्छासँ वास्तविक सादृश्यक सभ सूत्र काटि देब सेहो अनुचित होयत। एहि तरहें प्रायश्चित आत्मदण्ड नहि, उचित दोषक सीमित स्वीकार होइत अछि। ‘कैंटनिजक

केवाड़ी’ शीर्षकमे भाषिक कौशल नब कक्ष खोलैत अछि, मुदा पहिने सँ उपस्थित अर्थक अधिकारक प्रश्न एखन आरो कठोर संस्थागत रूप ग्रहण करैत अछि।

कलात्मक सीमा ई जे अभियोजन, बचाव, जाँच अधिकारी आ जुलियाना सभकेँ पर्याप्त सुव्यवस्थित सिद्धान्त-वाक्य भेटैत अछि; वास्तविक न्यायालयीय भाषा-कठिनाई आ पात्रक अपूर्ण विरोध अधिक जटिल भऽ सकैत छल। तथापि ‘मनोरंजन मंच’क ठोस भाषिक नरमी कथा केँ केवल न्यायशास्त्रीय उपदेश होयबासँ बचबैत अछि। अन्तिम समन आ डिजिटल सामग्री सुरक्षित जब्तीमे देबाक सूचना नव खण्डक आगामी प्रमाणगत चुनौती खोलैत अछि। उपन्यासक निरन्तरता एतय स्पष्ट अछि—शशांकक गहन आत्मस्वीकृति ओकरा बिना प्रमाण दोसर पक्षक दोष स्वीकार करब नहि सिखबैत।

## अध्याय ३६-४० : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — सीमा लिखबाक साधनसँ पेशागत प्रायश्चितक अदालत धरि

छत्तीसमसँ चालीसम अध्याय पाँच क्रमिक अवस्थामे शशांकक भाषिक शक्ति आ ओकर नैतिक अनुशासनक परीक्षण करैत अछि। मकाऊक स्क्रीनमे इच्छित अधिक जानकारी, छह-मासीय करारमे इच्छित अधिक अवसर, आयुक्तालयक फाइलमे आधा शब्दक आधिकारिक प्रभाव, समाचारमे असिद्ध स्रोतक सनसनी आ अन्ततः अदालतमे दाँव-आधारित खेलक नरम अनुवाद—सभ घटना शब्दक विस्तारक अलग रूप अछि। संरचनात्मक रूपसँ पहिल दू अध्याय अधिकारकेँ पहिनेसँ लिखल सीमामे रखैत अछि; अगिला दू अभिलेख आ समाचारमे भंग भेल सीमाक जाँच करैत अछि; अन्तिम अध्याय शशांकक स्वयं कएल अर्थ-संकुचनक सार्वजनिक मूल्याङ्कन करैत अछि।

शशांकक चरित्रगत विकासमे मकाऊक अनुमत निरीक्षण आ अदालतक ‘मनोरंजन मंच’ स्वीकृति तुलना योग्य अछि। पहिल दृश्य वर्तमानमे सीमा न लाँघबाक क्रिया अछि; दोसर पुरान त्रुटिक परिणाम स्वीकार करबाक क्रिया। केवल पुरान गलती स्वीकार करब चरित्र-परिवर्तन नहि, आ केवल वर्तमानमे सावधान रहब पहिनुक जिम्मेदारी मेटायब नहि। दुनूकेँ एक संग देखला पर नायकक धीमा, पुनरावर्ती आ अपूर्ण नैतिक विकास सामने अबैत अछि। विदेशी रोशनीक आकर्षण एखनहुँ अछि; सही शब्द खोजि लेबाक गर्वो अछि; किन्तु ओ एखन स्वरूप-संशोधनक सम्भावना खुलल रखैत अछि।

मृणाल, जुलियाना, राघव आ आदित्यक चतुष्क एहि पाँच अध्यायमे पुनः महत्त्वपूर्ण अछि। राघव स्पष्ट करारक व्यावहारिक सीमा बनबैत छथि; आदित्य लिखित अभिलेख आ साक्ष्य-श्रृंखला अलग रखैत छथि; मृणाल नायकक भयक सम्मान करैतो भयक स्वतन्त्र तर्क अस्वीकार करैत अछि; जुलियाना भाषाक इच्छा-प्रेरित विकृतिसँ सावधान करैत छथि। ई भूमिकासभक पारस्परिक अनुशासन कथाक स्थायित्वक आधार अछि। मुदा

सब पात्र बारम्बार एके सिद्धान्तक सरल संस्करण दोहरबैत छथि; बहुस्वरताक तुलना मे प्रमाण-विवेकक संगति अधिक प्रबल अछि।

नव्य न्यायीय स्तरपर एहि खण्डक विषय उपमान आ अनुमानेक सम्बन्ध अछि। मकाऊक नाम-पद्धति नोएडासँ मिलल, किन्तु परीक्षणमे साधारण प्रशिक्षण-चिह्न निकलल; अज्ञात फोनक शैली पुरान संदेशसँ मिलल, किन्तु व्यक्ति सिद्ध नहि; आयुक्तालयक 'सत्यापन शेष' आ 'सम्बन्ध नहि'क अन्तर वास्तविक, किन्तु उद्देश्य अस्पष्ट; दाँव-आधारित खेलक अनुवाद त्रुटिपूर्ण, किन्तु वीवो-संबन्धक स्वामित्वक सिद्धि अलग। एतय प्रत्येक हेतु स्वतंत्र साक्ष्यक सीमा माँगैत अछि। 'समानता अछि' आ 'कारणसम्बन्ध अछि'क बीच प्रत्यक्ष अभिलेख, समय, अधिकार आ वास्तविक व्यवहारक कड़ी चाही।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक दृष्टिसँ मकाऊक व्यापारिक बैसार, नोएडाक श्रमिक-करार, दिल्लीक वकील-कक्ष, निचला आयुक्तालय आ न्यायालयक प्रक्रिया अनेक सामाजिक संस्थाक समकालिक अस्तित्व देखबैत अछि। एक उपन्यासक भीतर एहि स्थलसभक भेट स्वतः बाह्य वास्तविक समूहक एकीकृत इतिहास प्रमाणित नहि करैत। मूल कथा-जगतमे पात्रक कथन, लिखित सहमति, अज्ञात संदेश आ न्यायालयक सीमित टिप्पणी अलग-अलग साक्ष्य-श्रेणी अछि। तुलना तखन उपयोगी होइत अछि जखन ई अन्तर सुरक्षित रहैत अछि।

रस आ ध्वनिक स्तरपर डर, अपमान, महत्त्वाकांक्षा, आत्मलज्जा आ मित्रताक करुण स्थिरता आवर्तित होइत अछि। मकाऊक रोशनीक ध्वनि अधिक देखबाक आकांक्षा अछि; राघवक लाल कलमक ध्वनि रोकेल गेल सम्भावित अधिकार; आयुक्तालयक हटायल पंक्तिक ध्वनि संस्थागत अस्पष्टता; पत्रकारक अधूरा प्रश्नक ध्वनि सार्वजनिक अपमान; न्यायालयक 'मनोरंजन मंच'क ध्वनि पुरान पेशागत त्रुटि। ई वस्तुसभ पाठककेँ विचारक दृश्य-साक्ष्य दैत अछि। मुदा नोटबुकमे सिद्धान्तक अत्यधिक प्रत्यक्ष सार अनेक बेर

उपन्यासक अस्पष्ट अनुगूँज घटबैत अछि; ई आलोचनात्मक सीमा भावी समेकित मूल्याङ्कनमे सेहो ध्यान राखबाक अछि।

अन्तिम निर्णय ई जे अध्याय ३६–४० उपन्यासक दोष-विवेकक महत्त्वपूर्ण मोड़ अछि। शशांक कोनो सर्वज्ञ निर्दोष नायक नहि बनैत; ओ अनुवादक रूपमे एक वास्तविक नरम अर्थक जिम्मेदारी मानैत अछि। एही संग ओ आन दू व्यावसायिक संस्थाक असिद्ध सम्बन्ध अपन त्रुटिक दण्ड स्वरूप स्वीकार नहि करैत। एहि द्विपक्षीय मर्यादामे प्रायश्चितक साहित्यिक गरिमा अछि। चालीसम अध्यायक अन्तिम डिजिटल समन अगिला खण्डक व्यावहारिक कसौटी खोलैत अछि, जखनकि ‘कैंटनिजक केवाड़ी’ आरम्भिक भाषिक प्रवेश-द्वारकेँ प्रमाणक नब सीमा बना दैत अछि।

## अध्याय ४१ — कैंटनिजक केवाड़ी २ : जब्त उपकरणक भाषा, अभिलेखक मूल रूप आ महत्त्वाकांक्षाक आत्मपरीक्षा

एकतालीसम अध्याय चालीसम अध्यायक न्यायालयीय स्वीकृतिसँ उठल प्रश्नकेँ प्रत्यक्ष जाँचक कोठलीमे लऽ जाइत अछि। शशांक निर्धारित समयसँ पहिने पहुँचैत अछि; ओकर मनमे समनक औपचारिकता आ पुनः आवश्यक होयबाक सुख एक संग चलि रहल अछि। एहि दू भावक साहचर्य महत्वपूर्ण अछि। समन स्वतः अपराध-सिद्धि नहि, मुदा प्रतिष्ठाक प्रमाणपत्रो नहि। तइयो नायक अपन भाषिक कौशलक कारण फेर केन्द्रमे अयबाक सम्भावनासँ आनन्दित अछि। कथाकार आरम्भहि मे ओकर सुधारकेँ निष्कलुष विजय बनबाक अवसर नहि दैत छथि। आत्मपरीक्षा निरन्तर अछि, कारण महत्त्वक आकर्षण न्यायिक अनुशासनक स्वीकृतिक बादो बाँचि रहल अछि। चालीसम अध्यायक अन्तिम डिजिटल समन एकतालीसम अध्यायक कथा-गति बनैत अछि; न्यायालयक व्याख्या एखन जब्त वस्तुक भौतिक आ भाषिक साक्षात्कारमे बदलैत अछि।

आदित्य तीन काज पहिनेसँ अलग करैत अछि—समनक उत्तर, दू जब्त उपकरणक अभिलेखीय सूची आ कैंटनिज-मन्दारिन सन्देशक अर्थ-परीक्षण। ई विभाजन घटनात्मक सुविधा मात्र नहि; उपन्यासक ज्ञानमीमांसात्मक स्थापत्य अछि। जब्ती-सूचीमे समय, तिथि, उपकरण, सीलबन्द थैली आ उपस्थित व्यक्तिक नाम रहब वस्तुक संरक्षण-इतिहास देखबैत अछि। मूल उपकरण शशांकक हाथमे नहि देल जाइत; तकनीकी दल बनौने प्रमाणित प्रतिलिपि ओकर कार्यक्षेत्र अछि। नायक पहिने एकरा अपन क्षमताक अवमूल्यन बुझैत अछि। तखन बुझैत अछि जे उपकरण खोलबाक सामर्थ्य आ उपकरण खोलबाक अधिकार एक वस्तु नहि। तकनीकी विशेषज्ञ, भाषा-विशेषज्ञ आ जाँचकर्ता तीनू अलग उत्तरदायित्व निभबैत छथि। एहि छोटी दृश्यसँ प्रत्यक्षक सीमा निर्मित होइत अछि: मूल वस्तु सुरक्षित रहला मात्रसँ ओकर अर्थ तय नहि; अर्थ पढ़लासँ ओकर मूल स्वरूप बदलबाक छूट नहि।

वीवो सेवा-करारक पुरान सन्देश शशांकक बैठक-उपस्थिति सिद्ध करैत अछि, मुदा भुगतान, स्वामित्व अथवा प्रबन्धकीय अधिकार नहि। आदित्य ओकरा स्पष्ट रूपसँ दोसर दाँव-आधारित अनुप्रयोग-विक्रेता संग भेटक भूमिकासँ अलग रखैत अछि। एके व्यक्तिक दू कार्यालय अथवा दू बैसारमे उपस्थितिक आधारपर भूमिका एके रहल होयत, एहन अनुमानक हेतु अपूर्ण अछि। उपन्यास एतय 'समयक समानता', 'व्यक्तिक समानता' आ 'अधिकारक समानता' कैं तीन स्वतंत्र प्रतिज्ञा बनबैत अछि। नायकसँ बारम्बार पुछल गेल प्रश्न पाठककैं सेहो बाध्य करैत अछि जे ओ उपस्थितिक आकर्षक विवरणकैं निर्णायक दोष-सिद्धि नहि मानय। एहि औपचारिक प्रतिपरीक्षामे कथा-कला एक विशेष जोखिम उठबैत अछि: संवाद कखनो न्यायक शिक्षापाठ सन क्रमबद्ध देखाइत अछि। मुदा शशांकक भीतर उठैत असन्तोष आ स्वीकारोक्तिक शारीरिक संकोच दृश्यकैं शुष्क सूत्रावली होयबासँ बचबैत अछि।

नायकक पुरान हस्तलिखित टिप्पणी—'ग्राहक प्रश्न अधिक; भाषा नरम राखू'—अध्यायक नैतिक केन्द्र अछि। ई वाक्य तखनक मनःस्थितिक अधिक निकट स्रोत अछि, जखनकि बहुत बादक आत्मरक्षात्मक बयान पुनर्रचना होयबाक सम्भावना राखैत अछि। आदित्यक प्रश्नपर शशांक 'ग्राहक' शब्दकैं निश्चित रूपैं कोनो एक संस्था संग जोड़ि नहि पबैत अछि। ओ सम्भावना स्वीकारैत अछि, मुदा अनिश्चिततासँ स्मृति-पूर्तिक बहाना नहि बनबैत। विशेष अर्थमे दोष एतय ओकर अपन भाषा-नरमी अछि; ओही दोषक आधारपर दू कम्पनीक साझा नियन्त्रण अथवा अपराधगत उद्देश्य सिद्ध मानब तर्क-विस्तार होयत। नव्य न्यायक दृष्टिसँ हस्तलिखित नोटक प्रत्यक्ष अर्थ आ ओकरासँ निकालल कार्य-सम्बन्धी अनुमानक बीच प्रमाणान्तर राखल गेल अछि। साहित्यिक रूपमे लिखल एक छोट वाक्य नायकक आत्मस्वीकृतिक लम्बा भाषणसँ बेसी तीक्ष्ण अछि, कारण ओ अपरिचित अदालतक वाणी नहि, ओकर पहिनुक अपन हाथक निशान अछि।

कैंटनिज ध्वनि-लिप्यन्तरणक 'चैनल' प्रसंगमे अध्याय भाषाक बहुअर्थकता विशिष्ट तकनीकी रूपमे खोलैत अछि। प्रारम्भिक हिन्दी सार 'साझा भुगतान

चैनल' लिखैत अछि, जखनकि मूल कथन 'जुड़ल चैनल', 'सम्बद्ध माध्यम' अथवा सम्पर्क-पथक अर्थ सेहो दऽ सकैत अछि। अगिला वाक्यमे रकमक उपस्थितिसँ भुगतानक अनुमान सम्भव भऽ सकैत अछि, मुदा व्याकरणक सम्बन्ध अनिवार्य रूपेँ स्थापित नहि। शशांक केवल कथित अशुद्धि पकड़बाक विशेषज्ञ नहि रहैत; ओ सम्भावित अर्थ, प्रसंगगत अनुमान आ असिद्ध विशेष निष्कर्षक अलग लेखा चाहैत अछि। अनुमानक हेतु निकटवर्ती वाक्य, वक्ता आ प्रसंग हो सकैत अछि; मुदा हेतु सँ साध्यक अनिवार्य सम्बन्ध स्थापित भेला बिना निश्चित लिखब औचित्यहीन। पाठक ई भेद ठोस शब्दक स्तरपर देखैत अछि, केवल दार्शनिक परिभाषामे नहि। कथन छोट छैक, मुदा तथ्य बदलि सकबाक ओकर क्षमता विशाल अछि।

स्वचालित ध्वनि-लिप्यन्तरणमे कैंटनिज उच्चारणक मन्दारिन शब्द रूपमे पढ़ल गेल त्रुटि नब जटिलता जोड़ैत अछि। शशांक तीन गलती चिन्हैत अछि; पहिनुक शशांक एकरा श्रेष्ठताक प्रदर्शन बनौने रहैत। आब ओ मूल ध्वनि आ यन्त्र-पाठ दुनू सुरक्षित राखि मनुष्यक सुधार अलग संलग्न करबाक पक्ष लैत अछि। एहि क्रियामे उपन्यासक अत्यन्त सफल संरचनात्मक रूपक अछि: सुधरल पाठ मूल अभिलेखक ऊपर अधिकार जमाबय नहि, ओकर बगलमे जिम्मेदार व्याख्या राखय। ई अभिलेखीय विवेक आधुनिक डिजिटल साक्ष्यक आवश्यक विषय अछि, आ अनुवादकक पेशागत नैतिकतासँ जैविक रूपसँ जुड़ल अछि। मूल प्रतिकेँ मेटि सुधार मात्र रखल गेल तँ संशोधनक इतिहास हेराएत; त्रुटिपूर्ण यन्त्र-पाठ अकेले राखल गेल तँ अर्थक विकृति स्थायी भऽ सकैत अछि। दुई अलग रूप सुरक्षित रखब सत्यक गतिशील अनुशासन अछि।

अध्यायक सर्वाधिक मार्मिक क्षण शशांकक अपन ध्वनि भेटबाक अछि, जाहिमे ओ जटिल पद सरल कऽ प्रश्नक संख्या घटेबाक बात कहने छल। अपन स्वरकेँ बाहरी साक्ष्य रूपमे सुनब आत्मप्रतिबिम्बक प्रचण्ड उपाय अछि। ई आवाज ओकरे अछि; नरम अर्थ चुनबाक प्रवृत्ति ओ स्वीकार करैत अछि; मुदा कतेक प्रश्न सचमुच घटल, केकर निर्णय बदलल, कोन आर्थिक परिणाम आयल—एहि ध्वनि मात्रसँ सिद्ध नहि। एतय आत्मस्वीकृति आ वैधानिक

श्रेणीकरणक विरोध नहि, समन्वय अछि। नैतिक दोष स्वीकारबाक लेल परिणामक कल्पना करब आवश्यक नहि; परिणामक आरोप जाँचबाक लेल नैतिक दोषक स्वीकृति मात्र पर्याप्त नहि। रसनिष्पत्तिमे लज्जा, भय आ सीमित धैर्य एक संग उपजैत अछि। ई लज्जा आत्मनिन्दाक नाटकीय मुद्रा नहि, अपन स्वरमे आपत्ति सुनबाक अनुभव अछि।

औपचारिक बयानमे शशांक वीवो सेवा-करार आ अलग विक्रेता-संग भेटक तथ्य स्वीकार करैत अछि, मुदा दुनूक आर्थिक सम्बन्ध अपन जानकारीमे सिद्ध छल, ई नहि कहैत। ओ अपन भाषा नरम करबाक पिछला व्यवहारकेँ अनुचित मानैत अछि। पुरान सन्देश ‘हमरा पहिले जोड़ू’ ओकर अपरिहार्य बनबाक चाहक लिखित स्मारक अछि। एहि वाक्यमे स्वामित्वक अधिकार नहि, आरम्भसँ भाषिक प्रक्रियामे प्रवेश पाबयबाक आकांक्षा निश्चित होइत अछि। कथाकार नायककेँ अपन दुरभिसन्धि गढ़ि अपराधी बनबाक आदेश नहि दैत छथि, न ओकर महत्त्वाकांक्षाकेँ निरापद दक्षता मानैत छथि। अस्तित्व आ अर्थक एहि दुई धुरीपर अध्याय टिकल अछि—केहन बात वास्तवमे लिखल, आ मनुष्य ओकरे माध्यमसँ अपन भूमिका केहन देखाबय चाहने छल।

डिजिटल फोल्डरक ‘मुख्य लोक’ वा ‘मुख्य सम्पर्क’ नाम नायकक एहि दोषकेँ सामाजिक आयाम दैत अछि। एक फोल्डरमे वीवो सेवा-करार आ अनुप्रयोग-विक्रेतासँ जुड़ल नाम भेटब साझा वर्गीकरणक आधार हो सकैत अछि; साझा आपराधिक समूहक सिद्धि नहि। नव्य न्यायक भाषामे फोल्डरमे एक संग रखल नाम हेतु अछि, मुदा जँ ओ मात्र व्यावसायिक परिचय-पञ्जी हो तँ व्यापक निष्कर्षक व्याप्ति भंग होइत अछि। आदित्यक छोट टिप्पणी ‘साझा वर्गीकरण सम्भव; वर्गीकरणक प्रकृति असिद्ध’ शशांकक पुरान बड़बोलापनक प्रतिलोम रूप होइत अछि। पहिने अतिरिक्त विशेषणसँ महत्त्व बढ़ैत छल; आब सटीक निषेधसँ सत्य सुरक्षित रहैत अछि। ई शैलीगत विरोध उपन्यासक भाषा-चिन्तनकेँ दृश्य बनबैत अछि।

मृणाल कार्यालयक भीतर नहि जाइत; बाहरो प्रतीक्षा करैत अछि। ई स्थानिक चुनाव दोस्ती आ औपचारिक प्रक्रियाक सीमा रखैत अछि। ओकर प्रश्न—

नायक अभियुक्त बनल कि निर्दोष घोषित भेल—दुनू अतिवादक बीच 'जाँच चलि रहल अछि'क कठोर तेसर अवस्था खोलैत अछि। जुलियाना लग अन्तिम भेंटमे शशांक मानैत अछि जे उपकरण हाथमे नहि भेटबाक बात ओकरा सर्वाधिक चोट देने छल। जुलियानाक प्रश्न ओकर ज्ञानेच्छाकेँ महत्त्वाकांक्षाक सिलसिलामे खोलैत अछि: अधिक देखब, अधिक बुझब, अधिक महत्त्वपूर्ण होयब। 'सत्य तोहर पद नहि'क शिक्षा नायकक पदाभिमान पर संयत प्रहार अछि। भारतीय ध्वनि-दृष्टिसँ 'केवाड़ी' एखन भाषा सँ स्वामित्व धरि बढ़ैत रूपक अछि; केवाड़ी खोलबाक कौशल घरक अधिकार नहि बनबैत।

आलोचनात्मक उपलब्धि ई जे न्यायिक उपकरण, व्यक्तिगत हस्तलेख, स्वचालित यन्त्र-पाठ, ध्वनि आ बातचीत सबहक स्वभाव भिन्न देखाओल गेल अछि। एखन नायकसँ केवल सही भाषा नहि, अपन ज्ञानक क्षेत्र छोट करबाक साहस माँगल जाइत अछि। सीमा सेहो चिन्हनीय अछि: आदित्य आ जुलियानाक प्रश्न अत्यन्त सुसंगत क्रममे ओकर सही आत्मविवेक बाहर निकालैत छथि, जाहिसँ आकस्मिक मनोवैज्ञानिक विचलनक अवकाश कम होइत अछि। तथापि 'ग्राहक प्रश्न अधिक'क हस्तलिखित नोट, उपकरण छूबऽ नहि देबाक अपमान आ नायकक अपन आवाजक असुविधा कथाकेँ विशिष्ट जीवित तनाव प्रदान करैत अछि। अन्तिम सन्देशमे वीवो करारक तीन विक्रेता, भुगतान-पाबनिहार आ कम्पनी-अभिलेखक प्रश्न उठैत अछि; अगिला अध्यायक 'गेट' एहि कथित महत्त्वक वास्तविक अभिलेखीय परीक्षा बनि ठाढ़ होइत अछि।

## अध्याय ४२ — VIVOक गेट : भाषिक प्रतिनिधित्वक स्वामित्वसँ भेद आ नाम-सादृश्यक तर्कपरीक्षा

बयालीसम अध्यायक आरम्भ नोएडाक वीवो कार्यालय-परिसरक फाटक पर शशांकक ठमकबासँ होइत अछि। एतय फाटक दृश्य-वस्तु मात्र नहि, पहिनुक ‘केवाड़ी’ रूपकक नगरीय आ संस्थागत विस्तार अछि। कार्यालयमे प्रवेश पाबब नायकक लेल एक समय प्रतिष्ठाक उन्नति छल; आब ओ प्रवेशक सीमा बुझबाक अवसर बनैत अछि। आदित्य पहिनेसँ तीन संचिका, कम्पनी-अभिलेख, भुगतान-सूची आ द्विभाषिक करार तैयार रखने अछि। भाषा-सहायताक आवश्यकता स्पष्ट अछि, मुदा स्वामित्वक निर्णय भाषिक नायकक हाथमे नहि। आरम्भिक हास्य—शशांकक टिप्पणी जे एहन बात आब चोट नहि पहुँचबैत, आदित्यक प्रतिवचन जे संकेत सिद्धि नहि—दुनूक बीच बढ़ल पेशागत परिचय देखबैत अछि। एकाधिक अध्याय धरि कठोर रहल सूत्र एहि प्रसंगमे चरित्रक सम्बन्धक स्वभाव भऽ गेल अछि।

पहिल संचिका स्थानीय मरम्मत-विक्रेताक करार अछि। चीनी मूल-पदक अंग्रेजी अनुवाद ‘अधिकृत प्रतिनिधि’क अधिक औपचारिक आ निर्णायक अर्थ दैत अछि, जखनकि सम्भावित मूल प्रयोग ‘सम्पर्क-प्रतिनिधि’ अथवा ‘कार्य-संयोजक’ धरि सीमित भऽ सकैत अछि। शशांक पदक कानूनी भार चिन्हैत अछि। ई सूक्ष्मता महत्त्वपूर्ण, कारण नियुक्त व्यक्तिक सन्देश आदान-प्रदान करबाक भूमिका, निर्णायक हस्ताक्षर अधिकार आ निगमक ओरसँ स्वतंत्र निर्णय करबाक शक्ति एके नहि। मूल पदक कम अधिकारपूर्ण होयबाक सम्भावना चिन्हित कएल गेल अछि, मुदा एतबसँ वास्तविक अधिकार अनुपस्थित छल, से सेहो सिद्ध नहि। नियुक्ति-पत्र, कम्पनी-अधिकार-पत्र आ संचालक-समितिक सामग्री अलग देखबाक चाही। एहि तरह भाषिक अनिश्चितता नकारात्मक प्रमाण नहि बनैत; ओ प्रमाण खोजबाक सही दिशा निश्चय करैत अछि।

दोसर संचिकामे भुगतान पाबयबला कम्पनीक चीनी नामक पहिल दू अक्षर दोसर व्यापारी समूहसँ मिलैत अछि। शशांकक भीतर पुरान रहस्य-खोजक चपलता तत्काल उठैत अछि; ओ कागत दुबारा पढ़ि पूर्ण नाम, पंजीकरण संख्या, ठेकाना आ निदेशक-सूची अलग भेटैत अछि। बाहरी वर्ण-समानता या ध्वनि-साम्य जाँच शुरू करबाक हेतु हो सकैत अछि, साझा स्वामित्वक साध्य नहि। एतय 'उपमान' शब्द सही अर्थमे अन्वेषणक आरम्भ होइत अछि, अन्तिम अनुमिति नहि। लेखक नायकक ज्ञानक उपलब्धि ओकर तुरन्त पहचानमे नहि, स्वयं अपन अनुमान रोकेबामे रखैत छथि। नायकक गर्व पूर्ण रूपसँ विलायल नहि; ओकर विषय बदलि गेल—पहिने 'रहस्य पकड़लहुँ', आब 'सीमा चिन्हलहुँ'। एहि दोसर गर्वमे सेहो आत्मसन्तोषक जोखिम छैक, जकरा कथा जुलियानाक वाक्य सँ फेर कसैत अछि।

तेसर संचिकामे 'लाभ पाबनिहार'क मूल चीनी पद अंग्रेजीमे 'लाभकारी स्वामी' बनि गेल अछि। ई पदान्तर अध्यायक सघनतम भाषिक-वैधानिक संघर्ष अछि। भुगतानक लाभ प्राप्त करब, हिस्सेदारीक कानूनी स्वामित्व राखब आ वास्तविक कारोबारी नियन्त्रण करब तीन स्वतंत्र सम्भावना अछि। मूल पद यदि केवल लाभक प्राप्तकर्ता बतबैत हो, तँ ओकरा स्वतः निर्णायक स्वामित्व श्रेणीमे राखब प्रमाणसँ पैघ कथन होयत। शशांक सावधानीपूर्वक 'गलत'क सरल निर्णयसँ सेहो हटैत अछि; ओ कहैत अछि जे अंग्रेजी अनुवाद कानूनी निष्कर्ष लेल बेसी निश्चित अछि। एहन शब्दचयन महत्वपूर्ण, कारण मूल पदक सम्भावित अर्थ आ संस्थागत अभिलेखक अन्तिम निष्कर्ष दुनूकेँ अलग रखैत अछि। उपन्यासक ज्ञान-संघर्ष कम अथवा बेसी शब्द जनबाक नहि, शब्दक सामाजिक आ विधिक परिणामक न्यायपूर्ण माप राखबाक अछि।

परिशिष्टक दोसर पद 'वास्तविक नियन्त्रण' आ साधारण 'स्वामित्व'क अन्तर खोलैत अछि। कोनो व्यक्ति कम्पनीक निर्णयकेँ प्रभावित करैत हो, ताहिसँ ओ अनिवार्य रूपेँ घोषित शेयरधारक नहि; घोषित हिस्सेदारी रहितो निर्णायक नियन्त्रण अन्यत्र होयबाक सम्भावना सिद्धान्ततः रहैत अछि। मगर ई सम्भावना स्वयं निष्कर्ष नहि। नियंत्रणक प्रकार, अवधि, अधिकार-पत्र, वित्तीय

लाभ आ वास्तविक निर्णयक कड़ी जाँचबाक पड़त। नव्य न्यायीय अवच्छेदक-विवेक एहि दृश्य पर लागू होइत अछि: 'प्रतिनिधि' केहन कार्यमे, 'लाभ' कोन लेनदेनमे, 'नियन्त्रण' कोन निर्णयक्षेत्रमे—एहि परिभाषित सम्बन्धक बिना सामान्य नाम निर्णयात्मक नहि। कथा एहि विचारकेँ स्वतन्त्र तर्कशास्त्र-पाठ जेकाँ टाँगैत नहि; शशांकक सामने राखल वास्तविक अनुबन्ध-पंक्तिक माध्यमसँ खोलैत अछि।

नायक स्वतंत्र भाषा-विशेषज्ञसँ अपन पठन फेर जँचयबाक सुझाव दैत अछि। ई वाक्य कथात्मक दृष्टिसँ सार्थक अछि। जे व्यक्ति पहिने अपन कड़ा भाषिक अधिकार स्थापित करबाक लालसा रखैत छल, ओ आब मतभिन्नता अभिलेखमे बचयबाक पक्षधर अछि। आदित्य एहि साहित्यिक वाक्यकेँ औपचारिक बयानमे नहि रखबाक हास्यपूर्ण टिप्पणी करैत अछि; एहि विनोदसँ अध्यायक घोषणात्मक गुरुत्व क्षणभर हलुक पड़ैत अछि। मुदा नायकक कथित नम्रता जाँचक अन्तिम उत्तर नहि। स्वतंत्र विशेषज्ञक अलग अर्थ भेटला पर कोन पाठ समर्थित होयत, से मूल सन्दर्भक तुलनासँ निर्धारित होयत। एहि अन्तरसँ उपन्यास पेशागत आत्मनियमनक वास्तविक परीक्षण देखबैत अछि। 'हमर अर्थ अन्तिम नहि' कहब आवश्यक, मुदा 'कुन अर्थ केहन प्रमाणपर टिकल' कहब सेहो आवश्यक।

कम्पनी-अभिलेख खुलिते शेयरधारक, निदेशक, हस्ताक्षर-अधिकार आ भुगतान-पाबनिहार अलग स्तम्भमे देखाओल जाइत छथि। एक नाम दू ठाम अछि, तेसर ठाम नहि; कोनो हस्ताक्षरकर्ता स्वामित्व-सूचीमे नहि; भुगतान पाबयबला अलग कम्पनीक निदेशक-सूची अलग अछि। दृश्य स्वयं एक लघु ज्ञान-सरणी बनैत अछि—नामक पुनरावृत्ति सम्बन्धक प्रमाण नहिये, मुदा फेर जाँचबाक दिशा देत। शशांक स्पष्ट घोषणा करैत अछि जे एहि बिन्दुपर भाषिक काम समाप्त; वास्तविक स्वामी ठहरायब बैंक-पथ, कम्पनी-अभिलेख आ नियन्त्रणक जाँचक विषय अछि। भारतीय औचित्य-विवेचनमे पेशागत वाणी ओकर योग्य क्षेत्रमे रहैत अछि। कथा अपन पात्रकेँ काजसँ हटबैत नहि,

ओकर कार्यकेँ यथार्थ सीमाबद्ध करैत अछि। ओ जे बुझि सकैत अछि से उपयोगी; जे नहि ठहरा सकैत अछि, ओ स्वीकारोक्ति कम उपयोगी नहि।

मृणालक सन्देश—फाटक खुलल कि नहि—नायककेँ रूपकात्मक उत्तर देबाक लोभ दैत अछि। ओ लिखैत अछि जे फाटक खुलल, मुदा घर अभिलेखक अछि; मृणाल तुरन्त कविता घटा तथ्य बढ़ेबाक आदेश दैत अछि। एहि विनिमयमे दू पात्रक सम्बन्ध सहज आ विश्वसनीय बनैत अछि। शशांक तखन तीन विक्रेता, दू भाषिक समानता, एक जोखिमपूर्ण अनुवाद आ असिद्ध स्वामित्वक संक्षिप्त लेखा दैत अछि। एहि दू उत्तरक विरोधेमे कथाकार अपन पद्धतिक आलोचना सेहो करैत छथि: सुन्दर रूपक तखन पर्याप्त नहि, जखन पाठककेँ तथ्य चाही। मृणाल व्याख्याकार नहि, नायकक वाक्यपर सामाजिक नियन्त्रण रखनिहार मित्र अछि। ओकर हास्य यथार्थक छोटी खुरपी जेकाँ अतिशयोक्तिक सतह हटबैत अछि।

दुपहरक बाद दाँव-आधारित अनुप्रयोग-विक्रेताक फाइल अलग खोलल जाइत अछि। साझा सुनाइ पड़ैत व्यावसायिक उपनामक मूल चीनी अक्षर अलग अछि; अंग्रेजी लिप्यन्तरण समान देखाइ पड़ितो व्यक्ति-परिचय स्थापित नहि। तीन भुगतान-पाबनिहारक अलग तिथि आ समान टिप्पणी-पद ‘सेवा निपटान’ जेकाँ अछि, मुदा समान श्रेणी एके वित्तीय मार्ग सिद्ध नहि करैत। आदित्य भुगतान-द्वार, तेसर खाता आ गुप्त-मुद्रा सम्बन्धी उल्लेखक आगामी जाँच बतबैत अछि। एकाएक शशांक मृणालक नाम पुछि बैसैत अछि। ई क्षण अत्यन्त आवश्यक अछि, कारण पूरा अध्याय भरि सफल पेशागत संयमक बाद मित्रताक भय ओकर सीमाबोध तोड़बाक तैयारी करैत अछि। आदित्य उचित कारण बिना नाम बतयबाक निषेध करैत अछि। नायक बुझैत अछि जे जाँचक निकट रहब सभ तथ्य जानबाक अधिकार नहि। एहि संवादमे अध्यायक नैतिक अन्तर्कथा शुरू होइत अछि।

साँझक जुलियाना-संवाद भाषाक गर्वकेँ साधना आ छल बीच भिन्न करैत अछि। सही पद-पहिचान पर गर्व निषिद्ध नहि; ओ गर्व यदि अपन निष्कर्षकेँ अपरीक्षणीय बना दैत अछि तँ समस्या अछि। नोटबुकमे प्रतिनिधि/स्वामी,

भुगतान-पाबनिहार/लाभकारी स्वामी, उच्चारण/व्यक्तिक पहचान आ टिप्पणी/वास्तविक धन-पथक अलग सूत्र लिखल जाइत अछि। एहि पुनरावृत्त सूत्रात्मक अन्तक कलात्मक सीमा अछि: पात्रक अनुभूति कखनो पूर्वनिर्धारित पाठ्य-पुस्तकीय निष्कर्षमे शीघ्र स्थिर भऽ जाइत अछि। तथापि वीवोक चमकैत फाटक, मृणालक 'कविता कम'क झिड़की आ ओकर नामक अचानक स्मरण अध्यायकेँ मनुष्यक मिश्रित भावसँ समृद्ध करैत अछि। फाटकक वास्तविकता संस्थागत विशालताक प्रतीक छल; अन्तमे नायक ओकरा केवल फाटक बुझैत अछि। भाषा विशेषज्ञक नैतिक उन्नति संस्थाक शक्तिक भागीदार बनेनाइ नहि, भिन्न कर्तव्य-सीमा देखनाइ अछि।

## अध्याय ४३ — कैंटनिजक केवाड़ी ४ : भुगतान-द्वारक अधूरा संकेत आ मित्रताक निष्पक्षता

तिरतालीसम अध्यायक पहिल पंक्ति शशांकक भीतर मृणालक नामक गूंजसँ शुरू होइत अछि। पिछला अध्यायमे कम्पनीक फाटक सामने छल, एतय मनक अपन फाटक साम्हिन अछि। आदित्य तीन नब अभिलेख-समूह खोलैत अछि—भुगतान-द्वार, तेसर खाताक कागत आ सन्देश-सम्बद्ध वित्तीय उल्लेख। मगर जाँचक आरम्भहिसँ ओ शशांकक मित्रक नाम जानबाक अधीरता रोकैत अछि। ई रोक केवल गोपनीयता-संरक्षणक कार्यविधि नहि, कथाकारक निर्मित नैतिक संकट अछि। नायक अनेक अध्याय धरि परक कम्पनीक विषयमे प्रमाण-विवेक सीखने अछि; अपन प्रिय व्यक्तिक विषयमे सेही कसौटी लागू करब ओकर लेल बहुते कठोर अछि। आरोपक इच्छुक मन आ बचावक इच्छुक मन एके प्रकारसँ तथ्यक अगाडि निष्कर्ष राखि सकैत अछि। मित्रता आ शत्रुताक तुलनासँ अध्याय न्यायबोधक गहन व्यक्तिगत परीक्षा आरम्भ करैत अछि।

भुगतान-द्वारक पहिल विवरणमे सेवा-विक्रेताक नामक नीचाँ तेसर कम्पनी भुगतान-पाबनिहार रूपमे अछि। ओकर नाम पुरान विक्रेता-सूचीक एक प्रविष्टिसँ ध्वन्यात्मक मिलैत अछि, मुदा एक नहि। आदित्य स्पष्ट करैत अछि जे भुगतान भेल होयबाक अभिलेख आ भुगतानक कारण, सेवा-प्रदर्शन, खाताक नियन्त्रण तथा अन्तिम लाभ-प्राप्तकर्ताक प्रमाणक विषय अलग अछि। एहि सूक्ष्म भेदसँ कथानक वित्तीय जालक आकर्षक रेखाचित्र बनयबासँ परहेज करैत अछि। ‘तेसर खाता’ पद ककरो पराया वा अवैध खाता होयबाक घोषणा नहि; ओ प्रसंगमे तेसर संस्थाक नाम पर दर्ज भुगतान-पथ अछि, जकर सम्बन्ध अलग सत्यापन चाहैत अछि। नव्य न्यायमे पक्षधर्मता रूपेँ पहिल कागत किछु तथ्य उपस्थित करैत अछि, मुदा इच्छित आपराधिक साध्य तक अनिवार्य व्याप्ति नहि देखबैत। साहित्यक पाठक एतय खातासँ अधिक शशांकक अनिश्चित प्रतिक्रियाकेँ पढ़ैत अछि: मित्रक नामक सम्भावना ओकर तर्कपर पहिनेहि दबाव बनौने अछि।

दोसर संचिकाक चीनी 'माध्यम' अथवा 'मार्ग' पद पूर्व अंग्रेजी अनुवादमे भुगतान-विशेषक अर्थ पाबि गेल अछि। शशांक एहि अनुवादकेँ एक संभावित प्रसंगगत चयन मानैत अछि, शब्दक स्वतन्त्र निश्चित अर्थ नहि। 'भुगतान-माध्यम' कहबाक लेल ककरो भुगतानक वस्तुगत क्रिया, समय आ सहसम्बद्ध वाक्यक आधार चाही; मात्र निकटक पंक्तिक वित्तीय प्रसंग मूलक बहुअर्थकता समाप्त नहि करैत। नायक अपन पुरान त्रुटि स्वीकार करैत अछि जे ओ कखनो सहजता अथवा प्रश्न घटेबाक लालसासँ अनेक सम्भावनामे एके अर्थ चुनि दैत छल। एहि आत्मस्वीकृतिसँ कथा आ आलोचना दुनू लाभान्वित होइत अछि, कारण शब्द-संकुचनक प्रवृत्ति एखन केवल एक पुरान अपराधगत शंका नहि, अनुवादकक दैनन्दिन पेशागत दबावक रूपमे सामने अछि। सुविधा, गति आ ग्राहक-सन्तोषक दबावमे अर्थक अलग सम्भावना हटि जाएब सम्भव अछि; मुदा ओकर विधिक परिणाम मूल क्रियासँ अलग जाँचबाक चाही।

तेसर संचिकामे गुप्त-मुद्रा सम्बन्धी अंक, तिथि आ टिप्पणी राखल अछि। एक शब्दक सम्भावित 'परत' अथवा 'स्तर' अर्थ वित्तीय अपराधक 'तहबद्धी' सिद्ध करबाक लेल पर्याप्त नहि। एकर आलोचनात्मक महत्त्व केवल अपराधसँ बाँचबाक नकारात्मक सूत्र नहि, भाषिक सन्दर्भक राजनीतिक उपयोगिता अछि। तकनीकी शब्दक भयावह सामाजिक प्रतिध्वनि होइत अछि; 'गुप्त-मुद्रा' सुनिते पाठक अपराध-प्रसंग कल्पना कऽ सकैत अछि। उपन्यास एहि पूर्वग्रह पर नियन्त्रण रखैत अछि। उल्लेख, वास्तविक लेनदेन, स्वामित्व, मूल-स्रोत आ उद्देश्यक पृथक कड़ी चाही। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक दृष्टिसँ वित्तीय प्रौद्योगिकीक भाषिक परिचलन आ वास्तविक लेनदेनक अभिलेख समान कालखंडमे रहितो स्वतः एके घटनाक कारण-शृंखला नहि बनैत। एतय कथानक बाह्य दुनियाक कोनो कम्पनी वा व्यक्तिक अपराध सिद्ध करबाक प्रयत्न नहि; ओ कथालोकक अन्तर्गत प्रमाणक वर्गीकरणक परीक्षा अछि।

ध्वनि-अंशमे लुप्त सर्वनाम कथाक अत्यन्त सूक्ष्म भाषिक घटना अछि। यन्त्र-लिप्यन्तरण 'ओहि खाता सँ भेजू' लिखि देने अछि, जखनकि मूल कैंटनिज ध्वनि 'ओहि बाटे पठाउ' जेकाँ बहुविकल्पी अर्थ दऽ सकैत अछि। 'ओहि' ककरा सूचित करैत अछि—खाता, सम्पर्क-पथ, अभिलेख वा पिछला कथनक दोसर वस्तु—ई ध्वनि अपने आपमे निश्चित नहि करैत। शशांक यन्त्रकेँ पूर्णतः मिथ्या घोषित नहि करैत; ओ कहैत अछि जे यन्त्र सम्भावना चुनने अछि, मुदा ओकर निश्चय समर्थित नहि। एहि अन्तरपर विचार आवश्यक अछि: त्रुटिपूर्ण निष्कर्षक आलोचना करबाक लेल विरोधी व्याख्याकेँ एकमात्र सत्य घोषित करब जरूरी नहि। उपलब्ध रिकॉर्डक सीमा चिन्हब अपनेमे वैज्ञानिक अनुशासन अछि। 'अनुपस्थित अपेक्षित चिह्न'क पद्धति सेहो एतय उदित होइत अछि—जँ एक विशेष खाते सँ वास्तविक प्रेषण भेल हो, तखन सम्बद्ध वित्तीय लेनदेन, पहिचान आ समय-संगतिक स्वतंत्र चिह्न खोजल जाएत; लुप्त सर्वनामकेँ ओहि सभक विकल्प नहि बनाओल जाएत।

एहि जाँचक बीच शशांककेँ लाल किलाक पर्यटक-संवादक आरम्भिक अभ्यास स्मरण अबैत अछि। पहिने आधा वाक्य सुनि पूरा आशय अनुमानित कएलासँ अधिकतम एक छोटी व्यवहारगत असुविधा होइत; आब ओही आदत कोनो व्यक्तिक नाम पर आरोप जोड़ि सकैत अछि। कथाकाल एहि संस्मरणसँ गहींर होइत अछि: आरम्भिक भाषा-जीविका आ वर्तमान न्यायिक भाषा-कर्तव्य एकहि मनुष्यक अलग सामाजिक अवस्था अछि। लेखक केवल तकनीकी विशेषताक विकास नहि, त्रुटिक सम्भावित परिणामक विस्तार देखबैत छथि। कथाक एक सार्थक ध्वनि ई जे विशेषज्ञ बनब, शब्दक अधिक अर्थ खोजि लेब मात्र नहि; अपन अनिश्चितता स्वीकार करबाक सामाजिक साहस विकसित करब अछि। युक्ति-प्रधान अध्यायमे आरम्भिक लाल किलाक स्मृति मानवीय समयक संवेदनशील फाट खोलैत अछि।

चौठ कागत शशांकक अपना चलदूरभाषसँ प्राप्त मृणालक पुरान सन्देश अछि। मृणाल अस्पष्ट भुगतान-प्रस्ताव पर लिखित स्पष्टता माँगबाक आ बिना साफ कागत अपन नाम नहि जोड़बाक सलाह देने छल। एहि एक अभिलेखमे मित्र चेतावनी देनिहार रूपमे उपस्थित अछि; ओकर ओहि विशेष

व्यवहारक पक्षमे पाठ-साक्ष्य अछि। शशांककेँ राहत भेटैत अछि, आ मन तुरन्त समस्त व्यक्ति पर निर्दोषताक निर्णय दऽ देबाक दिशामे दौड़ैत अछि। आदित्य फेर रोकैत अछि—एहि प्रसंगमे ओ सलाह देने छल, मुदा समूचा जीवनक निष्कर्ष एक सन्देशसँ नहि निकलत। ई अध्यायक सर्वाधिक प्रखर नैतिक उलट अछि। न्याय केवल आरोपीक विरुद्ध अप्रमाणित निष्कर्ष रोकब नहि; प्रिय व्यक्तिक पक्षमे अप्रमाणित पूर्ण-निर्दोषताक प्रमाणपत्र देबासँ सेहो परहेज करब। एहि दोहरी कसौटीसँ पात्रगत पक्षधरता आ प्रमाणगत निष्पक्षता अलग होइत अछि।

दिल्लीक छोट भोजनालयमे मृणाल-संवाद घटनाक केन्द्रक कागजी संसारसँ भावनात्मक बाहर अयब अछि। ओ शशांककेँ जाँचक गोपनीय विवरण नहि पूछैत, ओकर मुखक बदलल अवस्था पढ़ैत अछि। 'तौं हमरा बचेबाक कोशिश त' नहि करैत छह?'—ई प्रश्न मित्रताकेँ सरल आश्वासनक सम्बन्ध नहि रहय दैत। मृणाल अपन आदर्शीकरण सेहो अस्वीकार करैत अछि: दुनू एक-दोसरकेँ नायक न बनाउ, अपन-अपन तथ्यक जिम्मेदारी लिअ। ओकर मित्रताक परिभाषा तीन नकारात्मक-अनुकूल क्रियामे खुलैत अछि—कटु सत्य पर भागब नहि, प्रमाणसँ पैघ आरोपक साम्हिने मौन नहि, मित्रक मिथ्या पर ताली नहि। एतय संवाद असाधारण नैतिक संक्षिप्तता प्राप्त करैत अछि। सामाजिक बन्धनक स्थायित्व सत्य लुकायबासँ नहि, अनुचित आरोप आ अनुचित बचाव दुनू सहबाक साहससँ बनैत अछि।

जुलियाना संग साँझक भेटमे निष्पक्षता प्रेमक विरोधी नहि, ओकर अनुशासन रूपमे बुझाओल जाइत अछि। ई सूत्र उपन्यासक भाषिक नैतिकतासँ गहींर जुड़ैत अछि—प्रिय शब्दक अर्थ बढ़ायब, अप्रिय शब्दक अर्थ घटायब, दुनू प्रेम आ भयक अनुचित सम्पादकीय हस्तक्षेप हो सकैत अछि। भारतीय रस-परम्पराक दृष्टिसँ मित्रता सम्बन्धी मृदु भाव, प्रतिष्ठा-हानिक भय आ सत्यक प्रति दृढ़ता एक संग प्रवाहित अछि; मात्र वात्सल्य वा करुण भाव ओकर सम्पूर्णता नहि पकड़ैत। ध्वनि-स्तरपर चाहक भाप, छोट हँसी आ भोजनालयक संयम न्यायिक कागतक कठोरता विरुद्ध एक घरेलू लोकानुभूति

प्रदान करैत अछि। एहि कारण अध्याय विशुद्ध अभियोजन-दस्तावेज जेकाँ नहि लगैत, जीबैत सम्बन्धक कथा बनि उठैत अछि।

शिल्पगत सीमा स्पष्ट अछि: आदित्य, मृणाल आ जुलियाना तीनू एतबा सुसंगत बौद्धिक अनुशासन राखैत छथि जे नायकक भीतर फूटैत संशय प्रत्येक दृश्यअन्तमे सुव्यवस्थित नियम बनि जाइत अछि। सामान्य मनुष्यक बहुल विरोधाभासक आंशिक क्षय एतय देखाइत अछि। मुदा मृणालक पुरान सन्देशक प्रमाण, ओकर पूरा व्यक्ति पर निष्कर्ष रोकेबाक आग्रह आ नायकक अचानक राहतक क्षण सूक्ष्म अनुभव बनैत अछि। अन्तिम नोटबुक-पंक्ति अगिला घटनाकेँ नीतिक सूत्रमे समेटैत अछि, आ आदित्यक विदेश-यात्रा तथा मकाऊ बैसारक सन्देश पुनः नब प्रलोभन प्रस्तुत करैत अछि। अध्यायक आरम्भ मित्रताक भयसँ भेल; अन्ते मकाऊक पूर्व महत्त्वलिप्सा फेर उठैत अछि। ई संक्रमण आकस्मिक नहि—मित्रकेँ बचायब आ अपनाकेँ महत्त्वपूर्ण बनायब दुनू इच्छा प्रमाणक पहिने कथन लिखि सकैत अछि।

## अध्याय ४४ — कैंटनिजक केवाड़ी ५ : मकाऊक ‘विशेष पहुँच’ आ इच्छाक कारणसँ बदलैत अनुवाद

चवालीसम अध्यायक पहिल दृश्य रातिक अनिद्रा अछि। शशांकक लेल मकाऊ भौगोलिक नामसँ बेसी मनक पुरान लोभक सङ्केत अछि। चमकैत होटल, काँचक पार विदेशी प्रतिनिधि, सीमित प्रवेश-पटल आ अनुवादक रूपमे अपरिहार्य होयबाक कल्पना—ई सभ दृश्य एक संग लौटैत अछि। कथाकार एहि स्मृतिसभकेँ अपराधक स्वतः प्रमाण नहि बनबैत छथि; ओ नायकक मनोविज्ञानक सजीव सामग्री बनैत अछि। भाषा बुझब, प्रणालीक काज बुझब आ अपना केँ अपरिहार्य ठहरायब तीन अलग बात अछि—एहि त्रिस्तरीय अन्तरसँ अध्यायक मूल प्रश्न खुलैत अछि। पहिनुक अध्यायमे मित्रताक स्नेह अनुमानक दिशा प्रभावित कऽ सकैत छल; एतय महत्त्वक लोभ अनुमानक शब्दकोश बदलि देबाक क्षमता रखैत अछि। उपन्यासक कथाकाल वर्तमान अभिलेख-जाँच आ पुरान मकाऊ अनुभवक बीच आवर्तित होइत अछि, आ ओहि आवर्तनमे पात्रक आत्मबोधक विकास मापल जाइत अछि।

भोरमे शशांक अपन पुरान यात्रा-अभिलेख, बैसारक नोट, प्रवेश-अनुमति आ हस्तलिखित टिप्पणी एक थानमे रखैत अछि। ‘विशेष पहुँच उपलब्ध’क छोट पंक्ति ओकर दृष्टि पकड़ैत अछि। ई वाक्य मात्र व्यक्तिगत स्मरण नहि; समय पर लिखल अपन प्रतिष्ठागत स्वमूल्यांकन अछि। जाँच कार्यालयमे आदित्य सामग्रीकेँ यात्रा, बैसार आ प्रणाली-प्रवेश—तीन भागमे विभक्त करैत अछि। ई विभाजनक अर्थ नितान्त स्पष्ट: विदेश पहुँचल व्यक्ति बैसारमे उपस्थित रहल हो सकैत अछि; बैसारमे उपस्थित रहल व्यक्ति प्रदर्शन देखलक हो सकैत अछि; प्रदर्शन देखनिहारक पास प्रशासनिक नियंत्रण छल, से कदापि स्वतः सिद्ध नहि। शशांक स्वीकार करैत अछि जे ओकर पुरान ‘विशेष’ वास्तवमे सामान्य अनुवादकक तुलनामे बेसी प्रत्यक्ष देखबाक अनुभवक शब्द छल; उपलब्ध अनुमति सीमित प्रदर्शनक छल। आत्मवर्णनक अतिरिक्त विशेषण दस्तावेजी क्षेत्रक विस्तार नहि करैत।

आदित्य प्रश्न-दर-प्रश्न ग्राहकक खाता, भुगतान-पथ, प्रशासकीय नियन्त्रण आ मूल आँकड़ा बदलबाक अधिकारक विषय उठबैत अछि। नायक सभ प्रश्नपर निषेधक उत्तर दैत अछि। ई निषेध केवल रक्षात्मक मुद्रा होइतो सावधानी जरूरी अछि: उपलब्ध अनुमति-प्रमाणक सीमितता, शशांकक वर्तमान बयान आ अन्य सम्भावित स्रोतक जाँच अलग-अलग बात अछि। कथामे जाँचकर्ता लिखैत अछि जे 'विशेष पहुँच' गवाहक निजी विवरण छल, जबकि उपलब्ध अभिलेख सीमित प्रदर्शन बतबैत अछि। एकहि घटनाक दू भाषिक दर्जाक परस्पर मिलान नायकक प्रतिष्ठा-निर्माणक युक्ति उजागर करैत अछि। कलात्मक तीक्ष्णता एहि बातमे अछि जे पात्रक पैघ आत्मछवि कोनो दार्शनिक उपदेशसँ नहि, एक प्रशासनिक विवरणक छोट संशोधनसँ सिकुड़ि जाइत अछि। आ ओ सिकुड़ब अपमान नहि, शुद्धि होइत अछि।

मकाऊ बैसारमे दाँव-आधारित अनुप्रयोग-विक्रेताक नामक प्रतिनिधिक उपस्थिति छल, मुदा वीवो सेवा-करारक संस्था अलग अछि। किछु नामक साम्य आ सम्भावित तकनीकी समन्वयकक पुनरावृत्तिक बावजूद व्यक्तिगत पहचान प्रमाणित नहि; यदि एके व्यक्ति प्रमाणित होइतो, दू संस्थाक साझा स्वामित्व स्वतः निष्पन्न नहि। एहि क्रममे 'हेतु पर्याप्त नहि', 'व्याप्ति स्थापित नहि', 'निष्कर्ष रोकल जाए' सन छोट उत्तर नायकक सम्यक् अनुमान-अनुशासनक नाटकीय रूप अछि। ई निष्कर्ष-विराम उपन्यासक 'कारण-सम्बन्ध'क मुख्य प्रश्नपर रोशनी देत। मिथिलाक नव्य न्यायक प्रशिक्षण स्मरण करब केवल दार्शनिक वंशक नाम लेब नहि; ज्ञानक उक्त परम्पराकेँ समकालीन कम्पनी-अभिलेखक विशिष्ट सम्बन्धपर लागू करब अछि। तथापि अध्यायमे धुँआ-अग्नि आ धूलि सम्बन्धी शिक्षण-उदाहरण साधारण रूपमे आवैत अछि। ओ उद्धरण कथाक पात्रक विचार अछि; ओकरा स्वतंत्र वैधानिक निर्णय मानि लेब उचित नहि।

पुरान ध्वनि-अंशमे चीनी प्रतिनिधिक 'अगिला बेर भीतरक भाग सेहो देखब'क आश्वासन शशांकक पुरान हृदयमे विशेष अधिकारक आशा जगौने छल।

वर्तमानमे ओ बुझैत अछि जे 'भीतरक भाग' प्रणालीक बढ़ल प्रदर्शन, प्रशासनिक स्तर वा केवल व्यावसायिक विवरणमे ककरा सूचित करैत अछि, से मूल ध्वनि अपने नहि कहैत। नायक तखन इच्छा-प्रेरित अर्थ चुनेने छल; जाँचक वर्तमान पठन ओहि इच्छा कैं मूल वाक्यसँ अलग करैत अछि। एहि स्थलपर उपन्यास अनुवाद-तत्त्वक विशिष्ट नैतिक समस्या पकड़ैत अछि: तथ्यक अभाव मात्र नहि, पाठकक अपेक्षा सेहो कखनो भाषिक प्रसंगक रूप धारण करैत अछि। शशांकक 'हमरा अधिक पहुँच भेटत'क इच्छा व्याकरणीय साक्ष्य नहि, मानवीय प्रेरणा छल। जुलियानाक बादक पाठसँ ई भेद गहींर होइत अछि, मुदा नाटकक बीज एहने छोट वाक्यमे अछि।

मृणालक संग चाह-दोकानक बातचीतमे लोभक स्वरूप धनक अपेक्षा प्रतिष्ठाक रूपमे सामने अबैत अछि। मृणाल स्पष्ट करैत अछि जे 'हम उपयोगी छी', 'हम विशेषज्ञ छी' आ 'हमरा भरोसा कएल गेल'—ई सभ वाक्य अपनेमे सत्य हो सकैत अछि। संकट तखन होइत अछि जखन ओहि सत्यक भीतर 'तँ नियम हमर लेल ढीला होय'क अनुचित निष्कर्ष प्रवेश करैत अछि। एहि विचारमे कथाकार नायकक सामाजिक आरोहणक इतिहासपर तीक्ष्ण दृष्टि देत छथि। मिथिलाक भाषा-आधारित जीविका-खोजसँ विदेशक संसाधन-सम्मुख पहुँच धनी बनबाक मात्र अवसर नहि, सामाजिक मान्यताक भूख सेहो जगबैत अछि। पेशागत सफलताक यथार्थ इच्छा आ वैधानिक सीमा पार करबाक अधिकारक कल्पना अलग-अलग करब एहि उपन्यासक आर्थिक-सामाजिक आलोचना अछि। एकटा अतिरिक्त विशेषण कतेक पैघ आत्मछवि बना सकैत अछि—ई बात अध्याय वस्तुसंकेतक माध्यमसँ सम्हारैत अछि।

पितमपुराक जुलियाना-दृश्यमे दू कागज पर 'प्रवेश' आ 'अधिकार' लिखल रहब संवादक अत्यन्त दृश्यात्मक उपकरण अछि। 'प्रवेश' आ 'अधिकार' पास-पास ठाढ़ होइतो समान नहि; अधिकार आ स्वामित्वो समान नहि; स्वामित्व आ अपराधो समान नहि। शशांक पुरान अनुवादक एक प्रति देखैत अछि जाहिमे ओ चीनी पदक अर्थ 'भीतरक नियन्त्रण-पटल' कएने छल, जबकि प्रसंगमे 'प्रदर्शनक पछिलका भाग' सेहो सम्भव छल। ई केवल बादमे

याद आयल अपराधबोध नहि; मूल शब्द आ पुरान अनुवादक प्रत्यक्ष तुलना अछि। शशांक स्वीकार करैत अछि जे मूल अर्थ निर्धारित करबाक पहिने ओकर आकांक्षा निर्णय लेने छल। विद्वत्ता एतय त्रुटिक अन्त नहि, कखनो-कखनो इच्छित अर्थक सुन्दर तर्क बनायबाक साधन सेहो भऽ सकैत अछि। एहि आत्मस्वीकृति मे पात्रकेँ शिक्षित अभिमानसँ अलग करबाक प्रयास अछि, मुदा तकरा ज्ञान-सम्पन्नता छोड़बाक आदेश नहि।

मकाऊक पुरान लेखन-प्रसंगमे नायक नव पठन सुझबैत अछि—मूल पदक कमसँ कम दू सम्भावित अर्थ रखब आ प्रसंग पर्याप्त नहि हो तँ अनिश्चितता लिखब। पाठ-समालोचनाक दृष्टिसँ ई महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि, कारण मूल, अनुवाद आ व्याख्याक स्तर अलग राखल गेल अछि। 'भीतरक भाग'क व्यावसायिक अर्थ अधिकृत सर्वर-प्रशासनक निर्णय नहि बनैत। भाषिक ध्वनि आ प्रणालीगत तथ्यक बीच एहन विग्रह पाश्चात्य कथाविज्ञानक 'कथकक विश्वसनीयता'क प्रश्न खोलैत अछि: पहिनुक अनुभवक स्वयं-लेखक शशांक पूर्ण विश्वसनीय छल कि नहि? वर्तमान आलोचनाक प्रकाशमे पुरान नोट घटना-समयक आत्मवर्णन छल, तटस्थ सर्वज्ञ अभिलेख नहि। अध्याय अपन पहिनुक कथा-कथनकेँ भीतरसँ संशोधित करैत अछि; पाठक सेहो पहिने पढ़ल 'विशेष' शब्दकेँ फेर अर्थ दैत अछि। ई आत्म-आलोचनात्मक आख्यानक उत्तम उदाहरण अछि।

दोसरे दिन यात्रा-भत्ता, होटल आरक्षण आ सीमित तकनीकी प्रदर्शन-अनुमति पर पुनः प्रश्न उठैत अछि। ई तीनू साथे यात्रा, बैसारक व्यवस्था आ निर्धारित प्रदर्शनक समर्थन करैत अछि। ई अभिलेख अपनेमे नायकक खातापर प्रशासनिक नियन्त्रण, वास्तविक भुगतान-पथक ज्ञान अथवा दू संस्थाक साझा आपराधिक उद्देश्य सिद्ध नहि करैत। एहि उदाहरणसँ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टि ठोस काज करैत अछि: भूगोल—मकाऊ; सेवा-व्यवसाय—बैसार; प्रविधि—पटल; कानून—जाँच; स्मृति—विशेष पहुँच। ई पाँच रेखा एक स्थानपर भेटितो कारणगत एकता अलग समर्थन माँगैत अछि। उपन्यास

बाह्य इतिहासक दावा बनयबासँ बचैत अछि; कथाजगतक उपलब्ध स्रोतसँ तर्कक सीमा बनबैत अछि।

राघव भसीनक सन्देश गोपनीय विधिक समीक्षा आ वास्तविक सहभागिताक सीमान्त प्रश्नक पुनरागमन करैत अछि। शशांक पहिनुक 'हमरा बिना काज नहि चलत'क तत्परता छोड़ि चार प्रश्न उठबैत अछि—हमर भूमिका की, गोपनीय सलाह की, वास्तविक आचरण की, हमर बोलबाक अधिकार कतय धरि। एतय कथा लोभसँ भयक दिशामे मुड़ैत अछि। शिल्पगत सीमा ई जे उपसंहारक नोटबुक सिद्धान्त-सूची एक बेर फेर लगभग सम्पूर्ण भावार्थ स्पष्ट कऽ दैत अछि; पाठककेँ नब व्याख्याक खाली स्थान अल्प भेटैत अछि। मुदा मकाऊक होटल-झिलमिल, हस्तलिखित 'विशेष', पुरान ध्वनि, जुलियानाक दू कागज आ प्रशासकीय अनुमति मिलि काव्यात्मक आ प्रमाणगत दुनू परत बचा रखैत अछि। अध्याय नायककेँ निर्दोषताक छूट नहि दैत, ओकर पुरान विशेषाधिकार-कथा केँ वास्तविक सीमित प्रवेशक मापमे फेर पढ़ैत अछि।

## अध्याय ४५ — कैंटनिजक केवाड़ी ६ : कानूनी गोपनीयताक नाम, संचालनक स्वभाव आ भयक नैतिक उपयोग

पैंतालीसम अध्यायक आरम्भमे मकाऊक पहुँच-विषयक लोभक स्थानपर अलग प्रकारक भय आयल अछि। शशांककेँ डर ई नहि जे समन आयत अथवा ओकर नाम समाचारमे उठत; ओ डरैत अछि जे पूर्वमे कएल भाषा-काज कतेक ठाम निर्णयक दिशा प्रभावित करबाक हस्तक्षेप बनि गेल छल। ई प्रश्न नायकक पेशागत आत्मकथा पर गहींर प्रहार करैत अछि। भाषा-अर्थ उपलब्ध कराएब आ ककरो प्रश्न घटेबाक लेल अर्थ नरम करब केहन सीमा पर अलग होइत अछि? पात्रक अन्तर्द्वन्द्वक केन्द्र एतय बाह्य आरोप नहि, अपन पुरान क्रियाक स्वरूपक अस्पष्टता अछि। अयबला बैसारक व्यवस्था, काँचपर पड़ैत धूप आ व्यवस्थित कार्यालयक शान्ति एहि भीतरी बेचैनीक विरोध रचैत अछि। उपन्यास बाह्य कार्यालयक क्रमबद्धता आ नायकक अस्थिर नैतिक इतिहासकेँ एक दृश्यमे संग रखैत अछि।

राघव भसीन बैसारसँ पहिने शशांकक भूमिका लिखित रूपमे स्पष्ट करबबैत छथि—ओ भाषिक सहायता देत, कानूनी राय नहि, तथ्य-सत्यताक निर्णय नहि, व्यावसायिक निर्देश नहि। ई चतुर्विध विभाजन सोंचब जरूरी अछि: एक व्यक्ति कानून विषयक कक्षमे बैसल रहितो अधिवक्ता नहि; दस्तावेज पढ़ि देबासँ ओकरा तथ्यक निर्णायक अधिकार नहि; गोपनीय वातावरणमे भाषिक सहायता देबासँ संचालनक साझेदार नहि बनि जाइत। मुदा लिखित भूमिका स्वयं पूर्ण तथ्य नहि: यदि वास्तविक व्यवहार ओही सीमासँ बाहर गेल हो, तखन ओकर परीक्षण फेरो आवश्यक होयत। राघव एही कारण पहिनुक धुँधल भूमिका-सम्बन्ध पर बल दैत छथि। कथाकार पेशागत मर्यादाक स्थापनाकेँ नामकरणक खाली क्रिया नहि, भविष्यक आचरणक पहिने स्पष्ट सीमा बनबैत छथि।

बैसारमे भारतीय प्रतिनिधि, बाहरी लेखा-सलाहकार, राघव आ शशांक उपस्थित अछि। साम्हिन वीवो सेवा-करारक पुरान परिशिष्ट, अलग अनुप्रयोग-विक्रेता संग भेटक टिप्पणी आ 'कानूनी समीक्षा लेल' विषय-पंक्ति बला सन्देश अछि। शशांक प्रथमहि पुछैत अछि—ई विषय-पंक्ति बादमे जोड़ल गेल कि नहि? प्रतिनिधिक स्मृति अनिश्चित अछि; राघव मूल समय-मुद्रा आ संस्करण देखबाक निर्देश दैत छथि। ई सूक्ष्म दृश्य मूल दस्तावेजक जन्मकाल आ बादक वर्गीकरणक अन्तर खोलैत अछि। एक सन्देशक विषय बदलि जाइत अछि, ताहिसँ ओकर मूल भेजबाक उद्देश्य स्वतः नहि बदलैत। साक्ष्य-पठनमे ई पाठ विशेष महत्त्वक अछि: शीर्षक स्वयं स्रोत-अंश होइत अछि, मुदा ओकरा पूर्ण सन्दर्भक स्थायी निर्णायक बना देब दू स्तरक गड्डमड्ड अछि। नायकक पूर्व प्रवृत्ति ठीक एतय सक्रिय होय सकैत छल—अपने सुरक्षित महसूस करबाक कारण ओ समूचा सामग्रीकेँ विधिक संवाद मानि लेत।

'पछिला विक्रेता-पथक विवरण वकीलक माध्यमसँ भेजू'क मूल चीनी पदक अर्थ 'मार्ग', 'संचार-पथ' आ 'ककरो द्वारा पहुँचेबाक' जेकाँ बहुविकल्पी अछि। भारतीय प्रतिनिधि सहज, तुरन्त अनुवाद चाहैत अछि। मुदा शशांक एकार्थी निश्चितता देबाक बदला मूलक व्यापकता चिह्नित करैत अछि। एहि प्रसंगमे भाषा-विशेषज्ञक पेशागत सत्यनिष्ठा ग्राहकक सुविधाक प्रतिरोध बनैत अछि। जँ 'वकीलक माध्यमसँ' लिखितो ओकर अलग सम्भावना टिप्पणीमे रखल जाए, तँ स्रोतक अर्थक्षेत्र सुरक्षित रहैत अछि। मुदा एतय शिल्पगत एक रोचक प्रश्न अछि: जब अनुवादमे मुख्य वाक्य एक विकल्प चुनैत अछि आ दोसर अर्थ कोष्ठकमे राखैत अछि, पाठक मूल अर्थक वास्तविक भार केहन नापत? ई तनाव अनुवादकक पेशागत सीमा भीतर व्यावहारिक समाधान माँगैत अछि—समर्थक प्रसंग, अनिश्चित शब्द आ चयनित पाठक स्पष्ट चिह्न। अध्याय एहि समस्या कैं कचहरी-बहसक माध्यमसँ जीबैत बनबैत अछि।

‘पुरान बातचीतक केवल आवश्यक भाग साझा करू’क वाक्य एतय चयनित उद्धरणक नैतिक संकट अछि। ‘आवश्यक’ किनका लेल—वास्तविक विधिक प्रश्न लेल कि प्रश्न कम करबाक उद्देश्यसँ—मूल पंक्ति बतबैत नहि। दू अगिला सन्देश उपलब्ध नहि अछि। राघव अनुपस्थित सन्दर्भ खोजबाक बात कहैत छथि। ई ठाम ‘अनुपस्थित अपेक्षित चिह्न’क पद्धति सावधानीपूर्वक पढ़बाक अछि: हर अनुपस्थिति स्वतः दोषक संकेत नहि; जे प्रसंगकेँ पूर्ण बनाबय सकैत छल, ओकर खोज आवश्यक, मुदा ओकर अभाव पर उद्देश्यक कल्पित निर्णय अनुचित। अध्याय ‘सीमित उद्धरण’ आ ‘पूर्ण आशय’क भेद स्थापित करैत अछि। सामाजिक माध्यम अथवा पत्रकारिताक कतरल कथनक पहिनुक प्रसंगक संग एकर अन्तर्पाठीय सम्बन्ध देखाइत अछि, मुदा एहि बैसारमे कागजक स्थिति विशिष्ट अछि—नाम, मूल समयक्रम आ चयनक कारण जाँचब पड़त।

पुरान हस्तलिखित टिप्पणी—‘कानूनी समीक्षा लेल भाषा नरम कएल’—नायकक असुविधाकेँ सर्वाधिक तीव्र करैत अछि। एहि एक वाक्यमे भाषिक नरमी स्वयं ओकर स्वीकृत कर्म अछि; मुदा कानूनी सलाहक स्पष्ट निर्देश छल वा नहि, ओ स्मरणसँ स्थापित नहि करैत अछि। प्रतिनिधि फोल्डरक नाम देखबैत अछि, शशांक उत्तर दैत अछि जे नाम उद्देश्यक पूर्ण प्रमाण नहि। राघव प्रामाणिक प्रश्न उठबैत छथि—नरमी किएक कएल? नायक ‘शैली’क रक्षात्मक सरल उत्तर छोड़ि स्वीकार करैत अछि जे किछु बेर भारतीय पक्ष बेसी प्रश्न नहि पूछय, एहि इच्छा सँ कठोर पद नरम करैत छल। ई आत्मस्वीकृति उपन्यासक नैतिक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि। नायकक उद्देश्य पर जाँच आवश्यक रहितो, एहि एक स्वीकारोक्तिसँ विशिष्ट अवैध क्रियाकेँ नुकेबाक दोष सिद्ध भऽ गेल, एहन निष्कर्ष नहि। ई सममित विवेक लेखकक बौद्धिक शक्ति अछि: आत्मदोषक सही क्षेत्र मानब आ विस्तारक प्रमाण माँगब, दुनू संग चलैत अछि।

बैसारक दोसर भागमे कम्पनी प्रतिनिधि पुरान संचालन-सन्देशकेँ कानूनी समीक्षा-श्रृंखलामे राखबाक प्रस्ताव दैत अछि। सन्देश वास्तवमे भुगतान-पाबनिहारक नाम बदलबाक संचालन-सम्बन्धी चर्चा अछि; प्रारम्भमे कानूनी

राय माँगल गेल छल, से नहि। राघव स्पष्ट करैत छथि जे अधिवक्ताक नाम वा बादमे पठाओल आवरण लगेलासँ सन्देशक मूल प्रकृति स्वतः नहि बदलैत। शशांककेँ विशेष निर्देश छैक जे मूल पाठमे अनुपस्थित 'कानूनी निर्देश' शब्द अनुवादमे नहि जोड़ल जाए। एहि प्रसंगमे अदृश्य अधिकार-सृजनक खतरा उद्घाटित होइत अछि। एक विशेषण या अनुवादक जोड़ल एक पद व्यावसायिक बातचीतक सामाजिक पहचान बदलि सकैत अछि, तँ ओ पद मूलमे नहि हो तँ अनुवादकक निष्ठा ओकर अनुपस्थिति सुरक्षित रखबाक माँग करैत अछि। भारतीय औचित्य-विचारमे पदक उचित स्थान, पात्रक उचित भूमिका आ परिस्थितिक सही सन्दर्भ एक बिन्दुपर भेटैत अछि।

राघवक निजी संवाद गोपनीयताकेँ 'भयक ओसारा' न बनायबाक सल्लाह दैत अछि। एहि रूपकमे बाहरी कानूनी आश्रयक खोज आ भीतरक आत्मरक्षात्मक इच्छा मिलैत अछि। मुदा समीक्षाक लेल जरूरी सीमा ई छैक जे अधिवक्ता-संबद्ध संवादक गोपनीयता कोन परिस्थिति मे लागू होएत, ई विषय लागू कानून, उद्देश्य, स्रोत आ प्रक्रियाक तथ्यपर निर्भर अछि। उपन्यासक पात्र स्वयं एक सार्वत्रिक विधिक नियम नहि उद्घोषित करैत; राघव साफ कहैत छथि जे ओ सर्वज्ञ नहि छथि। तें एहि कथोपकथनकेँ स्वतन्त्र न्यायिक फैसला रूपमे उद्धृत करब अनुचित। एकर साहित्यिक मूल्य ई जे पात्र नैतिक छिपाव आ विधिक संरक्षणमे वास्तविक सम्बन्ध-जाँच चाहैत छथि, आ कथाकार वकीलकेँ सेहो सीमाबोध दैत छथि। राघवक ई आत्मसीमा शशांकक आन्तरिक परिवर्तनक विश्वसनीयता पुष्ट करैत अछि; सत्यक अधिकारी बनि बैसब एतय ककरो अधिकार नहि।

मृणालक संग चाह-दोकानक ओसारामे शशांक विवरणक गोपनीय सीमा पार नहि करैत; ओ अपन भयक प्रकृति मात्र कहैत अछि। ई सूक्ष्म व्यवहार महत्वपूर्ण, कारण ओ पेशागत विवेककेँ मित्रताक सम्बन्धमे लागू करैत अछि। मृणाल भयक दू रूप अलग करैत अछि—सत्यसँ भागयबला भय आ सीमा स्पष्ट करयबला चेतावनी। जुलियाना नाम आ स्वभावक दू शब्द लिखि दैत छथि; ई दृश्य अध्यायक विधिक प्रश्नकेँ दार्शनिक रूपकमे बदलैत अछि। 'गोपनीय' लिखल रहब निर्दोषताक प्रमाण नहि, आ खुला लिखल रहब

अपराधक प्रमाण नहि। एहि संवादमे नकारात्मक निष्कर्षक सममित औचित्य अछि। जँ नायक डरक कारण कोनो शब्द बचाव लेल जोड़त, तखन ओ पुनः अपन पुरान मनोवैज्ञानिक दोषमे लौटत; यदि डरक कारण मूल पदक सीमा लिखत, तखन भय विवेकक सहायक बनि सकैत अछि।

दोसरे दिन आदित्यक कार्यालयमे औपचारिक प्रश्नोत्तर उपन्यासक आत्मालोचनात्मक शिखर प्रस्तुत करैत अछि। विषय-पंक्तिमे 'कानूनी समीक्षा' अछि, भीतरक संदेश भुगतान-पाबनिहारक संचालन-चर्चा; शशांक दुनू तथ्य पृथक राखैत अछि। तकर बाद ओकर पुरान अनुवाद साम्हिन राखल जाइत अछि—मूल चीनी पद 'निर्धारित माध्यमसँ पठाउ'क व्यापक अर्थ दैत अछि, मुदा शशांक 'कानूनी मार्ग सँ भेजू'क अतिरिक्त विशिष्टता जोड़ने छल। ओ स्पष्ट स्वीकारैत अछि जे अधिवक्ताक प्रसंग मूल पदमे मिला देने छल। ई 'अधिक अर्थ जोड़बाक' त्रुटि अछि; त्रुटिक कारण आ विशिष्ट अपराधगत उद्देश्य अलग परीक्षण माँगैत अछि। आदित्य तीन सीमित निष्कर्ष पढ़ैत अछि, आ नायक अपन त्रुटिक जिम्मेदारी लेलो ओकरा उपलब्ध प्रमाणक सीमा धरि रखबाक आग्रह करैत अछि। 'अपना लेल कि सभ लेल?' प्रश्नपर 'सभ लेल' उत्तर पात्रक नैतिक यात्राक आवश्यक कसौटी अछि। अपन रक्षा लेल न्याय माँगब सहज; विरोधी पर सेहो ओही मर्यादा लागू करब गहींर परिवर्तन अछि।

रचनात्मक उपलब्धिक संग एक सीमा एतय पुनः उपस्थित अछि। उपन्यासक सभ विचार-प्रधान पात्र प्रमाणक सीमा सम्बन्धी नियम अपेक्षाकृत निर्बाध स्पष्टतासँ कहैत छथि; अधीर भारतीय प्रतिनिधि कुछ क्षण टकराव पैदा करितो तर्कक क्रम चटपट सुव्यवस्थित भऽ जाइत अछि। एहि कारण नैतिक संघर्षक अनिर्णीत अन्हार थोड़े कम देखाइत अछि। तथापि शशांकक 'कानूनी' जोड़ल मूल अनुवाद, स्मृतिहीन फोल्डर-शीर्षक, प्रतिनिधिक संचालन-सन्देश ढकबाक आग्रह आ राघवक आत्मसीमा विशिष्ट वस्तुगत प्रमाण प्रदान करैत अछि। भयक बदलैत आकार केवल उपदेश नहि, पात्रक प्रश्नक बारीकीमे देखाइत अछि। अन्तमे निचला कार्यालयक लिखित जाँच जारी रखबाक अभिमत आ ऊपरसँ प्राथमिकता घटेबाक मौखिक संकेत एक संग सामने

अबैत अछि। एतय 'विश्वासघात' निष्कर्ष नहि, सम्भावित छाया रूपमे लौटैत अछि। अगिला अध्यायसभ लेल संस्थागत बहुस्तर, अभिलेखीय लिखित-बनाम-मौखिक अन्तर आ वास्तविक निर्णयक उत्तरदायित्वक प्रश्न तैयार भऽ जाइत अछि।

## अध्याय ४१-४५ : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — भाषा-विशेषाधिकारसँ प्रमाणक समरूप कसौटी धरि

एकतालीसमसँ पैंतालीसम अध्याय 'कैंटनिजक केवाड़ी'क पाँच भिन्न परत खोलैत अछि। पहिलमे डिजिटल प्रतिलिपि आ जब्त मूल उपकरणक सम्बन्ध; दोसरमे व्यावसायिक नाम, प्रतिनिधित्व आ स्वामित्वक भेद; तेसरमे भुगतानक उल्लेख आ मित्रक प्रति अनुरागक संघर्ष; चौठमे मकाऊक सीमित प्रवेश आ 'विशेष पहुँच'क आत्मवर्णन; पाँचममे कानूनी गोपनीयताक नाम आ संचालनक वास्तविक प्रकृति। एहि क्रममे भाषा एक स्थिर कौशल नहि, लगातार बदलैत सामाजिक अधिकारक क्षेत्र रूपमे सामने अछि। प्रत्येक अध्याय एक सुदृढ़ भ्रमकेँ स्थानीय साक्ष्यक माध्यमसँ सीमित करैत अछि। जहाँ डिजिटल मूलक प्रतिलिपि अर्थक निर्णय नहि, ओतए कम्पनीक फाटक सत्ता नहि; जहाँ नामक साम्य स्वामित्व नहि, ओतए मित्रक बचाव सम्पूर्ण निर्दोषताक प्रमाण नहि; जहाँ गोपनीयताक शीर्षक विधिक स्वभाव नहि, ओतए तकनीकी 'भीतर' प्रशासनिक नियन्त्रण नहि। एहि सूत्रसभक निरन्तरता उपन्यासक आन्तरिक अभिकल्पना पुष्ट करैत अछि।

अध्याय ४१ आ ४५ विशेषतः एक-दोसराक दूरस्थ प्रतिबिम्ब अछि। पहिल अध्यायमे शशांकक पुरान नोट 'ग्राहक प्रश्न अधिक; भाषा नरम राखू' आ अपन ध्वनिमे प्रश्न घटेबाक इच्छा भेटैत अछि। पैंतालीसममे 'कानूनी समीक्षा लेल भाषा नरम कएल'क हस्तलिखित टिप्पणी आ 'निर्धारित माध्यम'केँ 'कानूनी मार्ग' बनायबाक वास्तविक त्रुटि भेटैत अछि। दूनूमे भाषा-विकृति नायक स्वीकार करैत अछि। मुदा एतए विशेष पक्ष एके नहि: पहिल अध्यायमे अर्थक नरमी प्रमुख; अन्तिममे अर्थक अधिक विशिष्ट पद जोड़ब प्रमुख। एक ठाम अर्थ-संकुचन अछि, दोसर ठाम बाह्य अर्थ-विस्तार; दुनूक साझा कारण ग्राहकक प्रश्न घटेबाक इच्छा, सामाजिक मान्यता आ पेशागत उपयोगिताक लोभ बनि सकैत अछि। शोधात्मक पठनमे दोषक एहि भिन्न रूपक पहिचान आवश्यक अछि, नहि तँ समूचा आलोचना 'नरम अनुवाद'क एक सामान्य सूत्रमे सिमटि जाएत।

अध्याय ४२ आ ४४मे फाटक आ विशेष पहुँचक दृश्यावलि परस्पर अर्थ दैत अछि। वीवोक भौतिक फाटक पार करितो शशांक भीतरक कम्पनीक स्वामित्व नहि पबैत; मकाऊमे सीमित पटल देखितो ओ प्रशासनिक नियन्त्रण नहि पबैत। भाषिक केवाड़ी आ भौतिक फाटक सामाजिक प्रविष्टिक साधन अछि, अधिकारक हस्तान्तरण नहि। भारतीय वक्रोक्ति-दृष्टिसँ एहि रूपकक शक्ति ओकर पुनरावृत्तिमे अछि: 'खोलब' क्रिया प्रत्येक बेर नब वस्तुकेँ छुबैत अछि —भाषा, कार्यालय, डिजिटल अभिलेख, मित्रता, कानूनी प्रक्रिया। ध्वनिक विस्तारमे पातर फाइल, कम्पनी-नामक चमक, पुरान कागजक 'विशेष' आ जुलियानाक दू कागज शामिल अछि। ई दृश्यवस्तुसभ घटनाक अमूर्त तर्ककेँ मूर्त अवलम्बन दैत अछि। मुदा अति सूत्रीकरणक जोखिमो अछि: जखन सभ प्रतीक नायकक नोटबुकमे पूर्ण व्याख्यायित भऽ जाइत अछि, पाठकक स्वतन्त्र अर्थ-खोज थोड़े संकुचित होइत अछि।

अध्याय ४३क मित्रताक संकटक तुलना ४२क भुगतान-पाबनिहार अभिलेख आ ४५क गोपनीयता-सन्देशसँ करब विशेष फलदायी अछि। तेसर अध्यायमे मृणालक एक पुरान लिखित सावधानी ओकर ओहि प्रसंगक समर्थक तथ्य अछि, मुदा ओकर सम्पूर्ण जीवनक निर्दोषताक निर्णय नहि। पाँचममे 'कानूनी समीक्षा'क शीर्षक सामग्रीक मूल संचालन-स्वभाव स्वयं तय नहि करैत। दुनूमे एक प्रमाणित अंशकेँ समग्रताक प्रमाण बनायबाक इच्छा उपस्थित अछि; फर्क केवल इच्छित परिणामक अछि। पहिलमे प्रेमक कारण सकारात्मक निष्कर्षक जल्दबाजी, दोसरमे भयक कारण सुरक्षित विधिक वर्गीकरणक जल्दबाजी। नायक जखन दुनू स्थितिमे एके मर्यादा मानैत अछि, तखन न्याय-विवेक केवल बुद्धिगत सामर्थ्य नहि, भावनात्मक आ सामाजिक आचरण बनि उठैत अछि। मृणालक 'मित्रक पक्षमे मिथ्या अनुमान' सम्बन्धी वाणी आ शशांकक 'सभ लेल' समान कसौटी माँगबाक स्वीकृति एहि परिवर्तनक दू प्रमुख क्षण अछि।

नव्य न्यायीय मूल्याङ्कनमे ई पाँच अध्याय प्रत्यक्ष, शब्द, उपमान, अनुमान आ हेत्वाभासक प्रश्नकेँ अन्तःस्थ रूपसँ जोड़ैत अछि। जब्ती-सूची मूल वस्तुक अभिलेखीय अस्तित्वक आधार अछि; यन्त्र-पाठ वा मानव अनुवादक कथन शब्दप्रमाणक अलग स्थिति रखैत अछि। चीनी नामक दू अक्षर वा समान ध्वनि उपमानक सम्भावित आधार अछि, अनिवार्य व्यक्तिगत एकताक निष्कर्ष नहि। भुगतान सम्बन्धी 'मार्ग' अथवा 'परत' पद विशिष्ट वित्तीय व्यवहारक सिद्ध हेतु नहि, प्रसंगगत अर्थक प्रश्न अछि। फोल्डरमे नामक सह-उपस्थिति वर्गीकरणक संकेत अछि, आपराधिक सहस्वामित्वक व्याप्ति नहि। 'कानूनी समीक्षा'क विषय-पंक्ति आ संचालन-सन्देशक वास्तविक कर्तव्य भिन्न स्तरक साक्ष्य अछि। एहि सभ ठाम मुख्य दोष बारम्बार एतबे नहि जे हेतु झूठ अछि; दोष ईहो भऽ सकैत अछि जे सत्य हेतुकेँ गलत साध्य धरि अनुपयुक्त विस्तार देल गेल अछि। तेँ आलोचनाक उचित निष्कर्ष 'संदेह मिटि गेल' नहि, 'कथनक प्रमाण-सीमा स्पष्ट भेल' अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक कसौटी पर शशांकक मिथिलासँ दिल्ली आ नोएडा धरि जीविकागत विकास, मकाऊक पेशागत आकर्षण, निगमक बहुभाषिक करार, डिजिटल फॉरेन्सिक जाँच आ न्यायालयक प्रक्रियाक समकालिकता गम्भीर विषय अछि। ई संस्थासभक पात्रक जीवनमे वास्तविक सम्पर्क होइत अछि, मुदा सम्पर्कक अर्थ एकजुट अपराधगत कथा स्वतः नहि। जँ साझा स्वामित्व सिद्ध करबाक हो तँ व्यक्तिक पहचान, कम्पनी-पंजीकरण, निदेशक-सम्बन्ध, धन-पथ आ वास्तविक नियन्त्रणक कड़ी चाही। जँ अनुवादकक उद्देश्य जाँचबाक हो तँ मूल शब्द, समयक टिप्पणी, बादक आचरण, निर्णयपर प्रभाव आ स्वतंत्र समर्थन अलग खोजबाक चाही। कथाजगतक घटनाक तुलना बाह्य इतिहास पर लादब नहि; समानान्तर इतिहासक वास्तविक अनुशासन ई अछि जे एक स्थल पर भेटैत रेखाक स्वतंत्र स्रोत आरम्भहि सँ सुरक्षित रहय। एहि अर्थमे उपन्यास भूमण्डलीय सेवा-श्रम आ संस्थागत जवाबदेहीक साहित्यिक दस्तावेज बनैत अछि, न कोनो बाह्य आपराधिक प्रकरणक प्रमाण-पत्र।

पाश्चात्य आख्यानशास्त्रक दृष्टिसँ एहि पाँच अध्यायमे एक रोचक संरचनात्मक द्वन्द्व अछि। एक दिस प्रतिदिन नब फाइल, नब सन्देश आ नब बैसारक अनुक्रम कथाकेँ छानबीन-आख्यानक गति दैत अछि; दोसर दिस प्रत्येक दृश्य नायकक पूर्व आत्मवर्णनकेँ फेर पढ़ि ओकर कथक-विश्वसनीयता बदलबैत अछि। 'विशेष पहुँच'क पुरान टिप्पणी अब सीमित प्रदर्शनक आत्म-अतिशयोक्ति बनैत अछि। 'कानूनी मार्ग'क पुरान अनुवाद अब प्रसंगक अतिविस्तार बनैत अछि। 'हमरा पहिले जोड़ू'क पुरान सन्देश अब शक्ति-लालसाक स्वीकृति बनैत अछि। ई पछिलका पुनर्पाठ कथाकालमे मात्र अतीतस्मृति नहि, अतीतक अर्थक पुनःनिर्माण अछि। शशांक सर्वज्ञ नायक नहि; ओ पहिने लिखल अपन शब्दक वर्तमान आलोचक बनैत अछि। एहि आत्म-संशोधक रचनाक विधामे आन्तरिक एकतान अछि, जाहि कारण १०० अध्यायक विस्तृत रचनामे सेहो नायकक नैतिक विकासक अखण्ड सूत्र बनि रहैत अछि।

रस-विवेचनमे आरम्भक उपयोगी होयबाक हर्ष, डिजिटल उपकरण छूबय नहि देबाक मान-चोट, हस्तलिखित नोटक लज्जा, मृणालक नामक भय, मकाऊक स्मृतिक लोभ आ गोपनीयता-संबन्धी आशंका आवर्तित होइत अछि। एहि भावसभक स्थिर परिणाम केवल शान्ति नहि, संयम अछि। शशांक अपन ज्ञानसँ अलग हुनर सिकैत अछि—अधूरा ज्ञान कहबाक हिम्मत। मृणालक चाह-दोकान आ जुलियानाक पितमपुराक स्थिर कोठली एहि बाहरी संस्थागत दुनियाक घरेलू प्रतिपक्ष अछि। मुदा दूनू पात्रकेँ केवल नैतिक प्रवक्ता मानि लेब त्रुटि होयत: मृणाल स्वयं अपन बारेमे पूर्ण प्रमाणपत्र अस्वीकार करैत अछि, जुलियाना नायकसँ उत्तरक प्रतीक्षा करैत छथि, बनाबटी निष्कर्ष पहिले नहि थोपैत छथि। एहि छोट क्रियासभमे मानवीय ऊष्मा अछि। तइयो यदा-कदा पात्रसभक संवाद अत्यन्त सममित, उपदेश-प्रवण आ सुव्यवस्थित बनैत अछि; एहि शिल्पगत सीमा पर समेकित समीक्षा मे चर्चा आवश्यक अछि।

एहि खण्डक समग्र साहित्यिक उपलब्धि दोषक द्विपक्षीय मर्यादा अछि। शशांक वास्तविक भाषिक त्रुटि स्वीकार करैत अछि, मुदा अनिश्चित विषयमे अपराधक स्वतः निष्कर्ष नहि दैत; प्रिय मित्रक उपयोगी सलाह देखैत अछि, मुदा समग्र निर्दोषताक कल्पना नहि गढ़ैत; व्यावसायिक भाषाक कुशलता मानैत अछि, मुदा कानूनी स्वामित्वक निर्णय अपन हाथमे नहि लैत; गोपनीय सलाहक वास्तविक सीमा सम्मानित करैत अछि, मुदा संचालनक मूल प्रकृति केवल शीर्षक बदलि लुकायबाक समर्थन नहि करैत। अध्याय ४५क अन्तमे निचला आयुक्तालयक लिखित जाँच जारी रखबाक टिप्पणी आ ऊपरसँ प्राथमिकता घटेबाक मौखिक सूचना नव तनाव खोलैत अछि। आगाँक अध्ययनमे एहि संस्थागत द्विरूपताकेँ पूर्वनिर्धारित षड्यन्त्र नहि मानि वास्तविक पाठक घटनाक्रम, लिखित स्रोत आ बदलैत पात्र-सम्बन्धक संग पढ़बाक चाही। ‘केवाड़ी’ एतय खुलल अछि, मुदा भीतरक सच्चाइ एखनहुँ चरणबद्ध परीक्षण माँगैत अछि।

## अध्याय ४६ — कैंटनिजक केवाड़ी ७ : संशोधित आयुक्तालयी सारांश आ संस्थागत विश्वासघातक असिद्ध अनुभूति

छियालीसम अध्यायक उद्घाटन दू विपरीत अभिलेखीय सूचना सँ होइत अछि—निचला आयुक्तालयक अधिकारीक लिखित टिप्पणी जाँच जारी रखबाक पक्षमे अछि, जखनकि ऊपरक स्तरसँ प्राथमिकता घटेबाक मौखिक सन्देश दर्ज भेल अछि। शशांक एहिमे तत्क्षण विश्वासघात देखैत अछि। ओकर क्रोध केवल बाहरी प्रशासनिक व्यवहारक प्रति नहि; ओ अपन पुरान भाषा नरम करबाक आदतक प्रतिच्छवि सेहो देखैत अछि। पहिले स्वयं जखन प्रश्न घटेबाक लेल कठोर पद कमजोर कएने छल, तखन एकरा सुविधा बुझैत छल। आब समान प्रवृत्ति संस्थागत अभिलेखमे देखिते नैतिक चोट अनुभव करैत अछि। कथाकार ई आत्मसन्दर्भ शुरुआतहि मे स्थापित करैत छथि, जाहिसँ अध्याय स्वतन्त्र संस्थागत षडयन्त्रक नाटकीय उद्घोष नहि बनि, नायकक अपन अनुभव आ उपलब्ध स्रोतक जटिल तुलनामे रूपान्तरित होइत अछि। कथाकाल वर्तमानी संस्करण-जाँच आ पुरान अपराधबोधक बीच चलैत अछि।

आदित्य तीन संचिका भिन्न राखैत अछि—वीवो सेवा-करार, स्वतंत्र दाँव-आधारित अनुप्रयोग-विक्रेता आ आन्तरिक सारांश। एहि भौतिक विभाजनमे उपन्यासक बौद्धिक मर्यादा मूर्त अछि। एके अनुवादकक उपस्थितिसँ दू व्यावसायिक संस्थाक स्वामित्व वा संयुक्त वित्तीय व्यवहार साबित नहि; साझा पदावली जाँचक प्रश्न खोलैत अछि, उत्तर नहि। जँ तेसर भुगतान-पाबनिहारक नाम दुनू संचिकामे भेटय, तखन पहिने नामक वास्तविक पहिचान, भूमिका, अधिकार आ व्यवहारक कड़ी खोजी। आदित्यक ‘जानब आ मानब दू बात अछि’क अभिप्राय नायकक आत्मविश्वास कँ पुनः सीमित करैत अछि। जाँच अधिकारी एहि पाँच अध्यायक प्रमुख नियामक पात्र होइत अछि, मुदा ई भूमिका सर्वज्ञता नहि। ओ साक्ष्यक पृथक वस्तुत्वक रक्षा करैत अछि, जेकरा कथाकार संस्थागत तर्कक नैतिक आधार बनबैत छथि।

मुख्य दृश्य सारांशक दू संस्करणक तुलना अछि। पहिलमे प्रत्यक्ष स्वामित्व-सम्बन्ध सिद्ध नहि होयबाक संग किछु भाषिक समानता आ भुगतान-पाबनिहारक जाँच शेष रहबाक कथन अछि। दोसरमे मात्र 'कोनो सम्बन्ध नहि भेटल'क व्यापक स्वर अछि। एक पंक्ति उपलब्ध प्रमाणक अपर्याप्तता बतबैत अछि; दोसर पंक्ति ओही अपूर्ण जाँचकेँ सर्वसम्बन्ध-विहीनता जेकाँ पाठकीय अर्थ दऽ सकैत अछि। शब्द बदलल अछि—ई दस्तावेजक तुलना सँ प्रत्यक्ष देखल जा सकैत अछि। मुदा ई बदलाव किएक भेल, ककर द्वारा कएल गेल आ ओकर पीछे उद्देश्य की छल, ई अलग सवाल अछि। शशांक प्रारम्भमे 'मिथ्या' कहय चाहैत अछि; फेर 'सम्बन्ध' शब्दक व्यापकता आ मूल-प्रति-इतिहास देखबाक आवश्यकता स्वीकार करैत अछि। एहि रोकल गेल उच्चारणमे पात्रक नैतिक प्रगति अछि। दोषक सम्भावनाक गम्भीरता घटाओल नहि गेल, मुदा आरोपकेँ प्राप्त प्रमाणसँ बेसी विस्तृतो नहि कएल गेल।

लिखित मूल टिप्पणी मे अलग विक्रेता-संचिका बन्द नहि करबाक कारण स्पष्ट अछि: भुगतान-पाबनिहारक नाम आ वास्तविक नियन्त्रणक प्रश्न शेष अछि। मौखिक सूचना दर्ज करनिहार लिपिक कहैत अछि जे प्रत्यक्ष कर-प्रभाव स्पष्ट नहि, तेँ संसाधनक प्राथमिकता घटाओल जाए। एतय 'जाँचक तथ्यगत निर्णय' आ 'संसाधनक प्रशासनिक प्राथमिकता' बीचक भेद निर्णायक अछि। यदि प्राथमिकता घटायल गेल, ताहिसँ स्वतः दोष नुकेबाक षड्यन्त्र नहि बनैत; मुदा शेष सत्यापनक भाषा अन्तिम सारांशसँ हटि गेल, तेँ ओकर अभिलेखीय कारण अवश्य प्रश्नयोग्य अछि। समयक साम्य—एके दिन बदलल सारांश आ मौखिक प्राथमिकता-सन्देश—संबन्धक सम्भावना दैत अछि, कारणगत व्याप्ति नहि। नव्य न्यायक तर्कमे कारणक निष्कर्ष लेल सम्बन्धक उपयुक्त मध्यवर्ती साक्ष्य चाही। एहि सूक्ष्म भेदक बिना समकालिकता केँ मिलीभगत घोषित करब हेत्वाभासक जोखिम बनैत अछि।

निचला अधिकारीक कक्षमे प्रवेशसँ संस्थागत व्यथा मानवीय रूप पबैत अछि। ओकर मुख थाकल, स्वर स्थिर; ओ अपन मूल टिप्पणीक सीमा पर ठाढ़ रहैत अछि। 'अन्तिम सारांशमे हमर लंबित शब्द नहि रहल'—ई प्रत्यक्ष तुलना

अछि। ओ जानि-बुझि हटाओल गेल, एहन अनुभूति व्यक्त करैत अछि, मुदा अपन अनुभूतिकेँ प्रमाण नहि मानैत। एहि वाक्यमे वास्तविक प्रतिरोधक साहित्यिक गरिमा अछि: संस्थागत असहमतिक बीच साहस कखनो नायकत्वक पैघ भाषण नहि, लिखित शब्द वापस न लेबाक दृढता होइत अछि। आदित्य अधिकारीक अनुभूति पृथक दर्ज करैत अछि आ मूल प्रति, संस्करण-इतिहास तथा वितरण-पथ संलग्न करबाक कहैत अछि। लेखक निम्नस्तरीय कर्मचारीक शब्दकेँ संस्थाक दीर्घकालिक स्मृतिमे बचबाक सम्भावना दैत छथि; ई लोक-सामाजिक आलोचनाक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि।

द्विभाषिक सारांशमे चीनी मूल 'आगाँ सत्यापन अपेक्षित', अंग्रेजी 'आगाँ समीक्षा वैकल्पिक' आ हस्तलिखित 'आवश्यक नहि' क्रमशः अर्थ कमजोर करैत अछि। ई त्रिस्तरीय उदाहरण ४५ अध्यायक अतिरिक्त 'कानूनी' पद जोड़बाक त्रुटिक प्रतिलोम अछि। एक ठाम अनुवादक मूलमे अनुपस्थित अधिकारवाचक पद जोड़लक; एतय मूलक अपेक्षित कर्तव्य धीरे-धीरे वैकल्पिक बनि अनावश्यक धरि पहुँचि रहल अछि। दुनू स्थितिमे भाषा विचारक निष्क्रिय आवरण नहि, संस्थागत क्रियाक प्रभावकारी साधन अछि। मगर अनुवादक वा सम्पादकक उद्देश्य असिद्ध रहला पर प्रत्येक कमजोरी अपराधमय योजना सिद्ध नहि करैत। आदित्य शशांकक क्रोधकेँ लक्ष्य करैत कहैत अछि जे भावना उद्देश्यक रिक्त स्थान भरि दैत अछि। ई कथन नायकक प्रत्यक्ष विवेकक मोड़ अछि; न्यायिक भाषा एतय शुद्धि-परिशिष्ट नहि, क्रोधक विरोधमे आत्मनियमन अछि।

दिनक अन्तमे संस्करण-इतिहास तीन स्तरक सम्पादन बतबैत अछि—मूल अधिकारी, छोट करनिहार दोसर अधिकारी आ अन्तिम परिवर्तन। मुदा परिवर्तनक कारणक स्पष्ट टिप्पणी नहि। एक अधिकारीक नाम पहिनुक वीवो-सम्बन्धी प्रशासनिक समीक्षामे सेहो देखाइत अछि। शशांक पुनः साझा योजनाक सङ्केत देखय चाहैत अछि, आदित्य एके व्यक्ति दू फाइलमे रहबाक तथ्यधरि कथन सीमित रखैत अछि। व्यक्ति-उपस्थितिक समानता, भूमिका-समानता आ उद्देश्यमूलक मिलीभगत अलग-अलग दाबी अछि। एहि

स्थलपर अपराधक भव्य कथा गढ़बाक आग्रहक स्थानपर स्रोतक अनिश्चितता नायकक अनुभव बनैत अछि। पुरान कथाक स्वतन्त्र संचिकासभ अब तेसर संस्थागत सारांशक माध्यमसँ जुदा होयबाक सम्भावना देखबैत अछि, मुदा ताहि जोड़बाक औपचारिक कड़ी अभी पूर्ण नहि। ई संयम उपन्यासक शोधमूल्य बढ़बैत अछि।

मृणालक दूरभाष पर उल्टा प्रश्न नायकक छिपल पूर्वग्रह खोलैत अछि: ओ दोसरक कमजोर भाषा देखिते 'विश्वासघात' कहैत अछि, जबकि अपन पुरान नरमीकेँ सुविधा कहैत छल। ई तुलना आरोपित अधिकारीकेँ निर्दोष ठहरायबाक युक्ति नहि; ई नायकक नैतिक कसौटी समान बनायबाक आग्रह अछि। जुलियानाक 'समान छाया देखिते समान शरीर मत मानू'क रूपक अधिक वस्तुगत अर्थ दैत अछि। दृश्य दोहरा सकैत अछि, प्रेरणा भिन्न हो सकैत अछि। 'विश्वासघात अनुभूति' आ 'मिलीभगत निष्कर्ष'क भेद रस तथा तर्कक अन्तर्बन्ध अछि। करुणा, क्रोध आ संस्थागत अविश्वासक भाव जीवित रहैत अछि; तथापि निष्कर्ष अपन पृथक प्रमाण माँगैत अछि। एहि अध्यायमे रसात्मक आवेगकेँ दबाओल नहि, विवेक द्वारा दिशा देल गेल अछि।

शिल्पगत दृष्टिसँ दस्तावेजक तीन अवस्थाक वस्तुगत प्रस्तुति अध्यायक सर्वाधिक सफल अंश अछि। स्थानीय अधिकारीक थाकल मुख आ मृणालक फोनक संवाद कथाकेँ कागतसँ बाहिरक अनुभव दैत अछि। सीमा ई जे बारम्बार आदित्य प्रश्न कऽ ठीक जाँच-सूत्र निकालैत अछि; व्यवहारिक प्रशासनिक अव्यवस्थाक कुछ धुँधलपन उपदेशात्मक स्पष्टतामे बदलि जाइत अछि। मुदा पाठककेँ सम्पादनक परिणाम अनुभूति रूपमे देखबाक मौका भेटैत अछि: 'सत्यापन शेष' हटिते अन्तिम कथनक सामाजिक अर्थ बदलि जाइत अछि। उपसंहारमे आन्तरिक सारांशक कतरल अंश समाचारक संवाददाता लग पहुँचबाक सूचना नव कथात्मक संकट खोलैत अछि। 'दू नेटवर्कक बीच भाषिक कड़ी'क प्रश्नमे जे द्विसंस्थागत एकता अभी असिद्ध अछि, ओ प्रश्नक व्याकरणमे पहिनेसँ मानल गेल अछि। संस्थागत कागतसँ मीडिया धरि अर्थ-विकृतक यात्रा अगिला अध्यायक विषय बनैत अछि।

## अध्याय ४७ — कैंटनिजक केवाड़ी ८ : कतरल पंक्ति, समाचारक पूर्वनिर्णय आ अपमानक संयम

सैंतालीसम अध्याय रातिक अज्ञात प्रश्नसँ खुलैत अछि—शशांक दू ‘नेटवर्क’क बीच ‘भाषिक कड़ी’ छल कि नहि। एहि प्रश्नक सामर्थ्य एकर शब्द-सज्जामे छैक: दू स्वतंत्र संस्थागत नेटवर्कक अस्तित्व आ परस्पर सम्बद्धता जाँचपूर्वक सिद्ध नहि, मुदा प्रश्न हुनका मानि लेने अछि। नायकक तीन प्रतिक्रिया क्रमश: उगैत अछि—समूचा कथन मिथ्या घोषित करब, संवाददाता कैं धमकी देब, अथवा पहिने अपन प्रतिवादक सीमा बुझब। एहि त्रिभागी मनोदशामे पाठक शशांकक भीतरक पुरान प्रतिष्ठालिप्सा आ नब अनुशासनक संघर्ष देखैत अछि। मृणालक सन्देश नायककैं दू सत्य स्वीकार करबबैत अछि—वीवो सेवा-करारमे उपस्थित रहल आ अलग अनुप्रयोग-विक्रेता संग अनुवादक रूपमे भेट भेल। ‘दू नेटवर्कक कड़ी’ एक तेसर अलग निष्कर्ष अछि। अपमानक प्रतिकार लेल अपन स्वीकृत घटना मेटा देब आत्मप्रतिरक्षाक मिथ्या बनि सकैत अछि।

अन्तर्जालीय समाचारक शीर्षक अन्तमे प्रश्नचिह्न रखैत अछि, मुदा मुख्य पाठ अधिक निश्चित संकेत करैत अछि। एके अनुवादकक दू प्रसंगमे उपस्थितिक सूचना आ सम्भावित ‘समन्वयकारी भूमिका’क अनुमानक बीच पत्रकारिताक अस्पष्ट अन्तर पाठककैं संशयक स्थानपर पूर्वनिर्णय दऽ सकैत अछि। शशांक समाचार तीन बेर पढ़ैत अछि—क्रोधमे, अपमानमे आ अनुवादक जेकाँ। एहि तीन पठनक दृश्य गहींर साहित्यिक कौशल अछि: बाहरी कथन एके अछि, मुदा पढ़निहारक भावावस्था बदललासँ ओहिमे देखल सम्बन्ध बदलि जाइत अछि। तेसर पठनमे मूल अभिलेख, कतरल अंश आ पत्रकारक अनुमान अलग देखाइत अछि। आधुनिक समाचारक भाषा-राजनीतिक आलोचना एतय केवल पत्रकारीय दुर्भावना कहि समाप्त नहि होइत; पाठकक अर्थग्रहणक जिम्मेदारी सेहो सामने अबैत अछि।

भारतीय विद्या भवनक पुरान शिक्षकक दूरभाष कथाक पूर्व भाषा-शिक्षा वर्तमान संकटसँ जोड़ैत अछि। ‘कड़ी’ शब्द सामान्य भाषामे सम्बन्धक

अनुभूति दऽ सकैत अछि, मुदा सम्बन्धक प्रकृति—भाषिक, व्यावसायिक, परिचयात्मक अथवा वित्तीय—बिना ओकर औपचारिक अर्थ अनिश्चित अछि। शिक्षक नायककेँ 'संकीर्ण सत्य' लिखबाक सल्लाह दैत छथि। कथामे ई सल्लाह सरल संकोच नहि: व्यापक सार्वजनिक प्रतिवादक प्रलोभनक बीच तथ्यगत सीमाक माप रखब साहसक कार्य अछि। शशांकक पहिनुक प्रशिक्षण —शब्दक अर्थ कोशसँ बेसी प्रसंगमे बनब—एखन ओकर सार्वजनिक प्रतिष्ठाक बचावक वास्तविक साधन बनैत अछि। ई अन्तर्पाठीय स्मृति अनुवादकक शैक्षिक अतीत आ वर्तमान नैतिक उत्तरदायित्वक बीच कालात्मक एकता बनबैत अछि।

आदित्य मेज पर चार वस्तु राखैत अछि—मुहरबन्द संचिकाक अनुक्रमणिका, प्रकाशित छायाचित्र, आन्तरिक सारांशक पुरान संस्करण आ वर्तमान सत्यापित संस्करण। प्रकाशित अंशमे एके अनुवादकक दू ठाम उपस्थितिक वाक्य अछि, मुदा अगिला सावधानी-पंक्ति—एहि उपस्थितिसँ परस्पर स्वामित्व, भुगतान वा नियन्त्रण सिद्ध नहि—अनुपस्थित अछि। एहि अनुपस्थितिक परिणाम कथाक भीतर स्पष्ट अछि: प्रमाणक सीमा हटिते पाठकक मनमे व्यापक सम्बन्धक भ्रम फैलि सकैत अछि। मुदा 'पंक्ति अनुपस्थित' आ 'जानि-बुझि बदनाम करबाक लेल पंक्ति हटाओल'क निष्कर्ष भिन्न अछि। समाचारक सामाजिक परिणाम नायकक लेल कठोर अछि; परिणामक कठोरता मात्र उद्देश्य सिद्ध नहि करैत। लेखक एहि तनावकेँ नायकक अपमानक मूल्य घटाबय बिना बनबैत छथि।

आदित्य आधिकारिक पहुँच-सूचीमे पाँच नाम देखबैत अछि, जाहिमे शशांक नहि अछि। नायक तुरन्त 'हम सामग्री देबे नहि सकैत छलहुँ'क राहत चाहैत अछि, मुदा जाँचकर्ता सीमित निष्कर्ष लिखैत अछि: शशांक अधिकृत पहुँच-सूचीमे नहि। अनधिकृत प्रतिलिपि, छायाचित्र अथवा अन्य प्रसार-पथक सम्भावना एतबसँ समाप्त नहि। नव्य न्यायक प्रमाण-चिन्तनमे 'अनुपस्थिति'क उचित उपयोग ई अछि जे सूचीमे नाम नहि; 'ककरो सम्पर्क असम्भव' सन सार्वत्रिक निषेधक व्याप्ति अलग सिद्ध करबाक पड़त। एहि चित्रमे पद्धति नायकक रक्षामे सेहो काम करैत अछि आ ओकर सुविधा-

विस्तारकेँ सेहो रोकैत अछि। द्विपक्षीय मर्यादा उपन्यासक एखन धरि विकसित नैतिकता पुष्ट करैत अछि।

राघव भसीन छोट लिखित सार्वजनिक कथनक परामर्श दैत छथि। शशांक दुनू व्यावसायिक प्रसंगमे अपन भाषिक उपस्थिति स्वीकार करैत अछि, मुदा साझा स्वामित्व अथवा संयुक्त संचालन सम्बन्धी निष्कर्ष अपना लग उपलब्ध सत्यापित अभिलेखसँ सिद्ध नहि बतबैत अछि। राघव विशेष रूपसँ 'कोनो सम्बन्ध नहि अछि'क व्यापक दाबी नहि लिखबाक कहैत छथि। ई अत्यन्त सूक्ष्म शैलीगत प्रसंग अछि: नायक यदि सार्वजनिक अपमानक प्रतिक्रियामे आत्यन्तिक निषेध लिखत, तखन ओ ओही त्रुटि दोहराओत जेकर विरोध करैत अछि—अल्प स्रोतसँ सम्पूर्ण निष्कर्ष। पत्रकारिता पुनः ओकर आधा वाक्य काटि पसारैत अछि; शशांकक विधिसम्मत संक्षिप्तता आ सार्वजनिक कतरनक सामाजिक व्यवहार एक असमान संघर्ष बनैत अछि। ई प्रक्रिया व्यक्तिगत संकल्पकेँ बाहरी विश्वमे तत्काल विजय नहि दैत।

मृणाल दूटा माटिक चाह-पियाला अनैत अछि; एहि छोटी घटनासँ अध्यायक संस्थागत ताप अल्प समय लेल सामाजिक ऊष्मामे बदलैत अछि। ओ समाचारक आधा वाक्यक विरोधमे पूरा वाक्य पर टिकबाक कहैत अछि, मुदा मित्रक बदला मिथ्या वाक्य लिखबाक प्रस्ताव नहि करैत। एहि दृश्यमे मित्रता सहानुभूतिक स्थान होइतहुँ प्रमाण-विवेकक विरोधी नहि। जुलियानाक साँझक प्रश्न शशांकक अपमानित आत्मछविक सीमा खोलैत अछि—मनुष्य पूर्ण निर्दोष प्रतिमा बनाबय चाहैत अछि, जखनकि सत्य बहुत बेर असमान विवरणक संकलन अछि। स्वीकार योग्य घटना, असिद्ध अनुमान आ मिथ्या आरोप तीन भिन्न उत्तर चाहैत अछि। एहि संवादसभमे शान्त रसात्मक गाम्भीर्य अछि; पात्रकेँ निराधार पूर्ण सुरक्षा देल नहि गेल, मुदा ओकर आत्मसम्मानक अधिकार सुरक्षित राखल गेल अछि।

रातिक नब साक्ष्य—समाचार संवाददाताक पत्र आ तीन छायाचित्र—अध्यायक नाटकीय चरम अछि। एक तस्वीरक पृष्ठ-संख्या मूल अनुक्रमणिकासँ नहि मिलैत, तेसर छायाचित्रक अक्षर-दूरी सेहो भिन्न अछि। ई अन्तर एकाधिक प्रतिकृतिक सम्भावना खोलैत अछि; मुदा जालसाजी सिद्ध

करब लेल स्रोत, तिथि आ तकनीकी प्रक्रिया अलग जाँचबाक अछि। मूल छायाचित्रक प्रामाणिकता, प्रसारक शृंखला आ प्रकाशित पाठक पूर्णता तीन विषय अलग-अलग अछि। ई अलगाव केवल जाँच-कथाक सनसनी कम करबाक उपाय नहि, मूल पाठाधारित न्यायिक संरचनाक सार अछि। न्यायालयक आगामी सीमित सुनवाई एहि तीन प्रश्नकेँ औपचारिक मञ्च देत। लोकक मुँह पर निष्कर्ष पहिनेहि पसारल अछि; अदालत प्रश्नक विधिसम्मत समय राखैत अछि।

कलात्मक सीमा ई जे समाचार-प्रसारक बहुस्वरता मुख्यतः शशांकक आ सीमित कतरनक दृष्टिसँ देखाइत अछि; संवाददाताक अपना पेशागत प्रश्न, सम्पादकीय दबाव वा स्रोत-समालोचना एखन पूर्ण विकसित नहि। मुदा मोबाइल पटल, अस्थिर शीर्षक, माटिक चाह-पियाला, अध्यापकक दूरभाष आ छायाचित्रक अलग पृष्ठ-संख्या एक जीवंत विरोध-समूह रचैत अछि। भाषा-कौशलक ऊँच प्रतिष्ठा चाहनिहार शशांक आब भाषासँ बनल सार्वजनिक आरोपक विषय अछि। एतय विपर्यय बाह्य कथानकक कृत्रिम खेल नहि, नायकक पहिनुक आत्मछवि पर प्रत्यक्ष मार अछि। अध्यायक अन्तिम कापीमे अपमानक अनुभूति आ परीक्षणयोग्य मिथ्या कथन अलग लिखल अछि। ‘पूर्ण निर्दोष’ बनबाक असिद्ध दाबी अस्वीकार करैत ओ दोषारोपणक असिद्ध विस्तारो नहि मानैत। न्यायालयक अगिला दृश्य एहि कठोर द्विपक्षीय ईमानदारीक परीक्षा बनैत अछि।

## अध्याय ४८ — मैंडरिन सँ कैंटनिज धरि : बहुस्तरीय अनुवादक न्यायालयीय परीक्षा

अड़तालीसम अध्याय पूर्व समाचार-अपमानक व्यक्तिगत वातावरणसँ न्यायालयक सीमित सुनवाईमे पहुँचैत अछि। दर्शकक स्थान अपेक्षाकृत रिक्त रहितो शशांक अपन प्रत्येक उत्तरक पाछू पछिला रातिक समाचार-शीर्षक महसूस करैत अछि। ई भीतरक प्रतिध्वनि आ बाहरक अल्प उपस्थिति बीचक विरोध सफल आख्यान-उपाय अछि। मुहरबन्द सामग्रीसँ मिलैत छायाचित्रक समानता मूल स्रोत सिद्ध नहि करैत; भिन्न पृष्ठाङ्क जालसाजी सिद्ध नहि करैत। आदित्यक प्रारम्भिक उत्तर शशांकक प्रतिपरीक्षाक बौद्धिक भूमि तैयार करैत अछि। न्यायालय एक विशेष संस्था अछि: एतय सार्वजनिक अफवाहक तीव्रता तुरन्त न्यायिक निष्कर्ष नहि बनैत। स्रोतक प्रमाण, प्रसार-क्रम आ प्रस्तुत वस्तुक रूप अलग-अलग प्रश्न रहैत अछि। शशांकक मनमे तइयो आशंका अछि, कारण एक वास्तविक भाषिक त्रुटि स्वीकार करब आ असिद्ध आपराधिक सम्बन्ध नकारब एकहि क्षणमे कएल जाएत।

अधिवक्ता पहिने बैसारमे उपस्थितिक प्रश्न करैत अछि; शशांक उपस्थितिक तथ्य मानैत अछि, मुदा पृष्ठक सभ पंक्ति अपना लिखल नहि बतबैत। तत्पश्चात् मैंडरिन आ कैंटनिज ज्ञानक स्तर पूछल जाइत अछि। शशांक सामान्य भाषा-अधिकारक बड़ा दावा नहि करैत: किछु प्रसंगमे पर्याप्त कैंटनिज, किछुमे सीमित अभ्यास, जुलियानासँ सीखनाक स्वीकार। पेशागत कौशलक एहन स्तरभेद जरूरी अछि, कारण व्याकरणीय दक्षता, बोलीक उच्चारण आ विधिक बारीक अर्थ स्वत: समान क्षमता नहि। अधिवक्ताक ‘अनुवादक छी, दार्शनिक नहि’क आपत्ति नायककेँ व्याख्या छोड़ि एक शब्द देबाक दबाव बनबैत अछि; न्यायाधीश आवश्यक भेद सहित उत्तरक अनुमति दैत छथि। एहि छोट हस्तक्षेपमे भाषा आ कानूनक द्वन्द्व मूर्त अछि: औपचारिक प्रतिपरीक्षा संक्षिप्त निश्चित उत्तर चाहैत, जखनकि प्रमाणिक अनुवाद कखनो अनिश्चितता स्वीकार करबाक माँग करैत अछि।

‘same side’क पुरान छोट अनुवाद आ ‘same people’क बादक टिप्पणीक अन्तर मूल विवाद बनैत अछि। शशांक कथनक सम्भावित रूप—एके दिशाक कार्य, एके व्यवहारक पक्ष—अलग करैत अछि, मुदा ‘same network’ ओकर मूल अनुवाद नहि छल, ई स्पष्ट करैत अछि। लेखकहीन पिछली टिप्पणी नायकक कथन मानि लेबो उचित नहि। एहि स्थलपर मूल ध्वनि, मैंडरिन लिखित पाठ, कैंटनिज उच्चारण, लिप्यन्तरण, अनुवाद, व्याख्या आ कानूनी अनुमान अनेक सोपान रूपमे सामने अबैत अछि। शशांक छओ स्तरक क्रम देबैत अछि; एतय संख्या पाठक लेल ज्ञान-पथक दृश्य नक्शा बनि उठैत अछि। मूल कथनक पहली अवस्था अंतिम अपराधगत निष्कर्षक पर्याय बनत तखन अभिलेखीय मध्यवर्ती प्रक्रिया लोप होयत। कथाक संरचना स्वयं एहि सोपानसभक अलगावक न्याय-विवेक पर टिकैत अछि।

अधिवक्ता नायककेँ दबाबैत अछि—जँ एहि सभ भेदक जानकारी पहिनेसँ छल तँ पुरान काममे स्पष्ट किएक नहि लिखने छल? एहि प्रश्नमे शशांकक बौद्धिक सिद्धान्त आ पूर्व जीवनक क्रिया टकरबैत अछि। ओ गति, ग्राहकक सुविधा आ पक्के विशेषज्ञ जेकाँ देखेबाक लालसा स्वीकार करैत अछि। मुदा एहन व्यवहारक सामान्य प्रवृत्ति स्वीकार करबाक अर्थ सभ अनुवाद जानि-बुझि गलत कएल, से नहि। नायक न तऽ समूचा दोष सँ भागैत अछि, न दोषक व्यापक अतिशयोक्ति करैत। ओकर प्रतिवाद—अनिश्चितता आ बोलीभेद छोट कएलहुँ, प्रत्येक अनुवाद अनिवार्यतः त्रुटिपूर्ण नहि—नव्य न्यायक पक्ष-विशेषक रक्षा अछि। ‘प्रायश्चित’क साहित्यिक तात्पर्य एतय गम्भीर होइत अछि: स्वयं कैं अनिश्चित सर्वदोषक दण्ड देब सत्यक प्रति अनुचित; वास्तविक दोषक सीमा पर अटल रहब अधिक कठिन नैतिक कर्म अछि।

व्यावसायिक संस्थाक सम्बन्धक प्रश्नपर एके शब्द, एके अनुवादक, एके प्रकारक चीनी अभिव्यक्ति या साझा पद्धति—ई सभ व्यक्तिगत स्तरक समानता देखबैत अछि, स्वामित्व वा षड्यन्त्रक संग आवश्यक सम्बन्ध नहि। सरकारी पक्ष तखन सम्भावित अतिरिक्त साक्ष्यक प्रश्न उठबैत अछि—

भुगतान-पथ, निर्देश-श्रृंखला, समय-साम्य आ वास्तविक व्यक्ति-सम्बन्धक स्वतंत्र सामग्री उपलब्ध हो तँ संयुक्त निष्कर्षक बल बदलि सकैत अछि। शशांक स्वीकार करैत अछि जे भाषा एतय न निरर्थक, न अपने आप अन्तिम प्रमाण। ओ कखनो संकेत अछि, कखनो साक्ष्यक अंश, कखनो संयोग। ई सम्यक् निष्कर्ष उपन्यासक विस्तृत प्रमाण-चिन्तनक गम्भीर उपलब्धि अछि। नायकक आत्मरक्षाक कारण सभ भाषिक समता महत्वहीन कहि देब सेहो सत्यसँ पलायन होयत; ओ ओहि सरल नकारसँ बचैत अछि।

अस्पष्ट नहि मुदा मिश्रित उच्चारणक मूल ध्वनि न्यायालयमे सुनाओल जाइत अछि। शब्दक किछु हिस्सा कैंटनिज ध्वनिसँ नजदीक, दोसर मैंडरिन व्याकरणक, अर्थात् कथित एक भाषा वास्तवमे संवादक जटिल रूप अछि। शशांक शाब्दिक अनुवाद देतहुँ 'ओहि दिस'क संकेत संस्था, व्यक्ति, विभाग अथवा बैसारक अन्य पक्ष—ककरा सूचित करैत अछि, से अनिश्चित बतबैत अछि। पछिलका 'their people'क पुरान रूप स्वयं एक सम्भावित अनुवाद छल, मुदा ओ 'their'क सन्दर्भ स्पष्ट नहि कएने छल। एहि उदाहरणमे अनुवादकक दोष सूक्ष्म बनि उठैत अछि: वास्तविक गलत शब्द मात्र नहि, पाठककेँ निश्चितताको झूठा अनुभूति दऽ देब त्रुटि अछि। प्रभावशाली वाक्य बनेबाक लोभसँ अर्थक रिक्त स्थान नुका देबाक सामाजिक परिणाम एतय प्रत्यक्ष अछि।

न्यायालयीय दृश्य रसात्मक रूपसँ नीरस नहि। शशांकक कण्ठ सूखब, राघवक सूक्ष्म प्रतिक्रिया, आदित्यक मौन आ न्यायाधीशक अनावश्यक विस्तार रोकब —ई सभ लघु क्रिया भय, लज्जा आ संयमक परत बनबैत अछि। न्यायालय नायकक सम्पूर्ण प्रायश्चितक रंगमञ्च नहि; ओ पात्रक संक्षिप्त कथन पर उचित सीमा रखैत अछि। अधिवक्ता समाचारक 'भाषिक कड़ी' शब्द पुनः उठबैत अछि, शशांक एक अनुवादमे अनिश्चितता न लिखबाक दोष आ दू असिद्ध नेटवर्कक जोड़निहार बनबाक दावा पृथक रखैत अछि। न्यायाधीश औपचारिक कानूनी निष्कर्षक अधिकार अपन पास रखैत छथि। एहिसँ कथा

न्यायालयकेँ नायकक प्रशंसात्मक मंच नहि बनबैत; संस्थागत प्रक्रिया ओकर वक्तव्यक सामाजिक आकार निर्धारण करैत अछि।

सुनवाई अन्तमे समाचार-छायाचित्रक प्रामाणिकता पर अन्तिम निर्णय स्थगित रहैत अछि; अतिरिक्त स्रोत-जाँच चाही। शशांकक पुरान अनुवाद त्रुटिसभ सेहो आगामी परीक्षणक विषय अछि। पत्रकारक दू विपरीत प्रश्न—निर्दोष घोषित भेल? आरोप सिद्ध भेल?—पर नायक दुनू निषेधक उत्तर दैत अछि। तेसर उत्तर ‘जे प्रश्न अछि, ओकरा प्रश्न जेकाँ राखल गेल’ एहि उपन्यासक न्यायिक ध्वनि अछि। मृणालक संग सीढ़ी उतरैत ओ स्वीकार करैत अछि जे पहिने भाषा-बोलीक सीमा जनितो प्रतिष्ठा खातिर छोट कएने छल। ओ आब मैंडरिन सँ कैंटनिज धरि स्वर बदलबाक बात स्वर रूपेँ कहत, स्वतः नेटवर्क नहि। कलात्मक सीमा: न्यायालयीय संवाद अनेक ठाम अत्यन्त सुव्यवस्थित ज्ञानमीमांसात्मक उत्तर निकालैत अछि; तथापि ‘their people’क ठोस सर्वनाम-विवाद आ मिश्रित उच्चारणक ध्वनि नाटकीय धरातल बनबैत अछि। अगिला जाँचमे उपकरण-अभिरक्षा आ पूरक बयान एहि अनिर्णीत प्रश्नक मूर्त आधार बनत।

## अध्याय ४९ — कैंटनिजक केवाड़ी १० : पूरक बयानमे स्वयं बढ़ाओल भूमिका आ उपकरणक स्रोत-विवेक

उनचासम अध्याय न्यायालयक सीमित सुनवाईक बादक पूरक बयानक दिन अछि। भोरमे आदित्यक सन्देश पाबि शशांक अएना साम्हिन टाइ बाँधैत अपना पुरान सामाजिक सुखक स्मरण करैत अछि—बैसारमे ओकर नाम पुकारल जाए, कियो कहय जे ओकर बिना कागत आगाँ नहि बढ़त। समनक उपस्थितिक आदेश एक बेर फेर महत्त्वक भ्रम उत्पन्न करैत अछि; मुदा आब ओ प्रतिष्ठाक बदला परीक्षण अछि। मृणाल सामने नायक स्वीकार करैत अछि जे डरक संग थोड़े मूर्ख गर्व सेहो अछि। एहि स्वीकृतिमे ओकर चरित्र-संकट बिना नीतिप्रवचन खुलैत अछि। अनुवादकक बाजारमूल्य विशेषज्ञताक कारण बढ़ैत अछि, मुदा स्वयं अपन भूमिका बढ़ा कऽ वर्णित करबाक आदत वास्तविक निर्णयाधिकारक भ्रम उपजा सकैत अछि। एहि समाजमनोवैज्ञानिक अन्तरकेँ कथाकार आगामी बयानक मुख्य धुरी बनबैत छथि।

जाँच-कक्षमे दू सीलबन्द थैली, जब्ती-सूची आ हस्ताक्षरित पृष्ठ अछि। पहिलमे विक्रेता-कर्मचारीक कार्यालयी वस्तुक संग भेटल पुरान चलदूरभाष, दोसरमे छोट संगणक। शशांक बाहरी आकारसँ चलदूरभाष चिन्हय नहि सकैत। संगणकक एक खरोंच ओकर स्मरण जगबैत अछि, मुदा एके उपकरणक पहचान प्रमाणित नहि। आदित्य ‘स्मरण, पहचान नहि’ लिखैत अछि। ई सूत्र अत्यन्त वास्तविक अछि: सामान्य नमूना आ साधारण खरोंचक समानता कखनो स्मृतिकेँ व्यक्तिगत निश्चितताक भेष दैत अछि। स्रोत-समीक्षाक दृष्टिसँ वस्तुक भौतिक उपस्थितिक प्रश्न, ओकर पुरान उपयोगकर्ता, लेखकत्व, समय आ नियन्त्रण सब अलग जाँचक विषय अछि। उपकरणक वस्तुगत साक्ष्य मानवीय कथनक स्वतः पुष्टि नहि; ओकराशी जुड़ल अभिलेखीय श्रेणी महत्त्वपूर्ण अछि।

पूरक बयानक पहिल महत्त्वपूर्ण प्रसंग शशांकक पुरान ‘हम बैठक चलौने छलहुँ’क पदबन्ध अछि। आदित्य पूछैत अछि जे वास्तवमे ओ बैठक संचालित कएने छल कि भाषा-सहायताक काज। नायक स्वीकार करैत अछि

जे ओ अपन भूमिका बढ़ा कऽ कहने छल—कखनो अनुवादकेँ 'बैठक सम्भारब' आ अर्थ स्पष्ट करबकेँ 'समझौता करायब' कहैत। ई केवल शब्दकोशीय गलती नहि; आत्मकथात्मक स्व-प्रचारक विकृति अछि। मुदा आत्मकथा बढ़ाओल गेल, ताहिसँ वास्तविक निर्णयाधिकार स्वतः सिद्ध नहि होइत। नायक अपराधबोधक आवेशमे अपन सभ पुरान कथनक अविश्वसनीयता सेहो स्वीकार नहि करैत; प्रत्येक कथन अलग जाँचबाक बात कहैत अछि। अभिमानक त्रुटि सच मानब आ ओकरा वास्तविक शक्ति-वितरणक स्थानापन्न न बनायब एहि अध्यायक नैतिक बल अछि।

'विक्रेता मानि लेलक'क पुरान टिप्पणीक सामने मूल मैंडरिनक भाव 'एहि रूपमे आगाँ बढ़ि सकैत छी' अछि। एतय प्रक्रियात्मक सम्भावना आ अन्तिम स्वीकृतिक अन्तर महत्त्वपूर्ण। शशांक एहि मूल वाक्यक अधिक निश्चित अनुवाद अपन सफलताक कथा बनायबाक लेल चुनेने छल। पहिने वाक्य छोट आ प्रभावी छल, मुदा ओही कारण मूलक शर्तगत स्वर कमजोर भेल। लेखक एहि छोट परिवर्तनसँ अनुवादकक सामाजिक शक्ति देखबैत छथि: बैठक वास्तवमे कोन चरणमे छल, से बतयबला एक शब्द बादमे समग्र प्रक्रिया सम्पन्न भेल जेकाँ चित्रित कऽ सकैत अछि। व्यावसायिक अनुवाद आ स्वयं प्रचारित पेशागत उपलब्धि बीच पाठ्य साक्ष्यक ई तुलना आलोचनाक विशिष्ट आधार अछि।

प्रमाणित अंकीय प्रतिरूप खोलेलासँ पहिने आदित्य मूल उपकरण मुहरबन्द रखैत अछि, तखन सामग्रीक अस्तित्व, अर्थ, लेखकत्व आ उपयोगकर्ताक पहिचान अलग बतबैत अछि। दू वर्ष पुरान सन्देश-श्रृंखलामे शशांकक नाम अछि, मुदा संदेशक लेखक के, एके नामसँ तय नहि। दोसर ध्वनि-लिखित अंश 'same side, same people'क अधिक निश्चित अनुवाद दैत अछि; मूलक सम्भावित 'एके कातक लोक'क अलग सामाजिक सम्बन्ध हो सकैत अछि। शशांक कोष्ठकमे कैंटनिज उच्चारण लिखबाक शैली अपन पुरान आदत जेकाँ पहचानैत अछि; लेखकत्वक सम्भावना स्वीकारैत अछि, निश्चित निर्णय नहि। ई स्थल साक्ष्य-पद्धतिक सूक्ष्म उदाहरण अछि: शैलीगत साम्य लेखकक संकेत होइत अछि, सत्यापित हस्ताक्षर नहि। व्यक्ति अपन चिन्ह

देखिते स्वयं कोनो लिखित पाठक लेखक रहबाक अनुमान कऽ सकैत अछि, मुदा आत्मपरिचयक स्मरणो गलतीक स्रोत भऽ सकैत अछि।

पुरान सम्पर्क-पञ्जीक 'L-W / vendor' प्रविष्टि कथानकक आगामी दरबज्जा खोलैत अछि। आदित्य ली वेनचाओ नाम प्रस्ताव करैत अछि, शशांक सम्भावना स्वीकार करैत अछि, मुदा संक्षेप मात्रसँ परिचय सिद्ध नहि मानैत। ओकर मूल स्मृतिमे ली भाषाक कारण परिचित बनल, दूनू चीनी उच्चारण बुझबाक क्षमता पर रुचि देखौलक आ अलग बैसारक प्रस्ताव देलक। एहि ठाम शशांक पहचानक सहज ढंग, बादमे सुनल आरोप आ वर्तमान जाँचक सामग्री अलग रखब चाहैत अछि। आदित्य जानि-बुझि बैसारक सम्पूर्ण प्रसंग एही सत्रमे नहि खोलैत—समन, जब्ती आ वर्तमान अभिलेखक सीमा पर रोकि दैत अछि। जाँचकर्ता स्वयं 'अधिक जानब'क प्रलोभन नहि मानैत। नायकक जीवन-संकट एहि वैधानिक प्रक्रिया-संयममे प्रतिबिम्बित अछि: व्यक्तिगत नायकत्वक लालसा जखन सीमा तोड़य चाहैत, तखन सही प्रश्नकेँ उचित क्रममे रखब अधिक जिम्मेदार आचरण अछि।

शशांक हस्ताक्षरसँ पहिने पूरक बयानक प्रत्येक 'सम्भवतः', 'स्मरण नहि' आ 'स्वीकार' पढ़ैत अछि। पहिने ओ अपन नामक निकटक पंक्ति देखिके हस्ताक्षर कऽ दैत छल, आब कथनक सम्पूर्ण सीमा देखब आवश्यक बुझैत अछि। ई क्रिया अध्यायक मौन नैतिक चरम अछि—ज्ञान आ दोष-विवेकक लिखित नियन्त्रणक स्वीकृति। मृणालक 'आइ अपन महत्त्व घटेलहुँ' पर प्रत्युत्तर 'सम्भवतः जिम्मेदारी बढ़ेलहुँ'क अर्थ मनोवैज्ञानिक रूपसँ गहींर अछि। प्रतिष्ठा घटब आ उत्तरदायित्व बढ़ब एकहि सुधारक दू पहलू होइत अछि। प्रायश्चित भीतरक अनुभव, मुदा हिसाब बाहरी अभिलेखमे—शशांकक एहि भेदसँ उपन्यास नैतिक भावुकताकेँ तथ्यगत प्रक्रिया आ समाजक प्रति जवाबदेहीसँ जोड़ैत अछि।

अन्तिम नोटबुकमे समन, बयान, जब्ती, नाम, शैली आ नियन्त्रणक भिन्नता एक संग लिखल अछि। कथाकारक नियमित उपसंहार-रूपक कलात्मक सीमा एहिठाम सेहो उपस्थित—घटना-पछाति नियमक सूची कथा-प्रवाहकेँ

सिद्धान्तमे रूपान्तरित करैत अछि। तथापि अएना साम्हिन टाइ, खरोंचवला संगणक, कोष्ठकक निजी शैली, चाहक पियाला आ ‘L-W’क अधूरा संकेत वस्तुगत उपस्थिति रखैत अछि। ई सभ मिलि अध्यायकेँ नायकक स्वीकृति आ अभिलेखक स्वतंत्र परीक्षणक गम्भीर संगम बनबैत अछि। आगामी प्रसंगमे ली वेनचाओक जीवित स्मृति जाँचक केंद्र बनि उठैत अछि; यथार्थ निर्णय एखनहुँ रोकल अछि।

## अध्याय ५० — जुआ ऐपक vendor : ली वेनचाओक परिचय, अर्थक नरमी आ मृणालक प्रति आधा-सत्य

पचासम अध्याय ली वेनचाओक परिचयक प्रामाणिक पुनर्पाठ अछि। आदित्य पिछला बयान, जब्ती-सूची आ ‘L-W / vendor’ लिखल छोट कागज मेज पर रखैत अछि। ओ शशांकसँ पहिने भिन्न ज्ञान-श्रेणी तय करबबैत अछि—प्रत्यक्ष स्मरण, बादमे सुनल सूचना आ वर्तमान अनुमान। एहि व्यवस्थासँ पिछला अध्यायक अधूरा संकेत सुव्यवस्थित प्रश्नमे बदलैत अछि। शशांक व्यक्ति ली वेनचाओकेँ पहचानैत अछि, मुदा ‘L-W’ संक्षेप अपनेमे ओकर पहिचानक निर्णायक दस्तावेज नहि। ई छोट अन्तर जाँचक कथा-कल्पना पर अंकुश अछि। कोनो सम्भावित नामक स्पष्ट स्मरण होइतहुँ अलग कागजक अभिप्रेत नाम स्वतः एके नहि बनैत। लेखक अतीतक दृश्यकेँ दैहिक स्मृतिक माध्यमसँ पुनः प्रस्तुत करैत छथि, मुदा स्मृतिकेँ अचूक प्रमाण नहि ठहरबैत।

नोएडाक वीवो-सम्बन्धी सेवा-करारक परिवेशमे ली पहिल बेर भेटैत अछि। सेवा-स्थलपर मरम्मत, तकनीकी निरीक्षण आ भाषिक सहायताक कार्य अलग-अलग चलि रहल अछि। ली परिचित विक्रेता-पक्षक व्यक्ति जेकाँ प्रस्तुत होइत अछि, मुदा कियो परिचय करौलक, ओ शशांककेँ निश्चित स्मरण नहि। ली स्थायी कर्मचारीक परिचय-पट्टी पहिरने नहि छल, मुदा एहिसँ ओ कोन कम्पनीक अधिकृत प्रतिनिधि छल, से सेहो तय नहि। एहि ठाम वेशभूषा, स्थान आ सामाजिक परिचयक साम्य औपचारिक प्रतिनिधित्वक प्रमाण नहि। पाठककेँ पहिल मुलाकातक वातावरण भेटैत अछि, मुदा करारक स्वामित्वसँ ओकरा जोड़बाक आकस्मिक बाट रोकल जाइत अछि। मिथिला छोड़ि भाषा-जीविका खोजैत नायक लेल विदेशी तकनीकी व्यक्तिसँ प्रत्यक्ष परिचय अवसर अछि; अवसरक उत्कंठा एखन सामाजिक शक्ति-संसारमे प्रवेशक लालसा जगबैत अछि।

ली पहिने मैंडरिन बोलैत अछि, फेर कैंटनिज स्वरमे उत्तर दैत अछि; शशांक सहज रूपसँ अपन भाषिक लय बदलि अर्थक सूक्ष्म अन्तर समझबैत अछि। ई

दृश्य शीर्षक 'जुआ ऐपक विक्रेता' कैं संकुचित तकनीकी विषयसँ ऊपर उठबैत अछि। ली ओकरा 'अनुवादक कम, केवाड़ी बेसी' कहैत अछि। प्रशंसाक ई रूपक शशांकक भीतर गौरव जगबैत अछि, मुदा परवर्ती समीक्षा मे ई महत्त्वाकांक्षाक चेतावनी बनैत अछि। 'केवाड़ी' नायककेँ अनेक भाषिक समुदायक बीच संवादक मार्ग देबैत अछि; मुदा ओ पथ बजारक भविष्यक प्रस्तावसभक सेहो खुलबाक सम्भावना बनैत अछि। एहि शब्दक पुनरावृत्ति साहित्यिक अर्थमे जैविक अछि, कारण उपन्यासक मुख्य रूपक पहिल बेर बाहरी व्यक्तिक प्रशंसामे व्यक्तिगत शक्ति रूपेँ लौटैत अछि।

दोसरा भेटमे मुख्य सेवा-स्थलसँ बाहरक बैसारमे ली संगणक-पटल पर प्रत्यक्ष प्रसारणवला जुआ-मेजक दृश्य देखबैत अछि—पत्ता, चक्र, संचालक आ बदलैत अंक। शशांक दाँव-आधारित खेलक स्वरूप बुझि गेल छल, एहि स्मृतिकेँ एखन नकारैत नहि। मुदा केवल उपयोगकर्ता-पटल देखलासँ सर्वरक संरचना, प्रशासनिक अधिकार, लाभकारी स्वामित्व अथवा खास देशक वैधानिक स्थिति सिद्ध नहि। ली पटल चलाबय सकैत अछि, तेँ ओ ओकर वास्तविक मालिक अछि—ई छलांग उपलब्ध दृश्य नहि दैत। ली जुआक प्रदर्शन देखौने छल, एतय 'जुआ-संबन्धी'क कथन प्रत्यक्ष दृश्य पर आधारित अछि; कोन देशक अनुमति वा भारतमे कानूनी स्थिति की छल, से नायकक तखनक ज्ञानेन्द्रियक क्षेत्रसँ बाहर रहल। ई स्रोत-विवेक कथाक नैतिक अर्थ बचेबैत अछि, कारण आपराधिक कथाविस्तारक अनेक आकर्षक बाट एतय उपस्थित छल।

ली भाषिक स्थानीयकरणक सहायताक चर्चा करैत अछि। कुछ तकनीकी पद भारतीय पक्षक लेल कठिन, किछु ग्राहकक प्रश्न अधिक, किछु खेल-संबन्धी अभिव्यक्ति कठोर लगैत अछि। शशांक पहिले एहि कामकेँ सामान्य सम्पादन मानय चाहैत अछि, मुदा एक स्पष्ट दाँववाचक शब्द कम तीख प्रस्तुत करबाक अनुरोधपर ओ सामान्य मनोरंजनक भाषा सुझबैत अछि। एहि क्रियाक तथ्य अध्यायक निर्णायक नैतिक साक्ष्य अछि। ओ अनुवादकक कौशलक प्रयोगसँ मूल खेलक दाँव-संबन्धी धार घटौने छल। मूलक ठीक शब्द

ओकरा अब स्पष्ट स्मरण नहि, तँ समीक्षा मे सेहो कोनो मनगढ़न्त चीनी वाक्य जोड़बाक अवकाश नहि। मूल शब्दावली उपलब्ध होय तँ ओकर पृथक मिलान आवश्यक रहत; वर्तमान पुनर्पाठ शशांकक विशिष्ट क्रिया-स्मृतिक कथित स्वीकारोक्ति पर आधारित अछि। नैतिक दोषक क्षेत्र एतय ग्राहकक सुविधा लेल अर्थक स्वरूप बदलनाइ अछि।

‘किएक?’ प्रश्नपर शशांक उत्तर दैत अछि जे ओ चाहैत छल जे नव काम ओकरा लग रहय। स्पष्ट धमकी अथवा प्रत्यक्ष दबाव ओहि क्षण नहि छल। विशेष आर्थिक लाभक लिखित वचनक बदला नब बैसार, बेसी अवसर आ विशेषज्ञताक प्रशंसाक सामाजिक सङ्केत छल। ई मनोवैज्ञानिक भेद उपन्यासक मौलिक प्रश्न खोलैत अछि—सहभागिता केवल हिंसक दबाव वा धनलोभक सहज आख्यान नहि; व्यक्तिक मान्यता-पिपासाक मधुर दबाव सेहो पेशागत निर्णय बदलि सकैत अछि। एहि कारण शशांकक दोषक आलोचना करतहुँ अपराधमय पूर्वज्ञानक निष्कर्ष स्वतः न निकालबाक चाही। ज्ञान छल जे शब्द बदललासँ अर्थक धार घटि सकैत अछि; मुदा कोन विशेष व्यवसायिक उद्देश्य वा विधिक अपराध ओ नुका रहल छल, तकर परीक्षणक अलग स्रोत चाही। नायक अपना भाषिक जिम्मेदारी नहि नकारैत; अपराध-सिद्धिक असमर्थित विस्तार सेहो नहि मानैत।

बैसारक बाद ली पठौने शब्द-सूचीमे शशांक किछु शीर्षक सुधारैत अछि आ कुछ ठाम जुआक स्पष्टता घटेबयबला भाषा चुनैत अछि। एहि आधारपर भाषिक सेवा आ अर्थक नरमी सम्बन्धी कथनक प्रासंगिकता बनैत अछि; भुगतान सेवा-पारिश्रमिकक तथ्य हो सकैत अछि, व्यवसायिक लाभ-भागीदारीक अनिवार्य प्रमाण नहि। आदित्य ‘देखल’, ‘कहल’ आ ‘अनुमान’क तीन कोष्ठक बनबैत अछि। प्रत्यक्ष पटल पर जुआ-मेज देखनाइ पहिल श्रेणी; ली स्थानीयकरणक सहायता माँगलक, दोसर; ली अनुप्रयोगक स्वामी छल, तेसर अनिश्चित श्रेणी। एहि सरल विभाजनक साहित्यिक उपयोग महत्त्वपूर्ण अछि। नायक जे तथ्य अपन विरुद्ध बाँचि सकैत अछि, ओकरा नहि मेटैत; जे अपराधसंग सम्बन्धक दाबी भव्य बनि सकैत अछि, ओकरा काबू करैत अछि। एही समन्वयमे उपन्यासक ज्ञानात्मक नैतिकता अछि।

पूर्व वीवो सेवा-करारक कालखंडमे ली सँ परिचय होयब समयक निकटता अछि, संस्थागत एकता नहि। आदित्य स्पष्ट करैत अछि जे ली अथवा ओकर देखाओल जुआ-अनुप्रयोगकेँ वीवो संस्थाक हिस्सा मानय लेल स्वतंत्र सम्बन्धक प्रमाण चाही। ई कथन नायकक स्वतन्त्र बचाव मात्र नहि, उपमानक उचित प्रयोग अछि। ली जे व्यक्ति छल, ओकर औपचारिक पहचान, पहिल स्थान पर ओ कोन भूमिकामे छल आ अलग बैसारमे ककर प्रतिनिधित्व करैत छल, अलग-अलग सत्यापनक विषय बनैत अछि। साहित्यिक स्तरपर एके व्यक्तिक दुहरी उपस्थिति कथानकक तनाव बढ़बैत अछि; शोधात्मक स्तरपर एहि तनावकेँ सिद्ध स्वामित्व नहि मानल जाएत। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिक प्रयोग एतय मिथिलाक भाषिक श्रम, नोएडाक सेवा-व्यवसाय, विदेशस्थित जुआक प्रदर्शन आ दोसर व्यापारिक संसर्गकेँ समानान्तर राखैत अछि, न कि बिना प्रमाण एके तन्त्र घोषित करैत अछि।

अध्यायक अन्तिम आ सर्वाधिक मानवीय मोड़ मृणालक प्रति लिखल पुरान सन्देश अछि। ली आगामी बैसारमे 'भरोसाक कियो' संग अनबाक बात कहने छल। शशांक मित्रकेँ अवसरक भीतर लय जेबाक सम्भावना सँ प्रसन्न भेल। ओ मृणालकेँ 'एक नब भाषिक काम' कहि आमन्त्रित करैत अछि; मृणाल प्रश्न करैत अछि—'काम की?' आ उत्तर मात्र 'भाषाक' भेटैत अछि। नायक आब स्वीकार करैत अछि जे पटल पर स्पष्ट जुआ देखलाक बाद 'केवल भाषाक' शब्द असम्पूर्ण सत्य छल। मित्र पहिने 'हाँ' कहय, एहि इच्छा सँ ओ सूचना सीमित कएने छल। एतय ककरो अपराधमय षडयन्त्र साबित नहि, मुदा भरोसा अर्जित करबाक सम्बन्धमे आवश्यक तथ्य छोड़बाक नैतिक दोष स्पष्ट अछि। मृणालक पूर्व नैतिक भूमिका स्मरण करैत पाठक एहि अधूरे आमन्त्रणक वजन बेसी अनुभव करैत अछि। सार्वजनिक दोषारोपणक व्यापक प्रश्नक पाछाँ एक छोट निजी वाक्य नायकक चरित्रगत फाट दिखबैत अछि।

अन्तमे नायक 'ली हमरा लेल केवाड़ी नहि खोललक; कुंडी हम स्वयं हटेलहुँ' सन आत्मविश्लेषणात्मक वाक्य कहैत अछि, आदित्य एकरा बयानक लेल अत्यधिक साहित्यिक मानैत अछि। औपचारिक पाठमे एकरे व्यावहारिक रूप रहैत अछि—अलग बैसार स्वीकार करबाक निर्णय शशांकक अपन छल। ई

अन्तर रचनाक आत्मचेतना देखबैत अछि: रूपक साहित्यक अधिकार अछि, मुदा विधिक अभिलेखकेँ ठोस क्रियाक कथन चाही। दृश्य-माध्यमसँ उपन्यास नायकक उत्तरदायित्व प्रखर करैत अछि, तखनहुँ अलग संस्थाक स्वामित्वक कल्पित रूपरेखा नहि बनबैत। किछु आलोचनात्मक सीमा सेहो अछि—लीक विचारधारा अथवा स्वकीय जीवनक स्वतन्त्र चित्र एखन अल्प; ओ मुख्यत: शशांकक महत्त्वाकांक्षा उघाड़बाक उत्प्रेरक रूपमे उपस्थित अछि। तथापि मैंडरिनसँ कैंटनिजक बदलैत स्वर, जुआ-मेजक पटल, शब्द-सूची आ मृणालक संक्षिप्त ‘काम की?’ एहि अध्यायकेँ पूर्व सबूत-कथासँ अलग निजी नैतिक गहराइ दैत अछि। आगामी समीक्षा लेल प्रश्न ई अछि जे एखन धरि प्रत्यक्ष भाषा-सेवा, भुगतान, व्यापारिक भूमिका आ मित्रताक कुन-कुन बिन्दुपर विशिष्ट अभिलेख उपलब्ध होइत अछि।

## अध्याय ४६-५० : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — संस्थागत कतरनसँ आत्मस्वीकृतिक अधूरा वाक्य धरि

छियालीसमसँ पचासम अध्याय कथाक एक गतिशील आरोह-क्रम अछि। अध्याय ४६मे संस्थागत सारांशक ‘सत्यापन शेष’ कमजोर होइत ‘कोनो सम्बन्ध नहि’ बनैत अछि; ४७मे समाचारक प्रकाशित कतरन सावधानी-पंक्ति हटा दैत अछि; ४८मे अदालत मूल ध्वनि सँ अन्तिम निष्कर्ष धरि भाषिक-न्यायिक सोपान अलग करैत अछि; ४९मे नायक अपन भूमिका बढ़ा कऽ कहबाक आत्मप्रचारक त्रुटि स्वीकार करैत अछि; ५०मे ली संग जुआ-पटल देखनाइ आ मृणालकेँ ‘भाषाक’ कहबाक असम्पूर्णता पुनः सामने अबैत अछि। एहि क्रममे अनुवादकक त्रुटि केवल परक पाठमे अर्थ नुकेबाक नहि, अपन सार्वजनिक वा निजी जीवनमे शब्द चुनबाक नैतिकता सेहो बनि जाइत अछि। प्रत्येक अध्याय दूसरासँ प्रश्न ग्रहण करैत अछि, मुदा एकर स्वतंत्र वस्तु-पाठ अछि—प्रशासनिक संस्करण, समाचार-छायाचित्र, मूल ध्वनि, सीलबन्द उपकरण आ पुरान छोट संदेश। ई स्वतंत्रता सहेजब समीक्षा-पद्धतिक अनिवार्य अनुशासन अछि।

अध्याय ४६ आ ४७ विशेष रूपसँ एके प्रकारक अर्थ-क्षतिक अलग सामाजिक परिणाम प्रस्तुत करैत अछि। आयुक्तालयक सारांशमे ‘लंबित’ वा ‘सत्यापन शेष’क सावधानी हटैत अछि, जखनकि समाचार-कतरनमे उपस्थितिक साथ देल ‘स्वामित्व सिद्ध नहि’क अगिला पंक्ति अदृश्य अछि। पहिल परिवर्तन संस्थागत कार्य-विधिक अर्थ घटबैत अछि, दोसर सार्वजनिक आरोपक भव्यता बढ़बैत अछि। ई विरोध महत्त्वपूर्ण अछि: मूलक एक सावधानी हटाओल गेल तँ कखनो मामला अनावश्यक रूपसँ बन्द भेल जेकाँ देखाइत अछि, कखनो दोष असिद्ध रहितो सिद्ध-सम्बन्धक भ्रम बढ़ैत अछि। दुनू ठाम पाठकक अपेक्षित अर्थ मूल शब्दक तुलनामे बदलि सकैत अछि। तथापि 'परिवर्तन'क प्रमाण ‘जानि-बुझि बदनाम करब वा मिलीभगत’क पर्याप्त आधार नहि,

जकरा आदित्य बारम्बार रेखांकित करैत अछि। एही स्थगनमे संस्थागत आलोचना आरोपक पुनरुत्पादनसँ अलग रहैत अछि।

अध्याय ४८ आ ४९मे भिन्न प्रकारक बयान-सत्य उपस्थित अछि। अड़तालीसम अध्यायमें मूल बोली, लिप्यन्तरण, अनुवाद, व्याख्या आ अनुमानक क्रम न्यायालयमे शशांकक प्रश्नगत अस्तित्व बनैत अछि; उनचासममे ओकर पुरान 'बैठक चलौने' आ 'विक्रेता मानि लेलक' सन आत्मवर्णनक अतिरिक्त निश्चितता पूरक बयानमे घटैत अछि। पहिलमे ओ स्रोतक अर्थ घट-बढ़ न करबाक शिक्षासँ जुझैत अछि; दोसरमे अपन सामाजिक भूमिका घट-बढ़ करबाक पुरान चाहक सामना करैत अछि। एक गलती भाषिक अनिश्चितताकेँ नुकेबाक, दोसर आत्मप्रतिष्ठाक क्रियाकेँ तथ्यक बड़ रूप देबाक। किछु ठाम दुनू त्रुटिक प्रेरक महत्त्वाकांक्षा अछि, मुदा प्रत्येक त्रुटिक परिणाम भिन्न जाँचक विषय बनैत अछि। एतय भारतीय औचित्यक अनुसार कथन अपन विषयक सीमा पर वापस आनल जाइत अछि।

पचासम अध्याय एहि सम्पूर्ण पाँचक निजी नैतिक स्रोत खोलैत अछि। ली वेनचाओक सामने मैंडरिन-कैंटनिज सहज बदलबाक दुर्लभ कौशल नायकक जीविकाक शक्ति बनल। ओ शक्ति प्रयोग कऽ नायक सामान्य भाषा-संपादनक सीमा धरि रहि सकैत छल, मुदा दाँव-संबन्धी स्पष्ट अर्थ सामान्य मनोरंजनक दिशामे नरम करैत अछि। एहि कार्यमे नायकक जिम्मेदारीक सटीक आधार अछि; ताहिसँ ली वास्तविक मालिक, जुआक वैधानिक स्थिति अथवा वीवो-संबद्ध संयुक्त नेटवर्क सिद्ध नहि होइत। एही अध्यायमे मृणालकेँ 'भाषाक' कहि आमन्त्रित करबाक छोट अधूरा सत्य सामने अबैत अछि। सार्वजनिक समाचार जे गलत विस्तार करैत अछि, ओकर प्रतिवाद करब नायकक अधिकार; अपन मित्रकेँ पूर्ण सूचना नहि देब ओकर नैतिक कमजोरी। बाहरी अन्याय आ भीतरी दोष एकसंग रहि सकैत अछि—एहि विरोधक रचनात्मक विश्वसनीयता सघन अछि।

नव्य न्यायीय दृष्टिसँ पाँच अध्यायक निष्कर्ष एके सरल सूत्र 'समानता = सम्बन्ध नहि' धरि सीमित नहि। एहि खण्डमे सह-उपस्थिति, नाम-साम्य, संस्करण-बदलाव, लेखन-शैली, अंश-प्रसार, भुगतान-पारिश्रमिक आ पुरान स्मृति भिन्न-भिन्न हेति रूपेँ सामने अबैत अछि। प्रत्येक हेतुक वैधानिक सीमा ओकर विशिष्ट साध्यक अनुसार बदलैत अछि। मूल सारांशक बदलाव प्रत्यक्ष देखल जा सकैत, मुदा उद्देश्यक प्रश्न अनुमान होइत अछि; समाचार-छायाचित्रक भिन्नता प्रत्यक्ष, स्रोत-श्रृंखला अनिश्चित; अपना पुरान टिप्पणीक जिम्मेदारी स्वीकारल जा सकैत, मुदा संस्थाक संयुक्त स्वामित्व तकरा सँ नहि निकलैत। अवधारणात्मक रूपसँ ई प्रमाण-विशेषक अनुकूलता आ अनुकूलित निष्कर्षक प्रश्न अछि। भाषा जब कतरल रूपमे लोकमत गढ़ैत अछि, तखन हेत्वाभास केवल गलती नहि, सार्वजनिक प्रतिष्ठाक क्षतिक कारण सेहो भऽ सकैत अछि।

पाश्चात्य कथाविज्ञानक समय-संरचनामे वर्तमान सरकारी जाँच भीतर अतीतक अनेक स्तर खुलैत अछि। हर नब अभिलेख पुरान घटना कैं फेर पढ़बैत अछि। शशांकक पुरान 'विशेष पहुँच' जेकाँ ४९मे 'बैठक चलौने' अपन नायकत्वक भाषिक निर्माण रूपमे खुलैत अछि; ५०मे 'भाषाक' कहबाक व्यक्तिगत वाक्य भीतरी चयनित मौनक स्वरूप पबैत अछि। ई पुनःपठन कथाकारक सर्वज्ञ सुलभ निष्कर्ष नहि, प्रतिपरीक्षा, मूल वाक्य आ पात्रक स्वीकारोक्तिक माध्यमसँ निर्मित अछि। अदालतक खाली दर्शक-पाँति, माटिक चाह-पियाला, अएना, खरोंचवला संगणक, लघु कोष्ठक-चिह्न आ जुआक दृश्य-पटल सभ अतीतक पुनर्पाठकेँ विशिष्ट वस्तु प्रदान करैत अछि। मगर बहुशः आदित्य संवादक निर्देशित प्रश्न प्रत्येक मनोदशाकेँ निर्धारित सूत्रमे बदलैत अछि; ई अतिशय सुसंगतता कथा-यथार्थक जटिलता कुछ घटबैत अछि। आलोचनामे एहि सीमा स्वीकारब रचनाक उपलब्धि अवमूल्यित करब नहि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिसँ नोएडाक मरम्मत-सेवा, विदेशस्थित अनुप्रयोगक पटल, दिल्लीक न्यायालय, निचला आयुक्तालय आ समाचार

माध्यम अलग-अलग संस्था अछि। शशांक एकाधिक स्थलक भाषा-सहायता देनिहार पात्र अछि, मुदा व्यक्ति-सम्पर्कक पुनरावृत्ति अपनेमे एक संयुक्त व्यावसायिक स्वामित्व नहि बनबैत। संस्थागत प्राथमिकताक प्रशासनिक निर्णय, सारांशक भाषिक बदलाव, समाचारक अनधिकृत कतरन आ वास्तविक जाँचक सम्भावित स्रोत-पथ एकहि समय उपस्थित रहितो ककरो कारणगत कड़ी चाहैत अछि। एहि कारण ई उपन्यासक अध्ययन सार्वजनिक आरोपसँ अधिक प्रमाणक वर्ग-विन्यास अछि। जँ अगिला अध्यायमे वास्तविक धन-पथ अथवा अभिलेखीय पहिचानक समर्थन भेटत तँ निष्कर्ष नब रूप लऽ सकैत; एखन उचित कार्य ई होएत जे प्रत्येक स्रोतक कालक्रम, कथित लेखक आ अपेक्षित सम्बन्ध पहिने सुरक्षित रहय।

भारतीय रस-ध्वनि-विवेचनमे शशांकक क्रोध, अपमान, भय, गर्व, लज्जा, मित्र-विश्वास आ अन्ततः संयमक अलग प्रकार पाँच अध्यायमे आवर्तित अछि। राघवक विधिक सावधानी आ आदित्यक कठोर प्रश्नक बीच मृणालक चाह-पियाला तथा शिक्षकक दूरभाष घरेलू आ सांस्कृतिक आधार राखैत अछि। शशांक मृणालकेँ पहिने आधा-सत्य लिखने छल, मुदा वर्तमानमे मृणाल असिद्ध बचावक प्रलोभनसँ ओकरा रोकैत अछि। एहि अन्तरमे मित्रताक ऐतिहासिक गतिशीलता अछि: सम्बन्धक नैतिकता स्थिर सिद्धान्त नहि, पुरान भूल आ वर्तमान कठोर साहचर्य सँ निर्मित होइत अछि। ‘केवाड़ी’ एहि बैचमे अन्तिम बेर महत्त्वपूर्ण अर्थ बदलैत अछि—विदेशी व्यक्ति भाषा-कौशलक प्रशंसा द्वारा केवल अवसर दिखबैत अछि; अवसर स्वीकार करबाक निर्णय नायकक अपन अछि। बाहरी अवसर आ आन्तरिक स्वीकृतिक बीच नायकक जिम्मेदारीक वास्तविक स्थान अछि।

एहि पाँच अध्यायक संयुक्त साहित्यिक मूल्य ई जे निर्दोषताक एकरंगी प्रतिमा बनाओल नहि गेल। शशांक अपन भाषिक नरमी, अर्थक अतिरिक्त निश्चितता, भूमिका-प्रचार आ मित्रसँ अधूरा वर्णनक जिम्मेदारी ग्रहण करैत अछि; एके संग ओ अप्रमाणित स्वामित्व, दोसरक उद्देश्य अथवा संयुक्त अपराधगत नेटवर्कक अनावश्यक दोष स्वीकार नहि करैत। कथाकार सम्यक्

प्रायश्चितक कठिन अर्थ सुझबैत छथि—जतय दोष अछि, ओतए स्पष्ट स्वीकार; जतय प्रमाण नहि, ओतए निर्णय-विराम। समेकित उपन्यास-समीक्षामे एहि उपलब्धिक संग नीतिपरक पुनरावृत्ति आ पात्रक प्रश्नोत्तरक अतिसङ्गतिक सीमाक चर्चा आवश्यक रहत। अगिला अध्यायसभमे ली वेनचाओक आगेक बैसार, मृणालक सम्पर्क आ वित्तीय अभिलेखक जे वास्तविक घटनाक्रम हो, ओकरा एहि पाँच अध्यायक अनुमानोंक स्थानपर स्वतन्त्र मूल पाठसँ पढ़ल जाएत।

## अध्याय ५१ — कैंटनिजक केवाड़ी १२ : मित्रताक दोसर बयान आ भुगतानक प्रमाण-सीमा

एकाबनम अध्यायमे न्यायिक परीक्षणक केन्द्र एक व्यक्तिक स्मरणसँ दू व्यक्तिक स्वतन्त्र बयान दिस सरकैत अछि। आदित्य मिश्रक कोठलीमे शशांक झा आ मृणाल कर्णक लेल राखल दू बयान-पत्र एहि परिवर्तनक सजीव वस्तु-प्रतीक अछि। बीचमे पुरान इ-पत्र, भुगतान-रसीद आ सेवा-करारक कतरनवाली संचिका अछि। दूनू मित्र एक-दोसराकेँ पहिने सँ चिन्हैत छथि, मुदा जाँचक मेज पर ई निकटता कथनक एकरूपताक गारण्टी नहि। मृणालक आरम्भिक मात्र सिर हिलेनाइ—न आश्वासन, न रोष—पात्रक सम्बन्धमे आएल सूक्ष्म दूरी केँ ओतेक प्रभावी बनबैत अछि जतेक पैघ आरोप-संवाद नहि बना सकित। कथाकार व्यक्तिगत स्मृति आ अभिलेखीय उत्तरदायित्वक टकरावकेँ पहिल दृश्ये सँ रूप देबैत छथि।

शशांक मृणालकेँ पहिने केवल ‘भाषाक’ काम कहि बैसारमे लऽ गेल छल। मूल प्रसंगमे मृणाल पहिल पन्द्रह-बीस मिनटक भाषा आ ग्राहक-आदतक चर्चा स्वीकार करैत अछि, आ तकर बाद भुगतान, सेवा-प्रदाता तथा अलग-अलग खाताक उल्लेख पर असहज भऽ उठैत अछि। ई क्रम महत्त्वपूर्ण अछि: शशांकक आरम्भिक उत्तर सम्पूर्णतः उलट तथ्य नहि, बल्कि आधा तथ्य छल। जुआ-अनुप्रयोगक प्रदर्शनक जानकारी पहिने न देब, मित्रक निर्णय-स्वतन्त्रता सीमित करैत अछि। अनुवादकक पेशागत दोष आ मित्रक प्रति छल-सम अर्थ-विलोपन एतय एक-दोसराक प्रतिबिम्ब बनैत अछि। मूल पाठ कथात्मक रूपसँ देखबैत अछि जे ‘सत्य’क किछु अंश ठीक रहितो प्रसंग नुकेलासँ ओकर नैतिक कार्य बदलि सकैत अछि।

आदित्य भुगतान-रसीदक माध्यमसँ एक नव प्रश्न उठबैत अछि। रसीद शशांकक भाषिक सेवाक पारिश्रमिकक सम्बन्ध देखबैत अछि; भुगतान देनिहार संस्थाक नाम ली वेनचाओसँ भिन्न अछि। मुदा एहि भिन्नतासँ अन्तिम लाभकारी स्वामित्व, गुप्त नियन्त्रण, अथवा ली द्वारा वास्तविक आर्थिक संचालन सिद्ध नहि होइत। शशांकक ‘ली कहने छल जे पारिश्रमिक

पहुँचत' एक व्यक्तिक कथन अछि, जखनकि रसीद भिन्न प्रकारक अभिलेख। दूनू एक-दोसरा सँ मेल खा सकैत अछि, मुदा एकर प्रमाण-विषय समान नहि। एहि विवेकक कारण उपन्यास आर्थिक रहस्यक सस्ता नाटकीकरणसँ बचैत अछि; कठिन प्रश्न 'कतेक धन?' सँ आगाँ बढ़ि 'के, कोन अधिकारसँ, कोन सेवाक बदला?' धरि पहुँचैत अछि।

भुगतान-द्वारक बहु-प्रविष्टिवला सारांश एहि संकटकेँ आर गहींर करैत अछि। शशांक केवल अपन सेवा-संबन्धी पंक्ति देखल स्वीकार करैत अछि; दोसरा लोकक संक्षिप्त नाम, अन्य लेन-देनक शीर्षक वा पछाति उपलब्ध जाँच-अभिलेख ओकर तत्काल अनुभूति नहि छल। एहि ठाम कथनक कालगत भेद निर्णायक अछि: पुरान बैठकमे जे देखल गेल, ओहि समय जे अनुमान कएल गेल, आ आब जाँचक मेज पर जे दस्तावेज देखाओल गेल—तीनू अलग सूचना-अवस्था अछि। कथाकार शशांककेँ अपन सुविधानुसार एहि अवस्थासभकेँ मिला देबाक अनुमति नहि दैत छथि। नव्य न्यायीय अर्थमे 'एके कागजमे नाम' हेतु तखन धरि व्याप्तिसम्पन्न नहि, जखन धरि निर्णायक सम्बन्धक पृथक साक्ष्य नहि भेटय।

अध्यायक सर्वाधिक मार्मिक मोड़ मृणालक प्रश्न अछि: ओ मित्र छल कि शशांकक लेल परिचय-पत्र? शशांक ली वेनचाओ लग मृणालक सम्भावित भूमिका कहि देने छल, मुदा मृणाल स्पष्ट सहमति नहि देने छल। मृणालक उपस्थिति शशांककेँ अपन निर्णय कम संदिग्ध लगबैत छल—एहि आत्मस्वीकारसँ नायकक मनोवैज्ञानिक युक्ति खुलैत अछि। ओ अपन संशय दूर करबाक लेल मित्रक निर्णय नहि माँगलक; उलट मित्रक मात्र संग रहबकेँ मौन स्वीकृति बुझबाक सुविधा गढ़लक। सामाजिक मनोविज्ञानक एहि सूक्ष्म बिन्दुमे भाषा छलक संग-संग आत्मछलक साधन अछि। लेखकक सफलता ई जे मृणाल केवल निर्दोषताक प्रमाण देबाक चरित्र नहि, अपन अलग ज्ञान आ निर्णयवला व्यक्ति बनि ठाढ़ होइत अछि।

जाँच-अधिकारी नैतिक पछतावा आ तथ्यगत बयानक भेद बनाए रखैत अछि। शशांक चाहैत अछि जे मित्रक नाम बिना सहमति संभावित सहयोगीक रूपमे देब 'अनुचित' सेहो लिखल जाए; आदित्य तथ्य दर्ज करैत अछि आ मूल्यांकनकेँ अलग राखैत अछि। एकरा विधिक

तटस्थताक कठोरता मात्र बुझब अपर्याप्त होयत। एहि दृश्यक नाटकीय प्रभाव ई अछि जे शशांक अपराधबोधक तत्क्षण सार्वजनिक प्रदर्शन द्वारा अपन हिसाब समाप्त नहि कऽ सकैत। आत्मग्लानिक सत्य आवश्यक अछि, मुदा तथ्यक संरचना ओकर बदला नहि। एतय नैतिक करुणा आ प्रमाण-विवेक दूनू समानान्तर चलैत अछि।

मृणालक बादक बयान एहि समरूप कसौटीक परीक्षा अछि। खाता-सारांशमे ओकर नाम अनुपस्थित अछि; ओकर बैसारमे उपस्थिति वा शशांकक परिचय ओकर आर्थिक नियन्त्रणक चिह्न नहि। जाहि पद्धतिसँ शशांक अपन विरुद्ध असिद्ध आरोप सीमित करैत छल, ओही पद्धति मृणालकेँ सेहो स्वतंत्रताक अधिकार दैत अछि। ई उपन्यासक मूल नैतिक आग्रह अछि: प्रमाणक नियम परिचितक बचाव लेल बदलल नहि जाए, अपरिचितक दोष सिद्ध करबाक लालसामे ढील नहि पड़य। एके जाँचमे स्नेह, आक्रोश, लाभ आ स्मरणक भिन्न सम्बन्ध असमान शक्तिसँ उपस्थित अछि, मुदा निर्णायक पद ‘सिद्ध’ सभक लेल एके कठोर अर्थ रखैत अछि।

दोसरा बैसारक प्रश्न कथा-अन्तरालमे मृणाल आ शशांकक नैतिक दूरी नापैत अछि। मृणाल ‘पैसा नीक’ आ ‘काम नीक’क भेद चिन्हि दोसर बैठकमे नहि जाइत अछि, जखनकि शशांक पुनः गेल छल। शशांक एक कारण चुनि आत्मकथा सरल करबाक बदला धन, महत्त्व, भाषाक आकर्षण आ सीमा पहिचानल रहबाक अभिमान सभ स्वीकार करैत अछि। ओकर ई स्वीकार अपराधमे आर्थिक नियन्त्रणक स्वीकारोक्ति नहि; अपन निर्णयक अनेक प्रेरणाक विवेचन अछि। कथाकार नायककेँ न पूर्ण राक्षस बनबैत छथि न सहानुभूतिशील निर्दोष प्रतिमा—एहिमे चरित्रांकनक परिपक्वता अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ अध्यायमे करुण आ लज्जाक धीमी ध्वनि प्रधान अछि। मृणालक मुख पर दुखक पहिल स्पष्ट छाया, शशांकक रुकल उत्तर आ आदित्यक रुकी गेल कलम—ई छोट अनुभाव ओहि चोटकेँ व्यक्त करैत अछि जकरा दण्डात्मक भाषासँ पएब कठिन छल। पाश्चात्य आख्यान-विन्यासमे समान मेज पर अलग बयानक दृश्य बहुस्वरता

रचैत अछि: शशांक स्मरण दैत अछि, मृणाल ओकर नैतिक अन्तराल देखबैत अछि, आदित्य प्रमाणक स्तर चिन्हैत अछि। कोनो स्वर बाकी दुनूकेँ सम्पूर्ण निरस्त नहि करैत।

अध्यायक अन्तमे चाहक दोकान पर मित्रता पुनः मानवीय स्थान पबैत अछि। सत्यक स्वतंत्र बयान देलाक बादो मृणाल संग चाह पिबाक आमन्त्रण दैत अछि। ई मेल-मिलाप अपराध-बचावक शर्त पर नहि, मिथ्या साक्ष्यक अस्वीकार पर संभव होइत अछि। तथापि रात्रिक कापीमे बारम्बार समीकरण-जेकाँ लिखल नियमक शिल्पगत सीमा अछि; लेखक दृश्यसँ जे सिद्ध कऽ चुकल छथि, ओकरा फेर व्यवस्थित सूत्रमे कहब पाठकीय स्वाधीनता तनिक घटबैत अछि। एहिठाम प्रतिपाद्यक पुनरावृत्ति नाटकीय सूक्ष्मतासँ ऊपर चढ़ि जाइत अछि। अन्तिम प्रश्न—मकाऊक यात्रा भेल छल कि नहि—अगिला अध्यायक जाँचकेँ स्वाभाविक कारण दैत अछि; मित्रताक स्थानीय संवाद अन्तरराष्ट्रीय अभिलेखक दिशामे कथाक मार्ग खोलैत अछि।

## अध्याय ५२ — कैंटनिजक केवाड़ी १३ : मकाऊक इजोत, अतिथि-प्रवेश आ बढ़ाओल अधिकारक आत्मजाँच

बावनम अध्याय मृणालक अनुत्तरित प्रश्नक सीधा उत्तर दैत अछि: शशांक मकाऊ गेल छल। किन्तु कथाकार एहि स्वीकारकेँ घटना-कथन पर समाप्त नहि करैत, यात्रा-आरक्षण, पासपोर्टक प्रविष्टि, होटल-लेखा, बैठकक सन्देश आ प्रवेश-अभिलेखक क्रम सँ एकर सीमा नापैत छथि। अध्याय ५१क दू बयान-पत्रक बाद एतय पाँच संचिका आ एक विस्तृत स्मरण-श्रृंखला अछि। कथाक बाहरी क्रिया आदित्य मिश्रक कक्षमे सीमित रहैत अछि, मुदा अभिलेख शशांककेँ हवाई-अड्डा, होटल, भोजनालय आ तकनीकी कार्यालयक अतीतक भीतर लऽ जाइत अछि। वर्तमान जाँच आ अतीतक दृश्य एतय एक-दोसरा पर निरन्तर प्रश्न करैत अछि।

आदित्य घोषित यात्राक उद्देश्य आ निजी प्रेरणाकेँ अलग दर्ज करैत अछि। औपचारिक रूपेँ भाषा-सहायता, ग्राहकक साम्हिन प्रदर्शन आ कागज बुझाबक काम कहल गेल छल; शशांकक भीतर विदेश-यात्रा, प्रतिष्ठा, महँगा आतिथ्य आ अधिक पारिश्रमिकक आकांक्षा सेहो छल। ई अन्तर उपन्यासक चरित्र-नैतिकताक केन्द्रीय सूत्र अछि। मनमे लोभ रहब मात्रे आपराधिक उद्देश्य सिद्ध नहि; तथापि ओ लोभ शब्द चुनबाक निर्णय पर प्रभाव डालि सकैत अछि। कथाकार शशांकक स्वप्नकेँ केवल आर्थिक उन्नयनक कथा नहि बनबैत, बल्कि अपन छोट गामसँ दूर पहुँचल जीवनक आत्मप्रदर्शनक लालसा रूपेँ पढ़ैत छथि।

मकाऊक दृश्यात्मक प्रवेश विशेष अर्थपूर्ण अछि। अनजान भाषाक ध्वनि, काँचक भवन, रातिक विज्ञापन आ झरोखासँ दिखैत नगरक चमकक विरुद्ध शशांक अपन गामक दूर धरि पसरल जुगनूक इजोत स्मरण करैत अछि। एक क्षण ओ एहि अन्तरकेँ प्रेम नहि, विजयक अनुभव बनबैत अछि। कथा एहि छोटे परिवर्तनमे प्रवासक वर्गीय आकांक्षा खोलैत अछि: नव नगर देखब एक बात, अपन मूल स्थानकेँ पाछाँ छोड़ि ‘ऊपर’ पहुँचल मानब दोसर। एहि दृश्यसँ मकाऊको केवल अपराधक सम्भावित भूगोल मानल नहि जाइत; ओ नायकक आत्मकथा बनाबयवाला चमकैत दर्पण बनैत अछि। परन्तु नगरक विस्तृत सामाजिक

जीवनक स्थान पर होटल आ कार्यालयक दृश्य अपेक्षाकृत अधिक रहैत अछि; स्थानीय जीवन-विश्व कथामे सीमित अछि।

जुलियानाक सन्देश आ शशांकक उत्तरमे ‘बड़का’ शब्द हटाकऽ ‘महत्त्वपूर्ण’ लिखब अत्यन्त सूक्ष्म भाषिक घटना अछि। शशांकक वास्तविक कार्यक आकार एखन निश्चित नहि, मुदा ओ अपने कैँ आवश्यक देखाबय चाहैत अछि। शब्दक एहि स्थानापन्नमे अनुवादक निजी आत्म-छविक सम्पादक बनि जाइत अछि। आदित्य तुरन्त पूछैत अछि जे सन्देश प्रतिलिपिमे उपलब्ध अछि कि ई केवल पछिला स्मरण। शशांक संभावित अंकीय स्रोत बतबैत अछि, पर सत्यापन शेष छोड़ैत अछि। एहि कारण वस्तुगत पाठ, वर्तमान स्मरण आ समीक्षकक व्याख्या अलग स्तर पर रहैत अछि।

भोजनालयक दू व्यक्तिक परिचयमे ‘प्रौद्योगिकी’ आ ‘वाणिज्य’ सन सामान्य शब्द सुनल गेल छल; शशांक बादमे एकरा ‘तकनीकी दल’ कहि अपन अनुमानकैँ पदनाम बनाकऽ प्रस्तुत करैत रहल। आदित्य ओहि रूपान्तरणकैँ चिन्हैत अछि। एतय नव्य न्यायीय दोष ‘सन्दिग्ध व्यक्ति देखल = कम्पनीक संचालक’ नहि, बल्कि कार्य-विषय सँ औपचारिक भूमिका अनुमान कऽ लेब अछि। पात्रक सुधार विश्वसनीय अछि, कारण ओ अपन पुरान भाषिक गर्व स्वीकार करैत अछि; तथापि सभ पात्रक बारम्बार एके प्रश्न-पद्धति अपनायब कथ्यकैँ कखनो-कखनो व्याख्यानक लय दैत अछि।

कार्यालय-सदृश स्थानक संगणक-पटल पर प्रत्यक्ष प्रसारित जुआ-मेज, बहुभाषी वाक्य-सूची आ ग्राहक-सहायता सम्बन्धी संवाद उपलब्ध छल। शशांक अनुवादक रूपैँ शब्द-सुधार सुझबैत अछि। मुदा एक व्यक्ति स्वयं पासवर्ड दऽ खण्ड खोलि दैत अछि, तखन पटल ओकर साम्हिन छोड़ैत अछि। अतिथि-प्रवेश, खुलल सामग्री देखब आ स्वतंत्र प्रशासकीय नियन्त्रणक बीच जतेक अन्तर अछि, लेखक ओकरा लगातार घटना द्वारा देखबैत छथि। ‘सर्वर-प्रवेश’ सन उग्र पद शशांक अपन महत्त्व बढ़ेबाक लेल पहिने उपयोग कएने छल, मुदा मूल दृश्य स्वतंत्र पासवर्ड, खाताक अधिकार वा सुरक्षित परिवर्तनक प्रमाण नहि दैत अछि। नैतिक दोष आत्मप्रचारक अछि; तकनीकी नियन्त्रणक प्रश्न अनिर्णीत।

पाँच घण्टाक प्रवेश-अभिलेख एही तर्कक एक दोसर परिमाण अछि। कार्यालयमे उपस्थितिक अवधि अभिलेखसँ पुष्ट होइत अछि, मुदा ओहि पाँच घण्टामे कतेक समय अनुवाद, भोजन, प्रतीक्षा, करारक चर्चा अथवा प्रदर्शनमे गेल—अलग साक्ष्य चाही। समयक मात्रा सँ कार्यक प्रकार सिद्ध नहि। ओहि प्रकार एके होटल-आरक्षणमे शशांक, ली आ तेसर व्यक्ति रहब संस्थागत स्वामित्वक प्रमाण नहि। उपन्यासक गद्य एहि जटिलताक भीतर एक नकारात्मक अनुशासन स्थापित करैत अछि: यत्र-तत्र समानताक चिह्न अछि, मुदा कारण-सम्बन्धक व्याप्ति नहि।

राघव भसीनक स्मरण एहि अध्यायक महत्त्वपूर्ण प्रतिरोधी स्वर अछि। शशांक हुनकर प्रश्न याद करैत अछि जे मनोरञ्जन-सेवा आ दाँव-आधारित खेलक मूल शब्दमे विधिक अर्थक अन्तर अछि। राघव मूल शब्द नुका कऽ अनुवाद नहि करबाक सावधानी देने छलाह—शशांक एहन स्मरण दैत अछि। आदित्य एकरा पुष्ट तथ्यरूपेँ नहि लिखैत, वरन् स्वतंत्र पत्राचारसँ मिलान चाहैत अछि। ई अन्तर विशेष महत्त्वपूर्ण अछि, कारण एतय आरोपक कथामे वकीलकेँ सहज खलनायक बना देबाक सम्भावना छल। पाठ ओकर वास्तविक कथित कथन आ प्रमाणक उपलब्धता अलग राखैत अछि।

स्मरणक विश्वसनीयताक समस्या एहि अध्यायक कथन-प्रविधिक प्राण अछि। शशांक अपन अतीतक आत्मविश्वास आ आजुक आत्मज्ञानक बीच लगातार आवाजाही करैत अछि। ‘धनक गति बदलि सकैत अछि’ सन आजुक व्याख्या ओकर तत्काल अनुभूति नहि छल—ओ स्वयं भेद करैत अछि। एकर फलस्वरूप कथावाचक अतीतक नाटकीय दृश्य दैत छथि, मुदा पाठककेँ बुझबैत छथि जे एहन दृश्यक किछु व्याख्या पात्रक पछिला संज्ञान द्वारा रंगायल अछि। आधुनिक आख्यानशास्त्रक दृष्टिसँ ई विश्वसनीयताक सरलीकृत स्वीकृति नहि, नियंत्रित आत्मपरीक्षण अछि।

मृणाल संग बाहिर चाह पिबैत शशांक ‘पहुँच’ शब्दक निजी अर्थ बदलैत अछि। पहिने ओ प्रवेशकेँ पदक जेकाँ पहिरने छल, आब पूछैत अछि जे ओकर वास्तविक अधिकार की छल। ई परिवर्तन दृश्यात्मक रूपेँ सफल अछि—होटलक रोशनीसँ प्रारम्भ भेल अध्याय शब्दक सीमा पर आबि समाप्त होइत अछि। शिल्पगत आपत्ति एतबे जे अन्तिम कापीमे ‘विदेश

यात्रा = अपराध सिद्ध नहि', 'अतिथि-प्रवेश = नियन्त्रण नहि' सन नियमक लम्बी श्रृंखला पूर्व संवादक साहित्यिक ऊर्जा कम करैत अछि। तथापि अध्यायक केन्द्रीय उपलब्धि अकाट्य अछि: नायकक आत्ममुग्धताकेँ स्वामित्वक प्रमाण नहि बनबैत, ओहिमे निहित नैतिक जिम्मेदारीसँ ओकरा मुक्त सेहो नहि करैत।

## अध्याय ५३ — मकाऊक दर्पण १ : गोपनीय मुहर, अर्थापत्ति आ विधिक सलाहक वास्तविक सीमा

तेपनम अध्यायसँ उपन्यासक नव खण्ड ‘मकाऊक दर्पण’ आरम्भ होइत अछि। लाल अक्षरमे लिखल ‘गोपनीय: विधिक समीक्षा’ शशांकक सामने राखल संचिकाक पहिल दृश्य अछि। पिछला अध्यायमे होटल, अतिथि-प्रवेश आ चमकैत नगरक बाहरी दर्पण छल; आब बंद फाइल आ करारक मसविदा ओहि दर्पणक स्थान लेइत अछि। लेखक शीर्षकक निरन्तरता तोड़ैत नहि छथि, मुदा कथ्यक माध्यम बदलैत छथि—दृश्यात्मक महत्वाकांक्षासँ दस्तावेजक पाठाधिकार धरि। प्रश्न ई नहि जे मुहर अछि कि नहि, बल्कि मुहरक कानूनी अर्थ कतय तक जाइत अछि।

राघव भसीनक नाम पत्राचारमे अछि; आदित्य पहिने स्पष्ट करैत अछि जे अधिवक्ताक उपस्थिति अपने-आप अपराधमे सहभागिता सिद्ध नहि करैत, आ ‘गोपनीय’ लिखल रहब हर व्यावसायिक पृष्ठ कैं स्वतः विधिक विशेषाधिकार नहि दैत। एहि दू निषेधक बीच आलोचनाक मुख्य क्षेत्र अछि। शशांकक मन चहलक जे एकटा मुहर ओकरा सुरक्षित राखय वा पूर्ण दोषी बना दियय; पाठ ओहि द्विध्रुवी सरलीकरणकैं अस्वीकार करैत अछि। विधिक अभिलेखक शक्ति ओकर लिखल उद्देश्य, पक्ष, प्राप्तकर्ता आ उपयोगसँ निर्धारित होइत अछि—मात्र मुखपृष्ठक पदसँ नहि।

सेवा-करारक प्रारम्भिक मसविदामे भाषा-सहायता, ग्राहक-संवाद आ स्थानीय प्रस्तुति एक दिस, भुगतानक दायित्व दोसर संस्थाक नाम पर दोसर दिस राखल अछि। शशांक ‘settlement’क सामान्य अर्थ बुझौने छल, मुदा खाताक वास्तविक धारक वा भुगतान-प्रवाहक रचना नहि जानैत छल। भारतीय खातासभक संक्षिप्त सूचीमे किछु प्रविष्टि पर पछिला जाँच द्वारा ‘म्यूल खाता’क आशंका लिखल गेल। लेखक सावधान करैत छथि जे पछाति आरोपित वर्गीकरणकैं पात्रक पूर्वकालिक ज्ञान बनायब अनैतिहासिक होयत। ई केवल विधिक अनुशासन नहि, कथा-कालक अनुशासन सेहो अछि: कखन कोन सूचना पात्र लग छल, से साहित्यिक निर्णय बदलैत अछि।

अर्थापत्तिक प्रसंग अध्यायक दार्शनिक केन्द्र अछि। लिखित काज 'केवल भाषिक' कहल जाइत अछि, मुदा अनेक बैठकमे शशांकक उपस्थितिक अभिलेख अछि जतय पैसा, सेवा आ खाता पर चर्चा भेल। एहि दुनू तथ्यकेँ एक संग बुझबाक व्याख्या आवश्यक अछि। मुदा एक मात्र कल्पना—ओ अपराधी भागीदार छल—अनिवार्य नहि। भाषा-सहायकक विस्तारित व्यावहारिक भूमिका, अपूर्ण अभिलेख अथवा बैठकक विविध कार्य सेहो सम्भावित अछि। उपन्यास एतय अर्थापत्तिक प्रयोगक सीमा स्वयं रखैत अछि: विसंगति देखि व्याख्या खोजू, मुदा चुनल दोषकेँ स्वतः अनिवार्य सत्य नहि मानू। एहि सन्दर्भमे नव्य न्याय एक सजावट नहि, कथात्मक अनुशीलनक वास्तविक पद्धति अछि।

राघवक प्रेषित 'Privileged / legal review only' शीर्षकवला इ-पत्रमे शशांक प्राप्तकर्तामे अछि, मुदा ओ राघवक निजी ग्राहक छल कि नहि, से निश्चित नहि। एहन सन्दिग्ध सम्बन्ध स्वयं विधिक संरचनाक हिस्सा अछि। महत्त्वपूर्ण ई जे इ-पत्रक सामग्री जुआ-संबन्धी मूल शब्दक स्पष्टता आ वास्तविक भुगतान-पक्षक पहिचान माँगैत अछि। राघव अनुवादककेँ दाँव-आधारित शब्दकेँ 'मनोरञ्जन' मात्र बनाकऽ न पेश करबाक चेतावनी देने छलाह। एहि आधारपर राघवक ई विशेष सलाह अपराध लुकएबाक नहि, अर्थ साफ रखबाक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि; मुदा एक सावधान इ-पत्र हुनकर सभ सम्भावित व्यापारिक सम्बन्धक स्वतन्त्र जाँचक स्थान सेहो नहि लेत।

असामान्य बेसी पारिश्रमिकक प्रविष्टि शशांकक भीतर रोषक नहि, लज्जाक प्रश्न जगबैत अछि। ओ पहिने राशि बेसी किएक अछि, से नहि पूछने छल, कारण ओकरा अपन कौशलक महत्त्व मान्य होइत देखबाक सुख छल। आदित्य बुझबैत अछि जे अधिक राशि व्याख्या माँगि सकैत अछि—अतिरिक्त समय, सेवा वा यात्रा सन सम्भावना सहित—मुदा अधिक भुगतान मात्र अपराध-लाभक प्रमाण नहि। पात्रक व्यक्तिगत लोभ आ ककरो गुप्त धन-व्यवस्थाक आर्थिक नियन्त्रणक बीचक दूरी एहि आलोचनाक मुख्य नैतिक उपलब्धि अछि। लेखक जँ एहि दूरीकेँ मिटा दितथि तँ उपन्यास सरल अपराधकथा भऽ जाइत; दूरी बनाए रखलासँ नायकक वास्तविक त्रुटि आर स्पष्ट होइत अछि।

मकाऊक भोजन-मेज पर सुनल एक अर्धस्मृत वाक्यक प्रसंग पुरान स्मरणक अस्थिरता खोलैत अछि। शशांक स्वयं नहि जनैत अछि जे ओहि वाक्यक शब्दशः रूप ओकरा याद अछि कि बादक घटनासँ स्मरण पुनर्गठित भेल। राघवक सम्भावित उत्तर सेहो स्वतंत्र पुष्टि बिना ओकर नाम पर नहि लिखबाक आग्रह करैत अछि। ई दृश्य नायकक विश्वसनीयताक अभाव नहि, विश्वसनीय होयबाक संघर्ष अछि: कथनक सीमा स्वीकार कऽ ओ पहिल बेर अपना सँ सुविधाजनक साहित्यिक संवाद गढ़बाक प्रलोभन रोखैत अछि। पाठ-समीक्षक लेल सेहो ई संकेत अछि जे पात्रक आजुक स्मरणकेँ ऐतिहासिक संवादक शाब्दिक प्रमाण बना देब त्रुटि होयत।

दुपहर बाद राघव स्वयं जाँचक कोठलीमे अबैत छथि। हुनकर मुखक थकान आ स्थिर स्वर चित्रित कऽ कथाकार विधिक पात्रकेँ केवल सिद्धान्तक प्रतिनिधि नहि रहने दैत छथि। एके मसविदापर राघवक विधिक आ शशांकक भाषिक टिप्पणी अछि; एहि एकत्र उपस्थितिसँ ग्राहक, विधिक रणनीतिक सदस्य वा पूर्ण बाहरी व्यक्ति—तीनूमे कोनो सरल निष्कर्ष नहि। राघव ‘व्यावहारिक पहुँच’ आ ‘निर्णयाधिकार’क भेद चिन्हबैत छथि। ई सन्तुलन विशेष महत्त्वपूर्ण अछि, कारण नायकक पुरान ‘विशेष पहुँच’क अभिमान आब उचित सीमा पबैत अछि, राघव सेहो पूर्ण ढाल वा पूर्ण तलवार नहि बनैत छथि।

‘India routing summary’ शीर्षकवला अधूरा इ-पत्र-श्रृंखलामे संलग्नक अनुपलब्ध अछि, मुदा राघव वास्तविक करार-पक्ष आ भुगतान-पक्षक नाम माँगैत छथि। एहि पंक्तिसँ वास्तविक पक्ष स्पष्ट करबाक आवश्यकता दिस संकेत अछि; हवाला, आभासी मुद्रा अथवा कथित खातासभक संचालनमे हुनकर सहभागिता सिद्ध नहि। अधूरा संलग्नक अभिलेखीय रिक्तता अछि—न प्रमाणित दोष, न पूर्ण निर्दोषताक प्रमाण। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिसँ ई पठन नामक पुनरावृत्ति आ स्थानक सहसम्बन्धकेँ एक स्रोत-श्रृंखलामे बदलि देबाक आतुरताक विरोध करैत अछि।

अध्यायक सौन्दर्य ‘गोपनीय’क मानवीय भारमे सेहो अछि: शशांक पहिने बाहरी आरोपसँ डरैत छल, आब अपन अतीतक अधूरा प्रश्नसँ। मृणालक संग चलैत ओ अधिवक्ताकेँ जादुई

रक्षक नहि, सीमा बतबैत व्यक्ति रूपेँ पुनः बुझैत अछि। तथापि आदित्य आ राघवक संवाद किछु ठाम नैतिक-दर्शनक साफ पाठ जेकाँ व्यवस्थित अछि; न्यायालयीय पेशाक अनिश्चित, परस्परविरोधी व्यवहारक जटिलता एतय पात्रसभक तर्क-सम्मत वाक्यक कारण कम होइत अछि। मूल पाठक पद्धति-प्रधानता एहि अध्यायमे लाभ आ सीमा दूनू अछि। अन्तमे दू संस्करणवाली आन्तरिक कर-सूचनाक सन्देश अगिला अध्यायक लागि जिज्ञासा रचैत अछि —दर्पण आब कागजक दोसर चेहरा देखएबाक अछि।

## अध्याय ५४ — मकाऊक दर्पण २ : दू संस्करण, सुरक्षित आरक्षण आ संस्थागत मौनक राजनीति

चौबनम अध्याय एके शीर्षक आ तिथिवाली दू ‘आन्तरिक कर-सूचना: भुगतान-पक्षक सत्यापन’ संचिकाकेँ आमने-सामने रखैत अछि। पहिल प्रति निचला आयुक्तालयक अभिलेखागारमे, दोसर ऊपरी कर-गुप्तचर शाखाक प्रसार-संचिकामे अछि। दृश्य अत्यन्त साधारण अछि—दू कागज, दू संस्करण-संख्या, एक मेज—मुदा ई साधारणता उपन्यासक अभिलेख-विचारक चरम बनैत अछि। कथाकार कोनो अदृश्य षड्यन्त्रक तत्काल घोषणा नहि करैत छथि; मूल आ प्रसारित रूपमे की बदलल, से पहिने देखबैत छथि। ई पद्धति स्वयं कथाक नैतिक कसौटी अछि।

निचला संस्करण करार करनिहार, भुगतान करनिहार आ अन्तिम पाबनिहारक नाममे असमानता चिन्हबैत अछि, आ तत्काल आपराधिक निष्कर्षसँ परहेज करैत वास्तविक लाभकारी स्वामित्व, सेवा-वितरण आ धनक कारणक स्वतंत्र सत्यापन चाहैत अछि। ऊपरी संस्करण सेवा-भुगतानक उपलब्ध व्यावसायिक आधार देखबैत, प्रत्यक्ष कर-हानि स्थापित नहि कहैत, प्रकरणक प्राथमिकता घटा सकबाक बात करैत अछि। दुनू निष्कर्ष आवश्यकत: परस्पर विरोधी नहि, मुदा दोसरा प्रतिमे पहिलाक तीन महत्त्वपूर्ण प्रश्न गायब अछि। एहि सूक्ष्म अन्तरक कारण कथा ‘झूठ बनाम सच’क सहज द्वन्द्वसँ बाँचि, प्रश्नक परिधि बदलबाक राजनीति खोलैत अछि।

सात पंक्तिक मूल मिलान-पत्र—करार-पक्ष, बिल जारी करनिहार, भुगतानकर्ता, घोषित सेवा-पाबनिहार, बैंक-पाबनिहार, विधिक टिप्पणी आ सत्यापन शेष—मात्र कागजक परिशिष्ट नहि, कथानकक क्रिया-स्थल बनैत अछि। शशांकक नाम ओहिमे ‘भाषिक सेवा प्रदाता’ रूपेँ अछि, मध्यस्थ अथवा नियन्त्रणकर्ता रूपेँ नहि। ई तथ्य शशांककेँ राहत दैत अछि, मुदा कथाकार संगहि कहैत छथि जे राहत प्रमाणक स्थान नहि लेत। नायकक मनोवैज्ञानिक उतार-चढ़ाव आ अभिलेखक सीमित दावा अलग रहैत अछि। ई आदर्शीकृत नायक-निर्दोषताक बदला एक विशिष्ट भूमिका-पहिचानक प्रश्न अछि।

भिन्न भुगतान-पक्ष, अलग बैंक-पाबनिहार, विदेशी भुगतानक उल्लेख—ई सभ शंका जगाबय योग्य चिह्न हो सकैत अछि; मुदा एहि एक पत्रसँ कथित ‘म्यूल खाता’, हवाला अथवा आभासी मुद्राक व्यवस्था स्वतः सिद्ध नहि। एतय प्रमाण-विवेक आर्थिक विश्लेषणक सीमासँ जुड़ैत अछि। उपन्यास वास्तविक लेन-देनक संचालनविधि देबाक बदला ककर नाम कोन विधिक कार्यक साथ जोड़ल जा सकैत अछि, एहि प्रश्न पर केन्द्रित रहैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे ई महत्त्वपूर्ण अछि: भिन्न कार्यालय आ विदेश-संबद्ध व्यापारक कागज पर एके व्यक्ति वा संस्था देखब कारणात्मक श्रृंखला गढ़बाक पर्याप्त आधार नहि।

निचला आयुक्तालयक अधिकारीक कथनमे संस्थागत नैतिकता एक मानवीय चेहरा पबैत अछि। हुनका संशय अछि जे संलग्नक जानि-बुझि हटाओल गेल, मुदा ओ स्वयं स्वीकार करैत छथि जे उद्देश्यक प्रमाण नहि। अपन मूल प्रतिक संग आरक्षण-पत्र सुरक्षित रखबाक निर्णय, जखनकि सार्वजनिक विरोध नहि कएल गेल, मौन प्रतिरोधक भिन्न रूप अछि। कथाकार एतय वीरताक मंच नहि बनबैत छथि: एक पंक्ति आ एक संलग्नक सुरक्षित रहब बादक जाँचक केवाड़ी खुलल राखि सकैत अछि। एहि छोटे प्रशासनिक कर्ममे उपन्यासक नैतिक राजनीति प्रकट होइत अछि।

अंकीय इतिहासमे पहिल आ दोसर संस्करणक बीच लगभग तीन घण्टाक अन्तर अछि; बीचमे ‘संक्षिप्त समीक्षा’क प्रविष्टि अछि, मुदा स्पष्ट व्यक्ति-लेखक नहि, शाखाक सामूहिक परिचय-चिह्न अछि। एहि सँ सम्पादन अथवा प्रक्रियागत परिवर्तनक सम्भावना बढ़ैत अछि, मुदा कोन व्यक्तिक आदेश छल, से निश्चित नहि। आदित्य पुनः अर्थापत्तिक कसौटी लगबैत अछि: दू भिन्न पाठक बीच किछु चयन वा संशोधन मानल आवश्यक भऽ सकैत अछि, पर ‘दोष नुकेबाक नियतसँ’ ओ काज भेल—ई अतिरिक्त आरोप अछि, जकरा अलग प्रमाण चाही। ओहि क्षण शशांकक क्रोध एहि सीमाकेँ लाँघय चाहैत अछि, आ फेर स्वयं रुकैत अछि।

प्राप्ति-पञ्जीमे ‘मुख्य पत्र: १; संलग्नक: १’ आ प्रसार-पञ्जीमे केवल मुख्य पत्रक उल्लेख —ई अध्यायक सर्वाधिक ठोस कथानक-साक्ष्य अछि। संलग्नक कखन आ किएक प्रसारित प्रति सँ अनुपस्थित भेल, से प्रश्न खुलल अछि; मुदा प्राप्ति आ प्रसारक बीच किछु बदलल, ई वस्तुगत अंतर दर्ज अछि। आदित्य ‘हेरायल’ कहबाक स्थान पर ‘बीचमे अनुपस्थित भेल’ कहबाक सावधानी दैत अछि, कारण पहिल पद कारणक अनुमान सेहो सँगे लऽ अबैत अछि। लेखकक भाषिक कौशल एतय चरित्र-विकासक रूपमे काम करैत अछि: अनुवादक अपन शब्दसँ अनपेक्षित कारण न जोड़बाक अभ्यास करैत अछि।

राघव भसीनक सीमित दूरभाषीय उपस्थिति एहि सन्दर्भमे उल्लेखनीय अछि। ओ वास्तविक करार-पक्ष आ भुगतान-पक्षक स्पष्टताक आग्रह स्वीकार करैत छथि, मुदा कर-जाँचक प्राथमिकता तय करबाक अधिकार अपना लग नहि बतबैत छथि। एक सम्भावित मिलान-सारणी देखलाक स्मरणो मूल प्रति बिना पुष्ट नहि करैत छथि। ई संवाद संस्थासभक अधिकार-रेखा आ व्यक्तिक स्मरण-सीमा दुहरबैत अछि। वकील, कर-अधिकारी, भाषिक सेवा प्रदाता आ जाँचकर्ता सभक एके कागज पर नाम वा टिप्पणी होइतो अधिकारक स्थान भिन्न अछि; लेखक एहि भिन्नताकेँ मुद्दा बनबैत छथि।

शशांकक भीतर संस्थागत ‘विश्वासघात’क अनुभूति खास अर्थ रखैत अछि। ओ स्वयं पूर्वकालमे ग्राहकक सुविधा अथवा प्रतिष्ठाक लालचमे सावधानी-पद छोट केने छल; आब सरकारी प्रसार-प्रतिमे ओही अर्थ-संकुचन देखैत क्रोधित अछि। एहिमे चरित्रक आत्मदर्शी ध्वनि अछि—दोसराक दोष देखिते अपन पुरान भाषा-विलोपनक स्मरण। मुदा उपन्यास एहि नैतिक समानताकेँ कार्य-कारणक प्रमाण नहि मानैत। शशांकक पूर्व भाषिक त्रुटि आ संस्थागत संस्करणभेद एक रूपकात्मक समानता अछि, एके घटना अथवा एके अपराध नहि। एहि भेदमे साहित्यिक आलोचनाक हेतु विशेष महत्त्वपूर्ण नैतिक संयम अछि।

अध्यायक कला प्रमाणक सूक्ष्मता आ तनावक संचयमे अछि: पहिने दू संस्करण, तखन सात पंक्तिक मिलान, आरक्षण-पत्र, अंकीय संशोधन-इतिहास, प्राप्ति-पञ्जी आ अन्ततः नवल मुहरबन्द लिफाफा। ई क्रम पाठककेँ नवल तथ्यक संग पुरान व्याख्या संशोधित

करबबैत अछि। तथापि ‘एहि सँ की सिद्ध?’क एके संवादात्मक रचना बारम्बार अबैत अछि आ कखनो नाटकीय वैविध्य कम करैत अछि। प्रशासनिक सत्ताक राजनीतिक दबाव, अधिकारीक श्रमजीवन आ संस्थागत असहमतिक सामाजिक जोखिमक विस्तार अपेक्षाकृत कम रहैत अछि। तइयो कथाकारक उपलब्धि अछि जे ओ ‘प्राथमिकता घटल’ कैँ ‘तथ्यगत प्रश्न समाप्त’ नहि बनबैत; संस्थाक भीतर रक्षित एक अधूरा प्रश्नकैँ साहित्यिक प्रतिरोधक रूप दैत अछि।

## अध्याय ५५ — मकाऊक दर्पण ३ : मुहरबन्द मूल, समाचारक रूपान्तर आ सार्वजनिक अपमानक व्याकरण

पचपनम अध्याय पूर्व अध्यायक अन्तिम मुहरबन्द लिफाफा खोलैत अछि। लाल मोम, क्रमांकक मिलान आ उपस्थित अधिकारीक हस्ताक्षर केवल विधिक रस्म नहि; ई पाठक उपलब्ध होयबाक शर्त अछि। आदित्य शशांककेँ पहिने सचेत करैत अछि जे बाहिरक समाचारक आरोप भीतरक मूल सामग्रीक अर्थ पर पहिनेसँ नहि थोपल जाए। एतय कथाक क्रिया ‘नव रहस्यक खुलासा’ सँ बेसी ‘किस रूपमे मूल वाक्य पढ़ल जाए’क प्रशिक्षण अछि। लिफाफामे सूची, आन्तरिक समाचार-संक्षेप आ ‘बाह्य प्रसार निषिद्ध; अपुष्ट नाम सार्वजनिक उद्धरण लेल नहि’ सम्बन्धी टिप्पणी अछि। एहि तेसर पृष्ठक प्रकाशमे शशांकक नामवाली बाहरी खबर नव प्रश्न बनि ठाढ़ होइत अछि।

समाचारक शीर्षक शशांककेँ मकाऊ भुगतान-जालक ‘केंद्रीय’ व्यक्ति, ‘कानूनी ढाल’ अथवा भाषिक ‘सूत्रधार’ रूपेँ प्रस्तुत करैत अछि। ई पद पाठककेँ तत्काल अपराध-नाटकक केन्द्र दैत अछि, मुदा मूल आन्तरिक संक्षेप भाषिक सहायक आ विधिक परामर्शकक भूमिका अलग सत्यापन योग्य कहैत अछि। भीतर स्पष्ट चेतावनी अछि जे उपस्थितिसँ लाभकारी स्वामित्व, भुगतान-नियन्त्रण वा अपराधमे सहभागिता निष्कर्षित नहि होय। सार्वजनिक रूपमे ई सावधानी हटल, आ ओहिक बदला ‘भुगतान-नियन्त्रणक कड़ी’ सन दावा आयल। लेखक खास रूपसँ देखबैत छथि जे असत्य केवल पूर्ण काल्पनिक घटना बनाओलासँ नहि; सत्य घटनाक ऊपर अनधिकृत निर्णायक सम्बन्ध जोड़लासँ सेहो बनि सकैत अछि।

आदित्य शशांकसँ पूछैत अछि जे की पूरा समाचार मिथ्या अछि। नायक स्वीकार करैत अछि —मकाऊक बैसार भेल, राघव एक बैठकमे छलाह, भुगतान-पक्षक नाम पर भाषा-संबन्धी चर्चा भेल। एहि उपलब्ध तथ्यसभ कैँ नकारब असत्य होयत; मुदा ओहि आधारपर स्वतः नियन्त्रणक निष्कर्ष लादब सेहो असत्य अछि। ई आत्मरक्षाक परिपक्व रूप अछि। नायक अपन निर्दोषताक सार्वजनिक छवि बचएबाक लेल प्रत्यक्ष तथ्य मेटब नहि चाहैत, आ

सत्यक नामपर असिद्ध आरोप स्वीकार करब सेहो नहि। कथानक चरमभावुक क्षणमे सेहो प्रमाण-संबन्धक दोसर स्तरक माँग करैत अछि।

एक दोसर बाहरी वाक्य भाषिक मध्यस्थताकेँ विदेशी भुगतान-प्रणालीक अनिवार्य कारण बना दैत अछि। मूल सामग्रीमे किछु सेवा-निर्देश भारतीय पक्ष धरि स्पष्ट करबाक लेल भाषिक सहायता उपयोगी कहल गेल छल, संगहि धन-प्रवाहक कारण मानबाक स्पष्ट निषेध छल। बाहिर 'सेवा-निर्देश' 'भुगतान-प्रणाली' बनैत अछि, आ निषेध लुप्त होइत अछि। एहि द्विस्तरीय परिवर्तनमे लेखकक अनुवाद-विषयक मुख्य प्रतिपाद्य सघन भऽ उठैत अछि: संज्ञा बदललासँ विषय बदलैत अछि; निषेध हटाओलासँ कारणक दावा बनैत अछि। ई साधारण समाचार-समालोचना नहि, अर्थ-विकृतिक संरचनात्मक अध्ययन अछि।

आदित्यक बनाओल चार स्तम्भ—मूल, बाहरी रूप, समान अंश, जोड़ल अथवा हटल सामग्री—अध्यायक सर्वाधिक सघन आलोचनात्मक उपकरण अछि। पहिल उदाहरणमे भूमिका-जाँचक सावधानी हटि नियन्त्रणक निष्कर्ष जोड़ल गेल; दोसरमे सेवा-निर्देशक भाषिक आवश्यकता आर्थिक अनिवार्यता बनल; तेसरमे 'नाम-पट्ट-आधारित निष्कर्ष' सन असामान्य पद 'नाम-पट्ट-आधारित जाल' भऽ गेल। एहि तुलनाक सार ई जे एके शब्द-समूह नवल प्रसंगमे वाक्यक प्रमाणभार बदलि दैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे ई मूल/प्रसारित पाठान्तरक दिग्दर्शन अछि; नव्य न्यायीय दृष्टिसँ नवल सम्बन्धक दावाक हेतु स्वतंत्र साक्ष्य चाही।

असामान्य संयुक्त पदक पुनरावृत्ति साझा स्रोतक सम्भावना जगबैत अछि। शशांक स्वयं 'नाम-पट्ट' सन पद बनबैत रहल अछि; राघव सेहो शशांकक भाषिक आदतक उल्लेख करैत छथि। मुदा शैलीगत साम्य लेखकत्व सिद्ध नहि करैत। अपरिहार्य निष्कर्ष निकालबाक पहले मूल मसविदा, प्रतिलिपि, साझा कर्मक्षेत्र, मौखिक पुनरुक्ति आ प्रसार-श्रृंखला जाँचबाक अछि। लेखक एतय उपमानक आकर्षणक आलोचना करैत छथि: एके विरल शब्द दू ठाम देखब मात्र लेखक एके अछि—एहन छलाँग उचित नहि। दृश्य शशांकक भाषिक कुशलताकेँ ओहि समय ओकर विरुद्ध संशयक विषय सेहो बनबैत अछि।

बादक अभिलेखमे महत्त्वपूर्ण नवल सूचना भेटैत अछि: मुहरबन्द समाचार-संक्षेप सँ पहिने मसविदा चारि अधिकारीक कार्य-संचिकामे पहुँचि चुकल छल, आ ताहिमे असामान्य पद छल, मुदा शशांकक नाम नहि। एहि सँ 'कोनो व्यक्ति बादमे लिफाफा तोड़ि समाचारमे सभ देलक' सन एक-पथीय कथानक अस्थिर होइत अछि। साझा पदक उपलब्धता मुहरबन्द प्रतिसँ पहिनेसँ सम्भव छल; शशांकक नाम यात्रा-अभिलेख, करार, पहिनुक समाचार वा ककरो कथनसँ अलग जुड़ल हो सकैत अछि। एहि बहुस्रोत सम्भावना कैं सुरक्षित राखब अपराध-साहित्यक साधारण खलनायक-खोज प्रवृत्तिसँ उपन्यासकैं अलग करैत अछि। तथापि स्रोतक वास्तविक मार्ग अद्याप अनिर्णीत रहैत अछि; आलोचनामे एकरा सिद्ध 'लीक' कहब अनुचित होयत।

राघवक सार्वजनिक नामोल्लेख एहि अध्यायक बहुचरित्रीय संकट बढ़बैत अछि। ओ मूल विधिक अर्थ आ करारक दायित्व पर सलाह देबाक अपन भूमिका कहैत छथि; खबर ओकरा भुगतान-नियन्त्रणक सन्दिग्ध जोड़मे राखैत अछि। एकर तुरन्त बाद आदित्य हुनकर शशांक-संबन्धी शैलीगत टिप्पणीकैं लेखकत्वक प्रमाण मानबाक सँ रोकैत अछि। एही क्षण तीनू पात्रक बीच संबंधक नैतिक गुण उभरैत अछि—राघव शशांकक गलतीसँ अनभिज्ञ नहि, शशांक राघवक सम्भावित जोखिमसँ डरल अछि, आदित्य दुनूक कथनकैं स्वतंत्र छानैत अछि। नायकक बचाव सम्बन्ध-विशेषक कृपासँ नहि, तुलनीय न्यायिक कसौटीसँ संभव होइत अछि।

अध्यायक आत्म-समीक्षात्मक केन्द्र ओ क्षण अछि जखन शशांक अपन पुरान शब्द-सूचीमे जुआक स्पष्ट संकेत नरम कएल रहबाक स्मरण करैत अछि। आब समाचार ओकर विरुद्ध उलटा भाषिक प्रक्रिया करैत अछि—संशयक धार बढ़ाओल जाइत अछि। एहि समानतासँ नायकक क्रोधमे लज्जा मिसैत अछि। किन्तु कथाकार आदित्यक द्वारा एक आवश्यक भेद रखैत छथि: ई नैतिक तुलना अछि, प्रत्यक्ष प्रमाणक तुलना नहि। एहि कारण आत्मग्लानि मीडिया-अपराधक दोषी ककरा बनायब, तकर फैसला नहि करैत। कला आ प्रमाणक सीमा एकहि दृश्यक भीतर अखण्ड रहैत अछि।

कार्यालयसँ बाहर दू संवाददाता शशांककेँ घेरैत छथि। एतय कथाक सबसँ सफल सार्वजनिक संवाद अछि: शशांक मकाऊक भाषिक सहायता स्वीकार करैत अछि, भुगतान-नियन्त्रणक असिद्ध दावा नकारैत अछि, राघवक संग करार-सन्दर्भक चर्चा स्वीकार करैत अछि, मुदा साझेदारीक प्रमाण न भेटल कहैत अछि। ई उत्तर न अभियोजनक तैयार वाक्य अछि न आत्ममुग्ध प्रतिवाद। सार्वजनिक दबावमे सीमित, ठोस शब्द चुनबाक नायकक क्षमता पुस्तकक आरम्भिक भाषिक महत्त्वाकांक्षा सँ सार्थक दूरी नापैत अछि। मृणाल सेहो एक शब्द—निर्दोष अथवा दोषी—देबाक आग्रह नहि करैत। संबंधक एही परिवर्तित स्वरमे चरित्रक नैतिक विकास प्रकट अछि।

रसात्मक स्तरपर भय, अपमान, करुणा आ आत्मलज्जा संग-संग चलैत अछि। मोमक लाल किनार, कक्षक मौन, बाहरक कैमरा आ शशांकक लिखल स्तम्भ; ई वस्तुसभ अनिश्चित ज्ञानक शारीरिक अनुभूति बनबैत अछि। आख्यानशास्त्रीय स्तरपर मूल पाठ सँ समाचार धरि यात्रा एक प्रकारक अन्तर्पाठीय संघर्ष अछि: एक पाठ दोसराक संकेत चुनि अर्थ बढ़बैत अछि। एतय लेखकक मौलिक शक्तिक संग सीमा सेहो अछि। तीन उदाहरणक पाठान्तर अत्यन्त प्रभावी होइतो अन्तक कापीमे पुनः अनेक सूत्र लिखलासँ वर्णनक लय कखनो समीक्षात्मक निबन्धक रूप धारण करैत अछि। संवाददाता आ समाचार-संस्थाक आन्तरिक मतभेद वा पेशागत कारण अलग नाटकीय दृश्यरूपेँ सीमित अछि, तेँ सञ्चार-माध्यमक बहुअर्थी सामाजिक चरित्र पूर्ण रूपेँ खुलि नहि पबैत।

अन्तिम सन्देश आगामी सीमित न्यायालयीय सुनवाईक घोषणा करैत अछि। लेखक एतय मुहरबन्द पाठक आलोचनाकेँ बन्द नहि करैत, ओकरा न्यायालयमे पुनर्परीक्षण लेल आगाँ पठबैत छथि। अध्याय ५५क सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि निश्चित अपराधी पकड़ब नहि; ई दिखायब अछि जे सार्वजनिक वाक्य कथ्यक मूल तथ्यकेँ बचौने रहितो ओकर कारण, दायरा आ नैतिक अर्थ विकृत कऽ सकैत अछि। एहि अध्यायमे ‘अनुवादक’ व्यवसायसूचक नामसँ बढ़ि सार्वजनिक सत्यक जिम्मेदारीक प्रश्न बनि उठैत अछि।

## अध्याय ५१-५५ : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — मित्रक बयानसँ समाचारक पाठान्तर धरि

अध्याय ५१–५५केँ एक अखण्ड अर्थ-यात्राक रूपमे पढ़ला पर पाँच प्रकारक पाठ साम्हिन अबैत अछि: मित्रक दोसर बयान, यात्रा-अभिलेख, विधिक मसविदा, प्रशासनिक पत्रक दू संस्करण आ अन्ततः मुहरबन्द सामग्रीक सार्वजनिक रूपान्तर। ई सभ केवल अलग विषय नहि; प्रत्येक अगिला अध्याय पहिनुक प्रश्नकेँ नव स्रोत-प्रकारमे रखैत अछि। अध्याय ५१मे शशांक मित्रक नामक उपयोगक अर्थ जाँचैत अछि, ५२मे अपन ‘पहुँच’क दावाक, ५३मे गोपनीय मुहरक, ५४मे संस्थागत संशोधनक, आ ५५मे समाचारक निर्णायक पदक। कथानक भाषिक अभिमानक व्यक्तिगत दोषसँ संस्थागत पाठ-परिवर्तनक सामाजिक परिणाम धरि क्रमानुगत विस्तार पबैत अछि।

एकाबनम अध्यायक दू बयान-पत्र आ बावनम अध्यायक पाँच संचिका बीच वस्तुगत अन्तर आ आलोचनात्मक निरन्तरता अछि। मित्र शशांकसँ स्नेह रखितो अपन स्वतंत्र स्मरण दैत अछि; पासपोर्ट वा होटलक कागज शशांकक निजी आत्मकथाकेँ स्वतंत्र जाँच दैत अछि। मुदा दोस्ती स्वयं सहमति नहि, जेकाँ एके आरक्षण संस्थागत एकता नहि। दुनू अध्याय पाठककेँ ज्ञानक क्षेत्र सीमित करबाक अभ्यास करबबैत अछि। एक सामाजिक सम्बन्ध अछि, दोसर वस्तुगत सहउपस्थिति; दूनूमे निर्णयाधिकारी बनबाक कारण अलग प्रमाणसँ निर्धारित होयत।

दू अध्यायक अन्तमे चाहक दोकान आ कापीक दृश्य लौटैत अछि। मृणालक उपस्थिति आ प्रश्न नायकक आत्मबोधकेँ धीरज दैत अछि, मुदा जाँच-पत्रक सत्य बदलैत नहि। एहि पुनरावृत्तिमे भारतीय काव्यशास्त्रक ध्वनि-तत्त्व लक्षित कएल जा सकैत अछि: एके चाह पूर्व विश्वासक साधारण प्रतीक रहितो एखन असहज सत्य कहबाक बाद बचल मानवीय निकटताक चिन्ह बनैत अछि। तथापि दोसर बेर एहने संरचनाक वापसी कथाक रीति पूर्वानुमेय सेहो बनबैत अछि। दृश्यनिष्ठ करुणा आ अन्तिम सूत्रात्मक शिक्षाक अनुपात आगाँक अध्यायसभ लेल साहित्यिक चुनौती रहैत अछि।

बावनम आ तेपनम अध्यायमे ‘प्रवेश’ शब्दक अर्थ बदलैत अछि। मकाऊक अतिथि-पास शशांककेँ विशेष जीवन-जगतमे प्रवेश देनिहार प्रतीत होइत छल; तेपनममे करारक ‘गोपनीय’ शीर्षक विशेषाधिकारक एक नव रूप देखबैत अछि। मुदा अतिथि-पाससँ सर्वर-नियन्त्रण नहि, आ ‘privileged’ लिखलासँ हरेक व्यापारिक पृष्ठ विधिक संरक्षण पबैत नहि। दुनू प्रसंग अधिकार आ उपस्थिति, उपलब्धता आ स्वामित्व, पाठक दृष्टि आ निर्णायक शक्ति बीच अन्तर पर केन्द्रित अछि। शशांकक आत्ममुग्धता दोसरक तकनीकी वा विधिक शक्ति देखिकऽ ओकरा अपना ऊपर आरोपित करबाक प्रवृत्ति रूपेँ पकड़ल जाइत अछि।

तेपनम आ चौबनम अध्यायमे समान दस्तावेजी वस्तुक दू अलग राजनीतिक अर्थ बनैत अछि। तेपनममे राघव वास्तविक भुगतान-पक्षक नाम माँगैत छथि आ असामान्य राशि पर अतिरिक्त व्याख्या चाही। चौबनममे मूल कर-सूचना भुगतान-पक्ष आ अन्तिम पाबनिहारक असमानता खुलल रखैत अछि, मुदा प्रसारित प्रति प्रश्न छोट करैत अछि। एहि दू अध्यायक सेतु एक सावधानीपूर्ण प्रश्न अछि—नाम देखब पर्याप्त नहि, वास्तविक दायित्व जाँचू। निचला अधिकारीक सुरक्षित आरक्षण एहि प्रश्नकेँ अभिलेखमे बचबैत अछि, जखनकि ऊपरी संस्करणमे प्रश्न अनुदृश्य भऽ जाइत अछि। लेखक व्यक्ति-स्तरक नैतिक असावधानी आ संस्था-स्तरक पाठ-संक्षेपण बीच कलात्मक प्रतिध्वनि रचैत छथि, मुदा कारणात्मक सम्बन्ध घोषित नहि करैत।

चौबनम आ पचपनम अध्यायक पाठान्तर दोसर प्रकारक रूपान्तरण देखबैत अछि। एकमे सावधानी-पंक्ति आ संलग्नक प्रसार-प्रतिसँ अनुपस्थित होइत अछि; दोसरमे सावधानी हटाकऽ सार्वजनिक समाचारमे धन-नियन्त्रणक निष्कर्ष जोड़ल जाइत अछि। ‘अनुपस्थित’ आ ‘जोड़ल’—ई दू क्रिया समग्र उपन्यासक भाषा-नैतिकताक दोसर चरण अछि। जे अनुवादक पहिने ग्राहकक संतोष लेल मूल जुआ-सन्दर्भ नरम करैत छल, ओ आब अपन विरुद्ध समाचारक तिक्त निश्चितता देखैत अछि। उपन्यास ई विरोधकेँ प्रतिशोधक सरल गाथा नहि बनबैत; नायकक आत्मग्लानि आ समाचारक स्रोत-साक्ष्यकेँ स्वतंत्र रखैत अछि।

नव्य न्यायीय विवेचनमे ई पाँच अध्याय चारि अलग प्रकारक हेत्वाभासक जोखिम देखबैत अछि: मित्रक उपस्थिति सँ सहमति, यात्रा-सुविधा सँ कम्पनीक स्वामित्व, विधिक शीर्षक सँ विशेषाधिकार, आ साझा शब्द-शैली सँ लेखकत्व। एहि सभमे 'समान' वा 'निकट' देखल गेल चिह्न निर्णायक व्याप्ति नहि रखैत। अर्थापत्तिक अधिक सूक्ष्म स्थिति चौबनम आ पचपनममे अछि: दू संस्करणक अन्तर समझबाक लेल किछु सम्पादन मानल जा सकैत अछि; असामान्य पदक दू ठाम पहुँचबाक लेल साझा सूचना-स्रोत सम्भव अछि। मुदा कोन व्यक्ति, कोन उद्देश्य आ कोन चरण—ई सब पर बहुत सम्भावना खुलल अछि। तर्कक अनुशासन आगाँ बढ़ैत अछि, किन्तु निष्कर्षक अतिरेक रोकेल रहैत अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिसँ पढ़ला पर पाँच स्थल एक समयरेखामे अछि: नोएडाक व्यावसायिक बैठक, मकाऊक होटल आ कार्यस्थल, दिल्लीक जाँचक कक्ष, निचला-ऊपरी आयुक्तालयक भिन्न अभिलेखागार आ समाचार-संस्थाक सार्वजनिक मंच। एहि स्थलसभमे सूचना समयानुसार चलैत, बदलैत आ नव अर्थ ग्रहण करैत अछि; किन्तु भौगोलिक सहसम्बन्ध अपन आप कारणक शृंखला नहि। निचला अधिकारीक आरक्षण-पत्र, मृणालक स्वतंत्र बयान आ राघवक मूल शब्द स्पष्ट रखबाक आग्रह—ई तीनू भिन्न संस्था/व्यक्तिक 'छोट प्रतिरोध' अछि। लेखक एहन प्रतिरोधकेँ नायकक अकेल नैतिक विजय रूपेँ प्रस्तुत नहि करैत छथि।

पाश्चात्य कथाशास्त्रक दृष्टिसँ नायकक वर्तमान आत्मस्वीकृति लगातार पूर्वघटनाक नवल अर्थ रचैत अछि। अध्याय ५२मे जुलियानाक सन्देशक 'बड़का' शब्द, ५३मे राघवक सम्भावित भोजन-मेज कथन, ५४मे संशोधित संस्करणक समय-मुद्रा, ५५मे चार कार्य-संचिकामे घुमल मसविदा—सभ जगह अतीत फेर पढ़ल जाइत अछि। ई कथाक गतिमान प्रत्यावर्तन अछि: पूर्वकथित वस्तु नव प्रमाणमे बदलि सकैत अछि, मुदा नव प्रमाणक सीमा पहिने दर्ज करबाक चाही। एतेक जटिल कथामे लेखकक काल-संगति उल्लेखनीय उपलब्धि अछि। ओकर सीमा ई जे वार्तालापमे आदित्यक प्रमाण-परीक्षा कखनो अत्यधिक सर्वज्ञ,

अविराम आ निर्विरोध बुझाइत अछि; ई अति-सुव्यवस्था वास्तविक जाँचक दुविधाकेँ तनिक नियोजित पाठ बनबैत अछि।

समेकित मूल्याङ्कनमे पाँच अध्यायक सर्वश्रेष्ठ कलात्मक दृश्य तीन अछि: मृणालक मौन दुख आ ओकर बादक चाह; मकाऊक रोशनीक भीतर जुगनूक इजोतक स्मरण; आ मुहरबन्द मूलक चार-स्तम्भीय पाठान्तर। पहिल दृश्य सम्बन्धक नैतिक सीमा देइत अछि, दोसर वर्गीय-भाषिक अभिलाषाक बिम्ब, तेसर सार्वजनिक कथनक सत्ता-विज्ञान। एहि दृश्यक आधारपर उपन्यासक विचार केवल घोषणात्मक नहि रहैत। संगहि कापीक सूत्र, बारम्बार अन्तिम नैतिक समीकरण आ जाँचक प्रश्नक पूर्वानुमेय पुनरावृत्ति साहित्यिक छायाक कुछ सूक्ष्मता घटबैत अछि। आगामी अध्यायसभक समालोचनामे एहि सामर्थ्य आ सीमा दुनूकेँ नजरिमे राखब आवश्यक होयत।

अध्याय ५५क अन्तिम सूचना न्यायालयीय सुनवाईक अछि; तेँ ५१–५५क अन्तिम निर्णय एखन न्यायालयक निष्कर्ष नहि, कागजक सही पठनक अभ्यास अछि। शशांकक क्रमिक परिवर्तनक सार ई जे ओ अपना लेल अधिकाधिक अधिकार चाहनिहार अनुवादकसँ अपन कथनक वास्तविक अधिकार सीमित करयवाला साक्षी बनैत अछि। मुदा ओकर भाषिक नरमीक पुरान नैतिक दोष मिटैत नहि, आ समाचारक असिद्ध आरोप सेहो स्वतः प्रमाणित नहि होइत। एहि द्वैध निष्कर्षक कारण उपन्यासक ज्ञानमीमांसात्मक जटिलता बचल रहैत अछि।

## अध्याय ५६ — मकाऊक दर्पण ४ : सीमित न्यायालयीय प्रतिपरीक्षा आ प्रायश्चितक प्रमाण-मर्यादा

छप्पनम अध्याय मुहरबन्द समाचार-संक्षेपकेँ अदालतक सीमित सुनवाईमे लऽ जाइत अछि। बाहिर ‘केंद्रीय कड़ी’ आ ‘कानूनी ढाल’ जेकाँ पदसभ नायकक पहिचान पर अधिकार जमौने अछि; भीतर न्यायाधीशक पहिल निर्देश सामग्रीक प्रामाणिकता, रूपान्तरक श्रृंखला आ निष्कर्षक सीमा धरि सुनवाई सीमित रखैत अछि। ई न्यायालयीय अनुशासन कथा-रूपक पुनर्संयोजन अछि। सार्वजनिक प्रसारणमे जे वस्तु तत्क्षण सम्पूर्ण अपराधक निष्कर्ष बनि गेल छल, ओ एतय प्रश्नवाचक दस्तावेज बनैत अछि। कथाकार न्यायालयकेँ सर्वज्ञ सत्यक स्वचालित मशीन नहि, उचित प्रश्नक क्षेत्र सीमित करनिहार संस्था बनबैत छथि।

प्रतिपरीक्षक पहिल मसविदामे ‘भाषिक सेतु’ सम्बन्धी वर्णन लऽ शशांकक पहिचान पूछैत अछि। शशांक ली वेनचाओ आ राघव भसीनकेँ चिह्नब, किछु बैठकमे भाषा-सहायता देब आ दू पक्ष बीच अनुवाद करब स्वीकार करैत अछि। तथापि मूल मसविदामे ओकर नाम नहि; प्रसंग मिलेबाक आधार पर निश्चित पहचान कहब ओकरा उचित नहि लगैत। ई सावधानी महत्त्वपूर्ण अछि: वर्णनक सामान्य सादृश्य आ व्यक्ति-विशेषक अभिलेखीय पहिचान भिन्न प्रमाण-विषय अछि। ‘सेतु’ व्यवहारक सीमित रूपक हो सकैत अछि; एकरा व्यापारिक स्वामित्व, भुगतान-नियन्त्रण वा आपराधिक उद्देश्यक संग एकार्थक कएल गेल तँ अर्थ-सङ्क्रमण होइत अछि। शीर्षकक रूपक न्यायालयक ठोस प्रश्नक साम्हिन अपन सीमा पहिचानैत अछि।

राघवक विधिक विशेषाधिकारक दावा शशांकक अनुभवविषयक साक्ष्यसँ भिन्न राखल गेल अछि। शशांक अपन उपस्थिति आ भाषिक कार्यक प्रकार बतबैत अछि, मुदा न्यायाधीश ओकरा विशेषाधिकारक अन्तिम विधिक निर्णय देबाक सँ रोकैत छथि। एही दृश्यक मूल्य ई जे नायक अब ज्ञान आ अधिकारक अन्तर भीतरसँ बुझैत अछि। चीनी शब्द बुझि सकब, कानूनी प्रक्रिया पर निर्णय देबाक पद नहि दैत। कतेक अवसर पर लेखक न्यायालयक

औपचारिक मर्यादाकेँ अत्यन्त सुव्यवस्थित संवादमे रखैत छथि, तथापि संवादक वास्तविक परिणाम स्पष्ट अछि: पात्रक पेशागत विशेषज्ञता सभ प्रश्नक सार्वभौम उत्तर नहि।

‘settlement’, ‘service reimbursement’ आ ‘wallet movement’क मूल-पाठ सँ नरम स्थानीय संक्षेप बनबाक प्रश्न पर शशांक अपन किछु अनुवाद त्रुटि स्वीकार करैत अछि। ओ कहैत अछि जे ग्राहक प्रश्न कम पूछथि आ ओकर उपयोगिता बढ़य, ताहि लेल किछु स्पष्ट शब्दक धार घटाओल गेल छल। ई स्वीकार केवल अज्ञानजन्य गलती नहि; प्रसंगविशेषमे जानि-बुझि कएल अर्थ-नरमीक नैतिक जिम्मेदारी अछि। मुदा जतेक अभिलेखमे ओकर हाथ छल, ताहिसँ बढ़ि सम्पूर्ण वित्तीय संरचनाक लेखकत्व वा नियन्त्रण स्वीकार करबो ततेक गलत होयत। एतय प्रायश्चित आत्मरक्षाक सूक्ष्म बहाना नहि, बल्कि सच आ असच दुनू सीमित करबाक कठिन अभ्यास अछि।

प्रतिपरीक्षक एहि सीमित स्वीकारकेँ सुविधाजनक पश्चात्ताप कहि चुनौती दैत अछि। शशांकक उत्तरक केन्द्रीय तर्क ई जे अपन वास्तविक त्रुटि नकारब मिथ्या अछि, मुदा प्रमाण बिना सम्पूर्ण कथित धन-जाल अपन माथ लेब सेहो मिथ्या। नैतिक स्वीकारोक्ति ‘अधिक दोष’ स्वीकारबाक अधिकार नहि दैत। भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ लज्जा आ करुणाक भाव एतय कथित प्रायश्चितक उच्च स्वरमे नहि, घामसँ भीजल हथेली, पानिक घूँट आ अदालतक मौनमे व्यक्त होइत अछि। पाठक नायकक आत्मगौरव टूटब देखैत अछि; पर लेखकीय संवेदना ओकरा निर्दोषताक कृत्रिम पदक नहि पहिरबैत।

मसविदा-श्रृंखलाक तीन अवस्थामे लाभकारी स्वामित्वक सावधानी पंक्ति पहिने विस्तृत, फेर संक्षिप्त, आ सार्वजनिक समाचारमे अनुपस्थित अछि; ओकर स्थान पर गुप्त खाताक भारतीय कड़ी सम्बन्धी शीर्षक अबैत अछि। प्रतिपरीक्षक स्रोत पूछैत अछि; शशांक वास्तविक व्यक्ति वा उद्देश्य नहि जनैत। अर्थापत्तिक नाम लऽ ओकरा अनुमान करबाक लेल उकसाओल जाइत अछि। ओ न्यूनतम सम्भव संशोधन मानैत अछि, मुदा असावधानी, संक्षेप, अपूर्ण प्रति आ जानि-बुझिकऽ चयनक विकल्पसभ खुलल रहबाक बात कहैत

अछि। ई दार्शनिक पद्धति छल-पूर्ण तर्कक विरोधक संग कथात्मक तनाव सेहो पैदा करैत अछि: निश्चित खलनायकक प्रतिक्षा एखन रोकेल गेल अछि।

राघवक एक विशिष्ट टिप्पणी—मूल शब्द नुका कऽ अनुवाद नहि करब—एहि दृश्य मे उपस्थित अछि। ओहि पंक्तिसँ राघवक समस्त जीवन वा सम्पूर्ण करार-श्रृंखलाक निर्दोषता सिद्ध नहि; विशेषतः ओहि प्रसंगमे देल सावधानीक साक्ष्य भेटैत अछि। ई पद्धति अध्याय ५३क अपूर्ण इ-पत्रक पुनर्पठन अछि, मुदा आब अधिक सार्वजनिक मंच पर। न्यायालयक प्रश्न आ साक्षीक उत्तरक समान कसौटी आलोचनात्मक दृष्टिसँ उल्लेखनीय अछि: मित्र, वकील, अभियुक्त-जेकाँ चित्रित व्यक्ति, जाँचकर्ता—ककरो चरित्रक समग्र निर्णय एकटा सीमित वाक्यसँ नहि बनाओल जाए।

खाताक संदिग्ध प्रकृति, हवाला अथवा अंकीय मुद्राक शब्द सुनब आ वास्तविक संचालन देखब बीच अन्तर फेर साम्हिन अबैत अछि। तीन अलग वित्तीय प्रविष्टि एके संचिकामे अछि, मुदा वास्तविक स्रोत, प्राप्तकर्ता, निर्देश आ नियन्त्रण-सम्बन्धक कड़ी बिना एके धन-श्रृंखला बनाओल नहि जा सकैत। एतय कथाक आर्थिक संसार सम्भावित अपराधक रोमाञ्च मात्र नहि, प्रमाणक अपूर्ण नक्शा अछि। तथापि विस्तृत प्रतिपरीक्षामे एकहि नकारात्मक निष्कर्ष अनेक रूपमे आवर्तन पाठकक अनुभूतिक नवलता घटबैत अछि; दृश्य अधिक परतदार रहितैक जँ अन्य साक्षीक विरोधाभासी व्यवहारक विस्तृत वर्णन भेटित।

सुनवाईक अन्तमे न्यायालय मूल मसविदा, संचार, उपलब्ध उपकरण आ भुगतानक अभिलेख सुरक्षित रखबाक निर्देश दैत अछि; कोनो व्यापक अपराध-निर्णय नहि। एहि आदेशमे कथानकक अगिला भौतिक मोड़ तैयार अछि: शशांकक पुरान चलदूरभाष आ संगणकक अंकीय स्मरण देखल जाएत। सार्वजनिक अपमानक बीच ओ जे आत्ममुग्ध शब्द पहिने लिखने छल, से आब कागजक रूपमे ओकरा सामने लौटबाक अछि। न्यायालय सँ बाहिर मृणालक प्रश्नक उत्तरमे शशांक प्रायश्चितक ‘तेसर बाट’ बतबैत अछि—जतेक अछि, ओतबे। ई वाक्य चरित्रक परिपक्वता अछि; मुदा रात्रिक कापीमे ओकर सूत्रात्मक पुनरावृत्ति

कथात्मक निष्कर्षकेँ अत्यधिक स्पष्ट करैत अछि। फलतः अध्याय विचारगत रूपेँ सुसंगत, किन्तु शिल्पगत रूपेँ कुछ शिक्षात्मक अछि।

## अध्याय ५७ — मकाऊक दर्पण ५ : पुरान उपकरणक अंकीय स्मृति आ आत्मप्रचारक लेखकत्व

सत्तावनम अध्याय न्यायालयक सीमित आदेशक पालनमे शशांकक आवास पर आदित्यक दलक आगमनसँ आरम्भ होइत अछि। पुरान चलदूरभाष आ लैपटॉपक जब्ती सन्देहक नाटक नहि, सूची, अवधि, सामग्रीक दायरा, हस्ताक्षर आ प्रति देबाक प्रक्रियासँ बँधल घटना अछि। शशांक एहि बेर शीर्षक देखिके कागज पर हस्ताक्षर नहि करैत; कोन उपकरण, कोन सामग्री आ कोन सीमा निर्धारित अछि से पढ़ैत अछि। ई आरम्भिक व्यवहार पिछला पचास अध्यायसँ विकसित पात्रक ठोस परिवर्तन अछि। निजता-संबन्धी अप्रासंगिक सामग्रीक प्रश्न पर सम्भावित विवाद न्यायालय तक जा सकबाक उत्तर सेहो जाँच-अधिकारक सीमा लिखैत अछि।

फाटल आवरणवाला पुरान चलदूरभाष वस्तु-प्रतीकक रूपमे सफल अछि। शशांकक स्मरण अपन अनुकूल क्रम बनाकऽ राखि सकैत अछि; यन्त्रमे सुरक्षित सन्देश तत्कालिक भाषाक निशान बचाकऽ राखैत अछि। मृणाल ‘हम आब केवल अनुवादक नहि रही’ सन एक सम्भावित पुरान सन्देशक उल्लेख करैत अछि, मुदा ओहि सन्देशक प्रत्यक्ष डिजिटल प्रति एखन भेटल नहि। लेखक एहि नाटकीय पंक्तिक सत्यापन टारि देबैत छथि—एहन स्थगन पाठकक उत्सुकता बढ़बैत अछि आ कथन-अनुशासनक कसम नहि तोड़ैत। मनोवैज्ञानिक अर्थमे पुरान फोन शशांकक स्वयं रचित महत्त्वक अभिलेख अछि।

जाँचक पहिलो स्पष्ट भेद उपकरणक स्वामित्व आ हरेक सन्देशक लेखकत्व बीच अछि। शशांक फोनक मालिक आ मुख्य उपयोगकर्ता छल, मुदा अज्ञात क्षणमे प्रत्येक अंश स्वयं लिखने छल, ई केवल मालिक होयबासँ सिद्ध नहि। जब्त सामग्रीक मूल प्रति, अवधि आ सन्देशक संदर्भ आवश्यक अछि। एहि विवेकसँ तकनीकी साक्ष्यक कठिन प्रश्न सरल भाषा पबैत अछि। उपन्यासक विशेष उपलब्धि ई जे डिजिटल उपकरण ‘सभ सत्य कहि देत’ सन चमत्कारी प्रतीक नहि बनैत; ओ विभिन्न स्रोतक आलोचनात्मक मिलानक माध्यम रहैत अछि।

पहिल दू पुनर्प्राप्त सन्देशमे शशांक अपन भाषिक भूमिकाकेँ चीनी पक्ष आ भारतीय कागजक अनिवार्य केन्द्र जेकाँ प्रस्तुत करैत अछि। ओ स्वयं ई अतिशयोक्ति स्वीकार करैत अछि। एतय नायकक आत्मप्रचार निराधार कल्पना नहि, किछु वास्तविक भाषिक उपयोगिताक बढ़ाओल सार्वजनिकीकरण अछि। प्रारम्भिक अंश सही हो सकैत अछि, पर सम्पूर्ण संस्थागत कार्य ओकरा बिना रुकि जाइत छल—ई दाबी साक्ष्यविहीन। लेखक महत्त्वाकांक्षा केँ नैतिक प्रश्न बनबैत छथि, मुदा एहि बड़बोलापनकेँ वास्तविक निर्णयाधिकारक प्रमाण नहि मानैत। शशांकक डींग ओकर डींग हाँकबाक आस्था देखबैत अछि, डींगमे कहल सभ अधिकार सत्य नहि।

राघव भुगतानक बात देखत, शशांक भाषा आ तकनीकी लोक अपन भाग—एहन पुरान सन्देश तत्कालीन शशांकक भूमिका-विभाजनक धारणा देखबैत अछि। मुदा ‘भुगतान देखब’क अर्थ वित्तीय खाता चलायब वा धनक लाभकारी स्वामी होयब नहि। ककरो विषय पर कागज देखब, प्रश्न पूछब अथवा कानूनी टिप्पणी करब कार्य-अधिकारक अलग स्तर अछि। आदित्य एहि सन्देशकेँ साक्षीक तत्काल धारणाक अभिलेख मानैत अछि। एतय कथाकार दस्तावेजक विषय-सामग्री आ ओकर लेखनक मनोदशा दुनूकेँ पढ़ैत छथि—आधुनिक आख्यानशास्त्रक दृष्टिसँ ई स्व-आख्यानक विश्वसनीयतापर सूक्ष्म टिप्पणी अछि।

‘भारतीय लाइन हमरा परिचय सँ चलत’ सन अधूरा अंश अध्यायक सर्वाधिक असहज वस्तु अछि। शशांक सम्भावना व्यक्त करैत अछि जे एकर अर्थ ग्राहक-पक्षक भाषिक सम्पर्क होय, मुदा सम्पूर्ण अगिला-पछिला संवाद उपलब्ध नहि। जाँचक अधूरा पुनर्प्राप्त अंशकेँ भुगतान-द्वारक गुप्त व्यवस्था मानि लेब मनपसन्द अर्थ-स्थापन होयत। एहि ठाम लेखक अर्थक धुँधलापनक ईमानदार आलोचना करैत छथि, मुदा कथात्मक दृष्टिसँ रोचक ई जे नायक अपने पहिने एहन अस्पष्ट शब्द लिखैत छल जे आब ओकरा स्वयं डराबैत अछि। भाषा जखन साक्ष्य बनैत अछि तखन लेखकक पुरान आलस्य सेहो जोखिम बनैत अछि।

यात्रा-सूची, अतिशयोक्तिपूर्ण सन्देश आ सेवा-शुल्कक तेसर समूह एक दार्शनिक परीक्षा रचैत अछि। तीनू उपलब्ध होयबाक न्यूनतम एक संयुक्त व्याख्या अछि: शशांक विदेश गेल,

भाषिक सेवा देलक, पारिश्रमिक पेलक आ महत्त्व बढ़ा कऽ कहलक। एहि तथ्यासँ सक्रिय वित्तीय प्रबन्धकक निष्कर्ष अनिवार्य नहि। अर्थापत्तिक सही प्रयोग एहि विकल्पकेँ बचबैत अछि, तथापि जँ बादक अधिकार-पत्र वा विशिष्ट निर्देश भेटत, तखन निष्कर्ष फेर जाँचल जाएत। लेखक प्रमाणक आजुक सीमा राखैत भविष्यक बदलैत व्याख्याक रास्ता खुलल रखैत छथि।

मृणालक स्वतंत्र उपस्थितिसँ नायकक आत्मनाटक सामाजिक आयाम पबैत अछि। मित्र कहैत अछि जे शशांक पहिले भाषाक काम कहैत, फेर पैघ लोक ओकरा बिना नहि चलैत कहैत, संकटमे पुनः ‘हम केवल अनुवादक’ पर लौटैत छल। एहि असमान कथनक्रममे लोभ आ भय दूनू अवसरानुकूल भाषा बदलैत अछि। मृणाल अपन मित्रताकेँ प्रमाणक विकल्प नहि मानैत; वित्तीय संचालन प्रत्यक्ष नहि देखल कहैत अछि। ओकर समान कसौटी शशांकक पक्षरक्षण नहि, अलग अनुभवक विश्वसनीय व्याख्या अछि।

लैपटॉपक मसविदा-सूचीमे ‘भारतीय पक्ष सम्पर्क’क प्रस्तावित सेवा नायकक आकांक्षाकेँ दस्तावेजी आकार दैत अछि। ओ केवल शब्दक अनुवाद करबाक बदला बैठक, स्थानीय शब्दावली, यात्रा-सहायता आ परिचय-काज धरि अपना केँ विस्तार देबाक सपना देखैत छल। ई आकांक्षा वास्तविक अछि, मुदा विशिष्ट अवैध धन-प्रबन्धनक लक्ष्यक साक्ष्य नहि। वैकल्पिक सम्बन्धकेँ खुलल राखि लेखक नायकक पेशागत आकांक्षा आ सम्भावित अपराधक बीच अनिवार्य सम्बन्धक अभाव चिन्हैत छथि। ‘R.B.’ सम्बन्धी अधूरा नोटमे विधिक कागज आ संचालन-चर्चा अलग रखबाक उल्लेख सेहो प्रसंग बिना प्रमाण-नाश अथवा विशेषाधिकारक दुरुपयोग सिद्ध नहि करैत।

अध्यायक रसात्मक सूत्र उपकरणक कठोर स्मृति आ मानवीय लज्जाक तनाव अछि। नायक अपन लिखल शब्द पढ़ि कण्ठ सुखबैत अछि, मृणाल मौन रहैत अछि, आदित्य सीमित टिप्पणी दर्ज करैत अछि। लेखक एहि नियन्त्रित दृश्यसभमे लज्जाक सूक्ष्म अनुभाव पबैत छथि। मुदा प्रत्येक सत्रक बाद कापीमे समीकरणलिपिक पुनरावृत्ति एखन पूर्वानुमेय भऽ गेल अछि; कथा पाठककेँ स्वयं अर्थ जोड़बाक अपेक्षाकृत कम अवकाश दैत अछि।

तइयो अध्यायक अन्तिम प्रश्न—भाषिक आकांक्षाक वास्तविक अधिकारमे बदलल सीमा —अगिला वकील-सम्मुखी परीक्षणक ठोस पृष्ठभूमि तैयार करैत अछि।

## अध्याय ५८ — वकील जे चीनी नहि बुझैत : मूल-पाठपर निर्भरता, भाषिक सत्ता आ उधारक भरोसा

अठावनम अध्यायक शीर्षक स्वयं उपन्यासक मूल व्यंग्य अछि: राघव भसीन विधिक करारक विशेषज्ञ छथि, मुदा किछु निर्णायक कागजक चीनी मूल नहि बुझैत छथि। तीन व्यक्ति—शशांक, राघव आ आदित्य—मेजक तीन कात बैसल छथि; कागजक दू मोट संचिकामे द्विभाषिक सेवा-करार आ भारतीय विधिक समीक्षा अछि। एतय कथात्मक शक्ति अदृश्य धनक स्रोत नहि, शब्दक अर्थक असमान पहुँच अछि। वकील अंग्रेजी विधिक पाठ पढ़ि निर्णय देबाक स्थिति मे छथि, शशांक चीनी मूल बुझैत अछि; पारस्परिक निर्भरता दूनू पक्षक जिम्मेदारी बढ़बैत अछि।

करारक दू स्तम्भ आ संशोधन-चिह्न मात्र प्रकाशकीय विन्यास नहि। आदित्य पूछैत अछि जे राघव कोन पाठपर टिप्पणी केने छलाह; उत्तर अंग्रेजी। चीनी मूल स्वतंत्र सत्यापित नहि कएल गेल छल, आ किछु स्थान पर मूलसँ मिलान आवश्यक लिखल गेल छल। शशांक किछु खण्ड मिलौने छल, सभ नहि; समयक कमी आ अपन भाषिक निर्णयपर अत्यधिक भरोसा कारण बतबैत अछि। एहि स्वीकारमे अनुवादकक व्यावसायिक शक्ति आ नैतिक विफलता एक संग अछि। ‘सभकेँ जल्दी छल’ सन सम्भावित परिस्थिति तथ्य होय तइयो जिम्मेदारीक सम्पूर्ण विकल्प नहि, कारण मूलभाषा न बुझनिहार व्यक्तिक विश्वास अनुवादक हाथमे देल गेल छल।

चीनी मूलमे भुगतान-सम्बन्धी समन्वय आ सेवा-पक्षक दायित्वक भिन्नता छल, मुदा अंग्रेजी मसविदामे शशांकक अनुवाद एकर व्यापक ‘स्थानीय सेवा-सहायता’क भीतर अर्थ नरम कऽ देने छल। राघव एकरा ‘सरल’ नहि, ‘नरम’ कहि प्रश्न करैत छथि। शशांक स्वीकार करैत अछि जे ओ ग्राहकक अनावश्यक प्रश्नक आशंका सँ शब्द बदलने छल, राघवकेँ ई परिवर्तन स्पष्ट नहि केने छल। एहि दृश्यक नैतिक तीव्रता बहुत बेसी अछि, किएक तँ भ्रम कथाक बाहरक असिद्ध आरोप नहि, मूल करारक विशिष्ट पाठान्तर अछि।

लेखक वास्तविक दोष दर्शबैत छथि, मुदा ओहि सँ शशांकक स्वामित्व वा धन-नियन्त्रणक स्वतः निष्कर्ष नहि निकालैत।

राघवक लिखल 'वास्तविक लाभकारी स्वामित्वक घोषणा प्रतीक्षारत' टिप्पणी आ ओकर नीचे हस्ताक्षर विशेष महत्त्वपूर्ण दृश्य अछि। सार्वजनिक पाठक केवल हस्ताक्षर, विदेशी विक्रेता आ भुगतानक नाम देखिके वकीलकेँ वित्तीय पक्ष मानि सकैत अछि; पूरा पंक्ति देखला पर हस्ताक्षर घोषणा माँगबाक आ ओकर अनुपलब्धता दर्ज करबाक अछि। एके हस्ताक्षरक अर्थ प्रसंगबद्ध अछि। ई दस्तावेजी औचित्य उपन्यासक अनुवाद-विवेचनक संग निरन्तर अछि: आंशिक दृश्य चरित्रनिर्णय नहि। कलात्मक दृष्टिसँ शशांक पहिने राघवक नामसँ डरल छल, आब कागजक असल कार्य पढ़बाक अभ्यास करैत अछि।

तीन अलग अभिलेख—करार-पक्ष, सेवा-बिल जारी करनिहार आ भुगतान पाबनिहार—भिन्न नाम दैत अछि। एहि बीच कोनो व्यापारिक व्यवस्था वा सम्बन्ध रहबाक व्याख्या सम्भव अछि; तथापि एजेंसी, उप-करार, एक स्वामी वा अलग-अलग सेवा-समझौतामे कुन सम्बन्ध अछि, से स्वतन्त्र जाँच माँगैत अछि। आदित्य एकरा अर्थापत्तिक न्यूनतम उपयोगक उदाहरण बनबैत अछि, मुदा जँ विकल्प अनेक अछि तँ गुप्त लाभकारी स्वामीक एके नाम कल्पनासँ नहि भरल जा सकैत। ई भाग नव्य न्यायक ज्ञानमीमांसा आ आधुनिक करार-अध्ययनक प्रश्नकेँ कृति-भीतरक सन्दर्भमे जोड़ैत अछि।

लैपटॉपक मसविदा-सूचीमे राघवक नामक कात 'कानूनी/करार' आ शशांकक नामक कात 'भाषा/स्थानीय समन्वय' अछि। 'स्थानीय समन्वय' शशांकक आरम्भिक आकांक्षाक प्रत्यक्ष साक्ष्य अछि; तथापि एक शब्दसँ भुगतान-नियन्त्रण या विक्रेता चयन सिद्ध नहि। राघव शशांककेँ चेतबैत छथि जे व्यापक नामक बादमे अनेक अर्थ होय। नायकक दुःख केवल ई नहि जे कियो ओकरा त्रुटिपूर्ण बुझैत अछि, बल्कि ओ स्वयं चाहैत छल जे अपन नाम अनेक जिम्मेदारीक कात चमकय। एहि भावनाकेँ कथाकार भाषाक गर्वक मनोवैज्ञानिक रूप दैत छथि।

मूल भाषा नहि बुझनिहारक निर्भरता आर्थिक अथवा राजनीतिक संसारमे एक प्रकारक सत्ता प्रदान करैत अछि। शशांक पहिने ओहि दृष्टिकेँ अपन व्यक्तिगत महत्त्व बुझैत छल, जखन लोक मूल कागज ओकरा दिस घुमबैत छल। मुदा मृणालक ‘उधारक भरोसा’क अवधारणा एहि सत्ता-भावकेँ उलट दैत अछि। दोसर व्यक्ति अर्थ बुझबाक भरोसा अनुवादक हाथमे दैत अछि; एहि सँ अनुवादक अर्थक स्वामी नहि बनैत, ओकर जिम्मेदार संरक्षक बनैत अछि। अध्यायक सर्वोत्तम नैतिक निष्कर्ष एही मानव-संवादमे अछि, न्यायिक सूत्रक यान्त्रिक पंक्तिमे नहि।

‘जानैत छलहुँ, मुदा मानैत नहि छलहुँ’ शशांकक आत्मस्वीकृति ओकरा पूर्ण अज्ञानक सुविधासँ बाहर निकालैत अछि। ओ पेशागत स्पष्टताक मूल्य बुझैत छल, मुदा प्रतिष्ठाक मोहमे ओहि मूल्यकेँ व्यवहारमे नहि रखलक। भारतीय रस-समीक्षामे एतय लज्जाक अनुभाव आत्मनियन्त्रणक आरम्भ संग संयुक्त अछि; पाश्चात्य चरित्र-दृष्टिसँ ई नायकक स्थायी नैतिक दोषक एक स्पष्ट नामकरण अछि। विडम्बना ई जे नायकक भाषिक योग्यता वास्तविक अछि, मुदा ओही योग्यता दोसराक अज्ञानक लाभ उठा कऽ त्रुटि करबाक अवसर दैत छल।

अध्यायक सीमा सेहो चिन्हबाक चाही। राघव आ आदित्य कई बेर एके प्रमाण-विवेकक भाषा बोलैत छथि, जाहिसँ पेशागत मतभेदक सम्भावना सम्पूर्ण नाटकीय विस्तार नहि पबैत। सेवा-करारक असल चीनी पदबंधक विश्लेषण संक्षिप्त अछि; पाठककेँ स्वतंत्र द्विभाषिक पाठान्तरक अधिक ठोस अंश भेटित तँ अनुवाद-दोषक शिल्पगत स्वरूप आरो प्रभावी होइत। तथापि उपलब्ध दृश्य गहींर अछि: प्रमाण-हीन हस्ताक्षर-आरोपक प्रतिरोध करितो नायकक वास्तविक अर्थ-नरमीक गलती पर कोनो पर्दा नहि।

अन्तमे राघवक दोषारोपण केवल प्रमाणित बिन्दु धरि, मृणालक निष्कर्ष भरोसाक अधिकार धरि, आ शशांकक कापीमे रिक्त लाभकारी स्वामित्वक खण्डक सीमा—तीनू एक पाठ बनैत अछि। पेशागत अनुवादकक मूल संकट ई नहि जे ओ दू भाषा जानैत अछि; संकट ई

जे ओकर निर्णयक उपर लोक भरोसा करैत छथि। एहि तरहें ‘अनुवादक’ उपन्यास भाषिक सत्ता कैं दायित्वक अधीन रखबाक जीवन-नीति रचैत अछि।

## अध्याय ५९ — मकाऊक दर्पण ७ : भुगतान-द्वारक अधूरा नक्शा आ मित्रताक स्वतंत्र गवाही

उनसठम अध्याय करारक नाम-सूची सँ धन-प्रवाहक सम्बन्ध-सूची दिस मुड़ैत अछि। आदित्यक मेज पर चारि छोट अभिलेख अछि—भुगतान-द्वारक सारांश, खाताक नाम, अपूर्ण प्रेषण-टिप्पणी आ पुरान सन्देशक प्रति। कक्षमे न वास्तविक प्रणाली चलाओल जाइत अछि न खाता खोलबाक क्रिया; कथाक प्रश्न कागजक बीच सम्बन्धक सीमा अछि। ई संयम उपन्यासक प्रमाण-धर्मिताक महत्त्वपूर्ण पक्ष अछि। आर्थिक रहस्यक तकनीकी आकर्षण पाठककेँ विस्तृत अपराध-विधि सुनाबयक स्थान पर लेखक व्यक्ति, सेवा आ लाभार्थीक भिन्न भूमिका पढ़बाक अनुशासन दैत छथि।

तीन भारतीय नामक साम्हिन सेवा, प्रचार आ ग्राहक-सहायता सन सामान्य शीर्षक अछि। शशांक दू नाम नहि चिन्हैत, तेसर सुनल-जेकाँ लगैत अछि, मुदा निश्चित नहि। एतयसँ खाताधारकक वास्तविक भूमिका अथवा मुखौटा-खाताक वर्गीकरण सिद्ध नहि होइत। भुगतान-द्वारक रिपोर्टमे अनेक तिथि आ सेवा-कोड अछि, मुदा शशांकक नाम सीधे नहि; एक सामान्य ‘भारतीय सम्पर्क’ टिप्पणी अछि। ओहि पदकेँ ओकरा पर आरोपित करबाक लेल समय, अन्य उपलब्ध सम्पर्क आ सन्देशक मिलान आवश्यक अछि। कथाकार नामहीनता केँ रिक्त मंच मानिके नायकक नाम नहि भरैत छथि; अभिलेखीय मौनकेँ स्वतंत्र आलोचनात्मक समस्या मानैत छथि।

मृणालकेँ लिखल पुरान सन्देश—अगिला दिन कागजक पैसा-वला भाग देखबाक आग्रह—मित्रताक कथा फेर आबैत अछि। शशांक मित्रकेँ विधिक सलाहकार वा आर्थिक विशेषज्ञ रूपेँ नहि, अपन पुरान जीवन चिन्हनिहार व्यक्ति रूपेँ संग चाहैत छल। वर्तमान जाँचमे एहि भावनात्मक उद्देश्यकेँ भुगतान-प्रणालीक साझा नियन्त्रणसँ पृथक राखल गेल अछि। ओहि बैठकमे मृणाल किछु नाम आ भुगतानक चर्चा सुनने छल, मुदा पूर्ण संरचना नहि; निजी सन्देशक आमन्त्रण आ आर्थिक निर्णयाधिकार बीच आवश्यक दूरी अछि। एतय मित्रता मूल सामाजिक सम्बन्ध रहैत अछि, मनमाना गुप्त नेटवर्क नहि।

मृणालक अलग बयान अध्याय ५१क नैतिक दृढ़ताकेँ फेर प्रमाणित करैत अछि। ओ शशांकक निमन्त्रण पर गेल रहबाक बात मानैत अछि, भुगतानक चर्चा सुनने छल; मुदा हवाला वा बिटकॉइनक निश्चित शब्द ओहि समय सुनने छल कि पछिला चर्चासँ स्मरणमे आबि गेल, से सावधानीसँ अलग करैत अछि। ई कालगत भेद अनिवार्य अछि। शशांकक पक्षमे असत्य कहब मृणालक काज नहि, जेकाँ ओकर विरुद्ध अनुमानो नहि। लेखक मित्रक आत्मीय भाषामे साक्षीक तथ्यपरक मितव्ययिता स्थापित करैत छथि।

शशांकक पुरान उत्साह पर मृणालक प्रश्न—सभ पक्षकेँ ओकर व्यक्ति चाही छल कि केवल ओकर अनुवाद?—अध्यायक मौलिक मनोवैज्ञानिक केन्द्र अछि। शशांक ई भेद सुनब नहि चाहैत छल, कारण ओकर पेशागत उपयोगिता ओकरा निजी शक्ति जेकाँ अनुभव होइत छल। एहि मूल अन्तरमे प्रवासी श्रम, भाषिक मध्यस्थताक अनिश्चित बाजार आ सामाजिक प्रतिष्ठाक प्रश्न अछि। निजी इच्छा गुप्त धन-जालक स्वतः लेखकत्व नहि, मुदा ओ इच्छा ओकरा अस्पष्ट बैसारमे अधिक देर रहबाक निर्णयक प्रेरणा बुझबबैत अछि। नैतिक दोषक विश्लेषण प्रमाण-सिद्ध अपराधक दाबी सँ अलग राखल गेल अछि।

भुगतान-द्वारक अनेक पक्ष, प्रतिपूर्ति आ सेवा-शुल्कक श्रेणी वास्तविक लाभकारी स्वामित्वक प्रश्न उठबैत अछि, मुदा पूरा आर्थिक सम्बन्ध न बतबैत। जँ स्वतंत्र अभिलेख एके निर्देशकारी व्यक्ति वा समान लाभार्थी देखबैत, तखन निष्कर्ष बदलि सकैत छल। एखन उपलब्ध अपूर्णता जाँचक प्रश्न अछि। क्रिप्टो-मूल्यांकनक टिप्पणीमे शशांकक नाम वा निर्देश नहि; एहि उल्लेखसँ ओकर अंकीय सम्पत्तिक नियन्त्रण सिद्ध नहि। एतय नव्य न्यायीय दृष्टिसँ 'सम्भव' आ 'आवश्यक'क अंतर निर्णायक अछि, आ वक्ताक पछिला स्मरणकेँ वर्तमान उपलब्ध सन्देशक ओझामे जाँचल जाइत अछि।

मृणालक मौन सहमति नहि; एको मित्रक उपस्थितिसँ साझा आपराधिक उद्देश्य सिद्ध नहि। लेखक ‘चुप्पी = सहमति’क लोकप्रिय सामाजिक अनुमानक आलोचना करैत छथि। जाँचकर्ता ई भेद बयानमे रखैत छथि, मुदा शशांक जे व्यक्तिगत उत्तरदायित्व लेइत अछि—मित्रकेँ अपन प्रसिद्धि देखेबाक लेल लऽ गेल—से अलग नैतिक अभिलेख अछि। एही क्षण

मृणालक दुःख कानूनी तथ्यक बगलमे मानवीय अर्थ बनैत अछि: ओकरा मित्र चाही छल, नायकक बढ़ैत प्रतिष्ठाक निःशुल्क साक्षी नहि। एहि असमानता कैं लेखक छोट संवादक मौनमे प्रभावी बनबैत छथि।

अन्तमे चाहक दोकानमे भुगतान कियो करत, एहि बात पर मित्रसभक हल्का विनोद अध्यायक रोचक कलात्मक विराम अछि। जटिल भुगतान-द्वारक रिपोर्टक बाद मित्रक चाह-पैसाक लाभार्थी स्पष्ट होयबाक हँसी तर्कक बोझ हल्का करैत अछि। एहि हास्यमे पूर्ण निर्दोषताक निर्णय नहि; जीवनक साधारण अभिज्ञानक पुनर्प्राप्ति अछि। भारतीय रस-विवेचनमे ई तनाव-पछाति हास्यक अल्प उद्भावना करुणक दीर्घ स्वरक संग सन्तुलन रचैत अछि।

तथापि धन-अभिलेखक प्रश्नक पुनरावृत्ति आ अन्तमे सूत्रात्मक कापी-पञ्जी एहि अध्यायकैं कखनो शोध-पाठ जेकाँ बनबैत अछि। व्यापारिक पक्षक स्वतंत्र पात्रता सीमित, सरकारी रेकर्डक चयन नायकक नैतिक प्रशिक्षणक सुविधानुसार व्यवस्थित लगि सकैत अछि। लेखकक उपलब्धि एहि असमानता बावजूद अछि: सन्दिग्ध आर्थिक परिवेशकैं रोचक रखितो मृणालक स्वतंत्र इच्छा आ शशांकक निजी लोभकैं पैसाक प्रत्यक्ष नियन्त्रणक साथ असावधानीसँ नहि मिलबैत। अगिला मकाऊ यात्राक स्मरण धन-अभिलेखक बीच फेर व्यक्तिगत आकांक्षाक छाया उपस्थित करैत अछि।

## अध्याय ६० — मकाऊक दर्पण ८ : दोसर यात्रा, अस्थायी प्रवेश आ भीतरक लोक बनबाक लोभ

साठिम अध्याय शशांकक दोसर मकाऊ यात्राक अभिलेख जाँचैत अछि। पहिल यात्रा भाषाक कौशल देखेबाक उपलब्धि लगैत छल; दोसर यात्रा नायकक स्मरणमे ‘भीतरक’ संसारक पायदान बनि गेल। आदित्य पासपोर्टक तिथि, यात्रा-आरक्षण, होटल-लेखा, अतिथि-पासक प्रतिरूप आ तीन सन्देश एक संग रखैत अछि। एहि दृश्यसँ कथाकार जाँचक समय आ स्मरणक समयक दू धारा बनबैत छथि। शशांक यात्राक तथ्य स्वीकार करैत अछि, मुदा निमन्त्रण देनिहार ली वेनचाओ, व्यवस्था करनिहार समन्वयक आ अपन निजी अभिलाषा भिन्न स्रोतसँ पहिचानैत अछि।

यात्राक घोषित उद्देश्य भारतीय पक्ष लेल भाषिक सामग्री, करारक वाक्य आ भुगतान-सम्बन्धी प्रस्तुति स्पष्ट करब छल। निजी प्रेरणा ‘विशेष पहुँच’ छल। ली वेनचाओक सन्देश अधिक ‘भीतरक सामग्री’ देखेबाक वचन दैत अछि; शशांक एहि वचनकेँ पदवी आ स्वाधिकारक रूपमे अनुभव केने छल। एतय उपन्यास शब्दक अर्थ-रूपान्तरणकेँ व्यवहारिक व्यवस्था सँ भीतरक इच्छाधारित संसार धरि लऽ जाइत अछि। कतेक सामग्री देखाओल जाएत, ओ अलग प्रश्न; निर्णयक अधिकार कतेक देल गेल, ओ स्वतंत्र प्रश्न। शशांक पहिने एहि दुनूकेँ अपन प्रतिष्ठाक कारण एक बना देने छल।

मकाऊक रातिक चमक आ मिथिलाक घरक स्मरण अध्याय ५२क बिम्बक प्रत्यावर्तन अछि। एहि बेर नायक पितमपुराक छोट ताओ-मन्दिरमे स्वर सीखबाक दिनसँ अपन अंतरराष्ट्रीय करार-कोठली धरि पहुँचबाक कथा गढ़ैत अछि। एहि आत्मकथामे वास्तविक भाषिक श्रम आ आत्मगौरव, दुनूक स्थान अछि; मुदा विदेशक महँगा प्रकाश ओकरा अपन मूल जीवनक मूल्य घटा देखाबय लगैत अछि। ई वर्गीय मनोविज्ञानक सजीव संकेत अछि। लेखक मकाऊकेँ केवल अपराधक संदिग्ध स्थल नहि, प्रवासी युवकक आत्ममूल्य बदलनिहार चमकैत नगर रूपेँ रखैत छथि। एक सीमा ई जे नगरक बहुपरतीय समाजक ठोस प्रतिनिधित्व होटल, काँच आ बंद कार्यालय धरि बेसी सीमित रहैत अछि।

बन्द बैठकमे ली, चीनी कर्मचारी, राघव, भारतीय समन्वयक आ शशांक उपस्थित छथि; कागजक स्थान पर संगणक-पटल बेसी अछि। भुगतान-सारांशमे संक्षिप्त नाम, हवाला अथवा अंकीय मुद्राक शब्द रहब एहि उपस्थितिसँ सब व्यक्तिक सहभागिताक निर्णायक शृंखला नहि बनैत। शशांक कुछ आर्थिक पदक अर्थ बुझैत छल, मुदा खाताक वास्तविक स्वामी, धनक स्रोत आ अन्तिम पाबनिहार नहि। कथाकार एतय पेशागत अनुवादकक ज्ञानक सीमा बुझबैत छथि: शब्दक अर्थ ज्ञान अछि, विधिक-आर्थिक नियन्त्रणक स्थिति अन्य ज्ञान अछि। एहि अन्तरक कारण पाठ न आर्थिक निष्कर्ष अनावश्यक ढंगसँ नुकेबैत अछि, न बिना प्रमाण बढ़बैत।

एक प्रस्तुति-पृष्ठमे धन-समायोजनक निकट अर्थवला शब्द अंग्रेजीमे सेवा-समायोजन रूपेँ अछि; शशांक व्याकरण सुधरलक, आर्थिक व्यवहारक वैधानिकता पर प्रश्न नहि केलक। ई प्रसंग नायकक नैतिक भूमिका पर ठोस आलोचना सम्भव करैत अछि। सन्दिग्ध पंक्ति पाठक मनमे संशय उठबैत अछि, पर भाषिक सुधार कएलासँ लेन-देन वैध अथवा अवैध सिद्ध नहि। लेखक शशांकक अनभिज्ञता आ उदासीनता बीच अन्तर सुरक्षित रखैत छथि। ओ स्पष्ट रूपेँ कहैत अछि जे पटल पर कथन देखल, मूल स्रोत वा लाभार्थीक जाँच नहि केने छल।

अस्थायी अतिथि-प्रवेशक दृश्य अध्यायक केन्द्रीय भौतिक प्रमाण अछि। कर्मचारी स्वयं गुप्तशब्द टाइप करैत अछि, भाषिक तालिका खोलैत अछि, तखन शशांक पटल देखैत अछि। नायकक नामक संक्षिप्त रूप उपर देखायल छल, जाहिसँ ओकरा ‘आब हम भीतर छी’क सुख भेल। मुदा ओ स्वतंत्र गुप्तशब्द नहि जानैत, उपयोगकर्ता जोड़ि नहि सकैत, खाताधिकार बदलि नहि सकैत, सर्वर-संरचना नहि देखैत। उपलब्ध घटना भाषिक पटल देखबाक अनुमति अछि; स्वतन्त्र प्रशासकीय नियन्त्रणक प्रमाण नहि। एहि स्पष्टीकरणमे शीर्षकक ‘दर्पण’ अति सटीक अछि—वास्तविक पटल नायककेँ ओकर वास्तविक अधिकारसँ बेसी अधिकारक छवि देखबैत छल।

अंकीय प्रवेश-अभिलेखमे लगभग दू घण्टाक सक्रिय उपयोगकर्ता शशांकक संक्षिप्त नामसँ मेल खाइत अछि। नाम, तिथि आ बैठकक संगति शशांकक उपस्थितिक सम्भावना बढ़बैत अछि, मुदा सक्रिय सत्रक अवधि प्रत्यक्ष क्रियाक मात्रा नहि। पटल खुलल रहि सकैत अछि; कर्मचारी सेहो संग रहि सकैत अछि। जँ एहि सत्रमे भाषिक परिवर्तन सुरक्षित भेल हो, तखन भाषिक क्रियाक सम्बन्ध मजबूत होएत; तथापि आर्थिक नियन्त्रण स्वतः सिद्ध नहि। एहि विश्लेषणक नव्य न्यायीय महत्त्व अछि: एक चिह्नक प्रमाणबल विशेष विधेय लेल अलग, व्यापक विधेय लेल अपर्याप्त भऽ सकैत अछि।

लीक ‘प्रवाह’ बुझबाक अगिला प्रस्तावक शब्द बहुअर्थी अछि। एहि पदक अर्थ व्यवसायक कागजी क्रम, सेवा-पक्षक परस्पर सम्बन्ध अथवा धन-प्रवाह—सभ होयबाक सम्भावना अछि; तत्काल प्रसंगक आधार पर अर्थक क्षेत्र सिमटत। शशांक स्वीकार करैत अछि जे बादक अभिलेख भुगतान-सारांशक चर्चा देखाबय तँ पद केवल वाक्यक्रम नहि रहि सकैत, मुदा एतयसँ धनक वास्तविक संचालन सिखाओल गेल कहब अनावश्यक छलाँग होएत। एहि दृश्य मे पात्र स्वयं अपन उत्तर लिखैत अछि—एहि दायराक सुधार ही ओकर आत्मविकासक वास्तविक क्रिया अछि।

राघवक एके बैठकमे उपस्थितिक तथ्य आ होटल-कक्षक सूची दोसरा पात्रसभक नाम देखबैत अछि, मुदा समान उद्देश्य वा एके अपराधी समूहक प्रमाण नहि। आदित्य शशांककेँ जतेक सन्दर्भ आ साक्ष्य भेटल, ओतबे स्वीकार करब सिखबैत अछि। अन्तमे शशांक बयानमे ‘साक्षी’क स्थान पर ‘बयानकर्ता’ चाहैत अछि, कारण ओ अपन शब्दक सीमा सुधारबाक स्थितिमे अछि। ई छोट संशोधन महत्त्वपूर्ण: विषय-वस्तु तऽ तथ्यात्मक रहैत अछि, मुदा पात्र अपन कार्यक प्रकृति सही नाम देबाक आग्रह करैत अछि। नायकक पुरान अर्थ-संकुचनक विरुद्ध ई आत्म-संपादकीय कार्य अछि।

मृणाल एहि बेर चाहक दोकान पर नहि अछि। पुनरावृत्त स्थान पर मित्रक अनुपस्थिति दृश्यात्मक अर्थ बनैत अछि: आतिथ्य आ आर्थिक चमकक लोभक सामना नायककेँ अकेले करबाक अछि। कथा एतय सफलतापूर्वक निजी आत्मपरीक्षण आ सार्वजनिक अभिलेखक

दोहरा भार दिखबैत अछि। सीमा पूर्ववत् अछि—अन्तिम कापीमे फेर अनेक गणितीय सूत्र; संस्थागत पात्रसभक बोलचाल अधिक व्यवस्थित; अन्तर्बिरोधक अप्रत्याशित तीव्रता कम। तथापि अध्यायक उपलब्धि ई जे अस्थायी पहुँच आ कल्पित सत्ता बीचक दूरे नापि नायकक जिम्मेदारी कहैत अछि, अपराधक अप्रमाणित आरोप नहि।

## अध्याय ५६-६० : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — अदालतक मौनसँ अस्थायी पटल धरि

अध्याय ५६–६० ‘मकाऊक दर्पण’क मध्यभागमे कथाक पाँच अलग प्रमाण-स्थान रचैत अछि: न्यायालयक सीमित सुनवाई, पुरान उपकरणक जब्ती, द्विभाषिक करार, भुगतान-द्वारक अभिलेख आ दोसर मकाऊ यात्राक प्रवेश-पटल। सब ठाम शशांकक नाम अछि, पर नामक अर्थ हर ठाम समान नहि। न्यायालयमे साक्षी रूपमे उपस्थित व्यक्ति निजी फोनमे आत्मप्रचारक लेखक अछि; करारमे भाषिक टिप्पणीकार; वित्तीय सूचीमे सामान्य सम्पर्कक सम्भावित उम्मीदवार; मकाऊमे अस्थायी अतिथि। एहि भूमिका-भेद बिना कथाक नैतिक संकट एक सामान्य ‘अपराधी/निर्दोष’क द्वन्द्वमे सिमटि जाइत।

छप्पनम अध्यायक प्रतिपरीक्षा आ सत्तावनम अध्यायक अंकीय जब्ती बीच कथा-माध्यम बदलैत अछि। पहिलमे नायक वर्तमानमे अपन पुरान शब्दक दोष स्वीकार करैत अछि; दोसरमे ओ पुरान शब्द वास्तविक सन्देशरूपमे पुनः ओकरा साम्हिन पढ़ाओल जाइत अछि। एक वर्तमान स्वीकृति अछि, दोसर अतीतक अंकित आत्मप्रचार। एहि द्विधारा सँ आख्यानक विश्वसनीयताक समस्या जटिल होइत अछि: व्यक्ति एखन संयमित कथन दैत अछि, मुदा पुरान सन्देश महत्त्वाकांक्षाक अतिशयोक्ति दर्ज कऽ बचल अछि। दूनूकेँ समान अर्थमे पढ़ब नहि चाही।

सत्तावनम आ अठावनम अध्यायक पाठ-राजनीति एक-दोसरा पूर्ण करैत अछि। निजी चलदूरभाषक ‘हमरा बिना काम नहि चलत’ सन डींग आ द्विभाषिक करारक ‘स्थानीय सेवा-सहायता’ सन नरम पद, दुनू भाषाक शक्ति सँ उत्पन्न अछि। पहिल आत्म-महत्त्व बढ़बैत अछि, दोसर मूल अर्थक कानूनी प्रश्न घटबैत अछि। एक मूलतः वक्ताक स्व-छवि, दोसर ग्राहकक समक्ष मूल-पाठक जिम्मेदारी सँ जुड़ल अछि; तेँ दुनूक नैतिक परिणाम भिन्न अछि। शशांकक चरित्रक गहन अध्ययन एहि अन्तरकेँ अलग राखैत चलैत अछि।

अठावनम अध्यायक राघव भसीनक चीनी न बुझबाक तथ्य अनुवादकक पेशागत सत्ता पर नैतिक टिप्पणी बनैत अछि। मूल पाठ बुझनिहार व्यक्ति जखन अर्थक रक्षक बनैत अछि,

तखन ओकरा प्रामाणिकता बचाएबाक दायित्व अछि। राघवक लाभकारी स्वामित्वक घोषणा माँगैत हस्ताक्षरक प्रसंग एहि अर्थमे आवश्यक प्रतिरूप अछि: दस्तावेज पर नाम रहब अनुमोदनक चिन्ह नहि, प्रश्न खुलल रखबाक चिह्न हो सकैत अछि। मृणालक 'उधारक भरोसा' एहि तीन पक्षक मानवीय निष्कर्ष देइत अछि। एतय भाषिक योग्यता, विधिक ज्ञान आ निर्णयाधिकार अलग रहबाक सख्त आग्रह अभिव्यक्त होइत अछि।

अठावनम आ उनसठम अध्याय व्यापारिक श्रृंखला आ धनक श्रृंखला बीचक अन्तर पर केन्द्रित अछि। सेवा करनिहार, बिल देनिहार आ भुगतान पाबनिहार भिन्न संस्था होइतो कोनो व्यावसायिक सम्बन्ध होयत; मुदा लाभकारी स्वामी एके छथि वा कई, ई पूछबाक बचैत अछि। उनसठममे अपूर्ण भुगतान-द्वारक सारांश 'भारतीय सम्पर्क'क सामान्य पद देखबैत अछि। दुनू अध्याय 'अज्ञात'क रिक्त स्थान पूरा ककरो नामसँ भरबाक उतावली रोकैत अछि। नव्य न्यायीय दृष्टिसँ असंगति दूर करबाक न्यूनतम व्याख्या आ आरोप सिद्ध करबाक विशिष्ट कारण दू अलग कार्य अछि।

उनसठम अध्यायक मित्रता आ साठिम अध्यायक मकाऊक एकाकी स्मरण बीच भावात्मक विरोध अछि। मृणालक मौन अथवा उपस्थिति समान नियन्त्रणक प्रमाण नहि; ओ अलग व्यक्ति अछि जकर विश्वास नायक अपन सामाजिक प्रतिष्ठाक प्रमाण बनाब चाहने छल। साठिममे मित्रक अनुपस्थितिक समय नायक स्वयं स्वीकार करैत अछि जे 'विशेष पहुँच'क भूख ओकर निजी इच्छा छल। एहि यात्रा-क्रममे प्रवासी आकांक्षा, सामाजिक विषमता आ भाषिक श्रमक वास्तविक योग्यता एक संग अछि। लेखक लोभकेँ अपराधक स्वतः प्रमाण नहि, गलत निर्णय दिस लऽ जाएबवाला शक्तिशाली मनोभाव मानैत छथि।

पाँच अध्यायमे उपस्थिति आ स्वामित्वक भेदक रूपसभ फरक अछि: अदालतमे कोनो वाक्यक उद्धरण, फोनमे निजी लेखकत्व, करारमे विधिक हस्ताक्षर, भुगतान-द्वारमे सामान्य परिचय आ सर्वर-सत्रमे अस्थायी उपयोगकर्ता। एहि सभमे केवल 'देखल' अथवा 'नाम लिखल' पर्याप्त नहि। तरहे-तरहक माध्यम अलग तकनीकी आ संस्थागत प्रश्न माँगैत अछि। अध्याय ६०क दू घण्टा सक्रिय सत्रक उदाहरण समयक आँकड़ासँ वास्तविक क्रिया

सिद्ध नहि होयबाक विशिष्ट केस बनैत अछि; तकरा अध्याय ५७क उपकरणक मुख्य उपयोगकर्ता आ प्रत्येक सन्देशक लेखकत्वक भेदसँ तुलना कएल जा सकैत अछि।

भारतीय रस-विवेचनक दृष्टिसँ लज्जा, भय आ करुणाक स्थायी प्रवाहकेँ बीच-बीचमे हास्यक क्षीण विराम भेटैत अछि—विशेषतः मृणालक संग चाहक भुगतानक हल्का विनोद। दृश्यात्मक वस्तुसभ—पुरान फोनक फाटल आवरण, द्विभाषिक करारक दू स्तम्भ, हस्ताक्षरित रिक्त घोषणा, होटलक रोशनी आ अस्थायी पटल—भावक वाहक बनैत अछि। पहिनुक खण्डक मुहरबन्द पृष्ठक संग एतय वस्तु-प्रतीकक सुव्यवस्थित आवर्तन अछि। मुदा अतिव्यवस्थित प्रश्न-उत्तर आ रात्रिक कापीक सूत्र बहुधा भावक स्वतन्त्र अन्तर्ध्वनि घटा दैत अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे मिथिलाक भाषा-अध्ययन, दिल्लीक न्यायालय, भारतीय करार-पक्ष, मकाऊक आतिथ्य आ बहुभाषी व्यापारिक सम्पर्कक समानान्तर पठन आवश्यक अछि। ककरो बहुभाषिक दक्षता आ कागजक व्यावसायिक यात्रा एक संरचनामे प्रवेश करैत अछि, तथापि समस्त स्थल स्वतः एके अपराधक भाग नहि। शशांकक लज्जा ओकर निजी साक्ष्य अछि; न्यायालयक आदेश संस्थागत; भुगतान-द्वारक लेन-देनक सारांश वित्तीय; मृणालक स्मरण सामाजिक। एहि स्रोत-भिन्नताकेँ सुरक्षित रखबाक कारणेँ उपन्यासक दर्शन कथा-वस्तुमे कार्यशील अछि।

समग्र रूपेँ अध्याय ५६–६०क उपलब्धि एक नवल नैतिक सूत्र दैत अछि: स्वीकारल त्रुटिक सीमा सख्त होएबाक चाही, मुदा ओहि सीमाकेँ नायकक सुविधानुसार फैलाओल नहि जाए; असिद्ध आरोपकेँ सेहो बिना स्वतंत्र साक्ष्य स्वीकार नहि कएल जाए। लेखकक प्रमाणवादी पुनरावृत्ति एहि नैतिक प्रशिक्षणक साहित्यिक शक्ति अछि, किन्तु समान स्वरवाला अधिकारीक संवाद आ वारंवार सूत्र-लेखनक कारण किछु शिल्पगत एकरसता सेहो अछि। अगिला पाठ-चक्र लेल केन्द्रीय खुलल प्रश्न अछि—साठिम अध्यायमे स्मरण कएल राघवक विधिक सलाह आ व्यापारिक सहभागिताक सीमा आगाँ कोन प्रमाणसँ स्पष्ट होयत।

## अध्याय ६१ — मकाऊक दर्पण ९ : कानूनी गोपनीयताक सूची आ अनुवादमे स्वीकृतिक मिथ्या विस्तार

एकसठिम अध्यायक आरम्भ आदित्य मिश्रक अत्यन्त सीमित जाँच-सन्देशसँ होइत अछि। न्यायालयक आदेश केवल विधिक परामर्शक बाह्य सूची, समयक्रम आ अनुवाद-सम्बन्धी कागजक परीक्षणक अनुमति दैत अछि; गोपनीय सलाहक भीतरक पाठ एखन बन्द अछि। लेखक एहि प्रतिबन्धकेँ कथाक अभाव नहि, कथानकक संरचनात्मक शर्त बनबैत छथि। मेजपर राघव भसीन, शशांक आ आदित्यक साम्हिन राखल तीन संचिकामे तारीख, प्रेषक, प्राप्तकर्ता, विषयक वर्ग आ संलग्नक-संख्या देखाइत अछि; ‘विधिक परामर्श —विवादित’ लिखल लाल पंक्ति जाँचक अधिकार आ व्यक्तिक पेशागत संरक्षण बीच तनाव उघाड़ैत अछि।

आदित्यक आरम्भिक कथन जे कानूनी सलाहकेँ व्यापारिक निर्देश नहि मानल जाए, आ व्यापारिक क्रियाकेँ वकीलक कागज कहि नुकाओल सेहो नहि जाए —दूतरफा कसौटी अछि। राघव अपन गोपनीय परामर्शक सीमा बचबैत छथि, मुदा व्यवसायिक निर्णयक स्वतः स्वामित्व नहि माँगैत छथि। एहि समतुल्य सावधानीसँ उपन्यास वकील-पात्रकेँ न सहज अपराधी बनबैत अछि, न अपराध-विमुक्त देवता। समान कक्ष, समान दिन आ समान संचिकामे रहब लिखित संयोग अछि; ककर सलाह ककरो व्यवसायिक कर्म बनल, तकर निर्णय क्रिया आ अधिकारक साक्ष्यसँ होयत।

अध्यायक निर्णायक पाठ-साक्ष्य शशांकक पहिल द्विभाषी बैठक-सारांश आ बादक संशोधित पंक्ति बीचक विरोध अछि। पहिल पाठमे लाभकारी स्वामित्वक विवरण बादमे स्पष्ट करबाक संग सेवा-प्रवाह नहि रोकेबाक आग्रह छल; पछिला पंक्तिमे पुष्टि बिना भुगतानक निर्णय आगाँ नहि बढ़ेबाक स्पष्ट सावधानी आयल। ई साधारण पर्याय-विनिमय नहि: ‘रोकेबाक आवश्यकता नहि’ सँ ‘पुष्टि बिना आगाँ नहि’ धरि निषेधक बल बदलैत अछि। शशांक ई नहि कहैत जे अर्थ बुझल नहि; ओ मानैत अछि जे बैठक रुकय नहि, व्यावसायिक गति बनल रहय, एहि लेल अनिश्चितता पाछू

धकेललक। एहि आत्मस्वीकृतिमे चरित्रक दोष शब्दकोशीय अयोग्यता नहि, अर्थपर अधिकार जमाएबाक आकांक्षा अछि।

राघवक प्रश्न—हुनका द्वारा शब्दशः नहि देल स्वीकृतिक आशय शशांकक सारांशमे किएक आबि गेल—अनुवादकक पेशागत क्षेत्रकेँ नैतिक क्षेत्रमे बदलैत अछि। 'विधिक पक्षसँ कोनो तात्कालिक बाधा नहि' सन पंक्ति शशांकक सुविधा-आधारित अनुमान छल, विधिक कथनक प्रामाणिक पुनरुत्पादन नहि। पहिल मसविदा राघवक टिप्पणीसँ पहिने बनल, ई समयक्रम समीक्षाक लेल महत्त्वपूर्ण अछि: बादक सावधानीक लेखकत्व आ पहिल अर्थ-नरमीक कर्तृत्व एकहि पात्रपर लादब पाठ-विरुद्ध होयत। लेखक दूटा अभिलेखक क्रमसँ अलग जिम्मेदारी निर्धारित करब सिखबैत छथि।

'भाषिक पाठ स्वीकृत; विधिक टिप्पणी समाहित' सन समूह-सन्देशक परीक्षण अर्थक दोसर दरार देखबैत अछि। अनुवाद पूरा होयब, टिप्पणी जोड़ल जाएब आ कानूनी स्वीकृति भेटब—तीन अलग घटना अछि। शशांक सन्देशक प्रारम्भिक शैली अपन होयबाक सम्भावना स्वीकार करैत अछि, मुदा शैलीक समानता मात्रसँ पूरा सन्देशक लेखकत्व नहि मानैत। नव्य न्यायमे शब्दप्रमाणक वक्ता, सन्दर्भ आ प्रयुक्त विधेयक सीमा एहिठाम व्यावहारिक होइत अछि। लेखकत्वक प्रश्न आ कथित स्वीकृतिक प्रश्न अलग राखलासँ नायकक स्वीकार विश्वासयोग्य बनैत अछि; ओ सुविधानुसार सभ आरोप नहि नकारैत।

एहि अध्यायमे अर्थापत्तिक प्रयोग विशेष सावधानीसँ कएल गेल अछि। पहिल नरम सारांश आ बादक सावधानीपूर्ण संशोधन एक संग उपलब्ध अछि, तेँ पहिल पाठ विधिक स्थितिक पूर्ण अभिव्यक्ति नहि छल—एतबा न्यूनतम स्थापना सम्भव अछि। मुदा एहि असंगतिसँ ली वेनचाओक विशिष्ट निर्देश, राघवक मिलीभगत अथवा जानि-बुझि अपराध-बचाव सिद्ध नहि होइत। सामयिक समानताकेँ कर्ता-निर्देशमे बदलब हेत्वाभासक जोखिम लैत अछि। अदालती दृष्टिमे गोपनीयताक दावा दोषक प्रमाण नहि, मुदा गोपनीय वस्तुक भीतर की अछि तकर मनमाना अनुमान सेहो सत्य नहि।

शशांकक चरित्र-विकास भयक नाम बदललासँ उभरैत अछि। प्रारम्भमे ओ डरैत अछि जे गोपनीय कागज ओकरा अपराधी बना देत; पछिला समय

ओकरा डर अछि जे अपन 'भाषा साफ' सन छोट वाक्य दोसराक नजरिमे 'कानून साफ' बनि गेल हो। परिणाम आ उद्देश्यक अन्तर स्वीकारैत ओ अपन वास्तविक असावधानीक परिणाम सँ मुक्त होयबाक प्रयास नहि करैत। राघव त्रुटिपूर्ण अनुवाद, असावधानी, सप्रयोजन अर्थ-विकृति, व्यावसायिक सहभागिता आ आपराधिक उद्देश्यक अलग-अलग नाम गनबैत छथि। एहि नामकरणमे दया आ कठोरता सह-अस्तित्वमे अछि—दोषकेँ तकर वास्तविक आकार देब।

कलात्मक स्तरपर लाल अक्षर, बाह्य सूची, तीन संचिका आ ढाँपल राशि दृश्यकेँ भौतिक उपस्थिति दैत अछि। एके दिन बनल कागजसभक क्रम रहस्यक सहज साधन बनैत अछि, आ मृणालक सीढ़ीपर भेटब कार्यालयक शुष्क वातावरणक बाद मानवीय विराम दैत अछि। रसात्मक स्थिति भय सँ लज्जा आ करुणा दिस जाइत अछि; 'पुलक यातायात स्वयं तेज' करबाक आत्मचित्र वक्रोक्तिपूर्ण प्रतीक अछि। देरीसँ उघड़ैत ई अनुभूति पाठककेँ पात्रक भीतर अर्थक राजनीति देखबैत अछि।

अध्यायक एक सीमा स्पष्ट अछि। आदित्यक प्रश्नोत्तर अनेक ठाम व्याख्यान-जेकाँ चरणबद्ध अछि; कानूनी विशेषाधिकारक वास्तविक प्रक्रियात्मक विवादकेँ नाटकीय उलझनक अपेक्षा पात्रसभक सहमतिक नापतौल बेसी भेटैत अछि। राघव, आदित्य आ शशांकक अन्तिम वाक्यसभ एके प्रमाण-अनुशासनक भाषा धरि पहुँचि जाइत अछि, जाहिसँ व्यक्तिगतरूपेँ भिन्न पेशागत स्वर कखनो कम उभरैत अछि। तथापि पहिल मसविदाक आत्मस्वीकृति आ राघवक सीधा प्रश्न एहि शिक्षात्मक पुनरावृत्तिक भीतर जीवन्त प्रतिरोध रचैत अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक दृष्टिसँ मकाऊक बैठक, भारतक विधिक परामर्श, चीनी उत्तरक अनुवाद आ भुगतान-सारांश एक-दोसरसँ सम्पर्कित मुदा अलग अभिलेखीय इतिहास अछि। एकर सम्बन्ध सिद्ध करबाक काम समय, लेखकत्व आ निर्णयाधिकारक स्तरपर होयत, मात्र विदेश-सम्पर्कपर नहि। अध्यायक अन्तिम प्रश्न—संस्थाक भीतर लिखल सावधानी बादक कागजमे कतय हेरायल—अगिला अध्यायक कर-जाँचक संस्करण-द्वन्द्व लेल स्वाभाविक संक्रमण रचैत अछि। ई उपन्यासक उपलब्धि अछि जे नैतिक आत्मपरीक्षा आ स्रोत-समीक्षा एके रचनात्मक मोड़ बनि उठैत अछि।

## अध्याय ६२ — मकाऊक राति : आरक्षण-पत्र, समय-क्रम आ विश्वासघातक असिद्ध नाम

बासठिम अध्याय ‘मकाऊक राति’ शीर्षकक चमक आ भितरक अभिलेखीय शीतलता बीच तनाव पर ठाढ़ अछि। आदित्यक मेज पर निचला आयुक्तालयक आरक्षण-पत्रक प्रेषण-सूची, ऊपरी शाखाक प्रसार-सूची आ पुरान चलदूरभाषक मकाऊ-सन्देश एक संग अछि। शशांकक मनमे होटलक झरोखा आ विद्युत-इजोत उठैत अछि, मुदा आदित्य कहैत अछि—‘स्मरण बादमे। पहिने अभिलेख।’ एहि क्रम-विपर्ययसँ लेखक चमकदार निजी कथाकेँ वस्तुनिष्ठ प्रमाणक कसौटी पर रखैत छथि। शीर्षकक ‘राति’ केवल वातावरण नहि, स्मृतिक संभावित भ्रामक प्रकाश अछि।

निचला अधिकारी वास्तविक लाभकारी स्वामित्व, भुगतान-पक्षक सत्यापन आ सेवा-वितरणपर आरक्षण सहित सामग्री पठौने छल; प्राप्ति-चिह्न सेहो भेटल छल। ऊपरक प्रसार-प्रतिमे संलग्नक कम देखाइत अछि आ प्रकरण निम्न प्राथमिकतामे राखल गेल। अधिकारी एहि भिन्नताक साक्षी छथि, मुदा कियो जानि-बुझि हटौलक, से नहि कहैत। अभिलेखक दू अवस्थाक तुलनासँ संस्करणान्तर सिद्ध होइत अछि, संशोधनकर्ता अथवा नीयत नहि। एहि सूक्ष्म अन्तरसँ सरकारी प्रक्रियाक निरपेक्ष चित्र बनैत अछि: अभिलेख रखनिहारक थकान आ असहमति दुनू देखाइत अछि।

मकाऊक होटलक राति ली वेनचाओ शशांककेँ भारतक प्रश्न नर्म पड़बाक आ अगिला कागज हल्का होयबाक सन्देश दैत अछि। ई सन्देश भारतीय आधिकारिक प्रसार-सूचीक समयसँ पहिने देखाइत अछि। समयक ई अन्तर कथात्मक रहस्य बढ़बैत अछि, मुदा लेखक तत्काल गोपनीय सूचना-प्रवाहक निर्णायक प्रमाण नहि बनबैत छथि। सार्वजनिक अथवा व्यावसायिक दोसर स्रोत, समयक्षेत्रक त्रुटि, अग्रिम अनुमान आ आन्तरिक सूचना—चारि वैकल्पिक व्याख्या कागजपर राखल जाइत अछि। अर्थापत्ति एहि विकल्पसभमे विशिष्ट दोषी चुनबाक साधन नहि, समयक्रमक असंगति स्पष्ट करबाक विधि अछि।

शशांकक प्रतिउत्तर—तखन भाषा सेहो कम कठोर राखल जाए कि नहि—एहि अध्यायक वास्तविक नैतिक मोड़ अछि। लीक मूल अर्थ बचबैत भय नहि बढ़ेबाक सलाह शशांक तात्कालिक सुविधा रूपेँ लैत अछि; ओकर पहिल प्रश्न नहि उठैत जे लीक बातक स्रोत की छल। ओ अपन सहायक-नोटमे 'भारत प्रश्न नरम' लिखि अप्रमाणित कथनकेँ स्वयं सत्यापित तथ्यक रूप देने छल। एहि ठाम ओकर अपराधक सिद्धि नहि, शब्दप्रमाणक प्रति अनैतिहासिक भरोसाक समस्या अछि। वक्ताक कथनक आशय आ स्रोत न जाँचि ओकरा कागजपर उतारब अनुवादकक पेशागत निर्भरता उजागर करैत अछि।

निचला अधिकारीक 'विश्वासघात' एक वेदना अछि: अपन श्रमसँ लिखल सावधानी बादक प्रसारमे नहि देखाइत अछि। लेखक ओहि अनुभूतिक सम्मान करैत छथि, मुदा संस्थाक केकरो विरुद्ध निष्कर्ष नहि दैत। प्राप्ति-चिह्न सँ बादक उपयोग सिद्ध नहि; संलग्नकक कमी सँ हटेबाक घटना सम्भव, मुदा कारण, कर्ता, उद्देश्य आ लाभ अलग प्रश्न अछि। शशांकक 'लाभ = कर्ता सिद्ध नहि' कहब नव्य न्यायीय हेत्वाभासपर अत्यन्त व्यावहारिक प्रतिवाद अछि। एहि अध्यायमे मनुष्यक विश्वास आ संस्थागत प्रमाणक इतिहास स्वतंत्र धारामे चलैत अछि।

मृणालक उपस्थिति वैयक्तिक स्रोत-परीक्षण जोड़ैत अछि। शशांक ओकरा 'भारतक प्रश्न थमैत' कहि सन्देश पठौने छल, आ मृणाल तत्काल पूछने छल—'तोरा के कहल?' शशांक अपन उत्तरमे 'ओतयक लोक' लिखने छल, जकर निश्चित नाम ओकरा स्वयं ज्ञात नहि। मित्रताक प्रश्न एतय भयभञ्जन मात्र नहि; शशांकक ज्ञान-दावाक जनजीवनक परीक्षा अछि। जे बात अनुकूल लगैत छल, ताहिपर विश्वास करब नायकक अपना शब्दमे स्वीकृत सुविधा-प्रधान चयन अछि। एहि आत्मपहिचानसँ कथाक नैतिक आयाम बाह्य षडचन्त्रक रोमांचसँ भिन्न बनैत अछि।

मुहरबन्द 'समय-क्रम: सीमित प्रसार' नामक पृष्ठ अध्यायक अन्तिम वस्तु-प्रतीक अछि। स्रोतक पहचान आ अपुष्ट परिकल्पना संग रहलाक कारण ओ सार्वजनिक नहि कएल जा सकैत अछि। एहि रोकसँ नायकक पहिनुक अपमानक स्मृति सक्रिय होइत अछि—जँ एक पंक्ति बाहिर गेल तँ ओकरा का बनाओल जाएत? आदित्य उत्तर दैत अछि जे पंक्ति मात्र नहि, ओकर

प्रसार-श्रृंखला जाँचब। कथानक एतयसँ अध्याय ६३क समाचार-रूपान्तरक जमीन तैयार करैत अछि; संस्करणक प्रश्न आब सार्वजनिक प्रतिष्ठाक प्रश्न बनबाक बाट पर अछि।

रचना-कौशलमे वर्तमानक अभिलेख आ पिछिला रातिक स्मृति क्रमागत फेर-बदलसँ देखाओल गेल अछि। होटलक काँचमे दोहरा प्रतिबिम्ब, विद्युत-इजोत आ अधिकारीक थाकल मुख दार्शनिक संवादकेँ संवेदी धरातल दैत अछि। शशांकक मनमे 'ककरो विश्वास टूटल' आ 'कोनो आपराधिक समझौता भेल'क अन्तर धीरे-धीरे स्पष्ट होइत अछि। करुणाक अनुनाद निचला अधिकारीक उपेक्षित श्रम सँ जन्मैत अछि; अपराध-रहस्यक सम्भावना समय-मुद्रा आ संलग्नक-संख्यासँ।

कलात्मक सीमा ई जे अध्याय फेर नव्य-न्यायक शब्दावली आ कापीक सूत्रसभ पर बेसी निर्भर अछि। समय-क्षेत्रक वैकल्पिक व्याख्या उठैत अवश्य अछि, मुदा स्वतन्त्र कालगणनात्मक परीक्षण कथानकमे प्रत्यक्ष नहि देखाओल गेल; एहि कारण अनुसन्धानक सम्भावना नाटकीय निष्पादन सँ बेसी सिद्धान्तक सूची रहि जाइत अछि। निचला अधिकारीक आवाज स्वतंत्र अछि, तइयो ओकर सामाजिक जीवन, कार्यालयक दबाव आ भीतरी सम्बन्धक दृश्य विस्तार सीमित अछि। ई सीमा स्वीकार करितो रातिक आकर्षण आ दस्तावेजी अनुपस्थितिक टकराव सशक्त बनल रहैत अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पठनमे मकाऊमे निजी सन्देशक प्राप्ति आ भारतमे सरकारी प्रेषणक प्रसार एके कालपंक्तिपर राखल जाइत अछि; समयगत सन्निकटता कारण-सम्बन्धक प्रमाण नहि। दुनू इतिहासक बीच वास्तविक छेदन खोजबाक लेल स्रोत, प्रेषणक्रम आ परिवर्तित संचिकाक लेखकत्व जाँच आवश्यक अछि। अध्यायक समापनक 'विश्वासघातक प्रमाण नहि, विश्वास टूटबाक कारण भेटल' कथन ई समूची रचनात्मक-तार्किक भेद संक्षिप्त करैत अछि। एहि सीमित निष्कर्षक संग अगिला सार्वजनिक संकट खुलैत अछि।

## अध्याय ६३ — मकाऊक दर्पण ११ : मुहरबन्द पाठक समाचार-वंश आ प्रतिष्ठाक घाव

तिरसठिम अध्याय निजी चलदूरभाषक कम्पनसँ सार्वजनिक आरोपक आक्रमण धरि तीव्र गतिसँ बढ़ैत अछि। मृणाल समाचार खोलबाक पहिने फोन करबाक आग्रह करैत अछि; अपरिचित प्रश्नमे ‘देशक पैसा’, ‘चीनी जुआ-समूह’ आ ‘अनुवादक’ तीन अलग संज्ञा एके दोषारोपणमे बाँधि देल गेल अछि। समाचारक शीर्षकमे प्रश्नचिह्न अछि, मुदा भीतरक वाक्यसभ निर्णायक मुद्रा लैत अछि। ई शीर्षक आ विवरणक विरोध पाश्चात्य कथनशास्त्रक ‘अनिश्चित कथनक निश्चित प्रभाव’क अच्छा उदाहरण अछि। पाठक समाचारक ब्यौरा पढ़बाक संग स्रोत-स्थितिक भेदक परीक्षा करैत अछि।

शशांक पहिने पूरा समाचार मिथ्या कहैत अछि, मुदा मृणालक ‘सभ?’ प्रश्न ओकर बयानक रूप बदलि दैत अछि। शशांक मकाऊ यात्रा, भाषिक सेवा, भुगतान-सारांश देखब आ किछु शब्द नर्म करब स्वीकार करैत अछि; कथित म्यूल खाताक समन्वय, धनक नियन्त्रण आ जुआ-व्यवसायिक स्वामित्व लेल अलग प्रमाण माँगैत अछि। एहि सूचीमे चरित्रक नैतिक विश्वसनीयता ओकर निर्बाध निषेधमे नहि, आत्मप्रतिकूल तथ्य न नुकेबामे अछि। अपमानित मनोविज्ञान सहजे ‘सब असत्य’ कहितय; लेखक आत्मरक्षाक भीतर प्रमाण-संयम स्थापित करैत छथि।

न्यायालयीय अनुमति सँ खोलल मुहरबन्द अंशमे ‘भारतीय भाषिक सम्पर्क द्वारा भुगतान-सम्बन्धी शीर्षकक अनुवाद’ अछि आ खातासभक वास्तविक नियन्त्रण पृथक सत्यापनक विषय राखल गेल अछि। सार्वजनिक समाचारमे ‘भाषिक’ हेराइत अछि; शीर्षकक अनुवाद ‘भुगतान-समन्वय’ बनैत अछि; सत्यापनक शर्त ‘नियन्त्रणक संकेत’ होइत अछि। ई तीन परिवर्तन व्याकरण, कर्म आ प्रमाण-अवस्था बदलैत अछि। लेखक महज विपरीत कथन नहि दैत, दू वाक्य एके मेजपर रखि अर्थक अन्तर देखबैत छथि; अनुवाद उपन्यासक मूल विषय एतय समाचार-सम्पादनक राजनीतिक प्रश्न बनैत अछि।

दोसर मुहरबन्द मसविदामे मकाऊ बैठकमे ‘अनुवादक उपस्थित’ मुदा ‘वित्तीय निर्णयाधिकार स्थापित नहि’ लिखल अछि; सार्वजनिक रूपमे ‘प्रमुख भारतीय

प्रतिनिधि' बचैत अछि, सीमाक पंक्ति कटैत अछि। दू स्वतंत्र अंशमे एके प्रकारक योग्यता-सूचक भाग हेरायब चयनात्मक अर्थ-विस्तारक निरीक्षण अछि। तथापि आदित्य तुरन्त षड्यन्त्र वा विशिष्ट समाचारकर्मीक जानि-बुझि बदनामी सिद्ध नहि मानैत। पाठ-परिवर्तन प्रमाणित होयब आ ओ परिवर्तन करनिहारक उद्देश्य प्रमाणित होयब दुई भिन्न स्तर अछि। एहि पृथक्करणसँ अध्याय प्रामाणिक पाठालोचना आ सार्वजनिक नैतिकता जोड़ैत अछि।

एक मसविदाक असामान्य 'लाभकारीक' रूप सार्वजनिक समाचारमे सेहो मिलैत अछि। एके विशिष्ट वर्तनी, असामान्य शब्दक्रम आ सावधानी-पंक्तिक अनुपस्थिति संयुक्त रूपेँ पाठक वंशगत सम्बन्धक अनुमान बलबान करैत अछि। मुदा ओहि विशिष्ट त्रुटिक पुनरावृत्ति सँ ककरा मुहरबन्द कागज भेटल, कोन ठाम प्रतिलिपि बनल आ कोन व्यक्ति बाहर देलक—एकर प्रत्यक्ष निर्धारण नहि होइत। नव्य न्यायमे हेतु आ साध्यक व्याप्ति एही ठाम जाँच चाहैत अछि: पाठगत सादृश्य सँ पाठ-सम्बन्धक संकेत, न कि व्यक्ति-विशेषक दोष।

राघव भसीन दूरभाष पर अपन कानूनी उपस्थिति आ आपराधिक संरक्षणक आरोप अलग करैत छथि। ओ विशिष्ट निर्देश, लाभ, निर्णयाधिकार आ अपराध-ज्ञानक स्वतन्त्र आधार माँगैत छथि; शशांकक नरम अनुवादक जिम्मेदारी सेहो हुनकासँ पृथक रहैत अछि। ई समान कसौटी औचित्यक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि। पात्रक पेशा ओकरा दोषसँ मुक्त नहि करैत, मुदा पेशाक नाम अपराधक प्रमाण सेहो नहि बनैत। एहि तर्कक सामाजिक विस्तार मीडिया-निर्मित अपराधबोध पर अछि: उपस्थिति कैँ भूमिका, भूमिका कैँ नियन्त्रण आ नियन्त्रण कैँ अपराध-उद्देश्य मानबाक सहज प्रवृत्ति।

मुहरबन्द सामग्री उद्धृत नहि करबाक निर्देश शशांकक आत्मरक्षाकैँ कठिन करैत अछि। मीडिया आधा वाक्य छापैत अछि, मुदा शशांक पूरा प्रमाण सार्वजनिक रूपेँ खोलि नहि सकैत। न्यायिक सीमा ओकर पीड़ा बढ़बैत अछि, तथापि ओ सीमा तोड़ैत नहि। बाहर कैमरा साम्हिन नायक अपना उपस्थितिक तथ्य, अनुवादक त्रुटि आ असिद्ध वित्तीय भूमिकाकैँ अलग-अलग कहैत अछि। 'ई प्रश्नक उत्तर नारा नहि देत। प्रमाण देत' कथन उत्तेजक दृश्यकैँ नायकक अर्जित संयमपर समाप्त करैत अछि।

घरक स्मृति दृश्य अधिवेशनक बादक पात्र-गठनमे विशेष प्रभावी अछि। अदालतमे तर्क शशांककेँ सहारा दैत छल; गामक लोकक प्रश्न, माता-पिताक सम्भावित लाज आ अपन पहिनुक डींग ओकरा भीतर असुरक्षित करैत अछि। मृणाल एक कोरा पन्नापर चारि शीर्षक—'सिद्ध', 'अपन स्वीकार', 'जाँचाधीन', 'विकृत कथन'—बनबैत अछि। ई छोट वस्तु एक साथ नैतिक पद्धति आ मानवीय मित्रताक संकेत अछि। उपन्यासक अभिलेखीय भाषा सामान्य घरेलू पन्नामे उतरैत अछि, जाहिसँ अवधारणात्मक विमर्श भावगत विश्वसनीयता पबैत अछि।

एहि अध्यायक कलात्मक उपलब्धि सार्वजनिक आरोपक विकृत कथन, न्यायालयक सीमित पठन आ घरक निस्तब्धता—तीन अलग कथन-मंचक संयोजन अछि। प्रश्नचिह्नक छल, सम्पादकीय कतरन आ दोहरायल शब्द-त्रुटि आधुनिक संचारक कथात्मक यन्त्र बनैत अछि। सीमा ई जे समाचारकर्मीक स्वतंत्र जटिलता नहि देखाइत; ओ बहुधा सामूहिक आरोपक आवाज छथि। लीकक संस्थागत कारण सेहो एखन रहस्यरूपेँ राखल अछि, तेँ पाठककेँ अनिश्चितताक प्रयोग आ कथावस्तुक अधूरापन बीच फर्क करबाक पड़ैत अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पठनमे मुहरबन्द मसविदा, न्यायालयक सीमित अनुमति, समाचारक सार्वजनिक संस्करण आ गामक सामाजिक प्रतिक्रिया अलग-अलग प्रसार-अवस्था अछि। एक अवस्था सँ दोसरमे अर्थक विकृति ठोस उदाहरण सहित देखाओल गेल अछि; मुदा स्रोतक व्यक्ति-श्रृंखला एखन अप्रमाणित अछि। एहि अध्यायक अन्तिम दर्पण शहरक नहि, 'एके वाक्यक दू रूप'क अछि। शीर्षकक दर्पण-बिम्ब मूल कथ्यक भाषिक उत्तरदायित्वकेँ सार्वजनिक प्रतिष्ठाक प्रश्न धरि विस्तृत करैत अछि।

## अध्याय ६४ — मकाऊक दर्पण १२ : प्रतिपरीक्षामे आत्मस्वीकृति आ अपराध-सिद्धिक सीमा

चौंसठिम अध्याय न्यायालयक प्रतिपरीक्षाकेँ उपन्यासक केन्द्रीय परीक्षण-स्थल बनबैत अछि। न्यायाधीश गोपनीय सलाहक भीतरक विवरण अलग रखि तीन ढेरक सीमित तुलना अनुमति दैत छथि—मुहरबन्द सारांश, समाचारक अंश आ आर्थिक शीर्षकक सूची। शशांक साम्हिन बैसल अछि; सरकारी अधिवक्ता मकाऊ यात्रा, जुआ-सम्बन्धी सामग्री देखब, भुगतान-शीर्षक अनुवादब आ बैठकक सन्देशमे नाम रहबाक चारि तथ्य स्वीकार करबैत छथि। तत्पश्चात ‘सक्रिय भारतीय समन्वयक’क पाँचम निष्कर्ष रखैत छथि। कथाक निर्णायक बौद्धिक घटना ई अतिरिक्त निष्कर्षक वैधता पर ठाढ़ अछि।

शशांक उत्तरमे चारि स्वीकारल तथ्य नहि मिटबैत; कहैत अछि जे भाषा-सेवा आ बैठकमे नाम सँ धनक निर्णयाधिकार, निर्देश, लाभ वा नियन्त्रण स्वतः नहि निकलैत। ई प्रतिवाद निषेधपर नहि, प्रमाणक अपेक्षित प्रकृतिपर आधारित अछि। सरकारी अधिवक्ता अर्थापत्तिक सहारा लैत छथि; शशांक देखबैत अछि जे ज्ञात तथ्यसभ भाषिक सेवा प्रदाताक न्यूनतम भूमिकासँ सेहो संगत रहि सकैत अछि, तेँ व्यापक आर्थिक समन्वय मानल अनिवार्य नहि। उपन्यास नव्य न्यायकेँ शुष्क उद्धरण नहि, प्रश्नक तार्किक भार तौलएबाक जीवित क्रिया बनबैत अछि।

समाचारक ‘भारतीय सम्पर्क धन-समन्वयक’ आ मूलक ‘धन-समन्वयक भूमिका स्वतंत्र सत्यापनक अधीन’ बीचक अन्तर पुनः न्यायालयमे उद्घाटित अछि। सरकारी अधिवक्ता मूल शब्दक आंशिक समानता उठबैत छथि; शशांक पूरा पाठक अस्तित्व नहि नकारैत, बल्कि योग्यता-सूचक अंश हटला पर जाँचाधीन कथन निश्चित भूमिकाक रूप लैत अछि, से देखबैत अछि। न्यायाधीशक अभिलेखीय टिप्पणी एहि भेदकेँ संस्थागत मान्यता दैत अछि। अध्याय ६३क पाठालोचनात्मक निष्कर्ष आब अदालतक परीक्षणमे प्रवेश करैत अछि; ई आवृत्ति उद्देश्यपूर्ण कथा-प्रगति अछि, यद्यपि शब्दक पुनरावृत्ति स्पष्ट अछि।

मृणालकेँ पठाओल पुरान 'पैसावला भाग हम देखैत छी' वाक्य शशांकक नैतिक कमजोरीक विशेष साक्ष्य अछि। ओ अपन डींगक जिम्मेदारी स्वीकारैत अछि; मुदा स्वयं-वर्णनक अतिशयोक्ति आ वास्तविक वित्तीय नियन्त्रणक बीच भेद रखैत अछि। एहि ठाम कथावस्तु अपमानित नायकक सरल निर्दोषतागाथा नहि होइत। शशांक जानैत अछि जे ओहि डींगक कारण सार्वजनिक शंका विश्वसनीय बनि सकैत अछि। लेखक दोषक सामाजिक परिणाम मानैत छथि, किन्तु स्रोतहीन व्यापक आपराधिक निष्कर्ष नैतिक प्रायश्चितक नामपर स्वीकार नहि करबैत।

राघव भसीनक प्रतिपरीक्षा उपन्यासक न्याय-विवेककेँ शशांकसँ आगाँ बढ़बैत अछि। कानूनी परामर्श, करारक पाठ आ जोखिम-सावधानी केँ अपराधक 'आवरण' कहबाक लेल प्रत्यक्ष निर्देश वा लाभक विशिष्ट प्रमाण आवश्यक अछि। हवाला वा बिटकॉइन सन शब्द कागजमे देखाइब वित्तीय परिचालनक लेखकत्व नहि ठहरबैत। न्यायाधीश एहि चरणमे संचालन-विवरण सुनबाक अनुमति नहि दैत; ककरा की ज्ञात छल आ कोन अभिलेख ककरा जोड़ैत अछि, ततेक धरि सीमा निर्धारित अछि। कथा न्यायालयक अधिकारक परिधिकेँ स्वयं कथन-शिल्पक सीमा बनबैत अछि।

आदित्यक साक्ष्य पाठगत वंश आ लीक करनिहार व्यक्ति बीचक अन्तर आओर स्पष्ट करैत अछि। असामान्य शब्दक्रम, विरामचिह्न आ साझा वर्तनी-त्रुटि सम्बन्धित पाठक संकेत अछि; कोन व्यक्ति प्रसार केलक, तकर पृथक जाँच चाही। सरकारी अधिवक्ताक तीक्ष्ण प्रश्न—इतबा विभाजन सँ सत्य हाथसँ नहि निकलि जाए?—नाटकीय विरोधक थोड़ स्पष्ट क्षण अछि। आदित्यक उत्तर, सीमा तोड़िकऽ बनाओल सत्य अदालतमे शीघ्र टूटि सकैत अछि, शोधात्मक प्रतिपाद्यकेँ नैतिक खतरा सहित रखैत अछि। जाँचक गति आ निष्कर्षक टिकाउपन बीचक तनाव एतय सार्थक अछि।

सबसे कठिन प्रसंग शशांकक अपन नर्म अनुवादक स्वीकार अछि। जुआक जोखिम स्पष्ट करनिहार मूल पद ओ ग्राहकक सुविधा, काज बचाएबाक मोह आ अपन महत्त्वक आकांक्षासँ 'मनोरंजन सेवा' दिस नरम केने छल। सरकारी अधिवक्ताक 'कपट' शब्द सुनि नायक सरल अस्वीकार नहि करैत: ओ मूल अर्थक धार कम करबाक नैतिक दोष मानैत अछि, मुदा आर्थिक षड्यन्त्रक सप्रयोजन सहभागिता अलग सिद्ध करबाक आग्रह करैत अछि। एहि अन्तरमे

औचित्य-विवेक अपन सर्वोत्तम रूप पबैत अछि; नायकक पुनर्वास ओकर दोष नकारब नहि, दोषक माप स्वीकारब अछि।

अदालतमे भाषिक सेवा-शुल्क, आर्थिक लाभकारी स्वामित्व, मुनाफाक वितरण आ कथित म्यूल खाताक नियन्त्रण पृथक-पृथक तथ्य रूपमे राखल जाइत अछि। न्यायाधीश नायकक भुगतान-स्वीकार आ व्यापक भूमिकापर विवाद दूनू दर्ज करबैत छथि। बचावक प्रश्न सेहो पूर्ण निर्दोषताक तत्काल उद्घोषणा नहि माँगैत, बल्कि सिद्ध तथ्य, स्वीकारल त्रुटि आ अनिश्चित अनुमानक अलग अवस्थाक आग्रह करैत अछि। ‘अनिश्चितता निर्दोषताक प्रमाण नहि; ... निश्चित दोष सेहो नहि’ कथन न्यायिक संतुलनक मानक बनि उभरैत अछि, मुदा ककरो अंतिम निर्णय घोषित नहि करैत।

सुनवाइक बाद मृणालक संग चलब आ ‘भारक नाम’ पहिचानब—अपन त्रुटि बनाम दोसराक आरोप—अध्यायक भाव-संयमित समापन अछि। भयक स्थानपर व्यवस्थित लज्जा अबैत अछि। भारतीय रस-दृष्टिसँ करुणा, लज्जा आ शान्त भावक मिश्रण अछि; वक्रोक्ति ई जे प्रतिष्ठा लेल बढ़ाओल वाक्य अन्ततः प्रतिपरीक्षाक वस्तु बनि जाइत अछि। वस्तु-रचनामे अदालतक तीन ढेर पूर्व अध्यायक चारि-शीर्षकवला कोरा पन्नासँ संवाद करैत अछि: दूनू असंगठित आरोपकेँ वर्गीकरण दैत अछि।

एहि अध्यायक सीमा ई जे बहु पात्र न्यायिक प्रमाण-विवेकक एकहि आदर्शक निकट पहुँचैत छथि। अधिवक्ताक प्रश्न अनेक बेर दार्शनिक उदाहरण-जेकाँ सुनाइत अछि; अदालतक अनपेक्षित मानवीय विवाद, शक्तिसम्बन्ध आ प्रक्रियाक असमतालाई कम स्थान भेटैत अछि। तथापि ‘कपट’ शब्द पर शशांकक विलम्बित, आत्मप्रतिकूल उत्तर शिक्षात्मक समतलता तोड़ैत अछि। अन्तिम आदेश—पुरान उपकरण, अनुवाद-मसविदा आ भुगतान-सन्दर्भक पुनर्परीक्षण—नाटकीय अर्थमे नव दबाव बनबैत अछि आ पैंसठिम अध्यायक डिजिटल आत्मलेख्यक परीक्षणक तैयारी करैत अछि।

## अध्याय ६५ — मकाऊक दर्पण १३ : अंकीय प्रतिरूपमे आत्मविस्तारक हस्ताक्षर

पैंसठिम अध्याय पुरान अंकीय उपकरणक सीमित पुनर्परीक्षणसँ आरम्भ होइत अछि। भोरे नहि, साँझमे आयल समनक संग न्यायालयक आदेश जुड़ल अछि; सन्देश, अनुवाद-मसविदा, भुगतान-सन्दर्भ आ भूमिका-वर्णन मात्र जाँचक अधिकृत विषय अछि। मेजपर दू मुहरबन्द पैकेट अछि, मुदा आदित्य मूल उपकरण फेर चलएबाक बदला प्रमाणित प्रतिरूप खोलैत अछि। एहि सूक्ष्म भौतिक व्यवस्थासँ उपन्यास अभिलेखक अक्षुण्णता आ अध्ययनक मर्यादा स्थापित करैत अछि। शशांक कहैत अछि जे ओकरा भय सँ बेसी लाज अछि: पहिने जे महत्त्वपूर्ण देखेबाक शैली छल, से आब समय-मुद्रित साक्ष्य अछि।

पहिल संवादमे ‘भारतीय पक्ष हम देखैत छी; भाषा आ स्थानीय समन्वय हमरा छोड़ू’ भेटैत अछि। शशांक पहिने शैलीक समानताक आधारपर लेखकत्व पूर्ण स्वीकार नहि करैत; आदित्य प्रेषक-खाता, उपकरणक उपयोगक समय आ ओकर स्मरण मिलान करैत अछि। तखन ओ वाक्य अपन स्वीकार करैत अछि। ई प्रक्रिया उत्तरदायित्वसँ बचेबाक छल नहि, बल्कि लेखनक प्रमाणक स्तर जाँचबाक अछि। ककरो नामसँ चलल खाताक सन्देश आ व्यक्ति-विशेषक लेखन समानार्थी नहि; समवर्ती चिह्नसभ मिललाक बाद स्वीकार अधिक विश्वसनीय बनैत अछि।

शशांक ‘भारतीय पक्ष’ कहि अपन भाषिक सेवा, बैठकक समय आ सम्पर्कक कामकेँ सम्पूर्ण कारोबारी नियन्त्रण जेकाँ बढ़ौने छल। ओकर महत्त्वाकांक्षा स्वयं स्वीकृत अछि, मुदा ओ व्यापक आर्थिक नियन्त्रणक वस्तुगत प्रमाण नहि। एहि दृश्यकेँ अध्याय ६४क ‘पैसावला भाग हम देखैत छी’ वाक्यसँ जोड़लासँ नायकक दोषक पुनरावृत्ति खुलैत अछि: जिम्मेदारी सँ बेसी प्रतिष्ठाक भाषा अपनाबय चाहब। नैतिक दोषक स्थायित्व प्रमाणित अछि, अपराध-भूमिकाक व्यापक निष्कर्ष एखन नहि। लेखक चरित्रकेँ नायकक अनुकूल कथनसँ नहि, ओकर आत्मप्रतिकूल अभिलेखसँ चिन्हैत छथि।

ली वेनचाओक समूहमे भारतीय नामसभक वर्तनी मिलान करबाक अनुरोध आ शशांकक 'भेजू, हम मिलान क' देब' प्रतिउत्तर भेटैत अछि। संलग्नकमे सामान्य भुगतान-शीर्षक अछि, राशि ढाँपल अछि। एतय 'सत्यापित' क्रियाक अर्थविश्लेषण आवश्यक अछि: नामक रोमन-देवनागरी रूप आ सेवा-विवरणक भाषिक मिलान कएल जाएब बैंक-खाता अथवा वास्तविक लाभार्थीक पहचान सत्यापित करबाक बराबर नहि। एहि भाषिक क्रियाक व्याप्ति बढ़ेलासँ कागजमे भूमिका बदलि सकैत अछि। अनुवादक उपन्यास एहि छोट कर्म-संज्ञाक भीतर आर्थिक उत्तरदायित्वक पैघ अंतर देखबैत अछि।

एक अनुवाद-मसविदाक कात शशांकक डिजिटल टिप्पणी अछि—भारतक पाठक लेल मूल जोखिमक कठोर भाषा नरम कऽ सेवा-भाषा रखबाक सुझाव। ई अध्याय ६४क अदालतक आत्मस्वीकृतिक अंकीय समर्थन अछि। आलोचनाक लेल ई महत्त्वपूर्ण अछि जे साक्ष्य नायकक हितमे मात्र नहि भेटैत: अपराधक विशाल आरोप सिद्ध नहि होएबाक संग ओकर वास्तविक पेशागत विकृति ठोस बनैत अछि। 'मूल अर्थ नर्म केनाइ' आ 'आर्थिक स्वामी होयब'क अन्तर नैतिक जिम्मेदारी कैं शून्य नहि बनबैत, ओकर विषय स्पष्ट करैत अछि।

भुगतान-सन्दर्भक दोसर सन्देशमे शशांक अपन शुल्क अन्य भुगतानसँ अलग रखबाक आ दोसरा हिसाब नहि पठेबाक आग्रह करैत अछि। ई उपलब्ध क्षणमे भूमिका-सीमाक संकेत अछि; समस्त पुरान लेनदेनसँ पूर्ण असम्बद्धताक प्रमाण नहि। शशांक स्वयं संभावित सम्बन्धक स्तर गनैत अछि—बैठकमे देखब, शीर्षक अनुवादब, सूची प्राप्त करब, निर्णय लेब। एहि आत्म-परीक्षणमे नायक अपन अनुकूल साक्ष्यकैं सेहो अनुपातसँ बाहर नहि बढ़बैत। उपन्यास दोषसिद्धि आ निर्दोषताक दुनू अतिविस्तारसँ दूरी राखैत अछि, जाहिसँ जाँचक नैतिकता द्विदिश बनैत अछि।

पुरान लैपटॉपक 'India coordination' नामक संचिका अध्यायक सबसे सशक्त वस्तु-प्रतीक अछि। भीतर भाषा-मसविदा, यात्रा-सूची, बैठकक प्रति आ भुगतान-सारांशक चित्र अछि; शीर्षक मात्रसँ आर्थिक नियन्त्रण नहि बनैत। शशांक स्वयं मानैत अछि जे संचिकाक पैघ नाम अपन काजकैं पैघ बनाकऽ देखेबाक अभिलाषासँ जुड़ल छल। एहि क्षणमे शीर्षक आ भीतरक

सामग्री बीचक अन्तर उपन्यासक स्वयं नाम 'अनुवादक'क आलोचनात्मक प्रतिध्वनि बनैत अछि: पदवीसँ कार्य निर्धारित करबाक बदला वास्तविक क्रियासँ पदवीक सीमा निर्धारित करबाक आवश्यकता अछि।

एक अन्य संचिकामे 'अन्तिम लाभ ककरा भेटैत अछि' प्रश्नक अनुवाद कठोर रूपमे भेटैत अछि। ई महत्त्वपूर्ण विपरीत साक्ष्य अछि—शशांक सभ ठाम अर्थ नर्म नहि केने छल। राघवक सावधानीक बादक मसविदा होयबाक अनुमान ओ करैत अछि, मुदा समयसंगति स्वतंत्र रूपसँ पक्का नहि। लेखक एहि एक उदाहरणसँ नायकक सभ कृत्य उचित नहि ठहरबैत; ओ केवल एकरूप नियत आरोपणक अतार्किकता देखबैत छथि। विशिष्ट सन्दर्भ बदलला पर भाषिक कर्म सेहो बदलैत अछि; पात्रक अध्ययनमे एके दोषक सार्वभौमीकरण उचित नहि।

अन्तिम सन्देश-श्रृंखलामे जन्मदिनक भोज, साम्हिनक मेज, विशेष भारतीय अतिथि आ 'Indian Idol' कार्यक्रमक कलाकारक चर्चा अबैत अछि। एहि ठाम कथावस्तुक स्वर बदले लगैत अछि—मुहरबन्द कागजक संग प्रतिष्ठा, धन, मंच आ दृश्यात्मक भव्यताक आकांक्षा अगिला खण्डक तैयारी करैत अछि। शशांक ओहि भोजक स्मरणमे भाषा, प्रसिद्धि आ शक्तिक एके मेजपर बैसबाक आकर्षण स्वीकारैत अछि। मुदा आदित्य एहि भोजक सन्देशकेँ एखन आर्थिक अपराधक सम्बन्ध नहि मानैत; अगिला सत्रमे विक्रेता-श्रृंखला वा स्वामित्वक कड़ी भेटत तँ परीक्षण आवश्यक होयत।

कलात्मक उपलब्धि ई जे जाँचक पैकेट, प्रमाणित प्रतिरूप, फाइलक नाम आ शशांकक आत्मस्वीकृति मिलि महत्त्वाकांक्षाक 'अंकीय हस्ताक्षर' बनैत अछि। मृणालक संवादमे 'तेरहम दर्पण' कहला पर शशांक 'अपनहि लिखल नाम' कहैत अछि; दर्पण-रूपक अन्तर्राष्ट्रीय चमकसँ हटि स्व-निर्मित पहचान पर टिकैत अछि। सीमा ई अछि जे डिजिटल प्रतिरूपक तकनीकी संरक्षणक प्रक्रिया केवल प्रारम्भिक संकेत धरि सीमित रहैत अछि, आ आदित्यक प्रश्न कतोक ठाम पुनरुक्त पद्धतिक ढंगमे चलैत अछि। तथापि कथाक अन्तिम वाक्य भोजक रोशनाइत प्रवेशक सुचिंतित संक्रमण अछि; प्रमाणक संकीर्ण कोठलीसँ सामाजिक तमाशाक विस्फोट दिस कथा बढ़ैत अछि।

## अध्याय ६१-६५ : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — अर्थक सीमा, अभिलेखक वंश आ महत्त्वाकांक्षाक डिजिटल रूप

एकसठिम सँ पैंसठिम अध्याय धरि ‘मकाऊक दर्पण’क अन्तिम पाँच खण्ड एक विशिष्ट ज्ञान-यात्रा रचैत अछि। प्रारम्भ विधिक गोपनीयताक बाह्य सूचीसँ, दोसर पड़ाव कर-जाँचक परस्पर भिन्न प्रसार-सूचीसँ, तेसर सार्वजनिक समाचारक कतरल पाठमे, चौठ न्यायालयक प्रतिपरीक्षामे आ पाँचम प्रमाणित अंकीय प्रतिरूपमे पहुँचैत अछि। प्रत्येक पड़ाव शशांकक पुरान भाषिक भूमिका नया वस्तुसाक्ष्यक संग देखबैत अछि। एहि रूपमे कथानक निरन्तरता मात्र घटना सँ नहि, अभिलेखक रूप बदललासँ बनैत अछि।

अध्याय ६१मे ‘विधिक टिप्पणी समाहित’ कैं ‘कानूनी स्वीकृति’ मानबाक चूक अछि; अध्याय ६२मे ‘लीक सन्देश’ कैं स्वतन्त्र सत्यापनबिना आधिकारिक स्थिति मानल गेल। पहिल चूक संस्थागत वर्गक अदला-बदली अछि; दोसर स्रोतक विश्वासनीयताक चूक। दुनू मे शशांक अपन सुविधाजनक व्यावसायिक गति चाहैत अछि। मुदा पहिल प्रसंगमे ओकर अपना बनाओल नरम सारांश उपलब्ध अछि, दोसरमे दोसरक सन्देश आ नायकक सहायक-नोट अछि। एहि स्रोतभेदसँ नैतिक त्रुटिक प्रकृति स्पष्ट होइत अछि।

अध्याय ६२क प्रेषण-सूची आ प्रसार-सूची बीचक अन्तर अध्याय ६३क मूल मुहरबन्द पाठ आ सार्वजनिक समाचार बीचक अन्तरक पूर्वरंग अछि। पहिल रूपान्तरमे अभिलेखीय संलग्नक घटैत अछि, दोसरमे व्याकरणक सावधानीसूचक पद। दुनू स्थिति परिणाम बदलैत अछि, मुदा एकमे कारण असिद्ध, दोसरमे पाठगत अर्थ-विकृति तुलनासँ प्रत्यक्ष देखाओल गेल अछि। कारण, कर्ता आ उद्देश्य तइयो स्वतंत्र प्रश्न रहैत अछि। ई द्वि-स्तरीय निष्कर्ष उपन्यासक मुख्य तर्कसंगति अछि।

अध्याय ६३मे बारम्बार हेरायल ‘भाषिक’ आ ‘स्वतंत्र सत्यापनक अधीन’ सन पद अध्याय ६४मे सरकारी अधिवक्ताक प्रश्नक वस्तु बनैत अछि। एहिसँ समाचार-निर्मित कथन न्यायालयीय परीक्षाक विषय होइत अछि। एक ठाम सवाल उठैत अछि—अभिलेख आ समाचारक पाठगत वंश की अछि; दोसर ठाम—मानल गेल तथ्यसभ सँ सक्रिय वित्तीय समन्वयकक निष्कर्ष उचित

अछि कि नहि। पाठालोचना आ प्रमाणमीमांसा एही बिन्दुपर प्रत्यक्ष मेल खाइत अछि, मुदा स्रोत-व्यक्तिक पहचान एखन अनिश्चित अछि।

अध्याय ६४क अदालतमे स्वीकारल नर्म अनुवादकेँ अध्याय ६५क लैपटॉप टिप्पणी समर्थन दैत अछि। पहिने नायक कहैत अछि जे ग्राहकक सुविधा लेल जोखिमक मूल पद 'मनोरंजन सेवा' दिस बदललक; पाछाँ ओकर डिजिटल टिप्पणी ओहि अभिप्रायक ठोस निशान बनैत अछि। दोसरा दिशामे अध्याय ६५क लाभकारी स्वामित्व सम्बन्धी कठोर प्रश्न देखबैत अछि जे सभ अनुवाद एकहि ढंगसँ विकृत नहि छल। एतय पुष्टि आ प्रतिकूल उदाहरण दुनू चाही—एक घटना सम्पूर्ण चरित्रक एकरूपी सिद्धान्त नहि बनाओल जाए।

शशांकक समग्र मनोविज्ञानमे 'भीतरक लोक' बनबाक आकांक्षा, अधिकारसँ बेसी व्यापक पद, महत्त्वपूर्ण लगबाक लालसा आ अपन डींगक सार्वजनिक परिणाम लगातार रूप बदलैत अछि। अध्याय ६१मे बैठक नहि रुकय, एहि लोभसँ सावधानी नर्म होइत अछि; ६२मे अनुकूल सन्देश स्रोतबिना स्वीकार होइत अछि; ६३मे पुरान डींग सार्वजनिक शंकाक सामाजिक अवसर बनैत अछि; ६४मे नायक सभक साम्हिन दोषक सही नाम कहैत अछि; ६५मे ओहि दोषक शब्द स्वयं उपकरणक प्रतिरूपमे उघड़ैत अछि। एहि क्रममे 'अनुवादक' परिचय केवल पेशा नहि, निर्मित आत्मछविक आलोचना बनैत अछि।

मृणाल पाँच अध्यायक भीतर मित्रताक स्थिर प्रतिपक्ष अछि। ओ कानूनक अन्तिम व्याख्याता नहि; सहज प्रश्न पूछैत अछि—स्रोत के कहल, सब आरोप मिथ्या अछि कि, अपन दोष आ दोसराक आरोप कतेक अलग? अध्याय ६३क चारि शीर्षकवला कोरा पन्ना आ अध्याय ६५क 'तेरहम दर्पण'क संवाद बीच मानवीय निरन्तरता अछि। आदित्य विवेचनक संस्थागत रूप छथि; राघव पेशागत सीमाक प्रतिनिधि; निचला अधिकारी अभिलेखीय श्रमक आहत सामाजिक पक्ष। पात्रसभक ई स्थान-विभाजन उपयोगी अछि, यद्यपि हुनकासभक भाषा कखनो एके प्रमाणवादी सूत्रमे मिलि जाइत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रमे औचित्यक प्रश्न सभसँ महत्त्वपूर्ण उभरैत अछि—कथनक बल प्रसंगक बलसँ अधिक नहि हो। ध्वनि-पक्षमे मकाऊक रातिक इजोत आ लैपटॉपक छोट फाइल-नाम नायकक महत्वाकांक्षाक अनकहल बोध जगबैत अछि। वक्रोक्ति ई अछि जे जे भाषा नायककेँ पैघ व्यक्तिक रूप देबाक साधन छल, वही भाषा अदालतमे ओकर मापक बनि ठाढ़ अछि।

रसात्मक क्रम भय सँ लज्जा, लज्जा सँ करुणा आ सीमित आत्मशान्ति दिस बढ़ैत अछि। प्रश्नोत्तरक आवृत्तिक बावजूद वस्तु-प्रतीक एहि भावक्रमकेँ थामैत अछि।

नव्य न्यायीय पद्धतिमे अर्थापत्ति, शब्दप्रमाण, अनुमान, व्याप्ति आ हेत्वाभास सतत प्रश्नोत्तरमे सक्रिय अछि। मुदा ई शब्द केवल रचनाक सजावट बनि जायत जँ प्रत्येक प्रसंगमे निष्कर्ष एकेँ तरह बाँटल जाए। एहि खण्डमे चिह्नक भेद ठोस अछि: मसविदाक लेखकत्वक समयक्रम, कर-सूचीक संलग्नक, समाचारक साझा वर्तनी-त्रुटि, अदालतक स्वीकार, प्रमाणित उपकरणक खाता-समय-मिलान। एहि भिन्न साक्ष्यसँ पद्धति जीवित रहैत अछि। सावधानी तखन साहित्यिक उपलब्धि बनैत अछि, जखन शशांक अपन प्रतिकूल तथ्यसेहो स्वीकारैत अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे मकाऊ, भारतीय आयुक्तालय, दिल्लीक न्यायालय, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक कक्ष आ समाचार-माध्यमक इतिहास एकहि दोष-श्रृंखलाक पूर्वनिर्णय नहि। यात्रा, सन्देश, कागज, समयचिह्न आ अधिकारक सम्भावित छेदन एक-एक कऽ पढ़बाक आवश्यकता अछि। एहि दृष्टिमे कियो करार पढ़लक, कियो सावधानी लिखलक, कियो नोट नरम केलक आ कियो समाचार छापलक—दुनिया एक, क्रिया अनेक। ‘साथ-साथ उपस्थित’ होयब आ ‘समान उद्देश्य’ होयब बीच भेदक संरक्षण एहि खण्डक शोध-मूल्य अछि।

समूचा पाँच अध्यायक कलात्मक सीमा सेहो स्वीकारब आवश्यक अछि। बहुत विस्तार प्रमाण-तर्कक पुनरुक्त मंचनमे लगैत अछि; न्यायालय, पूछताछ आ कापी-सूत्रक विन्यास बारम्बार समान गति दैत अछि। चीन-मकाऊक स्थानीय जीवन, भारतक संस्थागत आन्तरिक दबाव आ समाचारकर्मीसभक स्वतंत्र मनोविज्ञान अपेक्षाकृत कम दृश्यरूप पबैत अछि। तइयो पाठगत कतरन, समयान्तर, अदालतक प्रतिकूल स्वीकृति आ डिजिटल फाइल-नाम सन विविध वस्तु-प्रमाण ई पुनरावृत्तिक भीतर वास्तविक भेद रचैत अछि।

कथाकालक विन्यास सेहो तुलनाक योग्य अछि। अध्याय ६२मे वर्तमानक प्रेषण-सूचीक बीच मकाऊक पुरान राति स्मृतिरूपेँ प्रवेश करैत अछि; अध्याय

६३मे तात्कालिक समाचारक प्रतिक्रिया पछिला अनुवादक स्मृतिक नैतिक अर्थ बदलि दैत अछि; अध्याय ६५मे पुरान सन्देश फेर वर्तमान साक्ष्य बनैत अछि। एके घटना पहिने अनुभव, तकर बाद स्मरण आ अन्ततः जाँचक अभिलेखरूपेँ पढ़ल जाइत अछि। कथनक कालक्रम एना शशांकक विश्वसनीयताकेँ कठोर बनबैत अछि, मुदा पात्रक भीतरक अनिश्चितता पूर्णरूपेँ मिटबैत नहि।

पात्रक दृष्टिबिन्दुक असमानता महत्वपूर्ण अछि। पाठक शशांकक लाज, भय आ अपना वाक्यक स्मृति भीतरसँ देखैत अछि; मुदा आदित्यक मन, राघवक कानूनी आशंका, निचला अधिकारीक पारिवारिक चिन्ता वा ली वेनचाओक वास्तविक मंशा ओहि रूपेँ खुलैत नहि। तेँ कथा शशांकक आत्मज्ञानक विकासमे विश्वसनीय रहितो सभ आरोपित सम्बन्धपर सर्वज्ञ निर्णय देबाक दावा नहि करैत। एहि केन्द्रित दृष्टिबिन्दुक लाभ मनोवैज्ञानिक सघनता अछि; सीमा दोसर पात्रसभक स्वतंत्र जीवन-विश्वक अपेक्षाकृत अल्प विस्तार।

एक आर महत्त्वपूर्ण अन्तर ‘नाम’क अछि। अध्याय ६१मे ‘विधिक टिप्पणी’क नाम ‘स्वीकृति’ बनबैत अछि, ६२मे ‘प्रश्न नरम’ नामक समाचार स्वयं तथ्यक रूप लैत अछि, ६३मे ‘भाषिक सम्पर्क’क नाम ‘धन-समन्वयक’ होइत अछि, ६४मे नायकक ‘डींग’केँ अधिकारक कबूलनामा पढ़बाक प्रयास अछि, आ ६५मे ‘India coordination’ संचिकाक नाम भीतरक विविध काजसभपर अधिकार जमबैत देखाइत अछि। एहि क्रममे भाषिक नामकरण केवल अभिव्यक्ति नहि; सामाजिक सम्मान, संस्थागत वर्गीकरण आ दोषारोपणक उपकरण बनैत अछि।

अन्ततः अध्याय ६१-६५ उपन्यासक नैतिक विचारकेँ दू पक्षमे एक संग टिकबैत अछि: शशांक अपन अनुवादक विकृतिक उत्तरदायित्व सँ नहि भागि सकैत; ओकर अपन दोष अथवा महत्त्वाकांक्षा असिद्ध व्यापक अपराधक प्रमाण सेहो नहि बनि सकैत। पैंसठिम अध्यायक जन्मदिनक भोजक सन्देश ई संतुलनकेँ नव सामाजिक मंच पर ल’ जाइत अछि। अगिला खण्डमे आतिथ्य, धन, प्रसिद्धि आ जनदृष्टिक चमक कथानककेँ घेरत, मुदा एहि पाँच अध्यायमे अर्जित मूल-पाठ, स्रोत आ निष्कर्षक भेद ओहि चमककेँ पढ़बाक आवश्यक कसौटी बनि रहल अछि।

## अध्याय ६६ — भोज, देवता, अपमान १ : मंचक प्रतिभा, खर्चक रिक्त स्तम्भ आ स्वामित्वक अनिर्णय

छियासठिम अध्याय कथाक प्रमाण-दृश्यकेँ संगणकक वित्तीय सूचीसँ एक मोट क्रीम रंगक जन्मदिन-निमन्त्रण-पत्र दिस घुमबैत अछि। पत्रक सुनहला अक्षर, दिल्लीक महँगा आयोजन-स्थलक पुष्प-सज्जा, काँच आ इजोत—ई सभ शशांकक सामाजिक आरोहणक कल्पना जगबैत अछि। निमन्त्रणमे ओकर नाम ‘विशेष भाषिक अतिथि’ अछि, मुदा ओ अपन स्मरणमे मंच, कलाकार, विदेशी अतिथि आ तालिक केन्द्र बनि गेल छल। नायकक भीतरक ‘मंच हमर’ भाव आ आधिकारिक निमन्त्रणक सीमित भूमिका बीचक विरोध अध्यायक आरम्भे कथात्मक प्रेरणा रचैत अछि।

आदित्य मिश्र आयोजनक चमक नहि, करार आ विक्रेता-श्रृंखला देखबाक आग्रह करैत अछि। सेवा-व्यवस्था करनिहार भारतीय संस्था, आतिथ्य-विक्रेता, कलाकार-समन्वयक आ भुगतान करनिहार अलग कम्पनीक नाम अछि। शशांक मंचीय भाषिक परिचय, अतिथिक चीनी नामक उच्चारण आ सेवा-विवरणक किछु पंक्तिक अनुवाद मानैत अछि; पूरा खर्च वा करारक निर्णयाधिकार नहि। एहि अन्तरसँ आयोजनक दृश्य-सत्ता आ आर्थिक-सत्ता अलग होइत अछि। कथा समारोहकेँ स्वतः दोषयुक्त व्यापारक रूप नहि दैत, ओकर संस्थागत सम्बन्धक जाँच खुलल रखैत अछि।

एक लोकप्रिय गायकक प्रस्तुति सम्बन्धी मसविदा देखाओल जाइत अछि; कलाकारक नाम ढाँपल अछि, कारण प्रश्न कलाकारक परिचय नहि, बुकिंग-श्रृंखलाक अछि। शशांक मैंडरिन, कैंटनिज आ मिश्रित हिन्दी-अंग्रेजीमे मंचीय परिचय देने छल। कलाकारक प्रस्तुति, तालि आ सार्वजनिक चित्र वास्तविक घटना अछि; कलाकार आर्थिक संरचना जानैत छलाह अथवा कथित अवैध व्यवसायमे सहभागी छलाह, से एहि साक्ष्यसँ सिद्ध नहि। ई भेद सांस्कृतिक प्रसिद्धिक शोषण करनिहार आरोप-संस्कृतिक प्रतिवाद अछि। प्रसिद्धि देखिते अपराधक अनुमान लगायब युक्तिसंगत नहि।

मंचपर 'यू आर द ब्रिज' सुनबाक स्मृति शशांकक आत्मनिर्माणक सूत्र अछि। ओ एक बेर अपन बहुभाषिक प्रतिभाक यथार्थ गर्व अनुभव करैत अछि; दोसर बेर ओहि गर्वकेँ अतिथिक प्रशंसा, मंचक नियंत्रण आ व्यवसायिक शक्ति पर विस्तार दैत अछि। 'भोज हमरा बिना सम्भव नहि छल' सन पुरान सन्देश ओकरा स्वयं शाब्दिक अतिशयोक्ति लगैत अछि। तर्कक कसौटी पर जँ पूरा आयोजन ओकरा पर निर्भर रहितय, तँ व्यवस्थापक, कलाकार आ भुगतानकर्ताक अलग करारक बीच ओकर आदेशक स्पष्ट कड़ी होयबाक चाही छल। एहन प्रमाण एखन नहि देखाइत।

उलटा अतिवादी व्याख्या सेहो टूटैत अछि। शशांककेँ केवल सामान्य अतिथि मानल जाए तँ भाषिक सेवा-शुल्क, अनुवाद-मसविदा, मंचीय सन्देश आ उच्चारण-जाँचक प्रत्यक्ष भूमिका बुझायल नहि जा सकत। एहि कारण लेखक मध्यवर्ती निष्कर्ष चुनैत छथि—वास्तविक भाषिक उपयोगिता, किछु समन्वय, मुदा सम्पूर्ण आयोजना वा वित्तक संचालन नहि। नव्य न्यायमे तर्क केवल बचावक औजार नहि; लाभदायी आ अलाभदायी दुनू अतिशयोक्ति पर समान प्रश्न उठबाक चाही। ई सममित कसौटी शशांकक आत्मपरीक्षाकेँ विश्वासयोग्य बनबैत अछि।

विक्रेता-श्रृंखलामे A आयोजन-करार, B कलाकार-व्यवस्था, C आतिथ्य-विक्रेता आ Dक माध्यमसँ प्रतिपूर्ति देखाइत अछि; Dक वास्तविक लाभकारी स्वामीक सत्यापन शेष अछि। एहि सूचीक अक्षर कथामे ज्ञानक अपूर्ण स्थिति चिन्हैत अछि; ककरो सार्वजनिक नामक विकल्पमे काल्पनिक स्वामी भरबाक अनुमति नहि। Dक खर्च देबाक तथ्य आर्थिक सम्बन्धक सम्भावना दैत अछि, मुदा ओकर स्वरूप प्रायोजन, प्रतिपूर्ति वा तेसर पक्षक सेवा-भुगतान हो सकैत अछि। रिक्त लाभकारी-स्वामित्वक कोष्ठक आरम्भक सुनहला निमन्त्रणसँ बेसी निर्णायक प्रतीक बनि उठैत अछि।

चित्र-संचिकाक दृश्य नायकक भीतर दोहरा भाव उठबैत अछि। एक फोटोमे ओ मंचपर, दोसरमे ली वेनचाओ दूरक मेज पर, आ राघव जेकाँ लगनिहार एक अस्पष्ट आकृति अछि जकर पहचान आदित्य प्रमाणित नहि मानैत। समाचारक 'जुआ-साम्राज्यक जन्मदिन भोजमे भारतीय समन्वयक' सन शीर्षक तस्वीरक प्रमाण-क्षेत्र व्यापक बना दैत अछि। शशांक फोटो देखिके

लजाइत सेहो अछि आ पुरान तालिक गर्व अनुभव सेहो करैत अछि। एहि द्वैतमे मनुष्यक वास्तविक प्रतिभा आ सत्ताक मोहक विच्छेद कलात्मक रूपेँ उभरैत अछि।

मृणालक 'सावधान रह' छोट उत्तरक संग नायकक बहुभाषी विजयक डींग तुलना कएल गेल अछि। मित्रक तत्कालीन चेतावनी धन-शृंखलाक ज्ञानसँ जन्मल नहि, शशांकक बढ़ैत आत्ममोहक अनुभवसँ जन्मल छल। ई समयसापेक्ष भेद जरूरी अछि: पछिला जाँचक सूचना पहिनुक मृणालक मानसिक अवस्थामे मनमाने नहि पढ़बाक चाही। मित्रताक दृष्टि नायकक आत्मवर्णन पर प्रश्न उठा सकैत अछि, मुदा आपराधिक संरचनाक साक्ष्य बनि स्वतः नहि जाइत।

भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ भोजक दृश्य उत्साह, शृंगारिक सज्जा आ वीरभावक मिथ्या-संकेत जगबैत अछि; पछिला शर्म करुणा आ शान्ति दिस ओहि प्रभावकेँ मोड़ैत अछि। 'भाषा हमरा देवता बना देलक' कहबाक विडम्बना एतय रूपक मात्र नहि, सामूहिक प्रशंसा सँ उत्पन्न अधिकार-भ्रम अछि। मंचक तालि आ खाताक रिक्त कोष्ठक बीच ध्वन्यात्मक विरोध सशक्त अछि। दुनू दृश्य समान रूपेँ स्मरणीय छथि, मुदा वास्तविक निर्णय लेल तालिक अपेक्षा लेखाक सम्बन्ध अधिक उपयोगी अछि।

अध्यायक सीमा ई अछि जे व्यवस्था A–Dक आर्थिक भेद तीक्ष्ण होइतो कलाकार, आयोजनक कर्मचारी आ अतिथिक स्वतंत्र अनुभव कम उभरैत अछि। किछु प्रश्न पुनः 'उपस्थिति स्वामित्व नहि'क सूत्र पर घुमैत अछि, जाहिसँ कथा अंशतः शोध-दृष्टान्त बनैत अछि। तथापि रचनाक उपलब्धि अधिक ठोस अछि: सामाजिक वैभवक इजोतक भीतर बहुभाषी प्रतिभाक असल सुख बचल रहैत अछि, आ ओकर सत्ता-भ्रमक आलोचना सेहो चलैत अछि। अन्तिम समेकन 'प्रतिभा आ सत्ता कैँ एक बुझि लेलहुँ' अगिला मित्रता-कठोरताक प्रसंग लेल उचित सेतु अछि।

## अध्याय ६७ — भोज, देवता, अपमान २ : मृणालक उपस्थिति, मित्रताक उपयोग आ धन-सम्बन्धक सीमा

सतसठिम अध्यायमे भोजक बड़का दृश्य आर्थिक अभिलेख आ दू मित्रक बीचक सम्बन्धमे सिमटि जाइत अछि। आदित्यक मेजपर आयोजन-व्ययक सारांश, भुगतान-द्वारक समेकित तालिका, खाताक संक्षिप्त नाम, शशांक-मृणालक पुरान सन्देश आ ‘अन्तिम लाभार्थी सत्यापन शेष’ टिप्पणी एक संग अछि। एतय भावुक सम्बन्धक परीक्षा प्रश्नोत्तरक सख्त मर्यादामे कएल जाइत अछि। आरम्भिक सूत्र—मित्र होयब न अपराधक प्रमाण, न निर्दोषताक —कैं लेखक दूनू पात्रक अनुभवसँ टकरबैत छथि।

किछु भुगतान मध्यवर्ती भारतीय खातासभक दिशामे गेल अछि; जाँचकर्ता हुनका ‘सम्भावित मध्यवर्ती’ कहैत छथि। शशांक ओहि सम्भावनाकैं कथित म्यूल खाताक सिद्ध पहचान नहि मानैत। सेवा-भुगतान, प्रतिपूर्ति, खाता-मार्ग आ अन्तिम लाभार्थीक वास्तविक अधिकार अलग-अलग अवस्था छथि। एकठाम M.K. अक्षर आ ‘अतिथि सहायता’ शब्द अछि; मृणाल कर्ण अपन नामक आद्याक्षर मेल खाइतो लेखकत्व वा भुगतान-स्वीकार नहि मानैत। एक आद्याक्षर सँ विशिष्ट व्यक्तिक आर्थिक भागीदारीक अनुमान ओहि नियमक उल्लंघन करैत जे अध्याय निरन्तर सिखबैत अछि।

शशांक पुरान सन्देशमे ‘पैसावला लोक सभकैं बुझि गेलहुँ’, ‘तूँ रहिह, आगाँ काज बढ़त’ आ ‘भाषा, लोक, भुगतानक कागज—सभमे सहारा’ लिखने छल। एहि वाक्यसभमे आर्थिक ज्ञानक दम्भ अछि; वास्तविक खाता-चयन अथवा लाभार्थी निर्धारणक प्रमाण नहि। मृणाल तत्काल ‘काज कोन?’ पूछने छल, जे स्वयं जिज्ञासा अछि, गुप्त-सहमतिक स्वीकृति नहि। कथानक स्मरण, भाषिक आशय आ अभिलेख एक साथ राखैत अछि, मुदा ककरो भावी भूमिका पहिनुक वाक्य पर लादैत नहि।

मृणालक स्मरणमे शशांक चाहक दोकानपर ‘नाम नहि बुझ, प्रवाह बुझ’ कहने छल। मृणाल वाक्यक भावकैं विश्वसनीय मानैत अछि, शब्दशः रूपक स्वतन्त्र पुष्टि चाहैत अछि। एहि मौखिक साक्ष्यक सीमा स्वीकारब पात्रक नैतिक विशेषता अछि। शशांक कहैत अछि जे प्रवाह बुझबाक डींग आर्थिक

सञ्चालनक क्षमता सिद्ध नहि करैत। आदित्यक दू स्तम्भ—'ज्ञान' आ 'नियन्त्रण'—एहि दृश्यकेँ रचनात्मक आकृति दैत अछि। कथामे जानकारी देखब आ निर्णय करबाक अधिकार बीचक रेखा अब व्यक्तिगत मित्रताक बीच उतरैत अछि।

एक तृतीय-पक्ष सेवा-प्रविष्टि आ दोसर नामक दिशामे जायत भुगतान-पथ अतिरिक्त सत्यापन माँगैत अछि। शशांक न सभ खाते निर्दोष कहैत अछि, न सभ मुखौटा। जँ वैध प्रतिपूर्तिक व्याख्या अछि तँ ओकर सहायक कागज भेटबाक अपेक्षा, आ जँ धन असम्बद्ध दिशामे बारम्बार जाय तँ वैकल्पिक सम्बन्धक प्रश्न बलबान होयत। समयक निकटताकेँ एक योजना मानब उचित नहि। नव्य न्यायीय तर्क एतय पूर्वनिर्णयक परिणाम जाँचैत अछि; साहित्यिक दृष्टिसँ ई मित्रसभक संवाद पर अनपेक्षित दबाव बनबैत अछि।

अध्यायक मार्मिक मोड़ अंकीय नोट अछि—'M साथ रहत; लोक हमरा बेसी गम्भीरता सँ लेत।' शशांक मानैत अछि जे ओकरा एकल अनुवादकक बदला दू भारतीयक 'दल' जेकाँ देखाबय मे रुचि छल। मृणाल 'तूँ हमरा ढाल बनबैत छलह?' पूछैत अछि; शशांक 'ढाल नहि, प्रतिष्ठा' कहि अपन उपयोगीकरणक दोष सँ बचि नहि सकैत। मित्रताक निजी विश्वासघात आ आर्थिक सहभागिताक प्रश्न एतय सर्वथा भिन्न अछि। मृणालक आहत स्वर न्यायालयक निर्णय नहि माँगैत, मानवीय सम्मानक पुनर्स्थापना माँगैत अछि।

आदित्य मृणालक निजी दुखकेँ साक्ष्य-सूचीमे ततेकहि राखैत अछि जतेक आर्थिक जाँचसँ सम्बन्धित हो। एहि छोट विराममे औचित्यक नैतिक मूल्य अछि: जाँचक कागज व्यक्ति-संबन्धक समूची पीड़ा अपना अधिकारमे नहि लऽ सकैत। शशांक अपन प्रतिष्ठा बढ़ेबाक लेल मित्रक उपस्थितिक उपयोग स्वीकारैत अछि, मुदा ओ स्वीकार मृणालक वित्तीय अपराध नहि बनैत। व्यक्ति द्वारा अनुभव कएल अपमान आ वित्तीय कर्तृत्वक कानूनी निष्कर्ष बीचका भेद कथा सघन करैत अछि।

भोजक सप्ताहक आसपास कथित अंकीय परिसम्पत्तिक वर्ग-सूची देखाओल जाइत अछि; विवरण सीमित अछि। शशांकक 'एक सप्ताह = एक योजना नहि' उत्तर प्रमाण-सम्बन्धक समयगत सावधानी अछि। मुदा लोभक पुरान क्रम ओ नहि नकारैत। भोजक बाद अगिला विदेशी यात्राक 'विशेष पहुँच'क वचन ओहि ठाम पाठक साम्हिन फेर अनत अछि। सामाजिक प्रदर्शनसँ

संस्थागत महत्त्व बनबाक मार्ग पर नायकक जीवन ठाढ़ अछि; मृणालक चेतावनी सुनल गेल छल, स्वीकार नहि।

कलात्मक रूपमे चाहक दोकानक कात दूनू मित्रक बिना रुकने चलब प्रभावशाली अछि। पहिने चाहक मेज अनेक स्पष्टीकरण आ हल्का विनोदक ठाम छल; एखन क्षमायाचना आ अभिलेखक कठोरता ओकरा सँ पाँति-पाँति दूरी बना रहल अछि। 'क्षमायाचना मित्रता बचा सकैत अछि; अभिलेख नहि बदलैत' कथन करुण रसक मर्म अछि। ई दृश्य लेखकक प्रमाणवादी तर्ककेँ मानवीय परिणाम दैत अछि।

सीमा ई जे आर्थिक वर्गीकरणक संवादमे आदित्य आ शशांक कखनो एके भाषामे एक-दोसराकेँ अनुमोदन करैत छथि; कथाक स्वाभाविक संकोच कम पड़ैत अछि। तथापि मृणालक 'तऽ दोस्ती उपयोग केलह' सन प्रतिवाद एहि पुनरावृत्तिक बीच स्वतंत्र मानवीय आवाज अछि। अध्यायक विशेष उपलब्धि एहि बातमे जे नायक अपन वास्तविक नैतिक चोटक जिम्मेदारी स्वीकारैत अछि, बिना दोसरा व्यक्तिपर असिद्ध अपराधक छाया डालने।

## अध्याय ६८ — भोज, देवता, अपमान ३ : विशेष पहुँचक मोह आ अतिथि-अधिकारक वास्तविक सूची

अड़सठिम अध्याय भोजक मंचसँ मकाऊक बन्द बैठक धरि आकांक्षाक गति देखबैत अछि। निमन्त्रणक भाषा ‘विशेष पहुँच’ कहैत अछि, मुदा औपचारिक बैठक-सूचीमे ‘सीमित अतिथि-प्रवेश’ अंकित अछि। शशांकक स्मरणमे विशेष शब्द पुरस्कार-जेकाँ उठैत अछि—भोजमे प्रशंसा पेल अनुवादक आब ‘भीतरक लोक’ बनय चाहैत अछि। कथानक एहि सूक्ष्म पदान्तरसँ सामाजिक प्रतिष्ठा आ प्रणाली-अधिकारक भिन्नता उद्घाटित करैत अछि।

यात्राक तिथि भोजक लगभग दू सप्ताह बाद अछि। टिकट विक्रेता-पक्षक यात्रा-व्यवस्थापक संस्था आ आवास अन्य सेवा-विक्रेता सँ उपलब्ध भेल; निमन्त्रणमे भाषिक सहायता आ प्रादेशिक उपयोगकर्ता-प्रतिक्रिया पर बन्द बैठक लिखल अछि। यात्रा, प्रायोजित खर्च आ मकाऊक स्थान स्वयं अपराधक प्रमाण नहि। मुदा नायक पहिनेसँ किछु जुआ-सम्बन्धी सामग्री देख चुकल छल—ई प्रतिकूल तथ्य ओ स्वयं स्वीकारैत अछि। एहि स्वीकारक कारण तर्क मात्र रक्षा-रणनीति नहि रहैत; वर्तमान घटनाक पूर्व ज्ञानक सीमा सेहो चिन्हल जाइत अछि।

बैठकमे ली वेनचाओ, दू चीनी प्रबन्धक, तकनीकी कर्मचारी, व्यावसायिक समन्वयक आ अन्य अतिथि छथि; राघव भसीनक नाम ओहि बैठक-सूचीमे नहि। एतय उपस्थित व्यक्तिक वर्गीकरण लेखकीय दृष्टिक ठोस आधार अछि। संगणक-पटलपर बहुभाषी ग्राहक-वाक्य, सेवा-शीर्षक आ किछु खेल/बाजी-सम्बन्धी सामग्री देखाओल गेल। तकनीकी कर्मचारी स्पष्ट कहैत अछि जे अतिथि केवल देखय, भाषिक टिप्पणी करय; सीधा परिवर्तन लेल प्रस्ताव लिखय, स्वीकृति दोसर स्तर पर अछि।

प्रणालीक अधिकार-सूचीमे सक्रिय विकल्प पाठ देखब, टिप्पणी देब आ प्रस्तावित अनुवाद अपलोड करब अछि। निष्क्रिय विकल्पमे प्रकाशन, भुगतान-संरचना, उपयोगकर्ता-प्रशासन आ प्रणाली-विन्यास अछि। एहन

सूची नायकक 'सर्वर पहुँच' सन पुरान डींगक बिपरीत साक्ष्य दैत अछि। मुदा ओ 'निष्क्रिय दर्शक' सेहो नहि छल, कारण अनुवाद प्रस्ताव अपलोडक वास्तविक भूमिका उपलब्ध अछि। एहि दोहरा निषेध—पूर्ण नियन्त्रण नहि, पूर्ण निष्क्रियता नहि—सँ समीक्षाकेँ ठोस मध्य निष्कर्ष भेटैत अछि।

'अतिथि-खाता वाला देवता' अध्यायक सर्वाधिक सफल वक्रोक्ति अछि। शशांक भाषा-जगतक पैघ व्यक्तिक भ्रममे अपन तकनीकी क्षमता, आर्थिक पहुँच आ संस्थागत आदेशक अधिकारकेँ एक मानि लेने छल। अतिथि-अधिकारक सूची ओकर स्वनिर्मित देवत्वकेँ सटीक आकारमे रखैत अछि। सामाजिक रूपक आ अंकीय सूची एक-दोसराकेँ प्रकाश दैत अछि; 'केवाड़ी खुलल'क अर्थ घरक मालिक भऽ जाएब नहि—ई बिम्ब पूर्व अध्यायसभक आत्मज्ञानसँ सम्बद्ध अछि।

मकाऊ पहुँचि शशांक अपन परिचितकेँ लिखैत अछि जे केवल अनुवादक नहि रहल, भारतक पूरा भाषा-पक्ष ओकर हाथमे आबि रहल अछि। ई स्वयं-वर्णनमे प्रतिष्ठा, बेसी काज आ आर्थिक सुविधाक संयुक्त लोभ अछि। ओ जानि-बुझि भूमिका बढ़ेबाक स्वीकार करैत अछि; मुदा एहि लोभसँ विशिष्ट अवैध धन-परिचालन स्वतः सिद्ध नहि। मनोवैज्ञानिक उद्देश्यक सम्भावना आ वस्तुगत अपराधक सिद्धि भिन्न प्रसंग छथि। लेखक नायकक दू प्रकारक लोभ—प्रतिष्ठा आ शुल्क—बीचक परस्पर प्रभाव देखबैत छथि, बिना ओकरा अनिवार्य आपराधिक निष्कर्ष बनाएने।

भ्रमक एक सार्वजनिक चित्रमे शशांक मकाऊ भवनक द्वारपर ली वेनचाओ संग अछि, समाचारमे एकरा 'गोपनीय सर्वर बैठक' कहल गेल। चित्र बन्द बैठकक उपस्थिति सिद्ध करैत, मुदा प्रशासकीय नियन्त्रण नहि। शीर्षकक किछु आधार अछि—प्रवेश बन्द छल आ प्रणालीक प्रदर्शन भेल—तइयो ओकर व्यापक अर्थ स्रोतसँ बेसी अछि। एहि मिश्र-सत्यक आलोचना उपन्यासक पूर्व समाचार-विमर्शकेँ नव दृष्टान्त दैत अछि। एखन वक्तव्यक पूरी तरह असत्य अथवा सत्य होयबाक बाइनरी सीमा असफल होइत अछि।

मृणालक गवाही एक अलग कसौटी दैत अछि। ओ तकनीकी अधिकार न जाँचने छल, मुदा 'विशेष' शब्दक नशा चिन्हैत छल। शशांक एहि समय अपना चेतावनी सुनबाक अवस्था नहि मानैत। प्रतिभा वास्तविक छल,

अवसर वास्तविक छल, मुदा उपलब्ध अधिकार जतेक छल ताहिसँ बेसी व्यक्तित्वक महिमा बनाओल गेल। भारतीय ध्वनि-दृष्टिसँ 'देवता'क हास्य-मिश्रित अर्थ आत्मव्यंग्य अछि; करुणाक साथ क्षीण हास्य तनावकेँ मानवीय बनबैत अछि।

अध्यायक एक सीमा अछि जे तकनीकी अधिकार-सूचीक मूल निर्णयप्रक्रिया या स्वतंत्र विशेषज्ञक प्रतिपरीक्षा दृश्य मे विस्तृत नहि अछि; पाठककेँ सूची आ आदित्यक मूल्यांकनपर भरोसा करबाक पड़ैत अछि। प्रमाण-समीक्षामे किछु ठाम शशांकक वाक्य अत्यन्त व्यवस्थित दार्शनिक उत्तर बनि जाइत अछि। तथापि सक्रिय बनाम निष्क्रिय अनुमतिक ठोस भेद उपन्यासकेँ अनावश्यक तकनीकी सनसनीसँ बचबैत अछि।

एहि अध्यायसँ अगिला विधिक परामर्शक समस्या स्वाभाविक रूपसँ निकलैत अछि। 'विशेष पहुँच' नाम अधिकार नहि छल, तहिना वकीलक उपस्थितिक नाम सम्पूर्ण विधिक स्वीकृति नहि होयत। लेखक भूमिकाक अतिविस्तारक समान मानसिक पद्धति दुनू क्षेत्रमे देखबैत छथि। ई सादृश्य उपन्यासक खण्डीय एकता दृढ़ करैत अछि।

## अध्याय ६९ — भोज, देवता, अपमान ४ : वकीलक नामक कवच आ अधिकारक सीमांकन

उनहत्तरिम अध्याय एखन भोजक चकाचौंधक संग विधिक गोपनीयताक सीमा फेर पढ़ैत अछि। आदित्य मूल कानूनी सलाहक विषयवस्तु नहि खोलैत, केवल बाह्य समयक्रम, स्वतंत्र व्यावसायिक सन्देश आ अनुवादित सारांश जाँचैत अछि। राघव भसीन स्पष्ट करैत छथि जे गोपनीयता अपराधक ढाल नहि, आ जाँचक सुविधामात्रक नामपर गोपनीय सलाह खोलब सेहो उचित नहि। कथाक नैतिक परिपाटी एतय एक पक्षक पक्षपोषण नहि, संवादक प्रकृतिक विवेचन अछि।

जन्मदिनक आयोजनमे कलाकार-दल, आयोजन-विक्रेता, विदेशी अतिथि-पक्ष आ विधिक समीक्षाक अलग श्रेणी एकहि समयक्रममे देखि शशांक ‘वकील पक्ष साफ क’ देलक; कार्यक्रम सुरक्षित अछि’ सन सन्देश लिखने छल। ओ स्वीकारैत अछि जे कानूनी सावधानीक जटिल कथनकेँ कार्यक्रम जारी रखबाक सुविधा लेल अधिक निश्चित बना देने छल। राघवक उपलब्ध अभिलेखमे एहन व्यापक स्वीकृति नहि। एहि ठाम भाषाक ‘निष्कर्ष’ बना देबाक कार्य ककरो पेशागत उपस्थितिक अधिकार अपन हाथमे लेबाक चेष्टा अछि।

शशांक अपन शब्द जानि-बुझि छोट केने छल, मुदा एहि संक्षेपसँ वास्तविक वकील व्यवसायिक निर्णयकर्ता बनि नहि जाइत। उलटे, शशांकक लिखल वाक्य राघवक प्रत्यक्ष वक्तव्य नहि बनि सकैत। विशेषाधिकारक प्रश्नमे संवादक उद्देश्य, सामग्री, प्रेषक-प्राप्तकर्ताक भूमिका आ वास्तविक सलाहक प्रकृति देखबाक चाही। वकीलक नाम एके संचारसूचीमे रहला मात्रसँ अतिथिक वाहन, भोजन-सूची वा कलाकारक आगमनकाल गोपनीय विधिक सलाह नहि होइत।

अध्यायक मध्यभागमे मकाऊक एक सत्रक समयक्रम अछि—विधिक सलाह, आधा घंटाक बाद व्यावसायिक बैठक, फेर भाषिक सारांश आ अलग भुगतान-चर्चा। उपस्थिति-सूचीमे राघव प्रारम्भिक भाग धरि छथि, पाछाँक भुगतान-सत्रमे नहि। शशांकक ‘विधिक पक्ष हमरा संग अछि; आगाँ बढ़ू’ सन्देश एहि विभेदकेँ हटा दैत अछि। राघवक सीधा कथन—अनुवादक हुनकर उपस्थितिकेँ

अपन निर्देश बना देलक—नायकक व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा आ पेशागत सीमाक टकरावकेँ मानवीय तीक्ष्णता दैत अछि।

सरकारी निरीक्षकक प्रश्न, कानूनी समीक्षा लगत्ते भुगतानक संरचना बदलल तँ सहभागिताक अनुमान किएक नहि, कारणता आ समय-सन्निकटताक भेद पर टिकल अछि। आदित्य बीचक तीन व्यावसायिक निर्णयक उल्लेख करैत अछि; समयक मेल निर्णयकर्ताक कड़ी नहि बतबैत। तर्कक अर्थ एतय मनपसन्द परिकल्पनाक अनिवार्य परिणाम खोजनाइ अछि: यदि वकीलक सलाह स्वयं भुगतान परिवर्तनक कारण हो, तकर अभिलेखीय चिह्न अपेक्षित होयत। बिना कड़ीक समकालिकता आपराधिक सहभागिताक प्रमाण नहि।

राघव ई संभावना सेहो खुलल रखैत छथि जे कानूनी सलाहक नामपर वास्तवमे व्यापारिक निर्देश नुकाओल जा सकैत अछि; एहन स्थिति मे नाममात्रक गोपनीयता ओकरा निर्दोष नहि बनाओत। एहि कारण पात्र एकतरफा स्वच्छताक प्रतिमा नहि, पेशागत नियमक विवेचक बनैत छथि। न्याय-पद्धति समान दूरी राखैत अछि—ककरो वकील होयब दोष नहि, मुदा जे कियो व्यापारिक क्रिया केने अछि तकरा ‘वकीलक कागज’ कहि छूट देल नहि जाए।

शशांकक भयक एक नव विस्तार अछि। पहिने ओ स्वयं बदनाम होयबाक डरमे छल; आब ओकरा डर अछि जे अपन प्रभाव-बढ़ेबाक वाक्यक कारण राघव, कलाकार आ मृणालक माथपर दोषक छाया पड़ि गेल हो। नामसभ ओकरा प्रतिष्ठाक कवच छल, मुदा कवच टूटला पर मार ओहि लोकपर पड़ि सकैत अछि जकर नाम ओ उपयोग केलक। ‘अपन देह पर अपन चोट’ सन अंतिम आत्मकथन ओकर चरित्रक एक स्पष्ट नैतिक संक्रमण अछि।

भारतीय औचित्य-दृष्टिसँ वकीलक नामक औचित्य विधिक सन्दर्भमे अछि; ओ नाम व्यापारिक क्रियाक सर्वव्यापक अनुमतिक प्रतीक बनि जाए तँ अर्थ-दोष होइत अछि। पश्चिमी आख्यानदृष्टिसँ एके घटना अनेक सन्देश-श्रृंखला आ समयक्रममे भिन्न आकार पबैत अछि। लेखक वकीलक मर्यादा आ अनुवादकक भाषा-प्रभुत्वकेँ साम्हिन रखैत छथि। राघवक कठोर प्रश्न नायकक लज्जाकेँ केवल दार्शनिक निष्कर्ष नहि, संबंधक क्षति रूपेँ देखबैत अछि।

रचनाक सीमा महत्वपूर्ण अछि। विशेषाधिकार सम्बन्धी प्रक्रियागत जटिलता न्यायालयक बाह्य सूची रूपमे परोक्ष रहैत अछि; संवादसभ कोनो वास्तविक पेशागत मतभेदक अपेक्षा बारम्बार समान विवेक पर पहुँचैत अछि। तइयो राघवक असन्तोष आ शशांकक मौन ऊष्मा जोड़ैत अछि। स्रोत-समीक्षाक दृष्टिसँ जे गोपनीय अछि तकर विवरण कल्पनासँ नहि भरबाक अनुशासन एहि अध्यायमे निरन्तर निभाओल गेल अछि।

अन्तिम दृश्य निचला आयुक्तालयक आरक्षण, कर-गुप्तचर सारांश आ ‘हवाला?’ ‘अंकीय परिसम्पत्ति?’क प्रश्नचिह्न दिस मोड़ैत अछि। वैयक्तिक प्रतिष्ठाक कवच सँ वित्तक अभिलेखक नवल अनिश्चितता धरि कथानक प्रवेश करैत अछि। प्रश्नचिह्न साहित्यिक दृष्टिसँ अनिर्णयक चिन्ह अछि, शोध-दृष्टिसँ अपूर्ण सत्यापनक। अगिला अध्याय एहि चिन्हक वास्तविक प्रमाण-मूल्य जाँचत।

## अध्याय ७० — हवाला आ बिटकॉइन : प्रश्नचिह्नक भाषा आ कर-अभिलेखक समानान्तर इतिहास

सत्तरिम अध्यायक शीर्षक ‘हवाला आ बिटकॉइन’ एहन दू भयप्रद आर्थिक शब्द साम्हिन रखैत अछि जकर उपस्थिति समाचार-संसारमे तत्काल अपराधक आभास दे सकैत अछि। मुदा पाठककेँ आदित्यक मेजपर तीन रंगक पर्ची देखाओल जाइत अछि—निचला आयुक्तालयक आरक्षण, ऊपरी कर-गुप्तचर सारांश आ भुगतान-मिलान। पहिल पत्रक कातमे लिखल ‘हवाला?’ आ ‘अंकीय परिसम्पत्ति?’क प्रश्नचिह्न निर्णायक अछि। जाँचक दिशा आ सिद्ध अपराधक बीचक दूरी शीर्षकक उग्रता सँ अधिक महत्वपूर्ण बनैत अछि। निचला अधिकारीक वर्णनमे सामान्य बिल-क्रमसँ नहि मिलैत किछु भुगतान-पथक भाषा आ अंकीय पते-जेकाँ प्रविष्टि भेटल, मुदा खाताधारक, निर्देशदाता, वास्तविक लाभार्थी अथवा नियन्त्रण प्रमाणित नहि छल। ओ एहि कारण प्रश्नचिह्न राखने छल, आरोप नहि। एहि अभिलेखीय संयममे आर्थिक तकनीकक सनसनीक बदला ज्ञानक सीमाक सम्मान अछि। उपन्यास पाठककेँ परिचालन-विधि नहि, प्रमाणक प्रश्न पढ़बैत अछि; ई विषयगत औचित्य विशेष महत्त्व रखैत अछि।

ऊपरी शाखाक सारांशमे प्रत्यक्ष कर-हानि एखन स्थापित नहि भेल आ प्रकरण निम्न प्राथमिकताक योग्य कहि सकबाक वाक्य अछि; निचला पर्चीक दू प्रश्न खुल्लमखुल्ला अनुपस्थित अछि। ई दुनू निष्कर्ष तार्किक रूपेँ परस्पर विरोधी आवश्यक नहि: कर-हानि न सिद्ध होयब, भुगतानक वैधता वा लाभकारी स्वामित्वक सभ प्रश्न समाप्त होयब नहि। यद्यपि प्रश्न हटबाक कारण शोधक विषय अछि। संक्षेप, क्षेत्राधिकार, प्राथमिकता, सामग्रीक अभाव आ जानि-बुझि नर्म करब—सभकेँ विकल्परूपेँ राखल गेल अछि।

अध्यायक महत्त्वपूर्ण संरचनात्मक समानता अध्याय ६२क आरक्षण-पत्र आ प्रसार-सूचीसँ अछि। एतय निचला अधिकारीक प्राप्ति-पावती छल, पर बादक प्रतिमे एक संलग्नक अनुपस्थित अछि। शशांकक तर्क पूछैत अछि—जँ जानि-बुझि हटाओल गेल तकर निर्णय-चिह्न कतय; जँ संकलन-त्रुटि, तखन

आन संचिकामे समान त्रुटि भेटैत अछि कि नहि? केवल एक संवेदनशील संलग्नक हेरायब शंका बलबान करि सकैत अछि, मुदा विशिष्ट व्यक्ति, उद्देश्य अथवा लाभ सिद्ध नहि करैत।

भुगतान-मिलानक पृष्ठमे आयोजन-विक्रेता, तृतीय-पक्ष सेवा, भुगतान-द्वार आ समेकित लेखाक अलग श्रेणी अछि। 'बाह्य समायोजन?' एक प्रश्नात्मक वर्गीकरण अछि, स्वतः अपराधी धन-पथक परिभाषा नहि। अंकीय पता उपलब्ध होयब ओकर वास्तविक स्वामी वा प्रयोजन नहि बतबैत। समान तिथि पर भोजक खर्च, सेवा-प्रतिपूर्ति आ अंकीय प्रविष्टि रहला सँ सम्बन्धक जाँच उचित होइत अछि; एके धन-श्रृंखलाक सिद्धि लेल वास्तविक सेवा, अन्तिम पाबनिहार आ आदेशक स्वतन्त्र कड़ी अपेक्षित अछि।

शशांकक अपन पुरान भाषिक सारांश—'कर-पक्ष एखन प्रत्यक्ष हानि नहि कहैत; भुगतानक किछु प्रश्न बाँकी, मुदा तत्काल संकट नहि'—एहि अध्यायक व्यक्तिगतरूपेँ कठिनतम प्रमाण अछि। निचला अधिकारीक सावधानी विस्तृत छल, मुदा 'तत्काल संकट नहि' शशांकक अपन शब्द छल। स्रोत कहिया भेटल, ऊपरी कागज ओहि समय ओकरा ज्ञात छल कि नहि—एहि बिन्दु पर स्मरण अस्पष्ट अछि। तइयो जोखिमक भार कम करबाक नायकक चयनक संकेत ठोस अछि। व्यक्ति पर व्यापक अपराधक आरोप असिद्ध रहितो ओकर भाषा ककरो सावधानी नर्म करि सकैत अछि।

निचला अधिकारीक कथन—ओ प्रश्न बचएबाक लेल टिप्पणी लिखैत छल, शशांक प्रश्न छोट करैत छल—कथाक गहींर नैतिक क्षण अछि। ई केवल आरोपक भाषा नहि, पेशागत श्रमक अवमाननाक अनुभव अछि। शशांक एहि अनुभूतिक सामने अपन उपयोगी देखायबाक लोभ स्वीकारैत अछि। मुदा अधिकारीक दुखक आधारपर ऊपरी शाखाक अनुचित समझौता सिद्ध नहि कएल जाइत। विश्वास टूटबाक व्यक्तिगत अनुभव आ संस्थागत दोषक प्रमाण अलग रहैत अछि; पूर्व खण्डक न्याय-विवेक एतय आत्मप्रतिकूल रूपेँ लौटैत अछि।

राघव भसीन कर-हानि आ आर्थिक अथवा अन्य आपराधिक जोखिमक वर्गक भेद पर पुनः बल दैत छथि। एतय नायक बुझैत अछि जे एक सन्दर्भक सीमित निष्कर्षकेँ 'सभ संकट समाप्त'क सार्वजनिक आश्वासन बनाओल अनेक लोकक निर्णय प्रभावित करि सकैत अछि। अनुवादककेँ वाक्य छोट

करबाक अधिकार तखनहि नैतिक रूपसँ उचित अछि जखन मूलक योग्यता-सूचक अर्थ सुरक्षित रहय। नव्य न्यायमे शब्दप्रमाणक सीमा आ औचित्य एही ठाम साहित्यिक उत्तरदायित्व बनि उठैत अछि।

शिल्पगत रूपसँ तीन रंगक पर्ची आ दू प्रश्नचिह्न सरल मुदा शक्तिशाली प्रतीक छथि। अध्यायक अन्तमे शशांक कापीमे लिखैत अछि जे कोन प्रश्न नुका गेल, से एखन असिद्ध; मुदा स्वयं कखनो प्रश्नक आवाज कम केने छल। ई वाक्य दोषारोपणक आसान संतोष छोड़ि आत्मालोचनाक कठिन स्तरपर पहुँचैत अछि। आगामी मुहरबन्द सामग्रीक समाचारमे बदलि जाएबाक भय पूर्व अध्याय ६३क विकृत कथनक स्मरण जगबैत अछि।

सीमा ई अछि जे कर-अभिलेखक अन्तरक जटिलता संवादमे अनेक बेर समान सूत्रक पुनरावृत्ति सँ व्यक्त होइत अछि; बाह्य आर्थिक संसारक स्वतंत्र पात्र, समयावधि आ संस्थागत कारणक विस्तृत दृश्य अल्प अछि। तथापि निचला अधिकारीक निजी आहत स्वर, शशांकक अनिश्चित स्मरण आ राघवक वर्ग-भेद एहि अध्यायकेँ मात्र दार्शनिक अभ्यास नहि रहय दैत। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे अलग शाखाक अभिलेख, विदेशी व्यावसायिक सन्देश आ नायकक अपना अनुवादक कर्तृत्व समानान्तर पढ़ल गेल अछि; एतय कारणक अभीष्ट कड़ी जाँच-बाँकी मानब शोधात्मक ईमानदारी अछि।

## अध्याय ६६-७० : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — भोजक दृश्य-सत्ता सँ वित्तीय प्रश्नचिह्न धरि

छियासठिम सँ सत्तरिम अध्याय ‘भोज, देवता, अपमान’क प्रारम्भिक संरचना रचैत अछि। भोजक सुनहला निमन्त्रण आ मंचसँ आरम्भ भऽ मृणालक निजी प्रतिष्ठाक चोट, मकाऊक सीमित अतिथि-अधिकार, वकीलक गोपनीय परामर्शक बाह्य वर्गीकरण आ अन्तमे कर-अभिलेखक ‘हवाला?’ प्रश्नचिह्न धरि कथा बढ़ैत अछि। पाँचू ठाम प्रकट महत्त्व आ वास्तविक अधिकार बीचक दूरी नापल जाइत अछि। एहि आधारपर ई अंश भव्यताक वर्णन नहि, भव्यतासँ उत्पन्न असत्य आत्मपदवीक परीक्षण अछि।

अध्याय ६६क ‘विशेष भाषिक अतिथि’ आ ‘भोज हमरा बिना सम्भव नहि’ बीचक विरोध अध्याय ६८क ‘विशेष पहुँच’ आ ‘सीमित अतिथि-प्रवेश’ बीच पुनः आबैत अछि। पहिल ठाम मंचीय प्रतिभा आयोजनक नियन्त्रण बुझल गेल; दोसर ठाम अनुवाद प्रस्ताव अपलोडक सीमित अधिकार प्रशासकीय सर्वर-शक्ति बनि गेल। एहि दूनू दृश्यमे वास्तविक कौशलकेँ नकारल नहि गेल, मुदा कौशलसँ स्वतः सत्ता निष्पन्न करबाक हेत्वाभास खोलल गेल। पात्रक आत्मप्रचार स्वरूप बदलबाक संग समान मानसिक प्रक्रिया टिकैत अछि।

वित्तीय अभिलेखक स्तरपर भोजक आयोजन-सम्बन्धी A–D विक्रेता-श्रृंखला, अध्याय ६७क M.K. आद्याक्षर आ मध्यवर्ती खाता, अध्याय ६८क यात्रा-व्यवस्था आ भाषिक सेवा-शुल्क, अध्याय ६९क कार्यक्रम-सम्बन्धी कानूनी समीक्षा, आ अध्याय ७०क आरक्षण-पत्र अलग इकाई छथि। एहि भिन्न स्रोतसभमे एके नाम, समय वा सेवा-शीर्षक भेटब साम्यक आधार अछि; लाभकारी स्वामित्व, निर्देश, वास्तविक वित्तीय नियन्त्रण या उद्देश्यक निष्कर्ष अलग साक्ष्य माँगैत अछि। एहि परतदार सम्बन्ध-पठनसँ उपन्यास अपन आरोप-निरोधी विवेककेँ लगातार कार्यरत रखैत अछि।

अध्याय ६७क ‘M साथ रहत’ नोट मृणालक नामक उपयोगकेँ सामाजिक-नैतिक दोष बनबैत अछि; अध्याय ६९क ‘विधिक पक्ष हमरा संग अछि’

वाक्य राघवक उपस्थितिकेँ स्वीकृतिक मुहर बनबैत अछि। एकमे मित्र, दोसरमे वकील—दुनूक सामाजिक पूँजी शशांक अपन प्रतिष्ठा लेल उपयोग करैत अछि। मुदा एहन उपयोग भुक्तभोगीक आर्थिक अपराध-सिद्धि नहि। 'नामक कवच'क रूपक पाँच अध्यायमे अलग-अलग पात्रक ऊपर पड़ैत सम्भावित दोषछायाकेँ एक संग बुझबैत अछि।

मृणालक अभिव्यक्ति एहि पाँचक भावात्मक केन्द्र अछि। ओ भोजक प्रशंसाक राति 'सावधान रह' लिखैत अछि; पाछाँ अपन उपस्थिति शशांक द्वारा प्रतिष्ठा लेल उपयोग होयबाक बातपर प्रतिवाद करैत अछि। 'क्षमायाचना मित्रता बचा सकैत अछि; अभिलेख नहि बदलैत' कथन भाव आ प्रमाणकेँ अलग राखैत दूनूक मूल्य बचबैत अछि। एहि घटनाक कलात्मक बल ओहि कारण बेसी अछि जे मित्रताक संकट न्यायालयक प्रश्नोत्तर बाहिर, बाटक कात, चाहक दोकान लग अनकहल रूपेँ रहैत अछि।

अध्याय ६८क सक्रिय/निष्क्रिय प्रणाली-अधिकारक सूची आ अध्याय ६९क कानूनी/व्यवसायिक संवादक सीमा एके तर्कक दोहरा रूप अछि। अतिथि-खातामे किछु पाठ बदलबाक प्रस्ताव करब प्रकाशनक निर्णयाधिकार नहि; वकीलक कक्षमे कानूनी जोखिमक प्रश्न उठब कार्यक्रम जारी रखबाक व्यापक स्वीकृति नहि। एतय 'विशेष पहुँच' आ 'विधिक पक्ष साफ' सन आम पदसभ सम्बन्धक सीमा नुका दैत अछि। एहि सीमा बिनाक वाक्य समाजमे शशांकक प्रतिष्ठा बढ़बैत छल, मुदा अभिलेखमे ओहि ढंगसँ सही नहि छल।

अध्याय ७० एहि समूचा बाह्य वैभवकेँ संस्थाक भीतरक सावधानीक प्रश्न पर मोड़ैत अछि। निचला आयुक्तालयक अधिकारी भुगतान-पथ आ अंकीय प्रविष्टिक प्रश्नक सत्यापन चाहैत अछि; ऊपरी कर-सारांश कर-हानि स्थापित नहि भेल कहैत अछि, मुदा दू प्रश्नचिह्न नहि दोहरबैत। शशांक स्वयं 'तत्काल संकट नहि' लिखि जोखिमक वजन कम केने हो सकैत अछि। ई आत्मप्रतिकूल खोज अध्याय ६६क मंचीय गर्वसँ अन्तिम दूरी अछि: अपन उपयोगिता लेल वाक्य नर्म करब ककरो श्रमक सावधानीकेँ सेहो चोट पहुँचा सकैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ 'देवता'क आत्मचित्र वक्रोक्ति अछि; तालि, मंच, विदेशी प्रशंसा आ विशेष अतिथि-नामक अनकहल ध्वनि सत्ताक लोभ

अछि। रात्रिक रोशनाइक उत्साह पाछाँ अपमान, भय आ करुणामे बदलैत अछि। अध्याय ६८क 'अतिथि-खाता वाला देवता' आत्मव्यंग्य बनि एहि रूपककेँ चरित्र-विकासक ठोस चिह्न दैत अछि। अध्याय ७०क छोट प्रश्नचिह्न सार्वजनिक मंचक विशाल इजोत सँ उलट प्रमाणक लघु, किन्तु निर्णायक प्रकाश बनैत अछि।

पाश्चात्य आख्यानशास्त्रक दृष्टिसँ पाँच दृश्य पाँच प्रकारक साक्ष्य-वस्तुपर केन्द्रित छथि—निमन्त्रण, सन्देश, पहुँच-सूची, समयक्रम आ आरक्षण-पर्ची। नायकक पुरान स्मरण वर्तमान जाँचक अभिलेखसँ फेर पढ़ल जाइत अछि; एहि द्विकालिक विन्यासमे एके उत्सव पहिने विजय आ आब आत्ममोहक इतिहास बनैत अछि। कथावाचकक प्रमुख केन्द्र शशांकक लाज अछि, ताहि लेल कलाकार, विक्रेता, सरकारी अधिकारी आ ली वेनचाओक आन्तरिक संसार सीमित रहैत अछि। एहि चयनसँ नायक सघन, आन पात्र किछु ठाम कार्यसूचक बनैत छथि।

नव्य न्यायीय तर्कक 'मान्यता अपन परिणाम माँगत' सिद्धान्त एहि पाँच अध्यायमे पुनरावृत्ति सहित विकसित अछि। भोजक नियन्ता होयबाक मान्यता करारक अन्तिम आदेश चाहैत अछि; मृणालक वित्तीय सहभागिताक मान्यता M.K. आद्याक्षर सँ बेसी पहचानक साक्ष्य चाहैत अछि; सर्वरक स्वामित्व अनुमतिक सूचीसँ टकराइत अछि; वकीलक मिलीभगत प्रसार-क्रममे निर्देश वा हितक कड़ी चाहैत अछि; हवाला/अंकीय परिचालनक आरोप प्रश्नचिह्न सँ बेसी धनक कारण, वास्तविक लाभार्थी आ उद्देश्यक प्रमाण चाहैत अछि। ई भिन्न आवश्यकतासभ तर्क-पद्धतिक मौलिक कथात्मक उपयोग देखबैत अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे दिल्लीक समारोह, मकाऊक सीमित प्रणाली-प्रवेश, भारतीय आयुक्तालयक आरक्षण, ऊपरी कर-सारांश, बहुभाषी सेवा आ सार्वजनिक समाचार-चित्र स्वतंत्र प्रसार-रेखा छथि। ई सभ कथा-समयमे मिलैत अछि, मुदा ककरो दोषी बनएबाक लेल समय-साम्य पर्याप्त नहि। विशेष रूपसँ स्रोतहीन कलाकार-संबद्ध आरोप वा M.K. आद्याक्षरसँ

पात्रक पहचान स्थिर करब निषिद्ध अछि। ई दृष्टि रचनाक सामाजिक न्यायमूल्यक अंग अछि—ककरो निकटता ओकर निर्णयाधिकार नहि।

शिल्पगत सीमा ई जे आदित्यक पूछताछ आ शशांकक कापी-सूत्र अनेक अध्यायमे समान नाटकीय गति बनबैत अछि। आर्थिक प्रणालीक विविध विवरणक स्वतंत्र दृश्य अपेक्षाकृत कम, तर्कक नामकरण अधिक अछि; कानूनक पेशागत पात्रसभ कखनो सहमतिपूर्ण सूत्रक वाहक जेकाँ सुनाइत छथि। मुदा मंचक इजोत, मित्रक रोष, अतिथि-खाताक हास्य, वकीलक कठोर आरोप आ अधिकारीक आहत श्रम ई एकरसता तोड़ैत अछि। समीक्षाकेँ ई दुनू पक्ष—नैतिक उपलब्धि आ कलात्मक सीमा—समभावसँ स्वीकारबाक चाही।

अन्तिम समेकनमे शशांकक दोषक सीमा अधिक स्पष्ट अछि। ओ अपन प्रतिभाक वास्तविक मूल्यक अधिकारी अछि; मुदा एहि आधारपर मित्रक नाम, वकीलक मर्यादा, बाहरी व्यावसायिक सम्बन्ध वा संस्थागत सावधानीक अर्थ बढ़ाबय अथवा घटाबय नहि सकैत। सत्तरिम अध्यायक अन्तमे ‘हम कखनो प्रश्नक आवाज कम केने रही’ कहब पहिनुक मंचक ‘सभ हमरा सुनैत छल’क उलटा प्रतिबिम्ब अछि। एहिसँ अगिला खण्डक मुहरबन्द जाँच आ समाचारक प्रसार पढ़बाक एक गहींर नैतिक आधार बनैत अछि।

## अध्याय ७१ — भोज, देवता, अपमान ६ : प्रश्नचिह्नक लोप, चित्रक दुरुपयोग आ अपमानक प्रमाण-सीमा

एकहत्तरिम अध्याय दैनन्दिन जीवनमे समाचारक आक्रमण सँ आरम्भ होइत अछि। भोरे शशांकक चलदूरभाषपर अनगिनत कड़ी आ प्रश्न पहुँचिते ‘हवाला-बिटकॉइन भोजक भारतीय सूत्रधार’ शीर्षक ओकरा सार्वजनिक अपराधीक स्थानपर ठाढ़ करि दैत अछि। वर्णनक खास शक्ति एहि बातमे जे लेखक आरोपक सनसनी कैं तुरन्त तथ्य नहि मानैत छथि। नायकक औंठा रुकैत अछि, छाती कसैत अछि; प्रतिष्ठाक चोट शारीरिक अनुभव बनैत अछि। मुदा पाठककैं स्मरण कराओल जाइत अछि जे मूल कर-जाँचमे ‘हवाला?’ प्रश्न छल। विषयक ई भाषिक अन्तर कथानकक मूल घटना बनैत अछि।

समाचारमे भोजक पुरान चित्र, प्रसिद्ध गायन-कार्यक्रमसँ परिचित कलाकार, मकाऊ-यात्रा, विदेशी अतिथि आ ‘विशेष पहुँच’क पूर्व डींग एक चित्र-पट्टीमे राखल गेल अछि। एक-एक विवरणमे किछु सही हो सकैत अछि, मुदा जोड़ल गेल प्रस्तुति एक अपराध-सिद्ध कथाक प्रभाव उत्पन्न करैत अछि। आख्यानशास्त्रक दृष्टिसँ ई दृश्य सन्निवेशक शक्ति पर प्रश्न उठबैत अछि: चित्रक क्रम आ शीर्षकक पड़ोस अलग तथ्यसभक बीच ओहन कारणसम्बन्ध पैदा करि सकैत अछि जे स्वतन्त्र रूपेँ देखाओल नहि गेल। एहि बिन्दुपर लेखक पत्रकारिताक समग्र जगतकैं दोषी नहि, प्रस्तुत समाचारक विशिष्ट रूपान्तरणकैं जाँचक वस्तु बनबैत छथि।

मृणालक छोट संवाद—‘दू प्रश्नचिह्न’ आ ‘दू पूर्णविराम’—अध्यायक सबसँ सघन वक्रोक्ति अछि। ई विरोध मात्र विरामचिह्नक नहि, ज्ञानक स्तर बदलि देबाक अछि। मूल अभिलेखमे ‘औपचारिक बैंक-पथसँ बाहिर समायोजनक सम्भावना? सत्यापन शेष’ आ ‘अंकीय परिसम्पत्ति-पता जेकाँ पहचान; स्वामित्व/नियन्त्रण अपुष्ट’ छल। सार्वजनिक पंक्तिमे ‘सम्भावना’, ‘सत्यापन शेष’, ‘जेकाँ’ आ ‘अपुष्ट’ पद हटि जाइत अछि। शब्दक एहन घटावक परिणाम तथ्यक विस्तार अछि। ध्वनिक दृष्टिसँ अनुपस्थित सावधानी-पद ही सभसँ ऊँच स्वरमे बजैत अछि।

आदित्य मिश्र मुहरबन्द सामग्रीक सीमित सार्वजनिक तुलनाक अनुमति भीतर मूल आ समाचारक पाठ समानान्तर रखैत छथि। ओ शशांकक क्रोधसँ सहमति जतबैत तुरन्त कोनो लीककर्ताक नाम नहि लिखैत। समान दुर्लभ शब्दक्रम

स्रोतक वंश जाँचबाक कारण अवश्य अछि; मुदा बीचमे सारांश, मौखिक विवरण अथवा पूर्व मसविदाक सम्भावना सेहो पाठमे उठैत अछि। नव्य न्यायीय दृष्टिसँ 'दू पाठ समान' सँ 'फलाँ व्यक्ति मुहरबन्द कागज निकाललक' धरि जे छलाँग अछि, तकर हेतु स्वतन्त्र संपर्क आ समय-साक्ष्य चाही। ई तर्कक एक महत्त्वपूर्ण नैतिक उपयोग अछि, कारण प्रामाणिक स्रोतक खोज बिना अपराध-घोषणा सेहो सार्वजनिक अन्यायक दोसर रूप बनि सकैत अछि।

तृतीय समाचारमे शशांक 'विशेष संयोजक' बनि जाइत अछि, जखन आधिकारिक अभिलेखमे ओ 'विशेष भाषिक अतिथि' आ मंचीय सहयोगी अछि। शशांक स्वयं मंचीय परिचय, कलाकारक किछु वाक्यक अनुवाद आ भोजमे अपन उपस्थितिक तथ्य नहि नकारैत। मुदा आयोजनक करार, भुगतानक निर्णय अथवा आर्थिक स्वामित्वक व्यापक भूमिका अलग प्रमाण माँगैत अछि। एहि प्रसंगमे नायकक आत्मालोचना आ अपन विरुद्ध समाचारक प्रतिवाद एकहि दृश्यभित्र सम्भव होइत अछि। लेखक ई कठिन मध्यस्थिति चुनैत छथि: सार्वजनिक अपमानसँ आहत व्यक्ति अपन यथार्थ भागीदारीकेँ शून्य बताकऽ सुरक्षित नहि भऽ सकैत।

एक कलाकारक मंचीय उपस्थिति सँ ओकर आर्थिक-अपराधिक सहभागिता जोड़बाक प्रवृत्तिक विरोध उपन्यासक सामाजिक औचित्यकेँ विस्तृत करैत अछि। शशांक अपन अपमानक आवेशमे सभ उपस्थित व्यक्तिक नाम सार्वजनिक करय चाहैत छल, मुदा आदित्य ओकरा पूछैत छथि जे उपलब्ध अभिलेखमे कलाकारक विरुद्ध वास्तवमे की अछि। उत्तर नहि अछि। एहि ठाम नायक बुझैत अछि जे प्रसिद्ध लोकक निकटता सँ स्वकीय प्रतिष्ठा उधार लेब आ संकटमे ओहि निकटताकेँ साझा दोषमे बदलि देब एके नैतिक विकृतिक दू मुख अछि। अपन बचाव सेहो तेसर व्यक्तिक प्रतिष्ठाक अधिकार पर अतिक्रमण नहि करय।

समाचारक प्रारम्भिक प्रारूपमे 'भाषिक सम्पर्क' पद रहब आ प्रकाशित रूपमे 'भारतीय सूत्रधार' बनब लेखकीयता आ सम्पादनक अन्तरकेँ प्रत्यक्ष करैत अछि। मुदा ई परिवर्तनसँ सम्पादकक जानि-बुझि बदनाम करबाक उद्देश्य प्रमाणित नहि होइत—अतिशयोक्ति, अधूरा स्रोत वा प्रतिस्पर्धीक दबाव सन विकल्प अदालतक जाँच लेल बाँकी अछि। एतय प्रभाव आ उद्देश्य अलग श्रेणी छथि: परिणाम अपमानजनक निश्चित भऽ सकैत अछि, उद्देश्यक व्याख्या जाँच-बाँकी। पात्रक पीड़ा ई विभाजनकेँ स्वीकार करयमे असुविधा अनुभव करैत अछि, ताहिसँ संवादमे भावनात्मक प्रामाणिकता आबैत अछि।

निचला अधिकारीक 'समय-साम्यक आधार पर संयुक्त निष्कर्ष नहि' सावधानी समाचारमे एके वित्तीय जालक सशक्त संकेतक रूपमे परिवर्तित भऽ गेल अछि। कथा समयक निकटताकेँ महत्वहीन नहि करैत; ओ संबंधक परिकल्पना देबैत अछि। मुदा भोजक वैध खर्च, सेवा-प्रतिपूर्ति आ अपुष्ट अंकीय प्रविष्टिक बीच धनक वास्तविक प्रवाह स्थापित करबाक लेल आदेश, पाबनिहार आ लाभक कड़ी चाही। नव्य न्यायीय हेत्वाभास एतय सहकालिकता सँ कारण-सिद्धिक अतिरेक अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे अलग संस्था आ स्थानक अभिलेख एकहि समय-अक्षपर राखल गेल अछि, परस्पर कारण मानि नहि लेल गेल।

शशांक अपन पुरान जोखिम-सम्बन्धी शब्द नर्म करबाक त्रुटि स्वीकार करैत अछि। आदित्यक उत्तर सेहो महत्वपूर्ण अछि: ई स्वीकृति ओहि त्रुटिक अस्तित्व मेटैत नहि, मुदा 'भुगतान-श्रृंखला नुकाओल'क व्यापक आरोप सेहो सिद्ध नहि करैत। भाषिक निर्णय नैतिक रूपेँ दोषपूर्ण भऽ सकैत अछि, आर्थिक संचालनक प्रत्यक्ष साक्ष्य बिना। एहि अलगावमे प्रायश्चितक अर्थ केवल अपराधक समग्र बोझ स्वीकार करब नहि, अपितु अपन यथार्थ कर्मकेँ यथार्थ नाम देब होइत अछि। ओ सार्वजनिक प्रश्नक उत्तरमे 'सभ मिथ्या'क सुविधा त्यागैत अछि।

अध्यायक भावात्मक परिपाक मृणालक संग बाटक कात चाहक प्याला पर घटैत अछि। शशांकक कथन 'अपमान प्रमाणक कोटि नहि' सैद्धान्तिक ईमानदारीक संग ओकर अगिला स्वीकार—'मुदा शरीर तर्क नहि बुझैत। ओकरा जलन होइत अछि'—जोड़ैत अछि। एतय रसक दोहरी बनावट अछि: अपमानक करुण अनुभूति आ प्रमाणक शान्त विवेक। यदि नायककेँ केवल निर्दोष वकीली प्रवक्ता बनाओल जाइत, तँ दृश्य कठोर उपदेश बनि जायत। देहक जलन तर्कक सत्य सँ टकराकऽ व्यक्तिक अपूर्णता बचबैत अछि।

कलात्मक उपलब्धि ठोस वस्तुसभमे अछि—चलदूरभाषक चमक, मुहरबन्द लिफाफा, प्रश्नचिह्न, संशोधित शीर्षक, समूह-चित्र आ चाहक भाप। एहि दृश्यमाध्यमसँ विचारक सूत्र चरित्रक वास्तविक हानि धरि पहुँचैत अछि। तथापि सीमा सेहो अछि: पत्रकारक उद्देश्यक विकल्प गनबाक संवाद आ कापीक अन्तिम अनेक सूत्र किछु ठाम वास्तविक समाचार-संसारक जटिल बहुस्वरता घटा दैत अछि। मीडियाक भीतर स्वतंत्र सम्पादकीय प्रतिवादक पूरा नाटकीय स्वर उपस्थित नहि। तइयो अध्याय प्रश्नचिह्न मेटबाकेँ आधुनिक सार्वजनिक अन्यायक एक सूक्ष्म, प्रभावशाली रूपमे देखबैत अछि।

अगिला न्यायालयीय सुनवाइक पूर्वसंध्या ई अध्यायकेँ समाप्ति दैत अछि। मूल मुहरबन्द अंश, सार्वजनिक शीर्षक, भोजक चित्र आ शशांकक स्वीकृत शब्द-विकृति एके अदालतमे एकत्र होयत। कथाक संगति एतय महत्त्वपूर्ण अछि: पात्रक अपमान अकेला विवाद नहि, अपन कपटक सीमांकनक परीक्षा सेहो बनैत अछि। ई संरचना अध्याय ७२क प्रतिपरीक्षाकेँ पूर्वनिर्धारित निर्दोषता अथवा अपराधक फैसला बनेबाक बदला प्रश्नक भार सही ठाम राखबाक प्रक्रियाक रूपमे स्थापित करैत अछि।

## अध्याय ७२ — भोज, देवता, अपमान ७ : स्वीकृत नैतिक कपट आ न्यायालयीय प्रमाणक अलग सीमा

बहत्तरिम अध्यायमे भोजक चित्र अदालतक पर्दा पर दृश्य-तमाशा नहि, कागजक ढेरमे सीमित अभिलेख बनि जाइत अछि। मूल मुहरबन्द अंश, सार्वजनिक शीर्षक आ शशांकक द्विभाषी सारांश अलग-अलग राखल गेल अछि। न्यायाधीश पहिने स्पष्ट करैत छथि जे एहि सुनवाइमे अन्तिम दोष-निर्दोषताक निर्णय नहि, कथन आ प्रमाणक सीमा जाँचल जाएत। ई आरम्भ कथाक विधिक अनुशासनक मूल आधार अछि। लेखक न्यायालयकेँ सर्वज्ञ कथावाचक नहि बनबैत छथि; अदालत केवल ततेक दर्ज करैत अछि जतेक उपस्थित अभिलेखसँ निकलैत अछि।

सरकारी अधिवक्ता भाषिक अतिथि, मंचीय परिचय, विदेशी संवाद, मकाऊ यात्रा, भुगतान-शीर्षकक अनुवाद आ जोखिमक नर्म शब्द—एहि सभ तथ्यक क्रम प्रस्तुत करैत छथि। शशांक प्रत्येक उचित प्रश्नमे ‘हाँ’ कहैत अछि। क्रमक मनोवैज्ञानिक बल एहि मे जे अनेक स्वीकारक बाद ‘सक्रिय आर्थिक सूत्रधार’क व्यापक निष्कर्ष स्वाभाविक लगय लगैत अछि। मुदा पाठक देखैत अछि जे सत्य कथनसभक जोड़ स्वयं नव कर्तृत्वक प्रमाण नहि। ई सन्निवेश पाश्चात्य आख्यानशास्त्रक दृष्टिसँ वकीली प्रस्तावना आ साक्षीक प्रतिउत्तरक तनाव रचैत अछि।

शशांकक उत्तर पूरा अस्वीकृति नहि। ओ भाषिक भूमिका, भूमिका-अतिशयोक्ति आ मूल जोखिम नर्म करबाक नैतिक दोष स्वीकारैत अछि, मुदा खाता-निर्देश, धनक नियंत्रण, लाभ-वितरण, वास्तविक लाभकारी स्वामित्व आ कथित हवाला-अंकीय परिचालनक लेल स्वतन्त्र प्रमाण माँगैत अछि। सरकारी अधिवक्ताक प्रतिप्रश्न—अपराधी व्यवस्था लिखित अधिकार-पत्र सदिखन नहि छोड़ैत—तर्कक वास्तविक चुनौती अछि। नायक एहि बातकेँ स्वीकारैत लिखित अभावसँ स्वतः निर्दोषता सेहो सिद्ध नहि करैत। एहि संतुलनमे बचावक सही मर्यादा अछि: अभावक आधारपर न पूर्ण निर्दोषता, न उपस्थिति मात्रसँ व्यापक दोष।

अध्यायक सर्वाधिक कठिन आत्मस्वीकृति ‘मंच हमर’, ‘विशेष पहुँच रहत’ आ ‘वकील पक्ष साफ’ सन पुरान वाक्यसभक पुनर्पाठमे अछि। पहिल दू पद

नायकक महत्त्वाकांक्षा आ डींगक, तेसर विधिक सावधानी अनुचित रूपेँ घटेबाक उदाहरण अछि। ओ जखन कहैत अछि जे जानि-बुझि सावधानीक धार कम करब मात्र शैलीगत भूल नहि, नैतिक कपट छल, तखन रचना साधारण 'गलती मानि लेलहुँ' सँ आगे बढ़ैत अछि। भारतीय औचित्य-दृष्टिमे ई कथन पात्रक अभिप्राय, परिस्थिति आ परिणामक नैतिक सम्बन्ध खोलैत अछि।

सरकारी अधिवक्ताक आरोप जे शशांक अपन अपराधक आकार स्वयं चुनि रहल अछि, सुनवाइक जरूरी प्रतिरोध अछि। शशांकक प्रतिउत्तर 'हम चाहैत छी आकार प्रमाण चुनय' कथाक धार बनैत अछि। प्रायश्चित सत्यक आकार बढ़ेबाक अनुमति नहि दैत—ई विचार बचावक साधन मात्र नहि, दोषसिद्धिक अनुशासन सेहो अछि। जँ बादमे आर्थिक संचालनक प्रमाण भेटय तँ ओकर उत्तर देबाक स्वीकृति शशांक स्पष्ट करैत अछि। ई भविष्य-उन्मुख उत्तर ओकर आत्मपरीक्षाकेँ सुविधाजनक आत्मरक्षा बनेबाक सम्भावना घटबैत अछि।

मुहरबन्द पंक्ति आ सार्वजनिक 'हवाला-बिटकॉइन सम्बन्ध' शीर्षकक तुलनामे अदालत स्रोतक वंश आ विशिष्ट लीककर्ताक पहचान अलग राखैत अछि। आदित्य मिश्र दुर्लभ शब्दक्रमक समानता जाँचक पर्याप्त कारण मानैत छथि; मुदा मध्यवर्ती सारांश, मौखिक प्रसार वा पुरान मसविदाक स्थिति अलग जाँचना आवश्यक बतबैत छथि। नव्य न्यायमे शब्द-प्रमाण आ अनुमानक अलग आधारक ई उदाहरण महत्वपूर्ण अछि। 'किछु बाहर पहुँचल' आ 'एहि व्यक्तिक हाथसँ पहुँचल'क बीच सम्पर्कक स्वतन्त्र कड़ी चाही; निष्कर्ष पहिने चुनि बादमे दस्तावेज जुटायब अनुसन्धान नहि।

बचाव पक्ष भोजक कलाकार आ अतिथिक समूह-चित्रक अर्थ जाँचैत अछि। आदित्य कहैत छथि जे उपलब्ध सुनवाइ-सामग्रीमे कलाकारक प्रतिकूल आर्थिक प्रमाण नहि अछि। मंचपर एक संग ठाढ़ होयब उपस्थितिक तथ्य अछि, आर्थिक सहभागिता नहि। शशांकक लाज एहि ठाम चुपचाप गहिराइत अछि: प्रसिद्ध व्यक्तिक निकटता सँ पूर्वमे अपन महत्त्व बढ़ेनिहार व्यक्ति आब ओहि निकटताकेँ अपराध-छाया बनैत देखि रोकबाक इच्छा रखैत अछि। सामाजिक आलोचनाक दृष्टिसँ ई निर्दोष तेसर पक्षक प्रतिष्ठाक रक्षा अछि, जे व्यक्तिगत बचाव सँ भिन्न नैतिक दायित्व अछि।

सेवा-शुल्कक प्रश्नमे सेहो कथा दू छोरकेँ अस्वीकार करैत अछि। शशांक भुगतान भेटबाक वैध सेवा-सम्बन्ध स्वीकारैत अछि; 'हमर भोजक पैसासँ कोनो सम्बन्ध नहि' कहब मिथ्या होयत। मुदा सेवा-शुल्कसँ आयोजनक वास्तविक लाभकारी स्वामित्वक निष्कर्ष नहि बनैत। मकाऊक अतिथि-प्रवेशमे सत्ताक व्यापक पदवी सिद्ध नहि, आ कथित मध्यवर्ती खाताक 'म्यूल' वर्गीकरण लेल खाताधारकक ज्ञान, निर्देश आ लाभक चिह्न जरूरी अछि। एकहि धागाक अनेक उदाहरणक पुनरावृत्ति एतय जानि-बुझि अदालतक विधिसंगत शिक्षण बनैत अछि।

न्यायाधीशक अवलोकन भाषिक नरमी, भूमिका-अतिशयोक्ति आ अनुचित संक्षेपक स्वीकार दर्ज करैत अछि; आर्थिक नियन्त्रण अथवा कथित परिचालन पर अन्तिम निष्कर्ष रोकैत अछि। 'स्वीकार जतेक, प्रमाण जतेक' एहि अध्यायक अर्थसार अछि। ई वाक्य दण्ड अथवा मुक्ति नहि, प्रमाणक परिमाणक नियम अछि। न्यायालय विशेष रूपसँ शशांककेँ तकनीकी-आर्थिक विशेषज्ञक दर्जा नहि दैत, ओकरा अपन देखल आ अनुवादित सामग्रीक सीमित साक्षी मानैत अछि। पहिने विशेषज्ञ कहल जाएबाक भूख रखने नायक लेल ई सीमा अपमान नहि, आत्ममुक्ति बनैत अछि।

अदालतसँ बाहर मृणालक प्रश्न पर शशांक कहैत अछि जे प्रायश्चितक कठिन रूप सही नाम देब अछि—जकर नाम त्रुटि, त्रुटि; जकर नाम कपट, कपट; जकर नाम आरोप, आरोप। एहि संवादमे काव्यात्मक पुनरुक्ति अछि, मुदा कथाक वर्षोंक चरित्र-विकास एक स्वरमे सिमटि जाइत अछि। निजी आत्मा आ संस्थागत अभिलेखक नैतिक समानता, दुनूक अन्तर कायम रखैत, कलात्मक रूपसँ प्रभावी अछि। गहन शान्त रसक सम्भावना एहि बातमे अछि जे दूनू मित्र सहज राहत नहि, केवल अधिक सही भाषा पबैत छथि।

शिल्पगत सीमा न्यायालयीय संवादक असाधारण सुव्यवस्थित दार्शनिकता अछि। सरकारी अधिवक्ता, आदित्य, बचाव पक्ष आ शशांक प्रायः क्रमसँ अवधारणासभ स्पष्ट करैत छथि; वास्तविक प्रतिपरीक्षाक कटु बाधा, अचानक तथ्य अथवा प्रश्नक अव्यवस्था अपेक्षाकृत कम अछि। कापीक अन्तिम सूत्र सेहो एकहि विचार कई रूपमे दोहरबैत अछि। तथापि एहि योजनाबद्धताक उपलब्धि अछि जे कथा आरोप आ स्वीकारक बीच एक दुर्लभ, भावनात्मक

रूपेँ असुविधाजनक मध्यस्थिति टिकाबैत अछि। अगिला अध्यायमे कागजी स्वीकृतिक माप शशांकक अपन पुरान अंकीय सन्देशपर लागू होयत।

## अध्याय ७३ — भोज, देवता, अपमान ८ : अंकीय लेखकत्व, प्राप्त संचिका आ आत्मप्रचारक लम्ब छाया

तिहत्तरिम अध्याय न्यायालयक सीमित आदेशक दू दिन बाद शुरू होइत अछि। पुरान चलदूरभाष, लैपटॉप आ सुरक्षित अंकीय प्रतिलिपिक पुनर्परीक्षण होयत, मुदा नवल व्यापक जब्ती नहि। जाँचक ई सीमांकन कथा लेल महत्त्वपूर्ण अछि, कारण उपकरणक अनन्त संग्रहकेँ अपराधक तैयार प्रमाण मानब न्यायिक मर्यादाक उल्लंघन होयत। शशांकक वास्तविक भय लुकल अपराध अचानक निकलबाक नहि, अपन पुरान डींग लिखित रूपमे फेर भेटबाक अछि। एहि भयक विन्यास नायकक अपराधक अनिश्चितता आ चरित्रक प्रमाणित आत्ममोह अलग रखैत अछि।

तीन पुरान सन्देश—‘काल मंच हमरा बिना नहि चलत’, ‘भुगतान-पक्ष सेहो हमरा मार्फत स्पष्ट होयत’ आ ‘वकील-पक्ष हमरा मार्फत अछि’—एक संग देखाओल गेल अछि। शशांक खाता अपन रहबाक आ लेखकत्वक आधार पर्याप्त रहबाक बात स्वीकारैत अछि, मुदा कथनक शाब्दिक सत्य नहि। मंचीय भाषिक उपयोगिता करारक निर्णयाधिकार नहि; भुगतान-शीर्षक बुझेनाइ धनक निर्देश नहि; राघवक चीनी पाठ बुझबाक निर्भरता वकीली सत्ता नहि। लेखकत्व, कथन, आ तथ्यात्मक सत्यताक ई त्रिभेद उपन्यासक अनुवाद-विचारकेँ अंकीय युगमे विस्तृत करैत अछि।

मृणालक पुरान उत्तर ‘तूँ अनुवादक छह, राजा नहि’ एहि अध्यायक व्यंग्य-धुरी अछि। शशांकक ‘चीनी दल हमर प्रतीक्षा करैत अछि’ मे आंशिक सत्य अछि: किछु बैठकी भाषिक सहायता बिना अटकैत छल। मुदा एहि अनुभवसँ सम्पूर्ण निर्णय ओकर हाथमे छल से सिद्ध नहि। पाश्चात्य कथाविज्ञानक दृष्टिसँ अतीतक सन्देशक वर्तमान प्रतिपरीक्षा कथा-समयक दू स्तर जोड़ैत अछि। लिखल बेर ओ वाक्य गौरवक साधन छल; आब ओ अपन सीमा निर्धारित करबाक प्रतिकूल साक्ष्य अछि। एके भाषिक रूपक समयबदलामे अर्थक भार बदलैत अछि।

लैपटॉपक ‘जन्मदिन व्यय-समायोजन—अन्तिम’ संचिकाक प्रसंग सम्भावित अर्थ-स्खलनक अलग परीक्षण अछि। नाममे ‘समायोजन’ देखिते हवाला वा अवैध राशि मानि लेब अनुचित अछि। तकनीकी प्रतिवेदन अनुसार समूह-

सन्देशसँ संचिका प्राप्त भेल, स्थानीय प्रतिलिपि बनल, आ एक बेर खोलल गेल; मूल सामग्री शशांक द्वारा बदलल गेल, एहन चिह्न प्रस्तुत नहि। एतय शशांक 'नहि देखने रही' सन निरपेक्ष बचाव त्यागैत अछि। प्राप्त/खोलल गेल दस्तावेजक स्मरण अस्पष्ट होइतो ओहि स्थितिक सम्भावित ज्ञान स्वीकारब ओकरा नैतिक रूपेँ असुविधाजनक पड़ैत अछि।

नव्य न्यायीय विवेकमे उपकरणक स्वामित्व, संचिकाक स्थान, खोलबाक घटना, लेखकत्व, अभिप्राय आ आर्थिक नियन्त्रण अलग-अलग अवच्छेदकक अधीन पड़ैत अछि। शशांकक लैपटॉपमे संचिका भेटब वास्तविक स्रोत-सूचना अछि, मुदा ताहि सँ प्रत्येक स्तम्भक निर्माता वा लाभकारी स्वामी शशांक नहि भऽ जाइत। उलटा, एक बेर खोलबाक सूचना ओहि दस्तावेज विषयमे ओकर ज्ञान-सम्भावना पूर्ण रूपेँ नकारबाक अवसर घटबैत अछि। कथा संदेहक दूनू दिशा राखैत अछि; परिकल्पनाक भार एकहि पक्षक सुविधा अनुसार घटाओल नहि जाइत।

'अंकीय पक्ष व्यवस्थित'क पुरान सन्देश विशेष गहन विश्लेषण योग्य अछि। ओकर पाछाँ लगल वाक्य 'शीर्षक अनूदित; विधिक टिप्पणी शेष' भाषिक व्यवस्था दिशामे सन्दर्भ दैत अछि। मुदा शशांक स्वयं स्वीकारैत अछि जे केवल अपन अनुकूल अर्थ चुनब बचावक व्याख्या सेहो भऽ सकैत अछि। जँ 'व्यवस्थित'क अर्थ वास्तविक धन-व्यवस्था होइत, तखन राशि, प्राप्तकर्ता, निर्देश वा निजी नियन्त्रणक स्वतंत्र कड़ी अपेक्षित होयत। प्रस्तुत तकनीकी प्रतिवेदनमे ओहि सन्देशक संग एहन परिचालन-साक्ष्य नत्थी नहि अछि। अतः वर्तमान निष्कर्ष विवादित अर्थक सीमांकन अछि, सर्वकालिक निर्दोषताक मुहर नहि।

'हम वित्त-पक्षक लोक कैँ सेहो वार्तामे जोड़ैत छी' पंक्तिक माध्यमसँ कथा अनुवादकक सक्रिय मध्यस्थताक सीमा स्वीकारैत अछि। शशांक बैठक जोड़ब, भाषिक समन्वय, मसविदा पठेनाइ आ शीर्षक बुझेनाइ किछु प्रसंगमे केने छल। 'हम केवल निष्प्रभावी शब्दकोश' कहब आब पूर्ण व्याख्या नहि। मुदा एहिसँ नये 'आर्थिक नेटवर्कक संचालक'क निश्चित पदवी सेहो नहि बनैत। एहि मध्यवर्ती भूमिकाकेँ स्वीकारब अध्यायक चरित्र-विकास अछि: नायक आत्मप्रतिकूल तथ्य छोट नहि करैत, आ अपना पुरान प्रचारक कथनक शाब्दिक गुलाम सेहो नहि बनैत।

विक्रेता-मुख्यसूचीक 'वास्तविक लाभकारी स्वामी: सत्यापन शेष' स्तम्भ फेर उभरैत अछि। चीनी-अंगरेजी शीर्षकसभक परिचित अर्थ शशांक जानैत छल, किन्तु वास्तविक पाबनिहारक नाम नहि। भाषिक ज्ञान आ संस्थागत अधिकारक दूरी एहि रिक्त कोष्ठकमे एक दृश्य प्रतीक पबैत अछि। जे व्यक्ति अपन अनेक भाषा-ज्ञान पर वास्तविक गर्व रखैत अछि, से अर्थक ज्ञाता होइतहुँ विशेष आर्थिक तथ्यक ज्ञाता नहि भऽ सकैत। भारतीय ध्वनि-दृष्टिसँ रिक्त कोष्ठक शब्दक अभाव नहि, ज्ञानक सीमा आ अनुत्तरित प्रश्नक उच्चारण बनैत अछि।

मृणालक सीमित बयानमे पुरान डींगकेँ ओ आर्थिक षडचन्त्रक रहस्योद्घाटन नहि, शशांकक सत्ता-मोहक अभिव्यक्ति मानैत अछि। ओ स्वीकारैत अछि जे भाषाक वास्तविक उपयोगिता छल, आ एकरा शून्य मानब सेहो अन्याय। मित्रक एहि आलोचना मे निजी स्मरण आ अर्थव्यवस्थाक अप्राप्य ज्ञान भिन्न रहैत अछि। मृणालक 'सावधान रह'क आवृत्ति एहि अध्यायमे नायकक पुरान घमण्डक विरुद्ध सुसंगत स्वर बनि जाइत अछि। प्रमाणक नाप-तौल मित्रक कठोर वाक्यकेँ विश्वसनीय, मुदा सर्वज्ञ नहि बनबैत अछि।

अध्यायक अन्तक रूपक—'सत्य छोट होइत अछि?' 'नहि। केवल छाया छोट होइत अछि'—सार्थक प्रतीकात्मक परिणति अछि। स्वकीय प्रतिभाक आकार नहि घटैत; ओकरा सँ पड़ैत काल्पनिक अधिकारक छाया मात्र घटैत अछि। भोजक चमक, मकाऊक मंच आ अंकीय सन्देशक तीन अलग काल एकहि पात्रक आत्मनिर्माणक क्रम बनैत अछि। ई रूपक रचनाक मूल प्रश्नसँ जुड़ल अछि: अनुवादक जतबा देखलक, कहल, बुझलक आ बुझेबाक दावा केलक, ताहिमे कोन-कौन सीमा अलग-अलग अछि।

शिल्पगत सीमा ई जे प्रतिवेदनक शीर्षक आ प्रश्नोत्तरक अत्यधिक व्यवस्था प्रक्रियात्मक निबन्धक प्रभाव दैत अछि। तकनीकी सहायकक स्वर स्वतंत्र पात्रत्वक रूपमे कम विकसित; अनेक उपकरणक सम्पूर्ण स्रोत-प्रक्रिया संक्षेपमे उपस्थित अछि। प्रस्तुत किछु नकारात्मक चिह्नकेँ सम्पूर्ण जाँचक अन्तिम निर्णय मानल जाए तँ तर्क त्रुटिपूर्ण होयत, मुदा कथा स्वयं ओहि सीमा पर बल दैत अछि। अध्यायक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अंकीय लेखकत्वक स्वीकारकेँ स्वकीय मनोवृत्तिक आलोचनासँ जोड़ब अछि, नहि तँ उपकरणक एक फाइलक नाम सँ आर्थिक अपराध सिद्ध करबाक व्यर्थ सुविधा त्यागब अछि।

## अध्याय ७४ — भोज, देवता, अपमान ९ : करारक पदवी, भुगतान-पथ आ लाभकारी स्वामित्वक रिक्त स्तम्भ

चौहत्तरिम अध्याय चारि अलग संचिकासँ आरम्भ होइत अछि—आयोजन-करार, आतिथ्य-विक्रेता अभिलेख, भुगतान-निर्देशक सारांश आ वास्तविक लाभकारी स्वामित्वक सत्यापन-पत्र। ई चारि वस्तु कथाक बहुभाषिक समस्या कैं आर्थिक संस्थानक भिन्न भूमिकामे खोलैत अछि। नायकक स्मरणमे भोजक मंच आ तालिक इजोत एखनहुँ अछि; कागजमे मुदा स्वामित्वक कोष्ठक रिक्त अछि। लेखक एहि दृश्य-विरोधसँ ज्ञानक मूल त्रुटि देखबैत छथि: बाह्य रोशनाइ सँ आन्तरिक नियन्त्रणक नाम नहि पढ़ल जा सकैत।

पहिल करारमे सेवा देनिहार, भुगतान करनिहार आ मुख्य खर्च वहन करनिहार अलग पक्ष छथि। शशांक अपन पुरान व्यवहार स्वीकारैत अछि—सभकैं ‘आयोजक-पक्ष’ कहि एक शब्दमे समेटैत छल। सुविधा लेल कएल एहि भाषिक संक्षेपक अर्थगत मूल्य एखन स्पष्ट होइत अछि। जे पदसभ मूलमे भिन्न संस्थागत दायित्व दर्शबैत छथि, हुनका एक मानलासँ पछिला पाठक भुगतान, निर्णय आ स्वामित्व एके हाथमे बुझि सकैत अछि। अनुवादकक शब्द-चयन एतय तटस्थ शैली नहि, दस्तावेजक अर्थ-संरचना बदलनिहार क्रिया अछि।

दोसर संचिकामे होटल, परिवहन, भोजन, सुरक्षा आ मंच-सज्जाक अलग सेवा-विक्रेता अछि; किछु बिल अलग-अलग संस्थाकैं पठाओल गेल। बहु भुगतान-पथ देखिते अवैध नेटवर्क सिद्ध मानि लेब त्रुटि अछि। मुदा सभ इकाई स्वतः निर्दोष मानब सेहो अकाल निष्कर्ष होयत। जँ विक्रेता वास्तविक सेवा देने अछि तँ कर्मचारी, वितरण, बिल आ सेवा-चिह्नक समर्थक सामग्री भेटबाक चाही; जँ केवल कागजी इकाई अछि तँ स्वतंत्र प्रमाण चाही। नव्य न्यायीय तर्क दूनू परिकल्पनाक अपेक्षित परिणामक परीक्षण करैत अछि। लेखक वर्गीकृत संदेहकैं व्यक्तिगत दोषारोपणसँ अलग राखैत छथि।

शशांकक ‘बहुभाषी मंच/अतिथि सहायता’ सेवा-शुल्कक स्पष्ट प्रविष्टि अध्यायक ईमानदार प्रतिकूल साक्ष्य अछि। ओ भोजक व्ययसँ अपन आर्थिक सम्बन्ध नकारैत नहि, कारण भुगतान ओकर वास्तविक भाषिक श्रमक बदला भेटल। मुदा सेवा-सम्बन्ध सँ आयोजनक लाभकारी स्वामित्व नहि निस्सरैत। एहि स्वीकारमे रचना वैध आर्थिक सम्बन्ध आ अनुचित प्रभाव, दुनूकैं एक

पैमाना पर नहि राखैत। पात्र अपन उपस्थिति आ पारिश्रमिक स्वीकृत करबाक हिम्मत पबैत अछि; एहि कारण ओकर अन्य दावाक सीमा पूछब अधिक विश्वसनीय बनैत अछि।

एक संस्था आ भुगतान करनिहार कम्पनीक साझा पंजीकृत सम्पर्क-ठामक संकेत जाँचक नव दिशा दैत अछि, मुदा साझा स्वामित्व नहि। आदित्यक प्रश्न साझा निदेशक धरि पहुँचैत अछि; शशांक स्वीकारैत अछि जे एहन कड़ी मजबूत हो सकैत अछि, मुदा वास्तविक लाभकारी स्वामित्वक अलग अभिलेख फेरो देखबाक चाही। सम्बन्धक श्रेणीकरणमे रचना केवल सूचनाक नाम गनब नहि करैत: नाम, पता, निदेशक, आदेश, लाभ आ नियन्त्रणक विविध कारणानुमानक भार अलग-अलग ठाम राखैत अछि। विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ संस्था-रेखासभक वास्तविक छेदन बिना एक कथा बना देब अनैतिक होयत।

'ककर असली पैसा अछि, हमरा सभ पता अछि' नायकक पुरान सन्देश ओकर आत्मप्रचारक चरित्रक प्रतिकूल प्रमाण बनैत अछि। ओ स्वीकारैत अछि जे करारक किछु पक्ष आ भुगतानक नाम जानैत छल, मुदा 'सभ पता' शाब्दिक रूपेँ सत्य नहि छल। आदित्य ठीक ओही ठाम चुनौती दैत छथि: बारम्बार एहन डींग होय तँ अतिरिक्त ज्ञानक आशंका जाँचना उचित अछि। कथा नायकक स्वीकृत घमण्डकेँ बेमतलब कहिकेँ फेंकैत नहि; ओकरा जाँचक कारण मानैत अछि, निष्कर्ष नहि। ज्ञानक गहिराई लेल स्वतन्त्र पाबनिहार, लाभार्थी वा अधिकारक अभिलेख चाही।

अध्यायक सर्वाधिक ठोस अनुवाद-साक्ष्य चीनी पदक विस्तारमे भेटैत अछि। मूल पद 'व्यय वहन करनिहार पक्ष'क रूपमे पढ़बाक प्रश्न उठल छल, मुदा मंचक सरल शब्दक लोभमे शशांक 'मुख्य आयोजक' लिखने छल। पाछाँ आयोजन-पुस्तिकामे ओही विस्तृत पदवी दोहराओल गेल। ई पाठगत प्रसार अनुवादकक नर्म शब्दक वास्तविक परिणाम अछि: एक प्रशासनिक-आर्थिक भेद सार्वजनिक पदवी बनि जाइत अछि। मुदा पाछाँक पुस्तिकामे पदवी छपलासँ मूल लाभकारी स्वामित्व सिद्ध नहि। स्रोत आ अनुवादक बीच अधिकारक रेखा ई दृश्य सबसे तीक्ष्ण रूपमे देखबैत अछि।

शशांक कहैत अछि जे शब्द चुनब जानि-बुझि छल, मुदा अर्थक सभ आर्थिक परिणाम ओहि समय पूर्ण रूपेँ न बुझल छल। ई आधा-स्वीकृति एक सावधानी माँगैत अछि। शब्दक आशय जानि-बुझि बदलल गेल—ई नैतिक जिम्मेदारी अछि; कतेक वित्तीय हानि वा लाभ भेल, से अलग परीक्षणक विषय। एहि

श्रेणीकरणसँ समीक्षा लघु शैलीगत भूल आ व्यापक षडयन्त्रक बीच वास्तविक भाषा-हानिक महत्व चिन्हैत अछि। भारतीय औचित्य-पद्धतिमे प्रसंग-सापेक्ष पद चयनक दायित्व, आ नव्य न्यायमे पदक परिभाषा, दूनू एक दृश्य मे संयुक्त छथि।

मृणालक पुरान उत्तर 'लोक चिन्हैत अछि, स्वामी नहि बनबैत' अध्यायक मानवीय प्रतिपक्ष अछि। ओ शशांकक प्रतिष्ठा-लोभ चिन्हैत छल, आर्थिक संरचनाक भीतरक ज्ञान तकरा नहि छल। लेखक मित्रकेँ पछिला अपराध-जाँचक सर्वज्ञ भविष्यवक्ता नहि बनबैत छथि। एहि कारण मृणालक स्मरण पात्रक व्यवहारक आलोचना अछि, लाभकारी स्वामित्वक कानूनी प्रमाण नहि।

दूनू मित्रक अन्तिम वार्तालापमे शशांक कहैत अछि जे भाषाक गर्व छोट नहि भेल, ओकर स्थान बदलल: 'एतय धरि बुझैत छी, तकर आगाँ नहि' कहब आब हुनकर श्रेष्ठता अछि।

कथात्मक रूपमे चारि संचिका चारि संस्थागत दृष्टिबिन्दु दैत अछि, मुदा सभक चर्चा आदित्य-शशांक वार्तामे सिमटि रहलासँ विक्रेता आ कर्मचारीक जीवन स्वतंत्र दृश्य रूपमे कम अछि। 'सेवा-शुल्क स्वामित्व नहि' आ 'संकेत निष्कर्ष नहि' सूत्र अनेक बेर पुनरावृत्त भऽ कथागतिकेँ मन्द करैत अछि। तथापि असल उपलब्धि ई अछि जे शब्दक विस्तारको अन्ततः तथ्यक उत्पादक बनि सकैत अछि, जखन पछिला पुस्तिकासभ मूल अनुवादक पदवी दोहरबैत छथि। भाषा एतय वास्तविक अभिलेखपर असर करैत अछि, मुदा अपने आप आर्थिक स्वामित्व पैदा नहि करैत।

अन्तमे शशांकक कापीमे करार-पक्ष, भुगतान-पक्ष, सेवा-विक्रेता आ वास्तविक लाभकारी स्वामी चारि अलग श्रेणी रूपेँ बचैत अछि। आयोजनक रोशनाइ सँ लऽ कऽ 'सत्यापन शेष' कोष्ठक धरि आएल कथा प्रतिष्ठाक अहंकारकेँ विशेषणसँ मुक्त करबाक प्रयास अछि। अगिला अध्याय परिचित आद्याक्षरक माध्यमसँ व्यक्तिगत मित्रताकेँ फेर वित्तीय प्रवाहक बीच आनत; एहि सेतु पर शशांक जे सीमा सीखलक, ओकर कठिनतम मानवीय परीक्षा होयत।

## अध्याय ७५ — भोज, देवता, अपमान १० : तीन आद्याक्षर, मृणालक प्रतिपूर्ति आ मित्रताक स्वतंत्र प्रमाण

पचहत्तरिम अध्याय मित्रता आ वित्तीय अभिलेखक कात एक डर जगबैत अछि: ‘M.K.’ तीन अलग ठाम लिखल अछि, आ शशांकक मित्र मृणाल कर्णक नामक आद्याक्षर सेहो वैह अछि। आदित्य स्पष्ट करैत छथि जे पहिने तीनू अभिलेख एकहि व्यक्तिक छथि कि नहि, से जाँचब; अनुकूल अथवा प्रतिकूल निष्कर्ष पहिने चुनब नहि। कथा एक छोट पाठ-चिह्नकेँ पात्रक सामाजिक प्रतिष्ठा पर पैघ संकट बनेबाक प्रक्रिया देखबैत अछि। ई संकट संख्याक नहि, पहचानक अछि—लेखकत्व, खाता आ व्यक्ति अलग अस्मिता छथि।

पहिल ‘M.K. / अतिथि सहायता / प्रतिपूर्ति’ प्रविष्टिक संग भोजक यात्राखर्च-सारांश आ मृणालक अतिथि-सूची भेटैत अछि। मृणाल स्वयं सीमित स्थानीय खर्च देबाक आ पछिला प्रतिपूर्ति पाबयबाक तथ्य स्वीकारैत अछि; शशांक सेहो ई सम्बन्ध नकारैत नहि। एहि ठाम समीक्षा लेल निर्णायक ई अछि जे सत्यापित प्रतिपूर्ति एक प्रकारक वास्तविक आर्थिक सम्पर्क अछि, मुदा वित्तीय नेटवर्कक नियन्त्रण अथवा अपराधक प्रमाण नहि। पात्रक आत्मसमर्थन वास्तविक प्रतिकूल अंशकेँ नुका देलासँ नहि, ओकर सही प्रयोजन चिन्हित केलासँ विश्वसनीय बनैत अछि।

दोसर ‘M.K.-2’ प्रविष्टिमे पूरा नाम नहि, भुगतान-द्वारक समेकित आँकड़ा आ ‘अन्तिम पाबनिहार सत्यापन शेष’ लिखल अछि। शशांक अपन मित्रक पक्षमे सेहो तुरन्त समानता घोषित नहि करैत, आ ओकर विरुद्ध सेहो नहि। समान अक्षरसँ व्यक्ति निर्धारित करबाक लेल खाता-पहचान, समय, वास्तविक सेवा, धन पाबनिहार आ अन्य स्वतंत्र सम्बन्ध चाही। नव्य न्यायीय उपमान एतय केवल नाम-साम्यक प्राथमिक संकेत अछि; वैध प्रमाण बनबाक लेल सम्बन्धक अवच्छेदक स्पष्ट होयबाक चाही। एही कारण मित्रता बचाबय लेल नियमक कड़ाई अपनाओल गेल अछि, भावुक पक्षपात नहि।

भोजक साँझक पुरान सन्देश—‘तूँ रहिह, विदेशी लोक बुझत जे हमर भारतीय पक्ष मजबूत अछि’—मृणालक ‘हम तोहर मित्र छी, पक्ष नहि’ उत्तरक संग पुनः उठैत अछि। शशांक मित्रक उपस्थितिक प्रतिष्ठात्मक उपयोग स्वीकारैत अछि। मृणालक दृष्टिमे ओ साथी रहबाक निमन्त्रण नहि, प्रदर्शनक सहारा

बनि गेल छल। एतय विश्वासघातक अनुभूति ठोस अछि: मित्रकेँ मनुष्यक बदला सार्वजनिक विश्वसनीयताक प्रमाण-पट्ट बना देब। मुदा ई नैतिक चोट मृणालक आर्थिक प्रतिनिधित्व अथवा धन-निर्देश सिद्ध नहि करैत; दुनू मित्र स्वयं ई विभाजन स्पष्ट करैत छथि।

मध्यवर्ती खाताक सूचीमे किछु धन वैध सेवाक बदलामे आयल, किछु आगाँ दोसर संस्थाकेँ गेल, आ किछु अन्तिम पाबनिहार अपुष्ट अछि। एक पुरान टिप्पणीमे 'म्यूल?' अछि। ई प्रश्नचिह्न आरोपक व्याकरणक निर्णायक तत्व अछि। खाते धन आयल आ शीघ्र आगाँ गेल मात्रसँ खाता-धारक जानि-बुझि मुखौटा छल, से नहि बनैत। सेवा वास्तवमे भेल कि नहि, आदेश ककर, लाभ ककरा, आ धनक नियन्त्रण केहन—एहि सभक स्वतंत्र मिलान चाही। विपरीत रूपेँ सेवा-प्रमाण बेजोड़ होय तँ मुखौटा-परिकल्पना सुदृढ़ भऽ सकैत अछि; कथा जाँचक एहि सम्भावनाकेँ सेहो जीवित राखैत अछि।

'हवाला-सदृश समायोजन?' आ अप्रमाणित अंकीय परिसम्पत्ति-पता सन पदसभक पुनरावृत्ति पहिनुक समाचार-सनसनीक स्मरण जगबैत अछि। मुदा लेखक एहि अध्यायमे परिचालनक विवरण नहि, उपलब्ध पाठसँ व्यक्ति आ संस्थाक सम्बन्धक सीमामे रुचि रखैत छथि। शशांक शब्द जानैत अछि, किछु सारांश देखैत अछि; एतबे पर ओकरा व्यवस्था चलाओनिहार मानब असंगत अछि। जखन तीन भुगतान-पथ एक शृंखला होयबाक प्रश्न उठैत अछि, ओ अलग मानबाक जल्दबाजी सेहो रोकैत अछि: बारम्बार सम्बन्ध देखाय तँ ई स्वतन्त्र जाँचक कारण अछि। सममित विवेक रचनाक एक लगातार आलोचनात्मक गुण अछि।

'हम एहि लोकक पैसा-वाला भाग बुझि गेलहुँ'क पुरान सन्देश पर मृणालक तत्काल प्रश्न 'बुझलह कि सुनलह?' पाठक लेल अनुवादकक अन्तःदोषक सर्वाधिक संक्षिप्त निदान अछि। शशांक मानैत अछि जे किछु भुगतान-शीर्षक, नाम आ बैठकक बिखरल सूचना सुनि ओ पूर्ण वित्तीय संरचना बुझबाक डींग हाँकैत छल। ई मिथ्या व्यापक दाबी ओकर विश्वसनीयता पर प्रश्न उठबैत अछि, मुदा सर्वथा शून्य अनुभव सेहो नहि छल। साक्षी वास्तवमे कतेक देखलक, कतेक सुनलक, आ अपन वाक्यकेँ कतेक फुलौलक—एहि भेद पर अध्यायक नैतिक तर्क टिकैत अछि।

भोजक समूह-चित्रमे मृणाल शशांकक पाछू ठाढ़ अछि, कातमे कर्मचारी आ कलाकार-दलक लोक। चित्रक निकटतासँ आर्थिक सहभागिता निकालल जाए तँ उपस्थित सभ लोकक लेल एके आरोप लगबाक बाध्यता उत्पन्न होयत। ई अनिष्ट परिणाम चित्रक अतिविस्तारित व्याख्याक खण्डन करैत अछि। शशांक अपन प्रतिष्ठा लेल चित्र पठौने होइत तँ ई ओकर व्यक्तिगत प्रदर्शन-लोभक प्रश्न अछि; मृणालक आर्थिक भूमिका नहि। नव्य न्यायीय अनवस्था नहि, अपेक्षित परिणामक असंगति देखाकऽ तर्क जनसम्बन्धक रक्षाक औजार बनैत अछि।

अध्यायक मार्मिक क्षण आदित्यक औपचारिक बयान आ मृणालक निजी उत्तरक बीच घटैत अछि। शशांक 'मित्रता ककरो खाता नहि' पंक्ति अभिलेखमे जोड़य चाहैत अछि; आदित्य उचित रूपेँ एकरा तथ्यात्मक बयानक वस्तु नहि मानैत। मृणाल कहैत अछि—'कापीमे लिखिह'। एहि छोट विनिमयमे संस्थागत रिकॉर्ड आ साहित्यिक आत्मचिन्तनक मर्यादा एकदम स्पष्ट अछि। सभ सत्य समान दस्तावेजमे नहि समायत, मुदा दस्तावेजक मर्यादा मानलासँ निजी नैतिक सत्यक मान घटैत नहि।

मृणाल पूछैत अछि—यदि दोसर M.K. हम निकलितहुँ? शशांकक उत्तर अछि जे मित्रताक कारण सत्य नहि नुका देब; आ जँ नहि, तखन मित्र होयबाक कारण दोष नहि जोड़ब। एहि संवादमे भावुक पुनर्मिलनक बदला समान कसौटीक कठिन स्वीकार अछि। भारतीय करुण-शान्त रसक सम्मिश्रण मित्रक क्लान्तिमे व्यक्त होइत अछि, आ पाश्चात्य बहुस्वरताक सम्भावना आदित्यक अभिलेखीय, मृणालक व्यक्तिगत आ शशांकक आत्मालोचनात्मक तीन पृथक स्वरमे भेटैत अछि।

कथाशिल्पक सीमा किछु स्पष्ट अछि: आदित्य-शशांकक प्रश्नोत्तर 'समान आद्याक्षर समान व्यक्ति नहि'क अनेक आवृत्ति बनैत अछि; मृणालक स्वतंत्र लोकजीवनक दृश्य कम, ओकर कष्टक व्याख्या अधिक अछि। अंकीय प्रवाहक अपूर्ण सारांशकेँ वास्तविक व्यवहारक समस्त जटिलताक स्थान नहि देल जा सकैत। तथापि लेखक एहन सूचना-रिक्तताक आड़मे निश्चित आरोप गढ़ैत नहि छथि; ओहि रिक्ततासँ साक्ष्य-विषय बनबैत छथि। एहि सीमा-स्वीकृतिमे रचनाक शोधात्मक नैतिकता अछि।

अन्तमे शशांक मृणालक नामकेँ अपन प्रतिष्ठाक विस्तार नहि, स्वतंत्र प्रमाणक अधिकार दैत अछि। ई अध्यायक वास्तविक निष्कर्ष अछि। अध्याय ७१क सार्वजनिक चित्र सँ अध्याय ७५क मित्रक प्रतिपूर्ति धरि कथाक केन्द्र सार्वजनिक अपराध-छायासँ व्यक्तिक स्वतंत्र पहचान दिस सरकल अछि।

अगिला नियत प्रसंग फेर मकाऊ आ सीमित प्रणाली-प्रवेश दिशामे लौटत, मुदा आब शशांकक न्यायबोध केवल अपना पर नहि, मित्रक नाम पर सेहो एकहि मापक लागू करबाक शिक्षा पाबि चुकल अछि।

## अध्याय ७१-७५ : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — सार्वजनिक आरोपसँ मित्रक स्वतंत्र पहचान धरि

एकहत्तरिम सँ पचहत्तरिम अध्याय ‘भोज, देवता, अपमान’ खण्डक मध्य-द्वितीय आरोह रचैत अछि। पहिल अध्यायमे मुहरबन्द जाँचक प्रश्न समाचारक निश्चित दोष बनि जाइत अछि; दोसरमे न्यायालय शशांकक यथार्थ भाषिक कपट आ अप्रमाणित आर्थिक आरोप अलग करैत अछि; तेसरमे अंकीय उपकरण पर महत्त्वाकांक्षी सन्देशक लेखकत्व जाँचल जाइत अछि; चौठमे करारक पदवी आ वास्तविक लाभकारी स्वामित्वक भेद खुलैत अछि; पचहत्तरिम अध्याय मृणालक आद्याक्षर आ वैध प्रतिपूर्तिक परीक्षा दैत अछि। पाँचू घटना शशांकक भाषा-दायित्वकेँ पाँच स्वतंत्र वस्तुगत साक्ष्यक संग कसैत अछि।

अध्याय ७१क ‘हवाला?’ सँ समाचारक ‘हवाला’ धरि यात्रा आ अध्याय ७४क ‘व्यय वहन करनिहार पक्ष’ सँ ‘मुख्य आयोजक’ धरि यात्रा एकहि भाषिक क्रियाक दू भिन्न दिशा छथि। पहिलमे सावधानीक लोप अपराध-निश्चितता उत्पन्न करैत अछि; दोसरमे संस्थागत पदक विस्तार वास्तविक अधिकारक भ्रम उत्पन्न करैत अछि। पहिल सार्वजनिक समाचारक पाठ-सम्पादनक प्रश्न अछि, दोसर शशांकक आफ्नहि अनुवादक चयनक स्वीकार। एतय लेखक बाहरी संसारकेँ दोष देबाक संग नायकक अपन भाषा-हस्तक्षेपकेँ सेहो परीक्षणमे लैत छथि।

अध्याय ७२क अदालत आ ७३क अंकीय पुनर्परीक्षण एक समान तार्किक भेदकेँ अलग सामग्री पर लागू करैत अछि। अदालतमे भोज-उपस्थिति, भाषिक भुगतान आ जोखिम-नरमी वास्तविक स्वीकृत तथ्य छथि, मुदा आर्थिक नियन्त्रण अलग आरोप अछि। उपकरणमे खाता-लेखकत्व अथवा प्राप्त संचिका वास्तविक चिह्न अछि, मुदा कथनक शाब्दिक सत्यता, संचिका-लेखकत्व आ आर्थिक निर्देश अलग तथ्य छथि। पाठकीय ज्ञान एहन स्तरित भेदक संचयनसँ बनैत अछि। ई सिर्फ कानूनी बचाव नहि; पात्रक स्वकीय स्मृतिक भाषिक अविश्वसनीयता स्वीकारबाक कठिन अभ्यास अछि।

अध्याय ७३क ‘मंच हमरा बिना नहि चलत’ डींग आ अध्याय ७४क ‘ककर असली पैसा अछि, हमरा सभ पता अछि’ दाबी दूनू सामाजिक उपयोगिता केँ सत्ता बनाबयबाक प्रयास छथि। पहिलमे बैठकक भाषिक आवश्यकता सम्पूर्ण

निर्णयाधिकार बनैत अछि; दोसरमे किछु करार-पक्षक जानकारी सम्पूर्ण लाभकारी स्वामित्वक ज्ञान बनैत अछि। पात्रक प्रतिभा सत्य अछि, मुदा ओकर बढ़ाएल छाया असत्य हो सकैत अछि। अध्याय ७३क 'नहि। केवल छाया छोट होइत अछि' रूपक एहि आन्तरिक रूपान्तरणक कलात्मक व्याख्या दैत अछि।

अध्याय ७१क समूह-चित्र आ ७५क मृणाल सहित भोजक समूह-चित्र प्रतिकूल आरोपक समान युक्ति उजागर करैत अछि। सार्वजनिक छविमे प्रसिद्ध कलाकारक संग उपस्थिति आर्थिक सहभागिताक प्रमाण नहि; मृणालक संग ठाढ़ होयब सेहो ओकर कथित मध्यवर्ती खाताक नियन्त्रण स्थापित नहि करैत। कथा एही तर्ककेँ नायकक बाह्य प्रतिष्ठा-बचावसँ हटाकऽ आन व्यक्तिक गरिमा-सुरक्षा धरि लऽ जाइत अछि। स्वतंत्र व्यक्ति अपन अभिलेखीय पहिचानक अधिकार रखैत अछि, चाहे ओ नायकक मित्र होथि अथवा मंचक बाहरी कलाकार।

पाँच अध्यायक वित्तीय साक्ष्य-क्रम सेहो सूक्ष्म अछि। अध्याय ७१मे मुहरबन्द प्रश्नचिह्न, ७२मे सेवा-शुल्कक मर्यादा, ७३मे उपकरणमे उपस्थित व्यय-संचिका, ७४मे चारि वर्गक करार आ विक्रेता-पथ, ७५मे तीन M.K. आद्याक्षर तथा एक सत्यापित प्रतिपूर्ति। एहि क्रममे प्रत्येक नवल सूचना कहियो सन्देह घटबैत, कहियो जाँचक प्रश्न बढ़बैत अछि। सामग्रीक उपलब्धता आ आरोपक निश्चितता एके अनुपातमे नहि बढ़ैत। लेखक जाँच-पद्धतिमे अधूरापनकेँ प्रमाणहीन अनुमानक निमन्त्रण नहि बनबैत छथि।

भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ गौरव, लज्जा, भय आ करुणाक परस्पर संक्रमण सघन अछि। भोजक चित्र पहिने शशांकक आत्मगौरव जगौने छल; समाचारमे ओ अपमानक वस्तु, अदालतमे उपस्थितिक सीमित साक्ष्य, आ मृणालक प्रसंगमे मित्रताक प्रतिष्ठात्मक उपयोगक चिह्न बनैत अछि। एहि एके चित्रक भिन्न अर्थक ध्वनि स्थिर कथा-वस्तुकेँ समयानुसार बदलैत अछि। रसगत क्षति तखन होइत अछि जखन पात्रक वेदना केवल सूत्रवाक्य बनि जाइत; एहि पाँच अध्यायमे चाहक भाप, मित्रक मौन आ झुकल मुख ओ क्षति किछु दूर धरि रोकैत अछि।

पाश्चात्य आख्यानशास्त्रमे ई पाँच अध्याय समान कथा-समयक पुनर्निर्माण आ दस्तावेजक भिन्न दृष्टिबिन्दु पर निर्भर छथि। समाचारक प्रारूप, अदालतक रिकॉर्ड, पुरान सन्देश, करारक मूल तथा अनुवाद, भुगतान-सूची—प्रत्येक एके भोजकेँ अलग कथास्वर दैत अछि। पाठक केवल 'की भेल' नहि,

'के कोन स्रोतसँ की जनैत छल' पूछैत अछि। शशांकक दृष्टिबिन्दु प्रमुख रहितो आदित्यक संस्थागत अनुशासन आ मृणालक निजी रोष ओकर सर्वाधिकार घटबैत अछि। तखन सेहो विक्रेता, पत्रकार आ तकनीकी सहायकक स्वायत्त चरित्र पर्याप्त विस्तृत नहि होयबाक सीमा रहैत अछि।

नव्य न्यायीय पद्धतिमे प्रतीक आ प्रमाणक सीमा एतय चारि बार निर्णायक बनैत अछि। प्रश्नचिह्न लोपसँ विधानात्मक निष्कर्ष बनब अनुमितिक असंगति अछि; सन्देशक लेखकत्वसँ कथनक शाब्दिक सत्य बनब दूसरे स्तरक छलाँग; मंचीय पदवीसँ लाभकारी स्वामित्व बनब तेसर; M.K. अक्षरसँ मृणालक वित्तीय भूमिका स्थापित करब चौठ। एहि सभमे अपेक्षित स्वतन्त्र चिह्न—स्रोत-श्रृंखला, आदेश, लाभ, पहचान, समय आ प्रयोजन—अलग-अलग अछि। एक सार्वत्रिक सूत्र पर्याप्त नहि; प्रत्येक आरोप अपन आवश्यक परिणामक कड़ी माँगैत अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिमे दिल्लीक भोज आ मीडियाक सार्वजनिक भाषा, भारतीय न्यायालयक सीमित अनुमति, विदेशी भाषिक बैठकक स्मृति, करारक संस्थागत परत आ भुगतान-द्वारक बिखरल प्रविष्टि एक समयरेखामे समानान्तर रखल गेल अछि। संदिग्ध समय-साम्य ककरो दोषी सिद्ध नहि करैत, मुदा स्वतंत्र मार्ग जाँचबाक आधार भऽ सकैत अछि। रचना एहि न्याय-विवेककेँ केवल नायकक अनुकूल तथ्यक सेवा नहि करबैत: ओकर भाषिक नरमी, डींग आ मित्रक प्रतिष्ठात्मक उपयोग प्रमाणित रहिते स्पष्ट स्वीकारल जाइत अछि।

पाँच अध्यायक चरित्र-विकासक बिन्दु ध्यान देने योग्य अछि। अध्याय ७१मे शशांक अपमानक क्रोधमे 'सभ मिथ्या' नहि कहब सीखैत अछि। अध्याय ७२मे नैतिक कपटक सही नाम दैत अछि। अध्याय ७३मे पुरान डींगक लेखकत्व आ सीमित वास्तविक समन्वय स्वीकारैत अछि। अध्याय ७४मे अपन अनुवादक पदवीक पछिला दस्तावेजपर प्रभाव देखैत अछि। अध्याय ७५मे मित्रक नामकेँ अपन नामसँ स्वतंत्र परीक्षणक अधिकार दैत अछि। आत्म-क्षमा सँ अधिक कठिन ई क्रम अछि: अपन कथा लिखबाक एकाधिकार छोड़ि देब।

एहि आलोचनाक सीमा सेहो एहि क्रममे राखब जरूरी अछि। अनेक अध्यायमे आदित्यक आरम्भिक प्रश्न, शशांकक विभाजित उत्तर आ रातिक कापी-सूत्र लगभग एक संरचनामे लौटैत अछि। न्यायिक प्रक्रियाक वैविध्य घटैत अछि; पात्रसभक भाषामे अलग-अलग पेशागत उच्चारण अपेक्षाकृत कम सुनाइत अछि। साहित्यिक आवृत्तिक कारण कथा कखनो दार्शनिक

प्रमाण-अभ्यास अधिक आ आकस्मिक जीवन कम लगैत अछि। तथापि एके संरचना परिस्थिति बदललापर परीक्षा बारम्बार दैत अछि—शशांक अनुकूल परिस्थिति, प्रतिकूल परिस्थिति आ निजी मित्रतामे समान कसौटी राखि पबैत अछि कि नहि।

अन्तिम तुलनात्मक निष्कर्ष एहि बातमे अछि जे भाषा-नैतिकता केवल सही शब्द चुनब नहि, अपन कथनक प्रमाण-सीमा राखब आ तेसर व्यक्तिक स्वतन्त्र मान-प्रतिष्ठाक रक्षा करब सेहो अछि। सार्वजनिक समाचारक असिद्ध आरोपक विरोध करैत शशांक अपन स्वीकृत दोष नहि नकारैत; मित्रकेँ निर्दोष सिद्ध करबाक भावुक उतावलापनमे अपरिचित M.K. प्रविष्टिक परीक्षा सेहो नहि रोकैत। करार, डिजिटल पाठ, समूह-चित्र आ निजी स्मृतिक चारि परतमे उभरैत ई समान मापक ‘अनुवादक’ उपन्यासक ज्ञानमीमांसात्मक उपलब्धि अछि।

## अध्याय ७६ — जन्मदिनक मंच : विशेष पहुँचक विशेषण आ अस्थायी अतिथि-अधिकारक अन्तर

छिहत्तरिम अध्याय जन्मदिनक मंचपर कहल ‘विशेष पहुँच’क वचनकेँ फेर जाँचक मेजपर अनैत अछि। वस्तुसाक्ष्य चारि अछि—मंचक सार्वजनिक दृश्य-प्रतिलिपि, दिल्ली–मकाऊ यात्राक समय-क्रम, बैठकक अतिथि-सूची आ सीमित प्रणाली-प्रवेशक सारांश। मंचपर प्रस्तुति समाप्त कएने कलाकारक कात शशांक विदेशी अतिथिक परिचय करबैत अछि; कियो आगाँ मकाऊमे विशेष पहुँच देबाक बात कहैत अछि। सार्वजनिक तालि एहि भविष्यत्-वचनक भार बढ़बैत अछि, आ शशांकक मन ओही क्षण सम्भावित सुविधा केँ लगभग अधिकार मानि लैत अछि।

नायकक पुरान सन्देश ‘अगिला यात्रा पर असली भीतर देखब’ एहि मनोवृत्तिक संकेत अछि। मृणाल तखनहि ‘विशेष शब्दसँ सावधान रह’ लिखने छल। किन्तु मित्रक चेतावनी प्रणालीक वास्तविक अधिकारक तकनीकी ज्ञानपर आधारित नहि, शशांकक विशेषणपर मोह देखबाक अनुभवपर आधारित छल। आख्यानशास्त्रीय रूपमे वर्तमान जाँच अतीतक सार्वजनिक वचन आ निजी इच्छाक बीच दूरी खोलैत अछि। मंचक बोलल आश्वासनक मूल प्रसंग अलग, पात्रक मनमे ओकर बढ़ल आकार अलग—ई दुई कथा एके क्षणमे गुँथल अछि।

यात्रा-अभिलेख दिल्ली सँ मकाऊक गमन, होटल-आरक्षण, बैठकक तिथि आ वापसीकेँ प्रमाणित करैत अछि। शशांक विदेश गेल छल, एकरा नकारैत नहि। आयोजक-पक्षक आंशिक आतिथ्य आर्थिक सम्बन्धक एक रूप बनबैत अछि, मुदा ताहि सँ लाभकारी स्वामित्व नहि सिद्ध। उपस्थिति, ठहरनाइ, व्यावसायिक जिज्ञासा आ नियन्त्रणक भिन्न श्रेणी नायक स्वयं स्पष्ट करैत अछि। ओहि स्वीकृतिसँ ओकर बचावक मूल्य बढ़ैत अछि, कारण ओ अपन वास्तविक लाभ आ निकटता कम नहि करैत।

मकाऊ बैठकक अतिथि-सूची शशांकक नामक कात ‘भाषिक समीक्षा / अतिथि प्रवेश’ लिखैत अछि। ओहि पृष्ठपर व्यवसायिक समीक्षा, विधिक समीक्षा आ तकनीकी प्रस्तुति अलग-अलग वर्ग छथि। एहि सूचीक स्थापत्य स्वयं एक आलोचनात्मक वक्तव्य अछि: एके ठाम उपस्थित लोकसभक उद्देश्यमूलक अधिकार समान नहि। मंचक ‘विशेष पहुँच’ अनिश्चित वचन

छल; अभिलेखक अतिथि-वर्ग उपयुक्त कालक सीमित अधिकारक ठोस संकेत अछि। शब्दक सार्वजनिक चमक आ सूचीपत्रक मितभाषी श्रेणी बीच ध्वन्यात्मक विरोध बनैत अछि।

प्रवेश-सारांशमे शशांकक अस्थायी परिचय-चिह्न निश्चित समय धरि सक्रिय अछि, आ सामग्री देखब, भाषिक टिप्पणी देब तथा प्रस्तुति-सत्रमे सहभागी होयब अनुमत क्रिया छथि। भुगतान स्वीकृति, उपयोगकर्ता-अधिकार बदलनाइ, विन्यास बदलब अथवा स्थायी प्रशासनिक स्वायत्तताक उल्लेख प्रस्तुत सारांशमे नहि अछि। ई अनुपस्थित उल्लेख स्वतः पूर्ण असम्भवता नहि बतबैत, मुदा उपलब्ध अभिलेख व्यापक प्रणाली-नियन्त्रणक कथनकेँ समर्थित नहि करैत। नव्य न्यायीय विधिसँ नायक दुनू छोर जाँचैत अछि: ‘कोनो प्रवेश नहि’क दावा उपलब्ध सत्रचिह्नसँ टकराइत, ‘पूर्ण नियन्त्रण छल’क दावा स्वतंत्र अधिकारचिह्न माँगैत अछि।

सक्रिय परिचय-चिह्नसँ प्रत्येक विशिष्ट क्रियाक लेखकत्व स्थापित नहि होयबाक सावधानी अध्यायक महत्वपूर्ण विस्तार अछि। शशांकक स्मरणमे बैठकक समय स्थानीय कर्मचारी उपस्थित छल; साझा अथवा पर्यवेक्षित क्रियाक विशिष्ट विवरण उपलब्ध नहि। एहि लेल सक्रिय सत्रक अस्तित्व केकर हाथसँ कोन काम भेल, से पूर्ण रूपेँ नहि बतबैत। डिजिटल प्रमाणक आलोचनामे उपलब्ध सत्र, अनुमति-वर्ग, विशिष्ट क्रिया, व्यक्ति-अधिकार आ स्वामित्व अलग ठाम राखब आवश्यक अछि। एतय लेखक तकनीकी शब्दावलीक आकर्षणसँ साहित्यकेँ बचबैत छथि।

बैठक-विवरणमे खेल-सम्बन्धी चेतावनी, उपयोगकर्ता-सन्देश आ भुगतान-शीर्षकक भाषा पर शशांकक टिप्पणी भेटैत अछि; किछु ठाम ओकर शब्द-चयन नर्म छल। लेखक वास्तविक भाषिक प्रभावकेँ छोट नहि करैत छथि। ओ विषयसूचक सामग्री देखैत छल, किछु जोखिम-शब्द बदलैत छल आ सेवा-शुल्कक लोभ राखैत छल। मुदा एहि सँ स्वतः वित्तीय निर्देश, अन्तिम पाबनिहारक चयन अथवा परिसम्पत्तिक नियन्त्रण नहि निकलैत। ‘केवल भाषा-प्रेम’ कहि सम्पूर्ण व्यावसायिक लाभ ढाँपब सेहो असत्य होयत—ई स्वीकार पात्रक आत्मनैतिक अवस्थाक प्रमाण अछि।

अध्यायक मध्यदृश्यमे शशांक अपन मंचीय प्रतिभा पर आजुओ गर्व करैत अछि। आदित्य लोभ कतय छल पूछैत छथि; नायक बतबैत अछि जे तालिकेँ अवसर, अवसरकेँ अधिकार आ अधिकारकेँ सत्ता मानि लेने छल। ई

त्रिक कलात्मक रूपेँ सघन अछि, कारण लोभ धनक अनिवार्य प्रत्यक्ष लालसा नहि: प्रतिष्ठा, सेवा-शुल्क, होटल, यात्रा आ 'विशेष' कहल जाएबाक इच्छा ओकर रूप बनैत अछि। भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ उत्साहक भाव आत्ममोहमे बदलैत अछि, फेर लज्जाक माध्यमसँ शान्त आत्मस्वीकृति दिस लौटैत अछि।

मृणालक प्रश्न—जँ मंचपर 'विशेष पहुँच' नहि कहल जइतय तँ शशांक मकाऊ जइतय कि नहि—कथाक कारणमीमांसाक परीक्षा अछि। नायक सम्भवत: काम, पैसा आ जिज्ञासाक कारण जएबाक उत्तर दैत अछि; 'विशेष' शब्द ओकर निर्णय सहज अवश्य बनौलक, मुदा एकमात्र कारण सिद्ध नहि। एहि बिन्दुपर विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति व्यक्ति-मानस, विदेश-यात्रा आ संस्थागत बैठकक अलग समयरेखा एके कारणमे समेटबाक विरोध करैत अछि। जीवन एक कारणक समीकरण नहि; यात्रा बहु प्रेरणाक संयुक्त फल अछि।

कलात्मक सीमा ई अछि जे आदित्यक प्रश्न आ शशांकक वर्गीकरण किछु बेर पुरान अध्यायक समान सूत्र बनबैत अछि। स्थानीय मकाऊ कर्मचारी, प्रस्तुति-दल आ अनुमति देनिहारक स्वतंत्र दृष्टिबिन्दु अत्यल्प अछि; प्रणालीक अधिकारक विवरण पात्रक भाषामे दोहरायत अछि। तथापि जन्मदिनक मंचक दृश्य-स्मृति आ 'अतिथि' लिखल प्रमाणित सूचीक टकराव अत्यन्त उपयुक्त प्रतीक अछि। 'जन्मदिनक मंच पर हमरा "विशेष" कहल गेल; मकाऊमे हमरा अतिथि लिखल गेल'—एहि आत्मालोचनमे भाषिक विशेषण द्वारा सत्ता बनायबाक भ्रम एक ठोस कथात्मक आवरण पबैत अछि।

अध्यायक अन्तमे राघव भसीनक विधिक परामर्शक प्रश्न दिस गति होइत अछि। 'विशेष पहुँच'क लोभक बाद 'वकील पक्ष साफ'क पुरान वाक्य नायककेँ स्मरण करबैत अछि जे भाषा केवल प्रतिष्ठा बढ़ा नहि सकैत, ककरो पेशागत सावधानीकेँ गलत स्वीकृतिमे बदलि सकैत अछि। एहि सेतु पर कथा सत्ता-लोभसँ विधिक भय दिस बढ़ैत अछि; ई बदलाव आकस्मिक कथानक-घुमाव नहि, शशांकक पुरान शब्द-चयनक स्वाभाविक परिणाम अछि।

## अध्याय ७७ — भोज, देवता, अपमान १२ : राघव भसीनक नाम, गोपनीय सलाह आ व्यापारिक वाक्यक अनधिकृत स्वीकृति

सतहत्तरिम अध्याय विधिक परामर्शक मूल विषयवस्तुकेँ न्यायालयीय अनुमति बिना खोलबाक अस्वीकारसँ आरम्भ होइत अछि। आदित्यक मेजपर विधिक सलाहक बाह्य विवरण, स्वतंत्र व्यापारिक संचार आ शशांकक अपन भाषिक सारांश तीन अलग संचिका छथि। एहि विन्यासमे न्यायप्रक्रियाक मूल शिक्षा निहित अछि: वकीलक संग भेटल प्रत्येक कागज एकहि गोपनीयता-वर्गक नहि; तहिना वकील संग बैठक भेलासँ कियो अपराधक सहभागी सेहो नहि। दस्तावेजक स्वभाव, उद्देश्य, प्राप्तकर्ता आ अधिकार-पद्धति स्वतंत्र परीक्षणक विषय अछि।

मकाऊसँ लौटलाक दू दिन बादक बैठकक बाह्य अभिलेखमे स्थान, समय, उपस्थित व्यक्तिक नाम आ भारत-सम्बद्ध विधिक जोखिमक सामान्य विषय अछि; शशांकक भूमिका ‘भाषिक सहायता’ अछि। राघव भसीन स्वयं एहि सीमित भाषिक योगदानक पुष्टि करैत छथि, आ पेशागत कानूनी निष्कर्ष अपना अधिकारक्षेत्रमे रखैत छथि। एहि संवादमे रचनाक औचित्य अछि: वकीलक गोपनीय सलाहक सम्पूर्ण पाठ नहि खोलिओ पात्रक भूमिकाक सामाजिक-मर्यादा स्पष्ट कएल जा सकैत अछि। सत्यापन आ अनधिकृत प्रकटीकरण एके बात नहि।

बैठकक एक घंटा बाद ली वेनचाओ कैँ पठाओल शशांकक वाक्य—‘वकील पक्ष साफ क’ देलक; भारतक काम चलि सकैत अछि’—अध्यायक निर्णायक आत्मप्रतिकूल साक्ष्य अछि। शशांक एकरा अपन मानैत अछि, मुदा विधिक सावधानीक यथार्थ प्रतिनिधित्व नहि मानैत। राघव स्पष्ट करैत छथि जे ‘सभ साफ’ सन निरपेक्ष भाषा हुनकर पेशागत अभिव्यक्ति नहि छल। एतय शशांकक अनुवादक स्वतंत्र सन्देश आधिकारिक वकीली मतक अनुचित विकल्प बनि गेल। शब्द नर्म करब मात्र नहि, पेशागत नामक प्रतिष्ठाकेँ अपन वाक्यक मुहर बनायब नैतिक कपटक अलग रूप अछि।

नायक भय आ महत्त्वाकांक्षा दूनू अपन उद्देश्य रूपमे स्वीकारैत अछि। विदेशी पक्ष जँ ओकरा अपरिहार्य सेतु बुझय, तखन काम आ प्रतिष्ठा टिकत—एहि चिन्तामे ओ शर्तयुक्त चेतावनीकेँ व्यापक स्वीकृति जेकाँ लिखि देलक। मुदा ई स्वीकारसँ व्यापारिक अपराधक योजना ओकर कर्तृत्वमे स्वतः शामिल नहि

होइत। तर्कक पद्धतिमे 'वकीलक स्वीकृति' दावाक समर्थन लेल आधिकारिक मत अथवा पेशागत निष्कर्षक साक्ष्य चाही; एतय उपलब्ध रूपमे सावधानीक संकेत बेसी अछि। शशांकक निजी संदेश स्वयं ओकर प्रसिद्धि-प्रेरित विकृतिक प्रमाण अछि, राघवक वास्तविक निर्णयक नहि।

एक स्वतंत्र व्यापारिक वाक्यक मूल आ अनुवादक अर्थ लगभग समान भेटैत अछि। एहि छोट सकारात्मक उदाहरणक महत्त्व विशेष अछि। पूर्वक अनुवाद-नरमीक आधारपर शशांकक सभ अनुवाद दूषित मानब गलत; तहिना एहि एक सही अनुवादसँ पूर्वक कपट मेटि नहि जाएत। लेखक प्रमाणक समभाव अपन पात्रक प्रतिकूल आ अनुकूल दुनू प्रकारक उदाहरणपर लागू करैत छथि। नैतिक आलोचना दोषक कुल संख्या गिनबाक बदला प्रत्येक स्वतंत्र क्रियाक वास्तविक अर्थ जाँचैत अछि।

न्यायालयीय वर्गीकरण-सूची किछु संवाद सम्भावित विशेषाधिकार, किछु सामान्य व्यापारिक संचार आ किछु मिश्रित अभिलेख निर्णय-शेष श्रेणीमे रखैत अछि। एहि वर्गीकरणसँ दोषनिर्देश नहि बनैत, केवल जाँचक विधि निर्धारित होइत अछि। विशेषाधिकारक दाबी अपराधक ढाल बनि नहि सकैत; व्यापारिक संचारकेँ मात्र वकीलक बाद पठाओल गेल कारण विधिक सलाहक हिस्सा घोषित करब सेहो उचित नहि। समय-साम्य कारणक प्रश्न देत अछि, कारणक सिद्धि नहि। एहि अन्तरमे नव्य न्यायीय सम्बन्ध-विवेक आ विधिक प्रक्रियाक औचित्य परस्पर जुड़ैत अछि।

शशांक राघवक नामक उपयोग अपन वाक्य भारी बनेबाक लेल केने छल—ई कहिकेँ क्षमा माँगैत अछि। राघव निजी क्षमाक प्रश्नकेँ जाँचक उत्तर नहि मानैत छथि। दृश्यक मानवीय बल एहि अन्तरमे अछि: क्षमा भेटलो अभिलेख नहि बदलत, आ क्षमा नहि भेटलो अपराध स्वतः सिद्ध नहि होयत। पात्रक आत्मस्वीकृति सामाजिक मर्यादा पुनर्स्थापित करबाक दिशा अछि, मुदा पेशागत आ न्यायिक दायित्व स्वकीय प्रमाणपर निर्भर रहत। भारतीय करुणा-रस एतय कठोर संयमक भीतर व्यक्त होइत अछि।

भोजक चित्रमे राघव जेकाँ अस्पष्ट आकृति आ अतिथि-सूचीमे हुनकर नामक उपस्थिति मंचीय निकटताक प्रमाण अछि; कार्यक्रमक वित्तीय निर्णयक नहि। शशांक पहिने प्रसिद्ध व्यक्ति आ वकीलक समीपता अपन सामाजिक पूँजी मानैत छल। आब ओही निकटता सँ व्यापक अपराधक सहमति निकालबाक समाचारिक प्रवृत्तिक विरोध करैत अछि। तुलना अध्याय ७१क कलाकारक

उपस्थिति-सीमाक स्मरण जगबैत अछि: समाजमे प्रसिद्ध नामक प्रकाश व्यक्तिक स्वतंत्र प्रमाण-पहिचान बदलि नहि दैत।

अन्तिम भागमे निचला आयुक्तालयक विस्तृत सावधानी आ ऊपरी शाखाक 'कानूनी समीक्षा सम्पन्न' सन संक्षेपक अन्तर फेर उठैत अछि। शशांक एहि अन्तरकेँ 'समझौता' घोषित नहि करैत। जँ नियमित संक्षेपण छल तँ मूल आरक्षण सुलभ रहबाक आ तटस्थ सम्पादनक कारणक अपेक्षा; जँ जानि-बुझि अनुचित दबाव छल तँ निर्देश, लाभ वा असामान्य सम्पर्कक स्वतंत्र चिह्न चाही। ई द्विदिश तर्क पूर्व अध्यायसभक स्थिर कसौटीक उपयोग अछि, मुदा एतय संस्थागत संस्करणक ठोस समस्यापर लागू होइत अछि।
शिल्पगत दृष्टिसँ राघवक पात्र प्रायः विधिक विवेकक स्पष्ट वाणी बनि उठैत छथि; हुनकर अन्तर्द्वन्द्व, पेशागत हिचकिचाहट आ स्थानीय सामाजिक जीवन विशेष विकसित नहि। तीन संचिकाक संरचना शिक्षाप्रद होइतहुँ किछु ठाम अधिक आदर्शीकृत अछि। तथापि उपन्यास विधिक गोपनीयता बनाम सत्यक जाँचक कृत्रिम द्वैत नहि रचैत। प्रमाणक विधिक सीमा मानव आ बाह्य व्यापारिक तथ्य जाँचब एक संग सम्भव बनैत अछि—ई अध्यायक मुख्य कलात्मक-बौद्धिक उपलब्धि अछि।

अध्यायक समाप्ति निचला अधिकारीक प्रतिरोध आ कर-गुप्तचरक बदलैत सारांश दिस प्रवेश करबैत अछि। राघवक नामकेँ अपन भाषिक स्वार्थसँ मुक्त केलाक बाद शशांक संस्थाक आन्तरिक शब्द-परिवर्तनकेँ जाँचक विषय बनाबय तैयार अछि। भयक भाव विश्वासघातक कथामे बदलय चाहैत अछि, मुदा तर्क ओकरा रोकैत अछि: अभिलेखक नरमी स्पष्ट रहितो दोषी कर्ता अथवा गुप्त दबावक नाम एखन उपलब्ध नहि।

## अध्याय ७८ — भोज, देवता, अपमान १३ : निचला आरक्षणक क्रमिक नरमी आ रिक्त संशोधन-कारण

अठहत्तरिम अध्याय ‘विश्वासघात’क भावकेँ संस्थागत संस्करण-क्रमक परीक्षणमे बदलैत अछि। निचला आयुक्तालयक अधिकारी अपन मूल टिप्पणीक संग उपस्थित अछि; मेजपर मूल प्रति, बीचक मसविदा, अन्तिम कर-गुप्तचर सारांश आ व्यापारिक पक्षधरि पहुँचल शशांकक भाषिक पर्ची राखल गेल अछि। ई चारि पाठ एकहि वित्तीय घटनाक चारि कथावस्तु नहि, अलग-अलग निर्माण-काल आ उद्देश्यवाला दस्तावेज छथि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक उपयुक्त प्रयोग एहि ठाम अछि: अनुक्रम आ वास्तविक संपर्कक प्रमाण अलग राखि, दस्तावेजक परिवर्तनकेँ मनगढ़न्त षडयन्त्रक निश्चित कथा नहि बनाओल गेल।

मूल अधिकारीक टिप्पणीक तीन केन्द्र छल—वास्तविक लाभकारी स्वामित्वक सत्यापन, असामान्य भुगतान-पथक अलग जाँच, आ ‘हवाला?’ तथा ‘अंकीय परिसम्पत्ति?’ प्रश्नचिह्न। बीचक मसविदामे दू उपवाक्य छोट भेल, मुदा प्रश्नचिह्न बचल। अन्तिम सारांशमे प्रत्यक्ष कर-हानि स्थापित नहि भेलक निष्कर्ष प्रमुख बनल, लाभकारी स्वामित्वक आरक्षण छोट टिप्पणी बनल, आ प्रश्नचिह्न बिलायल। ई एक झटकामे प्रतिकूल पाठ बदलल दृश्य नहि, क्रमिक हलुक करबाक साक्ष्य अछि। रचनाक बौद्धिक सावधानी ई अछि जे परिवर्तन निश्चित अछि, ओकर कारण एखन परीक्षणाधीन।

शशांकक अपन भाषिक पर्ची—‘भारत-पक्ष तत्काल कर-संकट नहि देखैत; किछु सत्यापन शेष, पर व्यापार रोकबाक कारण एखन नहि’—मूल अधिकारीक शर्तयुक्त टिप्पणीसँ स्पष्ट भिन्न अछि। ओ लेखकत्वक आधार नकारैत नहि, उलट स्वीकारैत अछि जे ‘व्यापार रोकबाक कारण नहि’ ओकर अपन बढ़ाओल आश्वासन छल। नौकरी आ प्रतिष्ठा टिकेबाक इच्छा एहि शब्द-चयनक आत्मस्वीकृत उद्देश्य अछि। एहि ठाम नैतिक दोष सुस्पष्ट अछि; मुदा एहि स्वीकारसँ ऊपरी कार्यालयक ककरो संग षडयन्त्र वा समझौता सिद्ध नहि होइत। कथामे ‘आत्मप्रतिकूल सत्य’क परीक्षण फेर सक्रिय भेल।

निचला अधिकारीक कठोर प्रश्न—ककर निर्देश पर पर्ची नर्म भेल—क सामने शशांक लिखित निर्देशक स्पष्ट स्मरण नहि होयबाक बात कहैत अछि। ओ अपन इच्छा स्वीकार करैत अछि, मुदा अस्पष्ट स्मरणकेँ निश्चित घटना नहि बनबैत। अधिकारीक 'हमर प्रश्न भीतर हलुक भेल' कहब एक संस्थागत हानिक अनुभूति व्यक्त करैत अछि। शशांक ओ अनुभवकेँ मिथ्या नहि कहैत, किन्तु विश्वासघातक पीड़ा आ अनुचित प्रभावक अपराधसिद्धि अलग श्रेणी मानैत अछि। भारतीय रसदृष्टिसँ आहत श्रमक करुणा ओहि संरचनागत भाषा-विवादकेँ व्यक्तिक शरीर आ स्वाभिमानसँ जोड़ैत अछि।

चारि संस्करणक समय-मुद्राक मिलान भावात्मक तनाव बढ़बैत अछि। शशांकक पर्ची बीचक मसविदा आ अन्तिम सारांशक बीच बनल देखाइत अछि; व्यापारिक पक्षसँ 'प्रश्न नर्म' सन पुरान सन्देश ओकरा पहिले भेटल छल। एहि समयगत निकटतासँ आन्तरिक सूचना बाहर गेल होयबाक परिकल्पना उठैत अछि, पर ककरा द्वारा कतेक रूपमे से प्रश्न शेष अछि। आदित्य नायककेँ 'सम्भवतः' कहिकेँ अस्पष्ट स्मरणक विस्तार करबासँ रोकैत छथि। ई छोट सम्पादकीय अनुशासन उपन्यासक प्रमाण-नैतिकताक औचित्य देखबैत अछि।

बीचक मसविदाक 'प्रत्यक्ष कर-हानिक निष्कर्ष एखन उपलब्ध नहि; अन्य सत्यापन पृथक' आ व्यापारिक पक्षक 'प्रत्यक्ष कर-हानि एखन नहि; बाकी बात अलग' पदसभक ढाँचा निकट अछि, शब्दशः समान नहि। पाठगत सम्बन्ध स्रोत-शृंखला जाँचबाक कारण अछि, विशिष्ट व्यक्ति चुनबाक आधार नहि। यदि अनुचित सूचना-प्रवाहक परिकल्पना सही अछि, तखन संचार, पहुँच, असामान्य बैठक, लाभ वा विशिष्ट शब्दक्रमक स्वतंत्र कड़ी अपेक्षित। यदि सामान्य अनुमान अथवा स्वतंत्र चर्चा अछि, तखन तकरो समर्थक स्रोत खोजबाक चाही। नव्य न्यायीय द्विदिश परीक्षण एकमत आरोपक तुलनामे अधिक कठिन, मुदा विश्वसनीय अछि।

संस्करण-प्रवेश सूचीक सामान्य विवरणमे निचला अधिकारीक मूल प्रति पठेबाक पहुँच, ऊपरक मसविदा-समूह, समीक्षा-खाता आ संग्रह-प्रविष्टि अछि; शशांकक नाम आन्तरिक अंकीय पहुँच-सूचीमे नहि। एहि अनुपस्थित प्रविष्टिसँ शशांक द्वारा सीधे आन्तरिक मसविदा खोलल गेलक दाबी कमजोर भऽ सकैत अछि। मुदा अभिलेख पूर्ण अछि कि नहि, अन्य मानवीय वा भौतिक मार्गक संभावना कोन—ई सब एखन स्पष्ट नहि। 'कोनो आधिकारिक

डिजिटल पहुँच-प्रविष्टि नहि' कथनकेँ 'कोनो जानकारी कोनो मार्गसँ नहि आयल' बनायब निषिद्ध अछि।

संशोधन-पत्रमे 'संक्षेप'क एक कारण दर्ज अछि, मुदा अन्तिम सारांश लेल संशोधन-कारणक कोष्ठक रिक्त अछि। निचला अधिकारी एहि रिक्ततामे आहत होइत अछि; आदित्य ओ रिक्ततासँ गुप्त दबावक अन्तिम प्रमाण नहि मानैत। पहिने स्थापित करब आवश्यक अछि जे एहन संशोधनमे लिखित कारण सामान्य वा अनिवार्य छल कि नहि। अनुपलब्धिक विधि एहि अध्यायमे बीज रूपेँ उभरैत अछि। चरित्रक कापीक वाक्य 'रिक्तता कथा नहि; प्रश्न अछि' एतय भावी खण्डक दार्शनिक प्रवेश-द्वार बनैत अछि।

मृणालक संग संवाद नायकक आत्मरक्षाकेँ द्विपक्षीय बनबैत अछि। शशांक पहिने 'सभ हमरा धोखा देलक' कहि अपन भूमिका कम करैत छल; आब ओ संस्थागत प्रक्रिया संदिग्ध होयबाक सम्भावना मानिते अधिकारीक प्रश्न नर्म करबाक अपन निश्चित कर्तृत्व स्वीकारैत अछि। बाहरी धोखा सिद्ध भेलो ओकर पुरान कपट स्वतः मेटत नहि; ओकर अपराध-बोध बाहरी दोषक साक्ष्य सेहो नहि। एतय कथा चरित्रक परिपक्वता आ संस्थागत जाँचक स्वतंत्रता एक संग रखैत अछि।

शिल्पगत कमजोरी ई अछि जे दस्तावेजक संस्करण-क्रमक जटिलता मुख्यतः आदित्यक श्रेणीकरण आ शशांकक तर्क-वाक्यमे व्यक्त होइत अछि; वास्तविक कार्यालयीन बहस, आन्तरिक प्रशासनक विभिन्न पात्र आ प्रथाक स्वर सीमित अछि। तथापि चारि प्रति आ समय-मुद्राक समानान्तर पठन उपन्यासक संरचनागत उपलब्धि अछि। अन्तिम अधिकारीक आग्रह जे 'हमर लिखल प्रश्न किएक बिलायल, से कागज उत्तर दे' घातक आरोपक सन्तोष नहि, अभिलेखक कारणगतिक माँग करैत अछि।

अठहत्तरिम अध्याय अपन पृष्ठ-अन्तमे 'भोज, देवता, अपमान' खण्ड समाप्त करैत 'समझौताक दरार'क सूचना दैत अछि। दृश्य-सत्ता, भाषिक अतिशयोक्ति आ समाचारक आरोप सँ चलैत कथा एखन प्रमाणमे न भेटल अपेक्षित चिह्नक अर्थ पुछत। ई संक्रमण केवल नवल शीर्षकक नहि, ज्ञानमीमांसाक पद्धतिमे बदलाव अछि: जे अछि तकर समानान्तर तुलना करबासँ, जे रहबाक चाही छल ओकर विश्वसनीय अनुपलब्धिक मूल्याङ्कन दिस।

## अध्याय ७९ — समझौताक दरार १ : योग्य-अनुपलब्धि, अभिलेखक विश्वसनीयता आ समाचारिक मिथ्या चित्र

उनासीम अध्यायमे नवल ‘समझौताक दरार’ खण्डक केन्द्रीय सूत्र आरम्भे दैत अछि: अनुपलब्धि मात्र ‘किछु नहि भेटल’ नहि। जँ अमुक घटना भेल रहितय तँ अमुक चिह्न सामान्य परिस्थिति मे भेटबाक योग्य छल—ई अपेक्षा पहिने स्थापित कएल जाए; तकर बाद विश्वसनीय खोजमे ओ चिह्न नहि भेटब अनुमानक भार बदलि सकैत अछि। आदित्यक ई पद्धति नायकक आत्मरक्षा मात्र नहि, जाँच-प्रक्रियाक सीमा जाँचबाक औजार अछि। कागजक मौन केतबा बोलि सकैत अछि, से कागज बनबाक व्यवस्था पर निर्भर अछि।

निचला आयुक्तालयक अधिकारीक मूल आरक्षण घटल, मुदा गम्भीर आपत्ति हटेबाक सामान्य कारण वा अनुमोदनक टिप्पणी नहि भेटल। अधिकारी बतबैत अछि जे सभ बेर समान अभिलेख नहि होइत, मुदा गंभीर बदलावमे किछु कारण सामान्यत: दर्ज होइत। ई आधार न भेटल कोष्ठककेँ अर्थवान प्रश्न बनबैत अछि। मुदा ‘कारण नहि भेटल’ सँ ‘आन्तरिक अधिकारी खरीदल गेल’क कथा जन्म नहि लेत। संस्थागत प्रक्रिया विचलित भेल होयबाक सम्भावना आ विशिष्ट अपराधी कर्ताक पहचान ज्ञानक दू अलग स्तर छथि। समाचारक मोट शीर्षक जीएसटी गुप्तचरक भीतर ‘साफ’ भेल कहि शशांककेँ मुख्य सेतु बनबैत अछि। फेर जन्मदिनक भोजक मंचीय चित्र, कलाकारक उपस्थिति आ तथाकथित आन्तरिक सम्पर्कक आरोप एक संग जोड़ल जाइत अछि। अध्याय ७१क सार्वजनिक प्रश्नचिह्न हटा देबाक पद्धति एतय आन्तरिक मिलीभगतक कथामे रूपान्तरित भऽ लौटैत अछि। कथा शशांकक चोटक कारण सम्पादकीय सनसनीकेँ जाँचैत अछि, मुदा स्वयं ओहि समाचारक विशिष्ट दावा प्रमाणक कसौटी पर राखैत अछि।

यदि शशांक वास्तवमे आन्तरिक अधिकारीक माध्यमसँ प्रश्न हटबेलक, तखन पहचान योग्य संपर्क, निर्देश, लाभ, भेटक विश्वसनीय समय-क्रम वा आन्तरिक निर्णयमे पहुँचक कड़ी अपेक्षित भऽ सकैत अछि। उपलब्ध न्यायालय-अनुमोदित डिजिटल पुनर्परीक्षणमे ज्ञात आधिकारिक प्रवेशमार्गक अन्तर्गत शशांकक सत्यापित परिचय-सूत्रसँ मुहरबन्द संचिका खोलबाक प्रविष्टि भेटल नहि। एहन अनुपलब्धि ओहि विशिष्ट अंकीय मार्गक आरोपकेँ कमजोर करैत अछि; मुदा मुद्रित प्रति, मौखिक विवरण, अन्य अभिलेख वा अपूर्ण अभिलेखनक सम्भावना स्वत: निरस्त नहि। ई सीमा नायक विजयघोषणाक क्षणमे स्वयं स्वीकारैत अछि।

अनुपलब्धिक योग्यता ठहराबय लेल प्रणालीक अवधि, अभिलेख रखबाक विश्वसनीयता आ जाँचमे प्रयुक्त पहिचान-सूत्रक विस्तार आवश्यक अछि।

आदित्यक सावधानी—'हम नहि पाबि सकलहुँ' आ 'एहन किछु अछि नहि' एके नहि—अध्यायक ज्ञानमीमांसात्मक केन्द्र अछि। अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नकेँ प्रमाण कहबाक पहिने अपेक्षा आ वास्तविक खोजक परिधि लेखब वैज्ञानिक अनुशासनक आधार अछि। नव्य न्यायमे हेतु कखनो व्यापक व्याप्ति बिना निष्कर्ष देत तँ हेत्वाभास बनैत; एतय नकारात्मक सूचनाक नियम विशेष रूपेँ खटैत अछि।

मुहरबन्द टिप्पणीक प्रश्नचिह्नहीन समाचार रूप आ एका भौतिक प्रतिक वापसी-चिह्नक अभाव दू भिन्न अनुपलब्धि छथि। आधिकारिक प्राप्तकर्ता लेल पावती उपलब्ध अछि, मुदा पुरान पद्धतिमे सभ वापसी समान रूपेँ दर्ज नहि होइत छल। एहि कारण वापसीक चिह्न नहि भेटलासँ चोरी वा लीक सिद्ध नहि। अभिलेखक असमान प्रथा अनुपलब्धिक प्रमाण-मूल्य घटबैत अछि। समान शब्दक्रम स्रोत-श्रृंखला खोजबाक कारण अवश्य बनैत अछि, मुदा विशिष्ट व्यक्ति चुनबाक स्वतंत्र संपर्कक प्रमाण चाही।

'गुप्त भोज'क समाचारिक दाबी एक अलग प्रकारक परीक्षण पबैत अछि। चित्रक कात ठाढ़ अस्पष्ट आकृति नामित निचला अधिकारी नहि छथि; अधिकारी स्वयं भोजमे नहि गेल रहबाक कथन दैत अछि, आ दोसर नगरक सार्वजनिक विभागीय कार्यक्रमक बैठक-सूची, प्रवेश आ यात्रा-अभिलेख प्रस्तुत करैत अछि। एतय केवल अनुपलब्धि नहि, विशिष्ट दावाक विरुद्ध सकारात्मक उपस्थिति-प्रमाण अछि। कथा न्यायिक नकारक दू विधि स्पष्ट करैत अछि: कोनो अपेक्षित चिह्न नहि भेटब आ विपरीत ठोस चिह्न भेटब एके प्रकारक साक्ष्य नहि।

समाचारमे प्रसिद्ध कलाकारक तस्वीर फेर उपयोग भेल अछि। शशांक अपन सार्वजनिक हानि बुझैत-बुझैत महसूस करैत अछि जे कलाकारक मंचीय उपस्थिति आ अधिकारीक वास्तविक प्रतिरोध, दुनूकेँ असिद्ध अपराधक दृश्य बनाओल गेल। एहि ठाम अपमान केवल नायकक निजता नहि, प्रमाण-पद्धतिक सार्वजनिक क्षति बनैत अछि। नायक पूर्वमे प्रसिद्धि आ निकटताकेँ अपना महत्त्व बढ़ेबाक लेल प्रयोग केने छल; मीडिया ओहि दोषक विस्तार ओकर विरुद्ध करैत अछि। आत्मस्वीकृतिक ई कठिन समता घटनाक नैतिक बल बढ़बैत अछि।

निचला अधिकारीक कठोर वाक्य—ओ अपन आपत्ति हटेबाक कारण चाहैत छथि, ककरो असिद्ध नाम नहि—अध्यायक भावात्मक सफलता अछि। ओकर अपना श्रमक अवमानना आ सामाजिक अपमान वास्तविक अनुभूति अछि; मुदा ओही पीड़ाक आधार पर अन्य अधिकारीक दोषी रूप लिखि देब दोसर अन्याय होयत। नायक मृणाल समक्ष अपन नर्म अनुवादक दायित्व फेर स्वीकारैत अछि। परम्परागत करुणा-सहित शान्ति एतय आहत व्यक्तिसभक उत्तेजना मात्र घटेबामे नहि, उचित प्रश्न जीवित रखबामे अछि।

विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ एके समयमे दिल्लीक भोज, विभागीय समीक्षा, मुहरबन्द जाँच, सार्वजनिक समाचार आ शशांकक स्वकीय सन्देशसभ स्वतंत्र रेखा छथि। प्रस्तुत विशेष अधिकारीक विपरीत नगरमे उपस्थिति विशिष्ट गुप्त-भोज दावाक विरुद्ध विश्वसनीय साक्ष्य देत अछि; किछु अन्य अनिश्चित सम्पर्क अथवा आन्तरिक सूचना-प्रवाहक समस्त सम्भावना एकरे सँ खत्म नहि। एहि स्तरित निष्कर्षक कारण पाठक 'सभ षडयन्त्र' वा 'सभ स्वच्छ'क दू चरम निष्कर्षसँ बचैत अछि।

शिल्पगत सीमा स्पष्ट अछि: योग्य-अनुपलब्धिक परिभाषा आ उदाहरण कई दृश्य मे दोहरायल अछि; आदित्यक कक्ष कखनो न्यायशास्त्रीय पाठशालाक रूप लेत अछि। तथापि चित्रक विरुद्ध अधिकारीक वास्तविक भौगोलिक उपस्थिति सन सकारात्मक प्रतिप्रमाण कथा-रचनाकेँ मात्र सूत्र नहि रहय दैत। अन्तिम पंक्ति—'जे नहि अछि, ओकर निस्तब्धता सुनबाक पहिने ई जानब जरूरी अछि जे ओतय आवाज होयबाक चाही छल कि नहि'—अध्यायक दार्शनिक अर्थकेँ स्मरणीय रूपकमे संक्षेपित करैत अछि।

अगिला अध्यायमे अनुपलब्धिक पद्धति अदालतमे पहुँचिते नायकक आत्मप्रतिकूल नियमक परीक्षा होयत। ज्ञात प्रवेशचिह्न नहि भेटब ओकर बचावमे उपयोगी अछि, मुदा ओही अभावक विश्वसनीयता आ संभावित अन्य मार्गकेँ न्यायालयक सामने स्वीकारबाक कठिनता उपन्यासक महत्त्वपूर्ण चरित्र-परिवर्तन लेल स्थान बनबैत अछि।

## अध्याय ८० — समझौताक दरार २ : न्यायालयमे अभावक योग्यता आ प्रायश्चितक समान कसौटी

अस्सीम अध्याय अदालतक एक अल्प सज्जावाला दृश्यसँ खुलैत अछि। एहि बेर भोजक चित्र, मकाऊक होटल वा सनसनीपूर्ण शीर्षक सामने नहि—केवल प्रवेश-अभिलेख, संशोधन-इतिहास, पहुँच-सूची आ निचला अधिकारीक आपत्तिक संस्करण-क्रमक चारि साधारण सारणी। नाटकीय वस्तुक ई चयन महत्त्वपूर्ण अछि। सामान्य आँखि लेल लगभग रिक्त कोष्ठक, समय-रेखा आ अनुच्छेदक संशोधन उबाऊ कागज हो सकैत अछि; कथाक बौद्धिक केन्द्रमे ई अवलोकन आ सिद्धिक सबसँ कठिन प्रश्न बनैत अछि।

सरकारी अधिवक्ता गंभीर आरक्षण घटला पर कारणक टिप्पणी नहि भेटबाक बात पर आन्तरिक विघातक प्रश्न उठबैत छथि। निचला अधिकारी स्पष्ट करैत छथि जे नियमित प्रक्रिया मे कारण लिखल अपेक्षित छल, मुदा ‘कारण-चिह्न नहि भेटल’क अर्थ ‘पहिने छल, बादमे मेटाओल गेल’ नहि। न्यायाधीश एही भेदकेँ दर्ज करैत छथि: योग्य-अनुपलब्धि आ विनाशक आरोप अलग। ई अवधारणात्मक अनुशासन न केवल शशांकक बचाव, संस्थागत प्रतिरोधकेँ सेहो मनगढ़न्त कर्तृत्वसँ मुक्त रखैत अछि।

राघव भसीनक प्रश्न—शशांकक ज्ञात आधिकारिक प्रवेश अभिलेख नहि भेटलासँ की सभ माध्यमसँ सामग्री बाहिर नहि गेल मानल जाए—पात्रक परीक्षा अछि। नायक भावनात्मक राहतक लोभ छोड़ि मात्र ज्ञात अंकीय मार्गपर अनुपलब्धि स्वीकारैत अछि। प्रणाली सभ सम्भावित मार्ग विश्वसनीय रूपेँ दर्ज करैत छल कि नहि, वैकल्पिक मुद्रित अथवा मौखिक संपर्कक स्थिति की, खोजक परिधि कतबा—ई सभ अगिला प्रमाणक विषय अछि। एहि आत्मप्रतिकूल सावधानीसँ चरित्रक नैतिक परिपक्वता दृश्य बनैत अछि, मात्र घोषित नहि।

मुहरबन्द पंक्ति समाचारक पाठसँ मिलैत अछि, मुदा पाठगत निकटता व्यक्ति नहि चुनैत। आदित्य संरक्षण-नीति, अभिलेखक रखरखाव अवधि, प्रणालीक पूर्णता आ खोजक सीमाक प्रश्न राखैत छथि। अनुपलब्धि कहबाक पहिने ई जाँच आवश्यक अछि जे अपेक्षित कड़ी कतेक समय धरि दर्ज रहबाक योग्य छल। एहि तर्कमे संशय निरन्तर अनिश्चितता बना रहल नहि, खोजक उपयुक्त क्षेत्र निश्चित करबाक विधि अछि। नव्य न्यायीय अनुमितिक हेतु

एके घटना लेल स्थायी सम्बन्धक दावा करय, तखन अपेक्षित योग्यता जाँचना जरूरी अछि।

सरकारी अधिवक्ता शशांकक स्वीकृत नर्म अनुवाद, 'वकील पक्ष साफ' सन वाक्य आ बढ़ल पहुँच-दाबीक आधार पर गोपनीय सामग्री सेहो ओकर माध्यमे गेल होयबाक संभावना रखैत छथि। शशांक 'सम्भव' शब्दक विस्तृत सीमा स्वीकारैत, पर विशिष्ट कर्तृत्वक स्वतन्त्र साक्ष्य माँगैत अछि। ई उत्तर दोषक विरुद्ध दार्शनिक धुआँ नहि; ओ अपन पुरान कपटक लेखकत्व आ भाव स्वीकारैत अछि, मुदा असिद्ध विशेष क्रियाकेँ केवल पश्चात्तापक परिणाम नहि मानैत। प्रायश्चित उचित सत्यक विस्तार नहि, सही माप होयत।

नामित निचला अधिकारीक गुप्त भोजक समाचारिक दावाक विरुद्ध आधिकारिक उपस्थितिक प्रमाण अदालतमे फेर चर्चा पबैत अछि। अधिकारी प्रक्रिया-विचलनक प्रश्न आ समाचारक असिद्ध व्यक्ति-दोष अलग राखैत छथि। एक आहत सरकारी कर्मचारीक ई संयम अध्यायक सामाजिक महत्त्व अछि: भ्रष्टाचारक शक जाँचब आवश्यक हो सकैत अछि, मुदा प्रतिरोध करनिहार व्यक्तिकेँ विपरीत उपस्थितिक प्रमाण रहितो काल्पनिक भोजक भागी मानब स्वयं असत्य अछि। भारतीय औचित्यदृष्टि एतय व्यक्तिक सम्मान आ विधिक प्रमाणक सम्यक् सम्बन्धमे व्यक्त अछि।

एक तकनीकी अधिकारी सामान्य अभिलेख-प्रणालीक सीमा देखबैत छथि—किछु लॉग सीमित अवधिक लेल, किछु उपयोगकर्ता-विवरण अधूरा, किछु पुरान अभिलेख स्थानान्तरणमे अपूर्ण। ओ कोनो विशिष्ट व्यक्ति पर आरोप नहि करैत। ई साक्ष्य अनुपलब्धिक विवेककेँ नवल आधार दैत अछि। अनुपस्थित चिह्न महत्त्वपूर्ण तखने जखन ओ प्रकारक प्रवेश वास्तवमे अभिलेखित होइत, संरक्षण अवधि समाप्त नहि भेल होइत, आ खोज पर्याप्त होइत। कथा अंकीय उपकरणक चमत्कार नहि, ओकर त्रुटिपूर्ण अभिलेखन-परिसरकेँ सम्यक् ठाम दैत अछि।

नायकक पुरान 'ऊपर तक बात पहुँचि गेल' आ 'प्रणाली भीतर सँ बुझैत छी' सन सन्देश पुनः प्रस्तुत होइत अछि। ओ किछु लेखकत्व स्वीकारैत अछि, किछु वास्तविक संपर्क-स्तरक जानकारी सेहो मानैत, मुदा गोपनीय मुहरबन्द स्रोतक विशिष्ट पहचान नहि। मनोवृत्तिक प्रमाण आ गोपनीय सूचना-प्रवाहक प्रमाण एकहि नहि। शशांक एक बेर फेर अपन अनुकूल परिणाम लेल अनुपलब्धिक नियमक माप न बदलबाक प्रतिज्ञा करैत अछि। सिद्धान्त तखने विश्वसनीय होइत अछि जखन ओ अपन समर्थक दाबी पर सेहो बराबर लागू हो।

मध्यावकाशमे मृणालक प्रश्न नायकक अन्तरात्माकेँ अदालतक बाहर उपस्थित करैत अछि—'किछु नहि भेटल' कहि विजय किएक नहि घोषित कएलक? शशांक उत्तर दैत अछि जे ओहि अधूरा वाक्यक आधारपर सभ साफ मानि लैत, तँ पुरान शशांक फेर लौटि आबित। एतय पात्रक चरित्र-विकासक माप सफलता नहि, आत्म-नियन्त्रण अछि। मृणालक 'एहि बेर तोहर दर्शन तोहर वकील नहि' पर शशांक 'केवल सीमा' कहैत अछि। शान्त रसक ई संयम लम्ब प्रतिपरीक्षाक बाद मानवीय लघु विराम अछि।

न्यायालयक अन्तरिम आदेश अन्तिम दोष-निर्णय नहि दैत; संशोधन-इतिहास, संरक्षण-नीति, आधिकारिक प्रवेश-पथक अभिलेखीय क्षमता आ मुहरबन्द स्रोत-श्रृंखलाक सीमित जाँच निर्देशित करैत अछि। ई परिणति पाठक लेल जानि-बुझि अपूर्ण रहैत अछि। आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ निर्णायक फैसला नहि देल जाएब दोषपूर्ण विलम्ब नहि, प्रमाणक सीमित अवलोकनक नैतिक आवश्यकता अछि। तथापि लगातार अदालत-अध्यायमे न्यायाधीश आ साक्षीसभक उत्तर कतहु अधिक स्वच्छ शिक्षाप्रद लगैत अछि; संस्थागत असहमति आ मुकदमाक असंगठित व्यवहार कम उभरैत अछि।

अध्यायक अन्तमे नायकक कापीमे अनुपलब्धि, संशोधन-कारण, आधिकारिक प्रवेश, पाठगत स्रोत आ प्रायश्चितक अलग श्रेणी लौटैत अछि। ई पुनरुक्ति कथाक आलोचनात्मक अनुक्रम बनबैत अछि, मुदा स्वाभाविक जीवनक विविधता किछु घटबैत अछि। एहि सीमा सहित अध्यायक उपलब्धि 'रिक्त स्थानमे अपन इच्छा नहि भरब'क प्रतिज्ञामे अछि। अनुपलब्धि न शून्य अछि, न सर्वज्ञता; जाँचक शर्तक आधारपर ओकर वजन घटैत-बढ़ैत अछि। एहि सहिष्णु प्रमाणबोधसँ अगिला अंकीय उपकरणक चरणक व्यावहारिक तैयारी होइत अछि।

## अध्याय ७६-८० : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — विशेषणक लोभसँ योग्य-अनुपलब्धिक न्यायालयीय परीक्षा धरि

छिहत्तरिम सँ अस्सीम अध्यायमे ‘भोज, देवता, अपमान’ खण्डक समाप्ति आ ‘समझौताक दरार’क प्रारम्भ एक बौद्धिक मोड़ रचैत अछि। मंचक ‘विशेष पहुँच’क वचन, राघवक ‘वकील पक्ष साफ’ बनाओल सीमाहीन सारांश आ कर-अभिलेखक नर्म संस्करण—एहि तीन प्रसंगसँ कथा पहिने उपस्थित शब्दक अर्थ जाँचैत अछि। तकर बाद अध्याय ७९-८०मे प्रश्न बदलैत अछि: जे चिह्न रहबाक चाही छल आ नहि भेटल, ओकर वास्तविक प्रमाण-मूल्य कतेक? भाषा-समालोचना अभावक ज्ञानमीमांसामे प्रवेश करैत अछि।

अध्याय ७६क मंचपर ‘विशेष’ शब्द सामाजिक प्रतिष्ठाक चिह्न अछि, जखन मकाऊक प्रवेश-सूचीमे ‘भाषिक समीक्षा / अतिथि प्रवेश’ स्पष्ट सीमा अछि। अध्याय ७७मे राघवक शर्तयुक्त पेशागत सलाहकेँ शशांक एक सरल ‘सभ साफ’ वाक्यमे बदलैत अछि। दुनू प्रकरणमे मूल अधिकार वा चेतावनीक अतिरिक्त अर्थ नायक अपन प्रतिष्ठा लेल जोड़ैत अछि। पहिलमे सामाजिक वचन सँ प्रशासनिक सत्ता कल्पित अछि; दोसरमे विधिक सावधानी सँ वैध स्वीकृति। अनुवादकक निजी लोभ भिन्न संस्था भीतर एके मानसिक प्रवृत्तिक रूपमे उपस्थित अछि।

अध्याय ७८क मूल टिप्पणी, बीचक मसविदा, अन्तिम सारांश आ व्यापारिक पर्ची भाषाक सार्वजनिक प्रभावकेँ संस्थागत विस्तार दैत अछि। शशांक अपन पर्चीमे ‘व्यापार रोकबाक कारण नहि’ लिखबाक अतिरिक्त आश्वासन स्वीकारैत अछि, मुदा ऊपरी शाखाक अनुचित प्रभावक आरोप स्वतंत्र जाँचक विषय मानैत अछि। एहि प्रसंगमे लेखक चरित्रक दोषक व्याप्ति सही राखैत छथि: अपन भाषा जानि-बुझि नर्म करब नैतिक रूपेँ वास्तविक अछि; सम्पूर्ण संस्था द्वारा षडयन्त्र चलाओल गेल, तकर समर्थन अलग सम्बन्ध-पंक्ति माँगैत अछि।

अध्याय ७९क योग्य-अनुपलब्धि आ अध्याय ८०क न्यायालयीय प्रतिपरीक्षा पूर्व खण्डक ‘सत्यापन शेष’ रिक्त स्तम्भक दार्शनिक परिपाक छथि। पहिने नायक प्रश्नचिह्नक लोप पर आपत्ति करैत छल; आब ओ प्रश्न करैत अछि जे जे अभिलेख भेटल नहि, से सामान्यतः उपलब्ध रहबाक चाही छल कि नहि।

एहि आधारपर नकारात्मक प्रमाण स्वतः निरपेक्ष शून्य नहि, आ सर्वज्ञ निष्कर्ष सेहो नहि। अपेक्षा स्थापित करब, खोजक विश्वसनीयता देखब, अनुपलब्धिक प्रसंग नापब—ई क्रम उपन्यासक नवल पद्धतिगत उपलब्धि अछि।

एक वास्तविक सकारात्मक प्रतिप्रमाणक महत्त्व सेहो एहि पाँचक भीतर प्रकट अछि। अध्याय ७९मे नामित अधिकारीक गुप्त भोजक समाचारिक दाबीकेँ अधिकारीक दोसर नगरमे विभागीय कार्यक्रमक उपस्थिति-साक्ष्य चुनौती दैत अछि। ई केवल आधिकारिक डिजिटल प्रवेश-चिह्न नहि भेटबाक स्थिति सँ भिन्न अछि। अध्याय ८०मे तकनीकी अधिकारी संरक्षण-नीतिक सीमा बतबैत अछि—अपूर्ण डिजिटल संग्रहक मौन कम निर्णायक, विश्वसनीय खोजमे अपेक्षित चिह्नक अभाव अधिक अर्थवान। एहि दू साक्ष्य-रूपक भेद कथाक अनुसन्धान-दृष्टिक परिपक्वता देखबैत अछि।

नायकक आत्मस्वीकृति ई पाँच अध्यायकेँ एकत्र बाँधैत अछि। मंचीय लोभ, विदेश-यात्राक आतिथ्य, अधिक सेवा-शुल्क, विधिक नामक प्रतिष्ठात्मक उपयोग आ कर-सावधानीक नर्मीक वास्तविक इच्छा—ई सभ ओ नकारैत नहि। मुदा एहि स्वीकारकेँ आर्थिक संचालन, आन्तरिक लीक अथवा विशिष्ट अधिकारीक षडयन्त्रक सहूलियतपूर्ण प्रमाण सेहो नहि बनबैत। प्रायश्चितक अर्थ एतय अपने ऊपर यथार्थ दोषक जिम्मेदारी आ दुनू पक्षपर समान परीक्षणक नियम लागू करब अछि। एहिमे नैतिक उत्सर्गक आत्मनाटकीयता कम, अभिलेख-संगति अधिक अछि।

भारतीय रस-ध्वनिक दृष्टिसँ मंचक उज्ज्वल स्मृति आ अदालतक सादा सारणी सभसँ प्रभावी दृश्य-विरोध अछि। तालि, इजोत आ ‘विशेष’ विशेषणक उत्साह क्रमशः लज्जा, भय, आहत श्रम आ अन्ततः संयत शान्तिमे बदलैत अछि। ध्वनि एतय केवल गीत वा रूपक नहि, हटायल प्रश्नचिह्न आ रिक्त संशोधन-कारणक मौनसँ उत्पन्न होइत अछि। शशांकक अन्तिम ‘रिक्त स्थानमे अपन इच्छा नहि भरब’ प्रतिज्ञा एहि सौन्दर्यात्मक परिवर्तनकेँ एक सूत्रमे बाँधैत अछि।

पाश्चात्य आख्यानशास्त्रक दृष्टिसँ कथा अभिलेख आधारित पुनरावलोकनक बहुकालिक संरचना अपनबैत अछि। भोजक समयक शशांक, मुकदमाक बीचक शशांक आ पछिला डायरी लिखनिहार शशांक एके घटनाक तीन स्मृतिक आयाम छथि। मृणालक चेतावनी, राघवक पेशागत सीमा, अधिकारीक

संस्थागत आहत स्वर आ आदित्यक अनुसन्धानक प्रश्न पाठमे अलग-अलग ज्ञानस्थान बनबैत अछि। तथापि वार्तालापक यथार्थ बहुस्वरता पूर्ण नहि: अनेक पात्रक कथन एके व्याख्यात्मक अनुवाद-वाक्यमे व्यवस्थित होइत अछि।

नव्य न्यायीय प्रमाण-विवेक एहि पाँचमे चारि भिन्न रूप धारण करैत अछि। अतिथि-प्रवेशसँ पूर्ण नियन्त्रण निकालब असंगत व्यापक अनुमान; वकीलक उपस्थितिसँ मिलीभगत निकालब निकटताक हेत्वाभास; संस्करणक समय-साम्यसँ विशिष्ट आन्तरिक लीककर्ताक नाम चुनब असिद्ध कारण-संबन्ध; आधिकारिक प्रवेश-चिह्न नहि भेटलासँ सर्वथा सूचनाप्रवाह नहि भेल मानब अयोग्य अनुपलब्धिक त्रुटि अछि। प्रत्येककेँ अलग अपेक्षित चिह्न चाही। ई विश्लेषण उपन्यासकेँ एक मूल सूत्रक यान्त्रिक पुनरुक्तिसँ किछु दूर राखैत अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे दिल्लीक भोज, मकाऊक अतिथि-सत्र, विधिक परामर्शक बाह्य अभिलेख, निचला कर-आयुक्तालयक मूल आरक्षण, ऊपरी सारांशक संस्करण-क्रम, जाँचक डिजिटल प्रवेश-सूची आ समाचारक सार्वजनिक चित्र अलग संस्थागत रेखा छथि। ई रेखासभ समयमे छेदीभूत हो सकैत अछि, मुदा नाम, आदेश, लाभ अथवा सूचना-प्रवाहक स्वतंत्र कड़ी प्रमाणित भेल बिना एकल षडचन्त्रक रंगमे नहि रंगल जाएत। रचनाक सामाजिक न्याय-बोध एहि संस्थागत दूरीक सम्मानमे अछि।

अन्तराध्यायिक सीमाक चर्चा सेहो अनिवार्य अछि। नायकक रातिक कापी, आदित्यक द्विदिश प्रश्न आ ‘ई सिद्ध नहि’ सन वाक्य बारम्बार लौटैत अछि, जाहिसँ कथागत आभास कतहु औपचारिक विवेचनक बनि जाइत अछि। पत्रकार, कर्मचारी, विक्रेता आ तकनीकी सहायकक जीवनक स्वतंत्र विवरण अपेक्षाकृत न्यून अछि। मुदा ई प्रविधि एक वास्तविक उपलब्धि देत अछि: वकील, मित्र, अधिकारी, आरोपित साक्षी आ न्यायाधीश सभ एके दावाक अलग सीमा कहैत छथि। दर्शनीय न्याय आ भाषिक न्यायक भिन्नता पाठक लेल बारम्बार स्पष्ट होइत अछि।

समेकित निष्कर्षमे शशांकक परिवर्तनक मापक उत्सवक प्रतिभा त्यागब नहि, प्रतिभासँ सर्वाधिकारक कल्पित निष्कर्ष त्यागब अछि। पाँच अध्यायक अन्तमे ओ ‘हम नहि देखलहुँ, तेँ किछु भेलहि नहि’ सन सुविधा न अपनबैत, किएक तँ अभिलेखक अपेक्षित क्षमता स्थापित करब आवश्यक अछि। जे नियम

ओकरा बचा सकैत अछि, ओही नियम ओकर दावाक विरुद्ध प्रश्न उठबैत रहल तँ स्वीकारब—एहि आत्मानुशासनमे 'अनुवादक'क आलोचनात्मक नैतिकता परिपक्व होइत अछि।

## अध्याय ८१ — समझौताक दरार ३ : अंकीय प्रतिलिपिक मौन, आत्मप्रचार आ सीमित नकारात्मक प्रमाण

एकासीम अध्याय अदालतक नव समन सँ आरम्भ होइत अछि, मुदा ई समन पूरा उपकरण-जीवनक अनियन्त्रित खोजक अनुमति नहि दैत। निर्धारित समय-खण्डमे निचला आयुक्तालयक आपत्ति, अन्तिम सारांश, मुहरबन्द सामग्रीक सार्वजनिक रूपान्तर आ शशांकक कथित ‘भीतरक पहुँच’ एक-दोसराक समीप राखल गेल अछि। अध्ययनक पहिल आलोचनात्मक उपलब्धि एहि सीमांकनमे अछि। कथाक जाँचकर्ता चाहैत तखन प्रत्येक पुरान सन्देशकेँ संगठित कथित अपराधक पृष्ठभूमिमे राखि सकैत छल; लेखक ओकर स्थान पर प्रश्न, अवधि आ माध्यमक सीमा पहिले तय करबैत छथि। आरोपक आकार सँ प्रमाणक आकार निर्धारित नहि होएबाक ई पद्धति पात्रक नैतिक विकासक संग कथा-रचनाक अनुशासन सेहो अछि।

तकनीकी अधिकारी मूल उपकरण पुनः खोलबाक बदला सीलबन्द अंकीय प्रतिलिपिक संरक्षण-सारांश प्रस्तुत करैत अछि। सुरक्षित माध्यमक किछु सन्देश-इतिहास पूर्ण आ किछु अनुप्रयोगक स्थानीय अभिलेख अधूरा अछि। एहि एक तथ्यसँ ‘नहि भेटल’क दार्शनिक भार परिवर्तित भऽ जाइत अछि। प्रत्यक्ष खोजक परिणाम शून्य होइतो प्रश्न ई रहैत अछि जे एहन चिह्न एहि स्रोतमे सामान्यतः रहबाक चाही छल कि नहि, आ स्रोत कतेक काल धरि सुरक्षित अछि। लेखक नकारात्मक प्रमाणकेँ अकस्मात् निर्दोषताक जादुई प्रमाण नहि बनबैत छथि। नायक स्वयं एहि असमर्थता केँ स्वीकार करैत अछि; एक प्रकारेँ कथाक नाटकीयता साक्ष्यक मर्यादासँ नियन्त्रित होइत अछि।

‘ऊपर धरि बात पहुँचि गेल अछि; चिन्ता नहि’—शशांक अपन एहि पुरान वाक्यक लेखकत्व स्वीकारैत अछि। आदित्यक प्रतिप्रश्न ‘ऊपर’क विशिष्ट सन्दर्भ माँगैत अछि, आ शशांक बतबैत अछि जे ओकर अस्पष्टता जानि-बुझि रचल गेल छल। ई गलती शब्दकोशक नहि, वाक्यक सामाजिक उद्देश्यक अछि। अनुवादक जकर प्रशिक्षण अर्थक अवच्छेद तय करबाक छल, ओहि व्यक्ति द्वारा अनिश्चयक प्रदर्शन अपन महत्त्व बढ़ेबाक युक्ति बनैत अछि। भारतीय औचित्य-विचारक दृष्टिसँ वाक्यक भाषा आ वास्तविक अधिकारक अनुपात भंग भेल; नव्य न्यायीय दृष्टिसँ अस्पष्ट सम्बन्ध केँ निश्चित संस्थागत सम्पर्कक रूपमे पढ़ब हेत्वाभास अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ कपटक आविष्कार अनुवादकक जीवनक मूल कार्यक भीतर सँ होइत अछि।

दोसर पुरान सन्देश समाचार छपलाक दू घण्टा बादक अछि—'देखलह, भीतरक बात बाहिर आबि गेल।' समय-मुद्रा मात्र सजावटी विवरण नहि; कथित पूर्वज्ञानक कारण-क्रम उलटैत अछि। जँ प्रतिक्रिया सार्वजनिक समाचारक बाद लिखल गेल, तखन एहि एक वाक्यसँ मुहरबन्द पाठ पहिले प्राप्त होएबाक निश्चय नहि। मुदा लेखक पाठककेँ अति-सहज उन्मुक्ति सेहो नहि दैत: एहि संरक्षित माध्यममे पूर्व-प्रकाशन प्रत्यक्ष हस्तान्तरणक चिह्न नहि भेटलाक अर्थ सभ सम्भावित माध्यम बाधित भऽ गेल, से नहि। ई द्विदिश निषेध—अतिशयोक्तिपूर्ण आरोप अस्वीकार, सर्वव्यापी निर्दोषता अस्वीकार—उपन्यासक तर्क-संरचनाक महत्त्वपूर्ण कठोरता अछि।

शशांकक पछिला बयान 'हमर कोनो अधिकारीसँ निजी सम्पर्क नहि छल' दुटा सामान्य कार्यालयी फोनक नोंदक कारण संशोधित होइत अछि। ई दृश्य केवल सूचनाक सुधार नहि; भयमे खण्डित सत्यक नैतिक आलोचना अछि। पहिने नायक सामान्य सम्पर्ककेँ गोपनीय प्रभावक रूपमे बड़ा करैत छल, बादमे ओहि सम्पर्ककेँ सर्वथा शून्य कहबाक प्रयत्न करैत अछि। मिथ्या व्यापक स्वीकार आ मिथ्या व्यापक निषेध एके मानसिक प्रवृत्तिक दू छोर अछि। सार्वजनिक ईमेल-सूची आ बैठक-आमन्त्रण सामान्य प्रशासनिक समय-समन्वयक वैकल्पिक प्रसंग प्रदान करैत अछि; तथापि अभिलेखक उपस्थितिसँ सम्पर्कक पूर्ण अर्थ स्वत: उद्घाटित नहि होइत। मूल कथाक ई संशोधन पात्रकेँ सर्वज्ञ आत्मस्वीकृतिकार नहि, संशोधनीय साक्षी बनबैत अछि।

समाचारमे 'सभ सन्देश मेटा देने'क सार्वजनिक दावा जाँचक एक नव विषय बनैत अछि। निर्दिष्ट पूर्ण-सुरक्षित स्थानीय इतिहासमे व्यापक मेटावक स्वतन्त्र चिह्न नहि भेटैत अछि; किछु अनुप्रयोगक संरक्षण आ बाह्य भण्डारण एखन अस्पष्ट अछि। लेखक एहि ठाम प्रमाण-श्रृंखला अति सावधानीसँ विभाजित करैत छथि। अभावक उपयोग केवल 'एहि संरक्षित उपकरणक उपलब्ध स्थानीय इतिहास जब्ती सँ ठीक पहिने व्यापक रूपेँ साफ कएल गेल' सन विशेष दावाक विरुद्ध होइत अछि। मूल घटनाक एहि सूक्ष्म वाक्यरचनासँ दिसैत अछि जे लेखकक आलोचनात्मक रुचि अपराधक रहस्यसँ बेसी दावाक व्याप्ति नियंत्रित करबमे अछि। मुदा अदालती प्रक्रियाक असली अव्यवस्था, विलम्ब आ तकनीकी असहमतिक प्रस्तुति कम रहबाक कारण ई वैचारिक स्पष्टता कतहु अत्यन्त शिक्षाप्रद सेहो लगैत अछि।

संगणकक 'ऊपरक पथ' नामक संचिका भीतर सार्वजनिक प्रक्रियाक चीनी-अंगरेजी शब्दावली आ शशांकक अपन टिप्पणी अछि, गोपनीय सरकारी

आदेश नहि। नाम आ वस्तुक एहि विरोधमे मूल कृतिक वक्रोक्ति अछि। फाइलक नाम नायकक महत्त्वाकांक्षाक सूचक बनैत अछि; भीतरक वास्तविक कागज वस्तुगत ज्ञानक सीमा बतबैत अछि। दोसर मसविदामे 'आपत्ति एखन खुलल अछि', 'लाभकारी स्वामित्व सत्यापन शेष' सन पाँति निचला आयुक्तालयक सावधानीसँ मिलैत अछि, मुदा निर्माण-समय सार्वजनिक स्रोत उपलब्ध भेलाक बादक अछि। पाठ-समानता आ चोरीक बीच स्रोत-कालक परीक्षण अनिवार्य होइत अछि। एतय अन्तर्पाठीयता स्वयं जाँचक विषय बनैत अछि—एके वाक्य दू पाठमे भेटब, साझा गुप्त स्रोतक प्रमाण नहि।

मृणालक आलोचना—पहिने छाया देहसँ पैघ बनायब, आब देह बचाबय लेल छाया नहि मानब—न्यायालयक शुष्क अनुक्रममे मानवीय आ रूपकात्मक हस्तक्षेप अछि। 'छाया अछि, मुदा आकार प्रकाश पर निर्भर' कहैत शशांक रूपकमे पहिल बेर एक सम्बन्धात्मक सत्य स्वीकारैत अछि। ध्वनि-विचारमे छायाक अर्थ अपूर्ण आत्मप्रचार आ संदिग्ध सामाजिक पहचान दुनू पर पड़ैत अछि। करुणाक स्वर पात्रक लज्जासँ, शान्तिक बीज ओकर आत्मसीमांकनसँ उपजैत अछि। तथापि मृणाल पुनः नैतिक प्रश्न करबाक परिचित कार्यमे रहि जाइत अछि; ओकर अपन भय, थकान आ स्वायत्त अन्तर्द्वन्द्व केन्द्रीय नायकक अपेक्षा कम खुलैत अछि।

अन्तिम कापीक 'समन = जाँचक आदेश; दोषक घोषणा नहि' सन विधानक पुनरावृत्ति एतय बाह्य जाँच आ अन्तःचिन्तनक अलग कालरेखा मिलबैत अछि। प्रत्यक्ष साक्षी, उपकरणक स्मृति, मृणालक पुरान अनुभव आ नायकक वर्तमान स्वीकार सभ एके वस्तुकेँ अलग पक्षसँ देखैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक उपयोग एतय सार्वजनिक सूचना, सरकारी समय-क्रम आ व्यक्ति-भाषाक इतिहासकेँ एक कारणमे नहि दबेबाक लेल उपयुक्त अछि। सबल उपलब्धि ई जे शशांक अपन डींगकेँ वास्तवमे दोष मानेबासँ नहि बचैत, पर ओहि दोषक आधारपर अज्ञात मुहरबन्द अंश चोरेबाक अतिरिक्त अपराध स्वीकार नहि करैत।

एहि अध्यायक अन्तिम संकेत विक्रेता-करारक 'अन्तिम लाभकारी स्वामी: सत्यापन शेष' कोष्ठक अछि। उपकरणक भीतर नाम नहि भेटल एतेक कहैत अछि जे एहि संचिकामे नाम नहि; वस्तुतः कोनो स्वामी नहि, वा नाम जानि-बुझि हटाओल गेल, दूनू निर्णय एखन अप्रमाणित। कथात्मक संक्रमण चतुर अछि: आत्मप्रचारक संचिका-नामक असत्य व्यापकता सँ करारक रिक्त नामक वास्तविक जाँच धरि नायक पहुँचैत अछि। आलोचनात्मक सीमा एकर पुनरुक्त न्यायिक सूत्र अछि; मुदा मूल कलात्मक बल ई जे वाणी पहिने

जतेक महत्त्वपूर्ण लगैत छल, एखन मौनक विवेक ओकर तुलनामे बेसी कठिन होइत गेल अछि।

## अध्याय ८२ — समझौता कएल एजेंसी : स्वामित्व-कोष्ठक, प्राप्ति-पञ्जी आ दावाक दोसर जीवन

बयासीम अध्यायक शीर्षकमे ‘समझौता कएल एजेंसी’ एक स्थापित घटना जेकाँ सुनाइत अछि। मुदा कथा जखन खुलैत अछि, तखन ई पद सार्वजनिक आरोपक रूपमे सामने अबैत अछि, न्यायिक निष्कर्षक रूपमे नहि। शीर्षक आ पाठक एहि अन्तरकेँ उपन्यास जानि-बुझि उपयोग करैत अछि। पाठकक अपेक्षा एक पैघ षडयन्त्रक चित्रक होइत अछि; मेज पर आयल सामग्री चारि अलग प्रकारक अछि—आयोजन-विक्रेताक करार, सेवा-पाबनिहारक विवरण, भुगतान करनिहार संस्थाक घोषणा-पत्र आ कर-गुप्तचर शाखाक सत्यापन-सूची। शीर्षकक उत्तेजना दस्तावेजक सादा विभाजन सँ नियंत्रित होइत अछि। ई विरोध रचनाक सन्देह-बोधक मूल साधन अछि।

करारमे आयोजन-विक्रेता आ सेवा देनिहारक विवरण उपलब्ध अछि, भुगतान करनिहार कम्पनीक घोषित निदेशकक नाम सेहो अछि। तथापि ‘वास्तविक लाभकारी स्वामी’क कोष्ठकमे ‘सत्यापन शेष’ लिखल अछि। ई अन्तिम पद कृतिक केन्द्रीय प्रतीक बनैत अछि। निदेशक, सेवा-विक्रेता, भुगतानकर्ता, प्रभावशाली परिचित आ वास्तविक लाभकारी स्वामी एके वर्ग नहि। शशांक यैह भेद बुझैत छल, मुदा ग्राहकक साम्हिन ‘असली स्वामी हम बुझैत छी’ कहिकेँ अपन निजी प्रभाव विस्तार करैत छल। सामान्य कथामे ककरो भ्रमित अर्थ बुझनाइ बौद्धिक त्रुटि हो सकैत अछि; प्रशिक्षित अनुवादक द्वारा अर्थ-सीमा जानि-बुझि मिटाएब नैतिक आ भाषिक दुर्व्यवहारक गम्भीर रूप अछि।

निचला आयुक्तालयक पुरान टिप्पणी स्वामित्व-घोषणा, पहचान-सत्यापन आ समर्थनकारी स्वामित्व-श्रृंखला भेटलापर पुनः परीक्षण कहैत अछि। तकर संग माँग-पत्र, प्राप्ति-सूची आ नियत संलग्नक-क्रमांकक प्रक्रिया मौजूद अछि, मुदा सम्बन्धित स्वामित्व-घोषणाक सुरक्षित पञ्जीमे क्रमांक नहि। एहि स्थितिमे ‘घोषणा विधिवत् भेटि चुकल छल’ दावाक विरुद्ध अपेक्षित चिह्नक अभाव महत्त्वपूर्ण होइत अछि। किन्तु पञ्जीबाह्य प्राप्ति वा नोंदमे विफलताक सम्भावना स्वतः समाप्त नहि। लेखक एक साधारण रिक्त कोष्ठककेँ अनुसन्धानक प्रमाण-प्रश्नमे बदलैत छथि: अभाव कब अर्थवान

होइत अछि, तखनहि जखन अभिलेखनक नियम आ स्रोतक पर्याप्तता सिद्ध हो।

आरोपक अगिला रूप ई अछि जे एजेंसी असल स्वामी जानैत छल, मुदा आन्तरिक समझौता कारण नाम दबा देलक। ई कथन सत्य सिद्ध करबाक लेल औपचारिक पहचान, नियन्त्रणक आधार, समर्थनकारी पृष्ठ, अंतिम निर्णय अथवा अनुचित दबावक स्वतन्त्र चिह्न चाही। उपलब्ध सुरक्षित समीक्षा-टिप्पणी 'सत्यापन शेष' बतबैत अछि; ताहि सँ औपचारिक सत्यापन भऽ चुकबाक सार्वजनिक दावा कमजोर होइत अछि। तथापि कथित समझौताक असम्भवता सिद्ध नहि। एतय नव्य न्यायीय निर्णयक मर्यादा स्पष्ट अछि: केओ स्वामी रहल होय सकैत अछि, एजेंसी ओकरा औपचारिक रूपेँ जाँचने हो, ई अलग; एजेंसी नाम नुकौलनि, ई तेसर। दावाक प्रत्येक पाँत स्वतंत्र आश्रय चाहैत अछि।

शशांकक डींगवाला सन्देश एहि दस्तावेजीय कठोरताक विरुद्ध मानवीय असुविधा उत्पन्न करैत अछि। हुनका किछु नाम सुनल छल, किछु परिचय देखल छल, किछु सम्बन्ध अनुमानित छल। 'कागज बादमे; पहिने लोक चिन्ह'क पुरान उत्तर ओकर बौद्धिक पद्धतिक वास्तविक कमजोरी उद्घाटित करैत अछि। सम्बन्धक मानवीय सूक्ष्म संकेत पकड़बाक प्रतिभा अंकीय, आर्थिक वा संस्थागत स्वामित्व निर्धारित करबाक प्रमाण-पद्धतिक पर्याय नहि। भारतीय प्रमाणशास्त्रमे शब्दप्रमाण तखन मान्य जखन वक्ताक विश्वसनीयता आ कथनक विषय जाँचल जाय; सुनी-सुनायल नामक समीपता सँ सत्यापित स्वामीक निष्कर्ष निकालब अनधिकृत विस्तार अछि। कथा भाषाक सामाजिक दक्षता आ आर्थिक वैधानिकता बीच दूरी स्थापित करैत अछि।

विक्रेता-पथमे आयोजन संस्था सँ सेवा-विक्रेता आ ओहिठामसँ भुगतानकर्त्ता धरि कागज उपलब्ध अछि, मुदा सार्वजनिक रिपोर्टक कथित 'अंतिम विदेशी नियंत्रक संस्था' संग सीधा करार अथवा अधिकार-पत्र भेटल नहि। लेखक एहि अभावकेँ सरल विजय नहि बनबैत। सम्बन्ध अप्रत्यक्ष स्वामित्व अथवा प्रभाव द्वारा सेहो हो सकैत अछि, ताहि लेल सीधा करार नहि भेटब मात्र निर्णायक नहि; मुदा जँ दावा सीधा भुगतान-निर्देशक अछि तँ निर्देश-सन्देश वा अधिकार-श्रृंखला जाँचनीय अपेक्षा बनैत अछि। ई विश्लेषण संस्थागत संजालक नैतिक पहिचान आ वास्तविक सम्बन्धक प्रमाणक पद्धति अलग

रखैत अछि। 'अपूर्ण' शब्द न अपराधक समानार्थी, न पूर्ण परीक्षणक प्रमाणपत्र अछि।

शशांकक 'त्रुटि नहि; प्रतिष्ठा लेल जानि-बुझि भारी शब्द' स्वीकार साहित्यिक रूपेँ महत्त्वपूर्ण अछि। नायक अपन व्यावसायिक बुद्धिमत्ता कैँ नैतिक रक्षाक आधार नहि बना सकैत; ओ बुद्धिमत्ता उलटे ओकर उद्देश्यक ज्ञान सुनिश्चित करैत अछि। भाषिक अपराध आ वित्तीय अपराध एके नहि, मुदा दुनू पूर्ण असम्बद्ध सेहो नहि: गलत आश्वासन संस्थागत निर्णय प्रभावित कऽ सकैत अछि, यद्यपि वित्तीय नियन्त्रणक भागीदारीक अतिरिक्त तथ्य आवश्यक अछि। कृतिक ई सन्तुलन मनुष्यकेँ या त पूर्ण कपटी या पूर्ण निर्दोष दुइ ध्रुवमे बाँटबाक आग्रहसँ बचैत अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक दृष्टिसँ आयोजन-करार, निचला आयुक्तालयक प्रतिरोध, कर-गुप्तचरक सत्यापन, सार्वजनिक समाचार आ शशांकक सामाजिक प्रसंग पाँच अलग स्रोत-रेखा छथि। एके तिथि वा नाम भेटबाक कारण तिनका सम्मिलित षडयन्त्रक रूपमे देखाएब इतिहास-लेखनक असावधानी होयत। मूल दस्तावेज, ओकर सार्वजनिक पुनर्कथन आ पात्रक निजी डींगक बीच प्रसारित अर्थक अन्तर देखेबामे अध्याय सफल अछि। तथापि करार-पञ्जीक तकनीकी विवेचनक बीच विक्रेता, खाताधारक वा कार्यालयक निम्न कर्मचारीक व्यक्तिगत दृष्टि कम अबैत अछि; आर्थिक श्रम-जगतक जीवन्तता विवेचनात्मक संरचनाक पीछे रहि जाइत अछि।

अन्तमे 'पहिने हम रिक्त कोष्ठकमे नाम भरैत रही; आब पूछैत छी—नाम रहबाक नियम छल कि नहि' सन आत्मालोचन कथा-व्यक्तित्वक मूल विकासक सार अछि। रिक्त स्तम्भ एक रूपक मात्र नहि, जाँचक उपयुक्त क्रिया-शर्त बनि गेल अछि। शीर्षकक कथित 'समझौता' निश्चित कथानक-सिद्धि नहि पबैत; एक प्रश्न रहैत अछि जकरा अपेक्षित प्रमाणक सूची चाही। ई अन्तक अपूर्णता कथाक कमजोरीक बदला उत्तरदायी ऐतिहासिक विवेचनक गुण अछि, यद्यपि बारम्बार कापीक सूत्रसंग्रह कथा-भंगिमाकेँ अध्ययन-पाठ जेकाँ बना दैत अछि। अगिला अध्याय एहि स्वामित्व-पथकेँ धनक सम्भावित प्रवाह आ मित्रताक कठिन नैतिक क्षेत्रमे लऽ जाइत अछि।

## अध्याय ८३ — समझौताक दरार ५ : ‘एम.के.-२’, मित्रक नाँव आ आर्थिक आरोपक प्रमाण-व्याप्ति

तिरासीम अध्यायमे नायकक विश्लेषणक विषय केवल अपन रक्षा नहि रहि जाइत; मृणाल कर्णक स्वतंत्र व्यक्तित्व आ प्रतिष्ठा दाँव पर अछि। मेज पर वैध भोज-प्रतिपूर्ति, भुगतान-द्वारक समेकित सार, खाता-पहिचान, हवाला/अंकीय परिसम्पत्तिक आशंका आ मित्रसभक पुरान सन्देश अलग राखल अछि। ई स्थापत्य पूर्व अध्यायक दस्तावेजी पद्धति दोहरबैत अवश्य अछि, मुदा भावात्मक केन्द्र बदलैत अछि। जकरा शशांक पहिने अपन विश्वसनीयताक ‘मुहर’ बनबैत छल, ओ मित्र आब स्वयं आरोपक सम्भावित भार लऽ कऽ उपस्थित अछि। सामाजिक सम्बन्धक अनुमान आर्थिक पात्र-पहिचानक प्रमाण बनल तँ ओकर मानवीय मूल्य की होएत—ई अध्यायक वास्तविक नैतिक प्रश्न अछि।

प्रथम प्रविष्टिमे मृणाल द्वारा स्थानीय यात्रा आ अतिथि-सहायताक सीमित खर्च, आ तकर बाद आयोजन-पक्षसँ ओहि खर्चक प्रतिपूर्ति, तिथि आ प्रयोजन सहित उपलब्ध अछि। लेखक एहि स्पष्ट सम्बन्धकेँ नकारैत नहि। दोसर प्रविष्टि ‘एम.के.-२’ नामक अधूरी खाता-पहिचान अछि, जकरा पुरान सारांश ‘सम्भावित मध्यवर्ती खाता’ समूहमे राखने छल। एके आद्याक्षर सँ मृणालक पहचान निकालब—ई शब्दगत साम्यकेँ व्यक्तित्वक अद्वितीय सम्बन्ध मानबाक गलती अछि। जँ खाता वास्तवमे मृणालक मुखौटा होइत, तखन परिचय, निर्देश, लाभार्थी सम्बन्ध अथवा प्रयोजनक किछु स्वतंत्र चिह्न अपेक्षित रहित। सुरक्षित संचिकामे ओ कड़ी नहि भेटल; मुदा मूल पहचान अपूर्ण रहलासँ निश्चयक सीमा एखनु स्पष्ट रहैत अछि।

मृणालक ‘तूँ हमरा मित्र बनौने रहह कि अपन कथा लेल मुहर?’ प्रश्न एहि अध्यायक सभसँ तीक्ष्ण संवाद अछि। शशांक अपन प्रतिष्ठा बढ़ेबाक लेल ‘मृणाल सभ जानैत अछि’ कहैत रहबाक अपराध स्वीकार करैत अछि। ई स्वीकार निजी सम्बन्धक उपनिवेशीकरण जेकाँ अछि—दोसर व्यक्तिक उपस्थिति कैं अपन कथनक अधिकारपत्र बनायब। विश्वासघात एतय पैसा अनिवार्य रूपेँ चोरी करब नहि; मित्रक स्वतंत्र ज्ञानसीमा मिटा कऽ ओकर सामाजिक पहिचानकेँ अपन प्रसंगमे कैद करब अछि। करुणा एहि प्रश्नसँ जन्मैत अछि जे मृणाल अपन नाँवक उद्धार लेल कोन कागज दिखाओत; शशांकक निजी पछतावा आर्थिक प्रमाणक विकल्प नहि।

समेकित भुगतान-द्वारक सारांश ‘म्यूल शृंखला’ घोषित कएल गेल, मुदा किछु सेवा-अभिलेख पूर्ण आ किछु अपूर्ण अछि। आरोपक स्तर समूहक अछि; स्रोतक स्तर अनेक स्वतंत्र प्रविष्टिक। जँ सभ खाते समन्वित मुखौटा भूमिका निभबैत, तखन खाताधारकक पहिचान, लाभ, निर्देश अथवा उपयोगक समान उद्देश्यक समर्थक सम्बन्ध माँगल जाएत। लेखक समूहक नाम देबाक हिंसाकेँ स्पष्ट करैत छथि, किएक तँ एक शीर्षकक नीचाँ राखि देल गेल अनेक अलग लेनदेन पाठकक दृष्टिमे एक संस्थागत अपराध बनि सकैत अछि। ‘निकट मित्र-वृत्त’ शीर्षक सुरक्षित मूल तालिकामे नहि, केवल एक पछिला आन्तरिक सारांशमे अछि; ओहि वर्ग-नामक लेखक वा औपचारिक आधार स्वतंत्र जाँचक विषय अछि।

शशांकक पूर्व भाषिक अपराध एहि विवादित सामूहिक शीर्षकक आलोचनामे विडम्बनापूर्ण ढंगसँ लौटैत अछि। स्वयं जे अनुवादक शब्द नर्म अथवा भारी करि समाजक धारणा बदलैत छल, ओ आब अभिलेखमे जोड़ेले एक वर्गनामसँ मित्रक जीवन बदलैत देखैत अछि। ‘कतेक बेर एक शीर्षक लोकक जीवन बदलि दैत अछि’—मृणालक ई वाक्य उपन्यासक आत्मालोचना बनैत अछि। नव्य न्यायीय अवच्छेदक-विचारक व्यावहारिक अर्थ एतय अछि: ‘निकट’ ककरा सापेक्ष? ‘मित्र’ कोन प्रमाणसँ? ‘वृत्त’क सदस्यता कोन आर्थिक क्रियासँ? शर्त अव्यक्त रहला पर भावनात्मक निकटता दायित्वक अवैध विस्तार बनि सकैत अछि।

हवाला-सन्दर्भक मूल टिप्पणीमे ‘आशंका; स्वतंत्र पुष्टिकरण आवश्यक’ प्रकारक सीमा अछि। समय-साम्य भेटब आ स्पष्ट लाभार्थी-कड़ी अधूरी रहब —एहि स्थिति कैँ लेखक संवेदी अपराधक पुख्ता आरोप नहि बनबैत छथि। विशेष कठिनाई ई जे कथित अनौपचारिक भुगतान-पथ सभ काल नियमित अभिलेख नहि छोड़ैत, तेँ लिखित चिह्नक अनुपलब्धि कम निर्णयकारी हो सकैत अछि। एतय योग्य-अनुपलब्धिक सिद्धान्त अपन सीमा स्वयं प्रकट करैत अछि। साक्ष्यक अभाव तखने महत्त्वपूर्ण जखन प्रासंगिक स्रोत पर्याप्त हो; जँ मूल कार्यप्रणाली अनौपचारिक अछि, तखन अनुसन्धानक अन्य वैध स्रोत आवश्यक रहैत अछि। अध्याय परिचालन-विधि नहि सिखबैत, केवल दावाक जाँच-योग्यता विवेचित करैत अछि।

अंकीय परिसम्पत्तिक एक पता-जेकाँ पहचानक उल्लेख भेटैत अछि, मुदा शशांकक वास्तविक नियन्त्रण अथवा स्वामित्वक पुष्टिकरण सुरक्षित

संचिकामे नहि। नायकक पुरान 'अंकीय रास्ता सेहो बुझैत छी' वाक्य एतय फेर ओकर प्रतिकूल भऽ ठाढ़ अछि। 'बुझैत छी' सँ 'चलाबैत छी' धरि छलाँग लगेनिहार सार्वजनिक आरोप भाषा-बोध आ परिचालनक अधिकारक अन्तर नहि मानैत। लेखक शशांककेँ एकदम निष्पाप नहि देखबैत छथि; ओ तकनीकी शब्दावली बुझैत छल, लोकक संग छल, अपन प्रभाव बढ़बैत छल। मुदा ई प्रत्येक स्थापित प्रसंग अज्ञात सम्पत्तिक मालिक होएबाक आवश्यक सम्बन्ध नहि बनबैत। एक ओर सामाजिक-नैतिक जटिलता, दोसर ओर अभिलेखीय दावाक सीमा—ई वैचारिक असन्तुलन कहानीकेँ रोचक बनबैत अछि।

दुपहरक मृणालक पुरान सन्देश 'पैसाक पथ बुझाइत अछि, कागज पर बना क' देख' हुनकर चरित्रमे आलोचनात्मक स्थैर्य दैत अछि। शशांक 'हम लोक चिन्हैत छी' कहि सम्बन्धकेँ ज्ञानक पर्याय मानैत छल। वर्तमान दृष्यमे मित्रक एकमात्र आग्रह अछि—जे जानैत छी ओतबे लिखू; जे नहि जानैत छी ओहि पर दोसराक आर्थिक दोष नहि लादू। मृणाल बचावक सौदा नहि माँगैत, समान कसौटी माँगैत अछि; भविष्यत् स्वतंत्र प्रमाण भेटत तँ मित्रता ओकरा रोकत नहि। एहि प्रतिज्ञासँ मित्रता न्यायिक प्रक्रियाक बाहर भावनात्मक छूट नहि, व्यक्ति-स्वायत्तताक सम्मान बनैत अछि।

आख्यानगत सीमा बारम्बार आदित्यक प्रश्न, शशांकक उत्तर आ कापीक सूत्रमे प्रकट अछि। आर्थिक अभिलेखक कठोर विभाजनक बीच स्थानीय जीवन, खर्चक वास्तविक दबाव आ अपमानित मित्रक देहगत प्रतिक्रिया अल्प विस्तार पबैत अछि। तथापि शशांकक अपन मित्रकेँ 'मुहर' बनाओलक स्वीकार दृश्यकेँ मनुष्यक भरोसा, भाषा आ सामाजिक प्रतिष्ठाक सम्बन्धसँ भरैत अछि। पाश्चात्य बहुस्वरात्मक दृष्टिसँ मृणालक उत्तर कथाक नायकक व्याख्यापर प्रतिरोध करैत अछि, भले कथाक आयोजन अन्ततः शशांकक नैतिक पाठ दिस लौटि जाए।

'पहिने हम लोकक मुख देखि पथ बना दैत रही; आब पथ नहि भेटय त' लोककेँ दोषी नहि बनाउ'—एहि अन्तिम विचारमे घटनाक सटीक बौद्धिक परिणति अछि। पहले वस्तु वा खाता-सूचीमे नाँव खोजबाक प्रश्न छल; आब मनुष्यक नाँवक कात अपराधक शब्द लिखबाक औचित्यक प्रश्न अछि। विदेह समानान्तर इतिहासक सिद्धान्त अनुरूप भोजक सीमित प्रतिपूर्ति, सार्वजनिक आरोपक 'मित्र-वृत्त', मध्यवर्ती खाता-चिन्ह आ अंकीय पहचान चारि अलग अभिलेखीय जीवन छथि। तिनका एक कथामे जोड़बाक अधिकार जोड़निहार

स्रोत-सम्बन्धक प्रमाण पर निर्भर अछि। अगिला अध्यायमे वित्तीय पथसँ प्रणाली-अधिकारक दावाक दिशामे जाँच बढ़ैत अछि; मित्रक स्वायत्तता सँ उपजल प्रमाण-विवेक अब नायकक अपना प्रतिष्ठाक विरुद्ध लागब आवश्यक अछि।

## अध्याय ८४ — समझौताक दरार ६ : मकाऊक आगन्तुक-पास आ प्रशासनिक सत्ता-सदृश भ्रम

चौरासीम अध्यायमे मकाऊक चमकदार स्मृति आ कार्यालयक साधारण यात्रा-सूची एक-दोसरक साम्हिन राखल गेल अछि। विमान-तिथि, होटल, बैठक, आगन्तुक-पास, अस्थायी प्रवेश-सूची आ आंशिक प्रणाली-अभिलेख अलग-अलग उपलब्ध छथि। भोजक तालि आ विदेशी प्रशंसा नायकक भीतर ‘विशेष’ शब्दक एहन मोह रचने छल जे ओ सीमित भाषिक सहयोगकेँ व्यापक डिजिटल सत्ता बुझबाक कात बढ़ि गेल। एहि विरोधक कथा-सौन्दर्य वस्तु-प्रतीकमे निहित अछि: काँचवाला लिफ्ट ऊपर उठैत अछि, मुदा ऊँचाइ अधिकारक प्रमाण नहि। नायकक मन दृश्यक भौतिक गतिसँ प्रतिष्ठाक काल्पनिक पदानुक्रम बना लैत छल।

अध्यायक महत्त्वपूर्ण संवादमे शशांक विदेश यात्रा आ बैठकमे उपस्थितिक तथ्य स्वीकार करैत अछि; अस्थायी आगन्तुक-प्रवेशक सीमा सेहो मानैत अछि। दस्तावेज ‘सीमित प्रदर्शन/भाषिक सहयोग’ बतबैत अछि, स्थायी उपयोगकर्ता-परिचयक कोष्ठक रिक्त आ प्रशासनिक भूमिकाक कात ‘नहि’ अछि। आदित्यक ‘कागज नव अछि?’ प्रश्नपर शशांकक ‘नहि। हमर दृष्टि नव अछि’ कथन आत्मचेतनाक एक सुन्दर सूत्र बनैत अछि। घटनाक अभिलेख बदलल नहि; अर्थ ग्रहण करबाक मनोवृत्ति बदलल अछि। दर्शनक भाषा एतय चरित्रक अनुभवक भीतर सँ उपजैत अछि, व्याख्यानक पूर्वनिर्धारित निर्देश जेकाँ नहि।

मृणालक पुरान प्रश्न ‘देखलह = चलौलह?’ कृतिक सर्वाधिक संक्षिप्त प्रमाण-परीक्षा सभमे एक अछि। शशांक ओहि समय उत्तर नहि दैत, किएक तँ ‘चलौलहुँ’ कहब मिथ्या आ ‘केवल देखलहुँ’ कहब प्रतिष्ठाक दृष्टिसँ छोट पड़ैत। एहि मौनक नैतिकता सीधा झूठसँ भिन्न अछि: जानि-बुझि असमर्थित व्यापक अर्थ खुला छोड़ि देब, जाहिसँ दोसर लोक गलत निष्कर्ष काढ़य। वक्रोक्तिक दृष्टिसँ अनुत्तरित प्रश्न पाठमे सबसे अधिक बोलैत अछि। एक अनुवादक जकर दक्षता सूक्ष्म अर्थ स्पष्ट करब अछि, ओ अपन जीवनमे अर्थ धुँधला करबाक यत्न करैत अछि; एहि वैपरीत्यसँ उपन्यासक शीर्षक नवी अर्थ पबैत अछि।

सुरक्षित अवधिक तकनीकी सारांशमे उच्च-अधिकार परिवर्तनक नोंद स्वतः सुरक्षित होएबाक व्यवस्था कहल गेल अछि, मुदा शशांकक अस्थायी परिचयसँ एहन परिवर्तनक चिह्न नहि भेटैत अछि। एतय अनुपलब्धिक तर्क पिछला अध्यायक अपेक्षा अधिक सघन अछि, किएक तँ योग्य चिह्न रखबाक सामान्य नियम निर्दिष्ट रूपमे सामने अछि। 'उच्च प्रशासनिक अधिकार देल गेल'क विशेष दाबी कमजोर भऽ सकैत अछि; एहि सँ यात्रा नहि भेल वा प्रस्तुति नहि देखल गेल, ई नकारात्मक दाबी नहि निकलैत। उपलब्ध आ अनुपलब्धक एहि सन्तुलनमे नव्य न्यायीय प्रमाणशास्त्र तर्कक अति-व्याप्ति रोकैत अछि।

समाचारक 'सर्वर-कक्ष धरि पूर्ण पहुँच' सन दावा मूल यात्रा-पत्रक 'प्रणाली-प्रदर्शन क्षेत्र' आ 'बैठक क्षेत्र' सँ बेसी पैघ अछि। 'सर्वर-कक्ष' शब्दक मूल स्रोत स्पष्ट नहि; एक संवेदनशील क्षेत्रमे प्रवेशक अनिवार्य नोंद पूर्ण सुरक्षित अछि, मुदा शशांकक नाम नहि। ई अभाव ओहि एक क्षेत्रक सार्वजनिक दाबीकेँ चुनौती दैत अछि, भवनक सभ कमराक गतिविधि निर्धारण नहि करैत। नायकक स्वीकार जे ओकर 'भीतरक पटल' डींग पत्रकारक दावाक बीज बनि सकैत अछि, मुदा समूचा वाक्यक लेखकत्व वा सत्य ओकर नहि—अभियुक्तक नैतिक दायित्व आ समाचार-निर्माताक स्वतन्त्र उत्तरदायित्व बीच जरूरी अन्तर अछि।

प्रस्तुति-सारांशमे शशांक द्वारा 'प्रशासनिक पटल'क बदला 'प्रबन्ध-पटल' चुनल गेल छल। ई चयन श्रवण-सहजता लेल हो सकैत अछि, मुदा शब्दक फेरबदल स्वयं नायकक अधिकारपत्र नहि। लेखक अर्थ-भेद पर जोर दैत देखबैत छथि जे वर्णनात्मक शब्द आ संस्थागत अधिकारक नोंद एके श्रेणीक वस्तु नहि। अनुवादकक भाषा अधिकारक सामाजिक आभा बना सकैत अछि, मुदा अभिलेखक वैध अनुमति स्वतः उत्पन्न नहि करैत। साहित्यक कथ्य एतय भाषा-सत्ता सम्बन्धक सैद्धान्तिक प्रश्नकेँ एक ठोस मंच, पास आ नोंदद्वारा मूर्त करैत अछि।

विदेश यात्राक व्ययक एक भाग विक्रेता-पक्ष आ दोसर भाग सेवा-प्रतिपूर्तिक अन्तर्गत वहन भेल। नायक ई वास्तविक सुविधा आ आर्थिक सम्बन्ध नकारैत नहि; ओ लोभक रूपमे होटल, यात्रा, अपन विशेष अतिथिक पहचान आ सामाजिक प्रशंसाक आकर्षण स्वीकारैत अछि। मुदा सेवा-व्ययक वहन सँ

लाभकारी स्वामित्व अथवा प्रणाली-नियन्त्रण स्वतः नहि सिद्ध। पाठक लेल ई सन्तुलन आवश्यक अछि, किएक तँ जे नायक अपन इच्छा नकारैत अछि ओकर बचाव कम विश्वसनीय; जे अपन लोभ मानेबासँ ओकर विरुद्ध काल्पनिक अधिकार गढ़ल जाय, तहन अन्याय। रचना दुनू अतिवादकेँ परस्पर परखैत अछि।

मकाऊक काँचवाला लिफ्ट, मंचक रोशनाइ आ 'भीतर' कहल जाएबाक लालसा भारतीय रस-चिन्तनमे उत्साह सँ लज्जा धरि यात्राक रूप धरैत अछि। 'विशेष = असीम नहि' कहब नायकक विवेकक संकेत बनैत अछि। शान्त रस एतय लोभक पूर्ण विनाशसँ नहि, लोभक स्वीकार आ दावाक मिततासँ जन्मैत अछि। दृष्टिबिन्दु मुख्यतः शशांकक पछिला आत्मालोचनक नजदीक अछि; मकाऊक स्थानीय कर्मचारी वा नियन्त्रण-व्यवस्था बनौनिहारक स्वतंत्र व्यक्तित्व कम विकसित अछि। एही कारण वैश्विक व्यापारिक संसार पृष्ठभूमिक मंच बनेबाक जोखिम लैत अछि, यद्यपि मंच आ अभिलेखक रूपकीय भिन्नता प्रभावपूर्ण अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति अनुसार भोजक मंचीय वचन, दिल्लीक व्यक्तिगत सन्देश, मकाऊक आगन्तुक-पास आ तकनीकी अधिकार-नोंद अलग कालरेखा छथि। एक-दोसरासँ जुड़ल रहितो सभक उद्देश्य भिन्न अछि। सार्वजनिक शब्द 'पूर्ण पहुँच'क उत्पत्ति पता लगेनाइ अलग अनुसन्धान; मूल अधिकारक उपलब्ध अभिलेख जाँचनाइ अलग। लेखक एहि भिन्नताक सहारे अपना नायकक वास्तविक कमजोरी आरो स्पष्ट करैत छथि—ओ बहुधा सीमाक पूर्ण ज्ञान रहितो समाजक सामने सीमा अस्पष्ट रखैत छल।

अन्तिम आत्मकथन 'हम भीतर गेल रही; भीतरक स्वामी नहि रही' दीर्घ उपन्यासक एक महत्त्वपूर्ण द्वन्द्व समेटैत अछि। प्रवेश वास्तविक अछि, अनुभव वास्तविक, लोभ वास्तविक; व्यापक स्वामित्व एतय अनुप्रमाणित। मुदा एक मात्र अध्ययनपद्धति-सम्बन्धी सीमा रहैत अछि: बारम्बार शशांक-आदित्यक साफ-साफ वर्गीकरण मनुष्यक निर्णयमे उपस्थित अस्पष्टता केँ किछु बेसी व्यवस्थित करि दैत अछि। ताहि सत्ते आगन्तुक-पासक सीमित अधिकार आ काँचक लिफ्टक दर्पण एहि अध्यायकेँ पिछला शुष्क प्रमाण-तालिकासँ सौन्दर्यात्मक अलग स्वर दैत अछि।

## अध्याय ८५ — समझौताक दरार ७ : विधिक विशेषाधिकारक सीमा आ भयक नैतिक अर्थ

पचासीम अध्याय भयक सघन अवस्थामे प्रवेश करैत अछि। पिछला मकाऊ-जाँचमे नायक अपन सीमित प्रवेश स्वीकारलक; एखन प्रश्न ई जे वकील राघव भसीनक संग भेट तथा हुनकर नाम उपयोग करब कतेक सीमा धरि विधिक साक्ष्य होइत अछि। आदित्य स्पष्ट करैत अछि जे विधिक परामर्शक संरक्षित विषयवस्तु नहि खोलल जाएत; केवल बाह्य समय-क्रम, प्रतिभागीक भूमिका, अलग व्यापारिक सन्देश आ सम्भावित स्वतन्त्र चिह्न देखल जाएत। राघव तेसर आवश्यक अन्तर जोड़ैत छथि—वकीलक नामक उपस्थितिसँ सभ व्यापारिक सन्देश विशेषाधिकारयुक्त नहि बनि जाएत। दृश्य प्रतिष्ठित पेशागत गोपनीयता आ अनुसन्धानक वैध प्रश्न दुनूकेँ एके समय सम्मान करबाक प्रयत्न अछि।

विधिक बैठकक तिथि, अवधि, सामान्य सेवा-लेखा आ प्रतिभागीक नाम सुरक्षित अछि; मूल सलाहक शब्द प्रस्तुत नहि। बैठकक बाद शशांक अलग व्यापारिक समूहमे ‘विधिक पक्ष साफ, प्रक्रिया बढ़ाउ’ लिखने छल। ओ एहि वाक्यक लेखकत्व आ शर्तकेँ छोट केने रहबाक जिम्मेदारी स्वीकार करैत अछि। पेशागत सलाहक वास्तविक पूरा अर्थ बिना प्रकटीकरण निश्चित नहि कहल जा सकैत; शशांकक अनधिकृत सारांश राघवक आधिकारिक मत नहि। नायक जानैत छल जे जटिल सावधानी ग्राहककेँ अधीर करैत अछि; प्रभावकारी छोट उत्तर ओकर प्रतिष्ठा बढ़बैत छल। एतय भाषिक संक्षेप शैलीगत सौकर्य नहि, अनधिकारवश निर्णय-सूचक आश्वासन बनि गेल।

अनुवादकक दोष जानि-बुझि नर्म भाषा चुननाइ अछि, मुदा ओकरा साक्षी बना क८ विधिवेत्ता अपराधक निर्देशक छलाह, ई अलग दाबी। कथा एहि प्रश्नकेँ नियमित रूपेँ दुविधामुक्त नहि करैत; राघव स्वयं कहैत छथि जे विधिक गोपनीयता अपराधक जादुई रक्षा नहि, मुदा विधिक बैठकक उपस्थिति अपराधक पर्याप्त प्रमाण सेहो नहि। नव्य न्यायीय हेत्वाभासक दृष्टिसँ वकीलक संग बैठकक कारण आपराधिक सहभागिताक निष्कर्ष निकालब अवैध व्यापक अनुमान अछि। विपरीत दिस गोपनीय परामर्शक पूरा पाठ नहि देखल गेल कहि सभ सम्भावित सहभागिता असम्भव मानब सेहो अनुचित। दुनू पक्षक एकसमान सीमा लेखक न्यायिक अनुसन्धानक नैतिकता बनबैत छथि।

आदित्यक तालिकामे कथित संयुक्त योजनाक सम्भावित स्वतन्त्र चिह्न पाँच श्रेणीमे बाँटल अछि—गोपनीय सलाहक बाहिर अपराध-विशिष्ट निर्देश, धन-वितरण वा लाभ-साझेदारी, मुहरबन्द सामग्रीक स्रोत-संकेत, प्रशासनिक नियन्त्रणक अधिकार, आ गैर-विधिक काम-विभाजन। उपलब्ध व्यापारिक समन्वय, शशांकक सेवा-शुल्क आ सीमित आगन्तुक-पास वास्तविक वस्तु छथि; अपराध-विशिष्ट सम्बन्धक समर्थन एहि सुरक्षित प्रस्तुतीकरणमे स्थापित नहि। संयोग, वैध सेवा, पेशागत उपस्थिति आ आरोपित योजना एके श्रेणीक घटना नहि। एहि संरचनासँ कथाक अनुसन्धान-आधारित अनुशासन मजबूत होइत अछि, मुदा निरन्तर सारणीक शिक्षण-गति कथानकक सहज तनाव घटा सकैत अछि।

पुरान सार्वजनिक रिपोर्ट ‘कानूनी परामर्शक आवरणमे नेटवर्कक निर्णय’ कहैत अछि, स्रोत केवल ‘जाँच-संबद्ध सूत्र’ लिखैत अछि। लेखक एहि सूत्रकेँ स्वतः विश्वसनीय प्रमाण मानि नहि लैत। यदि कथित नियमित परिचालन व्यवस्था होइत, तखन सम्भावित बाह्य परिणाम—गैर-विधिक निर्देश, असामान्य लाभ, अधिकार-परिवर्तन वा अपराध-विशिष्ट सन्देश—जाँचनीय रहित। मुदा ई नहि कहल जा सकैत जे सभ योजना अवश्य लेखामे स्पष्ट दर्ज होइत; मौखिकता, अपूर्ण अभिलेखन आ अप्राप्य माध्यमक सम्भावना अभावक वजन घटबैत अछि। एतय योग्य-अनुपलब्धि अपन अनुप्रयोगक शर्त सहित उपस्थित अछि, नायकक पक्षधर कानून बनिकऽ नहि।

शशांकक ‘विधिक लोकसँ बात भऽ गेल; आब चिन्ता कम अछि’ सन वाक्य सामान्य आश्वस्ति व्यक्त कऽ सकैत अछि। आदित्य एहि कथनक सम्भावित विकल्प दैत पूछैत अछि जे जँ सरकारी जाँच रोकबाक अपराध-विशिष्ट योजना लिखल होइत तँ अर्थ अलग होइत। मूल सुरक्षित सामग्रीमे एहन स्पष्ट निर्देश नहि भेटल। वाक्यक अर्थ ओकर प्रसंग, समय, प्राप्तकर्ता आ क्रियान्वयन-साक्ष्य पर निर्भर रहलासँ पाश्चात्य कथन-सिद्धान्तक ‘कियो कहलक’ आ ‘की करवाएबाक प्रयत्न छल’क अन्तर स्पष्ट होइत अछि। नायकक पेशा भाषिक शर्तनिष्ठाक अछि; ओ वाक्यक उपयोगितावादी प्रस्तुति करैत-करैत अपन पेशाक मूल नीतिसँ दूर चलि गेल।

राघवक सीमित उत्तरक सौन्दर्य ओकर न कहल बातमे अछि। ओ गोपनीय सलाहक मूल शब्द नहि दैत छथि, मुदा सामान्य नैतिक मर्यादा स्पष्ट करैत

छथि। वकीलक विधिक मर्यादा रचना-शिल्पमे एक प्रकारक सचेत मौन बनैत अछि। ध्वनि-विचारमे एहि मौनक अर्थ अपराधक छाया नहि, उपलब्ध ज्ञानक सीमा अछि। शशांक पहिने गोपनीयताकेँ अपन प्रचारक मुहर बनबैत छल; आब ओकर उपयोग दोसर व्यक्तिक निर्णय पर असिद्ध दोष नहि देबाक लेल होइत अछि। भयक मनोविज्ञान यही ठाम परिवर्तन पबैत अछि: नायक अपन दण्डक भय सँ अधिक अपन सन्देशक कारण राघवक अनावश्यक सार्वजनिक बदनामीक चिन्ता करैत अछि।

मृणालक संग समापन संवादमे नायक कहैत अछि जे पहिने वकीलसँ डर छल, बादमे अपन शब्दसँ। ई परिवर्तन नायककेँ स्वार्थी बचावक अवस्थासँ सम्बन्धपरक नैतिकतामे अनैत अछि। किन्तु एहन परिवर्तन निष्कलुष नायकक निर्माण नहि; ओहिठाम शशांक अपना सेवा-लाभ, व्यापारिक वाक्यक अतिशयोक्ति आ चयनित शर्त-छाँटनाइ मानैत अछि। मनोवृत्तिक दोष वास्तविक अछि, मुदा अपराध-विशिष्ट सहभागिताक स्रोत अलग चाही। पाठ एहि दुइ स्तरक अन्तरकेँ अनवरत दृढ़ रखैत अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति एतय विधिक पेशागत गोपनीयता, निजी व्यापारिक सन्देश, सार्वजनिक रिपोर्ट आ जाँच-अधिकारीक अपेक्षित अभिलेखकेँ चारि स्वतंत्र रेखामे राखैत अछि। मात्र एके दिनक समय-सामीप्य, वा एके व्यक्ति सह बैठक, ककरो वैधानिक दायित्वक सम्पूर्ण परिभाषा नहि। इतिहासक सम्भावित गलत लेखन सेहो एतय आलोचनाक विषय अछि: पछिला समाचारक तीव्र शीर्षक भविष्यक पाठकक स्मृतिमे मूल शर्तयुक्त विधिक प्रक्रियाक स्थान नहि लऽ ले।

एहि अध्यायक कलात्मक सीमा ई जे अनेक प्रश्न-उत्तर स्वयं सिद्धान्त बुझाबयक उद्देश्यसँ व्यवस्थित लगैत अछि; संस्थागत पात्रसभक निज जीवनक ध्वनि अपर्याप्त अछि। तथापि ‘एखन’ शब्दपर शशांकक विशेष आग्रह अध्यायक अन्तमे क्षुद्र मुदा अर्थवान सौन्दर्य-क्षण बनैत अछि। निश्चित आरोपक समयसीमा होइत अछि; एखन धरि नहि भेटल चिह्न कैं सदाकाल नहि भेटत कहल नहि जा सकैत। ‘गोपनीय = अपराधी नहि’ आ ‘गोपनीय = स्वतः निर्दोष सेहो नहि’क युग्म दार्शनिक घोषणाक अपेक्षा साक्षी-व्यवहारक नियम बनैत अछि। भयक सफल रूपान्तरण ई अछि जे नायक अपन शब्दक हानि स्वीकारैत अछि आ दोसराक नाम पर अपराध आरोपबाक सीमा सेहो सीखैत अछि।

## अध्याय ८१-८५ : सतरहम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — अभिलेखक अनुपलब्धिसँ व्यक्तिक अधिकार-सीमा धरि

एकासीम सँ पचासीम अध्याय ‘समझौताक दरार’क मध्यगत अनुक्रममे प्रमाणक पाँच अलग क्षेत्र उघारैत अछि—जब्त डिजिटल उपकरण, लाभकारी स्वामित्वक करार-पञ्जी, मित्र-संलग्न आर्थिक प्रविष्टि, विदेशक आगन्तुक-अधिकार आ विधिक परामर्शक बाह्य अभिलेख। सभमे ‘नहि भेटल’ वाक्य सुनाइत अछि, मुदा एके अनुपलब्धिक माप लागू नहि होइत। लेखकक विशिष्ट उपलब्धि एहि भिन्नताकेँ कथाक मूल प्रश्न बनाओल अछि। अंकीय प्रतिलिपिक संरक्षण-अवधि, स्वामित्व-घोषणाक अनिवार्य प्राप्ति-क्रम, खाता-पहिचानक अपूर्णता, प्रशासकीय अधिकार-नोंदक विश्वसनीयता आ विधिक विशेषाधिकारक गोपनीयता—प्रत्येक ठाम अनुपस्थित सामग्रीक अर्थ अलग नियमसँ ठहरैत अछि।

अध्याय ८१मे ‘ऊपर धरि बात’ आ ‘भीतरक बात’ सन अस्पष्ट वाक्य नायकक आत्मप्रचार देखबैत अछि। एक पुरान सन्देश समाचारक बाद लिखल गेल, ताहि सँ ओकर पूर्व-प्रकाशन गुप्तज्ञानक दावा कमजोर होइत अछि। अध्याय ८२मे ‘असली स्वामी हम बुझैत छी’ कहल एक समान गर्व स्वामित्वक रिक्त कोष्ठक भरबाक प्रयत्न अछि। दुनू प्रसंगमे भाषा अर्थक वास्तविक सीमा आगाँ बढ़बैत अछि; फर्क एतबे जे पहिलमे संस्थागत पहुँचक भ्रम आ दोसरमे आर्थिक नियन्त्रणक भ्रान्ति अछि। शशांकक व्यक्तित्वक मूल दोष प्रत्येक विषयमे समरूप होइतो प्रमाण-संबन्धी त्रुटि विषयानुसार भिन्न होइत अछि।

अध्याय ८३ एहि मनोवृत्तिक सामाजिक मूल्य देखबैत अछि। ‘मृणाल सभ जानैत अछि’ कहिकेँ नायक मित्रकेँ अपना कथाक प्रमाणिकता बढ़ेबाक मुहर बनौलक। ‘एम.के.-२’क अधूरा परिचय आ वैध भोज-प्रतिपूर्तिक तिथि एक आर्थिक षड्यन्त्रक एकल कड़ी नहि बनैत। भाषिक प्रतिष्ठा आ मित्रताक नाम सार्वजनिक आर्थिक अपराधक आरोपक बीच ओतहि सीमा भंग करैत अछि जतय सामाजिक चिन्हकेँ विधिक परिचय बनाओल जाइत अछि। मृणालक ‘तूँ हमरा मित्र बनौने रहह कि अपन कथा लेल मुहर?’ प्रश्न दुनू पूर्व अध्यायक शशांक-केंद्रित आत्मपरीक्षा केँ सम्बन्धक स्वतंत्र नैतिक कसौटी पर राखैत अछि।

अध्याय ८४क मकाऊ-सत्र पहिल दू अध्यायक अभिलेख-विवेकक भौतिक रूपक बनैत अछि। अस्थायी आगन्तुक-पास, सीमित प्रस्तुति-अधिकार आ नियमित प्रशासकीय नोंदक बीच अन्तर ओही प्रकारक अछि जे ८२मे विक्रेता-सम्बन्ध आ वास्तविक स्वामित्वक बीच छल। शशांक जखन 'भीतर' प्रवेश करबाक अनुभवकेँ 'भीतरक स्वामी' बनबाक कल्पनामे बदलैत अछि, तखन स्थानक एक भौतिक सम्बन्ध सत्ता-संबन्धक अनुचित प्रमाण बनैत अछि। काँचक लिफ्टक ऊपर उठैत दृश्य आ अधिकार-पत्रक सादा 'नहि' एहि अनधिकृत अनुमानक कलात्मक प्रतिद्वन्द्वी छथि।

अध्याय ८५ मे राघव भसीनक विधिक गोपनीयताक सीमा पूर्वक सभ उदाहरणसँ अलग जटिलता अनैत अछि। एहि ठाम मूल सलाहक सामग्री उपलब्ध नहि करब प्रक्रियागत मर्यादाक कारण अछि; ताहि अभावसँ अपराध वा निर्दोषता सीधे नहि निकलैत। यदि कथित संयुक्त अपराध-परिचालन सत्य होइत, तखन स्वतंत्र गैर-विधिक चिह्न जाँचनीय होइत। अध्याय ८१क तकनीकी संरक्षण-अपूर्णता, ८२क प्राप्ति-पञ्जीक अपेक्षा, ८३क अपरिचित खाता, ८४क पूर्ण उच्च-अधिकार नोंद आ ८५क विधिक गोपनीयता—पाँचू प्रसंग देखबैत अछि जे एके नकारात्मक निष्कर्षक बल सब ठाम बराबर होएब असम्भव अछि।

भारतीय रस-चिन्तनमे ई पाँच अध्याय अभिमान, लज्जा, भय आ शान्तिक मिश्रित प्रवाह बनबैत अछि। उपकरणक 'ऊपरक पथ' नायकक स्वयं निर्मित प्रतिष्ठाक चित्र अछि; लाभकारी स्वामीक रिक्त कोष्ठक ओकर अनुमानक असफलता; मित्रक प्रश्न ओकर लज्जा; मकाऊक लिफ्ट आरोहणक अभिलाषा; विधिक बैठकक बाह्य सूची भयक संयम। ई पाँच वस्तु-प्रतीक उपन्यासक गद्यकेँ केवल वाद-विवाद बनबाक सँ बचबैत छथि। रसक मुख्य उपलब्धि दण्डक भयकेँ दोसराक सम्मानक उत्तरदायित्वमे बदलनाइ अछि।

ध्वनि आ वक्रोक्ति एहि अनुक्रममे रिक्ति आ विशेषणक विपरीत अर्थसँ उपजैत अछि। 'ऊपर', 'असली', 'मित्र-वृत्त', 'विशेष', 'साफ'—पाँच शब्द अपन प्रसंगमे वैध अर्थ राखि सकैत अछि, मुदा शशांक अथवा समाचारक नवा संदर्भमे अधिकारक अतिशय संकेत बनैत अछि। लेखक सतत ई प्रश्न करैत छथि जे शब्दक प्रचारित अर्थ ओकरा लिखनिहारक उद्देश्य, पढ़निहारक अनुमान आ दस्तावेजक स्वतंत्र तथ्यसभक बीच कोना बनैत अछि। पात्रक पेशागत विडम्बना तीव्र अछि: अनुवादक कथाक भीतर अर्थक सीमा बतायब

सीखैत अछि, पहिने ओहि सीमा मिटेने कारण समूचा समाजक सन्देह सहैत अछि।

नव्य न्यायीय स्तरपर ८१मे पूर्वज्ञानक दावाक बाधक समय-मुद्रा, ८२मे अपेक्षित संलग्नक-क्रमांकक अभाव, ८३मे अद्वितीय पहिचानक अभाव, ८४मे उच्च-अधिकार परिवर्तनक अनिवार्य नोंदक अभाव, आ ८५मे विधिक गोपनीयता सँ अलग अपेक्षित परिचालन-चिह्नक अभाव—ई सभ अलग-अलग परीक्षा छथि। प्रत्यक्ष, शब्द आ अनुमानक सम्बन्ध प्रत्येक दृश्य अनुसार बदलैत अछि। केवल दस्तावेज देखबाक प्रत्यक्षता ओकर पूर्ण व्याख्यात्मक अर्थ नहि दैत; समर्थक स्रोत, समय, अपेक्षा आ शेष सम्भावनासभ जाँचब आवश्यक अछि। 'नहि भेटल' आ 'नहि अछि'क अन्तर सामाजिक न्याय लेल सेहो अनिवार्य अछि।

पाश्चात्य कथानक-विवेचनक दृष्टिसँ ई खण्ड पुनरावलोकनात्मक संरचनामे चलैत अछि। अतीतक मंच, सन्देश आ मकाऊ यात्रा वर्तमान जाँचमे नया अर्थ पबैत अछि; रातिक कापी भविष्यक जाँच-पद्धतिक पूर्वाभ्यास करैत अछि। मृणाल, आदित्य, राघव आ निचला आयुक्तालयक अधिकारी अलग अधिकार-सीमासँ बोलैत छथि; तथापि संवाद सभ बेर एके सुव्यवस्थित सिद्धान्तक सीढ़ी बनबाक कारण व्यक्तिगत वाचिक असमानता कम उभरैत अछि। ई उपन्यासक युक्तिसंगत महत्त्व आ कलात्मक पुनरावृत्तिक दुहरा परिणाम अछि। आलोचनामे एहि उपलब्धि आ सीमाक संगहि पहचान आवश्यक अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति अन्तर्गत विदेशी यात्रा, भारतीय कर-जाँच, भुगतान-द्वारक प्रविष्टि, निजी मित्रता आ पेशागत कानूनी मर्यादा परस्पर समकालीन होइतो एकहि कारण-श्रृंखला नहि। जे कथित षडयन्त्रक नाम सार्वजनिक समाचारमे छपि गेल, ओ प्रत्येक दस्तावेजक व्याप्तिक दाबी नहि बनि सकैत। इतिहासकार आ समीक्षक दुनू लेल स्रोतक स्वतंत्रता एतय नैतिक नियम अछि। केवल पात्रक पछतावा वा लोभक स्वीकृतिसँ संस्था-विशेषक अपराधक रिक्त स्थान नहि भरल जा सकैत।

समग्र निष्कर्षमे शशांकक चरित्र न पूर्ण निर्दोष ज्ञानयोगी बनैत अछि, न सर्वव्यापी अपराधक प्रतीक। ओ सामाजिक प्रभाव लेल अपन भाषिक प्रतिभाक दुरुपयोग स्वीकारैत अछि; मुदा वास्तविक करार, खाता, पास, स्रोत आ विधिक सलाहक अलग प्रश्न पर अनुमानक सीमा अपन पक्षमे आ

विपक्षमे बराबर राखय चाहैत अछि। पाँच अध्यायक पाठकीय प्रभाव एहि समान कसौटी पर निर्भर अछि। न्यायिक पुनरावृत्ति कथाक गति रोकेबाक सम्भावना राखैत अछि, मुदा साहित्यिक उपलब्धि ई जे रिक्त कोष्ठक, बचल सन्देश आ अनलिखल अधिकार सेहो चरित्र-निर्माणक सक्रिय वस्तु बनि जाइत अछि।

## अध्याय ८६ — समझौताक दरार ८ : संस्थागत प्रतिरोधक घटैत धार आ नर्म अनुवादक नैतिक उत्तरदायित्व

छियासीम अध्याय व्यक्तिक कथनसँ संस्थागत प्रक्रियाक दिस आलोचनात्मक दृष्टि फेरबैत अछि। आदित्य मिश्र एहि बेर निचला आयुक्तालयक मूल आपत्ति, बीचक संशोधन, अन्तिम कर-गुप्तचर सारांश आ कार्य-वितरणक समय-क्रम एके मेजपर राखैत अछि। अधिकारी स्वयं कहैत अछि जे ओकर प्रतिरोध अभिलेखमे अछि आ अन्तिम सारांशमे ओकर किछु भाग नर्म पड़ल; मुदा अमुक अधिकारी ओकरा दबौलक, एहन निष्कर्षक प्रमाण ओकर लग नहि। एहि आत्मसीमांकनसँ उपन्यास संस्थागत अधिकारीकेँ नायकत्वक सरल मूर्ति बनबाकसँ रोकैत अछि। अनुभवक वास्तविकता आ दोषी पहिचानबाक विधि फराक् रहबाक नियम एतय केवल शशांकक बचावक साधन नहि, प्रतिरोधक सम्मानक शर्त अछि।

मूल टिप्पणीक बाद पाँच दिनमे संचिका तीन स्तर पार करैत अछि। तेसर स्तरक अंकीय इतिहासमे केवल ‘समीक्षित’ आ कारण-पाठ रिक्त अछि। तकनीकी सहायक बतबैत अछि जे एहि श्रेणीमे कारण लिखब अपेक्षित छल, मुदा पुरान प्रणाली ओकरा अनिवार्य नहि बनबैत छल। एहि सूक्ष्म अन्तरसँ योग्य-अनुपलब्धि अपेक्षित आ बाध्यकारी अभिलेखक बीचक दूरी पबैत अछि। कारण खाली रहब प्रश्न अवश्य अछि, किन्तु ओकरा जानि-बुझि प्रमाण मेटेबाक प्रत्यक्ष चिह्न मानब असंगत अछि। लेखक दस्तावेजीय मौनकेँ निष्पक्ष रूपेँ नापब चाहैत छथि, ने अपनी कथा सम्पूर्ण करबाक अनुमति देब।

एक विशिष्ट विश्लेषण-पत्र दोसर शाखाक अधिकारीक हाथमे गेल, मुदा आपत्ति करनिहार अधिकारी सात दिन बादो दू पूरक टिप्पणी लिखने छल; ओकर सामान्य कार्यभार सेहो अचानक समाप्त नहि भेल। एहि तथ्यसँ ‘आवाज उठिते पूरा किनार कएल गेल’ दावी कमजोर होइत अछि। पर विशिष्ट काजक पुनःआवंटनक औचित्य जाँचब आवश्यक रहैत अछि; नियुक्तिक कारण खाली रहने एक प्रश्न बचैत अछि। एके घटनाक सकारात्मक चिह्न—अधिकारीक काम जारी रहब—आ नकारात्मक चिह्न—विशिष्ट पुनःआवंटनक स्पष्टीकरणक अभाव—दुनूकेँ उपन्यास साथ पढ़बैत अछि। नव्य न्यायीय प्रमाण-विवेक एतय एक पक्षक जीतक बदला दावाक परिमाण तय करैत अछि।

बैठक-सूचीमे निचला आयुक्तालय, कर-गुप्तचर शाखा आ विधिक प्रकोष्ठक प्रतिनिधि उपस्थित छथि; निष्कर्ष 'अतिरिक्त सत्यापन जारी' अछि। बादक पत्राचार लाभकारी स्वामित्व, भुगतान-पथ आ अंकीय परिसम्पत्तिक स्रोत पूछैत अछि। अतः 'सभ जाँच रोकल गेल'क सार्वजनिक कथन सुरक्षित कागजसँ मेल नहि खाइत। मुदा प्रश्नक भाषा नर्म पड़ल कि नहि, प्राथमिकता घटल कि नहि, निर्णय प्रभावित भेल कि नहि—ई सभ अभिलेखक अलग स्तर अछि। कथाक केन्द्रीय ध्वनि 'प्रश्न बचल, मुदा धार घटल'मे अछि। शब्दक अस्तित्व मात्र पर्याप्त नहि; ओकर संस्थागत बल सेहो महत्व राखैत अछि।

शशांक पुरान व्यापारिक पर्चीक नर्म जोखिम-भाषा अपन शैलीसँ मेल खाइत देखैत अछि। केवल शैलीक साम्यसँ लेखकत्व सिद्ध नहि, ई आदित्य स्मरण करबैत अछि। मुदा नायक स्वीकारैत अछि जे ओ किछु ग्राहक लेल कर-जोखिम नर्म कहैत छल—कखनो आश्वस्ति, कखनो अपन उपयोगिता लेल। निचला अधिकारीक सवाल 'तखन विश्वासघात केवल संस्था सँ भेल?' शशांकक आत्मालोचनक दिशामे निर्णायक मोड़ अछि। जे व्यक्ति संस्थागत मूल आपत्तिक नर्मीक विरोध करैत अछि, स्वयं व्यापारिक पक्षमे वही प्रक्रिया दोहरौने छल। ई समरूपता नैतिक आलोचनाक शक्ति बनैत अछि; संस्थाक कथित अपराध ताहि सँ स्वतः सिद्ध नहि।

एक कथित 'गुप्त निर्देश'क सार्वजनिक आरोप लेल आधिकारिक पत्र-पञ्जी, ई-पत्र, बैठक-क्रम आ कार्य-वितरण जाँचल गेल, मुदा औपचारिक निर्देशक अपेक्षित पहिचान नहि भेटल। यदि आरोप विधिवत् जारी औपचारिक निर्देश केर अछि तँ सामान्यतः एक वा अनेक चिह्न रहबाक अपेक्षा उचित अछि। एहि विशिष्ट दावाक भार घटैत अछि; मौखिक अथवा अनधिकृत सम्पर्कक सम्भावना मात्र एहि अनुपलब्धिसँ नकारल नहि जाइत। एहन भेद जाँच-विवेकक सूक्ष्म रूप अछि। साथे उपन्यास अभिलेखक सांस्थानिक असमानता सेहो देखबैत अछि—जे प्रक्रियाक रिक्त स्थान निर्दोष लोक लेल शंका बनि सकैत अछि, ओहि रिक्तता विश्लेषण लेल कमजोर साक्ष्य रहैत अछि।

समाचारक 'भीतरसँ निर्देश, बाहिरसँ पैसा, जाँच दबाओल' शीर्षक तीन असमान प्रमाण-वजनक दावीकेँ एक सांगीतिक लयमे बाँधैत अछि। निचला अधिकारी कहैत अछि जे लोक लय स्मरण रखैत अछि, स्तर नहि। एहि वाक्यमे मीडिया-समालोचनाक तीक्ष्णता अछि। भाषा-निर्माणक उद्योग—

अनुवादकक आश्वासन आ पत्रकारक शीर्षक—दुनू जटिल अभिलेखकेँ सरल, स्मरणीय कथामे बदलैत अछि। ध्वनि-शास्त्रक परिप्रेक्ष्यमे शीर्षकक लय अर्थक अस्पष्ट विस्तार करैत अछि; औचित्यक दृष्टिसँ सभ दावाक स्वतंत्र स्रोत-सीमा नष्ट भऽ जाइत अछि।

पात्र-विकासक प्रभाव ई जे शशांक अपना अपराध-बोधकेँ संस्थाक अपराधक स्वतः प्रमाण नहि बनबैत। ओकर पुरान नर्म अनुवाद वास्तविक जिम्मेदारी अछि; अधिकारीक मूल टिप्पणी नर्म भेल, ई सवाल दोसर अभिलेखसँ जाँचनीय। अधिकारीक अनुरोध ‘हमरा न्याय चाही, न कथा’ एहि खण्डक महत्त्वपूर्ण नैतिक अस्वीकार अछि। ओ न ‘ईमानदार अकेला नायक’ बनबय चाहैत छथि न अज्ञात शत्रुक विरुद्ध मिथ्या अभियोगक साधन। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे व्यक्तिगत अपमान, विभागीय प्रक्रिया, व्यापारिक सारांश आ समाचारिक कथानक अलग जाँच-रेखा बनैत छथि।

कलात्मक सीमा सेहो स्पष्ट अछि। अधिकारी, तकनीकी सहायक आ आदित्यक संवाद अनेक ठाम अनुपलब्धि-सिद्धान्तक पाठ जेकाँ व्यवस्थित भऽ जाइत अछि; संस्थागत संघर्षक भावनात्मक थकान, कार्यालयी शक्ति-असमानता आ अपर्याप्त मनुष्य-सम्बन्ध एतेक विस्तार नहि पबैत। तथापि ‘प्रश्नक धार’क रूपक जीवित अछि; कानूनी तथ्यक नर्म सारांश मानव-व्यवहारक नर्म कपटक संग टकराइत अछि। अध्यायक उपलब्धि अन्तिम निष्कर्ष घोषित करब नहि, विश्वासघातक अनुभूति कैं जिम्मेदार संस्थागत प्रश्न बनबायब अछि। अगिला अध्यायमे ओहि नर्मीक सार्वजनिक शब्द की प्रकार मुहरबन्द साक्ष्यक नाम लऽ अतिशयोक्तिपूर्ण समाचार बनैत अछि, तकर परीक्षा होइत अछि।

## अध्याय ८७ — समझौताक दरार १ : मुहरबन्द सामग्रीक नाम पर सार्वजनिक निश्चितताक निर्माण

सतासीम अध्यायक काव्यात्मक ऊर्जा अपमानक स्मृतिसँ उपजैत अछि। शशांककेँ मंचक चित्र, मकाऊक यात्रा आ सार्वजनिक लेखक मोट अक्षर फेर याद अबैत अछि; गामक लोक ओकर पिताक लग धरि प्रश्न लेने छल। एहि स्मृतिक देहगत ताप केवल व्यक्तिगत पीड़ा नहि, प्रमाणक न्यायोचित उपयोगक कठिन शर्त बनैत अछि। अपमानित मन तुरन्त ‘सभ मिथ्या’ अथवा ‘सभ आन्तरिक षड्यन्त्र’ कहय चाहैत अछि; लेखक तेसर मार्ग चुनैत छथि—समाचारक प्रत्येक वाक्यक स्रोत आ व्याप्ति अलग करब। एहि तरहे कथाक भावात्मक केन्द्र आ ज्ञानमीमांसात्मक केन्द्र एके दृष्यमे परस्पर विरोधी होइतो एक-दोसराकेँ पोषित करैत अछि।

आदित्य मेजपर मुहरबन्द सामग्रीक न्यायालय-अनुमत अनुक्रम-सूची, सार्वजनिक भऽ चुकल दस्तावेज आ समाचारिक कथन तीन समूहमे रखैत अछि। अनुक्रम-सूचीक क्रमांक चौदह ‘भुगतान-पथ सम्बन्धी प्रश्न’क टिप्पणी अछि; समाचार ओकरा शशांककेँ ‘मुख्य संयोजक’ ठहरबैत निष्कर्षक रूपमे देखबैत अछि। स्रोत-सरणीक ई अन्तर महत्त्वपूर्ण अछि। ‘प्रश्न’ सँ ‘निष्कर्ष’ धरि अर्थक छलाँग दस्तावेजक पहुँच लेल प्रमाण नहि। लेखक मुहरबन्द मूल पाठ खोलि रहस्यक अनावश्यक रोमांच नहि पैदा करैत; उलटे संरक्षणक नियम स्वीकार कऽ सार्वजनिक दावाक अतिरिक्त निश्चितता जाँचैत छथि।

पहिल समाचारमे मकाऊ यात्रा आ विक्रेता-संबन्ध पहिनेसँ सार्वजनिक सामग्रीसँ प्रमाणित छल; तेसर ‘मुहरबन्द टिप्पणीमे वित्तीय नियन्त्रण’ कथन अस्पष्ट छल। कोनो खास खाता, तिथि, अभिलेखीय क्रमांक वा गैर-सार्वजनिक वाक्यक उल्लेख नहि। यदि समाचार सचमुच अनधिकृत स्रोतसँ आयल होइत, तकर अपेक्षित विशिष्टता जाँचनीय भऽ सकैत छल; मुदा स्रोतक गोपनीयता वा सम्पादकीय विलोपनक कारण विशिष्टता नहि देखायल हो सकैत अछि। एतय अभाव लीकक असम्भवता नहि सिद्ध करैत, केवल ‘मुहरबन्द साक्ष्यसँ आरोप सिद्ध’क सार्वजनिक निश्चय कमजोर करैत अछि। कथाक अनुशासन एहि सीमित निष्कर्षमे अछि।

दोसर समाचार ‘प्रशासकीय पहुँच’क दावा करैत अछि, जखन शशांकक पुरान डींग ‘विशेष पहुँच’ आ ‘भीतरक पटल’ सँ मिलैत अछि। नायकक सार्वजनिक

अतिशयोक्ति सँ पत्रकार तकनीकी अर्थ बढ़ा सकैत छल; एहि समानता लेल मुहरबन्द स्रोत आवश्यक कारण नहि। लेखक भाषा-परिवर्तनक मानचित्र प्रस्तुत करैत छथि: अनुभवजन्य स्थानपर प्रवेशक कथन सत्ता-सूचक प्रशासकीय अधिकारक दावामे बदलैत अछि। खबर लिखनिहारक अतिरिक्त अर्थक जिम्मेदारी अलग, शशांकक अपन डींगक जिम्मेदारी अलग। ओहि विभाजनक बिना या त नायक पूर्ण उत्पीड़ित बनत, या सम्पूर्ण समाचार सही ठहरत—दुनू साहित्यिक रूपेँ सतही निर्णय होयत।

निचला आयुक्तालयक अधिकारीक कथित 'सीधा गुप्त सम्पर्क'क समाचार ओकरा स्वयं आहत करैत अछि। ओ जाँच-पूर्व निजी संवाद नकरबाक कथन दैत अछि, किन्तु औपचारिक पूछताछक बादक संचार मानैत अछि। सार्वजनिक समाचार 'अभिलेखित' शब्द उपयोग करैत अछि; ताहि कारण कार्यालयी नोंद, नियुक्ति, पत्राचार आ सम्बद्ध समय-संगति जेकाँ अपेक्षित चिह्नक खोज अधिक प्रासंगिक अछि। उपलब्ध कार्यालयी माध्यममे एहन पूर्व-सम्पर्क नहि भेटलाक नकारात्मक बल बाह्य निजी माध्यमक अनिश्चितता सँ सीमित अछि। एके आधारपर विशेष समाचारिक वाक्यक समर्थन कमजोर, सर्वथा सम्पर्क-असम्भवता नहि।

न्यायालयक पूर्व आदेश मुहरबन्द विषयवस्तुक सार्वजनिक प्रकटीकरण रोकैत छल। समाचार आदेशक बाद आयल, अतः शशांक तत्क्षण न्यायालय-अवमाननाक निष्कर्ष चाहैत अछि। आदित्य ओकरा रोकैत कहैत अछि जे आदेश, समाचार आ स्रोत-परिचय तीन अलग तथ्य छथि। एहि दृश्यमे नायकक प्रखर प्रत्युत्तर—जकर पिता अपमान सहैत छथि हुनका लेल ई महज शास्त्रीय अभ्यास नहि—आदित्यक संयमसँ टकराइत अछि। रचना एक कठिन मानवीय सत्य समेटैत अछि: पीड़ा पर्याप्त वास्तविक होइत अछि, मुदा दोषी व्यक्तिक नाम देबाक स्वतन्त्र प्रमाण चाहैत अछि। एहि विरोधमे करुणा आ न्यायिक औचित्य एक-दोसराक स्थान नहि लैत।

समाचारसँ पहिने प्रश्नावली पुरान कार्यालय-पते पठाओल गेल छल; पठाओलक अभिलेख सुरक्षित अछि, प्राप्तिक पुष्टिकरण नहि। 'उत्तर नहि देल गेल' कहब सम्भव छल, मुदा 'प्रश्न पढ़ि जानि-बुझि मौन रहल' अलग दाबी। शशांक अपन जीवनक पुरान वृत्ति याद करैत अछि—ग्राहकक मौनक अर्थ सहमति, वकीलक आपत्तिक अभावक अर्थ स्वीकृति, मित्रक विरोध नहि करबाक अर्थ समर्थन। एतय नायक द्वारा भोगल अन्याय ओकर निज पूर्व

नैतिक दोषक दर्पण बनैत अछि। मौनक अर्थक अवैध स्वामित्व रचनाक अनुवाद-विषयकेँ सामाजिक व्यवहारमे विस्तारित करैत अछि।

निचला अधिकारीक शिकायत जे समाचार ओकरा 'ईमानदार अकेला अधिकारी' बना बाकी सभकेँ बिकाओल बतबैत अछि, कथाक मीडिया-समालोचनाकेँ सममित बनबैत अछि। पत्रकारिताक असावधानी केवळ आरोपीकेँ राक्षस नहि, प्रतिरोधक व्यक्तिकेँ असमर्थित नायक सेहो बना सकैत अछि। दुनू ठाम व्यक्तिक वास्तविक जटिलता सार्वजनिक रूपकक नीचाँ दबैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति व्यक्तिगत संवाद, न्यायालयीय संरक्षित सूची, सरकारी पत्र आ पत्रकारिताक उत्पादन-काल अलग राखय सिखबैत अछि। एके सामग्रीक सार्वजनिक पुनःव्याख्या स्वयं इतिहासक शक्ति बनैत अछि, पर ओकर स्रोत-सत्यापन अलग रहैत अछि।

कथानकक सीमा ई अछि जे विविध मीडिया-संस्थानक भीतर संपादन, स्रोत-सुरक्षा आ दबावक स्वतंत्र सामाजिक जीवन अल्प देखाओल गेल अछि। अनेक समाचार केवल अभिलेखक असंगतिक परीक्षण लेल मंच बनैत अछि; पत्रकारीय नैतिकता जीवित पात्रसभक माध्यमसँ कम खुलैत अछि। ताहि सत्ते अपमानक पछिला स्मृति दृश्यक तनावक मध्यकेँ मानवीय बनबैत अछि। शशांकक 'क्रोधकेँ स्रोत नहि मानब'क अन्तरिम निर्णय नव्य न्यायीय प्रमाण-सीमा मात्र नहि, आत्म-गौरवक कठिन परिमार्जन अछि। समाचार जतेक कथन करैत अछि ओतबे प्रमाण माँगत; अपना लज्जा सँ पराजित व्यक्ति सेहो तेसराक प्रतिष्ठापर अप्रमाणित दोष नहि लादि सकैत अछि।

## अध्याय ८८ — दोसरा गामक जाँचकर्ता : गंगेशीय कसौटीक नायक-विरुद्ध प्रयोग

अठासीम अध्याय शीर्षकसँ कृतिक ज्ञानविषयक भूगोलमे एक विशिष्ट परिवर्तन करैत अछि। निचला आयुक्तालयक जे अधिकारी पूर्व अध्यायसभमे मुख्यतः मूल आरक्षण बचाबय लेल उपस्थित छल, ओ आज पाँच पात आ खाली कापी संग शशांककेँ प्रश्न करैत अछि। दुनूक जन्म मिथिलामे भेल, मुदा गाम अलग अछि; गंगेशक नाम दूनू सुनने छथि। अधिकारी स्पष्ट कहैत अछि जे नाम सुनब पद्धति नहि। ई वाक्य उपन्यासक विद्यागत परम्पराकेँ वंशगत गौरवसँ नैतिक व्यवहारक क्षेत्रमे अनैत अछि। दर्शनक स्वामित्व ककरो अधिकार नहि; उचित अपेक्षा आ विश्वसनीय खोजक नियम अपन दावाक विरुद्ध सेहो लागू करबाक पड़ैत अछि।

पहिल पात राघव भसीनक शर्तयुक्त कानूनी सावधानी आ शशांकक ‘विधिक पक्ष साफ’ सन्देशक भेद प्रस्तुत करैत अछि। अधिकारी मूल परिवर्तन स्वीकारैत अछि, मुदा ओहि बदलावक मानसिक उद्देश्यक अनुमानकेँ अलग रखैत अछि। ‘व्यावसायिक जल्दी’ एक सम्भावित कारण अछि; ओहि कारणक स्वतन्त्र प्रमाण नहि। ई प्रतिपरीक्षा शशांकक नैतिक दोष बढ़ेने नहि, दू स्तर पृथक करैत अछि—पाठक शर्त हटायल गेल, ई प्रत्यक्ष; जानि-बुझि अपराधक लाभ लेल हटायल गेल, ई अलग अनुसन्धान। दोष आरो कठोर जखन भाषिक अनधिकृत अर्थक वास्तविक पाठ उपलब्ध होइत अछि; व्यापक आपराधिक निष्कर्ष ताहि सँ स्वतः नहि निकलैत।

दोसर पात मकाऊक अस्थायी आगन्तुक-प्रवेश आ शशांकक ‘भीतर धरि पहुँच अछि’ डींगक संगति जाँचैत अछि। व्यापक प्रशासनिक अधिकारक अभिलेख नहि भेटलासँ वास्तविक नियन्त्रणक दाबी कमजोर, मुदा ओहि व्यापक दावाक विरुद्ध नायकक अतिशयोक्तिपूर्ण सन्देश सुरक्षित अछि। अधिकारी एहि ठाम अनुपलब्धिक द्विदिश काम देखबैत अछि: जे प्रमाण कथित नियन्त्रणकेँ कमजोर करैत अछि, वही नायकक सार्वजनिक आत्मप्रचारक असत्य व्यापकता सेहो उद्घाटित करैत अछि। नकारात्मक प्रमाण व्यक्ति-विशेषक बचावक स्वतः प्रतिरक्षा नहि; दावाक विषय बदलला पर ओकर अर्थ बदलैत अछि।

तेसर पात मृणालक वैध प्रतिपूर्ति, सार्वजनिक छवि आ 'हमर लोक सभ ठाम अछि' सन्देश अछि। मृणालक आर्थिक सहभागिताक स्वतन्त्र चिह्न नहि भेटल, मुदा मित्रक नाम सामाजिक मुहर बनेबाक शशांकक क्रिया स्पष्ट अछि। एहि तुलनामे मित्रताक स्वतंत्र मानवीय गरिमा प्रत्यक्ष भऽ उठैत अछि। शशांककेँ न 'मृणाल अपराधी' कहबाक, न अपन 'मित्र सभ जानैत छल'क बचाव करबाक अधिकार अछि। व्यक्तिक उपस्थिति ककरो कथाक भरपाई नहि करैत। अधिकारीक प्रश्न नायकक सामाजिक कपटकेँ दण्डविधानक श्रेणीमे नहि, विशिष्ट ऐतिहासिक व्यवहारक रूपमे ठहरबैत अछि।

चौठ पात कर-गुप्तचर शाखाक मूल आपत्ति, संस्करण-संक्षेपण आ विशिष्ट काजक पुनःआवंटन देखबैत अछि। अधिकारी अपन संस्था पर 'समझौता सिद्ध' कहल सेहो नहि चाहैत, 'समझौता असम्भव' कहल सेहो नहि। अपेक्षित औपचारिक निर्देश, बैठक-नोंद, असामान्य सम्पर्क आ अभिलेख-पूर्णताक परीक्षण बिनु निर्णय नहि। एहि तटस्थताक कारण ओ अपने प्रतिरोधक प्रतीकत्व अस्वीकार करैत अछि। नव्य न्यायक पाठ एतय सर्वपक्षीय बनैत अछि; जाँचकर्ताकेँ सेहो मनपसिन्न रिक्ति पूर्ण करबाक अधिकार नहि।

पाँचम पात अनुवादकक शब्द-परिवर्तनक सूची अछि—'प्रतिबन्धित' सँ 'सीमित', 'जोखिम' सँ 'समीक्षा', 'सत्यापन शेष' सँ 'प्रक्रियाधीन' इत्यादि। लेखक एहि प्रत्येक परिवर्तनकेँ समान दोष नहि कहैत। किछु सन्दर्भगत अनुवाद, किछु व्यापारिक नर्मीक प्रभाव आ किछु जानि-बुझि अर्थविस्तार भऽ सकैत अछि। अधिकारी शब्दगत क्रिया पहिने देखबैत अछि, उद्देश्य फेर पूछैत अछि। ई भेद भारतीय औचित्य, वक्रोक्ति आ भाषा-प्रयोगक सामाजिक अर्थ संग जुड़ैत अछि। आधा-सत्य, शर्त हटेनाइ, दोसराक मौनक अर्थ बेनाइ—नायकक वास्तविक 'अपराध-पद्धति' एहन व्यापक नैतिक अर्थमे विवेचित अछि, न कि सभक आपराधिक सिद्धि मानि।

अधिकारी अन्तिम कठोर प्रश्न करैत अछि: शशांक अपन पैघ दावाक समय समकालीन सुधार 'हम केवल भाषिक अतिथि छी' कखनो देलक कि नहि? उपलब्ध सामग्रीमे स्पष्ट सुधार नहि भेटैत अछि। एहन अभावसँ जानि-बुझि सभकेँ ठकबाक अपराध सिद्ध नहि, मुदा पछिला 'हम सदिखन अपन सीमा स्पष्ट रखैत रही' सन आत्मसफाइ कमजोर पड़ैत अछि। ई बिन्दु अध्यायक

आलोचनात्मक उत्कर्ष अछि, किएक तँ अनुपलब्धिक तर्क पहिल बेर शशांकक वर्तमान व्याख्याक विश्वसनीयता पर ओकर अपन नियमसँ प्रश्न उठबैत अछि। जे विधि नायक अपना बचावमे माँगैत छल, ओहि विधिक दार्शनिक ईमानदारी एखन ओकरा असुविधा दैत अछि।

विन्यासक कलात्मक बल खाली कापी आ पाँच पातक सादगीमे अछि। 'उपलब्धि की? अपेक्षित उपलब्धि की? अनुपलब्धि योग्य की? दाबी कतेक दूर धरि?' सन चारि प्रश्न स्वतंत्र सूत्र बनैत अछि, संगहि पाँचम—मूल अभिलेखसँ शब्दक सीमा मिलाउ। फेर मिथिलाक गंगेशीय अध्ययन पौराणिक गौरव नहि, संशयक विनम्र अनुशासन बनि जाइत अछि। चाह-दोकानपर एकटा अकेल शशांकक चित्र अधिल्ला न्यायालयी विस्तारक बाद आत्मालोचनक अधिक प्राकृतिक विश्राम दैत अछि। मृणाल एहि दिन अनुपस्थित अछि, आ नैतिक निर्णय नायककेँ स्वयमेव सँभालबाक पड़ैत अछि।

एहि अध्यायक सीमा ई जे अधिकारीक वैचारिक प्रश्न अत्यन्त सफल शिक्षण-योजना जेकाँ क्रमबद्ध अछि; समाज-स्थान, जाति, परिवार, कार्यालयक दबाव आ अधिकारीक निजी संघर्ष अधिक विकसित होइत तँ मिथिलाक दू गामक अन्तर गहन कलात्मक अर्थ पबैत। मुदा उपलब्ध रूपमे अधिकारी व्यक्ति पर एक शब्दक निर्णय देबासँ इनकार करैत छथि—क्रियाकेँ नाम देब, मनुष्यकेँ नहि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक अनुप्रयोगक ई नैतिक परिणति अछि। समीक्षा-क्रममे ई अध्याय महत्वपूर्ण अछि, किएक तँ शशांकक पछिला पाण्डुलिपि-भरि चलैत आत्मपक्षीय ज्ञानचिन्तनकेँ एक बाह्य, समान कसौटीक आलोचक भेटैत अछि।

## अध्याय ८९ — समझौताक दरार ११ : निर्णायक बनबाक महत्त्वाकांक्षा आ समकालीन अभिलेखक प्रतिरोध

नवासीम अध्यायमे शशांकक महत्त्वाकांक्षा कोनो बाह्य आरोपक रूपमे नहि, ओकर अपन पुरान लिखल शब्दक रूपमे उपस्थित अछि। सीमित समन केवल बयानक दू पंक्ति, सुरक्षित अंकीय सामग्रीक चारि सन्देश आ एक निर्धारित अवधिक विषय बनैत अछि। पाठक पहिल बेर स्वतः प्रश्न करैत अछि—जे व्यक्ति ‘हमरे बिना अन्तिम निर्णय नहि’ लिखैत छल, ओ पाछाँ ‘स्वतंत्र व्यावसायिक निर्णय हमरा हाथमे नहि’ कोना कहि सकैत अछि? रचनाक महत्त्व एहि विरोधकेँ सरल कपटक फैसला नहि बनाय, अभिलेखीय अधिकार आ सामाजिक डींगक सम्बन्ध जाँचबमे अछि।

औपचारिक करार, अनुमोदन-सूची, भुगतान अथवा मूल्य-निर्धारणक स्वतंत्र स्वीकृति आ बैठक-नोंदमे शशांक अंतिम निर्णयकर्ता रूपमे चिन्हित नहि। एहि सुरक्षित स्रोतक अनुपलब्धि वास्तविक संस्थागत निर्णय-अधिकारक दावाकेँ कमजोर करैत अछि। मुदा पुरान सन्देश उपलब्ध अछि, आ ग्राहकक ‘तखन अहाँ सँ बात केनाइ पर्याप्त’ उत्तर शशांकक आत्मप्रचारक प्रभाव दिखबैत अछि। नायक ग्राहककेँ समकालीन सीमा-सुधार नहि पठौने छल। एहि प्रसंगमे द्विधा स्पष्ट अछि: पदक औपचारिक अधिकार कम, प्रभावक अभिनय वास्तविक; अपराध-सिद्धि एहि दू तथ्यक स्वतः योगफल नहि।

दोसर विरोध ‘हम कखनो आन्तरिक कार्यवाहीक पूर्वज्ञान नहि रखने रही’ आ पुरान ‘रिपोर्ट ऊपर गेलाक बाद भाषा बदलत’ सन्देशक अछि। पछिला वाक्यक परिप्रेक्ष्यमे सार्वजनिक मसविदा संक्षिप्त होएबाक सामान्य अनुमान सम्भव अछि; विशिष्ट गोपनीय संशोधनक पहिने प्राप्त ज्ञानक प्रमाण एतयसँ नहि बनैत। नायक पछिला व्यापक नकार संशोधित करैत अछि—उपलब्ध सामग्रीमे विशिष्ट आन्तरिक संशोधनक पूर्वज्ञान स्थापित नहि। एहि सुधारमे सत्यक द्विपक्षीय मर्यादा अछि: व्यक्ति सामर्थ्य सँ बेसी जानैत छी नहि कहत, आ भयक कारण जतेक सामान्य अनुमान केने छल से सेहो नहि नकारत।

‘मुख्य लोक सभ हमर माध्यमे बात करैत अछि’ नामक आत्मविवरण भाषिक सेतु कैँ सर्वव्यापी नेटवर्क-केन्द्र बनबैत अछि। सुरक्षित पूर्ण अवधिक संचारमे किछु घनिष्ठ महीना आ किछु लगभग शून्य अवधि भेटैत अछि; अनेक

व्यापारिक संवाद शशांकक बिना सेहो चलैत छल। लेखक भाषिक केन्द्रीयताक वास्तविक टुकड़ा नकारैत नहि, 'सभ'क व्यापकता चुनौती दैत अछि। छोट सर्वनाम सामाजिक सत्ता-भ्रमक उपकरण बनि जाइत अछि। शब्दक व्याप्ति आ सम्पर्कक वास्तविक आवृत्ति बीच एहि द्वन्द्वसँ कृतिक शीर्षकक विडम्बना मजबूत होइत अछि।

जब्त प्रतिलिपिमे शशांकक अनेक लज्जाजनक डींग सुरक्षित रहब योजनाबद्ध सर्वव्यापी सन्देश-मेटावक सार्वजनिक दावाक प्रश्न उठबैत अछि। जँ सभ प्रभावक चिह्न एकरूपेँ नष्ट कएल गेल, तखन बचल भ्रामक आत्मप्रचार ताहि कथनसँ संगति नहि। मुदा सुरक्षित स्थानीय प्रतिलिपिक सीमा, अन्य अनुप्रयोग वा बाह्य माध्यमक अपूर्णता कारण 'किछु मेटाओल नहि' कहब सेहो अनुचित। ई सूक्ष्म दोराह कथा कँ वास्तविक डिजिटल साक्ष्यक परिधिमे राखैत अछि। उपकरणक सामग्री न पवित्र सत्य अछि, न पूर्ण मिथ्या; ओकर संरक्षण-पथ आ जाँचक उद्देश्य निर्णायक अछि।

महत्त्वाकांक्षाक प्रश्नपर शशांक काम, अधिक शुल्क, विदेश यात्रा, विशेष आमन्त्रण आ आवश्यक बनल रहबाक इच्छा स्वीकार करैत अछि। एहि स्वीकारमे उपन्यास पात्रक आत्मा सँ लोभक जड़ स्पष्ट करैत अछि। मुदा आदित्य कहल सुधार करैत अछि—भ्रामक प्रस्तुति कँ 'अपराध' कानूनी अर्थमे स्वतः न मानू। आर्थिक अपराधक विशिष्ट उद्देश्य, सम्बन्ध, लाभ वा परिचालन अधिकार स्वतंत्र साक्ष्य माँगत। ठीक एहि ठाम आन्तरिक आत्मग्लानिक विपरीत जोखिम उभरैत अछि: दोषबोधमे व्यक्ति अपन माथ पर अप्रमाणित अपराध सेहो लादि सकैत अछि। उचित प्रमाण-विवेक आत्मश्लाघा आ आत्मदण्ड दुनू सँ रक्षा करैत अछि।

औपचारिक बयानक अन्तमे शशांक सामान्य प्रशासनिक सम्पर्क, कुछ आन्तरिक भाषिक सामग्री, जोखिम-सारांश आ समन्वयक कार्य स्वीकारैत अछि। 'केवल अनुवाद'क बचाव अत्यधिक छोट, 'भीतरक मुख्य संचालक'क डींग अत्यधिक पैघ। द्विपक्षीय सुधारसँ नायकक बयान 'सही आकार' पबैत अछि—एहि उपमा मे कृतिक मुख्य सौन्दर्यशास्त्र समाहित अछि। अनुवाद तखने विश्वसनीय जखन कथनक आकार स्रोतक प्रमाणक बराबर रहय। नायकक चरित्रविकास एतय क्षमादानक नाटकीय दृश्य नहि, वाक्यक व्याप्ति कम-बेसी करबाक श्रमसँ प्रकट होइत अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे पुरान ग्राहकक प्रतिक्रिया, प्रशासनिक पद-सूची, विविध भाषिक सेवाक अभिलेख आ समयमुद्रित व्यक्तिगत सन्देश

एके घटना लेल अलग वस्तुसाक्ष्य छथि। वर्तमान बयान अपन पूर्व समयक कथनपर व्याख्यात्मक प्रकाश दैत अछि, किन्तु पुरान सन्देशक लेखकत्व वा तत्कालीन उद्देश्य स्वतः बदलि नहि सकैत। नायक अपन निहित स्वार्थ स्वीकारैत अछि आ परिणामक अस्पष्टता सेहो। एहि विभाजनक आलोचना संस्थागत दोषारोपक सामाजिक इतिहास आ आत्मकथात्मक संशोधनक विश्वसनीयता पर एक संग विचार करैत अछि।

कलात्मक सीमा पहिनुका अनेक अध्यायक समान अछि: प्रश्नोत्तर अक्सर स्रोत-समीक्षाक सिद्धान्त उद्घाटित करबाक यान्त्रिक क्रम बनैत अछि; यातना, आर्थिक विवशता आ भाषिक पेशाक श्रमकी परिस्थिति कम खुलैत अछि। मुदा मृणालक अनुपस्थितिक बीच ओसाराक बल्ब आ चाह-दोकानपर अकेल लेखन शशांकक अनुभवमे शान्ति आनैत अछि। अन्तिम प्रश्न—'भाषा छोड़ि शक्ति कतय छल?'—अनुवादकक व्यावसायिक आत्ममोहक तीक्ष्ण परीक्षण अछि। अध्याय आत्म-स्वीकारक सत्य आ अपराध-प्रमाणक अनिश्चितता एके साँस मे रखने कारण सफल अछि।

## अध्याय ९० — समझौताक दरार १२ : एके भाषिक सारक बहुगुणित प्रतिध्वनि आ स्वामित्वक भ्रम

नब्बेम अध्याय कृतिक एक महत्त्वपूर्ण पाठ-समीक्षात्मक विचार मूर्त करैत अछि: अनेक कागज बराबर अनेक स्वतंत्र स्रोत नहि। सेवा-करारमे आयोजन-विक्रेता, भुगतानकर्ता आ अन्य पक्ष भिन्न छथि; लाभकारी स्वामीक कोष्ठक 'सत्यापन शेष' अछि। विक्रेता-पंजीकरणमे एक व्यक्ति 'मुख्य व्यावसायिक सम्पर्क' रूपमे चिन्हित, शशांकक द्विभाषिक सारमे 'मुख्य निर्णयकारी पक्ष', जोखिम-टिप्पणीमे ओही पद उद्धृत, आ पछिला संक्षेपमे 'मुख्य नियंत्रक' बनि जाइत अछि। एहि क्रमिक शब्द-भारवृद्धिक कथानक अनुवादकक पेशा आ संस्थागत ज्ञान-निर्माणक खतरनाक सम्बन्ध उघारैत अछि।

शशांक 'मुख्य व्यावसायिक सम्पर्क'क पद पढ़ि बैठकक व्यावहारिक स्मृति जोड़ि 'मुख्य निर्णयकारी पक्ष' लिखने छल। व्यक्ति बहुधा प्रश्नक उत्तर दैत छल, दोसर लोक ओकरा दिस देखैत छल, आ बैठकक समय ओकर बात निर्णायक लगैत छल। ई अनुभव कथासंसारक सच्चा अवलोकन हो सकैत अछि; मुदा अवलोकनक अर्थ कानूनी स्वामित्व अथवा वित्तीय नियन्त्रण नहि। भाषाक गर्व एतय सटीकता कैं पराजित करैत अछि: प्रशिक्षित अनुवादक प्रसंगक संकेतकैं अधिक निश्चित अर्थ देलाक बाद ओकरा स्रोत-पाठसँ स्वतंत्र निर्णय-प्रमाण मानि बैसैत अछि। एहि सीमाभंगक नैतिक जिम्मेदारी ओकरा अपनहि स्वीकार करबाक पड़ैत अछि।

जोखिम-टिप्पणीक पंक्ति शशांकक सारकैं उद्धृत करैत अछि, मुदा स्वामित्व जाँच आवश्यक कहैत अछि। पछिला संक्षिप्त सार ओकरा 'पहिचानल मुख्य नियंत्रक' बनबैत अछि। एक स्वर अनुकृति द्वारा अनेक स्रोतक रूप धारण करबाक एहि दृश्यमे वक्रोक्ति, ध्वनि आ अन्तर्पाठीयताक ठोस उदाहरण अछि। कागजक संख्या बढ़ैत अछि, पर मूल आधार ओकरा संग बढ़ैत नहि। नव्य न्यायीय शब्दप्रमाणक अपेक्षा स्वतंत्र विश्वसनीय स्रोत आ तर्कसंगत सम्बन्ध अछि; एके त्रुटिपूर्ण पूर्वपाठक पुनरावृत्ति प्रमाणक बहुलता नहि। एतय उपन्यास आलोचना-साहित्यक उद्धरण-श्रृंखला लेल सेहो दर्पण बनि सकैत अछि।

आदित्य जखन अलग स्वामित्व-घोषणा, हिस्सेदारी, नियन्त्रण-अधिकार अथवा लाभक कड़ी खोजैत अछि, सुरक्षित संचिकामे ओहि श्रृंखलाक समर्थन शशांकक सारक बाहर नहि भेटैत। ताहि सँ वास्तविक स्वामी कियो नहि, ई निष्कर्ष नहि; केवल पछिला कठोर दावाक स्वतंत्र प्रमाण एतय अनुपलब्ध। शशांकक मूल सार दोषरहित शब्द-त्रुटि छल, ई सेहो प्रमाणक अपेक्षा राखैत अछि—ओ जानि-बुझि बैठकक व्यवहारक अनुमान जोड़ने मानैत अछि। पात्रक दोष आ आर्थिक सत्यक निर्णायक पहचान दुनू प्रश्नक अलग उत्तर बनैत अछि।

एक अन्य मसविदामे 'एकीकृत नियन्त्रण' सन भारी शब्द भेटैत अछि, मुदा ओकर लेखकत्व शशांकसँ प्रमाणित नहि। आदित्य ई सीमा स्पष्ट रखैत अछि। एहि बिन्दुपर उपन्यास नायककेँ बचावक अतिरिक्त सुविधा देबासँ बेसी दोषक उचित परिमाण तय करैत अछि। शशांकक 'मुख्य निर्णयकारी' शब्दक जिम्मेदारी ओकरा, पछिला अज्ञात लेखकक 'एकीकृत नियन्त्रण' स्वतः ओकर नहि। आत्मग्लानिक कारण अपन माथ पर सब जोड़ि लेब फेर ओही पुराने असत्य विस्तारक एक रूप होयत। चरित्रक सुधार एहि आत्मदण्ड-विरुद्ध तटस्थतामे सेहो अछि।

दुपहरिया बनल चारि स्तम्भक तालिका—मूल पद, शशांकक रूपान्तर, पछिला संस्थागत रूप, स्वतन्त्र आधार उपलब्ध कि नहि—सम्पूर्ण अध्यायक वस्तु-प्रतीक बनैत अछि। सामान्यतः तालिका साहित्यक गति रोकि सकैत अछि, मुदा एतय एके पंक्तिक तीन भाषिक अवस्थाकेँ पाठक आँखिसँ देखैत अछि। 'मुख्य सम्पर्क' सँ 'मुख्य नियंत्रक'क यात्रा आरोपक अर्थ जन्मेबाक साक्षात् प्रक्रिया बनैत अछि। ई अनुवादकक नैतिक व्यावसायिक दायित्वक दुर्लभ कथात्मक मूर्तिकरण अछि, यद्यपि पात्रसभक अनुभव प्रतिपाद्यक आवश्यकतानुसार अधिक व्यवस्थित होइत अछि।

मृणालक प्रश्नपर शशांक कहैत अछि जे प्रतिभा पर गर्व छोड़ब मिथ्या विनम्रता, मुदा 'निश्चितता बिकैत छल'क प्रवृत्ति छोड़ब आवश्यक। कथन उपन्यासक सामाजिक अर्थव्यवस्था खोलैत अछि। ग्राहककेँ अनिश्चित सम्भावना सुनबाक इच्छा कम, ठोस निर्णयक आश्वासन चाही; अनुवादक अपन पारिश्रमिक आ प्रभाव बढ़ेबाक लेल ओहि मागपर झुकैत अछि। एतय अर्थनिर्माण केवल बौद्धिक दोष नहि, बाजारक प्रोत्साहनक परिणाम सेहो अछि। तथापि वास्तविक बाजारी दबाव, श्रमक असुरक्षा आ विविध ग्राहकक

चरित्र सीमित विस्तार पबैत अछि—एहि सीमाक उल्लेख आलोचनामे आवश्यक अछि।

भारतीय औचित्य-विचारक दृष्टिसँ 'मुख्य सम्पर्क' पदक व्यावसायिक मर्यादा तोड़ि ओकरा स्वामित्वक अर्थ देल गेल अछि; नव्य न्यायीय अवच्छेदकदृष्टि प्रत्येक सम्बन्धक पृथक परिभाषा माँगैत अछि। पाश्चात्य कथन-विमर्शमे एतय मुक्त कथन, दस्तावेजक उद्धरण आ संस्थागत पुनर्लेखनक परत बनैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे बैठकमे देखल व्यवहार, मूल पंजीकरण, अनुवादकक सार, जोखिम-टिप्पणी आ निचला आयुक्तालयक माग-पत्र अलग समयरेखा छथि। तिनका बिना भेद मिलाए एके तथ्य घोषित करब जाँचक अधिकारक अतिक्रमण अछि।

अध्यायक समेकित उपलब्धि ई जे 'पुनरावृत्ति = स्वतंत्र पुष्टि नहि, जँ स्रोत एके हो'क नियम कथाक देहमे स्थापित भेल। शशांक पहिने 'शब्द नहि, लोक पढ़ैत छी' कहि अपन विशेष प्रतिभाक दाबी करैत छल; आब ओ बुझैत अछि जे लोकक व्यवहार पढ़बाक योग्यता आर्थिक स्वामित्व घोषित करबाक स्वीकृति नहि। चरित्रक अन्तर्विरोधक कारण कथा प्रभावशाली अछि; भाषिक आत्ममोहक पुनरावृत्ति ओकर गति कतहु धीमी बनबैत अछि। मुदा मूल प्रमाणक स्थान पर बनल वाक्यक शक्ति देखेबामे ई अध्याय समूचा 'अनुवादक'क अत्यन्त केन्द्रीय खण्ड बनि जाइत अछि।

## अध्याय ८६-९० : अठारहम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — प्रतिरोधक नर्मी, समाचारक निश्चय आ प्रतिध्वनिक प्रमाण-दोष

छियासीम सँ नब्बेम अध्यायक कथा संस्थागत संशोधनक विश्लेषण सँ शुरू भऽ भाषिक सारक स्रोत-परम्परा पर समाप्त होइत अछि। अध्याय ८६मे मूल आपत्तिक धार घटैत अछि; ८७मे समाचारिक शब्द मुहरबन्द प्रश्नकेँ सिद्ध वित्तीय नियन्त्रण घोषित करैत अछि; ८८मे दोसरा गामक जाँचकर्ता नायकक अपन वाक्य पर समान कसौटी लागू करैत अछि; ८९मे समकालीन डींग आ पछिला बयानक तुलना होइत अछि; ९०मे ‘मुख्य व्यावसायिक सम्पर्क’ सँ ‘मुख्य नियंत्रक’ धरि एक स्रोतक भाषिक सन्तान अनेक कागजमे घूमैत अछि। ई पाँच चरण शब्दक छोटे विस्तारसँ संस्थागत निश्चितताक पैघ भ्रम उत्पन्न होएबाक प्रक्रिया देखबैत अछि।

पहिल दू अध्यायमे ‘मूल पाठ’ आ ‘सारांश’क बीच फराक् प्रधान अछि। ८६मे निचला अधिकारीक सावधानीक प्रश्न अंतिम टिप्पणीक क्रममे हलुक होइत अछि, मुदा जाँचक पत्राचार जारी अछि। ८७मे ‘भुगतान-पथ सम्बन्धी प्रश्न’क मुहरबन्द अनुक्रम-सूची समाचारक ‘मुख्य संयोजक’ कथन नहि सिद्ध करैत। दुनू स्थितिमे मूल अभिलेखक एक भाग वास्तविक रहैत अछि, पर ओकर प्रसारित अर्थ बेसी निश्चित होइत अछि। लेखक ई नहि कहैत जे सभ संक्षेपण कपट; ओ संक्षेपणक कारण, लेखकत्व, प्रभाव आ प्रमाणिक व्याप्ति जाँचबाक आग्रह करैत छथि।

अध्याय ८८क अधिकारीक ‘गंगेशक नाम सुनब पद्धति नहि’ वाक्य सम्पूर्ण अनुक्रमक दार्शनिक केन्द्र अछि। मिथिलाक ज्ञान-परम्पराक उत्तराधिकार केवल गौरवपूर्ण बौद्धिक प्रतिष्ठा नहि, बल्कि अपन विरुद्ध प्रत्यक्ष अनुप्रयोगक अनुशासन अछि। शशांक जे योग्य-अनुपलब्धि अपन बचावमे माँगैत छल, अधिकारी ओहि सँ शशांकक समकालीन सीमा-सुधारक अभाव परीक्षण करैत अछि। एहि उलट प्रयोगक बिना ज्ञान-सिद्धान्त स्वार्थी रक्षा बनि रहित। समता एतय नायकक कथित शत्रु वा समर्थकक समान सामाजिक स्थान नहि, बल्कि सभ दावापर समान स्रोत-माप लागू करब अछि।

अध्याय ८९मे न्यायिक समन, पुरान सन्देश, संचार-अवधिक भिन्नता आ औपचारिक निर्णय-अधिकारक अभिलेख एक संग पढ़ल जाइत अछि। 'अन्तिम निर्णय हमरा बिना नहि' वाक्यक आत्मप्रचार उपलब्ध अछि, पर वास्तविक अधिकारक स्वतन्त्र चिह्न नहि। एहि अंतरक आलोचना अपराधी बनाम निर्दोषक द्विविकल्प तोड़ैत अछि। नायक अपन झूठक आकार स्वीकार करैत अछि, मुदा अज्ञात वित्तीय अपराध अपना माथ पर अपराध-बोधसँ नहि लादैत। शान्त रसक भाव आत्मदण्डक त्यागसँ नहि, संशोधित कथनक उचित मापक प्राप्तिसँ अबैत अछि।

अध्याय ९०मे पहिने चारि अध्यायक भाषिक समस्या एक सुस्पष्ट पाठान्तर-सूची बनैत अछि। विक्रेता-पंजीक 'मुख्य व्यावसायिक सम्पर्क' शशांकक सारमे 'मुख्य निर्णयकारी पक्ष' आ पछिला कागजमे 'मुख्य नियंत्रक' होइत अछि। अनेक कागज देखाओल गेल, मुदा प्रमाण-सरणीक मूल एकहि व्याख्या अछि; एके स्रोतक प्रतिध्वनि स्वतंत्र गवाह नहि। नव्य न्यायीय शब्दप्रमाण, आ आधुनिक स्रोत-समालोचनामे स्रोत-निर्भरता, एहि ठाम मिलैत अछि। रिपोर्टक पाँत संख्या बढ़लाक कारण दावाक सत्य स्वतः नहि बढ़ैत।

भारतीय रस, ध्वनि आ वक्रोक्तिक अर्थमे एहि पाँच अध्यायक महत्त्वपूर्ण रूपक 'धार', 'मुहर', 'छाया' आ 'प्रतिध्वनि' छथि। नर्म कर-भाषाक धार घटैत अछि; समाचारक मोट शीर्षक सार्वजनिक मुहर बनैत अछि; अधिकारीक खाली कापी नायकक आत्मछायाकेँ प्रश्न करैत अछि; अनुवादकक एक पंक्ति पछिला कागजमे प्रतिध्वनित होइत अछि। नायकक लज्जा आ अपमानक करुणा एतय ज्ञानक निष्पक्षता सँ टकराइत अछि। सुगठित विचारक संग ई रूपक दृश्यात्मकता दैत अछि, यद्यपि अनेक संवाद एके सिद्धान्त दोहरौने कारण कथाक घटनात्मक गति धीमी पड़ैत अछि।

पाश्चात्य आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ पूर्वकालक वाक्य, वर्तमान जाँचक अभिलेख आ रात्रिक कापीक संशोधित अर्थ तीन काल-रेखा रचैत अछि। प्रत्येक पुरान दृश्य अलग वर्तमान व्याख्या पबैत अछि; पाठक केवल घटना नहि, घटनाक अभिलेखीय जीवन पढ़ैत अछि। 'अनुवादक' एहि अर्थमे आधुनिक दस्तावेजी आख्यान अछि जाहिमे बादक समाचार आ सरकारी सारांश स्वयं कथा-निर्माता बनैत अछि। किन्तु कथानकक पात्रसभक वाणी किछु बेर जाँचक एकसमान प्रश्न-शैलीमे विलीन होइत अछि; मिथिलाक

सामाजिक विविधता, व्यावसायिक श्रम आ कार्यालयक अस्पष्ट शक्ति-सम्बन्धकेँ अधिक स्वतंत्र जगह भेटितय तँ सौन्दर्यात्मक बहुस्वरता बढ़ितय।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति समाचारिक कथा, कर-गुप्तचरक निचला प्रक्रिया, विधिक बैठक, सार्वजनिक वचन, विदेशी व्यापारिक सत्र आ शशांकक निजी सन्देशक अलग स्रोत-सत्ता मानैत अछि। समकालिकता वा पदसाम्यक आधार पर कारणक एकरूपता थोपब अनुचित अछि। ८६क पुनःआवंटन, ८७क सम्भावित स्रोत-लीक, ८८क नायकक समकालीन मौन, ८९क आत्मप्रचार आ ९०क अनुवादक-निर्मित वित्तीय अर्थ—सभक अलग समर्थन चाही। एहि शर्तकेँ भूललासँ इतिहास औचित्यहीन निश्चितताक कथा बनि जाइत अछि।

समग्र परिणाम शशांकक आत्मानुशासनक अगिला सोपान अछि। ओ अपन नर्म अनुवाद, बढ़ल भूमिका आ ग्राहककेँ आकर्षित करबाक निश्चितता-बिक्री स्वीकारैत अछि, मुदा एही स्वीकारक कारण अज्ञात अधिकारी, खाता वा मित्रक अपराधक अतिरिक्त भार नहि देत। आलोचनात्मक प्रश्न बचैत अछि —की कतहु लेखक पात्रसभकेँ प्रमाणशास्त्रीय सिद्धान्तक प्रतिनिधि मात्र बना दैत छथि? ई सीमा आंशिक सत्य अछि। पर घटना, शब्द आ दस्तावेजक स्वतन्त्र जीवनक चिह्नित टकराव उपन्यासकेँ नैतिक बोध मात्र नहि, गहन भाषा-राजनीतिक कृति बनबैत अछि। ई पाँच अध्याय देखबैत अछि जे असत्य अनेक बेर एकहि आरम्भिक अर्थविस्तारक पुनर्लेखनक सहारे सार्वजनिक निश्चय बनैत अछि।

## अध्याय ९१ — समझौताक दरार १३ : धनक कथित परत, मृणालक प्रमाण-स्वातन्त्र्य आ निर्णयक पूर्वपीठिका

एकानबेम अध्याय ‘समझौताक दरार’क दीर्घ खण्डक अन्तिम सोपान अछि। वित्तीय संदेहकेँ एखन पाँच संचिकामे सीमित कएल गेल—भुगतान-द्वार, बैंक-प्रेषणक संक्षिप्त विवरण, पुरान सन्देश, यात्रा-व्यय आ अनुमत सीमासहित मुहरबन्द सूची। आदित्य पहिने मृणालकेँ नहि बजबैत, किएक तँ मित्रताक भाव जाँचक आरम्भ-बिन्दु नहि होएबाक चाही। एहि छोट प्रक्रियागत चुनावसँ लेखक स्पष्ट करैत छथि जे व्यक्तिक सम्बन्धक घनिष्ठता स्रोत-परीक्षणक क्रम तय नहि कऽ सकैत। कथित स्तरित धन-श्रृंखलाक प्रमाण धनक स्वतन्त्र कड़ीसँ निकलब, शशांकक अनुमान अथवा सामाजिक निकटतासँ नहि।

एक खाता-प्रविष्टिमे ‘एम.के.’ सन आद्याक्षर, रकम, तिथि आ ‘व्यय समायोजन’ विवरण अछि, मुदा पूरा खाताधारक-पहिचान नहि। शशांक एखन आद्याक्षर देखिते मृणालक नाम नहि बोलैत। वैध प्रतिपूर्तिक पुरान पावतीसभक अस्तित्व स्वतः दू प्रविष्टि एके व्यक्ति वा एके आर्थिक उद्देश्यक नहि बनबैत। अभियोग यदि जानि-बुझि मध्यवर्ती खाता चलाएबाक अछि, तखन पहचान, निर्देश, लाभ, नियमित सम्बन्ध आ कथित परतसभक सुसंगत चिह्न आवश्यक अछि। मूल पाठमे अभावक वास्तविक भार कोठलीक अज्ञात नाम पर नहि, उचित अपेक्षा आ स्रोतक विश्वसनीयता पर निर्भर राखल गेल अछि।

अनेक भुगतान-द्वारक समेकित सूची सार्वजनिक आरोपमे हवाला अथवा अंकीय परिसम्पत्तिक निश्चित परिचालन बनि गेल छल। कृति एहि अर्थवृद्धिक आधार जाँचैत अछि। अनेक माध्यमक अस्तित्व एक आर्थिक संरचनाक संकेत अवश्य, मुदा परस्पर धन-स्थानान्तरणक क्रम वा अन्तिम लाभार्थीक प्रमाण नहि। ‘हवाला?’ आ ‘अंकीय परिसम्पत्ति?’क प्रश्नचिह्न मूल जाँच-पत्रमे बचल अछि; पछिला सारांशमे ओकरा हटेबासँ शंका निष्कर्ष बनि सकैत अछि। भारतीय औचित्य-विचारमे प्रश्न, उत्तर आ सिद्धि अलग कथन-वर्ग छथि। नव्य न्यायीय अनुमानमे काल-साम्य आ शब्द-साम्य मात्रसँ धनक निर्देश-कड़ी सिद्ध नहि।

शशांकक मृणालकेँ पठाओल पुरान सन्देश 'भीतर बड़का खेल अछि'क भाषा प्रभावशाली अछि, किन्तु मृणालक प्रत्युत्तर 'बुझाइत अछि आ प्रमाण अछि, दू बात' एहि प्रभावपर प्रतिरोध अछि। एतय मित्र नायकक संशयक निषेध नहि करैत; संशय कैं निर्दिष्ट तथ्यक भूमिकामे पठेबाक वैधता प्रश्न करैत अछि। शशांक अपन पुरान भाषा कैं शंका आ डींगक मिश्रण मानैत अछि। कथाक दीर्घ आन्तरिक परिवर्तनक मापक ई नहि जे ओ आर्थिक जटिलता कखनो देखलहि नहि, बल्कि ई जे अस्पष्ट स्रोत देखिक निश्चित व्याख्या बनेबाक लोभ सीमित करैत अछि।

दुपहरिया मृणालकेँ उपस्थित कएल जाएत अछि। ओ स्वतन्त्र बयान दैत अछि, कथित प्रविष्टिक तिथि अपन यात्राक समीप मानैत अछि, मुदा रकम मेल नहि खाइत कहि अपन नाम नहि जोड़ैत। ओ आर्थिक मार्गमे भागीदारीसँ इनकार करैत अछि, आदित्य सेहो स्पष्ट करैत अछि जे मित्रक नकार स्वयं जाँचक अन्तिम प्रमाण नहि। एहि समान कसौटीमे मृणालक व्यक्तित्वक गरिमा अछि: न मित्रताक आधार पर दोषरहित प्रमाणपत्र, न मित्रताक आधार पर मध्यवर्ती खाताक दोष। शशांक किछु बाजय चाहैत अछि तखन मृणाल रोकि कहैत अछि—'एखन मित्रता नहि। पहिने अभिलेख।' ई संवाद नायकक आत्मकथा पर स्वतंत्र नैतिक व्यक्तित्वक अधिकार स्थापित करैत अछि।

शशांक अपन प्रतिष्ठा बढ़ेबाक लेल मित्रक नाम प्रयोग करबाक जिम्मेदारी औपचारिक बयानमे जोड़बाक आग्रह करैत अछि। मृणाल स्पष्ट करैत अछि जे एक वाक्यसँ मित्रता तुरन्त वापस नहि आयत। एतय प्रायश्चित नैतिक ऋणक लेखा बन्द करबाक अनुष्ठान नहि; सही अभिलेख बनबाक आवश्यकता अछि। रचनाक करुण पक्ष मित्रक तात्कालिक क्षमा-अभावमे अछि, आ शान्त पक्ष शशांकक एहि स्वीकारमे जे सही कथन मित्रता लौटा देबाक सौदा नहि। ब्यौरा आ संवेदनाक एहि द्विस्तरीय संरचनासँ अध्याय पूर्व आर्थिक सारणीसभक अपेक्षा अधिक मानवीय बनैत अछि।

आदित्यक अन्तिम सार उपलब्ध माध्यमसभमे किछु असामान्य भुगतान आ स्रोत-अपूर्णता स्वीकारैत अछि, मुदा प्रस्तुत अभिलेखसँ पूर्ण स्तरित श्रृंखला वा शशांक-मृणालक विशिष्ट नियंत्रण स्थापित नहि मानैत। एतय 'पूर्ण श्रृंखला स्थापित नहि' आ 'कोनो अनियमितता नहि' भिन्न निष्कर्ष छथि। लेखक निर्णयक क्षेत्र अभी खुलल रखैत छथि। यदि स्रोत अपूर्ण हो, अपेक्षित चिह्नक अनुपलब्धि कम बोलैत अछि; यदि एके पुरान सार अनेक कागजमे दोहरायल हो, संख्या सँ स्वतंत्र पुष्टि नहि बनैत। एहि दोहरी आलोचनासँ वित्तीय रहस्यक सस्ती पूर्णता टलैत अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति अनुसार वैध यात्रा-व्यय, अस्पष्ट बैंक-प्रविष्टि, समेकित भुगतान-द्वार, निजी सन्देश आ न्यायालय-अनुमत मुहरबन्द प्रश्न पाँच अलग ऐतिहासिक साक्ष्य-रेखा छथि। एके तिथि, आद्याक्षर वा विदेश-सम्बन्ध तिनका एकल अपराधमे विलय नहि करैत। पाश्चात्य आख्यान-विवेचनक दृष्टिसँ मृणालक प्रवेश शशांकक आत्मकथात्मक केन्द्रपर प्रतिपक्ष बनबैत अछि; ओ अपन दुःख आ अपन मौनक अधिकार स्वयं राखैत अछि। मुदा शासकीय कोठलीक सुव्यवस्थित प्रश्नोत्तरक बाहर मित्रक दैनिक जीवन अपेक्षाकृत कम विकसित अछि।

अन्तिम पंक्ति 'मृणालकेँ बचेबाक लेल हम प्रमाण छोट नहि करब; ओकरा दोषी देखेबाक लेल नाम पैघ नहि करब' सम्पूर्ण खण्डक दार्शनिक परिणति अछि। यैह पात्रक सुधारक कठोरता अछि। व्यर्थ अनुमानसँ नायक कई प्रकारक व्यापक आरोपक भार घटबैत अछि, मुदा ओहि पद्धतिसँ अपन डींग, आधा-सत्य आ मित्रताक दुरुपयोग सेहो स्वीकारैत अछि। अध्याय 'अनुपलब्धि' सँ 'निर्णय' दिस मोड़ लेत अछि। कला-कौशलक सीमा आवर्ती कापी-लेखन आ प्रमाण-वर्गीकरणक पुनरावृत्ति अछि; तथापि नायकक निकट सम्बन्धमे एहि सिद्धान्तक वास्तविक कड़वाहट खण्डक अन्तकेँ आवश्यक मानवीय वजन दैत अछि।

## अध्याय ९२ — दोस्ती सँ दुश्मनी : समान भाषा सँ उत्पन्न पक्षधरता-भ्रम आ न्याय-विवेक

बानबेम अध्यायमे ‘निर्णय’क नव खण्ड शुरू होइत अछि। शीर्षक ‘दोस्ती सँ दुश्मनी’ जे व्यक्ति-सम्बन्धक उलटफेरक संकेत करैत अछि, ओ बाह्य घटना नहि, शशांकक दृष्टिक परिवर्तन होइत अछि। दोसर गामक मैथिल अधिकारी, साझा मिथिलाक संस्कार आ गंगेशक स्मरण देखिक नायक मनमे ओकरा अपन पक्षधर मानि लैत अछि। अधिकारीक समान कसौटी जखन नायकक डींगक विरुद्ध चलैत अछि, तखन ओही व्यक्ति ‘दुश्मन’ लगैत अछि। रचना एतय मनुष्यक वर्गीकरणक वृत्तिक आलोचना करैत अछि: ‘हमर लोक’ अथवा ‘हमर विरोधी’ नाम पहिले देल गेल तँ प्रमाणक वास्तविक काम ढँकि जाइत अछि।

मकाऊक यात्रा, बैठक, अतिथि-पास आ भाषिक सामग्रीपर सीमित टिप्पणी उपलब्ध तथ्य छथि। उच्च-अधिकारक निरन्तर नोंद अथवा प्रशासनिक निर्णयक चिह्न सुरक्षित अवधिमे नहि भेटल। अधिकारी एहि द्वय परस्पर विरोधी नहि, पूरक मानैत अछि: सीमित प्रवेश वास्तविक, व्यापक नियन्त्रण असमर्थित। शशांक अपन पुरान ‘भीतरक लोक’क डींगक कारण कथित पदक अतिशय रूप स्वीकारने छल, मुदा एहि अभिलेखक आधारपर ओ सर्वरक स्वामी नहि। निर्णय अनुकूल अथवा प्रतिकूल दू दल चुनब नहि; स्थापित उपस्थितिक साक्ष्य आ अनुपस्थित अधिकारक योग्य अपेक्षा दुनू रखब अछि। एहि विश्लेषणक बीच अधिकारी शशांकक लोभ सेहो लिखैत अछि—यात्राक सुविधा, पारिश्रमिक, प्रतिष्ठा आ ‘विशेष’ कहल जाएबाक आकर्षण। नायक प्रतिवाद करैत अछि जे लोभ अपराध नहि। अधिकारी सहमत होइत, मुदा लोभक पात्र-वृत्तान्तगत भूमिका समाप्त नहि करैत। लोभक कारण सीमित प्रवेश कँ भारी शब्दक रूपमे प्रस्तुत करब बुझल जा सकैत अछि, अपराधक नियन्त्रण ताहि सँ स्वतः नहि। भारतीय रसदृष्टिसँ उत्साहक मूल भाव आत्ममोह, तकर पाछाँ क्रोध आ लज्जामे बदलैत अछि। नव्य न्यायीय दृष्टिसँ व्यक्ति-प्रेरणा आ अपराध-सिद्धिक बीच सम्बन्ध प्रमाणित होयबाक चाही; केवल प्रेरणा पर्याप्त नहि।

जखन अधिकारी लिखैत अछि जे 'हम केवल बाह्य अनुवादक रही, भीतरक किछु देखलहि नहि' सन व्यापक नकारो असत्य अछि, शशांक ओकर विरुद्ध भड़कैत अछि। ओकरा लागैत अछि अधिकारी ओकरा बारम्बार काटि रहल अछि। नायकक छिन्नग्लानि एहि ठाम सजीव मनोवैज्ञानिक अनुभव बनैत अछि: जो व्यक्ति ओकर विरुद्ध पैघ आरोपक समर्थन नहि करैत, ओही व्यक्ति ओकर सुविधाजनक पूर्ण बचाव सेहो स्वीकार नहि करैत। 'पद्धति ककरो मित्र नहि'क छोट वाक्य एहि संघर्षक केन्द्र अछि। ई निर्लिप्तताक प्रशंसा मात्र नहि; सम्बन्धक भीतर तर्क-स्वातन्त्र्यक माँग अछि।

एक पुरान जन्मदिनक चित्र आ मकाऊक 'विशेष प्रवेश' वचन पुनः प्रस्तुत होइत अछि। पहिले चित्र सामाजिक उत्सवक प्रमाण छल; नायक ओकरा भविष्यमे स्थायी सत्ता पाबबाक आशा बनौलक। तकर बादक सन्देशमे अपन भूमिका पैघ लिखैत गेल। लेखकक कला एहि पुरान दृश्यक पुनःप्रयोगमे अछि: फोटो व्यक्तिगत लोभक मनोवैज्ञानिक आधार बनैत अछि, वित्तीय अपराधक सीधा प्रमाण नहि। एहि पुनरावलोकनात्मक संरचनासँ कथाक समय अग्रसर न भऽ अनुभवक अर्थ बदलैत अछि; पाश्चात्य आख्यानशास्त्रमे ई स्मृति-आधारित पुनर्विन्यासक उपयोगी उदाहरण अछि।

मकाऊक आन्तरिक भाषिक सामग्रीपर शशांक किछु जोखिम-शब्द नर्म कएने छल। ओ 'हम भीतर किछु केने नहि'क पूर्ण नकार त्यागैत अछि, आ 'हम प्रणाली चलौने रही'क व्यापक दावा सेहो अस्वीकार करैत अछि। एहि दुइक बीच नायक अपन वास्तविक सीमित भूमिका बनबैत अछि। ई कथन-संशोधन न्यायिक बारीकी मात्र नहि; उपन्यासक शीर्षकक मूल अर्थ अछि। अनुवादकक जीवनक सत्य शब्दक ठीक मापक सम्बन्धमे खोजल जाइत अछि। जो पेशेवर शब्दक सीमा मेटा कऽ प्रभाव पाबैत छल, से एखन अपन भूमिकाक व्याप्ति छोट-बड़ करब छोड़ि रहल अछि।

'हम अहाँकेँ अपन लोक बुझि लेने रही' कहिते अधिकारी उत्तर दैत अछि —'हम अपन छी। ताहि लेल सीमा बिगाड़ब?' एतय व्यक्तिगत आत्मीयता आ तथ्यगत निष्पक्षता परस्पर विरोधी नहि, बल्कि उचित मित्रताक आवश्यक द्वय बनैत अछि। मृणाल सेहो रातिक अन्तमे पूछैत अछि जे अधिकारी मित्र कखन आ दुश्मन कखन भेल। शशांक स्वीकारैत अछि—जखन पक्ष लेबाक आशा छल तखन मित्र, नहि लेलाक बाद दुश्मन। ई आत्मस्वीकृति चरित्रक मनोविज्ञान खोलैत अछि; 'गाम' आ 'भाषा'क साझा भूगोलकेँ पक्षधरता मानबाक प्रवृत्ति सामाजिक आलोचनाक विषय बनैत अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति एहि प्रसंगमे मैथिल पहचान, सरकारी कार्यालय, मकाऊक अधिकार-सूची आ सार्वजनिक राजनीतिक कथनक अलग स्थान निर्धारित करैत अछि। एके सांस्कृतिक परम्पराक स्मृति अनुसन्धानक निष्कर्ष नियंत्रित नहि करैत। गंगेशक नाम ज्ञान-पद्धतिक भौतिक विरासत सँ नैतिक कसौटी बनबाक कड़ी अछि। पाश्चात्य बहुस्वरताक कसौटी पर अधिकारी अपन मूल पक्ष कखनो पूर्ण प्रतिपक्ष नहि बनैत, मुदा नायकक अपेक्षित भावात्मक समर्थन अस्वीकार करबाक कारण ओकर स्वतंत्र दार्शनिक स्थिति प्रकट अछि।

अध्यायक सीमा एकहि स्थलपर अत्यन्त सुव्यवस्थित तथ्य-वर्गीकरणक पुनरावृत्ति अछि, जाहिसँ वैयक्तिक क्रोधक अस्थिरता तत्काल तर्कक अन्तर्गत आनि देल जाइत अछि। तथापि शीर्षकक आन्तरिक विडम्बना आ अधिकारीक हास्ययुक्त संयम दृश्यकेँ जीवित रखैत अछि। अन्तिम कापीक ‘हम प्रमाणकेँ मित्र चाहैत रही; प्रमाण हमरा सीमा देलक’ नायकक परिवर्तित न्यायबोधक सार अछि। अपराध आ निर्दोषताक सवालसँ आगे बढ़ि कथा एहि ठाम ‘सत्यक मित्र’ बनबाक अर्थ पर प्रश्न करैत अछि—न मनपसन्द निर्णय, बल्कि समान सीमा-निर्धारण।

## अध्याय ९३ — दू नव्य न्याय २ : राघवक संरक्षित सलाह आ अनुवादकक उधारक मुहर

तिरानबेम अध्यायमे ‘दू नव्य न्याय’क विवेक विधिक परामर्शक क्षेत्रमे प्रविष्ट होइत अछि। राघव भसीन दू गड्डी अलग रखैत छथि—संरक्षित विषयवस्तु आ बाह्य समय-क्रमक अभिलेख। शशांक प्रवेश करिते हुनकर सीधा आग्रह सुनैत अछि: ‘जे हमर अछि से हमर, जे तोहर अछि से तोहर।’ ई कथन कानूनी मर्यादाक संग व्यक्तिक प्रतिष्ठाक स्वतंत्र पहिचान स्थापित करैत अछि। अनुवादकक पूर्व दोष राघवक सावधानीकेँ स्वतः स्वीकृति बनाय व्यापारिक पक्षमे पठेबाक छल; एखन न्यायिक निर्णयकेँ मूल पेशागत कथन आ नायकक स्वतन्त्र सारांश अलग करबाक पड़त।

विधिक बैठकक तिथि, अवधि, उपस्थित व्यक्ति आ सेवा-शुल्कक सामान्य लेखा उपलब्ध अछि, मुदा संरक्षित सलाहक मूल शब्द न्यायालयीय अनुमति बिना नहि खोलल जाइत। शशांक अपन ‘विधिक पक्ष साफ’ अथवा ‘राघव पक्षसँ आपत्ति नहि’ सन सन्देश अपनहि मानैत अछि; राघव कहैत छथि जे ई हुनकर वाक्य नहि। लेखक एक वास्तविक भाषा-समस्या उघारैत छथि—कानूनी शर्तक अस्तित्व मानल गेल मुदा व्यापारिक संदेशमे शर्त-सहित अर्थ घटि कऽ निश्चित आश्वासन बनि गेल। ओहि प्रक्रियाक नैतिक उत्तरदायित्व शशांकक अछि, भले विधिक सलाहक गोपनीय विषयवस्तु सार्वजनिक नहि हो।

आदित्य ‘विधिक सलाह’, ‘शशांकक सारांश’, ‘व्यापारिक क्रिया’ आ ‘अपराधक आरोप’ चारि वर्ग बनबैत अछि। वकीलक नाम प्रति-सूचीमे जुड़ब एक व्यापारिक आदेशकेँ स्वतः विशेषाधिकारयुक्त नहि बनबैत; तहिना अपराधक आरोप उठिते सभ पूर्व विधिक संवाद असंरक्षित नहि भऽ जाएत। नव्य न्यायीय अर्थमे सम्बन्धक अवच्छेदक—विषय, उद्देश्य, अधिकार आ स्रोत—अनिवार्य अछि। दोसर ओर, संयुक्त अपराध-परिचालनक दावी लेल विधिक गोपनीयताक बाहर स्वतन्त्र निर्देश, लाभ, अधिकार-परिवर्तन वा साझा उद्देश्यक चिह्न चाही। एक सहबैसार यथार्थ अछि, पर ओकर अनुमानित दोष अलग साक्ष्य माँगत।

राघवक ‘तूँ हमर सावधानीकेँ अपन मुहर बनौने छलह’ कथन शशांकक मुख्य दोषकेँ मानवीय बनबैत अछि। नायक अपना सामाजिक उन्नतिक लेल

विधिवेत्ताक नाम उधार लैत छल, जखन कागजक बोझ बढ़ल तखन ओहिठाम सम्भावित दोषक भय जगल। अनुशासन इहए अछि जे अपन सारांशक जिम्मेदारी स्वीकार कएल जाय, मुदा राघवक अपराधमे सहभागिता न मानल जाय जाबत स्वतंत्र प्रमाण न हो। भारतीय औचित्य-दृष्टि एतय 'नाम' आ 'कथन'क उचित स्वामित्वक मर्यादा समझबैत अछि। भाषिक अन्तर्पाठीयतामे उद्धृत लेखक बदललासँ कथनक वैधता नहि बढ़ैत।

एक व्यापारिक कर्मचारीक पछिला दस्तावेज 'विधिक रूपेँ स्वीकृत' शीर्षक उपयोग करैत अछि; ओकर पहिले मसविदामे ओ शीर्षक नहि छल। श्रृंखलामे शशांकक 'राघव पक्षसँ आपत्ति नहि; आगाँ बढ़ू' सार पहले आयल छल। कथा एतय दू दस्तावेजक स्वतन्त्रता प्रश्न करैत अछि। पछिला व्यावसायिक शीर्षक स्वतन्त्र वकीली प्रमाण नहि, बल्कि पहिले सारक कठोर पुनर्लेखन हो सकैत अछि। एकत्र भऽ ई उदाहरण अध्याय ९०क 'मुख्य सम्पर्क' सँ 'मुख्य नियंत्रक' धरि भाषिक उत्थानक समानान्तर बनैत अछि; भाषा सामाजिक निर्णयमे प्रमाणक स्थान घेरि सकैत अछि।

शशांक 'राघव सभ देखैत छलाह' सन अपन व्यापक बयान संशोधित करैत अछि। विधिक सलाहक किछु विषय देखब आ वित्तीय/प्रशासकीय सभ निर्णय देखब समान नहि। झूठी व्याप्ति नायकक आत्मप्रचारक प्रमाण अछि, राघवक वास्तविक व्यापक सहभागिताक नहि। राघवक प्रतिक्रिया—'कमसँ कम आब तूँ हमर नामक भार हमरा दे रहल छह, अपन वाक्यक भार अपन लग'—एहि अन्तरमे व्यक्तिगत आ पेशागत न्यायक शान्त रस उत्पन्न करैत अछि। क्षमाक भाषाक बदला जवाबदेहीक परिसीमा मुख्य बनैत अछि।

पाश्चात्य आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ मूक संरक्षित संचिका, खुलल व्यापारिक सन्देश आ मृणालसँ रात्रि संवाद त्रिस्तरीय ज्ञान-स्थितिक निर्माण करैत अछि। पाठकक जानकारी जानि-बुझि सीमित राखल गेल अछि, मुदा ई रहस्य रचबाक सस्तापन नहि—विशेषाधिकारक वास्तविक मर्यादाक अनुकरण अछि। ध्वनि-चिन्तनमे गोपनीय मौनक अर्थ स्वतः अपराध वा निर्दोषता नहि; ओ केवल जे न पढ़ल जा सकैत अछि तकर निष्कर्ष सीमित करैत अछि। लेखक एहि मौनकेँ चरित्रक नैतिक भयसँ जड़ैत छथि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति विधिक परामर्शक समय, नायकक व्यापारिक संचार, व्यापारी कर्मचारिक शीर्षक आ सार्वजनिक आरोपक अलग स्रोत-रेखा राखैत अछि। एके संस्था वा वकीलक नाम फेर भेटलाक कारण स्वतंत्र पुष्टि नहि बनैत। तथापि विधिक पात्रक आवाज कतेको बेर सिद्धान्तक

मर्यादित वाक्यबद्ध रूपमे सीमित होइत अछि; वास्तविक विधिक कार्यप्रक्रियाक जटिल संवाद-कलेवर आरो विस्तार पबि सकैत छल। मुख्य उपलब्धि ई जे 'दू नव्य न्याय'क पहिल शब्द-आधारित लेबलवाद आ दोसर सम्बन्ध-परीक्षणक बीच अन्तर स्पष्ट कएल गेल। शशांक अपन बचाव लेल राघवक नाम नहि नुका सकैत, आ राघवकेँ दोषी ठहराए अपन अपराध-बोध सेहो नहि घटा सकैत।

## अध्याय ९४ — दू नव्य न्याय ३ : शाखाक बदलल सारांश आ संस्थागत निर्णयक सीमाबोध

चौरानबेम अध्यायमे ‘दू नव्य न्याय’क पद्धति व्यक्तिसँ संस्था दिस बढ़ैत अछि। मेज पर निचला आयुक्तालयक मूल प्रश्न, बीचक मसविदा, अन्तिम कर-गुप्तचर सारांश, पुनःआवंटनक आदेश आ बैठकक नोंद एकत्र अछि। ई सभ उपलब्ध स्रोतक पहिल स्थिर तथ्य पाठगत परिवर्तन अछि—लाभकारी स्वामित्वक चेतावनी छोट भेल, भुगतान-पथक सावधानी घटल, प्रश्नचिह्न किछु ठाम बिलायल आ ‘प्रत्यक्ष कर-हानि स्थापित नहि’ प्रमुख स्थान पेलक। मुदा ‘शाखा आपराधिक समझौता केलक’ एहि पाठगत तथ्यक स्वतः निष्कर्ष नहि। शीर्षकक दार्शनिक अर्थ एहि फराक् रखनाइमे अछि।

कार्य-वितरणक अभिलेख एक विशिष्ट विश्लेषण-पत्र दोसर शाखाकेँ देब देखबैत अछि; अधिकारीक नियमित काज आ मूल आपत्तिक लिखित अस्तित्व जारी अछि। पुनःआवंटनक कागज सामान्य प्रशासनिक कारण देत अछि—समन्वय, कार्यभार आ समय-सीमा। ई कारण सत्य सेहो भऽ सकैत अछि, आ गलत आडम्बर सेहो; उपलब्ध अभिलेखसँ तत्काल ककरो पक्षमे अन्तिम निष्कर्ष उचित नहि। शशांक पहिने ‘आवरण’ शब्द सुनिते षड्यन्त्रक कथा बनबैत छल; आब ओ उचित प्रश्न बचबैत अछि, अनिवार्य दोषनिर्णय नहि। ई भाषा-नियन्त्रण ओकर प्रतिभासँ अधिक ओकर नैतिक प्रशिक्षणक सफलता अछि।

एक बैठक-नोंदमे ‘अपुष्ट परिकल्पना मुख्य सारांशमे नहि’ राखबाक सम्पादकीय निर्देश अछि। सामान्य रूपेँ ई वैध संक्षेपण-विधि हो सकैत अछि, मुदा जँ मूल प्रश्नचिह्न सहित जोखिम-सूचना पछिला जाँच लेल आवश्यक हो तँ पूर्ण लोप अनुचित परिणाम देत। ओहि कारण शब्दक छोट होएब केवळ शैलीक विषय नहि; कियो मुख्य प्रति मात्र पढ़त तँ ज्ञानक व्यावहारिक स्थिति बदलि सकैत अछि। उपन्यास अर्थक सामाजिक-संस्थागत परिणामकेँ शब्दक रूपान्तरसँ जोड़ैत अछि। औचित्यशास्त्रमे सारांशक प्रयोजन, प्राप्तकर्ता आ आवश्यक सावधानीक अनुपात प्रमुख भऽ उठैत अछि।

अन्तिम सारांशक परिशिष्ट-सूचीमे मूल प्रश्न-पत्रक नाम बचल छल, मुदा एक अगिला संचिकामे ओकर प्रतिलिपि अनुपस्थित भेटल। ताहि सँ ‘प्रश्न

पूर्णतः मेटा देल गेल' दाबी उपलब्ध सूचीसँ टकराइत अछि; 'प्रश्न सब पाठक धरि पूरा पहुँचैत रहल' दाबी अनुपस्थित प्रति कारण असमर्थित। ई मिश्रित स्थिति रचनाक बौद्धिक बल अछि। भारतीय नव्य न्यायमे उपस्थितिक प्रमाण आ अनुपस्थित प्रतिलिपिक अपेक्षित उपलब्धि एकहि निष्कर्षमे निर्विवाद रूपेँ संग नहि मिलि सकैत। तिनका सम्बन्ध आ सीमाक जाँच लागैत अछि।

निचला आयुक्तालयक अधिकारीक विश्वासघातक अनुभूति स्पष्ट अछि। ओ कहैत अछि जे ओकर मूल आपत्तिक वजन घटल बुझायल, मुदा ताहि सँ आपराधिक समझौताक व्यक्ति-विशिष्ट प्रमाण अपने-आप नहि भेटल। शशांक ओहि अनुभवमे अपन पुरान व्यावसायिक अनुवादक नर्मीक प्रतिच्छवि देखैत अछि। यदि ओ स्वयं जोखिम-शब्द कम करब स्वीकारैत अछि, तखन संस्था द्वारा कएल प्रत्येक संक्षेपणकेँ प्रसंग बिना अपराध कहब असमान कसौटी होयत। यदि संस्था पाठकक उचित सावधानी घटा देने हो, तखन ओहि कृत्यक प्रशासनिक समीक्षा उचित अछि—भले दोषसिद्धि नहि हो। एहि सन्तुलनक राजनीतिक महत्त्व अछि।

आदित्यक मसविदा निचला आपत्ति, पाठगत संक्षेपण आ विशिष्ट काजक पुनःआवंटन स्थापित मानैत अछि; व्यापक साँठगाँठक स्वतंत्र आधार नहि मानैत, मुदा जोखिम-सूचनाक संकुचन आ अभिलेख-संगतिक प्रशासनिक समीक्षा उचित कहैत अछि। एतय जाँच आ निर्णयक मध्यवर्ती अवस्थाकेँ कला सँ चित्रित कएल गेल अछि। समाज प्रायः संस्था केँ 'निर्मल' वा 'भ्रष्ट' दुइ शब्दमे रूपान्तरित करैत अछि। उपन्यास बिचला श्रेणी—प्रक्रियागत त्रुटि, त्रुटिपूर्ण सम्पादन, अनुचित प्रभावक संशय आ प्रमाणित अपराध—केँ अलग नाम दैत अछि।

भारतीय रस-विचारमे अधिकारीक आहत स्वर करुणाक बीज अछि; शशांकक पुरान क्रोध आ पछिला संयम शान्तक गति निर्मित करैत अछि। 'दू नव्य न्याय तखन एक होइत अछि, जखन धार अपन हाथो काटबाक अनुमति पबैत अछि'क सूत्र स्वयं-विरुद्ध तर्कानुशासनक रूपक अछि। सशक्त वस्तु-प्रतीक यहाँ फाइलक परिशिष्ट-सूची अछि—अस्तित्व सूचित करैत, पर पूर्ण पहुँच सुनिश्चित नहि करैत। विदेह समानान्तर इतिहासमे निचला विरोधक अनुभव, वरिष्ठक प्रशासनिक कारण आ सार्वजनिक राजनीतिक आरोप अलग स्रोत-प्रवाह छथि।

रचनात्मक सीमा ई अछि जे संस्था भीतर अधिकारक संघर्षक दृश्य बहुधा सारणीबद्ध रूपेँ प्रस्तुत अछि; सेवाक पदानुक्रम, अधिकारीक निजी जोखिम आ

वास्तविक निर्णयक आर्थिक प्रभावक बहुविध जीवनक विस्तार सीमित अछि। मुदा पाठगत भेदक न्याय-विवेक असाधारण रूपेँ सुसंगत अछि। शशांकक निष्कर्ष 'एखन उपलब्ध प्रमाणक आकार'क रूपमे बनैत अछि, जकर कारण मित्रता वा अपना पीड़ाक स्वाद ओकरा दिशा नहि दैत। ई अध्याय 'दू नव्य न्याय'केँ निष्पक्षता आ आत्मालोचनक दार्शनिक गुण बनबैत अछि।

## अध्याय ९५ — दू नव्य न्याय ४ : सार्वजनिक आरोपक चारि प्रमाण-वर्ग आ अपमानक कठिन निर्णय

पंचानबेम अध्याय सार्वजनिक कथनक न्यायिक वर्गीकरण पर केन्द्रित अछि। आदित्य आ मिथिलाक अधिकारी सात पृष्ठमे ‘स्थापित तथ्य’, ‘अनुमान’, ‘असमर्थित विस्तार’ आ ‘स्रोत-अनिर्णीत’ चारि कोष्ठक बनबैत छथि। शशांकक भावनात्मक स्मृतिमे गाम धरि पहुँचल अपमान, पिताक प्रश्न-साम्हना आ जन्मदिनक मंचक समाचारिक रूपान्तर उपस्थित अछि। मुदा दस्तावेजीय तालिका ओकरा आग्रह करैत अछि जे दुखक आधारपर सच स्थापित तथ्य नहि मेटाओल जाए। ई दृश्य अनिश्चितता वा न्यायिक रूखापनक प्रशंसा मात्र नहि; आलोचकक काम प्रत्येक सार्वजनिक वाक्यक अलग प्रमाण-वजन चिन्हित करब अछि।

प्रथम कोष्ठकमे मकाऊ यात्रा, विदेशी विक्रेता-सम्पर्क, सीमित भाषिक प्रवेश आ जोखिम-सारांशक काज स्थापित अछि। नायक यैह स्वीकारैत अछि, यद्यपि एहि तथ्यक समाचारिक उपयोग ओकरा गम्भीर सामाजिक अपमान देलक। दुनू अलग स्तर अछि। तथ्य स्वयं अपराधक पूर्ण कथा नहि, मुदा अपमानक कारण ओकर यथार्थत्व समाप्त नहि। एही सन्तुलनपर पात्रक प्रायश्चित निर्भर अछि। पूर्वमे शशांक अपनी भूमिका पैघ बतबैत छल; आरोपक भयमे ओ पहिने वास्तविक भूमिकासभ कम करि कहैत छल। एखन आत्मसुरक्षाक दू अतिवादसँ हटि तथ्यकेँ ओहि मापमे स्वीकारब आवश्यक अछि जतए उपलब्ध अछि।

‘विदेशी सर्वर पर प्रशासकीय सर्वाधिकार’ सार्वजनिक दावा सीमित आगन्तुक-पासक सुरक्षित अभिलेखसँ बेसी व्यापक अछि। उच्च-अधिकारक स्वतंत्र चिह्न उपलब्ध नहि। शशांक ‘असमर्थित’ आ ‘मिथ्या’क भेद जाँचैत अछि; जँ उपलब्ध सकारात्मक दस्तावेज आरोपक पूर्ण व्याप्तिसँ प्रत्यक्ष टकराए तखन त्रुटिक भार बेसी, मुदा सम्पूर्ण तकनीकी इतिहासक अपूर्णता अन्तिम निषेधकेँ सावधान करैत अछि। एहि विवेचनमे योग्य-अनुपलब्धि ८१–९०क अभ्याससँ आगाँ बढ़ि निर्णयक विधि बनैत अछि। घटना-स्थितिक साम्प्रतिक सीमा सार्वजनिक शब्दकोशक निश्चित आरोपसँ भिन्न अछि।

मुहरबन्द कर-जाँचक नामपर ‘भारतीय सूत्रधार प्रमाणित’क सार्वजनिक पंक्ति अध्यायक भावनात्मक केन्द्र अछि। न्यायालयीय सार्वजनिक सार मे भुगतान-

पथक प्रश्न, लाभकारी स्वामित्वक परीक्षण आ भाषिक हस्तक्षेप छल, अन्तिम वित्तीय नियन्त्रणक निष्कर्ष नहि। मूल संवेदनशील सामग्री संरक्षित रहैत अछि; सार्वजनिक वाक्य ओहि अनदेखल सामग्रीक मनोनुकूल अर्थ थोपि नहि सकैत। शशांक एतबे कहैत अछि जे सार्वजनिक सार ओहि दावाकेँ समर्थित नहि करैत; ओ मूल मुहरबन्द पाठक सभ सम्भावित प्रतिकूल बातकेँ पूर्ण रूपेँ नकारैत नहि। ध्वनिक परिप्रेक्ष्यमे 'मुहरबन्द' शब्दक प्रतिष्ठा स्वयं समाचारिक प्रमाणक रूप धारण करबाक खतरा बनैत अछि।

भोजक चित्रमे कलाकार, विदेशी अतिथि आ शशांकक उपस्थिति दृश्यतः स्थापित अछि। 'अपराध-जालक उत्सव' शीर्षक एहि फोटो पर जोड़ेले अर्थ अछि, मूल दृश्य नहि। कृतिक चित्र-पाठक आलोचना एतय गहन अछि: दृश्य प्रमाणक समर्थित क्षेत्र सीमित अछि, निहित सम्बन्धकेँ वस्तुगत दावामे बदलि देब अलग तर्क माँगत। नायक अपन 'विशेष पहुँच', 'मुख्य लोक हमर माध्यमे' आ 'असली स्वामी बुझैत छी' सन पुरान डींग स्वीकारैत अछि। एहि वाक्यसभक लेखकत्व हुनकर आत्मप्रचार सिद्ध करैत अछि; कथित वित्तीय भूमिका शाब्दिक रूपेँ सत्य नहि बनैत। पत्रकारक वाक्य आ नायकक मूल वाक्यक नैतिक भार अलग रहबाक चाही।

'आन्तरिक स्रोत' सम्बन्धी समाचारक दावामे कोनो नाम, समय अथवा स्वतंत्र उद्धरण उपलब्ध नहि। उचित श्रेणी 'स्रोत-अनिर्णीत' अछि। शशांकक कष्ट अथवा संदेहक कारण अज्ञात पत्रकार-स्रोतक अस्तित्व असम्भव घोषित नहि करब, मुदा तकरा उपलब्ध साक्ष्य मानि दोष सिद्ध सेहो नहि करब। लेखक एतय ज्ञानक रिक्त स्थानक सुगम भराइ अस्वीकार करैत छथि। पाश्चात्य आख्यान-विमर्शमे लेखकत्व, कथावाचक, स्रोत-विश्वसनीयता आ सार्वजनिक पुनर्कथन अलग होइत अछि; 'अनुवादक' एहि भूमिकासभक विस्थापनसँ अपराधक कथा बनबाक प्रक्रिया उघारैत अछि।

'अनुवादकक माध्यमे धन विदेश पहुँचल' सन वाक्यक परीक्षणमे भाषिक सेवा, किछु पारिश्रमिक आ विदेश-सम्बन्ध प्रमाणित, मुदा धनक निर्देशदाता अथवा अन्तिम स्वामीक स्वतंत्र अधिकार उपलब्ध नहि। एहि वास्तविकता सँ व्यापक आर्थिक निष्कर्षक समर्थन नहि बनैत। नायक यदि भविष्यत् नव प्रमाण भेटत तँ निर्णय बदलि सकबाक बात स्वीकारैत अछि। निर्णय मूर्ति नहि; वर्तमान प्रमाणक सीमा अछि। ई गंगेशीय कसौटीक आधुनिक नैतिक प्रयोग अछि—निश्चितता प्रमाणक अनुपातमे बदलैत रहत, अनुकूल कथा स्थिर राखबाक लेल प्रमाणकेँ मोड़ल नहि जाएत।

निचला अधिकारी स्वयं 'मिथ्या आरोप' कहबाक लेल असमर्थित विस्तार आ जानि-बुझि विकृतिक अतिरिक्त भेद राखैत अछि। किछु सार्वजनिक बयान असमर्थित हो सकैत अछि, मुदा लेखकक मंशा वा जानि-बुझि झूठक सिद्धि स्वतंत्र विषय अछि। सार्वजनिक अपमानक नैतिक सत्य आ विशिष्ट प्रकाशन-दायित्वक कानूनी प्रश्न अलग सामग्री माँगत। एहि सन्तुलनसँ उपन्यास राजनैतिक-नैतिक विवादक उत्तेजना घटबैत अछि, किन्तु आलोचना वास्तविक सामाजिक क्षति अल्प मानि नहि लेत। व्यक्ति अपमान भुगतैत अछि; तकर तथ्यक संवेदनशील स्वीकार आवश्यक अछि।

मृणालक हाथमे चाहक दू प्याला आ शशांकक 'निर्णय हमरा केवल पीड़ित बनबाक सुविधा नहि दैत' कथन अध्यायक गहन मानवीय समाप्ति अछि। कथाक कलात्मक उपलब्धि ई जे नायकक दुःख पूर्ण रूपेँ छीनल नहि गेल, पर ओकर नाम पर सब सच मेटेबाक अधिकार सेहो नहि भेटल। चारि प्रमाण-वर्गक तालिका शिक्षाप्रद होइत-होइत दृश्यरूपेँ शुष्क पड़बाक जोखिम रखैत अछि; तथापि चाहक भाप, अपमानक स्मृति आ दोस्तक प्रश्न एहि रूखापन कँ मानव-जीवनमे फेर अनैत अछि। अगिला 'मिथ्या आरोप' अध्याय लेल पहिल निर्णायक आधार तैयार अछि—आरोपक सत्यता आ आरोपक लेखकत्व, अनुवादकक आत्मस्वीकृति आ अपराधक स्वतंत्र आधारकेँ एक शब्दमे विलीन नहि करब।

## अध्याय ९१-९५ : उन्नैसम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — अनुपलब्धिक पाठसँ समदर्शी निर्णय धरि

एकानबेम सँ पंचानबेम धरि पाँच अध्याय कृतिक अन्तिम न्याय-चिन्तनक रूपरेखा बनबैत अछि। एकानबेम अध्याय ‘समझौताक दरार’क वित्तीय अनिश्चितता आ मित्रताक आहत प्रतिष्ठा सँ खण्ड समाप्त करैत अछि; बानबेममे ‘निर्णय’ शुरू होइत अछि, जखन साझा मैथिल पहचानक आधारपर जाँचकर्ताक अनुकूलता अपेक्षित शशांकक दृष्टि टूटैत अछि। तिरानबेममे राघवक पेशागत सीमा, चौरानबेममे शाखाक प्रक्रियागत निर्णय आ पंचानबेममे सार्वजनिक कथनक चारि प्रमाण-वर्ग—एहि क्रममे न्याय व्यक्तिक इच्छा, सम्बन्ध आ संस्थागत शब्द पर समान रूपेँ लागू होइत अछि।

अध्याय ९१क अस्पष्ट ‘एम.के.’ प्रविष्टि मित्रक नाम पर कानूनी अर्थ लादबाक जोखिम अछि; अध्याय ९२मे साझा गामक भावना जाँचकर्ताकेँ मित्र वा दुश्मन कहल जाएबाक उतावलापन खोलैत अछि। दुनू दृश्य सामाजिक निकटताकेँ पक्षधरता अथवा अपराधक प्रमाण बनाबयक असफलता दिखबैत अछि। मृणालक ‘एखन मित्रता नहि। पहिने अभिलेख’ आ अधिकारीक ‘पद्धति ककरो मित्र नहि’ समान नैतिक सार रखैत अछि, मुदा पहिल निजी क्षतिक भीतर, दोसर सार्वजनिक जाँचक भीतर। लेखक एहि अन्तरसँ न्यायिक निष्पक्षताक मानवीय मूल्य उघारैत छथि।

अध्याय ९३मे शशांक द्वारा राघवक शर्तयुक्त सलाहक ‘विधिक पक्ष साफ’ अनधिकृत रूपान्तर एहि समस्या केँ पेशागत क्षेत्रमा अनैत अछि। वकीलक नाम प्रतिष्ठाक मुहर बनल; बादक व्यापारी कर्मचारीक ‘विधिक रूपेँ स्वीकृत’ शीर्षक एहि अनधिकार विस्तारक दोसर जीवन अछि। अध्याय ९०क ‘मुख्य सम्पर्क’ सँ ‘मुख्य नियंत्रक’क यात्रा एहि ठाम स्मरणीय तुलना अछि। एके प्राथमिक सारक अनेक पछिला कागज स्वतंत्र पुष्टि नहि। पाश्चात्य अन्तर्पाठीयता आ भारतीय शब्दप्रमाणक कसौटी भेटि स्रोत-निर्भरता जाँचबाक उपयुक्त माध्यम बनैत अछि।

अध्याय ९४मे निचला आयुक्तालयक लिखित प्रतिरोध बचल रहैत अछि, मुदा प्रश्नक धार संकुचित भऽ जाइत अछि। ई पाठगत परिवर्तन वास्तविक अछि, पर आपराधिक साँठगाँठक निश्चित निष्कर्ष नहि। अध्याय ९५मे सार्वजनिक समाचारक वाक्य चारि वर्गमे राखल जाइत अछि—स्थापित,

अनुमानित, असमर्थित विस्तार, स्रोत-अनिर्णीत। एके नियम संस्था आ व्यक्तिगत दोषारोप पर लागू अछि: जे बदलल अछि तकर समर्थन दी, जे कारण कहल गेल तकर स्वतंत्र आधार खोजी, आ जे नहि ज्ञात तकरा संशयमे राखी। एहि दुविधासँ निर्णयक नैतिक कठिनाई बढ़ैत अछि, मुदा विश्वसनीयता सेहो।

भारतीय रस-मीमांसामे पाँच अध्यायक अंत:धारा लोभ, क्रोध, लज्जा, करुणा आ शान्तिक मिश्रण अछि। मृणालक आहत मौन, जाँचकर्तापर अचानक क्रोध, राघवक असन्तोष, निचला अधिकारीक विश्वासघातक अनुभूति आ गाम धरि पहुँचल समाचारिक अपमान—सभक भीतर मानवीय ताप अछि। शान्तिक परिपाक आहत व्यक्तिक मन निश्चेष्ट बनब नहि; अपन पक्षक दु:ख मानिते तथ्यक स्वतन्त्रता स्वीकार करब अछि। कृति जखन चाहक दू प्याला अथवा ओसाराक विराम प्रस्तुत करैत अछि तखन दस्तावेजी कठोरताकेँ व्यवहारिक जीवनसँ जोड़ैत अछि।

ध्वनि-वक्रोक्तिक पठनमे ‘मित्र’, ‘दुश्मन’, ‘साफ’, ‘समझौता’, ‘प्रमाणित’ सन शब्द अपने-अपने संदर्भक बाहिर गेलापर अनुचित निश्चितता उत्पन्न करैत अछि। बानबेमक जाँचकर्ताक नायक-विरुद्ध निष्पक्षता शशांककेँ शत्रुता लगैत अछि; तिरानबेमक ‘साफ’ व्यापारिक अनुमति बनैत अछि; चौरानबेमक ‘समझौता’ मूल पाठक नरमी केँ अपराधक निष्कर्ष बनबैत अछि; पंचानबेमक ‘प्रमाणित’ मुहरबन्द प्रश्नक सार्वजनिक शीर्षक बनैत अछि। ई अर्थ-वृद्धि पात्रक आत्मप्रचारसँ संस्थागत भाषाद्वारा पैघ प्रभाव बनैत अछि।

नव्य न्यायीय प्रमाण-विवेकक मुख्य अभ्यास ‘योग्य-अनुपलब्धि’ सँ ‘निर्णय’धरि संक्रमण अछि। अभाव तखने निर्णयमे निर्णायक वजन राखत जखन चिह्न उचित रूपेँ अपेक्षित, स्रोत पर्याप्त आ खोज विश्वसनीय हो। मुदा निर्णय केवल अनुपस्थितिक लेखा नहि—सकारात्मक स्थापित यात्रा, सीमित भाषिक सामग्री, वास्तविक नर्म अनुवाद, स्रोतहीन अपराध-विशेष दावी आ शेष अज्ञात सामग्री सभक समवेत परिमाण निर्धारण अछि। प्रत्यक्ष, शब्द आ अनुमान यथास्थान काम करैत अछि; मित्रताक विश्वास, कार्यालयी उपस्थिति अथवा समाचारिक निश्चय तिनकर स्वचालित विकल्प नहि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिसँ आर्थिक प्रविष्टि, निजी मित्रता, मकाऊक प्रशासनिक प्रवेश, विधिक संरक्षित परामर्श, निचला आयुक्तालयक

सावधानी आ सार्वजनिक समाचार छह स्वतंत्र साक्ष्य-रेखा बनैत अछि। क्रमानुक्रमे तिनका जोड़ैत काल एकतरफा कथानक-कारण बनायब आसान होयत; मुदा प्रत्येक रेखाक स्रोत, पात्र आ संस्थागत उद्देश्य अलग। लेखक एहि बहुरेखीय परिप्रेक्ष्यमे सामाजिक न्यायकेँ आरोप वा पीड़ितक इच्छासँ स्वतन्त्र राखबाक प्रयत्न करैत छथि।

पाश्चात्य कथानक-दृष्टिसँ ई पाँच अध्याय गहन पुनरावलोकनक कृति छथि। पूर्व जन्मदिनक मंच, पुरान सन्देश, मकाऊक बैठक, राघवक पेशागत सावधानी आ निचला आयुक्तालयक आपत्ति नव अर्थ पबैत छथि। किन्तु अनेक प्रश्नोत्तर प्रमाण-वर्गीकरणक व्यवस्थित अभ्यास जेकाँ विकसित होइत अछि, जाहिसँ संवादक आकस्मिकता घटैत अछि। पात्रक विविध दैनिक दुनिया अधिक विस्तृत रहितय तँ अन्तिम निर्णयक भावात्मक वजन आरो पैघ होइत। मुदा आत्मपक्षीय नायक पर पुनरावृत्त कठोर कसौटी लागू कएल जाएब ई शिल्पक घोषित नैतिक संकल्प सफल बनबैत अछि।

समग्र निष्कर्ष ई जे शशांक जे बात स्वीकार करैत अछि, से ओकर सामाजिक नैतिक दोषक माप; जे आर्थिक, प्रशासनिक वा आपराधिक नियंत्रण सार्वजनिक रूपेँ आरोपित अछि, ओ स्वतंत्र कड़ी माँगत; जे अनिश्चित अछि, ओकरा ‘नहि ज्ञात’ कहबाक साहस चाही। न्याय ओकरा केवल पीड़ित अथवा केवल दोषी बनबाक सुविधा नहि दैत। ई पाँच अध्याय आगामी ‘मिथ्या आरोप’क पृष्ठभूमि तैयार करैत अछि, जखन सार्वजनिक दावाक शब्द, लेखकक मंशा, पात्रक प्रायश्चित आ सत्यक प्रमाणिक वजन सभ फेर प्रतिपरीक्षाक विषय बनत।

## अध्याय ९६ — मिथ्या आरोप : स्वीकृत कपट आ असिद्ध अभियोगक सीमा

छियानबेम अध्याय ‘मिथ्या आरोप’ नामक ऐसे नैतिक-न्यायिक प्रश्नक नाट्य-रूप अछि जाहिमे आरोप झूठ कहलाक अधिकार मात्र पीड़ितक अनुभूतिसँ नहि, आरोपक विषय, प्रमाण आ कथनकर्ताक ज्ञानसँ तय होइत अछि। न्यायालयक आरम्भिक निर्देश—‘अदालत पीड़ा नापबाक ठाम नहि; कथन, आधार आ उत्तरदायित्वक सम्बन्ध देखत’—कथात्मक भावनाकेँ प्रमाण-विवेचनक अनुशासनमे पठबैत अछि। ई वाक्य पीड़ाकेँ निष्फल नहि ठहरबैत; ओकरा न्यायालयीय निष्कर्ष बनयबाक लेल भिन्न प्रकारक आधार चाही, से स्पष्ट करैत अछि। अतेक अध्यायदिनक छोट कार्यसूची नायकक जीवनक दीर्घ सार्वजनिक अपमानसँ विसंगत बनैत अछि।

अभियोजन पहिल समाचार-शीर्षक प्रस्तुत करैत अछि: ‘शशांक झा: विदेशी जुआ-जालक वित्तीय नियंत्रक।’ शशांक पूर्ववत् तत्काल ‘मिथ्या’ नहि कहैत; वास्तविक मकाऊ-यात्रा, विक्रेता-संपर्क, भाषिक समन्वय आ किछु जोखिम-सारांश मानैत अछि, मुदा वित्तीय नियन्त्रण लेल निर्णय-अधिकार, लाभ-वितरण, खाता-आदेश आ लाभकारी स्वामित्वक स्वतंत्र प्रमाण नहि भेटल कहैत अछि। एहि उत्तरक महत्त्व ‘सत्य’क एकल पदक विखण्डनमे अछि। वाक्यक किछु घटक समर्थित होइतासँ तेसर असमर्थित घटक मान्य नहि होइत। पाश्चात्य विमर्श-विश्लेषणक दृष्टिसँ शीर्षक अपन संक्षिप्तता द्वारा पाठकक अनुमानकेँ पूर्वनिर्धारित करैत अछि।

सरकारी अधिवक्ता ‘अहाँ कहि नहि सकैत छी जे आरोप मिथ्या अछि?’ प्रश्नसँ दुनू पक्षक मध्यवर्ती स्थान मेटेबाक यत्न करैत छथि। निचला आयुक्तालयक अधिकारी ‘सभ सत्य’ आ ‘सभ मिथ्या’क द्वैत अस्वीकारैत छथि। न्यायाधीश सेहो अधिकारीक पेशागत पहिचानपर उठल निजी कटाक्ष रोकि पद्धति पर प्रश्न केन्द्रित करैत छथि। एहि दृश्यमे पक्ष-विपक्षक कक्षीय व्यवस्था महत्वपूर्ण अछि: प्रतिवादीक दुःख, अभियोजकक दबाव, अभिलेख पढ़निहार अधिकारीक सीमा आ न्यायाधीशक नियंत्रण मिलि एकहि कथनक चारि भिन्न सामाजिक स्थिति खोलैत अछि।

‘मुख्य लोक सभ हमर माध्यमे’ सन अपन पुरान सन्देशक लेखकत्व शशांक स्पष्ट स्वीकारैत अछि। ओ एकरा भाषिक केन्द्रीयताक अतिशयोक्ति आ डींग

मानैत अछि; मुदा डींग कहिक ओकर प्रमाण-मूल्य पूर्ण शून्य करबाक छूट नहि माँगैत। अभिलेखसँ स्वतंत्र प्रशासनिक अधिकार नहि सिद्ध भेल तखन 'प्रभाव'क अनुभव 'नियन्त्रण' नहि बनैत। नव्य न्यायीय दृष्टिसँ विषय, सम्बन्ध आ अवच्छेदक बदलिते अनुमानक व्याप्ति बदलि जाएत अछि। नायकक नैतिक दोष वास्तवमे वाक्य पैघ लिखब अछि, ओकर वाक्यक हर सम्भावित कथनक सत्यता नहि।

मुहरबन्द सामग्रीक नियमित पहुँचवाला आरोप ओ आरो सूक्ष्म ढंगसँ पढ़ैत अछि। ओ आन्तरिक भाषिक सामग्री देखब स्वीकार करैत अछि, किन्तु मुहरबन्द सरकारी सामग्रीक नियमित स्रोतत्व समर्थित नहि मानैत। महत्त्वपूर्ण ई जे ओ सम्पूर्ण सम्भावना असम्भव कहबाक प्रलोभन सेहो अस्वीकारैत अछि, कारण सभ पहुँच-पथक अभिलेख पूर्ण होयबाक प्रमाण नहि। एतय 'उपलब्ध अभिलेखमे चिह्न नहि' आ 'कखनो सम्भव नहि'क भेद न्यायिक विवेकक केन्द्र बनैत अछि। अनुपलब्धि तबे निर्णायक होइछ जखन अपेक्षित चिह्नक उपस्थिति-शर्त आ अभिलेखक पूर्णता तय हो।

राघव भसीनक तीन वाक्य—मकाऊ यात्रा, किछु विक्रेता-संपर्कमे मध्यस्थता, आ मुहरबन्द स्रोत बनि वित्तीय जाल चलाएब—अध्यायक सबसँ सुस्पष्ट अलंकारिक उपकरण अछि। पहिल स्थापित, दोसर सीमित समर्थित, तेसर अस्थापित। ओ बतबैत अछि जे पहिल दू वाक्यक सत्य-भार तेसर पर चढ़ेब कथनक छलाँग अछि। अभियोजन उचित आपत्ति उठबैत अछि जे तथ्य-विरुद्धता, असमर्थितता आ जानि-बुझि विकृतिक उद्देश्य अलग-अलग सिद्ध होयबाक चाही। न्यायाधीश एहि स्तरसभकेँ पृथक मानैत छथि। ई दृष्टि बचाव पक्षक एकाधिकार नहि; अपुष्ट उद्देश्यक आधारपर पत्रकारकेँ स्वतः षड्यन्त्रकारी ठहराएब सेहो रोकैत अछि।

मूल रचनाक गहन नैतिक क्षण ओ अछि जखन शशांक अपन 'विधिक पक्ष साफ, आगाँ बढ़ू' वाक्यक छल स्वीकारैत अछि। मूल विधिक सावधानीकेँ व्यापक स्वीकृति बनाकऽ पेश करब ओकर व्यक्तिगत भाषिक कपट छल। एहि स्वीकारसँ रक्षा-पक्षक सुविधा घटैत अछि, मुदा ओकर विश्वसनीय आत्मालोचनक आधार बढ़ैत अछि। नायक अपन अपराध-बोधक कारण सम्पूर्ण आर्थिक जालक स्वामी होयबाक मिथ्या भार माथ नहि लेत। 'प्रायश्चित'क अर्थ सिद्ध दोषक पूर्ण नाम लेब, असिद्ध दोषक आत्म-दण्ड स्वीकारब नहि—ई प्रतिपादन करुण रसकेँ आत्माभिमानक आलोचनासँ जोड़ैत अछि।

अध्यायान्तमे न्यायालयक अन्तरिम टिप्पणी स्वयं अपन सीमा घोषित करैत अछि: न दोषमुक्ति, न दोषसिद्धि; केवल वर्गीकरण। ओसारामे मृणालक प्रश्नसभ शशांकक बयान कैं सामाजिक जीवनमे अनुवादित करैत अछि। मृणालक कथन 'प्रायश्चितमे सेहो विनम्रता चाही' कथाक नैतिक धुरी अछि, कारण सम्पूर्ण दोषक भार स्वयं पर लेब सेहो आत्मकथाकैं असंगत पैघ बनायब होइत। शशांकक कापीमे लिखल सूत्रसभ—मिश्रित वाक्य, डींग, असमर्थित आरोप आ सिद्ध अपराधक सीमाक भेद—अध्यायक न्यायशास्त्रीय प्रतिफल संचित करैत अछि।

कलात्मक रूपसँ प्रतिपरीक्षा प्रश्नोत्तरक तीव्रताक कारण प्रभावशाली अछि; तीन दावाक वर्गीकरण साधारण पाठक लेल सेहो न्याय-प्रक्रियाक तर्क स्पष्ट करैत अछि। तथापि न्यायाधीश, अधिकारी आ राघवक वक्तव्य बहुत बेर लगभग एके प्रमाण-अनुशासन दोहरबैत छथि; पेशागत मतभिन्नताक अधिक जटिल नाटकीय रूप सम्भव छल। मृणालक दृश्य एहि तर्कप्रधानताकैं थोड़े देर मानवीय बनबैत अछि, मुदा पत्रकारक स्वतंत्र दृष्टिकोण उपस्थित नहि होयब आरोप-समाजक बहुस्वरताकैं सीमित करैत अछि। ई सीमा स्वीकार करितो अध्याय शीर्षकक मौलिक उपलब्धि साफ अछि: मिथ्यता पीड़ाक पर्याय नहि, प्रमाणित सम्बन्धक नैतिक परीक्षण अछि।

## अध्याय ९७ — दू नव्य न्याय ६ : पूरक बयान, डींगक प्रमाण-मूल्य आ निर्णयक आकार

सतानबेम अध्याय प्रतिपरीक्षाक दू दिन बाद एक छोट समनसँ आरम्भ होइत अछि। यहाँ नव सामग्री भेटबाक बदला पहिनेसँ उपलब्ध जब्त वाक्यसभक ‘स्थिर’ अर्थ निश्चित करब लक्ष्य अछि। अधिकारीक ‘संशय आ निर्णयक बीचक दूरी कतय समाप्त हो’ प्रश्न कथाक शीर्षक ‘दू नव्य न्याय’ केँ व्यवहारिक रूप दैत अछि। शशांकक चाहना सरल निर्दोषताक घोषणा अछि; जाँचक पद्धति ओकर बदलामे प्रस्ताव-विशेषक भिन्न निष्कर्ष दैत अछि। ई तनाव पाण्डुलिपिक अन्तिम चरणमे नायकक भीतरी रूपान्तरणकेँ देखेबाक एक विश्वसनीय साधन अछि।

पहिल जब्त सन्देश—‘ऊपर धरि बात पहुँचि गेल अछि; चिन्ता नहि’—क लेखकत्व शशांक स्वीकारैत अछि। एहि संग प्रभावशाली देखेबाक उद्देश्य प्रसंगसँ समर्थित अछि, मुदा संदेश-श्रृंखलामे विशिष्ट उच्चाधिकारी, गोपनीय निर्देश वा ओहने प्रत्युत्तर नहि अछि जकर आधारपर प्रत्यक्ष सरकारी पहुँच निश्चित हो। अधिकारी एहि तीनू बात अलग लिखबैत छथि। नव्य न्यायीय प्रमाण-विचारमे एके दस्तावेज लेखकत्वक सबल आधार होइतहुँ विषय-वस्तुक व्यापक सत्यक कमजोर आधार भऽ सकैत अछि। ई एकसाथ सबल आ दुर्बल प्रमाण-मूल्यक जटिलता उपन्यास सफलतासँ पकड़ैत अछि।

दोसरा वाक्य ‘मुख्य लोक सभ हमर माध्यमे’मे ‘सभ’क अतिशयोक्ति अछि, तथापि किछु वास्तविक भाषिक समन्वय सेहो छल। अधिकारी ओहि दुनू अतिवादकेँ अस्वीकारैत छथि जे एहि वाक्यकेँ सम्पूर्ण जालक आर्थिक नियन्त्रण अथवा शून्य महत्त्वक अभिनय सिद्ध करय चाहैत। आदित्यक कथन जे निर्णय प्रमाणक भार उचित स्थानपर रखैत अछि, अध्यायक मुख्य तात्त्विक सूत्र अछि। नायकक डर जायज हो सकैत अछि जे जाँच ओकर डींगकेँ तथ्य बना देत; मुदा एहि डरक आधारपर ओकर वास्तविक समन्वयक इतिहास मिटाएबो असत्य होयत।

तेसर संचिकाक पुरान नकार ‘हमर कोनो अधिकारीसँ निजी सम्पर्क नहि छल’क प्रतिपक्षमे सामान्य प्रशासनिक सम्पर्क-संख्यासँ दू छोट संवाद भेटैत अछि। शशांक अपना बयानमे एहि व्यापक नकारकेँ संशोधित करैत अछि। एक ठामक त्रुटिसँ ओकर विश्वसनीयता विशिष्ट विषयपर प्रभावित होइत अछि, मुदा सभ कथन स्वतः असत्य नहि। लेखक एतय चरित्र-विचार आ प्रस्ताव-विचारक पृथक्करण करैत छथि; अविश्वसनीयताक संकेत जाँचकेँ

कठोर बनाबैत अछि, तथापि दोसर प्रत्येक दावाक स्वतन्त्र प्रमाण-मूल्य यथावत् रहैत अछि।

'रिपोर्ट ऊपर गेलाक बाद भाषा बदलत' सन्देशक अर्थो समान विधिसँ निश्चित होइत अछि। सामान्य संस्थागत प्रक्रियाक अनुभव एहन कथनकेँ सम्भव बनबैत अछि; विशिष्ट मुहरबन्द संशोधनक पूर्वज्ञान अलग बात अछि। एहि ठाम अधिकारी शशांकक 'तखन हमरा लाभ?' प्रश्न रोकैत छथि। पाठक देखैत अछि जे नायकक नव पद्धति आरम्भिक अवस्थामे अबहो 'लाभ'क लेखाक दिशामे लौटैत अछि। चरित्रक परिवर्तन एकबेरमे सम्पन्न नैतिक दीक्षा नहि; आकर्षणक पुनरागमन आ तकर सुधारक क्रम अछि।

अधिकारी शशांकसँ ओकर महत्त्वाकांक्षा विषयक पछातिक स्पष्टीकरणक विश्वसनीयता पूछैत छथि। समकालीन सन्देशसभ ओकर प्रतिष्ठा, अधिक कमाइ आ निकटताक लालसा समर्थित करैत अछि, किन्तु विशिष्ट आपराधिक लाभ-वितरणक हेतु पृथक जाँच अपेक्षित अछि। ई अंश भारतीय मनोवैज्ञानिक रस-विचारक संग प्रमाण-विचारक संधि बनेबैत अछि। लोभ पात्रक स्थायी प्रवृत्तिक संकेत हो सकैत अछि, तथापि ओसँ निर्दिष्ट अपराध-हेतु पर अनुमान तत्काल सिद्ध नहि होयत। कथा एहिपर अपन नैतिक आलोचनाक विश्वास टिकबैत अछि।

पूरक बयानक मसविदा अध्यायक प्रभावी कथानकीय मोड़ अछि। एक पंक्ति 'व्यापक प्रभाव-दाबी असत्य' कहैत अछि; शशांक एकरा 'व्यापक निर्णय-अधिकार स्वतंत्र अभिलेखसँ समर्थित नहि' करबैत अछि, किएक तँ किछु वास्तविक प्रभाव छल। दोसर पंक्ति 'डींगसभ केवल आत्म-प्रचार' कहैत अछि; शशांक स्वयं 'केवल' हटबैत अछि, कारण ओकर वास्तविक सीमित भूमिकासँ अतिशयोक्ति पैदा भेल। दुनू संशोधन फराक दिशा मे जाइत अछि —एक ओकर निर्दोषताक अतिशयोक्ति रोकैत अछि, दोसर ओकर दोषक अतिशयोक्ति रोकैत अछि। कथाक पात्र-विकास विचारक भाषामे नहि, संपादनक क्रियामे घटित होइत अछि।

अधिकारीक 'चरित्र-पत्र नहि, प्रस्ताव-पत्र' कथन निर्णयक तात्त्विक सीमा निर्मित करैत अछि। जाँचक निष्कर्ष, अभियोजनक दावा, न्यायालयक अवलोकन आ सिद्ध तथ्य अलग पदवी छथि। शशांक अपन अन्तिम स्वच्छ चरित्र-प्रमाण चाहबाक आकांक्षाक भीतर पुरान महत्त्वाकांक्षाक नव रूप चिन्हैत अछि। मृणालक व्यंग्य—पहिने पैघ पद, आब पैघ निर्दोषता—एक

सूत्रमे तर्क आ संवेदना जोड़ैत अछि। नायककेँ अबहो कष्ट होइत अछि, किएक तँ प्रमाणित आकार ओकर आत्मकथाक इच्छित आकारसँ छोट अछि। पाश्चात्य आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ अध्याय बहुत हद धरि कोठली, प्रश्नोत्तर आ कापीक त्रयीमे चलैत अछि; शारीरिक क्रियाक न्यूनता तार्किक क्रम स्पष्ट करैत अछि, तथापि दृश्य-वैविध्य घटबैत अछि। अभिलेख-सहायकक समय-मुद्रा पढ़बाक श्रमक संग नायकक मानसिक प्रतिष्ठाक इच्छा मिलैत अछि—एहि दृश्येक ठोस वस्तुसंसार अध्याय केँ निर्जीव प्रवचन बनय सँ रोकैत अछि। एक सीमा ईहो अछि जे अधिकारीक तर्क लगभग निरन्तर निर्णायक आ नायकक प्रश्न लगभग सदैव प्रशिक्षणार्थीक जेकाँ रहैत अछि; प्रतिवादक वास्तविक संस्थागत जोखिम अधिक उभरि सकैत छल। तथापि पूरक बयानक द्विदिश संशोधन अध्यायक विशिष्ट कलात्मक उपलब्धि अछि।

## अध्याय १८ — दू नव्य न्याय ७ : ‘स्वामी’ शब्दक पाँच सम्बन्ध आ करारक बहुस्तरीय स्रोत

अठानबेम अध्याय तीन वस्तुगत अभिलेखक संग आरम्भ होइत अछि—सेवा-करार, विक्रेता-पंजीकरणक संचिका आ ग्राहक-पहिचान प्रपत्र। एतय कथाक समस्त शब्द-निष्ठ बौद्धिकता एक शब्द ‘स्वामी’पर एकत्र होइत अछि। आरम्भिक सेवा-करारमे सॉफ्टवेयर, नाम-चिह्न आ विशिष्ट तकनीकी सामग्रीक अधिकारधारीक उल्लेख अछि। शशांकक पुरान सारांश ‘स्वामी’ कहैत अछि, मुदा बादक पंजीकरण टिप्पणी एकरा लाभकारी स्वामित्वक पुष्टिक रूपमे पढ़ब आरम्भ करैत अछि। वस्तु बदलिते सम्बन्ध बदलल; एहि अर्थ-सरकावकेँ चिन्हनाइ अध्यायक प्रमुख आलोचनात्मक उपलब्धि अछि।

प्रथम संवादमे आदित्य प्रश्न करैत अछि जे करार ‘कम्पनीक अन्तिम लाभ पाबयवला’ व्यक्ति स्पष्ट करैत छल कि केवल बौद्धिक सम्पत्तिक अधिकार। शशांक फरक स्पष्ट करैत अछि। अधिकारी तुरन्त दोसरा उलट भ्रमपर सावधान करैत छथि: ‘स्वामी’ बहुअर्थी अछि कहि सभ स्वामित्व-सम्बन्धकेँ निरर्थक घोषित करब सेहो त्रुटि। ई ‘दू नव्य न्याय’क व्यावहारिक प्रतिद्वन्द्व अछि—एक अर्थकेँ एकदम पैघ फैलाएब आ बहुअर्थिताक आड़मे यथार्थ सम्बन्ध मेटाएब। नव्य न्यायमे विशेष्य-विशेषण आ सम्बन्धक निर्दिष्ट क्षेत्र उचित तरहेँ पहिचानब ओहि त्रुटिक उपाय बनैत अछि।

ग्राहक-पहिचान प्रपत्रक दृश्य ई विवेचनमे अभिलेखक समयक प्रश्न जोड़ैत अछि। दू व्यक्ति नामित छथि, मुदा एकर पहिचान-सत्यापन आंशिक, दोसरक नियन्त्रण-अनुपात रिक्त, अद्यतन तिथि पुरान। एहि पन्नासँ नामांकन सिद्ध अछि, वास्तविक अन्तिम लाभकारी स्वामित्व पूर्ण सिद्ध नहि। शशांक ‘अनिश्चित’ सन व्यापक शब्दकेँ सुधारि ‘एहि संचिकाक आधार पर पूर्ण पुनःसत्यापन स्थापित नहि’ कहैत अछि। कागजक अपूर्णता आ समस्त संसारक अनिश्चितता अलग अछि; कथा एहि पंक्तिमे सूक्ष्म पद्धतिगत व्यावहारिकता देखबैत अछि।

विक्रेता-पथमे चारि संस्था अछि: करार पर पहिलक हस्ताक्षर, दोसरा द्वारा बिल, तेसर द्वारा तकनीकी सहायता आ चौठमक नाम भुगतान-समन्वयक टिप्पणीमे। शशांक दू संस्थाक बैठकमे अनुवादक छल। साझा व्यापारिक संपर्क आ एक पुरान पत्राचारक समान पता ‘चारू एक गुप्त स्वामीक

आवरण'क स्वतंत्र प्रमाण नहि। उपलब्ध संचिकामे समान निदेशक, समान बैंक लाभार्थी वा स्पष्ट नियंत्रणकारी अधिकार नहि। परन्तु एकल स्वामित्व 'असम्भव' घोषित करबाक आधार सेहो नहि। एहि तार्किक समता द्वारा लेखक रहस्यक निश्चयवादी दुर्निवार मोड़ टारैत छथि।

शशांकक पुरान सन्देश 'सभ एके घरक लोक अछि'में ओ अपन भूमिका प्रतिष्ठित करबाक लेल साझा संपर्कक अर्थ स्वामित्वक समीप बढ़ौने छल। जखन ओ पहिने एकरा 'व्यापारिक मुहावरा' कहि क्षमा खोजैत अछि, तखन तुरन्त अपन उत्तर सुधारैत अछि: वाक्य जानि-बुझि प्रभाव बनेबाक लेल लिखल गेल, लेकिन विपरीत सत्य पूर्ण ज्ञात छल—एहन अलग निष्कर्ष उपलब्ध नहि। अभिप्राय आ ज्ञानक अंतर एहि ठाम महत्वपूर्ण अछि। आत्म-प्रचार मानब आ जानि-बुझि विशिष्ट झूठक संपूर्ण योजना स्वीकारब एक बात नहि।

अध्यायक सर्वाधिक सूक्ष्म पाठान्तर तकनीकी मंचक लाइसेंसक मूल प्रसंगमे 'अन्तिम निर्णय स्वामी पक्षसँ आएत' वाक्य अछि। बादक टिप्पणी ओही 'स्वामी पक्ष' कँ 'वास्तविक स्वामी' बनाकऽ कंपनीक लाभकारी नियन्त्रणक प्रमाण जेकाँ उपयोग करैत अछि। शशांक अपन अस्पष्ट शब्द-चयनक जिम्मेदारी स्वीकारैत अछि, मुदा बादक सम्बन्ध-वृद्धि के केलक से संचिकासँ निश्चित नहि। एके अर्थ-विकृतिक कारण-शृंखलामे पहिलक अस्पष्टता, दोसरक रूपान्तर आ तेसरक आरोपक अलग कर्मसूत्र भेटैत अछि। एक व्यक्तिपर सभ दोष धऽ देब अन्याय, मुदा पहिलक अस्पष्टता बिल्कुल निर्दोष कहब सेहो अविवेक होइत।

अभियोजनक सम्भावित दावा—शशांक अनुवादक छल, 'स्वामी' लिखलक, अतः वास्तविक लाभकारी स्वामी अवश्य जानैत छल—कथाक प्रत्यक्ष तार्किक परीक्षा बनैत अछि। शशांक 'भाषिक पहुँच = स्वामित्व-सत्यापन नहि' कहैत अछि। बचावक उलटा निष्कर्ष जे 'केवल अनुवादक' कोनो व्यावसायिक संरचना जानिये नहि सकैत, से सेहो अस्वीकारैत अछि। ओ करार, बैठक, जोखिम-सारांश आ संपर्कक किछु हिस्सा जानैत छल। एतय 'ज्ञान शून्य' आ 'सर्वज्ञान'क मध्य प्रमाणित सीमित ज्ञान नायकक सच्चा नैतिक आवास अछि।

तीन रंगक चिह्न—स्थापित, अपूर्ण, असमर्थित—अध्यायक मुख्य दृश्य-प्रतीक अछि। कागज पर लागल ओ रङ पात्रक जीवनक प्रतिष्ठा, गलती आ अधूरापनकँ तीन अवस्थामे विभक्त करैत अछि। मृणालसँ चाहक संग

संवादमे ‘स्वामी’क अलग-अलग अर्थ साधारण ग्राम्य व्यापार आ महानगरीय अनुबन्धक भाषामे तुलना लाबैत अछि। ई तुलनात्मक दृष्टि विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक संग संगति राखैत अछि; भिन्न आर्थिक संसार एक शब्द साझा करैत छथि, मुदा सम्बन्धक ढाँचा भिन्न। सीमा ई जे चारि संस्थाक सामाजिक-आर्थिक जीवन केवल संचिकाक रूपमे देखाइत अछि; ओहिक भीतरक श्रमिक आ वास्तविक व्यक्ति अदृश्य रहल छथि। तइयो मूल प्रश्न—शब्दक अर्थक संग ओकर विषय-सम्बन्ध जाँचब—सशक्त रूपेँ उभरैत अछि।

## अध्याय ९९ — नव्य-न्यायक अंतिम परीक्षा : मित्रताक नामपर समान कसौटी

निनानबेम अध्याय ‘नव्य-न्यायक अंतिम परीक्षा’मे न्याय-विवेकक सर्वाधिक कठिन व्यक्तिगत प्रयोग अछि। आदित्य फोन पर शशांककेँ बतबैत अछि जे ‘एम.के.’ आद्याक्षरक कारण मृणालक नाम फेर वित्तीय संचिकामे आयल। शशांक मित्रकेँ खबर दैत अछि, तखन मृणालक पहिल प्रश्न—‘नाम आयल अछि कि प्रमाण?’—कथाक दीर्घ नैतिक शिक्षाकेँ पात्रक जीवनमे प्रतिध्वनित करैत अछि। मित्र ओकरा अपन पक्षधर रक्षक बनबाक निर्देश नहि दैत; स्पष्ट कहैत अछि, ‘तू हमरा बचेबाक लेल नहि, जाँचबाक लेल जा।’ अनुवादकक सार्वजनिक आत्मसिद्धिक मुकाबिल ई वाक्य सम्बन्धक गरिमाक दावा अछि।

पाँच प्रकारक वित्तीय दाबी एके परत नहि बनैत। विक्रेता-पक्षक सेवा-भुगतान, किछु मध्यवर्ती भुगतान-द्वार आ शशांकक नामसँ जुड़ल अनुवाद/समन्वय शुल्क वास्तविक अभिलेखीय उपस्थिति राखैत अछि। सेवा-शुल्कक स्वीकृति आर्थिक सम्बन्ध सिद्ध करैत अछि; अपराधक आयमे हिस्सा वा विशिष्ट हवाला-संचालन स्वतः नहि। शशांक ईहो नहि कहैत जे सभ आर्थिक सम्बन्ध शून्य छल। अभिलेख एक प्रकारक सम्बन्ध दर्शबैत अछि, आरोप दोसर। एहि संबंध-सूक्ष्मताकेँ कथाक भाषा निरन्तर अपन नायकक चरित्रक कसौटी बनबैत अछि।

‘एम.के. सँ समन्वय’क एक पुरान पंक्ति, शशांकक फोनमे मृणालक संपर्क आ अन्य समयक वैध प्रतिपूर्ति—ई तीन तथ्य वास्तवमे मौजूद छथि, मुदा विवादित भुगतान-पथक खाताधारक-पहिचान, निर्देश, लाभ, नियन्त्रण वा नियमित संगति स्थापित नहि करैत। मृणालक मित्रतासँ अपराधक असम्भवता सिद्ध नहि, आद्याक्षर-मिलानसँ अपराधक आवश्यकता सेहो सिद्ध नहि। नव्य न्यायीय पक्ष-विचारमे प्रस्तावक अवच्छेदक—कौन भुगतान, कौन व्यक्ति, कौन समय, कौन अधिकार—ठीक-ठीक निर्दिष्ट होयबाक चाही। कथाक ठोस अभिलेखीय उदाहरण एहि दार्शनिक पद्धतिमे जीवन देत अछि।

‘हवाला’ शब्द जोखिम-टिप्पणी, प्रश्नवाचक सन्देश आ समाचार-सारांशमे अलग अवस्थामे अछि। एक मूल प्रश्नचिह्न पछिला सारांशमे बिलायल भेटैत अछि। एही प्रकार अंकीय परिसम्पत्तिक उल्लेख लाभकारी नियन्त्रणक

स्वतन्त्र प्रमाण नहि। अधिकारी चारि अपेक्षित सूचक—'पहिचान', 'निर्देश', 'लाभ', 'नियन्त्रण'—लिखैत छथि। जँ मध्यवर्ती खाता विशिष्ट अपराधक साधन छल तँ एहन सम्बन्धक किछु स्वतन्त्र चिह्न अपेक्षित रहत; जँ संचिका अधूरी हो तँ दावा छोट होयत। 'अपूर्ण अभिलेख' स्वतः अपराध सिद्ध वा पूर्ण निर्दोषता दूनू नहि करैत—एहि दोहरी निषेधमे कृति अपन सत्य-कथनक अनुशासन बचबैत अछि।

शशांकक 'स्थानीय भुगतानक लोक हम सम्हारि देब' पुरान डींग ओकरा फेर सकटमे अनैत अछि। ओ पहिने 'डींग' कहि उत्तर दैत अछि, मुदा 'केवल डींग' प्रश्न पर वास्तविक वैध भुगतान-संवादक समन्वय आ प्रतिष्ठाक लालसा स्वीकार करैत अछि। आवर्ती शब्द 'केवल' पर ओकर संशोधन कथाक आत्मपरीक्षाक स्पष्ट क्रिया अछि। पात्र अपन आचरणकेँ स्वच्छ करबाक लेल न सम्बन्ध मिटबैत अछि, न भूमिका बढ़बैत अछि। एही बिन्दुपर आत्मदोष-बोध आ आरोप-दोषबोधक कृत्रिम समानता टूटैत अछि।

अध्यायमे मित्रताक ई परीक्षा केवल मित्र पर दोष नहि चढ़ेबमे सीमित नहि। शशांक कहैत अछि जे वैध प्रतिपूर्तिक अभिलेखमे मृणालक वास्तविक नाम छैक तँ हटाएब नहि, मुदा 'एम.के.'क अनुमानित पहिचान निश्चित नाम बनाकऽ जोड़ब सेहो नहि। तात्पर्य—मित्रकेँ बचएबाक लेल सच अभिलेख हटाएब आ ओकरा दोषी बनेबाक लेल असिद्ध नाम जोड़ब, दुनू सम्बन्धक प्रति अन्याय अछि। लेखक एहि ठाम मित्रताकेँ अभिलेख-मेटनिहार भावनात्मक अपवाद बनएबाक बदला स्वतंत्र व्यक्तित्वकेँ आदर देनिहार समान कसौटी बनबैत छथि।

आदित्यक अन्तिम सारांशमे सेवा-संबन्ध, भाषिक भूमिका आ जोखिमपूर्ण आत्मप्रचार स्थापित कहल गेल; अन्य वित्तीय पृष्ठभूमि जाँचयोग्य, मुदा मध्यवर्ती खातासभक अवैध निर्देशन वा मृणालक कथित पहचान स्वतंत्र रूपेँ स्थापित नहि। शशांक 'म्यूल-खाता' पदकेँ उद्धरणमे रखबाक आग्रह करैत अछि, किएक तँ ओ जाँचक आरोप-वर्ग अछि, सिद्ध तथ्यक नाम नहि। शब्दकेँ उद्धरणमे राखबाक ई सूक्ष्म सम्पादकीय कर्म नायकक विकासक परिपक्व रूप अछि। कर्ता कियो, कथन कोन स्तरक, आ सम्बन्ध सिद्ध कि असिद्ध—एहि सभक दृश्यमान चिह्न छोट पाँतिमे समाएल अछि।

मृणालक फोन पर 'तखन आइ दोस्ती बचल'क उत्तरक कारण शशांकक पक्ष नहि लेब अछि; मृणाल कहैत अछि जे समान कसौटी राखलासँ ओकरा व्यक्ति मानल गेल, केवल अपन लोक नहि। एहि संवादमे करुण आ शान्त

रसक विलक्षण संगति अछि। दुनू पात्रक मित्रता निजी बचावक विनिमय नहि, आत्मनिर्भर नैतिक व्यक्तित्वक मान्यता बनैत अछि। सन्ध्याक चाह-संवादमे मृणाल नायकसँ पूछैत अछि जे अपनहि बनाओल कसौटी अपन ऊपर राखि सकल कि नहि। शशांक 'प्रयत्न करैत छी' कहैत अछि, पूर्ण नैतिक विजयक घोषणा नहि करैत। एहि अपूर्ण स्वरमे विश्वसनीयता अछि। अन्तिम कापी-सूत्र आ अध्यायक शीर्षक 'अंतिम परीक्षा' अध्याय १००क न्यायिक निर्णय लेल भूमिका तैयार करैत अछि। पाश्चात्य कथानक-विचार अनुसार बाह्य अदालतक चरमबिन्दु आगाँ अछि, मुदा आन्तरिक नैतिक चरमबिन्दु मित्रक नामक परीक्षा एतहि घटित होइत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे वैध प्रतिपूर्तिक व्यक्तिगत अर्थ, बैंकक अभिलेख आ सार्वजनिक अपराध-कथा एक-दोसरासँ तखन जुड़त जखन वास्तविक स्रोत-सम्बन्ध जुड़त। अध्यायक सीमा ई जे वित्तीय अभिलेखक पुथीक प्रश्नोत्तरक भाषा किछु पुनरावृत्ति उत्पन्न करैत अछि; मुदा मृणालक स्वायत्त वाणी एहि पुनरावृत्तिक विरुद्ध भावात्मक सजीवता दैत अछि।

## अध्याय १०० — अनुवादकक निर्णय : सीमित न्यायिक निष्कर्ष आ भाषाक नैतिक पुनर्जन्म

सयम अध्याय अपन शीर्षक ‘अनुवादकक निर्णय’सँ सम्पूर्ण उपन्यासक आरम्भ ‘मिथिलाक अनुवादक’क समवर्ती धुरी निर्मित करैत अछि। आरम्भक युवा शशांक भाषा द्वारा संसारमे प्रवेश आ प्रभाव चाहैत छल; समापनक शशांक भाषाक अधिकार घटा कऽ तकर प्रति उत्तरदायित्व अपनब सीखैत अछि। अदालतक कोठलीक साधारणता—काठक बेंच, कागजक खसखसाहट, कलम आ पंखाक स्थिर घुरघुराहट—कथानकक व्यापक आरोप आ समाचारक उत्तेजनाक विपरीत राखल गेल अछि। न्याय जीवनक पूर्ण कथा नहि लिखैत; ओ किछु निर्दिष्ट तत्वक परीक्षण करैत अछि। एहि साधारण भौतिक मंचमे कथाक ‘विराट नाटकीय घोषणा’क अपेक्षा भंग होइत अछि।

पीठ पहिल सिद्ध तथ्यसभ पढ़ैत अछि—विदेशी विक्रेता-पक्षसँ भाषिक आ व्यावसायिक संपर्क, मकाऊ यात्रा, किछु बैठक, सीमित तकनीकी प्रवेश, अनुवादक अतिरिक्त समन्वय आ जोखिम-सारांश, सेवा-शुल्क आ प्रभाव बढ़ाकऽ लिखल सन्देश। ‘विधिक पक्ष साफ’, ‘मुख्य लोक सभ हमर माध्यमे’ आ ‘अन्तिम निर्णय हमरा बिना नहि’क पुरान वाक्यसभ ओकर लेखकत्वक रूपमे अभिलेखित। एहि सूचीमे नायकक वास्तविक दक्षता, आर्थिक सम्बन्ध आ आत्म-प्रचार एकहिसँ मिलल अछि। उपन्यास एहि सभकेँ सत्यक एकरङ्गी व्याख्यामे विलय नहि करैत; किछु स्थापित होइतहुँ ओकर सम्बन्धक प्रकार पृथक मानैत अछि।

दोसरा भागमे व्यापक दाबीसभ पाठमे क्रमसँ आयल—लाभकारी स्वामित्व, प्रशासकीय सर्वाधिकार, सर्वर-नियन्त्रण, मध्यवर्ती खाता-निर्देशन, हवाला-संचालन, अंकीय परिसम्पत्ति, मृणालक कथित पर-नाम खाता, राघवक कथित अपराध-सहभागिता, नियमित मुहरबन्द स्रोतत्व आ संस्थागत साँठगाँठ। पीठ एहि सब पर एके नकार नहि लिखैत: कतहु ‘सिद्ध नहि’, कतहु ‘उपलब्ध प्रमाण अपर्याप्त’, कतहु ‘स्वतन्त्र पुष्टिक अभाव’। एहि अलग न्यायिक रूपसभक प्रभाव कथानकक पाठकक अनुमानपर पड़ैत अछि। अनुपलब्ध अभिलेख, प्रमाण-अपर्याप्तता आ पूर्ण असिद्धता एके स्तरक कथन नहि।

न्यायालयक विरोधी सम्बन्धसभक स्पष्ट सूची खण्डक सर्वोच्च संक्षिप्त सूत्र अछि—मकाऊ यात्रा सँ सर्वर-स्वामित्व नहि; सीमित प्रवेश सँ प्रशासकीय नियन्त्रण नहि; सेवा-शुल्क सँ अपराधक आयमे हिस्सा नहि; 'एम.के.' आद्याक्षरसँ मृणालक पहचान नहि; राघवक संग विधिक बैठकसँ आपराधिक सहभागिता नहि। एके प्रारम्भिक सारक अनेक पुनर्लेखन स्वतंत्र पुष्टिक संख्या नहि बढ़बैत। नव्य न्यायीय अनुमानक भाषा एहि ठोस प्रसंगमे बोधगम्य होइत अछि: सम्बन्धक वैध सीमासँ बाहर 'व्याप्ति' कहि छलाँग मारब तर्क नहि, पूर्वनिर्णय अछि।

अध्यायक तेसर भाग शशांक लेल सबसँ कठोर अछि, कारण व्यापक आरोप असिद्ध मानलाक संग ओकर अपन वाणीकेँ निर्दोष अभिनय नहि मानल गेल। ओ सावधानीकेँ स्वीकृति जेकाँ पेश करैत छल, अपन समन्वयकेँ निर्णायक शक्ति जेकाँ बेचैत छल, आ संकटमे आबि 'केवल अनुवाद' कहि भूमिका अत्यधिक छोट करबाक प्रयास केलक। एहि पाँतिमे पात्रक सम्पूर्ण महत्त्वाकांक्षाक नैतिक चक्र ध्वनित अछि: शक्ति लेल भूमिका पैघ, डर लेल भूमिका छोट। एही द्विदिश भाषिक स्वार्थक स्वीकार नैतिक प्रायश्चितक वास्तविक कठिनाई अछि। नैतिक कपट, व्यावसायिक अतिशयोक्ति आ दण्डनीय षडयन्त्र अलग अवधारणा छथि—अध्याय एहि भेदपर नायककेँ क्षमा-पत्र नहि, उचित आकार दैत अछि।

राघव भसीनक विधिक सलाहक सीमा, मृणालक वैध प्रतिपूर्ति आ अस्पष्ट आद्याक्षरक भेद, निचला आयुक्तालयक लिखित आपत्ति तथा बादक सारांशक नर्मी—प्रत्येक पृथक परीक्षणमे पाठक आरम्भिक स्रोतक बहुस्तरीयता देखैत अछि। शशांकक अस्पष्ट 'वकील सहमत' भाषा राघवक अपराध-सहभागिताक प्रमाण नहि; ओकर विवेकहीन सारांशक जिम्मेदारी शशांकक अछि। मृणालक मित्रता सेहो स्वयंसिद्ध निर्दोषताक प्रमाण नहि; व्यक्तिक पहचानक स्वतंत्र आधार जरूरी अछि। एहि सूक्ष्मता द्वारा कृति मित्र आ वकील दुनूकेँ नायकक स्वार्थक कथासँ बाहर अलग नैतिक व्यक्तित्व देत अछि।

निर्णयक मूल विडम्बना ई अछि जे नायक केँ न पूर्ण विमुक्तिक उत्सव, न सम्पूर्ण विनाशक भय भेटैत अछि। जतेक दण्डनीय तत्व सिद्ध, ओतबे उत्तरदायित्व; जतय व्यापक कथाक तत्व सिद्ध नहि, ओतय अभियोजनक रिक्त स्थान कल्पनासँ नहि भरल गेल। पीठ स्वयं कहैत अछि—'न्याय

अभियुक्तक चरित्रक सम्पूर्ण कथा नहि लिखैत।' शशांक बुझैत अछि जे ओकर वास्तविक नामपर रहि गेल दाग सेहो सत्यक एक अंश अछि, आ असिद्ध अतिरिक्त कलङ्क काटल जाएब सेहो। न्याय किछु अपमान नष्ट नहि करैत; ओ तकरा प्रमाण-आधारित आकार दैत अछि। पाश्चात्य कथान्त-विचारमे ई पूर्ण सुखान्त नहि; नैतिक कसौटी द्वारा उपलब्ध नियन्त्रित शान्ति अछि।

न्यायालयक बाहर आदित्यक 'जाँच जीतैत नहि'क कथन कथाक संस्थागत पात्रपर महत्त्वपूर्ण प्रत्यालोचन अछि। निचला आयुक्तालयक अधिकारीक संग शशांकक संवादमे 'अपन लोक' आ 'दुश्मन'क द्वैत टूटैत अछि; जे कसौटी बचबैत अछि ओही कसौटी दोषक आकार बतबैत अछि। राघवक मौन विदाई आ मृणालक संग बिना घोषणा चलब मानवसम्बन्धक नव आधार निर्मित करैत अछि। देरीसँ आयल इजोत मिथिलाक ओसारा आ दिल्लीक अदालतक बीच प्रतीकात्मक सेतु बनैत अछि। स्थानक समानान्तर स्मृति उपन्यासक बौद्धिक शिक्षाकेँ अपन मूल लोक-सांस्कृतिक धरातल पर फेर रखैत अछि।

अन्तिम कापीमे अनुवाद, प्रतिभा, लज्जा, प्रायश्चित, मिथ्या आरोप, निर्णय आ नव्य-न्यायक अर्थ नव रूपमे लिखल जाइत अछि। आरम्भमे भाषा पात्र लेल प्रभावक साधन छल; अन्तमे ओ मूलक सीमा मानबाक दायित्व अछि। कापी बन्द करबाक दृश्य पात्रक इच्छित 'सुन्दर अन्तिम वाक्य'क लोभकेँ सेहो रोकैत अछि। लेखक एहि ठाम अनुशासनक सौन्दर्यशास्त्र रचैत छथि: सुन्दरता सत्यपर हावी नहि होयबाक चाही। ई कृति-व्यापी ध्वनि छियानबेम अध्यायक मिथ्या आरोपसँ सयम अध्यायक निर्णय धरि क्रमशः पकैत अछि।

समाप्तिक कलात्मक उपलब्धि तर्कक मानविकीकरण अछि—फाटल मित्रता, अपमानित प्रतिष्ठा, आजीविकाक जोखिम आ मूल गामक स्मृति न्यायिक वर्गीकरणकेँ भावात्मक वजन दैत छथि। तथापि अन्तिम खण्डमे न्यायाधीशक वाणी असाधारण रूपेँ सुव्यवस्थित दार्शनिक सारांश जेकाँ होइत अछि, न्यायिक प्रक्रियाक वास्तविक बहुस्वर आ अपील, दण्ड-विधान अथवा व्यक्तिगत भविष्यक जटिल प्रश्न अपेक्षाकृत कम विकसित छथि। निर्णयमे 'जहाँ कानूनी तत्व पूरा होइत अछि'क कथन पर्याप्त विशिष्ट दण्ड-विवरण नहि दैत; ई सीमित सूचना पाठकक कानूनी जिज्ञासा बचा रखैत अछि। एहन सीमाकेँ गढ़ल दण्डादेशसँ भरब अनुचित होयत। मूल उपन्यास अपन कलात्मक प्रतिज्ञा पूरा करैत अछि: अनुवादकक निर्णय जखन शब्दकेँ अपन

पक्षक बदला सही सीमा देबाक निर्णय बनैत अछि, तखनहि कथा अपन सम्पूर्ण आकार पबैत अछि।

## अध्याय ९६-१००: अन्तिम पाँच अध्यायक अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा — आरोपसँ निर्णय धरि

छियानबेमसँ सयम अध्याय धरि उपन्यास अपन निर्णायक दार्शनिक संक्रमण रचैत अछि: सार्वजनिक कथनक वर्गीकरण, पूरक जाँच-बयान, स्वामित्वक सम्बन्ध-विचार, मित्रताक समान कसौटी आ अन्तिम न्यायालयीय निर्णय। ई क्रम पाँच स्वतंत्र दोहराव नहि। अध्याय ९६ आरोपक वाक्य कैं भंग करैत अछि; ९७ ओहि भंगल वाक्यक पर्याप्त निर्णय तय करैत अछि; ९८ 'स्वामी' नामक शब्दक वस्तु आ सम्बन्ध जाँचैत अछि; ९९ समान पद्धति मित्रक नाम पर लागू करैत अछि; १०० न्यायालय तकर विधिक सीमा निश्चित करैत अछि। कथात्मक क्रम सामाजिक आरोपसँ व्यक्तिगत सुधारण आ संस्थागत अन्तिम निष्कर्ष धरि जाइत अछि।

अध्याय ९६क 'वित्तीय नियंत्रक' समाचार-शीर्षक तीन वाक्यक सत्य-असत्यक प्रश्न बनैत अछि। ९७मे 'ऊपर धरि बात पहुँचि गेल' आ 'मुख्य लोक सभ हमर माध्यमे' संदेशसभकैं लेखकत्व, लोभ, वास्तविक समन्वय आ अनिश्चित उच्चाधिकारमे अलग कएल जाइत अछि। ९८मे अनिश्चिततक प्रकृति बदलैत अछि: एके 'स्वामी' शब्द सॉफ्टवेयरक अधिकारधारी, तकनीकी मंचक लाइसेंसधारी, पंजीकृत संस्था अथवा अन्तिम लाभार्थीक रूपमे गलतीसँ पढ़ल जा सकैत अछि। एहि त्रयीमे भाषा भ्रामक इसाराक वस्तु मात्र नहि, सामाजिक अधिकार-सम्बन्धक वर्गीकरणक औजार बनैत अछि।

अध्याय ९९ पूर्व निर्धारित कसौटीक नैतिक सत्यापन अछि, किएक तँ निष्कर्ष शशांकक प्रिय मित्र मृणालक सम्भावित पहचान पर पड़ैत अछि। 'एम.के.'क आद्याक्षर, वैध प्रतिपूर्ति आ संशययुक्त भुगतान-पथ तीन अलग लेखा छथि। शशांक अपन पक्षक लाभ लेल नाम हटबैत नहि आ अभियोजनक लाभ लेल निश्चित पहचान जोड़ैत नहि। इएह आन्तरिक चरमोत्कर्ष अछि। अध्याय १००क बाह्य चरमोत्कर्ष अदालतक घोषणा अछि, जाहिमे भावनात्मक अपराध-बोध आ कानूनी तत्वक स्वतंत्र सिद्धि अलग रहैत अछि। तेन कथा द्वि-चरम रूप लैत अछि—पहिने नैतिक निर्णय, फेर न्यायिक निर्णय।

नव्य न्यायीय प्रमाण-शृंखलाक दृष्टिसँ पाँच अध्याय प्रत्यक्ष अभिलेखक सीमा, सन्देश-आधारित अनुमान, शब्द-प्रमाणक संदर्भ, उपमानक जोखिम,

अपेक्षित चिह्नक उपलब्धि-अनुपलब्धि आ अन्तिम निर्णयक भार पृथक करैत अछि। शब्द एकटा नाम देत अछि; सम्बन्ध निर्धारित करबाक लेल विशिष्ट आश्रय चाही। एउ प्रकार 'विक्रेता-पथ' स्वतः लाभकारी स्वामित्व नहि, 'समन्वय शुल्क' स्वतः आपराधिक आय नहि, 'मित्रक नाम' स्वतः दोष नहि। अनुमानक अतिव्याप्ति उपन्यासक व्यापक नैतिक दोष अछि। संगहि सम्पूर्ण संदिग्ध सम्बन्ध कैं 'केवल अभिनय' कहि हटा देब विपरीत अतिव्याप्ति अछि।

भारतीय रसविचारमे आरम्भक भय, लज्जा आ अपमान करुण अनुभूति बनेबैत अछि, मुदा अन्तक शान्ति निष्कलुष विजय नहि, आत्मसीमाक स्वीकारसँ निकलैत अछि। ध्वनि एहि बातमे अछि जे शशांक अपन कापीक हर नव सूत्र लिखैत समय वाक्यकैं पटु बनाएब नहि, ठीक बनाएब सीखैत अछि। वक्रोक्ति एहि उलट अर्थमे अछि जे 'स्वामी' सामान्य कथन होइतहुँ संकटक स्रोत बनैत अछि। औचित्यक कसौटी विषयानुकूल भाषा दैत अछि: न अभियोजनकैं प्रभावक आधार पर सर्वाधिकार सिद्ध करबाक अधिकार, न बचावकैं भाषिक सेवा कहि वास्तविक संलग्नता मेटेबाक।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति अन्तर्गत मिथिलाक नव्य न्यायीय अध्ययन-स्मृति, दिल्लीक प्रवासी जीविका, मकाऊक व्यावसायिक प्रवेश, विदेशी विक्रेता-पंजीकरण, जाँच-आयुक्तालय आ न्यायालयक संस्थागत समय एकहि कारण-श्रृंखला नहि बनैत। स्रोतसभ स्वतंत्र अन्वेषण माँगैत छथि; समान व्यक्ति अथवा तिथि केवल छेदन-बिन्दु अछि। उपन्यास मिथिलाक ओसारासँ अदालतक ओसारा धरि शशांकक पथकैं भावात्मक रूपेँ जोड़ैत अछि, मुदा प्रमाणक सम्बन्धकैं भावनात्मक समतासँ निर्धारित नहि करैत। एहि पद्धतिक सफल कथा-रूपान्तरण एहि अन्तिम पाँच अध्यायमे सर्वाधिक स्पष्ट अछि।

पाश्चात्य आख्यानशास्त्रमे क्रमिक न्यायालयीय प्रश्नोत्तर आ कापी-सूत्र विश्लेषणात्मक पुनरावृत्तिक संरचना बनबैत अछि। पाँचू अध्यायक अन्तमे पुरान भाषा-गर्वक नव परिभाषा लेखकक जानबूझि कएल आवर्ती धुन अछि। जखन दृश्य केवल प्रश्न-सारणी आ कापी बनि रहैत अछि तखन नाटकीय विविधता घटैत अछि; विशेषतः अधिकारीसभक वक्तव्य एके तर्ककैं निर्बाध वैधता दैत छथि। मुदा मृणालक स्वतंत्र प्रश्न, आदित्यक विजय-विहीन

स्थितिपरक निष्कर्ष आ राघवक मौन उपस्थिति, एहि प्रवचनात्मक संकटकेँ सामाजिक रूप देबैत अछि।

समग्र मूल्यांकनमे अंतिम पाँच अध्याय अनुपयुक्त दोषमुक्तिक उत्सव नहि रचैत। नायक पर भाषा-आधारित नैतिक कपटक दाग बचैत अछि; वित्तीय नियन्त्रणक व्यापक आरोप स्वतंत्र प्रमाणक अभावमे सिद्ध नहि कहल गेल अछि। लेखक दण्डक विशिष्ट प्रावधान वा अपीलक अगिला इतिहास नहि गढ़ैत, ओकरा सीमित न्यायिक निर्णयक रूपेँ छोड़ैत छथि। एहि आलोचनामे सेहो ओ रिक्ति कल्पनासँ नहि भरल जा सकैत। समापनक वास्तविक उपलब्धि ई अछि जे नायकक अपन कथन आ न्यायालयक कथन दुनू समान नियमक अधीन—जे सिद्ध अछि से स्वीकार, जे असिद्ध अछि से असिद्ध, आ जे अपूर्ण अछि से अपूर्ण—राखल गेल अछि।

## समग्र साहित्यिक मूल्याङ्कन : भाषा, सत्ता आ प्रमाण

‘अनुवादक’क कथा शशांक झाक भाषिक व्यवसायसँ आरम्भ भऽ न्यायालयक सीमित निष्कर्ष धरि पहुँचैत अछि। एहि पूरा यात्रामे अनुवाद भाषा बदलबाक यान्त्रिक कौशल नहि, संज्ञा, अधिकार आ सम्बन्धक सन्दर्भ निश्चित करबाक कर्म अछि। ‘मूल’क स्थानपर ‘सार’, ‘प्रतिनिधि’क स्थानपर ‘स्वामी’ आ ‘शर्तयुक्त सलाह’क स्थानपर ‘विधिक स्वीकृति’ राखलाक क्षण कथानककेँ आगाँ बढ़बैत अछि। मूल उपन्यास एहि सूक्ष्म स्थानान्तरणकेँ कतहु व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षासँ, कतहु संस्थागत संक्षेपणसँ, आ कतहु समाचारिक अतिशयोक्तिसँ जोड़ैत अछि। आलोचनाक केन्द्र ओहि अन्तरक पहिचान अछि: वास्तविक भाषिक मध्यस्थता न स्वतः निर्दोष बनबैत अछि, न आर्थिक स्वामित्व सिद्ध करैत अछि।

मिथिलाक विद्या-पाठ आ दिल्ली-मकाऊक व्यापारिक व्यवहारक बीच शशांक अपन बौद्धिक संस्कारक उपयोग आजीविका लेल करैत अछि। पहिल अध्यायसभमे ध्वनि, वाक्य आ व्यवहारक अभ्यास ओकर पेशागत क्षमता बढ़बैत अछि; बीचक अध्यायमे पहुँचक नशा ओकर अपन भूमिका बढ़ाकऽ बतएबाक प्रवृत्ति बनैत अछि। अन्तिम अध्यायसभमे ओ अपन पुरान डींग आ अनधिकृत नरमी स्वीकारैत अछि, मुदा असिद्ध वित्तीय नियन्त्रणक भार माथ नहि लेत। एतए ओकर नैतिक परिवर्तन दण्ड सँ छुटकारा पएबाक दृश्य नहि, अपन वाक्यक सटीक सीमा पहिचानबाक कठोर प्रक्रिया अछि।

रचनाक मुख्य चरित्रमण्डली एहि परिवर्तनकेँ एके दृष्टिसँ नहि देखैत अछि। मृणाल मित्रता केँ पक्षधर प्रमाण बनबासँ रोकैत अछि; राघव भसीन गोपनीय विधिक परामर्शक अधिकार-सीमा देखबैत छथि; आदित्य मिश्र प्रश्नक वर्गीकरणमे प्रत्यक्ष दृश्य आ अनुमानक अन्तर निर्धारित करैत छथि। जुलियानाक भाषिक शिक्षा व्याकरणक नियमसँ आगाँ ककरो कथनकेँ ओकर स्थितिमे रखबाक पाठ दैत अछि। ई सभ भूमिका मुख्य पात्रक आत्मालापक प्रतिपक्ष अछि। तथापि पात्रसभक वाणी प्रायः एके प्रमाण-अनुशासनक सूत्रमे मिलि जाएत अछि; लेखकक प्रतिपाद्यक दृढ़ता एतए स्वतंत्र व्यक्तित्वक वैभिन्यकेँ सीमित करैत अछि।

## नव्य न्याय आ अन्तिम न्यायिक निष्कर्षक अर्थ

उपन्यास प्रत्यक्ष, शब्द, अनुमान, उपमान आ अपेक्षित चिह्नक अभावकेँ कथात्मक औजार बनबैत अछि। यात्रा-पत्र यात्रा सिद्ध करैत अछि, मुदा सर्वरक नियन्त्रण नहि; डाक-सन्देशक लेखकत्व एक व्यक्तिक वाक्य प्रमाणित करैत अछि, मुदा ओहि वाक्यक समस्त व्यापक दाबी नहि; साझे मंचपर उपस्थिति आपराधिक संधि नहि। एहि विभाजनक कारण पात्रसभक कथनकेँ सब वा किछुओ नहि सन दू टोकनक निर्णयसँ बचाओल गेल अछि। अध्याय ९६–१००मे उपन्यास विशेषत: तीन स्तर भिन्न करैत अछि—समर्थित तथ्य, सीमित वा अपूर्ण आधार, आ असमर्थित व्यापक दावा। शशांक अपन भाषिक कपट स्वीकारैत अछि; न्यायालय ओहि स्वीकारकेँ वित्तीय स्वामित्वक स्वचालित प्रमाण नहि बनबैत। मृणालक नामक अस्पष्ट आद्याक्षर, विधिक सलाहक शर्त, सरकारी सारांशक अलग संस्करण आ समाचारिक निश्चितता सबहक स्वतन्त्र जाँच आवश्यक ठहरैत अछि। ई विवेक कथानकक समापनकेँ विजय-उत्सव बनबासँ रोकैत अछि।

अनुपलब्धिक विषयमे रचना महत्त्वपूर्ण सावधानी सिखबैत अछि: जँ कोनो सम्बन्ध वास्तविक होयत तँ कोन चिह्न भेटबाक अपेक्षा छल, अभिलेख कतेक पूर्ण अछि, आ नहि भेटल चिह्नक अर्थ कतेक सीमित हो सकैत अछि—ई प्रश्न पहिने निश्चित होयबाक चाही। ‘नहि भेटल’सँ ‘कखनो नहि भेल’क छलाँग नव्य न्यायसँ संगत नहि। उपन्यासक बौद्धिक उपलब्धि एहि सीमाक सार्वजनिक व्यवहारमे साहित्यिक प्रयोग अछि।

## आख्यानशिल्प, पुनरावृत्ति आ सामाजिक दृष्टि

पोथीक आठ कथात्मक चरण एके शब्दक अनेक संस्करण बनबैत अछि। पहिल चरणमे भाषा जीविका अछि; दोसरमे प्रशिक्षण; तेसरमे करारक अस्पष्टता; चौठमे मैंडरिन-कैंटनिजक सूक्ष्म भाषिक समस्या; पाँचममे मकाऊक अभिलेखक प्रतिरूप; छठमे भोजक सामाजिक प्रतिष्ठा; सातममे दबाव आ अनुपलब्धि; आठममे निर्णय। एहि पुनरागमनसँ रचनाक ऐक्य बनैत अछि। शशांकक कापी, मूल सन्देश, जब्ती-सूची, आगन्तुक-पास आ समय-मुद्रा स्थायी वस्तु-प्रतीकक स्थान ग्रहण करैत अछि।

कथानकक प्रमुख सीमा ओकर साक्ष्य-सारणीक एकरूप गति अछि। बहुत अध्यायमे प्रश्न, प्रतिप्रश्न, वर्गीकरण, कापीमे सूत्र आ अन्तिम आत्मचिन्तनक लय दोहराइत अछि। संगति लेल ई उपयोगी अछि, मुदा मानवीय परिस्थिति, देहभाषा, परिवारक असंगठित अनुभव आ स्थानक संवेदनात्मक जीवन कखनो-कखनो किनार पर चलि जाइत अछि। न्यायालयक तर्कप्रधान दृश्य सभ पात्रकेँ पूर्ण सामाजिक व्यक्तित्वक बदलामे वैचारिक प्रतिनिधि बनएबाक जोखिम उठबैत अछि। ई समस्या कथाक घोषित प्रमाण-विवेकक उद्देश्यसँ उपजैत अछि; एकरा दुर्बलता कहनाइ सम्पूर्ण उपलब्धि नकारब नहि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिसँ मिथिलाक बौद्धिक संस्कार, दिल्लीक भाषिक श्रम, नोएडाक व्यापारी करार, मकाऊक अतिथि-पहुँच, सरकारी कार्यालयक संस्करण आ न्यायालयक सुनवाई अलग-अलग साक्ष्य-परिसर अछि। उपन्यास ई सभ भूगोलकेँ सीधा कारण-शृंखला नहि बनबैत; सम्बन्धक वैध सूत्र खोजबैत अछि। एहि कारण समसामयिक सामाजिक स्थिति आ कथानकक आरोप अलग राखल जाएब आवश्यक अछि। पात्रक कथन साहित्यक आन्तरिक कथ्य अछि; स्वतंत्र दस्तावेजक बिना ओकरा बाह्य ऐतिहासिक घटना नहि मानल जा सकैत।

## अन्तिम सम्पादकीय निर्णय

‘अनुवादक’क विशेष उपलब्धि ई अछि जे ई भाषिक मध्यस्थताक जिम्मेदारीकेँ ज्ञान, नैतिकता आ सार्वजनिक न्याय-विवेकक साझा प्रश्न बनबैत अछि। शशांकक शुद्धिकरण निष्ठुर आत्मदण्ड नहि, वाक्यक ठीक-ठीक अधिकार स्वीकारब अछि। ओ जे जानैत अछि से कहैत अछि; जे नहि जानैत से अपन प्रतिष्ठा अथवा लज्जाक दबावमे भरैत नहि। एहि संकुचित, किन्तु कठिन नैतिक विजयमे उपन्यासक कलात्मक अन्तर्निहित अर्थ अछि।

विस्तृत दस्तावेजी बहस आ पुनरुक्त न्यायिक सूत्र रचनाक प्रवाहकेँ अनेक बेर कठोर बनबैत अछि। तथापि व्यापक आरोपक सहज नाटकीय समाधान अस्वीकार करबाक निर्णय लेखकक विचार-स्वातन्त्र्य स्पष्ट करैत अछि।

अन्तिम मूल्याङ्कनमे ई उपन्यास आधुनिक मैथिली गद्यक भीतर अनुवाद, प्रमाण आ आत्म-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध पर एक संगठित दार्शनिक आख्यानक रूपमे महत्त्व रखैत अछि—अपन तर्कप्रधानता, कलात्मक अनुशासन आ कथात्मक सीमासहित।

## बिबलियोग्राफी

अनुवादक
तत्त्वचिन्तामणि
न्यायसूत्र
ध्वन्यालोक
वक्रोक्तिजीवित
काव्यप्रकाश
नाट्यशास्त्र
औचित्यविचारचर्चा
[Poetics]
[Mimesis]
[The Dialogic Imagination]
[Narrative Discourse]
[Time and Narrative]
[Epistemology in Classical India]
[The Lost Age of Reason]

# अनुवादक

गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यास ‘अनुवादक’ भाषाक साधना, जीविका, मित्रता, प्रतिष्ठा आ न्यायिक प्रमाणक सम्बन्धक एक व्यापक आख्यान अछि। मिथिलासँ दिल्ली आ मकाऊ धरि शशांक झाक यात्रामे भाषिक मध्यस्थताक प्रत्येक निर्णय नैतिक उत्तरदायित्वक प्रश्न बनैत अछि।

एहि खण्डमे उपन्यासक सभ १०० अध्यायक स्वतंत्र विस्तृत साहित्यिक समीक्षा, बीस अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन, चरित्र-समीक्षा आ समेकित कलात्मक मूल्याङ्कन प्रस्तुत अछि। रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, पाश्चात्य आख्यानशास्त्र, नव्य न्याय आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिक संयुक्त प्रयोगसँ कृतिक उपलब्धि आ सीमा दुनू परीक्षण कएल गेल अछि।

मूल पाठक वाक्य, पात्रक बयान, अभिलेखक संस्करण आ आरोपक प्रमाण-सीमा अलग राखैत ई अध्ययन आधुनिक मैथिली उपन्यासक भाषा आ सत्ताक सम्बन्ध पर विचार करैत अछि।

**मूल साहित्यकार : गजेन्द्र ठाकुर**

**सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार**

**विदेह**

https://www.videha.co.in/

**विदेह संग्रह**

https://videha-ejournal.github.io/videha/